



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री
सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर
सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव



सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971

* मुनिदीक्षा-11-05-1989

* आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मत्तिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)





जीवराज जैन ग्रंथमाला

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलिप्रणीतः

षट्पञ्चाङ्गागम

(धवला - पुष्प 15)

ग्रंथ सम्पादक :

स्व. डॉ. हीरालालो जैन

सहसम्पादक :

स्व. पं. फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

रूव. पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

प्रकाशक

जैन संस्कृति संरक्षक संघ

संतोष भवन, 734, फलटण गली, सोलापुर-2

(परम्परानायक)



(द्वितीय पट्टाधीश)



परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मत्तिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें। मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

श्री

धवला-टीका-समन्वितः

षट्खण्डागमः

त्रिकन्कनादि-चतुरनुयोगद्वाराणि

पुस्तक १५

सम्पादक

द्वीरालाल जैन

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या

१३ -

काल नं०

५५ -

स्थल

श्रीभगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलिप्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य

सत्कर्मान्तर्गतशेष-अष्टादश-अनुयोगद्वारेषु

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितानि

निबन्धन-प्रक्रम-उपक्रम-उदयाभिधेयानुयोगद्वाराणि

सम्पादकः—

वैशाली-प्राकृत-जैनविद्यापीठस्य प्राचार्यः
एम्. ए. एल् एल्. बी., डी. लिट्. इत्युपाधिधारी
हीरालालो जैनः

सहसम्पादकौ

पं० फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री ❁ पं० बालचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

संशोधने सहायकः

डा० नेमिनाथ-तनय-आदिनाथ उपाध्यायः

एम्० एम्०, डी० लिट्०

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालयः

भेलसा (म० प्र०)

वि० सं० २०१४]

वीर-निर्वाण-संवत् २४८३

[ई० सं० १९५७

मूल्यं द्वादशरूप्यकम्

प्रकारकः
श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय
भेलसा (म० प्र०)



मुद्रक—
ज्योतिषप्रकाश प्रेस,
वाराणसी ।

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALĪ

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. XV

Nibandhan-Prakram-Upakram-Udya Anuyogadwaras

Edited

with translation, notes and indexes

BY

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. Litt.

Director, Prakrit Jain Institute, Vaishali

Assisted by

Pandit Pnoolchandra,
Siddhanta Shastri,



Pandit Balchandra,
Siddhanta Shastri.

With the cooperation of

Dr. A. N. Upadhye, M. A., D. Litt.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sahitya Uddharak Fund Karyalaya.

Bhilsa (M. P.)

1957

Price rupees twelve only.

Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya,
Bhilsa (M. P.).



Printed by—
Jyotish Prakasha Prees,
Varanasi.

प्राक् कथन

यह पट्खण्डागमका एन्द्रहवाँ भाग प्रस्तुत है। इसके पश्चात् शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले सोलहवें भागमें इस ग्रन्थराजकी परिसमाप्ति हो जावेगी।

इन दोनों भागों की रचना ध्यान देने योग्य है। अप्रायणीय पूर्वके चयनलद्धि अधिकारके अन्तर्गत कर्मप्रकृतिप्राभुतके कृति, वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें से प्रथम ऋहपर ही भूतबलि स्वामी कृत सूत्र पाये जाते हैं। शेष अठारह अधिकारोंपर, सूत्र-रचना नहीं पाई जाती। इसकी पूर्ति धवल-कार श्री वीरसेन स्वामीने की है। इन शेष अठारह अनुयोगद्वारोंमें से प्रथम चार अर्थात् निबन्धन, प्रक्रम उपक्रम और उदय की प्ररूपणा प्रस्तुत भागमें की गई है। शेष मोक्ष, संक्रम आदि चौदह अनुयोगद्वारोंका प्ररूपणा अन्तिम भागमें प्रकाशित होगा।

इन चौबीस अनुयोगद्वारोंके मूल स्रोतका जो उल्लेख धवलकारने किया है उससे हमें महावीर भगवान्के गणधरों द्वारा रचित द्वादशांगके भीतर पूर्वों के विषय व विस्तारका कुछ सुस्पष्ट परिचय प्राप्त होता है। चौदह पूर्वोंमें द्वितीय पूर्वका नाम था आप्रायणीय, जिसके पूर्वान्त, अपरान्त आदि १४ अधिकारों में से पाँचवें अधिकारका नाम था चयनलद्धि। इसके बौस पाहुड थे जिनमें चतुर्थ पाहुडका नाम था कर्मप्रकृति। इसी कर्मप्रकृतिके कृति, वेदना आदि अल्पबहुत्व पर्यन्त वे चौबीस अनुयोगद्वार थे जिनकी संक्षेप प्ररूपणा पट्खण्डागमके वेदना, वर्गणा, मुहाबंध और महाबंध इन चार खंडोंमें पाई जाती है (देखिये प्रथम भागकी प्रस्तावना पृ० ७२)। इन अनुयोगद्वारोंके मूल पाठका ज्ञान परम्परागनुसार तो अन्तिम भुतकेवली भद्रवाहुके पश्चान् नष्ट हो गया था। तथापि उसके कुछ खंडोंका ज्ञान तो धरसेन स्वामीको भी था जिसका उपदेश उन्होंने पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंको दिया था। किन्तु धवल टीकाके रचयिता स्वामी वीरसेनने कहीं कहीं ऐसे उल्लेख किये हैं जिनसे प्रतीत होता है कि उनके समय तक भी पूर्वोंके मूल पाठ सर्वथा नष्ट नहीं हुए थे। उदाहरणार्थ, प्रस्तुत भागमें ही अकरणोपशामनाकी प्ररूपणा करते हुए उन्होंने कहा है कि “कर्मप्रवाद नामक आठवें पूर्वमें सब कर्मोंकी मूल व उत्तर प्रकृतियोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके अनुसार विपाक और अविपाक पर्यायोंका वर्णन खूब विस्तारसे किया गया है, वहाँ उसे देख लेना चाहिये” (पृ० २७५)। यदि आचार्यके समयमें उक्त मूल रचना उपलब्ध न होती तो ‘इस प्रकरणको वहाँ देख लेना चाहिये’ यह कहनेका कोई अर्थ नहीं रहता। दूसरे, भूतबलि आचार्यके सूत्र न रहनेपर भी जो उन्होंने शेष अठारह अधिकारोंकी प्ररूपणा की है उसका कुछ आधार तो उनके मनुमुख रहा ही होगा। जिम विषयपर उन्हें कोई आधार नहीं मिला वहाँ उन्होंने स्पष्ट कह दिया है कि इसका कोई उपदेश प्राप्त नहीं है (देखिये पृ० ८१, २१६ आदि)।

इस भागके साथ प्रस्तुत चार अनुयोगद्वारोंपर जो ‘पंजिका’ नामक टीका प्राप्त हुई है वह भी प्रकाशित की जा रही है। उसकी उत्थानिकासे ऐसा प्रतीत होता है कि वह समस्त शेष अठारह अनुयोगद्वारों-

(२)

पर लिखी गई है। किन्तु जो प्रति मूडविट्टीसे महाबंधकी प्रतिके साथ प्राप्त हुई है वह केवल इन्हीं चार अनुयोगद्वारांपर है। शेषकी खोज करना आवश्यक प्रतीत होता है।

ग्रंथ सम्पादन व प्रकाशनमें श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी, उनके सुपुत्र राजेन्द्रकुमार जी, पं० नाथूरामजी प्रेमी, श्री रतनचंदजी, नेमचंद जी तथा मेरे सहयोगियोंका साहाय्य पूर्ववत् चला आ रहा है जिसके लिये मैं उनका अनुगृहीत हूँ।

प्राकृत जैन विद्यापीठ,
मुजफ्फरपुर, विहार, १८-४-५७

हीरालाल जैन
(डायरेक्टर प्राकृत जैन विद्यापीठ वैशाली)

विषयपरिचय

अप्रायणीय पूर्वके १४ अधिकारोंमें पांचवाँ चयनलब्धि नामका अधिकार है। उसमें २० प्राभृत हैं। इनमें चतुर्थ प्राभृत कर्मप्रकृतिप्राभृत है। इसमें निम्न २४ अधिकार हैं—१ कृति, २ वेदना, ३ स्पर्श, ४ कर्म, ५ प्रकृति, ६ बन्धन, ७ निबन्धन, ८ प्रक्रम, ९ उपक्रम, १० उदय, ११ मोक्ष, १२ संक्रम, १३ लेश्या, १४ लेश्याकर्म, १५ लेश्यापरिणाम, १६ सातासात, १७ दीर्घ-ह्रस्व, १८ भवधारणीय, १९ पुद्गलात्त (पुद्गलात्म), २० निधित्त-अनिधित्त, २१ निकाचित-अनिकाचित, २२ कर्मस्थिति, २३ पश्चिमस्कन्ध और २४ अल्पबहुत्व। इन २४ अधिकारोंमेंसे प्रस्तुत पट्खण्डागम (मूल सूत्र) के वेदना नामक चतुर्थ खण्डमें कृति (पु. ६) और वेदनाकी (पु. १०-१२) तथा वर्गणा नामक पांचवें खण्डमें स्पर्श, कर्म और प्रकृति (पु. १३) अधिकारोंकी प्ररूपणा की गयी है।

बन्धन अनुयोगद्वार बन्ध, बन्धनीय, बन्धक और बन्धविधान इन ४ अवान्तर अनुयोगद्वारोंमें विभक्त है। इनमें से बन्ध और बन्धनीय अधिकारोंकी भी प्ररूपणा वर्गणाखण्ड (पु. १४) में की गयी है। बन्धक अधिकारकी प्ररूपणा खुदाबन्ध नामक द्वितीय खण्डमें तथा बन्धविधान नामक अवान्तर अधिकारकी प्ररूपणा महाबन्ध^१ नामक छठे खण्डमें की गयी है। इस प्रकार मूल पट्खण्डागममें पूर्वोक्त २४ अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम ६ अनुयोगद्वारोंके ही विषयका विवरण किया गया है। शेष निबन्धन आदि १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा यद्यपि मूल पट्खण्डागममें नहीं की गयी है फिर भी वर्गणाखण्डके अन्तिम सूत्रको देशामर्शक मानकर उनकी प्ररूपणा अपनी धवला टीका (पु. १५-१६) में वीरसेनाचार्य ने प्राप्त उपदेशके अनुसार संक्षेपमें कर दी है^२। इसका नाम सत्कर्म प्रतीत होता है^३।

उन शेष १८ अनुयोगद्वारोंमेंसे निबन्धन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय ये ४ (७-१०) अनुयोगद्वार पुस्तक १५ में प्रकाशित हो रहे हैं। तथा शेष १४ (११-२४) अनुयोगद्वार पुस्तक १६ में प्रकाशित किये जायेंगे। इनका विषयपरिचय संक्षेपमें इस प्रकार है—

७ निबन्धन—‘निबन्ध्यते तदस्मिन्निति निबन्धनम्’ इस निरुक्तिके अनुसार जो द्रव्य जिसमें निबद्ध है उसे निबन्धन कहा जाता है। निक्षेपयोजनामें इसके ये ६ भेद किये गये हैं—नामनिबन्धन,

१ इसके ५ भाग भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं और शेष २ भाग भी उक्त संस्थाके द्वारा शीघ्र प्रकाशित होनेवाले हैं।

२ भूदबल्लिभडारण्य जेखेदं मुत्तं देसामासियभावेण लिहितं तेणदेण मुत्तेण सूचिदसेसअट्ठारसअणियोगद्वाराणं किञ्चि सखेवेण परुवणं कस्सामो। पु. १५, पृ. १.

३ महाकम्मपयडि.....सव्वाणि परुचिदाणि। संतकम्मपंजियाकी उत्थानिका (पु. १५, परिशिष्ट पृ. १.)

स्थापनानिवन्धन, द्रव्यनिवन्धन, क्षेत्रनिवन्धन, कालनिवन्धन और भावनिवन्धन। इन सबके स्वरूपका विवरण करते हुए यहाँ नाम और स्थापना निवन्धनोंको छोड़कर शेष ४ निवन्धनोंको प्रकृत बतलाया है। साथमें यहाँ यह भी निर्देश किया गया है कि यद्यपि इस निवन्धन अनुयोगद्वारमें जहाँ द्रव्योंके निवन्धनकी प्ररूपणा की जाती है^१ फिर भी अध्यात्मविद्याका अधिकार होनेसे यहाँ उन सबको छोड़कर केवल कर्म-निवन्धन की ही प्ररूपणा यहाँ की गयी है। सर्वप्रथम यहाँ निवन्धन अनुयोगद्वारकी आवश्यकता प्रगट करते हुए यह बतलाया है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके द्वारा कर्मों और उनके मिथ्यात्वप्रभृति प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जा चुकी है। साथ ही कर्मरूप होनेकी योग्यता रखनेवाले पुद्गलोंका भी विवेचन किया ही जा चुका है। किन्तु उन कर्मोंकी प्रकृति कहाँ किस प्रकार होती है, यह नहीं बतलाया गया है। इसीलिये कर्मोंके इस व्यापारका प्ररूपणाके लिये प्रकृत निवन्धन अनुयोगद्वारका अवतार हुआ है।

नोआगमकर्मनिवन्धनके दो भेद हैं—मूलकर्मनिवन्धन और उत्तरकर्मनिवन्धन। इनमेंसे मूल-कर्मनिवन्धनमें ज्ञानावरणादि ८ मूल प्रकृतियोंके तथा उत्तरकर्मप्रकृतिनिवन्धनमें इन्हींके उत्तर भेदोंके निवन्धनकी प्ररूपणा की गयी है।

८ प्रक्रम—यहाँ निक्षेपयोजना करते हुए प्रक्रमके ये ६ भेद निर्दिष्ट किये गये हैं—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम। इनके कुछ और उत्तर भेदोंका उल्लेख करते हुए यहाँ कर्मप्रक्रमको अधिकार प्राप्त बतलाया है तथा 'प्रक्रामतीति प्रक्रमः' इस निरुक्तिके अनुसार प्रक्रमसे कार्मण पुद्गलप्रचयका अभिप्राय बतलाया है।

यहाँ यह शंका उठायी गयी है कि जिस प्रकार कुंभार एक मिट्टीके पिण्डसे अनेक घटादिकोंको उत्पन्न करता है उसी प्रकार यह संसारी प्राणी एक प्रकारके कर्मको बांधकर फिर उससे आठ प्रकारके कर्मों को उत्पन्न करता है, क्योंकि अन्यथा अकर्म पर्यायसे कर्मपर्यायका उत्पन्न होना सम्भव नहीं है। इसके उत्तरमें कहा गया है कि जब अकर्मसे कर्मकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है तब जिस एक कर्मसे आठ प्रकारके कर्मोंकी उत्पत्ति स्वीकार की जाती है वह एक कर्म भी कैसे उत्पन्न हो सकेगा? यदि उसे भी कर्मसे ही उत्पन्न माना जावेगा तो ऐसी अवस्थामें अनवस्थाजनित अव्यवस्था दुर्निवार होगी। इसलिये उसे अकर्मसे ही उत्पन्न मानना पड़ेगा। दूसरे, कार्य सर्वथा कारणके ही अनुरूप होना चाहिये, ऐसा एकान्त नियम नहीं बन सकता; अन्यथा मृत्तिकापिण्डसे घट-घटी आदि उत्पन्न न होकर मृत्तिकापिण्डके ही उत्पन्न होनेका प्रसंग अनिवार्य होगा। परन्तु चूँकि ऐसा होता नहीं है, अतएव कार्य कथंचित् (द्रव्यकी अपेक्षा) कारणके अनुरूप और कथंचित् (पर्यायकी अपेक्षा) उससे भिन्न ही उत्पन्न होता है, ऐसा स्वीकार करना चाहिये।

प्रसंग पाकर यहाँ सांख्याभिमत सत्कार्यवादका उल्लेख करके उसका निराकरण करते हुए 'नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि' इत्यादि आप्तमीमांसाकी अनेक कारिकाओंको उद्धृत करके तदनुसार नित्यत्वैकान्त और सर्वथा असत्कार्यवादका भी खण्डन किया गया है। इसके अतिरिक्त परस्पर निरपेक्ष अवस्थामें उभय (सत्-असत्) रूपता भी उत्पद्यमान कार्यमें नहीं बनती, इसका उल्लेख करते हुए स्याद्वादसम्मत सप्तभंगी की भी योजना की गयी है। इसी सिलसिलेमें बौद्धाभिमत क्षणक्षयित्वका उल्लेख कर उसका निराकरण करते हुए द्रव्यकी उत्पाद-व्यय-प्रौढ्यस्वरूपताको सिद्ध किया गया है।

पूर्वाक्त कारिकाओंके अभिप्रायानुसार पदार्थोंको सर्वथा सत् स्वीकार करनेवाले सांख्योंके यहाँ प्रागभावादिके असम्भव हो जानेसे जिस प्रकार अनादिता, अनन्तता, सर्वात्मकता और निःस्वरूपताका

प्रसंग दुर्निवार है उसी प्रकार सर्वथा अभाव (शून्यैकान्त) को स्वीकार करनेवाले माध्यमिकोंके यहाँ अनुमानादि प्रमाणके असम्भव होनेसे स्वपक्षकी सिद्धि और परपक्षको दूषित न कर सकनेका भी प्रसंग अनिवार्य होगा। परस्पर निरपेक्ष उभयस्वरूपता (सदसदात्मकता) को स्वीकार करनेवाले भाट्टोंके समान सांख्योंके यहाँ भी परस्परपरिहागस्थितिलक्षण विरोधकी सम्भावना है ही। कारण कि वह (उभयस्वरूपता) म्यादाद् मिद्धान्तको स्वीकार किये बिना बन नहीं सकती। पूर्वोक्त दोषोंके परिहारकी इच्छासे बौद्ध जो सर्वथा अनिर्वचनीयताको स्वीकार करते हैं वे भी भला 'तत्र अनिर्वचनीय है' इस प्रकारके वचनके बिना अपनी अभीष्ट तन्वयवस्थाका बोध दूसरोंको किन प्रकारसे करा सकेंगे ? इस प्रकार सर्वथा सदसदादि एकान्त पक्षोंकी नमीक्षा करते हुए यहाँ इन सात भंगोंकी योजना की गयी है। यथा—

१ स्वद्रव्य; क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वस्तु कथंचित् सत् ही है। २ वही परद्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा कथंचित् अमत् ही है। ३ क्रमसे स्वद्रव्यादि और परद्रव्यादिकी विवक्षा होनेपर वह कथंचित् सदमत् (उभय स्वरूप) ही है। ४ युगपत् स्वद्रव्यादि और परद्रव्यादि दोनोंकी विवक्षामें वस्तु कथंचित् अवाच्य ही है। इन चार मुख्य भंगोंका निर्देश तो 'कथंचित्ते सदेवेष्टं' इत्यादि कारिकामें ही कर दिया गया है। शेष तीन भंग 'च' शब्दसे सूचित कर दिये गये हैं। वे इस प्रकार हैं— ५ कथंचित् वस्तु सत् और अवक्तव्य ही है। ६ कथंचित् वह अमत् और अवक्तव्य ही है। ७ कथंचित् वह सत्-अमत् और अवक्तव्य ही है। इन तीन भंगोंमें यथाक्रमसे स्वद्रव्यादि तथा युगपत् स्व-परद्रव्यादि, परद्रव्यादि तथा युगपत् स्व-परद्रव्यादि और क्रमसे स्व-परद्रव्यादि तथा युगपत् स्व-परद्रव्यादिकी विवक्षा की गयी है।

यहाँ जो आप्तमीमांसाकी 'कथंचित् ते सदेवेष्टं' आदि कारिका उद्धृत की गयी है ठीक उसी प्रकारकी प्राकृत गाथा पंचास्तिकाय में पायी जाती है। यथा—

सिय अत्थि एत्थि उभयं अवक्तव्यं पुणो य तत्तिदयं ।

द्वयं सु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि ॥

प्रकृतिप्रक्रम, स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमके भेदसे प्रक्रम तीन प्रकारका बतलाया गया है। इनमें प्रकृतिप्रक्रमको भी मूलप्रकृतिप्रक्रम और उत्तरप्रकृतिप्रक्रम इन दो भेदोंमें विभक्त कर यथाक्रमसे उनके अल्पबहुत्वकी यहाँ प्ररूपणा की गयी है। अन्तमें स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमकी भी संक्षेपमें प्ररूपणा करके इस अनुयोगद्वारको समाप्त किया गया है।

६ उपक्रम—प्रक्रमके समान ही उपक्रमके भी ये छह भेद निर्दिष्ट किये गये हैं—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम। यहाँ कर्मप्रक्रमका अधिकार प्राप्त बतलाकर उसके ये चार भेद निर्दिष्ट किये गये हैं—बन्धनोपक्रम, उद्गारणोपक्रम, उपरामनोपक्रम और विपरिणामोपक्रम। यहाँ प्रक्रम और उपक्रममें विशेषताका उल्लेख करते हुए यह बतलाया है कि प्रक्रम प्रकृति, स्थिति और अनुभागमें आनेवाले प्रदेशाप्रकी प्ररूपणा करता है जब कि उपक्रम बन्ध होनेके द्वितीय समयमें लेकर सत्त्व स्वरूपसे स्थित कर्मपुद्गलोंके व्यापारकी प्ररूपणा करता है।

बन्धनोपक्रमके भी यहाँ प्रकृति व स्थिति आदिके भेदसे चार भेद बतलाकर उनकी प्ररूपणा सत्कर्मप्रकृतिप्राभृतके समान करना चाहिये, ऐसा उल्लेखमात्र किया है। यहाँ यह आशंका उठायी गयी है कि इनकी प्ररूपणा जैसे महाबन्धमें की गयी है तदनुसार ही वह यहाँ क्यों न की जाय ? इसके समाधानमें बतलाया है कि महाबन्धमें चूँकि प्रथम समय सम्बन्धी बन्धका आश्रय लेकर वह प्ररूपणा की गयी है अतएव तदनुसार यहाँ उनकी प्ररूपणा करना इष्ट नहीं है।

उदीरणा--उदयावलीबाह्य स्थितिको आदि लेकर आगेकी स्थितियोंके बन्धावली अतिक्रान्त प्रदेश-पिण्डका पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रतिभागसे या असंख्यात लोक प्रतिभागसे अपकर्षण करके उसको उदयावलीमें देना, इसे उदीरणा कहा जाता है। अभिप्राय यह है कि उदयावलीको छोड़कर आगेकी स्थितियोंमेंसे प्रदेशपिण्डको खींचकर उसे उदयावलीमें प्रक्षिप्त करनेको उदीरणा कहते हैं। वह दो प्रकारकी है--एक-एक-प्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा। एक-एक प्रकृतिउदीरणाकी प्ररूपणामें प्रथमतः उसके स्वामियोंका विवेचन किया गया है। उदाहरणार्थ ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्मोंकी उदीरणाके स्वामीका निर्देश करते हुए बतलाया है कि इन कर्मोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होती है। विशेषता इतनी है कि क्षीणकषायके कालमें एक समय अधिक आवलीमात्र शेष रहनेपर उनकी उदीरणा व्युत्क्रान्त हो जाती है।

तत्पश्चात् एक-एकप्रकृतिउदीरणाविषयक एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। नाना जीवोंकी अपेक्षा उसके अन्तर्ग की सम्भावना ही नहीं है। एक एक प्रकृतिका अधिकार होनेसे यहाँ भुजाकार-पदनिक्षेप और वृद्धि उदीरणाकी भी सम्भावना नहीं है।

प्रकृतिस्थान उदीरणाकी प्ररूपणामें स्थानसमुत्कीर्तना करते हुए मूल प्रकृतियोंके आधारसे ये पांच प्रकृतिस्थान बतलाये गये हैं--आर्यों प्रकृतियोंकी उदीरणारूप पहिला, आपृके विना शेष सात प्रकृतियों रूप दूसरा; आयु और वेदनीयके विना शेष छह प्रकृतियोंरूप तीसरा; मोहनीय, आयु और वेदनीयके विना शेष पांच प्रकृतियोंरूप चौथा; तथा ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायके विना शेष दो प्रकृतियोंरूप पांचवां।

स्वामित्वप्ररूपणामें उक्त स्थानोंके स्वामियोंका निर्देश करते हुए बतलाया है कि इनमेंसे प्रथम स्थान, तिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट नहीं है ऐसे प्रमत्त (मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तमंथन तक प्रमाद युक्त) जीवके होता है। द्वितीय स्थान भी उक्त जीवके ही होता है। विशेषता केवल इतनी है कि उसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट होना चाहिये। तीसरा स्थान सातवें गुणस्थानसे लेकर दमवें गुणस्थान तक होता है। चौथे स्थानका स्वामी छद्मस्थ वीतराग (उपशान्तकषाय और क्षीणमोह) जीव होता है। विशेष इतना है कि वह क्षीणमोहके कालमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रह जानेके पहिले पहिले ही होता है, उसके पश्चात् नहीं। पाँचवें (नाम व गोत्र प्रकृतिरूप) स्थानके स्वामी सयोगकेवली हैं।

तत्पश्चात् प्रकृतिस्थान उदीरणाकी ही प्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा अल्पबहुत्वका विचार किया गया है।

भुजाकारउदीरणाकी प्ररूपणामें अर्थपदका कथन करते हुए बतलाया है कि अनन्तर अतिक्रान्त समयमें थोड़ी प्रकृतियोंकी उदीरणा करके इस समय उनसे अधिक प्रकृतियोंकी उदीरणा करना इसे भुजाकार (भृयस्कार) उदीरणा कहते हैं। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें अधिक प्रकृतियोंकी उदीरणा करके इस समय उनसे कम प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेका नाम अल्पतरउदीरणा है। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा कर रहा था इस समय भी उतनी ही प्रकृतियोंकी उदीरणा करना—उनसे हीन या अधिककी उदीरणा न करना—इसे अवस्थितउदीरणा कहा जाता है। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें अनुदीरक होकर इस समयमें की जानेवाली उदीरणाका नाम अवक्तव्य उदीरणा है।

स्वामित्वप्ररूपणामें यह बतलाया गया है कि भुजाकारउदीरणा, अल्पतरउदीरणा और अवस्थित

उदीरणाका स्वामी कोई भी मिथ्यादृष्टि अथवा सम्यग्दृष्टि जीव हो सकता है। अवक्तव्य उदीरणाका स्वामी सम्भव नहीं है।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणामें भुजाकार उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र बतलाया है जो इस प्रकारसे सम्भव है—कोई उपशान्तकषाय जीव वहाँसे च्युत होकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती हुआ। वहाँ वह पाँचसे छह प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेके कारण भुजाकार उदीरक हो गया। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ। पुनः वही द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें वह छह प्रकृतियोंसे आठका उदीरक होकर भुजाकार उदीरक ही रहा। यहाँ भुजाकार उदीरणाका द्वितीय समय प्राप्त हुआ। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट काल दो समय मात्र प्राप्त होता है।

अल्पतर उदीरणाका भी काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। वह इस प्रकारसे—प्रमत्तसंयतके अन्तिम समयमें आयुक्रमके उद्यावलीमें प्राविष्ट हो जानेपर वह आठसे सात प्रकृतियोंकी उदीरणा करता हुआ अल्पतर उदीरक हो गया। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वह वेदनीय कर्मके विना द्रह प्रकृतियाकी उदीरणा करता हुआ अल्पतर उदीरक ही रहा। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाका काल भी उत्कर्षसे दो समय मात्र ही पाया जाता है।

अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक एक आवलीसे हीन तैतीस सागरोपमप्रमाण है। देवामें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें पाँच, छह या सातसे आठका उदीरक होकर भुजाकार उदीरक हुआ। पुनः द्वितीय समयसे लेकर मरणावली प्राप्त होने तक अवस्थितरूपसे आठका ही उदीरक रहा। इस प्रकार अवस्थित उदीरणाका उत्कृष्ट काल प्रथम समय और अन्तिम आवलीको छोड़कर पूर्ण देव पर्यायप्रमाण तैतीस सागरोपम मात्र प्राप्त हो जाता है।

अन्तरप्ररूपणामें भुजाकार उदीरणाके अन्तरपर विचार करते हुए उसका जघन्य अन्तर एक या दो समय मात्र बतलाया है। यथा—पाँच प्रकृतियोंका उदीरक कोई उपशान्तकषाय नीचे गिरता हुआ सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छहका उदीरक हुआ। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें भी वह छहका ही उदीरक रहा। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अवस्थित उदीरणास अन्तर हुआ। पुनः तृतीय समयमें मरकर वह देवोंमें उत्पन्न हो आठका उदीरक होकर भुजाकार उदीरणा करने लगा। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका एक समयमात्र जघन्य अन्तर प्राप्त हो जाता है। उसका उत्कृष्ट अन्तर एक समय कम तैतीस सागरोपम प्रमाण है। वह इस प्रकारसे—कोई जीव तैतीस सागरोपम आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होकर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरक हुआ और द्वितीय समयसे लेकर मरणावली प्राप्त होनेके पूर्व समय तक वह अवस्थित उदीरक रहा। इस प्रकार उसका इतना अन्तर अवस्थित उदीरणासे हुआ। तत्पश्चात् मरणावलीके प्रथम समयमें वह आयुके विना सात प्रकृतियोंका उदीरणा करता हुआ अल्पतर उदीरक हो मरणावली कालके अन्तिम समय तक अवस्थित उदीरक रहा। तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें पुनः भुजाकार उदीरक हुआ। इस प्रकार भुजाकार उदीरणा का अवस्थित और अल्पतर उदीरणाओंसे एक समय कम पूरे तैतीस सागरोपम काल तक अन्तर रहा।

आगे चलकर इसी भुजाकार उदीरणाकी प्ररूपणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी अतिसंक्षेपमें प्ररूपणा करते हुए भागाभग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और भाव; इन सबकी जानकर प्ररूपणा करनेका निर्देशमात्र किया गया है।

पदनिक्षेपप्ररूपणामें भुजाकार उद्दीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि आदि किसके होनी है, इसका कुछ विवेचन करते हुए प्रकृत हानि-वृद्धि आदिके अल्पबहुत्वका निर्देश मात्र किया गया है।

वृद्धिउद्दीरणाप्ररूपणामें संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और अवस्थित उद्दीरणा इन चार पदोंके अस्तित्वका उल्लेखमात्र करके शेष प्ररूपणा जानकर करना चाहिये (सेसं जाणिऊण वत्तव्वं) इतना मात्र निर्देश करते हुए मूलप्रकृतिउद्दीरणाकी प्ररूपणा समाप्त की गयी है।

मूलप्रकृतिउद्दीरणाके समान उत्तर प्रकृतिउद्दीरणा भी दो प्रकारकी है—एक-एक प्रकृतिउद्दीरणा और प्रकृतिस्थानउद्दीरणा। इनमें प्रथमतः एक-एक प्रकृतिउद्दीरणाकी प्ररूपणा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर इन अधिकारोंके द्वारा की गयी है। आठ कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियोंमेंसे किस-किस प्रकृतिके कौन कौनसे जीव उद्दीरक होते हैं, इसका विवेचन स्वामित्वमें किया गया है। एक जीवकी अपेक्षा कालके कथनमें यह बतलाया है कि अमुक अमुक प्रकृतिकी उद्दीरणा एक जीवके आश्रयसे निरन्तर जघन्यतः इतने काल और उत्कर्षतः इतने काल तक होती है। एक जीवकी अपेक्षा विवक्षित प्रकृतिकी उद्दीरणाका अन्तर जघन्यसे कितना और उत्कर्षसे कितना होता है, इसका विचार एक जीवकी अपेक्षा अन्तरके निरूपणमें किया गया है। मतिज्ञानावरणादि प्रकृतियोंकी उद्दीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा कितने भंग सम्भव हो सकते हैं, इसका विचार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयमें किया गया है। उदाहरणके रूपमें पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंके उद्दीरक कदाचित् सब जीव हो सकते हैं, कदाचित् बहुत उद्दीरक और एक अनुद्दीरक होता है तथा कदाचित् बहुत जीव उद्दीरक और बहुत ही जीव अनुद्दीरक भी होते हैं। इस प्रकार यहाँ तीन भंग संभव हैं। नाना जीव यदि विवक्षित प्रकृतिकी उद्दीरणा करें तो कमसे कम कितने काल और अधिकसे अधिक कितने काल करेंगे, इसका विचार 'नाना जीवोंकी अपेक्षा काल'में किया गया है। इसी प्रकार नाना जीव विवक्षित प्रकृतिको छोड़कर अन्य प्रकृतिकी उद्दीरणा करते हुए यदि फिरसे उक्त प्रकृतिकी उद्दीरणा प्रारम्भ करते हैं तो कमसे कम कितने कालमें और अधिकसे अधिक कितने कालमें करते हैं, इसका विवेचन नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरमें किया गया है।

संनिकर्ष—एक-एक प्रकृति उद्दीरणाकी ही प्ररूपणाको चालू रखते हुए संनिकर्षका भी यहाँ कथन किया गया है। यह संनिकर्ष स्वस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकारका निर्दिष्ट किया गया है। स्वस्थान संनिकर्षके विवेचनमें ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंमें किसी एक कर्मकी उत्तर प्रकृतियोंमेंसे विवक्षित प्रकृतिको उद्दीरणा करनेवाला जीव उसकी ही अन्य शेष प्रकृतियोंका उद्दीरक होता है या अनुद्दीरक इसका विचार किया गया है। जैसे—मतिज्ञानावरणकी उद्दीरणा करनेवाला शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंका भी नियमसे उद्दीरक होता है। अक्षुदर्शनावरणकी उद्दीरणा करनेवाला अक्षुदर्शनावरण, अर्वाधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरण इन तीन दर्शनावरण प्रकृतियोंका नियमसे उद्दीरक तथा शेष पाँच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह कदाचित् उद्दीरक होता है। परस्थानसंनिकर्षमें आठों कर्मोंकी समस्त उत्तर प्रकृतियोंमेंसे किसी एककी विवक्षा कर शेष सभी प्रकृतियोंकी उद्दीरणा अनुद्दीरणाका विचार किया जाना चाहिये था। परन्तु सम्भवतः उपदेशके अभावमें वह यहाँ नहीं किया जा सका है, उसके सम्बन्धमें यहाँ केवल इतनी मात्र सूचना की गयी है कि 'परत्थाणसणियासो जाणियूण वत्तव्वो' अर्थात् परस्थान संनिकर्षका कथन जानकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्व—यह अल्पबहुत्व भी स्वस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकारका है। इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें ज्ञानावरणादि एक-एक कर्मकी पृथक्-पृथक् उत्तर प्रकृतियोंके उद्दीरकोंकी हीनाधिताका

विचार किया गया है। परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणमें समस्त कर्मप्रकृतियोंके उदीरकोंकी हीनाधिकताका विचार सामान्य स्वरूपसे किया जाना चाहिये था। परन्तु उसका भी विवेचन यहाँ सम्भवतः उपदेशके अभावसे ही नहीं किया जा सका है। इतना ही नहीं, बल्कि स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणमें भी केवल ज्ञानावरण, दर्शनावरण और वेदनीय इन तीन ही कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियोंके आश्रयसे उपर्युक्त अल्पबहुत्वकी प्ररूपण की जा सकी है, शेष मोहनीय आदि कर्मोंके आश्रयसे वह भी नहीं की गयी है। यहाँ उसके सम्बन्धमें इतनी मात्र सूचना की गयी है 'उपरि उपदेश लहिष वत्तव्वं। परत्थाणपात्रहुगं जाणिय वत्तव्वं' अर्थात् आगे मोहनीय आदि शेष कर्मोंके सम्बन्धमें प्रकृत स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपण उपदेश पाकर करना चाहिये। परस्थान अल्पबहुत्वका कथन जानकर करना चाहिये।

यहाँ एक-एक प्रकृतिकी विवक्षा होनेसे भुजाकर, पदान्तिष्ठे और वृद्धि प्ररूपणाओंकी असम्भावना प्रगट की गयी है।

प्रकृतिस्थानउदीरणा—यहाँ ज्ञानावरण आदि एक-एक कर्मकी अलग-अलग उत्तर प्रकृतियोंका आश्रय करके जितने उदीरणास्थान सम्भव हों उनके आधारसे स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर तथा अल्पबहुत्वका विचार किया गया है। उदाहरण स्वरूप मोहनीय कर्मका स्थानउदीरणामें एक, दो, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ और दस प्रकृति रूप नौ स्थानोंको सम्भावना है। उनमें एक प्रकृति रूप उदीरणास्थानके चार भंग हैं—संज्वलन क्रोधके उदयसे प्रथम भंग, मानसंज्वलनके उदयसे दूसरा भंग, मायासंज्वलनके उदयसे तीसरा भंग, और लोभसंज्वलनके उदयसे चौथा भंग। इन भंगोंका कारण यह है कि इन चारों प्रकृतियोंमें से विवाचित्त समयमें किसी एककी ही उदीरणा हो सकती है। दो प्रकृतिरूप स्थानके उदीरकके बारह भंग होते हैं—इसका कारण यह है कि विवाचित्त समयमें तीन वेदोंमें से किसी एक ही वेदकी उदीरणा हो सकेगी तथा उसके साथ उक्त चार संज्वलन कषायोंमें से किसी एक संज्वलन कषायकी भी उदीरणा होगी। इस प्रकार दो प्रकृतिरूप स्थानका उदीरणामें बारह ($4 \times 2 = 8$) भंग प्राप्त होते हैं। चार प्रकृतिरूप स्थानकी उदीरणामें चौबीस भंग होते हैं। वे इस प्रकारसे—तीन वेदोंमें से कोई एक वेद प्रकृति, चार संज्वलन कषायोंमें से कोई एक, तथा इनके साथ हास्यरति या अरति-शोक इन दो युगलोंमें से कोई एक युगल रहेगा। इस प्रकार चार प्रकृतिरूप स्थानके चौबीस ($2 \times 4 \times 2 = 16$) प्राप्त होते हैं। इस चार प्रकृतिरूप स्थानमें भय, जुगुप्सा, सम्यक्त्व प्रकृति अथवा प्रत्याख्यानावरणाद चारोंमें से किसी एक प्रत्याख्यानावरण कषायके सम्मिश्रित होनेपर पाँच प्रकृतिरूप स्थानके चार चौबीस ($2 \times 4 \times 4 = 32$) भंग होते हैं। इसी प्रकारसे आगे भी छह प्रकृतिरूप स्थानके सात चौबीस ($2 \times 4 \times 7 = 56$), सात प्रकृतिरूप स्थानके दस चौबीस ($2 \times 4 \times 10 = 80$), आठ प्रकृतिरूप स्थानके ग्यारह चौबीस ($2 \times 4 \times 11 = 88$), नौ प्रकृतिरूप स्थानके छह चौबीस ($2 \times 4 \times 6 \times 11 = 132$), तथा दस प्रकृतिरूप स्थानके एक चौबीस ($2 \times 4 \times 1 = 8$) भंग होते हैं। इस प्रकार मोहनीय कर्मकी स्थान उदीरणामें प्रथमतः स्थान समुत्कीर्तना करके तत्पश्चात् स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंके द्वारा उसकी प्ररूपण की गयी है।

इसी प्रकारसे ज्ञानावरणादि अन्य कर्मोंके भी विषयमें पूर्वोक्त स्वामित्व आदि अधिकारोंके

द्वारा यथासम्भव स्थान उद्दीरणाकी प्ररूपणा की गयी है। वेदनीय और आयु कर्मोंके स्थान उद्दीरणाकी सम्भावना नहीं है।

भुजाकार उद्दीरणा—यहाँ प्रथमतः दर्शनावरणके सम्बन्धमें भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य इन चारों ही उद्दीरणाओंके अस्तित्वकी सम्भावना बतला कर तत्परचात् उनके स्वामी, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल व अन्तरका तथा अल्पबहुत्वका संक्षेपमें विवेचन किया गया है। आगे चलकर इसी क्रमसे मांहनीयके सम्बन्धमें भी भुजाकार उद्दीरणाकी प्ररूपण करके उसे यहीं समाप्त कर दिया है। नामकर्म आदि अन्य कर्मोंके सम्बन्धमें उक्त प्ररूपण नहीं की गयी है। इसके पश्चात् अति संक्षेपमें पदनिक्षेप और वृद्धिप्ररूपणा करके प्रकृतिउद्दीरणाकी प्ररूपणा समाप्त की गयी है।

स्थितिउद्दीरणा—यह भी मूलप्रकृतिस्थितिउद्दीरणा और उत्तरप्रकृतिस्थितिउद्दीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है। मूलप्रकृतिस्थितिउद्दीरणामें मूल प्रकृतियोंके आश्रयसे स्थिति उद्दीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट प्रमाण बतलाया गया है। जम्मे—ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तराय इन चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिउद्दीरणा दो आवलियोंसे कम तास कोड़कोड़ सागरोपम प्रमाण है। यहाँ उत्कृष्ट स्थितिउद्दीरणामें दो आवली कम बतलानेका कारण यह है कि बन्धावली और बद्ध्यावलीगत स्थिति उद्दीरणाके अयोग्य होती है। जघन्य स्थितिउद्दीरणा ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायकी एक स्थिति मात्र है जो कि ऐसे क्षणिकपाय जावके पाया जाता है जिसे अन्तिम समयवर्ती क्षणिकपाय होनेमें एक समय अधिक एक आवली काल शेष है। मांहनीयकी जघन्य स्थिति उद्दीरणा भी एक स्थितिमात्र है जो कि ऐसे सूक्ष्मसाम्परायिक क्षणिकके पाया जाती है जिसके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र स्थिति शेष रही है। वेदनीयकी जघन्य स्थितिउद्दीरणा पत्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन बटे सात (३) सागरोपमप्रमाण है।

जिस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउद्दीरणामें मूलप्रकृतियोंके आश्रयसे यह प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकारसे उत्तर प्रकृति स्थिति उद्दीरणामें उत्तर प्रकृतियोंके आश्रयसे उक्त प्ररूपणा की गयी है।

स्वामित्व—पाँच ज्ञानावरण आदि प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थितिके उद्दीरक कौन और किस अवस्थामें होते हैं, इसका विचार स्वामित्वप्ररूपणामें किया गया है।

एक जीवकी अपेक्षा काल—उक्त पाँच ज्ञानावरण आदि प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट तथा जघन्य और अजघन्य स्थितिउद्दीरणा जघन्यसे कितने काल और उत्कर्षसे कितने काल होती है, इसका विचार यहाँ कालप्ररूपणामें किया गया है। उदाहरणके रूपमें जैसे पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति की उद्दीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र होती है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति उद्दीरणाका काल जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनरूप अनन्त काल है। उन्हींकी जघन्य स्थितिउद्दीरणाका काल जघन्यसे भी एक समय मात्र है और उत्कर्षसे भी एक समय मात्र ही है। इनकी अजघन्य स्थितिउद्दीरणाका काल अभव्य जीवोंकी अपेक्षा अनादि-अपर्यवसित और भव्य जीवोंकी अपेक्षा अनादि-सपर्यवसित है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर—जिस प्रकार काल प्ररूपणामें उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य स्थितिउद्दीरणाओंके कालका कथन किया गया है उसी प्रकार अन्तर प्ररूपणामें उनके अन्तरका विचार किया गया है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय—यहाँ अर्थपदके बथनमें यह बतलाया है कि जो जीव उत्कृष्ट स्थितिके उद्दीरक होते हैं वे अनुत्कृष्ट स्थितिके अनुद्दीरक होते हैं और जो अनुत्कृष्ट स्थितिके उद्दीरक होते हैं

वे उत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं। इसी प्रकारसे जो जघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे अजघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं तथा जो अजघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे जघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं। इस प्रकार अर्थपदका उल्लेख करके तत्पश्चात् किन प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा आदिमें किनने भंग होते हैं, इसका विचार किया गया है। जैसे—पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत अनुदीरक और एक उदीरक होता है तथा कदाचित् बहुत अनुदीरक और बहुत ही उदीरक होते हैं। इस प्रकार उनकी उत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंमें तीन भंग पाये जाते हैं। अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंमें भी तीन ही भंग पाये जाते हैं। किन्तु वे विपरीत क्रमसे पाये जाते हैं। यथा—अनुत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक एक अनुदीरक तथा कदाचित् बहुत उदीरक व बहुत अनुदीरक होते हैं।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरको प्ररूपणा न करके यहाँ केवल इतना उल्लेख भर किया गया है कि उनकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा की गयी पूर्वोक्त भंगविषयप्ररूपणासे ही सिद्ध करके करना चाहिये।

संनिकर्ष—मतिज्ञानावरण प्रकृतिको प्रधान करके उसकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला जीव अन्य सब प्रकृतियोंमें किम-किस प्रकृतिकी स्थितिका उदीरक या अनुदीरक होता है, तथा यदि उदीरक होता है तो क्या उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है या अनुत्कृष्ट स्थितिका: इसका विचार यहाँ किया गया है। उदाहरणार्थ—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरणकी स्थितिका नियमसे उदीरक होता है। उदीरक होकर भी वह उसकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों ही स्थितियोंका उदीरक होता है। अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता हुआ उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कम, दो समय कम, तीन समय कम, इत्यादि क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे हीन अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अवधिज्ञानावरणादि शेष तीन ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण तथा साता व असातावेदनीय आदि सभी प्रकृतियोंकी स्थिति उदीरणाका तुलनात्मक विचार यहाँ संनिकर्षप्ररूपणामें किया गया है। इस प्रकार मतिज्ञानावरणकी प्रधानतासे पूर्वोक्त प्ररूपणा कर चुकनेके बाद यहाँ यह उल्लेख मात्र किया गया है कि शेष प्रवचनो प्रकृतियोंमेंमे एक एकको प्रधान कर उनके संनिकर्षकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके ही समान करना चाहिये।

तत्पश्चात् यहाँ कुछ प्रकृतियोंके संनिकर्षके कहनेकी प्रतिज्ञा करके सम्भवतः सातावेदनीयको प्रधान करके (प्रकृतियोंमें यह उल्लेख पाया नहीं जाता, सम्भवतः वह खलित हो गया है) भी पूर्वोक्त प्रकारसे संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है। यह उत्कृष्ट पद विषयक संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है। जघन्य पद विषयक संनिकर्षकी प्ररूपणाके सम्बन्धमें इतना मात्र उल्लेख किया गया है कि उसकी प्ररूपणा विचारकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्व—यहाँ प्रथमतः सामान्य (ओष) स्वरूपसे सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा विषयक अल्पबहुत्वका विवेचन करते हुए तदनुसार आदेशकी अपेक्षा गत्यादि मार्गणाओंमें भी पूर्वोक्त अल्पबहुत्वके कथन करनेका उल्लेख किया गया है। तत्पश्चात् ओष और फिर आदेश रूपसे जघन्य स्थिति उदीरणा विषयक अल्पबहुत्वकी भी प्ररूपणा की है।

भुजाकार स्थिति उदीरणा—यहाँ पहिले अर्थपदका विवेचन करते हुए यह बतलाया है कि अल्पतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें बहुत स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार स्थिति उदीरणा होती है। बहुत स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें अल्प स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह अल्पतर स्थिति उदीरणा कही जाती है। जितनी स्थितियोंकी उदीरणा इस समय की गयी है

आगेके अन्तर समयमें भी उतनी ही स्थितियों की उदीरणा की जानेपर यह अवस्थित उदीरणा कहलाती है। जिसने पहिले स्थितिउदीरणा नहीं की है किन्तु अब कर रहा है उसकी यह उदीरणा अवक्तव्य उदीरणा कही जाती है। इस प्रकारसे अर्थपदका कथन करके तत्पश्चात् यहाँ भुजाकार स्थितिउदीरणाका प्ररूपणा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंके द्वारा यथासम्भव को गयी है। तत्पश्चात् पदनिक्षेपका संक्षिप्त विवेचन करते हुए वृद्धिउदीरणाकी प्ररूपणाके इन अधिकारोंके द्वारा जानकर करनेका संकेतमात्र किया है--स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तर। इसके बाद फिर इसी वृद्धिप्ररूपणाके आश्रयसे अल्पबहुत्वका विचार विस्तारसे किया गया है।

अनुभागउदीरणा--अनुभागउदीरणाको मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणा इन दो भेदोंमें विभक्त करके उनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन जानकर करनेका उल्लेख मात्र किया गया है। उत्तरप्रकृति-अनुभाग उदीरणाकी प्ररूपणामें इन २४ अनुयोगद्वारोंका निर्देश करके यह कहा गया है कि इन अनुयोग-द्वारोंका कथन करके तत्पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थानका भी कथन करना चाहिये। वे अनुयोगद्वार ये हैं-- १ संज्ञा, २ सर्वउदीरणा, ३ नानासर्वउदीरणा, ४ उत्कृष्ट उदीरणा, ५ अनुत्कृष्ट उदीरणा, ६ जघन्य उदीरणा, ७ अजघन्य उदीरणा, ८ सादिउदीरणा, ९ अनार्दिउदीरणा, १० ध्रुवउदीरणा, ११ अध्रुवउदीरणा, १२ एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, १३ एक जीवकी अपेक्षा काल, १४ एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, १५ नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, १६ भागाभागात्तुगम, १७ परिमाण, १८ क्षेत्र, १९ स्पर्शन, २० नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, २१ नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, २२ भाव, २३ अल्पबहुत्व और २४ संनिकर्ष।

इनमें संज्ञाके घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा इन दो भेदोंका निर्देश करके फिर घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा करते हुये यह बतलाया है कि आभिनिवोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरण इन चारकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती एवं देसघाती भी होती है। केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती ही होती है। इसी प्रकारसे दर्शनावरण आदि अन्य अन्य प्रकृतिभेदोंके सम्बन्धमें भी इस घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा की गयी है।

स्वामित्व—यहाँ ये चार अनुयोगद्वार निर्दिष्ट किये गये हैं—प्रत्ययप्ररूपणा, विपाकप्ररूपणा, स्थान-प्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा। प्रत्ययप्ररूपणामें यह बतलाया है कि पाँच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, तीन दर्शनमोहनीय और सोलह कपायकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है। नौ कपायोंकी पूर्वानुपूर्वीसे असंख्यातवें भाग प्रमाण परिणामप्रत्ययिक तथा पश्चादानुपूर्वीसे असंख्यात बहुभाग प्रमाण भवप्रत्ययिक है। साता व असाता वेदनीय, चार आयु कर्म, चार गति और पाँच जातिकी उदीरणा भवप्रत्ययिक है। औदारिकशरीरकी उदीरणा तिर्यञ्च और मनुष्योंके भवप्रत्ययिक है। वैकियिकशरीरकी उदीरणा देव-नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यच-मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक है। इसी क्रमसे आगे भी यह प्ररूपणा की गयी है।

विपाकप्ररूपणामें बतलाया है कि जैसे पहले निबन्धनकी प्ररूपणा की गयी है (देखिये पृ. १७४) उसी प्रकार यहाँ विपाककी भी प्ररूपणा करना चाहिये। स्थानप्ररूपणामें मतिज्ञानावरणादि प्रकृतियोंकी उदीरणाके उत्कृष्ट आदि भेदोंमें एकस्थानिक और द्विस्थानिक आदि अनुभागस्थानोंकी सम्भावना बतलायी गयी है। शुभाशुभप्ररूपणामें पुण्य-पापरूप प्रकृतियोंका नामोल्लेख मात्र किया गया है।

इसके पश्चात् मतिज्ञानवराणादि प्रकृतियोंके उत्कृष्ट-अनुकृष्ट आदि उदीरणा भेदोंके स्वामियोंकी प्ररूपणा यथाक्रमसे की गयी है। आगे इसी क्रमसे पूर्वोक्त उत्कृष्ट, अनुकृष्ट, जघन्य एवं अजघन्य उदीरणा भेदोंके एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा स्वस्थान व परस्थान संनिकर्षकी भी प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार पूर्वोक्त २४ अनयोगद्वारोंमें इतने अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करके शेष अनुयोगद्वारोंके सम्बन्धमें यह कह दिया है कि उनकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। अन्तमें अल्पबहुत्व (२३ वें) अनुयोग-द्वारकी प्ररूपणा विस्तारसे की गयी है।

भुजाकार अनुभागउदीरणा--यहाँ अर्थपदकी प्ररूपणा करते हुए यह बतलाया है कि अनन्तर अतिक्रान्त समयमें अल्पतर स्पर्धकोंकी उदीरणा करके यदि इस समयमें बहुतर स्पर्धकोंकी उदीरणा करना है तो वह भुजाकार अनुभाग उदीरणा कही जायगी। यदि अनन्तर अतिक्रान्त समयमें बहुतर स्पर्धकोंकी उदीरणा करके इस समय स्नोक स्पर्धकोंकी उदीरणा करता है तो उसे अल्पतर उदीरणा कडना चाहिये। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें जितने स्पर्धकोंकी उदीरणा की गई है आगे भी यदि उनने उनने ही स्पर्धकोंकी उदीरणा करता है तो इसका नाम अवस्थित उदीरणा होगा। पूर्वमें अनुदीरक होकर आगे उदीरणा करनेपर यह अवक्तव्य उदीरणा कही जायगी। इस प्रकारसे अर्थपदका कथन करते हुए यहाँ यह संकेत किया है कि पूर्वोक्त भुजाकारादि उदीरणाओंके स्वामित्वकी प्ररूपणा इसी अर्थपदके अनुसार करना चाहिये।

तत्पश्चात् यहाँ इन्हीं उदीरणाओंसे सम्बन्धित एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर ; तथा अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। पश्चात् पदनिक्षेपकी प्ररूपणा करते हुए उममें उत्कृष्ट एवं जघन्य भेदोंकी अपेक्षा स्वामित्व और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। वृद्धिउदीरणामें समुत्कीर्तनाका कथन करके तत्पश्चात् यह संकेत किया है कि अल्पबहुत्व पर्यन्त स्वामित्व आदि अधिकारोंकी प्ररूपणा जिन प्रकार अनुभागवृद्धिवन्ध में की गयी है उसी प्रकारसे उनकी प्ररूपणा यहाँ भी करना चाहिये।

प्रदेशउदीरणा--मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणाके भेदसे प्रदेशउदीरणा दो प्रकारकी है। उनमें मूलप्रकृतिप्रदेश उदीरणाकी विशेष प्ररूपणा यहाँ न कर केवल इतना मात्र संकेत किया गया है कि मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणाकी समुत्कीर्तना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा अन्वेषण करके भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिको प्ररूपणा कर चुकनेपर मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा समाप्त होती है। ऐसा ही निर्देश कपायब्राह्मणमें चूर्णिमूत्रके कर्मा द्वारा भी किया गया है (देविव्ये क पा. सूत्र पृ. ५१६)।

उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणाकी प्ररूपणामें स्वामित्वका विवेचन करते हुए पहिले मतिज्ञानावराणादि प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाके स्वामियोंका और तत्पश्चात् उन्हींकी जघन्य प्रदेशउदीरणाके स्वामियोंका कथन किया गया है। इसके बाद एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर इन अनुयोग-द्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ; इतना उल्लेख मात्र करके स्वस्थान और परस्थान संनिकर्षकी संक्षेपमें प्ररूपणा की गयी है।

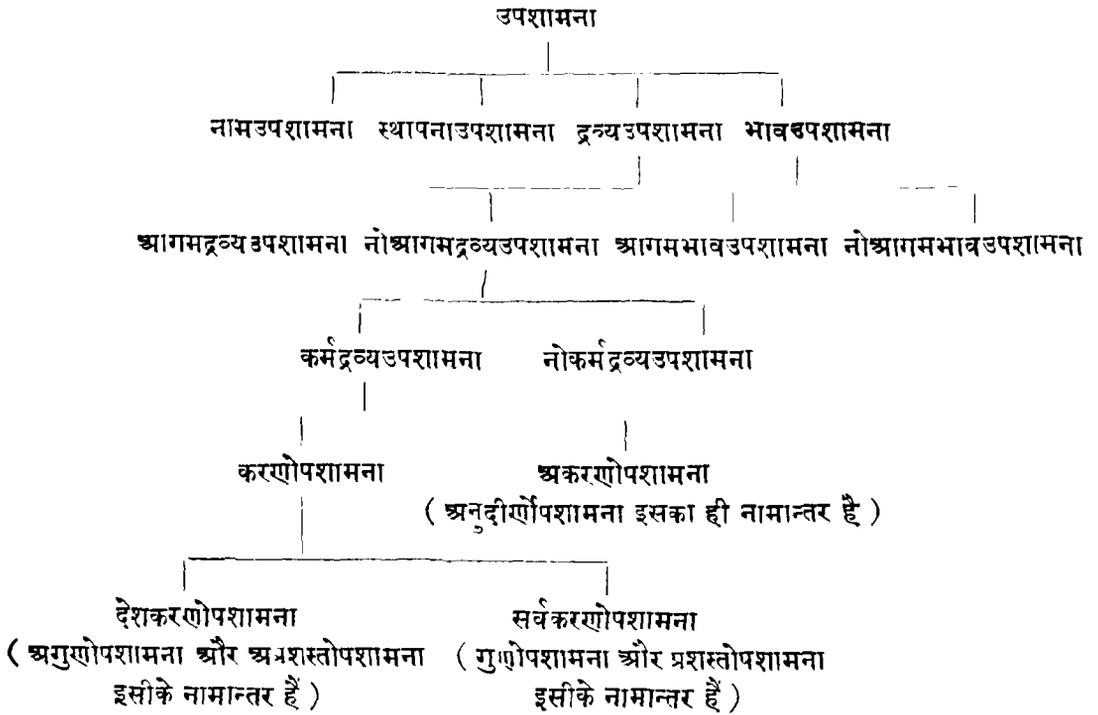
प्रदेशभुजाकार उदीरणाकी प्ररूपणामें पहिले प्रदेशभुजाकारउदीरणा, प्रदेशअल्पतरउदीरणा, प्रदेशअवस्थितउदीरणा और प्रदेशअवक्तव्यउदीरणा इन चारोंके स्वरूपका निर्देश किया गया है। तत्पश्चात् स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना

जीवोंकी अपेक्षा काल तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर इनकी प्ररूपणा अनुभागभुजाकारउदीरणाके समान करनेका उल्लेख करके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है ।

पदनिक्षेपप्ररूपणा में पहले उत्कृष्ट स्वामित्वका विवेचन करके तत्पश्चात् जघन्य स्वामित्वका भी विवेचन करते हुए उत्कृष्ट और जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है ।

वृद्धिउदीरणामें प्रथमतः स्थानसमुत्कीर्तनाका कथन करके तत्पश्चात् स्वामित्व आदि शेष अनुयोग-द्वारोंका कथन भी अति संक्षेपमें किया गया है । इस प्रकारसे प्रदेशउदीरणाकी प्ररूपणा हो चुकनेपर यहाँ उदीरणा उपक्रम समाप्त हो जाता है ।

उपशामना उपक्रम — यहाँ उपशामनाके सम्बन्धमें निक्षेपयोजना करते हुए कर्मद्रव्यउपशामनाके दो भेद बतलाये हैं—करणोपशामना और अकरणोपशामना । इनमें अकरणोपशामनाका अनुदीर्णोपशामना यह दृमरा भी नाम है । इसकी सविस्तर प्ररूपणा कर्मप्रवादमें की गयी है । करणोपशामना भी दो प्रकारकी है—देशकरणोपशामना और सर्वकरणोपशामना । सर्वकरणोपशामनाके और भी दो नाम हैं—गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना । इस सर्वकरणोपशामनाकी प्ररूपणा कसायपाहुडमें की जायगी, ऐसा निर्देश करके यहाँ उसकी प्ररूपणा नहीं की गयी है । इसी प्रकार देशकरणोपशामनाके भी दूसरे दो नाम हैं—अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना । इसी अप्रशस्तोपशामनाको यहाँ अधिकार-प्राप्त बतलाया है । उपशामनाके पूर्वोक्त भेदोंके लिये तालिका देखिये—



आचार्य यतिवृषभ द्वारा विरचित कसायपाहुडके चूर्णिसूत्रोंमें भी इन उपशामनाभेदोंके सम्बन्धमें प्रायः इसी प्रकार और इन्हीं शब्दोंमें कथन किया गया है^१ । कसायपाहुडसे इतनी ही विशेषता है कि यहाँ सर्वकरणोपशामनाका 'गुणोपशामना' और देशकरणोपशामनाका 'अगुणोपशामना' इन नामान्तरोंका उल्लेख अधिक किया गया है । कसायपाहुडकी जयधवला टीकामें उपशामनाके पूर्वोक्त भेदोंमेंसे कुछका स्वरूप इस प्रकार बतलाया है—

अकरणोपशामना—कर्मप्रवाद नामका जो आठवाँ पूर्वाधिकार है वहाँ सब कर्मों सम्बन्धी मूल और उत्तर प्रकृतियोंकी विपाक पर्याय और अविपाक पर्यायका कथन द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके अनुसार बहुत विस्तारसे किया गया है । वहाँ इस अकरणोपशामनाकी प्ररूपणा देखना चाहिये ।

देशकरणोपशामना—दर्शनमोहनीयका उपशम कर चुकनेपर उदयादि करणोंमें से कुछ तो उपशान्त और कुछ अनुपशान्त रहते हैं । इसलिये यह देशकरणोपशामना कही जाती है । × × × द्वितीय पूर्वकी पाँचवीं 'वस्तु' से प्रतिवद्र कर्मप्रकृति नामका चौथा प्राभृत अधिकार प्राप्त है । वहाँ इस देशकरणोपशामनाकी प्ररूपणा देखना चाहिये, क्योंकि, वहाँ इसकी प्ररूपणा विस्तार पूर्वक की गयी है ।

सर्वकरणोपशामना—सब करणोंकी उपशामनाका नाम सर्वकरणोपशामना है ।

अप्रशस्तोपशामना—संसारपरिभ्रमणके योग्य अप्रशस्त परिणामोंके निमित्तसे होनेके कारण यह अप्रशस्तोपशामना कही जाती है ।

इन उपशामना भेदोंका उल्लेख प्रायः इसी प्रकारसे श्रुताम्बर कर्मप्रकृति ग्रन्थमें पाया जाता है । इस करणकी प्ररूपणा प्रारम्भ करते हुए वहाँ सर्व प्रथम यह गाथा प्राप्त होती है—

करणकयाऽकरणा वि य दुविहा उवसामण्यत्थ विइयाण ।

अकरण-अणुइणाण अणुओगधरे पणिवयामि ॥ १ ॥

इसमें उपशामनाके करणकृता और अकरणकृता ये वे ही दो भेद बतलाये गये हैं । इनमें द्वितीय अकरणकृता उपशामनाके वे ही दो नाम यहाँ भी निर्दिष्ट किये गये हैं—अकरणकृता और अनुदीर्णा । यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य 'अणुओगधरे पणिवयामि' वाक्यांश है । इसकी संस्कृत टीकामें श्रीमल्लयगिरि सूरिने लिखा है—

इस अकरणकृतोपशामनाके दो नाम हैं—अकरणोपशामना और अनुदीरणोपशामना । उसका अनुयोग इस समय नष्ट हो चुका है । इसीलिये आचार्य (शिवशर्मसूरि) स्वयं उसके अनुयोगको न जानते हुए उसके जानकार-विशिष्ट प्रतिभासे सम्पन्न चतुर्दशपूर्ववेदियोंको नमस्कार करते हुए कहते हैं—'विइयाण' इत्यादि ।

यहाँ द्वितीय गाथामें सर्वोपशामना और देशोपशामनाके भी वे ही दो दो नाम निर्दिष्ट किये गये

१ एतो सुत्तविहासा । त जहा । उपसामणा कदविधा त्ति ? उपसामणा दुविहा करणोवसामणा अकरणोवसामणा च । जा सा अकरणोवसामणा त्तिस्से दुवे णामधेयाणि—अकरणोवसामणा त्ति वि अणुदिएणोवसामणा त्ति वि । एसा कम्मपवादे ! जा सा करणोवसामणा सा दुविहा—देसकरणोवसामणा त्ति वि सब्बकरणोवसामणा त्ति वि । देसकरणोवसामणाए दुवे णामाणि देसकरणोवसामणा त्ति वि अप्पसत्थउवसामणा त्ति वि । एसा कम्मपथडीसु । जा सा सब्बकरणोवसामणा त्तिस्से वि दुवे णामाणि—सब्बकरणोवसामणा त्ति वि पसत्थकरणोवसामणा त्ति वि । एदाए तत्थ पयदं । क. पा. सुत्त पृ. ७०७-८.

है जो कि यहाँ प्रकृत धवला में बतलाये गये हैं । यथा-सर्वकरणोपशामनाके गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना तथा देशकरणोपशामनाके उनसे विपरीत अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना ।

यहाँ अप्रशस्तोपशामनाको अधिकारप्राप्त बतलाते हुए श्री वीरसेनाचार्यने उसके अर्थपदका कथन करते हुए बतलाया है कि जो प्रदेशपिण्ड अप्रशस्तोपशामनाके द्वारा उपशान्त किया गया है उसका न तो अपकर्षण किया जा सकता है, न उत्कर्षण किया जा सकता है, न अन्य प्रकृतिमें संक्रम कराया जा सकता है और न उदयावलीमें प्रवेश भी कराया जा सकता है । इस अर्थपदके अनुसार यहाँ पहिले स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर तथा अल्पबहुत्व, (भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि प्ररुणाओंकी यहाँ सम्भावना नहीं है) । इन अधिकारोंके द्वारा मूलप्रवृत्तिउपशामनाकी प्ररूपणा अतिसंक्षेपमें की गयी है । उत्तरप्रवृत्तिउपशामनाकी प्ररूपणा भी इन्हीं अधिकारोंके द्वारा संक्षेपमें की गयी है ।

प्रकृतिस्थानोपशामनाकी प्ररूपणामें ज्ञानावरेणादि कर्मोंके सम्भव स्थानोंका उल्लेख मात्र करके उनकी प्ररूपणा स्वामित्व आदि अधिकारोंके द्वारा करना चाहिये, ऐसा उल्लेख मात्र किया गया है । यहाँ भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि उपशामनाओंकी भी सम्भावना है ।

स्थितिउपशामना—यहाँ पहिले मूल प्रकृतियोंके आश्रयसे क्रमशः उत्कृष्ट और जघन्य अट्टाछेदकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् स्वामित्व आदि शेष अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा स्थितिउदीरणाके समान करना चाहिये, ऐसा संकेत किया गया है ।

अनुभागउपशामना—यहाँ मूलप्रकृतिअनुभागउपशामनाको सुगम बतलाकर उत्तरप्रकृतिअनुभाग उपशामनामें उत्कृष्ट व जघन्य प्रमाणानुगम, स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयागद्वारोंकी प्ररूपणा यथासम्भव अनुभागसत्कर्मके समान करना चाहिये ऐसा निर्देश किया गया है । यहाँ तात्रता और मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाको जैसे अनुभागबन्ध में छयासठ पदों द्वारा तद्विषयक अल्पबहुत्वकी की गयी है वैसे करने योग्य बतलाया है ।

प्रदेशउदीरणा—यहाँ 'प्रदेशउदीरणाकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये' इतना मात्र संकेत किया गया है ।

विपरिणामोपक्रम—प्रवृत्तिविपरिणामना आदिके भेदसे विपरिणामोपक्रम चार प्रकारका है । इनमें प्रवृत्तिविपरिणामनाके दो भेद हैं—मूलप्रकृतिविपरिणामना और उत्तरप्रकृतिविपरिणामना । मूलप्रकृतिविपरिणामनाके भी दो भेद हैं—देशविपरिणामना और सर्वविपरिणामना ।

देशविपरिणामना—जिन प्रकृतियोंका अधःस्थितिगलनाके द्वारा एकदेश निर्जीर्ण होता है उसका नाम देशविपरिणामना है ।

सर्वविपरिणामना—जो प्रकृति सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण होती है वह सर्वविपरिणामना कहलाती है ।

उत्तरप्रकृतिविपरिणामना—देशनिर्जरा या सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण प्रवृत्ति तथा जो अन्य प्रकृतिमें देशसंक्रमण अथवा सर्वसंक्रमणके द्वारा संक्रान्त होती है इसका नाम उत्तरप्रवृत्तिविपरिणामना है ।

इस स्वरूपकथनके अनुसार यहाँ मूल और उत्तर प्रवृत्तिविपरिणामनाकी प्ररूपणा स्वामित्व आदि अधिकारोंके द्वारा करना चाहिये, ऐसा उल्लेख भर किया गया है । इसका कारण तद्विषयक उपदेश का अभाव ही प्रतीत होता है । यहाँ भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी सम्भावना नहीं है ।

अपकर्षण, उत्कर्षण और संक्रमको प्राप्त कराई जानेवाली स्थितिका नाम विपरिणामिना स्थिति है। अपकर्षित, उत्कर्षित अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया अनुभाग विपरिणामित अनुभाग कहलाता है। जो प्रदेशपिण्ड निर्जराको प्राप्त हुआ है अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया है वह प्रदेशविपरिणामना कही जाती है। इनमें स्थितिविपरिणामनाकी प्ररूपणा स्थितिसंक्रम, अनुभागविपरिणामनाकी प्ररूपणा अनुभागसंक्रम, और प्रदेशविपरिणामनाकी प्ररूपणा प्रदेशसंक्रमके समान करने योग्य बतलायी गयी है।

१० उद्यानुयोगद्वार—यहाँ नोआगमकर्मद्रव्य उद्यको प्रकृत बतलाकर उसके प्रकृतिउद्य आदि के भेदसे चार भेद बतलाये हैं। उत्तर प्रकृति उद्यकी प्ररूपणामें स्वामित्वका कथन करते हुए किन प्रकृतियों के कौन-कौनसे जीव वेदक हैं, इसका विवेचन किया गया है। अन्य काल आदि अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये, ऐसा उल्लेख करते हुए यहाँ अल्पबहुत्वके विवेचनमें जो प्रकृति उदीरणाअल्पबहुत्वसे कुछ विशेषता है उसका उपदेशभेदके अनुसार निर्देशमात्र किया गया है।

स्थितिउद्य—स्थितिउद्यकी प्ररूपणामें पहिले स्थितिउद्य प्रमाणानुगम, स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंके अनुसार मूलप्रकृतिस्थितिउद्यकी प्ररूपणा की गयी है। यह उद्यकी प्ररूपणा प्रायः उदीरणाप्ररूपणाके ही समान निर्दिष्ट की गयी है।

उत्तरप्रकृतिस्थितिउद्य—यहाँ एवं उत्कृष्ट स्थिति उद्यके प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाके प्रमाणानुगमके समान बतलाते हुए उसे उद्यस्थितिसे अधिक बतलाया गया है। जघन्य स्थिति उद्यकी प्ररूपणामें नामनिर्देशपूर्वक कुछ कर्मोंका जघन्य प्रमाणानुगम बतलाकर शेष कर्मोंके प्रमाणगम, सभी कर्मोंके स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंकी भी प्ररूपणा स्थिति उदीरणाके समान निर्दिष्ट की गयी है।

अनुभाग उद्य—यहाँ मूलप्रकृतिअनुभागउद्य और उत्तरप्रकृतिअनुभागउद्यकी प्ररूपणा चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा करणीय बतलाकर जघन्य स्वामित्वके विषयमें कुछ थोड़ीसी विशेषताका भी उल्लेख किया गया है।

प्रदेशउद्य—यहाँ मूलप्रकृतिप्रदेशउद्यकी प्ररूपणा सब अनुयोगद्वारोंके द्वारा जानकर करने योग्य बतलाकर उत्तरप्रकृतिप्रदेशउद्यकी प्ररूपणामें स्वामित्वके परिहानार्थ 'सम्मत्तुपत्तीए' आदि २ गाथाओंके द्वारा १० गुणश्रेणियोंका निर्देश करके उक्त गुणश्रेणियोंमें कौनसी गुणश्रेणियाँ भवान्तरमें संक्रान्त होती हैं, इसका उल्लेख करते हुए उत्कृष्ट व जघन्य प्रदेशउद्यविषयक स्वामित्वका विवेचन किया गया है।

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व आदि अन्य अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा पूर्वोक्त स्वामित्व प्ररूपणा से ही सिद्ध करने योग्य बतलाकर तत्पश्चात् उत्कृष्ट और जघन्य प्रदेशउद्यविषयक अल्पबहुत्वका विवेचन किया गया है।

भुजाकार प्रदेशउद्यकी प्ररूपणामें प्रथमतः अर्थपदका निर्देश करके तत्पश्चात् स्वामित्व आदि अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा की गयी है। एक जीवकी अपेक्षा काल प्ररूपणा प्रथमतः नागहस्ती क्षमाश्रमणके उपदेशानुसार और तत्पश्चात् अन्य उपदेशके अनुसार की गयी है।

पदनिक्षेपप्ररूपणामें स्वामित्वका विवेचन करते हुए तत्पश्चात् अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

संतकम्मपंजिया

निबन्धन, प्रक्रम, उपक्रम और उद्य इन पूर्वोक्त चार अनुयोगद्वारोंके ऊपर एक पंजिका भी उपलब्ध है जो इसी पुस्तकके 'परिशिष्ट' में दी गयी है। यह पंजिका किसके द्वारा रची गयी है, इसका कुछ संकेत यहाँ प्राप्त नहीं है। उसकी उत्थानिकामें यह बतलाया गया है कि 'महाकर्मप्रकृति प्राभृत' के जो कृति-वेदनादि २४ अनुयोगद्वार हैं उनमेंसे कृति और वेदना नामक २ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखण्ड (पु० ६-१२) में की गयी है। स्पर्श, कर्म, प्रकृति (पु० १३) और बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्ध एवं बन्धीय (बन्धन अनुयोग द्वार चार प्रकारका है—बन्ध, बन्धीय, बन्धक और बन्धविधान) अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वर्णाखण्डमें की गयी है। बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्ध-विधान नामक अवान्तर अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा महाबन्धमें, विस्तारपूर्वक की गयी है। तथा उक्त बन्धन अनुयोगद्वारके अवान्तर अनुयोगद्वारभूत बन्धक अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा लुट्टकबन्ध (पु० ७) में विस्तार से की गयी है। शेष १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा 'सत्कर्म' में की गयी है। तथापि उसके अतिशय गम्भीर होनेसे यहाँ अर्थविषमपदोंके अर्थकी प्ररूपणा पंजिका स्वरूपसे की जाती है^२।

इससे यह निश्चित होता है कि प्रस्तुत मूलभूत षट्खंडागममें कृति-वेदनादि पूर्वोक्त २४ अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम ६ अनुयोगद्वारोंकी ही प्ररूपणा की गयी है। शेष निबन्धन आदि १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा श्री वीरसेन स्वामीने स्वयं ही की है, जैसा कि उन्होंने उसके प्रारम्भमें इस वाक्यके द्वारा सूचित भी कर दिया है—

भूदबलिभडारण्य जेणेदं सुरं देसामासियभावेण लिह्दिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिदसेसद्यद्वारसअणियोगद्वाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो । तं जहा —

उक्त 'संतकम्मपंजिया' की उत्थानिकामें की गयी सूचनाके अनुसार तो वह शेष सभी १८ अनुयोगद्वारोंके ऊपर लिखी जानी चाहिये थी। परन्तु उपलब्ध वह उद्यानुयोगद्वार तक ही है। इसकी जो हस्त-लिखित प्रति हमारे सामने रही है वह श्री पं० लाकनाथ जी शास्त्रीके अन्यतम शिष्य श्री देवकुमार जी के द्वारा मूडाबद्रास्थ श्री धीरवाणाविलास जेनसिद्धान्त भवनकी प्रतिपरसे लिखी गयी है। यह प्रायः अशुद्ध बहुत है। इसमें लखकने पूर्णावराम, अर्धावराम और प्रश्नसूचक आदि चिह्नोंका भी उपयोग किया है जो यत्र तत्र भ्रान्तिजनक भी हो गया है।

पंजिकामें जहाँ कहीं भी अल्पबहुत्वका प्रकरण प्राप्त हुआ है उसीके ऊपर प्रायः विशेष लिखा गया है, अन्य विषयोंका स्पष्टीकरण प्रायः कहीं भी विशेषरूपसे नहीं किया गया है। यहाँ पंजिकाकारने जो संख्याओंका उपयोग अल्पबहुत्वके स्पष्टीकरणार्थ किया है वह किस आधारसे किया है, यह समझमें नहीं आ सका है। इसमें प्रायः सर्वत्र अस्पष्ट स्वरूपसे एक विशेष चिह्न आया है जो प्रायः संख्यातका प्रतीक दिखता है। उसके स्थानमें हमने अंग्रेजीके दो (2) के अंक का उपयोग किया है।

१ महाबन्धके ५ भाग 'भारतीय ज्ञानपीठ' द्वारा प्रकाशित किये जा चुके हैं। शेष भागोंके भी शीघ्र प्रकाशित हो जानेकी सम्भावना है।

२ महाकम्मपयडिपाहुडस कदि-वेदणाओ (इ) चउवीसमणियोगद्वारेसु तत्थ कदि-वेदणा ति जाणि अणियोगद्वाराणि वेदणाखंडमि, पुणो प [पस्स-कम्म-पयडि-बंधण ति] चत्तारिअणियोगद्वारेसु तत्थ बंध-बंधणियज्जणामाणियोगेहि सह वर्णाखंडमि, पुणो बंधविधानणामाणियोगद्वारे महाबंधमि, पुणो बंधगणियोगो खुद्दाबंधमि च सप्पवंचेण परूविदाणि । पुणो तेहितो सेसद्वारसाणियोगद्वाराणि संतकामे सव्वाणि परूविदाणि । तो वि तस्साइंगंभीरत्तादो अत्थविसम-पदाणमत्थे थोचचयेण पंजियसरूवेण भणिरसामो । परिशिष्ट पृष्ठ १

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
७ निबन्धन अनुयोगद्वारा	१-१४	८ प्रक्रम अनुयोगद्वारा	१४-४०
वीरसेन स्वामीकृत मङ्गलाचरण	१	नामादि निक्षेपों द्वारा प्रक्रमकी प्ररूपणा	१५
भगवन्त भूतबली भट्टारक द्वारा विरचित प्रकृत सूत्रको देशामर्शक मानकर उसके द्वारा सूचित शेष निबन्धन आदि १८ अनुयोगद्वारोंके रचनेकी वीरसेनाचार्य की सूचना	१	एक प्रकारके कर्मको बांधकर फिर उसे आठ प्रकारके करने विषयक आशंका और उसका समाधान	१६
निबन्धन अनुयोगद्वाराका निरुक्त्यर्थ बतला कर उसकी नामादि निक्षेपोंके द्वारा प्ररूपणा	१	सांख्योंके द्वारा माने गये सत्कार्यवादका निरूपण	१७
निबन्धन अनुयोगद्वारा यद्यपि छहों द्रव्योंके निबन्धनकी प्ररूपणा करता है फिर भी उसे छोड़कर यहाँ केवल कर्मनिबन्धनके ही ग्रहण करनेकी सूचना	१	नैयायिक आदिके द्वारा माने गये असत्कार्यवाद का निराकरण	२०
ज्ञानावरण और दर्शनावरणके निबन्धनकी प्ररूपणा	४	सत्-असत् एवं अनुभय स्वरूप कार्यकी उत्पत्तिका निराकरण करके 'स्यात् सत् कार्य' उत्पन्न होता है, इत्यादि सात भंगोंका उल्लेख और उनका पृथक् विवरण	२३
वेदनीयके निबन्धनकी प्ररूपणा	६	ज्ञानिक एकान्त पक्षमें परलोक आदिकी असम्भावना प्रगट कर द्रव्यकी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूपताकी सिद्धि	२६
मोहनीयके " "	"	भावैकान्तमें दोषापादन	२८
आयुके " "	"	अभावैकान्तमें दोषापादन	३०
नामकर्मके " "	७	नयविवक्षासे कथंचित् सत्, असत् व उभय आदि स्वरूपताकी सिद्धि	३१
गोत्रकर्मके " "	"	मूर्त कर्मोंका अमूर्त जीवके साथ बन्धविषयक शंका और इसका समाधान	३२
अन्तरायके " "	"	प्रक्रमके ३ भेदोंका निर्देश करके मूलप्रकृति प्रक्रमका विवरण	३५
ज्ञानावरणकी ५ उत्तर प्रकृतियोंके निबन्धन की प्ररूपणा	"	उत्कृष्ट उत्तर प्रकृतिप्रक्रमका विवरण	३६
दर्शनावरणकी ६ उत्तर प्रकृतियोंके निबन्धन को प्ररूपणा	"	जघन्य प्रकृतिप्रक्रमका विवरण	३७
साता और असाता वेदनीयके निबन्धनकी प्ररूपणा	११	स्थिति और अनुभाग प्रक्रमका निरूपण	३६
दर्शन और चारित्रमोहनीयके निबन्धनकी प्ररूपणा	११	९ उपक्रम अनुयोगद्वारा	४१-२८४
आयुचतुष्कके निबन्धनकी प्ररूपणा	१२	उपक्रमके भेद-प्रभेद और उनका लक्षण	४१
नामप्रकृतियोंके निबन्धनकी प्ररूपणा	१२	एक-एकप्रकृति उद्दीरणा विषयक स्वामित्व	४४
नीच व ऊंच गोत्र तथा ५ अन्तराय प्रकृतियों के निबन्धनकी प्ररूपणा	१४	एक जीवको अपेक्षा काल	"
		" अन्तर	४६
		नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय आदि	"

विषय	पृष्ठ
प्रकृतिस्थानसमुत्कीर्तना और तद्विषयक स्वामित्व आदि	४८
भुजाकार आदि चार प्रकारकी उदीरणाओंका निरूपण	५०
पदनिक्षेप	५३
उत्तरप्रकृतिउदीरणामें एक-एकप्रकृतिउदीरणा-विषयक स्वामित्वकी प्ररूपणा	५४
एक-एकप्रकृतिउदीरणा विषयक एक जीवकी अपेक्षा कालप्ररूपणा	६१
एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा	६८
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय	७२
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	७३
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर	७४
नाना जीवोंकी अपेक्षा संनिकर्ष	७५
एक-एकप्रकृति उदीरणा विषयक अल्पबहुत्व उदीरणास्थान प्ररूपणामें ज्ञानावरण, दर्शनावरण एवं वेदनीयकी उदीरणास्थान प्ररूपणा	८१
मोहनीयकी उदीरणास्थानप्ररूपणामें स्थान समुत्कीर्तना	८२
मोहनीयकी उदीरणास्थानप्ररूपणामें स्वामित्व	८३
मोहनीयकी उदीरणास्थानप्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा काल	८४
मोहनीयकी उदीरणास्थानप्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	८५
मोहनीयकी उदीरणास्थानप्ररूपणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा	८६
आयुर्कर्मकी स्थानउदीरणाविषयक असम्भावना नरकगतिके आश्रयसे नामकर्मकी स्थान उदीरणा	८७
तिर्यञ्च गतिके आश्रयसे नामकर्मकी स्थान उदीरणा	८८
मनुष्योंके आश्रयसे नामकर्मकी स्थानउदीरणा	८९
देवगतिके आश्रयसे " "	९०

विषय	पृष्ठ
भुजाकारउदीरणाप्ररूपणामें दर्शनावरण-विषयक प्ररूपणा, स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरकी प्ररूपणा	९७
भुजाकारउदीरणामें मोहनीयविषयक प्ररूपणा	९८
स्थितिउदीरणामें मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा	१००
स्थितिउदीरणाके आश्रित उत्कृष्ट उत्तर प्रकृति-स्थितिउदीरणाविषयक अद्धाच्छेद	१०१
जघन्य उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणाविषयक अद्धाच्छेद	१०३
उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाविषयक स्वामित्व	१०४
जघन्य स्थितिउदीरणाविषयक स्वामित्व	११०
उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाविषयक एक जीवकी अपेक्षा कालप्ररूपणा	११६
जघन्य स्थितिउदीरणाविषयक एक जीवकी अपेक्षा काल प्ररूपणा	१२५
उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाविषयक एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	१३०
जघन्य स्थितिउदीरणाविषयक एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	१३७
स्थितिउदीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय	१३६
स्थितिउदीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका उल्लेख करके संनिकर्षकी प्ररूपणा	१४१
स्थितिउदीरणामें अल्पबहुत्व	१४७
भुजाकार स्थितिउदीरणाप्ररूपणामें स्वामित्व का उल्लेख करके एक जीवकी अपेक्षा कालप्ररूपणा	१५७
भुजाकार स्थितिउदीरणामें एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका उल्लेख करके नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा	१६१
भुजाकार स्थितिउदीरणामें अल्पबहुत्वप्ररूपणा	१६२
" " पदनिक्षेप	१६४

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
भुजाकार स्थितिउदीरणामें वृद्धिउदीरणा		अनुभागउदीरणामें उत्कृष्ट बहुत्व	२१६
विषयक अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा	१६४	अनुभागउदीरणामें जघन्य बहुत्व	२२६
अनुभागउदीरणामें संज्ञा एवं सर्वउदीरणा		अनुभाग भुजाकार उदीरणा अर्थपर	२३१
आदि २४ अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	१७०	" एक जीवकी अपेक्षा काल	२३२
अनुभागउदीरणामें घातिसंज्ञा और स्थान		" " अन्तर	२३३
संज्ञाका विवेचन	१७१	" नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग वि.	२३४
अनुभागउदीरणामें सम्बद्ध स्वामित्वके		" " काल	२३५
विवेचनमें प्रत्ययप्ररूपणा, विपाकप्ररूपणा,		" " अन्तर	२३६
स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा इन		" " अल्पबहुत्व	"
४ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख	१७२	अनुभागउदीरणामें पदनिक्षेपप्ररूपणा	२३७
प्रत्ययप्ररूपणामें कर्मप्रकृतियोंका परिणाम-		" वृद्धिरूपणा	२५२
प्रत्ययिक एवं भवप्रत्ययिक आदिमें		प्रदेशउदीरणामें उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणविषयक	
विभाजन	"	स्वामित्व	२५३
विपाकप्ररूपणा	१७४	प्रदेशउदीरणामें जघन्य प्रदेशउदीरणविषयक	
स्थानप्ररूपणा	"	स्वामित्व	२५७
शुभाशुभप्ररूपणा	१७५	प्रदेशउदीरणामें एक जीवकी अपेक्षा काल,	
अनुभागउदीरणामें उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा-		अन्तर और नाना जीवोंकी अपेक्षा	
विषयक स्वामित्वकी प्ररूपणा	१७६	भंगविचयका उल्लेख करके संनिकर्षका	
जघन्य अनुभागउदीरणविषयक स्वामित्वकी		निरूपण	२५६
प्ररूपणा	१८२	प्रदेशभुजाकारउदीरणामें अर्थपद	२६०
अनुभागउदीरणामें एक जीवकी अपेक्षा		" स्वामित्व आदि	२६१
उत्कृष्ट कालप्ररूपणा	१६०	" अल्पबहुत्व	"
अनुभागउदीरणामें एक जीवकी अपेक्षा		प्रदेशउदीरणामें पदनिक्षेपप्ररूपणा	२६४
जघन्य कालप्ररूपणा	१६४	" वृद्धिउदीरणा	२७३
अनुभागउदीरणामें एक जीवकी अपेक्षा		उपशामनाउपक्रमप्ररूपणामें नामादिनिक्षेप-	
उत्कृष्ट अन्तरप्ररूपणा	१६६	योजना	२७५
अनुभागउदीरणामें एक जीवकी अपेक्षा		अप्ररास्त उपशामनामें अर्थपद	२७६
जघन्य अन्तरप्ररूपणा	२०१	इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वप्ररूपणा	"
अनुभागउदीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा		" कालप्ररूपणा आदि	२७७
भंगविचय	२०३	उत्तरउत्कृतिउपशामनाप्ररूपणामें स्वामित्व	
अनुभागउदीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा		आदि	२७८
कालप्ररूपणा	२०५	प्रकृतिस्थानउपशामनाप्ररूपणा	२८०
अनुभागउदीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा		स्थिति उपशामनाप्ररूपणामें अद्वाछेद	"
अन्तरप्ररूपणा	२०८	" स्वामित्व आदि	२८१
अनुभागउदीरणामें संनिकर्षप्ररूपणा	२१०	अनुभागउपशाना और प्रदेशउपशामनाका	
		विवेचन	२८२

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
विपरिणाम उपक्रमके प्रकृतिविपरिणामना आदि ४ भेदोंका निर्देश करके उनमें मूलप्रकृतिविपरिणामनाकी प्ररूपणा		मूलप्रकृति स्थितिउदयप्ररूपणामें संनिकर्ष	२६३
उत्तरप्रकृतिविपरिणामनाकी प्ररूपणा	२८३	मूलप्रकृति स्थितिउदयप्ररूपणामें अल्पबहुत्व	२६४
स्थितिविपरिणामनाकी प्ररूपणा	”	स्थितिउदयप्ररूपणामें भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणाके स्थितिउदीरणाके समान करनेका उल्लेख	”
अनुभागविपरिणामना और प्रदेशविपरिणा- मनाकी प्ररूपणा	२८४	उत्तरप्रकृतिस्थितिउदयप्ररूपणामें उत्कृष्ट और जघन्य स्थितिउदयप्रमाणानुगम	”
१० उदयानुयोगद्वारा २८५-३३६		यहाँ उत्कृष्ट स्थितिउदयविषयक स्वामित्व आदि अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणाको उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाके समान करनेका निर्देश	२६५
नामादिरूप उदयभेदोंमेंसे यहाँ नोआगमकर्म- द्रव्यउदयको प्रकृत बतलाकर उसके भेद- प्रभेदोंका निर्देश	२८५	अनुभागउदयकी प्ररूपणा	”
उत्तरप्रकृतिउदयकी प्ररूपणामें स्वामित्व	”	प्रदेशउदयप्ररूपणामें १० गुणश्रेणियोंका निर्देश करके अन्य भवमें संक्रान्त होने- वाली गुणश्रेणियोंका उल्लेख	२६६
उत्तरप्रकृतिउदयकी प्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर तथा संनिकर्ष अनुयोगद्वारोंका निर्देश मात्र करके अल्पबहुत्व प्ररूपणामें प्रकृति- उदयसे कुछ विशेषताओंका दिग्दर्शन	२८८	उत्कृष्ट प्रदेशउदयमें स्वामित्व प्ररूपणा	२६७
यहाँ भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी असम्भावनाका निर्देश करके प्रकृतिस्थान- उदयप्ररूपणाकी प्रकृतिस्थानउदीरणासे समानताका उल्लेख		जघन्य ” ”	३०२
मूलप्रकृति स्थितिउदयप्ररूपणामें स्थितिउदय- प्रमाणानुगम	२८९	यहाँ काल आदि शेष अनुयोगद्वारोंका उल्लेख मात्र करके उत्कृष्ट प्रदेशोदयसम्बन्धी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा	३०६
मूलप्रकृति स्थितिउदयप्ररूपणामें स्थितिउदय- स्वामित्व	२९०	जघन्य प्रदेशोदयसम्बन्धी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा	३१८
मूलप्रकृति स्थितिउदयप्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर	२९१	भुजाकार प्रदेशोदयकी प्ररूपणामें अर्थपद- निर्देशपूर्वक स्वामित्व	३२५
मूलप्रकृति स्थितिउदयप्ररूपणामें नाना जीवों- की अपेक्षा भंगविचय आदि	२९२	भुजाकार प्रदेशोदयकी प्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा कालप्ररूपणा	”
		भुजाकार प्रदेशोदयकी प्ररूपणामें अन्तर प्ररूपणा	३२६
		भुजाकार प्रदेशोदयकी प्ररूपणामें अल्पबहुत्व- प्ररूपणा	”
		पदनिक्षेप प्रदेशोदय-स्वामित्व	३३२
		” ” अल्पबहुत्व	३३५

शुद्धि-पत्र

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१३	सब द्रव्यों में निबद्ध है, वह सब पर्यायों में निबद्ध नहीं है ॥	सब द्रव्यों और असर्व (कुछ) पर्यायों में निबद्ध है ॥
४	१६	" " "	" " "
५	१४	प्राप्त	प्राप्त
१०	३	पञ्चसत्ती ?	पञ्चासत्ती ?
"	४	अकण्ठ	अकमेण
११	२४	द्रव्यों में निबद्ध है, सब पर्यायों में नहीं ॥	द्रव्यों और कुछ पर्यायों में निबद्ध है ॥
१३	१६	नाम कृतियां	नाम प्रकृतियां
१७	१	कारणपरुवमावणस्स	कारणसरुवमावणस्स
२०	२६	जन	बन
२४	७	तदुबलभादो	तदुवलंभादो
३३	३१	इसके अतिरिक्त मिथ्यात्व	तथा मिथ्यात्व
३४	१३	उसमें	×
३६	४	आचरिमासु	अचिरमासु
४५	११	उदीरेदि त्ति भणति	उदीरेदि त्ति भणंति
४६	७	उदीरणंतर	उदीरणंतरं
४८	११	सत्तएणमुदीरओ	सत्तएणमुदीरओ
५०	२६	सात के उदीरकों से एक आवली में संचित हुए आठ के	एक आवली में संचित हुए आठ के
५१	४	सम्माइड्डी	सम्माइड्डी
५१	६	सत्तउदीरंतस्स	सत्त उदीरंतस्स
६०	४	मिच्छाइटिप्पहुडि	मिच्छाइटिप्पहुडि
६१	३१	जयन्य	जघन्य
८३	२६	वे प्रमत्त, अप्रमत्त और अपूर्वकरण इन तीन गुणास्थानों में पाये	प्रमत्त और अप्रमत्त में वे सब तथा अपूर्वकरण में सातके बिना तीन स्थान पाये
६२	८	चे व	चेव

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	१५	सागरोववमाणि	सागरोवमाणि
१००	७	असंखेज्जगुणा	संखेज्जगुणा
१००	२२	असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे
१०५	२०	असता	असाता
११०	३	-मदुयावल्लिय-	-मृदयावल्लिय-
१११	२	उवरिल्ल	उवरिल्ल-
११२	२६	एगिदियागए	एगिदियागहे
११६	६	चरिमसमयसजोगस्स	चरिमसमयसजोगिस्स
११७	१०	द्विदिसंतक्कमेण	द्विदिसंतक्कम्मेण
११६	११	एगसमओ	एगसमओ
१२२	६	अणुकस्सट्टिदि	अणुकस्सट्टिदि
१२५	६-१०	सुह-सुस्सर-आदेज्ज	अथिर-मसुह
१३५	२६	शुभ, सुस्वर, आदेय	अशुभ, अस्थिर
१४४	११	कादूण	कादूण
१६४	१४	संखेज्जभाग-	[संखेज्जगुणवट्ठिउदीरया असंखेज्ज- गुणा] संखेज्जभाग-
११	३०	संख्यातभागवृद्धिके	[संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यात- गुणे है] संख्यातभागवृद्धिके
१६७	६	णवुंसयवेदस्स	णवुंसयवेदस्स
१७०	३	असंखेज्जगुणा । हेदुणा	असंखेज्जगुणा हेदुणा ।
१७०	१४	आणादिउदीरणा	अणादिउदीरणा
१७०	१६	असंख्यातगुणे हैं । किन्तु वे हेतु पूर्वक उपदेश से	हेतु से असंख्यातगुणे है । किन्तु उपदेश से
१७७	२०	अनुत्कृष्ट	उत्कृष्ट
१८२	११	मज्झिमजहणयासु	मज्झिम-जहणयासु
१८४	३१	रहने पर हाती	रहने पर होती
१६१	५	-णवणीकसायाण-	णवणीकसायाण-
१६१	३२	अनुभागउदीरणा उत्कर्ष से	अनुभागउदीरणा का काल उत्कर्ष से
२०८	२३	अप्रशस्त, वर्ण	अप्रशस्त वर्ण,
२१४	७	जदि जहणयं	जदि अजहणयं
२१४	२३	जघन्य	अजघन्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२०	२	अजसगिति-	जसगिति-
२२०	१६	अयशःकीर्ति	यशःकीर्ति
२२८	६	कायन्व	कायन्वं
२३१	६	जसगिति० अ० गुणा	×
२३१	२१-२२	यशःकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।	×
२३४	१२	आदाव	×
२३४	१६	तिरिक्खगइ	×
२३४	२६	आतप	×
२३४	३३	तिर्यग्गति	×
२४६	१३	अप्पावहुअं	अप्पावहुअं
२४३	१६	खोजक	खोजकर
२४७	५	जरस	जस्स
२६२	११	ओरालिय वेड्वि-	ओरालिय-वेउव्वि-
२७१	१०	पंचंतराइयाणंपदेस-	पंचंतराइयाणं पदेस-
२७३	३	वड्डिउदीरणा ^१ ।	वड्डिउदीरणा ^१ ।
२७४	५	संखेज्जभागहाणि-	संखेज्जगुणहाणि-
२७४	२०	संख्याभागहानि	संख्यातगुणहानि
२७६	२	अट्टपदं तं ।	अट्टपदं । तं
२८०	१३	तीससागरोवमकोडाकोडीओ	तीससागरोवमकोडाकोडीओ
२८१	२	जट्टिदि	जट्टिदी
२८७	६	सरीरपज्जत्तीए	सरीरपज्जत्तीए
२६५	३	एवमद्धाछेदो । समत्तो ।	एवमद्धाछेदो समत्तो ।
२६६	१२	उवसंते ॥ १ ॥	उवसंते ॥ १ ॥
२६६	१४	सेडीए ^१ ॥ ६ ॥	सेडीए ^१ ॥ २ ॥
२६७	३	दिसंति ।	दिस्संति ।
३१२	१२	उक्कस्सदंडओ	उक्कस्सदंडओ
३१८	१३	अंगुलस्स	अंगुलस्स
३१६	४	वि थोवबहुत्तं	वि भागहारस्स थोवबहुत्तं
३१६		तिरिक्खगइ०	[आहार० विसे०] । तिरिक्खगइ०

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१६	२४	तिर्यङ्गति का	[आहारकशरीरका विशेष अधिक है] तिर्यङ्गति का
३२०	१३	सम्ममिच्छत्ते	सम्मामिच्छत्ते
३२५	१२	अचक्खु	[चक्खु-] अचक्खु-
३२६	३०	अचलुदर्शनावरण	[चलुदर्शनावरण] अचलुदर्शनावरण
३२१	१३	विसेसाहिओ, गोवुच्छरयणाए	विसेसाहियं गोवुच्छरयणाए
३२८	१	उपएसेण	उपएसेण
३३३	२३	वह अन्तिम	उस अन्तिम
३३३	२४	छद्मस्थ के.....होती है ।	छद्मस्थ के जिसकी अवधिलब्धि प्रथम समय में नष्ट हुई है, होती है ।
३३५	३१	प्रशस्त विहायोगति,	प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति



सिरि-भगवंत-पुष्पदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीकाममणिदो

तत्थ

मंतकम्मगळिभएसु सेस-अट्टारह-अणियोगद्वारेसु

७ णिवंधणाणियोगद्वारं

णिट्टुवियअट्टकम्मं केवलणाणेण दिट्टुपरमट्टं ।

णमियूणरिट्टणेमि वोच्छामि णिवंधणाणियोगं ॥

भूदबलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिद-
सेमअट्टारसअणियोगद्वाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो । तंजहा— निबध्यते
तदस्मिन्निति निबन्धनम् , जं दव्वं जम्हि णिवद्धं तं णिवंधणं ति भणिदं होदि । णिवंधणे
त्ति अणियोगद्वारे णिवंधणं ताव अपयदणिवंधणणिराकरणट्टं णिक्खिवियव्वं । तं जहा—

जिन्होंने आठ कर्मांका अन्त करके प्रगट हुए केवलज्ञानके द्वारा पदार्थके यथार्थ स्वरूपको
देख लिया है ऐसे अरिष्टनेमि जिनेन्द्र (बाईसवें तीर्थंकर) को नमस्कार करके निबन्धन अनुयोग-
द्वारका कथन करते हैं ॥

भूलबलि भट्टारकने चूँकि यह सूत्र देशामर्शक रूपसे लिखा है, अत एव इस सूत्रके द्वारा
मूर्चित शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी कुछ संक्षेपसे प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—
'निबध्यते तदस्मिन्निति निबन्धनम्' इस निरुक्तिके अनुसार जो द्रव्य जिसमें सम्बद्ध है उसे
निबन्धन कहा जाता है । 'निबन्धन' इस अनुयोगद्वारमें पहिले अप्रकृत निबन्धनके निराकरणार्थ
निबन्धनका निक्षेप करते हैं । वह इस प्रकार है—नामनिबन्धन, स्थापनानिबन्धन, द्रव्यनिबन्धन,

णामणिबंधणं ठवणणिबंधणं दव्वणिबंधणं खेत्तणिबंधणं कालणिबंधणं भावणिबंधणं चेदि छव्विहं णिबंधणं होदि । जस्स णामस्स वाचगभावेण पवुत्तीए जो अत्थो आलंबणं होदि सो णामणिबंधणं णाम, तेण विणा णामपवुत्तीए अभावादो । तं च णामणिबंधणमत्थाहिहाण-पच्चयभेएण तिविहं । तत्थ अत्थो अट्टविहो एग-बहुजीवाजीवजणिदपादेक्क-संजोग-भंगभेएण । एदेसु अट्टसु अत्थेसुप्पण्णणाणं^१ पच्चयणिबंधणं । जो णामसदो पवुत्तो^२ संतो अप्पाणं चेव जाणावेदि तमभिहाणणिबंधणं णाम । अधवा, एदं सव्वं पि दव्वादि-णिबंधणेसु पविसदि त्ति मोत्तूण णिबंधणसदो चेव णामणिबंधणं ति घेत्तव्वं, एवं संते पुणरुत्तदोसाभावादो । ठवणणिबंधणं दुविहं सव्भावासव्भावद्ववणणिबंधणभेएण । जं जहा^३ अणुयारइ अप्पिददव्वं तं तहा ठविदं सव्भावद्ववणणिबंधणं । तव्विरीयमसव्भावद्ववणणिबंधणं । जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि जस्स वा दव्वस्स^४ सहावो दव्वंतर-पडिबद्धो तं दव्वणिबंधणं । खेत्तणिबंधणं णाम गाम-णयरादीणि^५, पडिणियदखेत्ते तिसिं पडिबद्धुत्तुवलंभादो । जो जम्हि काले पडिबद्धो अत्थो तक्कालणिबंधणं । तं जहा— चूर्अफुल्लाणि चैत्तमासणिबद्धाणि, अंबिलियाहुल्लाणि आसादमासणिबद्धाणि, वियइल्ल-

क्षेत्रनिबन्धन, कालनिबन्धन और भावनिबन्धन इस प्रकार निबन्धन छह प्रकारका है । जिस नामकी वाचक रूपसे प्रवृत्तिमें जो अर्थ आलम्बन होता है वह नाम निबन्धन है, क्योंकि, उसके विना नामकी प्रवृत्ति सम्भव नहीं है । वह नामनिबन्धन अर्थ, अभिधान और प्रत्ययके भेदसे तीन प्रकारका है, उनमें एक व बहुत जीव तथा अजीवसे उत्पन्न प्रत्येक व संयोगी भंगोंके भेदसे अर्थ आठ प्रकारका है । इन आठ अर्थोंमें उत्पन्न हुआ ज्ञान प्रत्ययनिबन्धन कहलाता है । जो संज्ञा शब्द प्रवृत्त होकर अपने आपको जतलाता है वह अभिधाननिबन्धन कहा जाता है । अधवा, यह सभी चूंकि द्रव्यनिबन्धन आदिक निबन्धनोंमें प्रविष्ट हैं, अत एव उसे छोड़कर 'निबन्धन' शब्दको ही नामनिबन्धन रूपसे ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा होनेपर पुनरुक्त दोष नहीं आता ।

स्थापनानिबन्धन सद्भावस्थापनानिबन्धन और असद्भावस्थापनानिबन्धनके भेदसे दो प्रकारका है । जो जिस प्रकारसे विवक्षित द्रव्यका अनुसरण करता है उसको उसी प्रकारसे स्थापित करना सद्भावस्थापनानिबन्धन है । उससे विपरीत असद्भावस्थापनानिबन्धन है । जो द्रव्य जिन द्रव्योंका आश्रय करके परिणमन करता है, अधवा जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिबद्ध है वह द्रव्यनिबन्धन कहलाता है । ग्राम व नगर आदि क्षेत्रनिबन्धन हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें उनका सम्बन्ध पाया जाता है । जो अर्थ जिस कालमें प्रतिबद्ध है वह कालनिबन्धन कहा जाता है । यथा— आम्र वृक्षके फूल चैत्र माससे सम्बद्ध हैं, अम्लिकाके फूल आपाढ़ माससे

१ काप्रती 'अत्थेसुप्पण्णणाणं' इति पाठः । २ मप्रतिपाटोऽयम् । काप्रती 'सदो ण वुत्तो' ताप्रती 'सदो [ण] वुत्तो' इति पाठः । ३ मप्रतिपाटोऽयम् । का-ताप्रत्योः 'तं जहा' इति पाठः । ४ प्रत्योरुभयोरेव 'सहम्म' इति पाठः । ५ ताप्रती 'गामणयरादीहि' इति पाठः । ६ प्रत्योरुभयोरेव 'भूअ' इति पाठः ।

हुल्लाणि वइमाह-जेट्टमासणिबद्धाणि; तत्थेव तेसिमुवलंभादो । एवमणोसिं पि कालनिबंधणं जाणिरुण वत्तव्वं । पंचरत्तियाओ निबंधो त्ति वा । जं दव्वं भावस्स आलंबणमाहारो होदि तं भावनिबंधणं । जहा लोहस्स हिरण्ण-सुवण्णादीणि निबंधणं, ताणि अस्मिऊण तदुप्पत्तिदंसणादो', उप्पणस्स वि लोहस्स तदावलंबणदंसणादो । कोहुप्पत्तिणिमित्तदव्वं कोहणिबंधणं उप्पणकोहावलंबणदव्वं वा । एत्थ एदेसु निबंधणेसु केण निबंधणेण पयदं ? णाम-दुवणनिबंधणाणि मोत्तूण सेससव्वनिबंधणेसु पयदं । एदं निबंधणाणियोगद्वारं जदि वि छणं दव्वाणं निबंधणं परूवेदि तो वि तमेत्थ मोत्तूण कम्म-निबंधणं चेव घेतव्वं, अज्जप्पविज्जाए अहियारादो । किमद्वं निबंधणाणियोगद्वारमागयं ? दव्व-खेत्त-काल-भावेहि कम्माणि परूविदाणि, मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगपच्चया वि तेसिं परूविदा, तेसिं कम्माणं पाओग्गपोग्गलाणं पि परूवणा कदा । संपहि तेसिं कम्माणं लद्धप्पसरूवाणं वावारपदुप्पायणद्वं निबंधणाणियोगद्वारमागयं । तत्थ जं तं णोआगमदो-कम्मदव्वनिबंधणं तं दुविहं—मूलकम्मनिबंधणं उत्तरकम्मनिबंधणं चेदि । तत्थ अट्ट मूलकम्माणि, तेसिं निबंधणं वत्तइस्सामो । तं जहा—

सम्बद्ध हैं, विचकिल नामक वृक्षविशेषके फूल वैशाख व ज्येष्ठ माससे सम्बद्ध हैं; क्योंकि, वे इन्हीं मासोंमें पाये जाते हैं । इसी प्रकार दूसरोंके भी कालनिबन्धनका जानकर कथन करना चाहिये । अथवा पंचरात्रिक निबन्धन कालनिबन्धन है (?) । जो द्रव्य भावका आलम्बन अर्थात् आधार होता है वह भावनिबन्धन है । जैसे - लोभके चांदी-सोना आदिक निबन्धन हैं, क्योंकि, उनका आश्रय करके लोभकी उत्पत्ति देखी जाती है, तथा उत्पन्न हुआ लोभ भी उनका आलम्बन देखा जाता है । क्रोधकी उत्पत्तिका निमित्तभूत द्रव्य अथवा उत्पन्न हुआ क्रोध जिसका आलम्बन होता है वह क्रोधनिबन्धन कहा जाता है ।

शंका—यहां इन निबन्धनोंमेंसे कौनसा निबन्धन प्रकृत है ?

समाधान—नामनिबन्धन और स्थापनानिबन्धनको छोड़कर शेष सब निबन्धन यहां प्रकृत हैं । यह निबन्धनानुयोगद्वार यद्यपि छह द्रव्योंके निबन्धनकी प्ररूपणा करता है तो भी यहां उसे छोड़कर कर्मनिबन्धनको ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यहां आध्यात्मविद्याका अधिकार है ।

शंका—निबन्धनानुयोगद्वार किसलिये आया है ?

समाधान—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके द्वारा कर्मोंकी प्ररूपणा की जा चुकी है; उनके मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग रूप प्रत्ययोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है; तथा उन कर्मोंके योग्य पुद्गलोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है । अब आत्मलाभको प्राप्त हुए उन कर्मोंके व्यापारका कथन करनेके लिये निबन्धनानुयोगद्वार आया है ।

उनमें जो नोआगमकर्मद्रव्यनिबन्धन है वह दो प्रकारका है—मूलकर्मनिबन्धन और उत्तरकर्मनिबन्धन । उनमें मूल कर्म आठ हैं, उनके निबन्धनका कथन करते हैं । यथा—

तत्थ णाणावरणं सव्वदव्वेसु णिवद्धं^१, णोसव्वपज्जाएसु ॥१॥

सव्वदव्वेसु णिवद्धं ति केवलणाणावरणमस्सिदूण भणिदं । कुदो ? तिकालविसय-
अणंतपज्जायभरिदछदव्वविसयकेवलणाणविरोहत्तादो । णोसव्वपज्जाएसु ति वयणं सेस-
णाणावरणाणि पडुच्च भणिदं, सेसणाणाणं सव्वदव्वग्गहणसत्तीए अभावादो । मदि-सुद-
णाणाणं सव्वदव्वविसयत्तं किण्ण वुच्चदे, तासिं मुत्तामुत्तासेसदव्वेसु वावारुवलंभादो ?
ण एस दोसो, तेसिं दव्वाणमणंतेसु पज्जाएसु तिकालविसएसु तेहि सामण्णेणावगएसु
विसेससरूवेण वावाराभावादो । भावे वा केवलणाणेण समाणत्तं तेसिं पावेज्ज । ण च
एवं, पंचणाणुवदेसस्स अभावप्पसंगादो । णोसदो सव्वपडिसेहओ^२ ति किण्ण घेप्पदे ?
[ण,] णाणावरणस्साभावस्स पसंगादो, सु [व] वयणविरोहादो च । तम्हा णोसदो
देसपडिसेहओ ति घेत्तव्वं ।

एवं दंसणावरणीयं ॥ २ ॥

दंसणावरणीयं णाम अप्पाणम्मि चैव णिवद्धं, अण्णहा णाण-दंसणाणमेयत्तप्प-

उनमें ज्ञानावरण सब द्रव्योंमें निबद्ध है, वह सब पर्यायोंमें निबद्ध नहीं है ॥१॥

‘सब द्रव्योंमें निबद्ध है’ यह केवल ज्ञानावरणका आश्रय करके कहा गया है, क्योंकि, वह तीनों कालोंको विषय करनेवाली अनन्त पर्यायोंसे परिपूर्ण ऐसे छह द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका विरोध करनेवाली प्रकृति है । ‘सब पर्यायोंमें निबद्ध नहीं है’ यह वचन शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी अपेक्षासे कहा गया है, क्योंकि, शेष चार ज्ञानोंमें सब द्रव्योंको ग्रहण करनेकी शक्ति नहीं पाई जाती ।

शंका—मतिज्ञान व श्रुतज्ञान सब द्रव्योंको विषय करनेवाले हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते; क्योंकि, उनका मूर्त व अमूर्त सब द्रव्योंमें व्यापार पाया जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उन द्रव्योंकी त्रिकालविषयक अनन्त पर्यायोंमें उन ज्ञानोंकी सामान्य रूपसे प्रवृत्ति है, विशेष रूपसे नहीं है । अथवा यदि उनमें उनकी विशेष रूपसे भी प्रवृत्ति स्वीकार की जाय तो वे दोनों ज्ञान केवलज्ञानकी समानताको प्राप्त हो जावेंगे । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर पांच ज्ञानोंका जो उपदेश प्राप्त है उसके अभावका प्रसंग आता है ।

शंका—‘नो’ शब्दको सबके प्रतिषेधक रूपसे क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वैसा स्वीकार करनेपर एक तो ज्ञानावरणके अभावका प्रसंग आता है, दूसरे स्ववचनका विरोध भी होता है । इसलिये ‘नो’ शब्दको देशप्रतिषेधक ही ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरण भी सब द्रव्योंमें निबद्ध है, सब पर्यायोंमें वह निबद्ध नहीं है ॥२॥

शंका—दर्शनावरणीय कर्म आत्मामें ही निबद्ध है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर ज्ञान

१ काप्रती ‘णिवद्धं’, ताप्रती ‘णिवद्धं (णिवद्धं)’ इति पाठः । २ काप्रती ‘सदपडिसेहओ’, ताप्रती सद (व) पडिसेहओ’ इति पाठः ।

संगादो । ण च विसय-विसयिसण्णिवादानंतरसमए सामण्णग्गहणं दंसणं, विषय-विषयि-सन्निपातानन्तरमाद्यग्रहणमवग्रह इति लक्षणात् ज्ञानत्वं प्राप्तस्यावग्रहस्य दर्शनत्वविरोधात् । किं च— ण विसेसेण विणा सामण्णं चेव धेप्पदि, दच्च-खेत्त-काल-भावेहि अविसेसिदस्स गहणत्ताणुवत्तीदो । किं च — णाणेण किमवत्थुपरिच्छेदो^१ आहो वत्थुपरिच्छेदो कीरदि ? ण पढमपक्खो, घट्ट-पडादिवत्थूणं परिच्छेदयाभावेण सयल्लोगसंववहाराभावप्पसंगादो । ण विदियपक्खो वि, दंसणस्स णिव्विसयत्तप्पसंगादो । एवं दंसणं पि ण वुत्तदोसे अइकमइ । [ण च] णाण-दंसणेहि अकमेण वत्थुपरिच्छेदो कीरदि, दोण्णमकमेण पवुत्ति-विरोहादो । एदं कुदो णच्चदे ? “हंदि दुवे णत्थि उवजोगा”^२ इदि वयणादो । ण च कमेण वत्थुपरिच्छित्तिं कुणंति, केवलणाण-दंसणाणं पि कमपवुत्तिप्पसंगादो । दोण्णमेक-दरस्स अभावो वि होज्ज, अगहिदगहणाभावादो । तम्हा एवं दंसणावरणस्से त्ति वयणं

और दर्शनके एक होनेका प्रसंग आता है । यदि कहा जाय कि विषय और विषयीके संनिपातके अनन्तर समयमें जो सामान्य ग्रहण होता है वह दर्शन है तो यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विषय और विषयीके संनिपातके अनन्तर जो आद्य ग्रहण होता है वह अवग्रह कहा जाता है, इस प्रकारके लक्षणसे ज्ञानस्वरूपको प्राप्त हुए अवग्रहके दर्शन होनेका विरोध आता है । दूसरे, विशेषके विना केवल सामान्यका ग्रहण करना शक्य भी नहीं है, क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी विशेषतासे रहित केवल सामान्यका ग्रहण बन नहीं सकता । तीसरे, ज्ञान क्या अवस्तुको ग्रहण करता है अथवा वस्तुको ? प्रथम पक्ष तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, ज्ञानके घट पट आदि वस्तुओंका परिच्छेदक न रहनेसे समस्त लोकव्यवहारके अभाव हो जानेका प्रसंग आता है । द्वितीय पक्ष भी नहीं बनता है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर दर्शनके निर्विषय हो जानेका प्रसंग आता है । इसी प्रकार दर्शनमें भी उक्त दोनों दोषोंका प्रसंग आता है । ज्ञान व दर्शन युगपत् वस्तुका परिच्छेदन करते हैं, यह भी नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि, दोनोंकी युगपत् प्रवृत्त होनेमें विरोध आता है ।

प्रतिशंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

प्रतिशंका समाधान—यह “खेद है कि दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते” इस आगम-वचनसे जाना जाता है ।

यदि कहा जाय कि वे क्रमसे वस्तुका परिच्छेदन करते हैं तो यह भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर केवलज्ञान और केवलदर्शनके भी क्रमप्रवृत्तिका प्रसंग आता है । तथा दोनोंमेंसे किसी एकका अभाव भी हो जाना चाहिये, क्योंकि, वैसा होनेपर दूसरेके अगृहीत-ग्रहण सम्भव नहीं है । इस कारण “ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है” ऐसा जो वचन कहा गया है वह घटित नहीं होता है ?

१ काप्रती ‘परिच्छिदि’ इति पाठः । २ दंसण-णाणावरणक्खए समाणम्मि कस्स पुव्वअरं । होज्ज समं उप्पाओ हंदि दुए णत्थि उवजोगा ॥ सम्मह० २-९.

ण घडदे । ण एस दोसो, सरूवस्स बज्झत्थपडिबद्धस्स संवेयणं^१ दंसणं णाम । ण च बज्झत्थेण असंबद्धं सरूवमत्थि, णाण-सुह-दुक्ख्खाणं सव्वेसिं पि बज्झत्थावट्ठंभवलेणेव तेमिं पवुत्तिदंसणादो । तदो एवं दंसणावरणीयस्से त्ति वयणं घडदि त्ति सिद्धं । सेमं जाणि-ऊण वत्तव्वं ।

वेयणीयं सुह-दुक्खम्हि णिबद्धं ॥ ३ ॥

सिरोवेयणादी दुक्खं णाम । तस्स उवसमो तदणुप्पत्ती वा दुक्खुवसमहेउदव्वादि-संपत्ती वा सुहं णाम । तत्थ वेयणीयं णिबद्धं, तदुप्पत्तिकारणत्तादो ।

मोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ॥ ४ ॥

कुदो ? सम्मत्त-चरित्ताणं जीवगुणाणं घायणसहावादो । सम्मत्त-चारित्ताणि णाण-दंसणाणीव बज्झत्थसंबद्धाणि चेव, तदो मोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धमिदि किण्ण वुच्चदे । ण एस दोसो, चत्तारि वि घाइक्कम्माणि जीवम्हि चेव णिबद्धाणि त्ति जाणावणट्ठं बज्झत्थाणवलंबणादो^२ ।

आउअं भवम्मि णिबद्धं ॥ ५ ॥

कुदो ? भवधारणलक्खणत्तादो । को भवो णाम ? उप्पणवट्ठमसमयप्पहुडि जाव

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि बाह्य अर्थसे सम्बद्ध आत्मस्वरूपके जाननेका नाम दर्शन है । यदि कहा जाय कि आत्मस्वरूप बाह्य अर्थसे सम्बन्ध नहीं रखता सो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि ज्ञान, सुख व दुखरूप उन सभीकी प्रवृत्ति बाह्य अर्थके आलम्बनसं ही देखी जाती है । अत एव “ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है” यह वचन संगत ही है, यह सिद्ध है । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

वेदनीय सुख व दुखमें निबद्ध है ॥३॥

सिरकी वेदना आदिका नाम दुख है । उक्त वेदनाका उपशान्त हो जाना, अथवा उसका उत्पन्न ही न होना, अथवा दुक्खोपशान्तिके कारणभूत द्रव्यादिककी प्राप्ति होना; इसे सुख कहा जाता है । उनमें वेदनीय कर्म निबद्ध है, क्योंकि वह उनकी उत्पत्तिका कारण है ।

मोहनीय कर्म आत्मामें निबद्ध है ॥४॥

कारण कि उसका स्वभाव सम्यक्त्व व चारित्र रूप जीवगुणोंके घातनेका है ।

शंका—ज्ञान व दर्शनके समान सम्यक्त्व एवं चारित्र भी चूंकि बाह्य अर्थसे ही सम्बन्ध रखते हैं, अत एव ‘मोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निबद्ध है’; ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, चारों ही घातिया कर्म जीव द्रव्यमें ही निबद्ध हैं, यह जतलानेके लिये यहां बाह्य अर्थका अवलम्बन नहीं लिया है ।

आयु कर्म भवके विषयमें निबद्ध है ॥ ५ ॥

कारण कि भव धारण करना यह उसका लक्षण है ।

शंका—भव किसे कहते हैं ?

१ काप्रतौ ‘पडिबद्धस्स संवेयणं’ इति पाठः । २ काप्रतौ ‘बज्झत्थाणावलंबणादो’ इति पाठः ।

चरिमसमओ त्ति जो अवत्थाविसेसो सो भवो णाम ।

णामं तिधा णिबद्धं, पोग्गलविवागणिबद्धं जीवविवागणिबद्धं खेत्त-
विवागणिबद्धं ॥ ६ ॥

वण्ण-गंध-रस-फास-संघादणादीणं विवागो पोग्गलणिबद्धो, तेसिमुदएण वण्णादीण-
मुप्पत्तिदंसणादो । तित्थयरादीणि कम्मणि जीवणिबद्धाणि, तेसि विवागस्स जीवे चेषुव-
लंभादो । आणुपुव्वी खेत्तणिबद्धा, पडिणियदखेत्ते चेषु तस्से विवागुवलंभादो । तेण
णामं तिधा णिबद्धं ति सिद्धं ।

गोदमप्पाणम्हि णिबद्धं ॥ ७ ॥

कुदो ? उच्च-णीचगोदाणं जीवपज्जायत्तणेण दंसणादो ।

अंतराइयं दाणादिणिबद्धं ॥ ८ ॥

कुदो ? दाणादीणं विग्घकरणे तच्चावारुवलंभादो । एवं मूलपयडिगिबंधणपरूवणं
समत्तं ।

संपहि उत्तरपयडिगिबंधणं वुच्चदे । तं जहा—

चत्तारि णाणावरणीयाणि दव्वपज्जायाणं देसणिबद्धाणि ॥ ९ ॥

ओहिणाणं [दव्वदो] मुत्तिदव्वणि चेषु जाणदि णामुत्तघम्माधम्म-कालागास-सिद्ध-

समाधान—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक जो विशेष अवस्था
रहती है उसे भव कहते हैं ।

नामकर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है—पुद्गलविपाकनिबद्ध, जीवविपाकनिबद्ध और क्षेत्र-
विपाकनिबद्ध ॥ ६ ॥

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श और संघात आदि नामप्रकृतियोंका विपाक पुद्गलमें निबद्ध है,
क्योंकि, उनके उदयसे वर्णादिककी उत्पत्ति देखी जाती है । तीर्थङ्कर आदिक कर्म जीवमें निबद्ध
हैं, क्योंकि, उनका विपाक जीवमें ही पाया जाता है । आनुपूर्वी कर्म क्षेत्रमें निबद्ध है, क्योंकि,
उसका विपाक प्रतिनियत क्षेत्रमें ही पाया जाता है । इस कारण नामकर्म तीन प्रकारसे निबद्ध
हैं, यह सिद्ध होता है ।

गोत्र कर्म आत्मामें निबद्ध है ॥ ७ ॥

कारण कि उच्च व नीच गोत्र जीवकी पर्यायस्वरूपसे देखे जाते हैं ।

अन्तराय कर्म दानादिकमें निबद्ध है ॥ ८ ॥

कारण कि दानादिकोंके विषयमें विघ्न करनेमें उसका व्यापार पाया जाता है ।

इस प्रकार मूलप्रकृतिनिबन्धनप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब उत्तर प्रकृतियोंके निबन्धनकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—

चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियां द्रव्योंकी पर्यायोंके एकदेशमें निबद्ध हैं ॥ ९ ॥

अवधिज्ञान द्रव्यकी अपेक्षा मूर्त द्रव्योंको ही जानता है; धर्म, अधर्म, काल, आकाश और

जीवद्व्याणि, “रूपिष्वधेः”^१ इति वचनात् । खेत्तदो घणलोगभन्तरद्विदाणि^२ चैव जाणदि, णो बहित्थाणि^३ । कालदो असंखेज्जेसु वासेसु जमदीदमणागयं तं चैव जाणदि, णो बहित्थं^४ । भावदो असंखेज्जलोगमेत्तद्वपज्जाए तीदाणागद-वट्टमाणाकालविसए जाणदि । तेणोहिणाणं सव्वद्वपज्जयविसयं ण होदि । तदो ओहिणाणावरणं सव्वद्व्याणं देस-णिबद्धं ति भणिदं । मणपज्जवणाणं पि जेण दव्व-खेत्त-काल-भावाणं विसईकदेगदेसं तेण मणपज्जवणाणावरणीयं पि देसणिबद्धं । एवं मदि-सुदणाणावरणीयाणं पि^५ देम-णिबद्धत्तं परूवेयव्वं ।

केवलणाणावरणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं ॥ १० ॥

कुदो ? विसईकदासेसदव्वंकेवलणाणपडिबंधयत्तादो । खेत्त-काल-भावग्गहणं^६ सुत्ते ण कदं, तेण तमेत्थ वत्तव्वं ? ण, दव्वेहिंतो पुधभूदक्खेत्त-काल-भावाणमभावादो ।

धीणगिद्धितियं णिहा पयला य अचक्खुदंसणावरणीयं अप्पाणस्मि णिबद्धं ॥ ११ ॥

सिद्ध जीव इन अमूर्त द्रव्योंको वह नहीं जानता; क्योंकि, ‘अवधिज्ञानका निबन्धरूपी द्रव्योंमें है, ऐसा सूत्रवचन है । क्षेत्रकी अपेक्षा वह घनलोकके भीतर स्थित द्रव्योंको ही जानता है, उसके बाहर स्थित द्रव्योंको नहीं जानता । कालकी अपेक्षा वह असंख्यात वर्णोंके भीतर जो अतीत व अनागत वस्तु है उसे ही जानता है, उनके बाहर स्थित वस्तुको नहीं जानता । भावकी अपेक्षा वह अतीत, अनागत एवं वर्तमान कालको विषय करनेवाली असंख्यात लोक मात्र द्रव्यपर्यायोंको जानता है । इसलिये अवधिज्ञान द्रव्योंकी समस्त पर्यायोंको विषय करनेवाला नहीं है । इसी कारण अवधिज्ञानावरण सब द्रव्योंके एकदेशमें निबद्ध है, ऐसा कहा है । मनःपर्ययज्ञान भी चूंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा एक देशको ही विषय करनेवाला है; अत एव मनःपर्ययज्ञानावरणीय भी देशनिबद्ध है । इसी प्रकार मतिज्ञानावरणीय और श्रुतज्ञानावरणीयकी भी देशनिबद्धताका कथन करना चाहिये ।

केवलज्ञानावरणीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १० ॥

कारण कि वह समस्त द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका प्रतिबन्धक है ।

शंका—यहां सूत्रमें क्षेत्र, काल और भावका ग्रहण नहीं किया गया है, इसलिये उनका यहां कथन करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्योंसे पृथग्भूत क्षेत्र, काल और भावका अभाव है ।

स्त्यानगृद्धित्रय, निद्रा, प्रचला और अचक्षुदर्शनावरणीय आत्मामें निबद्ध है ॥ ११ ॥

१ त. सू. १-२७. २ काप्रती ‘-वरणीयं पदेसाणिबद्धं’ इति पाठः । ३ प्रत्योरुभयोरेव ‘द्विदाणं’ इति पाठः ।

४ प्रत्योरुभयोरेव ‘बहिद्दाणि’ इति पाठः । ५ प्रत्योरुभयोरेव बहिद्धं इति पाठः । ६ काप्रती ‘प देसणिबद्धं’ ताप्रती ‘पि देमणिबद्धं’ इति पाठः । ७ प्रत्योरुभयोरेव ‘विगमईकदासेसदव्वं’ इति पाठः । ८ काप्रती ‘कालभवग्गहणं’, ताप्रती ‘कालणिबद्धग्गहणं’ इति पाठः ।

जीवस्स सगसंवेयणघाड्तादो । रस-फास-गंध-सद्-दिट्ठ-सुवाणुभूदत्थविसयसग-
सत्तिविसयजीवोवजोगो अचक्खुदंसणं णाम । तम्हा^१ अचक्खुदंसणेण बज्जत्थणिबंधणेण^२
होदव्वमिदि ? सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ बज्जत्थणिबंधणत्तं ण विवक्खिदं । किमट्ठं विवक्खा ण
कीरदे ? सच्चं पि दंसणं णाणं व बज्जत्थविसयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं ण कीरदे ।

चक्खुदंसणावरणीयं^३ गरुअलहुअणंतपदेसिएसु दव्वेसु णिबद्धं ॥१२॥

मंखेज्जामंखेज्जपदेमिययोग्गलदव्वं चक्खुदंसणस्स विमओ ण होदि, किंतु अणंत-
पदेसिययोग्गलदव्वं चैव विमओ होदि त्ति जाणावणट्ठमणंतपदेसिएसु दव्वेसु त्ति भणिदं ।
एदं वयणं देसामामियं, तेण सच्चेमिं दंसणाणमचक्खुमणिदाणमेमा परूवणा कायव्वा ।
गरुअलहुअविसेमणं अणंतपदेसियक्खंधस्स होदि, गरुआणं लोहदंडादीणं हलुआणमक्क-
तूलादीणं^४ च चक्खिदिएण^५ महणुवलंभादो । अगुरुअलहुअविसेसणं किण्ण कीरदे ?
ण, चक्खिदियविसए परमाणुआदीणमसंभवादो । पुच्चं सच्चं पि दंसणमज्जत्थविसयमिदि
परूविदं, संपहि चक्खुदंसणस्स बज्जत्थविमयत्तं परूविदं ति णेदं घडदे, पुच्चावरविगे-

कारण कि उक्त प्रकृतियां जीवके स्वसंवेदनको घातनेवाली हैं ।

शंका—रस, स्पर्श, गन्ध, शब्द, हृष्ट, श्रुत व अनुभूत अर्थको विषय करनेवाली अपनी
शक्तिविषयक जीवके उपयोगको अचक्षुदर्शन कहा जाता है । इसीलिये अचक्षुदर्शनका निवन्धन
वाह्य अर्थ होना चाहिये ?

समाधान—यह कहना सत्य है, किन्तु उक्त बाह्यार्थनिवन्धनताकी यहां विवक्षा नहीं की गई है ।

शंका—उसकी विवक्षा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—सभी दर्शन ज्ञानके समान वाह्य अर्थको विषय करनेवाला नहीं है, इस
वातके ज्ञापनार्थ यहां उसकी विवक्षा नहीं की गई है ।

चक्षुदर्शनावरणीय कर्म गुरु व लघु ऐसे अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें निवद्ध है ॥ १२ ॥

मंख्यात व अमंख्यात प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य चक्षुदर्शनका विषय नहीं होता, किन्तु
अनन्त प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य ही उसका विषय होता है ; इस वातको जतलानेके लिये 'अनन्त
प्रदेशवाले द्रव्योंमें' यह कहा है । यह वचन देशामर्शक है, इसलिये उससे अचक्षु मंज्जावाले सब
दर्शनोंकी यह प्ररूपणा करनी चाहिये । 'गुरु व लघु' यह अनन्त प्रदेशवाले स्कन्धका विशेषण
है, क्योंकि, चक्षु इन्द्रियके द्वारा लोहदण्डादिरूप गुरु और अर्कतूल (आकके पेड़का रूआ)
आदिरूप लघु पदार्थोंका ग्रहण पाया जाता है ।

शंका—'अगुरुअलघु' यह विशेषण क्यों नहीं करतं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, परमाणु आदि चक्षु इन्द्रियके विषय नहीं होते ।

शंका—सभी दर्शन अध्यात्म अर्थको विषय करनेवाला है, ऐसी प्ररूपणा पहले की जा
चुकी है । किन्तु इस समय बाह्यार्थको चक्षुदर्शनका विषय कहा है, इस प्रकार यह कथन त्तंगत

१ काप्रती 'ते जहा' इति पाठः । २ काप्रती 'विवंधणेण' इति पाठः । ३ ताप्रती 'चक्खुदंसणेण' इति पाठः ।
४ काप्रती 'हलुहाण', ताप्रती 'हलुहाण (लहुआण)' इति पाठः । ५ मप्रतिपाठोऽयम् । काप्रती—'मक्कतूलादीणं',
ताप्रती—'मक्कतूलादीणं' इति पाठः । ६ काप्रती 'चक्खिदिएण', ताप्रती 'चक्खिदिएण (ण)' इति पाठः ।

हादो ? ण एस दोसो, एवंविहेसु बज्झत्थेसु पडिबद्धत्तसगसत्तिसंवेयण^१ चक्खुदंसणं ति जाणावणट्ठं बज्झत्थविसयपरूवणाकरणादो । पंचणं दंसणाणमचक्खुदंसणमिदि एगणिहेसो किमट्ठं कदो ? तेसिं पच्चासत्ती अत्थि त्ति जाणावणट्ठं कदो^२ । कथं तेसिं पच्चसत्ती ? विसईदो^३ पुधभूदस्स अक्खेण सग-परपच्चक्खस्स चक्खुदंसणं विसयस्सेव तेसिं विसयस्स परेसिं जाणावणोवायाभावं^४ पडि समाणत्तादो ।

ओहिदंसणावरणीयं रूविद्वेषेसु णिबद्धं ॥ १३ ॥

रूविद्वेषविसयसगसत्तिसंवेयणविघादकरणादो वि पुचं व बज्झत्थविसयपरूवणाण कारणं वत्तच्चं ।

नहीं है; क्योंकि, इसमें पूर्वापरविरोध है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके बाह्य पदार्थोंमें प्रतिबद्ध आत्मशक्तिका संवेदन करनेको चक्षुदर्शन कहा जाता है: यह बतलानेके लिये उपर्युक्त बाह्यार्थ-विषयताकी प्ररूपणा की गई है ।

शंका—पांच दर्शनोंके लिये 'अचक्षुदर्शन' ऐसा एक निर्देश किसलिये किया है ?

समाधान—उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति है, इस बातके जतलानेके लिये वैसा निर्देश किया गया है ।

शंका— उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति कैसे है ?

समाधान—विषयीसे पृथग्भूत अतएव युगपत् स्व और परको प्रत्यक्ष होनेवाले ऐसे चक्षुदर्शनके विषयके समान उन पांचों दर्शनोंके विषयका दूसरोंके लिये ज्ञान करानेका कोई उपाय नहीं है । इसकी समानता पांचों ही दर्शनोंमें है, यही उनमें प्रत्यासत्ति है ।

विशेषार्थ—यहां शंकाकारका कहना है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की गयी है इसी प्रकारसे त्वग्निन्द्रियादिसे उत्पन्न होनेवाले शेष पांच दर्शनोंकी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार न कर उन्हें एक अचक्षुदर्शनके ही अन्तर्गत क्यों कहा गया है । इसके उत्तरमें यहां यह कहा गया है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी विषयभूत वस्तु विषयी (अप्राप्यकारी चक्षु) से पृथक् होनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनों के लिये प्रत्यक्ष होती है और इसीलिए दूसरोंको उसका ज्ञान भी कराया जा सकता है, इस प्रकार उक्त पांचों दर्शनोंकी विषयभूत वस्तु विषयी (प्राप्यकारी त्वग्निन्द्रियादि) से पृथक् न रहनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनोंके लिये प्रत्यक्ष नहीं हो सकती, और इसीलिये उसका दूसरोंको एक साथ ज्ञान भी नहीं कराया जा सकता है । यही इन पांचों दर्शनोंमें प्रत्यासत्ति है जो सबमें समान है ।

अवधिदर्शनावरणीय रूपी द्रव्योंमें निबद्ध हे ॥ १३ ॥

रूपी द्रव्यविषयका आत्मशक्तिके संवेदनका विघात करनेके कारण पहिलेके ही समान इसकी भी बाह्यार्थविषयक प्ररूपणाका कारण कहना चाहिये ।

१ काप्रती 'सत्तिसंवेयण' इति पाठः । २ काप्रती 'कुदो' इति पाठः । ३ काप्रती 'पच्चासत्तिविमद्दो' इति पाठः । ४ मप्रतिपाटोऽयम् । कान्ताप्रत्योः 'अचक्खुदंसण' इति पाठः । ५ काप्रती 'वायाभावा' इति पाठः ।

केवलदंसणावरणीयं सव्वदव्वे णिवद्धं ॥ १४ ॥

अणंतसम्मत्त-णाण-चरण-मुहादिसत्तीणं केवलदंसणविसयाणं बज्जत्थं चैव अस्सि-
दूण अवट्ठाणुवलंभादो । केवलदंसणादीणं बज्जत्थणिबंधो^३ किमट्ठं वुच्चदे ? दंसणविसय-
जाणावणट्ठं, अण्णहा दंसणविसयस्स अज्जत्थस्स परेसिमपच्चक्खस्स जाणावणो-
वायाभावदो ।

सादासादाणमप्पाणम्मिह णिवंधो ॥ १५ ॥

कुदो ? सादासादविवागफलाणं^३ सुह-दुक्खाणं जीवे समुवलंभादो ।

**मोहणीयं दुविहं—दंसणमोहणीयं चारित्तमोहणीयं चेदि । तत्थ दंसण-
मोहणीयं सव्वदव्वेसु णिवद्धं, णोसव्वपज्जाएसु ॥ १६ ॥**

मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं च सव्वदव्वेसु णिवद्धं, सव्वदव्वसदहणगुणविघादकरणादो ।
सम्मत्तं णोसव्वपज्जाएसु णिवद्धं । कुदो ? तत्तो सम्मत्तस्स एगदेसघादुवलंभादो । दंसण-
मोहणीयं जेण घादिकम्मं तेण अप्पाणम्मि णिवद्धमिदि किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो,

केवलदर्शनावरणीयं सब द्रव्योमें निबद्ध है ॥ १४ ॥

कारण कि केवलदर्शनकी विषयभूत अनन्त सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र एवं सुख आदि रूप
शक्तियोंका अवस्थान बाह्य अर्थका ही आश्रय करके पाया जाता है ।

शंका—केवलदर्शनादिकोंकी बाह्यार्थनिबद्धताका कथन किसलिये किया जाता है ?

समाधान—दर्शनका विषय बतलानेके लिये उसका कथन किया गया है । कारण कि
दर्शनका विषयभूत अर्थ अध्यात्मरूप होनेसे दूसरोंको प्रत्यक्ष नहीं है, अतएव इसके बिना
उसका ज्ञान करानेके लिये और कोई दूसरा उपाय ही नहीं था ।

सातावेदनीय और असातावेदनीय आत्मामें निबद्ध है ॥ १५ ॥

कारण कि साता व असाता सम्बन्धी विपाकके फलरूप सुख व दुख जीवमें ही
पाये जाते हैं ।

मोहनीय कर्म दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें
दर्शनमोहनीय सब द्रव्योमें निबद्ध है, सब पर्यायोमें नहीं ॥ १६ ॥

मिथ्यात्व व सम्मिमिथ्यात्व दर्शनमोहनीय सब द्रव्योमें निबद्ध हैं, क्योंकि, वे समस्त
द्रव्यो सम्बन्धी श्रद्धान गुणका विघात करनेवाली प्रकृतियां हैं । सम्यक्त्व दर्शनमोहनीय प्रकृति
कुल पर्यायोमें निबद्ध है, क्योंकि, उसके द्वारा सम्यक्त्वके एकदेशका घात पाया जाता है ।

शंका—दर्शनमोहनीय चूंकि घातिया कर्म है, अत एव 'वह आत्मामें निबद्ध है'; ऐसी
प्ररूपणा यहाँ क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, छह द्रव्य और नौ पदार्थ विषयक श्रद्धानका

१ ताप्रतौ 'णाणावरणमुहादि' इति पाठः । २ उपयोरेव प्रत्योः 'णिवद्धो' इति पाठः । ३ काप्रतौ
'विवाकगलाणं', ताप्रतौ 'विवाकगलाणं (सादासादविवागाणं), मप्रतौ 'विवाकफलाणं' इति पाठः ।

छदच्च-णवपयत्थविसयसद्दहणं सम्मदंसणं ति घाइज्जमाणजीवंसंपदुप्पायणट्ठं बज्जत्थ-
णिबंधणपरूवणाकरणादो ।

चारित्तमोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ॥ १७ ॥

राग-दोसा बज्जत्थालंबणा, तेसिं च णिरोहो चारित्तं । तदो चारित्तमोहणीयं
सव्वदव्वेमु णिबद्धं ति वत्तव्वं^१ । सच्चमेदं, कित्तु तमेत्थ णावेत्तिखदं । कुदो ? बहुसो पदु-
प्पायणेण उवएसेण विणा एत्थ तदव्वगमादो ।

णिरयाउअं णिरयभवम्मि णिबद्धं ॥ १८ ॥

कुदो ? तत्थ णिरयभवधारणसत्तिदंसणादो ।

सेसाउआणि वि अप्पप्पणो भवेसु^३ णिबद्धाणि ॥ १९ ॥

तत्तो तेसिं भवाणमवट्ठाणुवलंभादो ।

णामं तिधा णिबद्धं— जीवणिबद्धं पोग्गलणिबद्धं खेत्तणिबद्धं च ॥ २० ॥

एवं णामणिबद्धं तिविहं चैव होदि, अण्णस्म अणुवलंभादो । पोग्गलविवाग-
णिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं भणदि—

नाम सम्यग्दर्शन है, अत एव घातं जानेवाले जीवगुणोंकी प्ररूपणा करनेके लिये वाह्यार्थ-
निबन्धनकी प्ररूपणा की गई है ।

चारित्रमोहनीयकर्म आत्मामें निबद्ध है ॥ १७ ॥

शंका— राग और द्वेष वाह्य अर्थका आलम्बन करनेवाले हैं, और चूंकि उन्हींके निरोध
करनेका नाम चारित्र है अत एव चारित्रमोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निबद्ध है; ऐसा यहां
कहना चाहिये ?

समाधान—यह सत्य है, किन्तु उसकी यहां अपेक्षा नहीं की गई है । कारण कि बहुत बार
प्ररूपणा की जानेसे उपदेशके बिना भी यहां उसका ज्ञान हो जाता है ।

नारकायु नारक भवमें निबद्ध है ॥ १८ ॥

कारण कि उसमें नारक भव धारण करानेकी शक्ति देखी जाती है ।

शेष तीन आयु कर्म भी अपने अपने भवोंमें निबद्ध है ॥ १९ ॥

क्योंकि, उनसे उन भवोंका अवस्थान पाया जाता है ।

नाम कर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है—जीव द्रव्यमें निबद्ध है, पुद्गलमें निबद्ध है, और
क्षेत्रमें निबद्ध है ॥ २० ॥

इस प्रकार नामका निबन्धन तीन प्रकारका ही है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य कोई
निबन्धन पाया नहीं जाता । पुद्गलविपाकनिबद्ध प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिये गाथासूत्र
कहते हैं—

१ काप्रतो 'जीवस्स' इति पाठः । २ काप्रतो 'निबद्धं ति ति घेत्तव्वं' इति पाठः । ३ काप्रतो 'भवे वा'
इति पाठः ।

पंच य छ त्ति य छपंच दोण्णि पंच य हवंति अट्टेव ।
 सरीरादीपरुसंता पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ १ ॥
 अगुरुलहु-परुवघादा आदाउज्जोव णिमिणणामं च ।
 पत्तेय-थिर-सुहेदरणात्ताणि य पोग्गलविवागा^१ ॥ २ ॥

पंच सरीराणि, छ संठाणाणि, तिण्णि अंगोवंगाणि, छ संघडणाणि, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ट फासा, अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-आदाउज्जोव-पत्तेय-साहारण-सरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणि च पोग्गलणिवद्धाणि । कुदो ? एदेसिं विवागेण सरीरादीणं णिप्पत्तिदंमणादो । एवं वावणणामपयडीओ पोग्गलणिवद्धाओ । संपहि जीवणिवद्धणामपयडिपरुवणट्टमुत्तरसुत्तं भणदि—

गदिजादी उस्सासो दोण्णि विहाया तसादितियजुगलं ।
 सुभगादीचदुजुगलं जीवविवागा य तित्थयरं^३ ॥ ३ ॥

चत्तारिगदि-पंचजादि-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस-थावर-वादर-सुहम-पत्तापज्जत्त-सुभग-दुभग-सुस्वर-दुस्वर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-अजसकित्ति-तित्थयरपयडीओ अप्पाणम्मि णिवद्धाओ । कुदो ? एदासिं विवागस्स जीवे चैवुवलभादो । एवमेदाओ सत्तावीसणामपयडीओ जीवविवागियाओ । संपहि खेत्तणिवद्धपयडिपरुवणट्टं गाहामुत्तं

शरीरसे लेकर स्पर्श पर्यन्त अर्थात् शरीर संस्थान, आंगोपांग, संसहनन, वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श ये अनुक्रमसे पांच, छह, तीन, छह, पांच, दो, पांच और आठ प्रकृतियां अगुरुलघु, परघात, उपघात, आतप, उद्योत, निर्माण, प्रत्येक व साधारण, स्थिर व अस्थिर तथा शुभ व अशुभ; ये नामकृतियां पुद्गलविपाकी है ॥ १-२ ॥

पांच शरीर, छह संस्थान, तीन आंगोपांग, छह संहनन, पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येक, व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण ये नामकर्मकी प्रकृतियां पुद्गलनिबद्ध हैं, क्योंकि, इनके विपाकसे शरीरादिकोंकी उत्पत्ति देखी जाती है । इस प्रकार ये बावन नामप्रकृतियां पुद्गलनिबद्ध हैं । अब जीवनिबद्ध नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

गति, जाति, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, त्रस आदिक तीन युगल, सुभग आदिक चार युगल और तीर्थकर, ये प्रकृतियां जीवविपाकी हैं ॥ ३ ॥

चार गति, पांच जाति, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुःस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति और तीर्थकर, ये प्रकृतियां आत्मामें निबद्ध हैं, क्योंकि, इनका विपाक जावमें ही पाया जाता है । इस प्रकार ये सत्ताईस नामप्रकृतियां जीवविपाकी हैं । अब क्षेत्रनिबद्ध प्रकृतियोंकी

१ देहादी फासता पण्णासा णिमिण-तावजुगलं च । थिर-सुह-पत्तेयदुर्गं अगुरुत्तिथं पोग्गलविवादे ॥ गो. क. ४०.
 २ काप्रती 'णिबद्धाणाम' इति पाठः । ३ तित्थयरं उस्सास वादर-पज्जत्त-सुस्सरादेज्ज । जस-तस-विहाय-सुभगदु-चउगइ-पणजाइ सगवीसं ॥ गदि जादी उस्सासं विहायगदि तसतियाण जुगलं च । सुभगादिचउज्जुगलं तित्थयरं चेदि सगवीम ॥ गो. क. ५०-५१.

भणदि—

चत्तारि आणुपुन्वी खेत्तविवागा त्ति जिणवरुद्धिहा ।

णीचुच्चागोदाणं होदि णिबंधो दु अप्पाणे ॥ ४ ॥

चत्तारि आणुपुन्वीओ खेत्तणिवद्धाओ । कुदो ? पडिणियदखेत्तम्हि चैव तासिं फलोवलंभादो । णीचुच्चागोदाणं पुण णिबंधो अप्पाणम्मि चैव, तेसिं फलस्स जीवे चैवुवलंभादो ।

दाणंतराइयं दाणे लाभे भोगे तदेव उवभोगे ।

गहणे होंति णिवद्धा विरियं जह केवलावरणं ॥ ५ ॥

एदाओ पंच वि पयडीओ जीवणिवद्धाओ चैव, घाइकुम्मत्तादो । किंतु घाइज्जमाण-जीवगुणजाणावणट्टमेसा गाहा परूविदा । दाणंतराइयं दाणविग्घयरं, लाहविग्घयरं लाहंतराइयं, भोगविग्घयरं भोगंतराइयं, उपभोगविग्घयरं उवभोगंतराइयं । गहणसदो उवभोगगहणे त्ति पादेक्कं संबधेयव्वो । जहा केवलणाणावरणीयं परूविदं अणंतदव्वेम णिवद्धमिदि तथा विरियंतराइयं पि परूवेयव्वं, जीवादो पुधभूददव्वं अस्सिऊण विरियस्स पवुत्तिदंसणादो । एवमेत्थ अणियोगहारे एत्तियं चैव परूविदं, सेसअणंतत्थविसय-उवदेसाभावादो ।

एवं णिबंधणे त्ति समत्तमणिओगहारं ।

प्ररूपणा करनेके लिये गाथासूत्र कहते हैं—

चार अनुपूर्वी प्रकृतियां क्षेत्रविपाकी है, ऐसा जिनेन्द्र देवके द्वारा निर्दिष्ट किया गया है । नीच व ऊंच गोत्रोंका निबन्ध आत्मामें है ॥ ४ ॥

चार आनुपूर्वी प्रकृतियां क्षेत्रनिबद्ध हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें ही उनका फल पाया जाता है । परन्तु नीच व ऊंच गोत्रका निबन्ध आत्मामें ही है, क्योंकि, उनका फल जीवमें ही पाया जाता है ।

दानान्तराय दानके ग्रहणमें, लाभान्तराय लाभके ग्रहणमें, भोगान्तराय भोगके ग्रहणमें, तथा उपभोगान्तराय उपभोगके ग्रहणमें निबद्ध है । वीर्यान्तराय केवलज्ञानावरणके समान अनन्त द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ ५ ॥

ये पांचों ही प्रकृतियां जीवनिबद्ध ही हैं, क्योंकि, वे घातिया कर्म हैं । किन्तु उनके द्वारा घाते जानेवाले जीवगुणोंका ज्ञापन करानेके लिये इस गाथाकी प्ररूपणा की गई है । दानमें विघ्न करनेवाला दानान्तराय, लाभमें विघ्न करनेवाला लाभान्तराय, भोगमें विघ्न करनेवाला भोगान्तराय, और उपभोगमें विघ्न करनेवाला उपभोगान्तराय है । ग्रहण शब्दका अर्थ उपभोगग्रहण है, इस कारण इसका प्रत्येकके साथ सम्बन्ध करना चाहिये । जिस प्रकार केवलज्ञानावरणीयकी अनन्त द्रव्योंमें निबद्धताकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार वीर्यान्तरायकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, जीवसे भिन्न द्रव्यका आश्रय करके वीर्यकी प्रवृत्ति देखी जाती है । इस प्रकार इस अनुयोगद्वारमें इतनी ही प्ररूपणा की गई है, क्योंकि, शेष अनन्त पदार्थविषयक निबन्धनके उपदेशका अभाव है ।

इस प्रकार निबन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

पक्रमानियोगद्वारं

जयउ भुवणेकतिलओ तिहुवणकलिकलुमधुवणवावारी ।

संतिथरो संतिजिणो पक्रमअणियोगकत्तारो ॥ १ ॥

पक्रमे त्ति अणियोगद्वारस्स थोवत्थपरूवणे^१ कीरमाणे अपयदत्थणिगकरणदुवारेण पयदत्थपरूवणद्वं णिकखेवो कीरदे । तं जहा—णामपक्रमो, ठवणपक्रमो, दव्वपक्रमो, खेत्तपक्रमो, कालपक्रमो, भावपक्रमो चेदि छव्विहो पक्रमो । णाम-ठवणं गदं । दव्व-पक्रमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वपक्रमभेएण । तत्थ आगमदव्वपक्रमो पक्रमानिओग-द्वारजाणगो अणुवजुत्तो । णोआगमदव्वपक्रमो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्त-भेदेण । जाणुगसरीर-भवियं गदं । तव्वदिरित्तपक्रमो दुविहो—कम्मपक्रमो णोकम्म-पक्रमो चेदि । तत्थ कम्मपक्रमो अट्टविहो । णोकम्मपक्रमो तिविहो—सच्चित्त-अचित्त-मिस्स-भेएण । अस्साणं हत्थीणं पक्रमो सच्चित्तपक्रमो णाम । हिरण्य-सुवण्णादीणं पक्रमो अचित्त-पक्रमो णाम । साभरणाणं हत्थीणं अस्साणं वा पक्रमो मिस्सपक्रमो णाम । खेत्तपक्रमो तिविहो—उड्डलोगपक्रमो अधोलोगपक्रमो तिरियलोगपक्रमो चेदि । एत्थ आधेये आधारीवयारेण तत्थद्वियजीवाणं उड्डाधोतिरियलोगो त्ति सण्णा, अण्णहा तिण्णं लोगाणं

लोकके एक मात्र तिलक स्वरूप, तीन लोकके शत्रुभूत पाप-मेलके धोनेमें व्यापृत, शान्तिके करनेवाले और प्रक्रम अनुयोगके कर्ता ऐसे शान्तिनाथ जिनेन्द्र जयवन्त होवें ॥ १ ॥

प्रक्रम इस अनुयोगद्वारके स्तोत्रार्थकी प्ररूपणा करते समय अप्रकृत अर्थके निराकरण द्वारा प्रकृत अर्थकी प्ररूपणा करनेके लिये निक्षेप किया जाता है । वह इस प्रकार है—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम; इस प्रकार प्रक्रम छह प्रकारका है । इनमें नामप्रक्रम और स्थापनाप्रक्रम अवगत हैं । द्रव्यप्रक्रम आगमद्रव्यप्रक्रम और नोआगम-द्रव्यप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें प्रक्रम अनुयोगद्वारका ज्ञायक उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यप्रक्रम है । नोआगमद्रव्यप्रक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्रव्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । इनमेंसे ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यप्रक्रम अवगत हैं । तद्रव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यप्रक्रम कर्मप्रक्रम और नोकर्मप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें कर्मप्रक्रम आठ प्रकारका है । नोकर्मप्रक्रम सच्चित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है । अश्रों और हाथियोंका प्रक्रम सच्चित्तप्रक्रम, हिरण्य और सुवणे आदिकोंका प्रक्रम अचित्तप्रक्रम, तथा आभरण सहित हाथियों व अश्रोंका प्रक्रम मिश्रप्रक्रम कहलाता है ।

क्षेत्रप्रक्रम ऊर्ध्वलोकप्रक्रम, अधोलोकप्रक्रम और तियलोकप्रक्रमके भेदसे तीन प्रकारका है । यहां आधेयमें आधारका उपचार करनेसे उन लोकोंमें स्थित जीवोंकी ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और

१ ताप्रती 'थोवत्त (त्थ) परूवणे' इति पाठः ।

थावराणं पक्कमाणुवत्तीदो । समयवलिया-खण-लव-मुहुत्तादी कालपक्कमो^१ । भावपक्कमो
दुविहो— आगमदो णोआगमदो^२ च । तत्थ आगमदो पक्कमाणिओगहारजाणओ उवजुत्तो ।
णोआगमदो भावपक्कमो ओदइयादिपंचभावा । एत्थ कम्मपक्कमे पयदं । प्रकामतीति
प्रक्रमः कामणपुद्गलप्रचयः । आदाणिओ एत्थ भणदि— जहा कुंभारो एयादो मट्टियपिंडादो
अणैयाणि घडादीणि उप्पादेदि तहा इत्थी पुरिसो णवुंमओ थावरो तसो वा जो वा
सो वा एयविहं कम्मं वंधिदूण अट्टविहं करेदि, अकम्मादो कम्मस्स उप्पत्तिविरोहादो ?
एत्तो णिग्गहो कीरदे—जदि अकम्मादो^३ कम्मुप्पत्ती ण होदि तो अकम्मादो^३ तुब्भेहि
संक्कपिदएगकम्मुप्पत्ती वि ण होदि, कम्मत्तं पडि विसेसाभावादो । अह कम्मइयवग्गणादो
जमेगमुप्पणं तं जइ कम्मं ण होदि तो तत्तो ण अट्टकम्माणमुप्पत्ती, अकम्मादो^३
कम्मुप्पत्तिविरोहादो । ण च एयंतेण कारणणुमारिणा कज्जेण होदव्वं, मट्टियपिंडादो
मट्टियपिंडं मोत्तूण घट-घटी-सरावालंजरुट्टियादीणमणुप्पत्तिपसंगादो । सुवण्णादो
सुवण्णस्स घटस्सेव उप्पत्तिदंसणादो कारणणुसारि चैव कजं ति ण वोत्तुं जुत्तं, कट्टिणादो^४
सुवण्णादो जलणादिसंजोगेण सुवण्णजलुप्पत्तिदंसणादो । किं च—कारणं व ण कज्जमुप्पज्जदि,

तिर्यग्लोक संज्ञा है, क्योंकि, इसके बिना स्थिरशील तीन लोकोंका प्रक्रम बन नहीं सकता । समय,
आवली, क्षण, लव और मुहूर्त आदिकको कालप्रक्रम कहा जाता है । भावप्रक्रम दो प्रकार का है—
आगमभावप्रक्रम और नोआगमभावप्रक्रम । उनमें प्रक्रम अनुयोगद्वाराका ज्ञायक उपयोग युक्त
जीव आगमभावप्रक्रम है । औदयिक आदिक पांच भावोंको नोआगमभावप्रक्रम कहा जाता है ।
यहां कर्मप्रक्रम प्रकृत है । 'प्रकामतीति प्रक्रमः' इस निरुक्तिके अनुसार कामण पुद्गलप्रचयको
प्रक्रम कहा गया है ।

शंका— यहां शंकाकार कहता है कि जिस प्रकार कुम्हार मिट्टीके एक पिण्डसे अनेक
घटादिकोंको उत्पन्न करता है उसी प्रकार स्त्री, पुरुष, नपुंसक, स्थावर, त्रस अथवा जो कोई भी
जीव एक प्रकारके कर्मको बांधकर उसे आठ भेद रूप करता है; क्योंकि, अकर्मसे कर्मकी उत्पत्तिका
विरोध है ?

समाधान— इस शंकाका निग्रह करते हैं । यदि अकर्मसे कर्मकी उत्पत्ति नहीं होती है तो
फिर कुम्हारे द्वारा संकल्पित एक कर्मकी उत्पत्ति भी अकर्मसे नहीं हो सकती, क्योंकि, कर्मत्वके
प्रति कोई विशेषता नहीं है । यदि कहा जाय कि कामण वर्गणासे जो एक उत्पन्न हुआ है वह
यदि कर्म नहीं है, तो फिर उससे आठ कर्मकी उत्पत्ति नहीं हो सकती; क्योंकि, अकर्मसे कर्मकी
उत्पत्तिका विरोध है । दूसरे, कारणानुसारी ही कार्य होता चाहिये, यह एकान्त नियम भी नहीं है;
क्योंकि, मिट्टीके पिण्डसे मिट्टीके पिण्डको छोड़कर घट, घटी, शराव, अलंजर और उट्टिका
आदिक पर्याय विशेषोंकी उत्पत्ति न हो सकनेका प्रसंग अनिवार्य होगा । यदि कहो कि सुवर्णसे
सुवर्णके घटकी ही उत्पत्ति देखी जानेसे कार्य कारणानुसारी ही होता है, सो ऐसा कहना भी
योग्य नहीं है; क्योंकि, कठोर सुवर्णसे अग्नि आदिका संयोग होनेपर सुवर्णजलकी उत्पत्ति देखी

१ ताप्रतो 'मुहुत्तादिकालपक्कमो' इति पाठः । २ ताप्रतो 'आगमणोआगमदो' इति पाठः । ३ ताप्रतो
'अकम्मादो' इति पाठः । ४ का-ता-भप्रतिपु 'कट्टिणादो' इति पाठः ।

सव्वप्पणा कारणपरूवमावणस्स उप्पत्तिविरोहादो । जदि एयंतेण [ण] कारणाणुमारि
चेव कज्जमुप्पज्जदि तो मुत्तादो पोग्गलदव्वादो अमुत्तस्स गयणुप्पत्ती होज्ज, णिच्चेयणादो
पोग्गलदव्वादो सचेयणस्स जीवदव्वस्स वा उप्पत्ती पावेज्ज । ण च एवं, तहाणुवल्लभादो ।
तम्हा^१ कारणाणुसारिणा कज्जेण होदव्वमिदि । एत्थ परिहारो बुच्चदे—होदु णाम केण
वि सरूवेण कज्जस्स कारणाणुसारित्तं, ण सव्वप्पणा; उप्पाद-वय-ट्टिदिलक्खणाणं जीव-
पोग्गल-धम्ममाधम्म-कालागासदव्वाणं सगवइसेसियगुणाविणाभाविसयलगुणाणमपरिच्चाएण
पज्जायंतरगमणदंसणादो । ण च कम्मइयवग्गणादो कम्माणि एयंतेण पुधभूदाणि, णिच्चे-
यणत्तेण मुत्तभावेण पोग्गलत्तेण च ताणमेयत्तुवल्लभादो । ण च एयंतेण अपुधभूदाणि
चेव, णाणावरणादिपयडिभेदेण ट्टिदिभेदेण अणुभागभेदेण च जीवपदेसेहि अण्णोण्णाणु-
गयत्तेण च भेदुवल्लभादो । तदो मिया कज्जं कारणाणुसारि मिया णाणुसारि ति मिद्धं ।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावान् ।

शक्तस्य शक्यकरणान् कारणभावाच्च सन्कार्यम्^२ ॥ १ ॥

जाती है । इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार कारण उत्पन्न नहीं होता है उसी प्रकार कार्य भी उत्पन्न नहीं होगा, क्योंकि, कार्य सर्वात्मना कारण रूप ही रहेगा इसलिए उसकी उत्पात्तिका विरोध है ।

शंका—यदि सर्वथा कारणका अनुसरण करनेवाला ही कार्य नहीं होता है तो फिर मूर्त पुद्गल द्रव्यसे अमूर्त आकाशकी उत्पत्ति हो जानी चाहिये, इसी प्रकार अचेतन पुद्गल द्रव्यसे सचेतन जीव द्रव्यकी भी उत्पत्ति पायी जानी चाहिये । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा प्राया नहीं जाता । इसीलिये कार्य कारणानुसारी ही होना चाहिये ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं । किसी विशेष स्वरूपसे कार्य कारणानुसारी भले ही हो, परन्तु वह सर्वात्म स्वरूपसे वैसा सम्भव नहीं है; क्योंकि, उत्पाद व्यय व ध्रौव्य लक्षणवाले जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्य अपने विशेष गुणोंके अविनाभावी समस्त गुणोंका परित्याग न करके अन्य पर्यायको प्राप्त होते हुए देखे जाते हैं । दूसरे, कर्म कामेण वर्गणासे सर्वथा भिन्न भी नहीं हैं, क्योंकि, उनमें अचेतनत्व, मूर्तत्व और पौद्गलिकत्व स्वरूपसे कामेण वर्गणाके साथ समानता पायी जाती है । इसी प्रकार वे उससे सर्वथा अभिन्न भी नहीं हैं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि रूप प्रकृतिभेद, स्थितिभेद व अनुभागभेदसे तथा जीवप्रदेशोंके साथ परस्पर अनुगत स्वरूपसे उनमें कामेण वर्गणासे भेद पाया जाता है । इसलिये कार्य कथंचित् कारणानुसारी है और कथंचित् वह तदनुसारी नहीं भी है, यह सिद्ध है ।

शंका—चूंकि असत् कार्य क्रिया नहीं जा सकता है, उपादानोंके साथ कार्यका सम्बन्ध रहता है, किसी एक कारणसे सभी कार्योंकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, समर्थ कारणके द्वारा शक्य कार्य ही क्रिया जाता है, तथा कार्य कारणस्वरूप ही है— उससे भिन्न सम्भव नहीं है; अतएव इन हेतुओंके द्वारा कारणव्यापारसे पूर्व भी कार्य सत् ही है, यह सिद्ध है ॥१॥

१ काप्रतौ 'तं जहा' इति पाठः । २ सांग्यकारिका ९.

इदि के वि भणंति । एदं पि ण जुज्जे । कुदो ? एयंतेण संते कत्तारवावारस्स विहलत्तप्पसंगादो, उवायाणग्गहणाणुववत्तीदो, सच्चहा संतस्स संभवविरोहादो, सच्चहा

विशेषार्थ— सांख्यमतमें प्रधानकी सिद्धिमें उपयोगी होनेसे सत्कार्यवादको स्वीकार किया गया है । कार्यको सत् सिद्ध करनेके लिये उपर्युक्त कारिकामें निम्न हेतु दिये गये हैं—(१) यदि कारणव्यापारके पूर्वमें कार्यको असत् स्वीकार किया जाय तो उसका उत्पन्न होना शक्य नहीं है, जैसे खरविपाण । अत एव कारणव्यापारके पूर्वमें भी कार्यको सत् ही स्वीकार करना चाहिये । कारणके द्वारा केवल उसकी अभिव्यक्ति की जाती है जो उचित ही है । जैसे तिलोंमें तैल जब पहिलेसे ही सत् है तभी वह कोन्हू आदिके द्वारा निकाला जा सकता है, वालुकामेंसे तैलका निकाला जाना किसी प्रकार भी शक्य नहीं है । (२) दूसरा हेतु 'उपादानग्रहण' दिया गया है— उपादानग्रहणका अर्थ है कारणोंसे कार्यका सम्बन्ध । अर्थात् कारण कार्यसे सम्बद्ध हो करके ही उसका उत्पादक हो सकता है, न कि असम्बद्ध रह कर । और वह सम्बन्ध चूंकि असत् कार्यके साथ सम्भव नहीं है, अतएव कारणव्यापारसे पूर्वमें भी कार्यको सत् ही स्वीकार करना चाहिये । (३) यदि कहा जाय कि कारण असम्बद्ध ही कार्यको उत्पन्न कर सकते हैं, अतः इसके लिये कार्यको सत् मानना आवश्यक नहीं है ; सो यह कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि, वैसा माननेपर जिस प्रकार मिट्टीके द्वारा अपनेसे अस्म्बद्ध घट कार्य किया जाता है उसी प्रकार असम्बद्धत्वकी समानता होनेसे घटके समान पट आदिक कार्य भी उसके द्वारा उत्पन्न किये जा सकते हैं । इस प्रकार एक ही किसी कारणसे सब कार्योंके उत्पन्न होनेका प्रसंग अनिवार्य होगा । परन्तु ऐसा चूंकि सम्भव नहीं है अतएव यह स्वीकार करना चाहिये कि सम्बद्ध कारण सम्बद्ध कार्यको ही उत्पन्न करता है, न कि असम्बद्धको । इस प्रकार यह तीसरा हेतु देकर सत्कार्य सिद्ध किया गया है । (४) यहां शंका की जा सकती है कि असम्बद्ध रहकर भी वही कार्य उत्पन्न किया जा सकता है जिसके उत्पन्न करनेमें कारण समर्थ है । इसीलिये सर्वसम्भवका प्रसंग देना उचित नहीं है । इसके उत्तरमें 'शक्तम्य शक्यकरणान्' यह चतुर्थ हेतु दिया गया है । उसका अभिप्राय है कि शक्त कारण शक्य कार्यको ही करता है । यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि कारणमें रहनेवाली वह कार्योत्पादनरूप शक्ति क्या समस्त कार्यविपयक है या शक्य कार्यविपयक ही है ? यदि उक्त शक्ति समस्त कार्यविपयक स्वीकार की जाती है तो सबसे सभिके उत्पन्न होनेका जो प्रसङ्ग दिया गया है वह तदवस्थ ही रहेगा । इसलिये यदि उक्त शक्तिको शक्य कार्यविपयक ही स्वीकार किया जाय तो फिर स्वयमेव सत् कार्य सिद्ध हो जाता है, क्योंकि अविद्यमान शक्य कार्यमें तद्विपयक शक्तिकी सम्भावना ही नहीं रहती । अतएव कार्य सत् ही है । (५) सत् कार्यको सिद्ध करनेके लिये अन्तिम हेतु 'कारणभाव' दिया गया है । उसका अभिप्राय यह है कि कार्य चूंकि कारणात्मक है, अतएव जब कारण सत् है तो उससे अभिन्न कार्य कैसे असत् हो सकता है ? नहीं हो सकता । अतः कार्य कारणव्यापारके पूर्व भी सत् ही रहता है । यह सांख्योंका अभिमत है । आगे वीरसेन स्वामी स्वयं इस अभिप्रायका निरास करनेवाले हैं ।

समाधान— इस प्रकार किन्हीं कपिल आदिका कहना है जो योग्य नहीं है । कारण कि कार्यको सर्वथा सत् माननेपर कर्ताके व्यापारके निष्फल होनेका प्रसंग आता है । इसी प्रकार सर्वथा कार्यके सत् होनेपर उपादानका ग्रहण भी नहीं बनता, सर्वथा सत् कार्यकी उत्पत्तिका विरोध है,

संते कज्ज-कारणभावाणुववत्तीदो । किं च—विष्पडिसेहादो ण संतस्स उप्पत्ती । जदि अत्थि, कथं तस्सुप्पत्ता ? अह उप्पज्जइ, कथं तस्म अत्थित्तमिदि ?

किं च— णिच्चपक्खे ण कारणं कज्जं वा अत्थि, णिच्चियप्पभावेण पागभाव-पद्धंमा-भावविरहिए तदणुववत्तीदो । आविब्भावो उप्पादो, तिरोभावो विणासो त्ति ण वोत्तुं जुत्तं, णिच्चस्स अत्थस्स दोणं मज्जे एगमिह चैव भावे अवट्टियस्स अणाहेआदिसयत्तेण अवत्थंतरसंक्रंतिवज्जियस्स दुब्भावविरोहादो । वुत्तं च—

नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि विक्रिया नोपपद्यते ।

प्रागेव कारकाभावः क्व प्रमाणं क्व तत्फलं^१ ॥ २ ॥

कार्यके सर्वथा सत् होनेपर कार्य-कारणभाव ही घटित नहीं होता । इसके अनिरिक्त असंगत होनेसे सत् कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है; क्योंकि, यदि कार्य कारणव्यापारके पूर्वमें भी विद्यमान है तो फिर उसकी उत्पत्ति कैसे हो सकती है ? और यदि वह कारणव्यापारसे उत्पन्न होता है तो फिर उसका पूर्वमें विद्यमान रहना कैसे संगत कहा जावेगा ?

और भी— नित्य पक्षमें कारण और कार्यका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, उस अवस्थामें निर्विकल्प होनेके कारण प्रागभाव और प्रध्वंसाभावसे रहित अथमें कार्य-कारणभाव बन नहीं सकता । यदि कहा जाय कि आविर्भावका नाम उत्पाद और तिरोभावका नाम विनाश है, तो यह भी कहना योग्य नहीं है; क्योंकि, इन दोनोंमेंसे किसी एक ही अवस्थामें रहनेवाले नित्य पदार्थका अनाधेयातिशय (विशेषता रहित) होनेसे चूंकि अवस्थान्तरमें संक्रमण सम्भव नहीं है, अतएव उसमें आविर्भाव एवं तिरोभाव रूप दो अवस्थाओंके रहनेका विरोध है, अर्थात् कूटस्थ नित्य होनेसे यदि वह तिरोभूत है तो तिरोभूत ही सदा रहेगा, और यदि आविर्भूत है तो सदा आविर्भूत ही रहेगा । कहा भी है—

नित्य एकान्त पक्षमें भी पूर्व अवस्था (मृत्पिण्डादि) के परित्यागरूप और उत्तर अवस्था (घटादि) के ग्रहण रूप विक्रिया घटित नहीं होती, अतः कार्योत्पत्तिके पूर्वमें ही कर्त्ता आदि कारकोंका अभाव रहेगा । और जब कारक ही न रहेंगे तब भला फिर प्रमाण (प्रमृति क्रियाका अतिशय साधक) और उसके फल (अज्ञाननिवृत्ति) की सम्भावना कैसे की जा सकती है ? अर्थात् उनका भी अभाव ही रहेगा ॥२॥

विशेषार्थ—सांख्य मतमें चेतन पुरुषको कूटस्थ नित्य स्वीकार किया गया है । इस मतका निराकरण करनेके लिये उक्त कारिकाका अवतार हुआ है । उसका अभिप्राय यह है कि यदि पुरुषको सर्वथा नित्य माना जाता है तो वह विकार रहित होनेसे चेतना रूप क्रियाका कर्त्ता भी नहीं हो सकता, क्योंकि, उस अवस्थामें कारक (कुम्भकारादि) अथवा ज्ञापक (प्रमाता) हेतुओंका व्यापार असम्भव है । अथवा यदि कारक व ज्ञापक हेतुओंका व्यापार स्वीकार किया जाता है तो फिर पूव स्वभाव (अकारक अथवा अप्रमाता) का परित्याग करके उत्तर स्वभाव (उत्पत्ति अथवा चेतना क्रियाका कर्त्तृत्व) को ग्रहण करनेके कारण उसकी कूटस्थताका विघात होता है । अतएव कूटस्थ नित्यताका पक्ष बनता नहीं है ।

यदि सत्सर्वथा कार्यं पुंघ्नोत्पत्तुमर्हति ।
 परिणामप्रकल्पिश्च नित्यत्वैकान्तबाधनी^१ ॥ ३ ॥
 पुण्यपापक्रिया न स्यात् प्रेत्यभावः फलं^२ कुतः ।
 बन्धमोक्षौ च तेषां न येषां त्वं नासि नायकः^३ ॥ ४ ॥

सदकरणात्, उपादानग्रहणात्, सर्वसम्भवाभावात्, शक्तस्य शक्यकरणात्, कारण-
 भावाच्च असंतं चेव कज्जमुप्पज्जदि त्ति के वि भणंति । तण्ण जुज्जदे, विसेससरूवेणेव सामण्ण-
 सरूवेण वि असंतं बुद्धिविसयमइकंते वयणगोयरमुह्लंधिय द्विदकारणकलाववावार-
 विरोहादो । अविरोहे वा, मट्टियपिडादो घडो व्व गद्धहसिंगं पि उप्पजेज्ज, असंतं पडि

यदि कार्यं सर्वथा सत् है तो वह पुरुषके समान उत्पन्न नहीं हो सकता । और परिणामकी कल्पना नित्यत्वरूप एकान्त पक्षकी विघातक है ॥३॥

विशेषार्थ— अभिप्राय यह है कि यदि कार्यको सर्वथा सत् ही स्वीकार किया जाता है तो जैसे सांख्य मतमें पुरुषकी उत्पत्ति नहीं मानी गई है वैसे ही पुरुषके समान सर्वथा सत् होनेसे प्रकृतिसे महान् व अहंकारादिकी भी अनुत्पत्तिका अनिवार्य प्रसंग आता है, जो उन्हें अभीष्ट नहीं है । इस प्रसंगको टालनेके लिये यदि कहा जाय कि यथार्थमें न कोई कार्य उत्पन्न होता है और न नष्ट ही होता है । किन्तु जिस प्रकार कछवा अपने विद्यमान अंगोंको कभी बाहिर निकलता है और कभी भीतर छुपा लेता है, इसी प्रकार पूर्वमें विद्यमान महान् व अहंकारादिका प्रधानसे आविर्भाव मात्र होता है । इस प्रकारके आविर्भाव व तिरोभारूप परिणामको छोड़कर कार्य-कारणभाव वास्तवमें है ही नहीं । सो इस कथनको असंगत बतलाते हुए उत्तरमें यहां कहा गया है कि पूर्वस्वभाव (तिरोभूत अवस्था) के नाश और उत्तरस्वभाव (आविर्भूत अवस्था) के उत्पन्न होनेका नाम ही तो परिणाम है । फिर भला ऐसे परिणामकी कल्पना करनेपर नित्यत्वरूप एकान्त पक्षमें कैसे बाधा न उपस्थित होगी ? अवश्य होगी ।

इसके अतिरिक्त सर्वथा नित्यत्वकी प्रतिज्ञामें मन, वचन व कार्यकी शुभ प्रवृत्तिरूप पुण्य क्रिया तथा उनकी अशुभ प्रवृत्तिरूप पाप क्रिया भी नहीं बन सकती । अत एव पुण्य व पापका अभाव होनेपर जन्मान्तरप्राप्तिरूप प्रेत्यभाव तथा सुख व दुःखके अनुभवनरूप पुण्य एवं पापका फल भी कहांसे होगा ? नहीं हो सकेगा । इसलिये हे भगवन् ! जिन एकान्तवादियोंके आप नेता नहीं हैं उनके मतमें बन्ध व मोक्षकी व्यवस्था भी नहीं जन सकती ॥ ४ ॥

अब सत् कार्यके किये न जा सकनेसे उपादानोंका ग्रहण होनेसे, सबसे सबकी उत्पत्तिका अभाव होनेसे, शक्त कारण द्वारा शक्य कार्यके ही किये जानेसे तथा कारणभाव होनेसे असत् ही कार्य उत्पन्न होता है; ऐसा कणाद (वैशेषिकदर्शनके कर्ता) और गौतम (न्यायदर्शनके कर्ता) आदि कितने ही ऋषि कहते हैं वह भी योग्य नहीं है, क्योंकि, कार्य जैसे विशेष (घटादि आकार) स्वरूपसे असत् है वैसे ही यदि उसे सामान्य (मृत्तिका आदि) स्वरूपसे भी असत् स्वीकार किया जाय तो ऐसा कार्य न तो बुद्धिका ही विषय हो सकता है और न वचनका भी । अत एव बुद्धि व वचनके अविषयतभूत ऐसे कार्यके लिये स्थित कारणकलापके व्यापारका विरोध आता है । और यदि विरोध न माना जाय तो फिर जैसे मिट्टीके पिण्डसे घट उत्पन्न होता है वैसे ही उससे गवेषका सींग भी उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, असत्त्वकी

१ आ. मी. ३९. २ काप्रती 'प्रेत्यभावफल' इति पाठः । ३ आ. मी. ४०.

विसेसाभावादो । किं च—जदि पिंडे असंतो घडो समुप्पज्जइ तो वालुवादो वि तदुप्पत्ती होदु, असंतं पडि विसेसाभावादो । किं च—इदं चैव एदस्स कारणं, ण अण्णमिदि एदं पि ण जुज्जदे; णियामयाभावादो । भावे वा, कारणे कज्जस्स अत्थित्तं मोत्तूण कोवरो णियामयो होज्ज ? ण सहावो णियामओ, कज्जुप्पत्तीए पुब्बं कज्जस्सहावस्स^१ अभावादो । ण चामंतो^२ असंतस्स णियामयो होदि, अइप्पसंगादो । किं च—पिंडे घडो च्च तिहुवणमुप्पज्जउ, असंतं पडि भेदाभावादो । ण च एवं, परिमियकज्जुप्पत्तिदंसणादो । किं च—समत्थो वि कुंभारो मट्टियपिंडे घडं व पडं किण्ण उप्पादेदि, विसेसाभावादो ? विसेसभावे वा सगसत्तं मोत्तूण कोवरो विसेसो होज्ज ? वुत्तं च—

यद्यसत्सर्वथा कार्यं तन्माज्जनि स्वप्पवत् ।

सांपादानानियामो भून्माश्वासः कार्यजन्मनि^३ ॥ ५ ॥

अपेक्षा दोनोंमें कोई विशेषता नहीं है । दूसरे, यदि मृत्पिण्डमें अविद्यमान घट उससे उत्पन्न होता है तो वह मृत्पिण्डके समान वालुसे भी क्यों न उत्पन्न हो जावे ? अवश्य ही उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, असत्त्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है । [अर्थात् जैसे वह मृत्पिण्डमें अविद्यमान है वैसे ही वह वालुमें भी अविद्यमान है । फिर क्या कारण है कि वह मृत्पिण्डसे तो उत्पन्न होता है और वालुसे नहीं उत्पन्न होता ? अत एव मानना चाहिये कि घट मृत्पिण्डमें व्यक्तिरूपसे अविद्यमान होकर भी शक्तिरूपसे विद्यमान है, किन्तु वालुमें वह शक्तिरूपसे भी विद्यमान नहीं है; अतएव वह जैसे मृत्पिण्डसे उत्पन्न होता है वैसे वालुसे उत्पन्न नहीं हो सकता ।]

और भी—कार्यको सर्वथा असत् माननेपर यही इसका कारण है, अन्य नहीं है; यह भी घटित नहीं होता, क्योंकि, इसका कोई नियामक नहीं है । और यदि कोई नियामक है भी, तो वह कारणमें कार्यके अस्तित्वको छोड़कर दूसरा भला कौनसा नियामक हो सकता है ? यदि कहो कि स्वभाव नियामक है तो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, कार्योत्पत्तिके पूर्वमें कार्यके स्वभावका अभाव है । और एक असत् कुछ दूसरे असत्का नियामक हो नहीं सकता, क्योंकि, वैसा होनेपर अतिप्रसंग आता है । इसके अतिरिक्त—मृत्पिण्डमें जैसे घट उत्पन्न होता है वैसे ही उससे तीनों लोक भी उत्पन्न हो जाने चाहिये; क्योंकि, असत्त्वकी अपेक्षा इनमें कोई भेद भी नहीं है । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, परिमित कार्यकी उत्पात्त देखी जाती है । इसके सिवाय समर्थ भी कुम्हार मृत्पिण्डमें जैसे घटको उत्पन्न करता है वैसे पटको क्यों नहीं उत्पन्न करता, क्योंकि, विसी भी विशेषताका यहां अभाव है । अथवा यदि कोई विशेषता है, तो वह अपने अस्तित्वको छोड़कर और दूसरी क्या हो सकती है ? कहा भी है—

यदि कार्ये सर्वथा (पर्यायके समान द्रव्यसे भी) असत् है तो वह आकाशकूपुमके समान उत्पन्न ही नहीं हो सकता । इसके अतिरिक्त वैसी अवस्थामें घटका उपादान मिट्टी है, तन्तु नहीं है, इस प्रकारका उपादाननियम भी नहीं बन सकेगा । इसीलिये अमुक कार्ये अमुक कारणसे उत्पन्न होता है, अमुकसे नहीं; इस प्रकारका कोई भी आश्वासन कार्यकी उत्पात्तमें नहीं हो सकता ॥ ५ ॥

१ ताप्रतौ 'कज्जस्स सहावस्स' इति पाठः । २ मप्रतिपाटोऽयम् । कान्तापत्त्योः 'णवासंतौ' इति पाठः । ३ आ. मी. ४२.

किं च— ण णिच्चादो कारणकलावादो असंतं कज्जमुप्पज्जइ, णिच्चस्स अणाहेयादिसयस्स पमाणगोयरमइकंतस्स अणहिलप्पस्स अमंतस्स कारणत्तविरोहादो । ण कमेण कुणदि, णिच्चम्मि कमाभावादो । भावे वा, अणिच्चं होज्ज; अवत्थादो अवत्थंतरं गयस्स^१ णिच्चत्तविरोहादो । ण च अक्रमेण कुणदि, एगममए समुप्पाइदमयलकज्जस्स विदियसमए असंतप्पसंगादो । ण च अकज्जं कारणमत्थित्तमल्लियइ, पमाणविसयमइकंतस्स अत्थित्तविरोहादो ।

ण च अणिच्चादो कारणादो असंतं कज्जमुप्पज्जदि, अट्टियस्स कारणत्तविरोहादो । ण ताव उप्पज्जमाणमुप्पादेदि, एगसमए चेव सब्बकज्जाणमुप्पत्तिप्पसंगादो । ण च एवं, विदिममए सब्बकज्जस्स अणुवल्लिप्पमंगादो । ण च उप्पण्णमुप्पादेदि, अणवट्टियस्स दुममयववट्ठाणविरोहादो । ण च णइं कज्जमुप्पादेदि, अभावस्स सयलसत्तिविरोहियस्स

और भी—नित्य कारणकलापसे तो असन् कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि, सर्वथा नित्य वस्तु अनाधेयातिशय होनेसे न प्रमाणकी विषय हो सकती है और न वचनकी भी विषय हो सकती है । इस प्रकार असत् होनेसे [गंधके सींगके समान] उसके कारणताका विरोध है । [इतनेपर भी यदि उसे कारण स्वीकार किया जाता है तो यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि विवक्षित कारण क्या क्रमसे कार्यको करता है या अक्रमसे ?] क्रमसे तो वह कार्यको कर नहीं सकता, क्योंकि, नित्यमें क्रमकी सम्भावना ही नहीं है । अथवा यदि उसमें क्रमकी सम्भावना है तो फिर वह अनित्यताको प्राप्त होना चाहिये, क्योंकि, एक अवस्थासे दूसरी अवस्थाको प्राप्त होनेपर नित्यताका विरोध है । अक्रमसे वह कार्यको करता है, यह द्वितीय पक्ष भी योग्य नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक समयमें समस्त कार्यको उत्पन्न करके द्वितीय समयमें उसके असत्त्वका प्रसंग आता है । इस प्रकारसे कार्यव्यापारसे रहित कारण अस्तित्वको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, प्रमाण (अनुमानादि) का अविषय होनेसे उसके अस्तित्वका विरोध है ।

अनित्य कारणसे असत् कार्य उत्पन्न होता है, यह बौद्धाभिमत भी ठीक नहीं है; क्योंकि, स्थिति रहित वस्तुके कारणताका विरोध है [यदि स्थितिसे रहित अर्थ भी कारण हो सकता है तो वह क्या उत्पद्यमान होता हुआ कार्यको उत्पन्न करता है, उत्पन्न होकर कार्यको उत्पन्न करता है, नष्ट होकर कार्यको उत्पन्न करता है, अथवा विनश्यमान होता हुआ कार्यको उत्पन्न करता है ?] उत्पद्यमान होता हुआ तो वह कार्यको उत्पन्न कर नही सकता, क्योंकि, इस प्रकारसे एक समयमें ही समस्त कार्यके उत्पन्न होनेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर द्वितीय समयमें समस्त कार्यकी अनुपलब्धिका प्रसंग प्राप्त होता है । उत्पन्न होकर वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, अवस्थानसे रहित उसका दो समयोंमें रहनेका विरोध है । नष्ट हो करके वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, नष्ट होनेपर अभाव स्वरूपको प्राप्त हुए उसके समस्त शक्तियोंसे रहित होनेके कारण कार्यको उत्पन्न करनेका विरोध

कज्जुप्पायणत्तविरोहादो । अविरोहे वा, सममिगादो वि ससी समुप्पजेज्ज, अभावं पडि विसेसाभावादो । ण च विणस्मंतमुप्पादेदि, विणट्ठाविणट्ठभावे मोत्तण विणस्मंतभावस्स तइज्जस्स अणुवलंभादो । तदो णासंतं पि कज्जमुप्पज्जदि । णोभयमरूवं कज्जमुप्पज्जइ, विरोहादो उभयपक्खदोसप्पसंगादो वा । णाणुभयपक्खो वि, णीरूवस्स उप्पत्तिविरोहादो । ण च कज्जाभावो, उवल्लभमाणस्म अभावविरोहादो । तदो सिया सतं, सिया अमंतं, सिया अवत्तव्वं, मिया संतं च असंतं च, सिया संतं च अवत्तव्वं च, सिया अमंतं च अवत्तव्वं च, मिया संतं च अमंतं च अवत्तव्वं कज्जमुप्पज्जदि ति णिच्छओ कायव्वो; अण्णहा पुव्वुत्तदोमप्पसंगादो ।

एदेमिं भगाणमत्थो बुच्चदे । तं जहा—कज्जं सिया संतमुप्पज्जदि, पोग्गलभावेण मट्ठियादिवंजणपज्जाएहि य संतस्स दव्वस्स घडपज्जाएण उप्पत्तिदंसणादो । सिया असंतमुप्पज्जइ, पिंडागारेण णट्ठस्स पोग्गलदव्वस्स घडभावेण उप्पत्तिदंसणादो । सिया अवत्तव्वं कज्जमुप्पज्जइ, पोग्गलदव्वस्स अत्थपज्जाएहि वयणविसयमइकंतस्स घडभावेणुप्पत्तिदंसणादो, विहि-पडिसेहधम्माणं सगसरूवापरिच्चाएण अण्णोण्णाणुगयत्तादो जच्चंतर-

है । और यदि इस विरोधको नहीं माना जाता है, तो फिर खरगोशके सींगसे भी चन्द्रमा उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, अभावकी अपेक्षा उनमें कोई विशेषता नहीं है । विनश्यमान होता हुआ वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह पक्ष भी असंगत है; क्योंकि, विनष्ट और अविनष्ट पदार्थको छोड़कर तीसरा कोई विनश्यमान पदार्थ पाया नहीं जाता । इस कारण सत् कार्यके समान असत् कार्य भी उत्पन्न नहीं हो सकता है । यदि कहा जाय कि उभय (सत्-असत्) स्वरूप कार्य उत्पन्न होता है, सो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, उसमें विरोध आता है । अथवा, उभय पक्षमें दिये गये दोषोंका प्रसंग अनिवार्य होगा । अनुभय (न सत् न असत्) पक्ष भी नहीं बनता, क्योंकि, वैसी अवस्थामें निःस्वरूप होनेसे उसकी उत्पत्तिका विरोध है । यदि कायका ही अभाव स्वीकार किया जाय तो यह भी अनुचित होगा, क्योंकि, जो प्रत्यक्षादिसे उपलभ्यमान है उसका अभाव माननेमें विरोध आता है । इस कारण कथंचित् सत्, कथंचित् असत्, कथंचित् अवक्तव्य, कथंचित् सत् व असत्, कथंचित् सत् व अवक्तव्य, कथंचित् असत् व अवक्तव्य, तथा कथंचित् सत् व असत् और अवक्तव्य कार्य उत्पन्न होता है, ऐसा निश्चय करना चाहिये; क्योंकि, इसके बिना एकान्त पक्षोंमें दिये गये पूर्वोक्त दोषोंका प्रसंग अनिवार्य है ।

इन भंगोंका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है—कार्य कथंचित् सत् उत्पन्न होता है, क्योंकि, पुद्गल स्वरूपसे और सृत्तिका आदि व्यञ्जन पर्यायरूपसे भी सत् द्रव्यकी घट पर्याय स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है । कथंचित् वह असत् उत्पन्न होता है, क्योंकि, पिण्डरूप आकारसे नष्ट हुए पुद्गल द्रव्यकी घट स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है । कथंचित् अवक्तव्य काय उत्पन्न होता है, क्योंकि, अर्थ पर्यायोंकी अपेक्षा वचनके अविषयभूत पुद्गल द्रव्यकी घट स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है, अथवा अपने स्वरूपको न छोड़कर परस्परमें अनुगत होनेसे जात्यन्तर भावको प्राप्त हुए विधि-प्रतिषेध धर्मोंको कहनेवाले शब्दका अभाव है, इसलिए भी कार्य अवक्तव्य उत्पन्न होता है ।

मावण्णाणं पदुप्पायणसद्भावादो वा । कुदो जच्चंतरत्तं ? संजोग-समवाएहि विणा अण्णो-
ण्णाणुगयत्तादो । को संजोगो ? पुधप्पमिद्धानं मेलणं संजोगो । को समवाओ ?
एगत्तेण अजुवसिद्धानं मेलणं । ण विहि-पडिसेहाणं^१ संजोगो, पुधप्पमिद्दीए अभावादो ।
ण समवाओ वि, सामण्णमरूवेण सच्चकालमण्णोण्णाजहावुत्तीए द्विदाण संबंधाणुववत्तीदो ।
ण च एयतेण दुविहसंबंधाभावो, विहि^२-प्पडिसेहविसेमं पडुच्च तदुभयमबंधुवलंभादो । ण
च विहि-प्पडिसेहाणं पुधभावो गत्थि, भिण्णपच्चयगेज्जत्तेण पुधभूदद्व्यावट्ठाणेण च
तदुवलंभादो । तदो सिद्धं जच्चंतरत्तं ।

मिया संतमसंतं च उप्पज्जदि णेगमणयावलंबणेण । को णेगमो ? यदस्ति न तद्वय-
मतिलंघ्य वर्तत इति नैकगमो नैगमः । मिया संतं च अवत्तच्चं च अवत्तच्चेण सह
विहिधम्मप्पणाए । एवं णेगमणयमस्मियूण द्विदसेमभंगःणं पि अत्थो वत्तच्चो । ण च

शंका—जात्यन्तरता क्यों है ?

समाधान—कारण कि वे विधि-प्रतिषेध धर्म संयोग व समवायके बिना परस्परमें
अनुगत हैं ।

शंका—संयोग किसे कहते हैं ?

समाधान—पृथक् प्रसिद्ध पदार्थोंके मेलको संयोग कहते हैं ।

शंका—समवाय किसे कहते हैं ?

समाधान—अयुतसिद्ध पदार्थोंका एक रूपसे मिलनेका नाम समवाय है ।

विधि और प्रतिषेध धर्मोंका संयोग तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनमें पृथक्सिद्धत्वका
अभाव है । समवायकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, सामान्य स्वरूपसे सब कालमें
परस्पर अजहन् वृत्तिसे स्थित उक्त दोनों धर्मोंका सम्बन्ध नहीं बन सकता । और एकान्ततः इत
दो प्रकारके सम्बन्धोंका अभाव हो, ऐसा भी नहीं है; क्योंकि, विधि-प्रतिषेधविशेषकी अपेक्षा
वे दोनों सम्बन्ध पाये जाते हैं । विधि व प्रतिषेध धर्मोंके भिन्नता नहीं हो, यह भी बात नहीं
है; क्योंकि, भिन्न प्रत्यय द्वारा ग्राह्य होनेसे तथा पृथग्भूत द्रव्योंमें रहनेसे उनमें भिन्नता पायी
जाती है । इसलिये उनमें जात्यन्तरन्य सिद्ध है ।

नैगम नयकी अपेक्षा कथंचित् सन् व अगमन कार्य उत्पन्न होता है ।

शंका—नैगम नय किसे कहते हैं ?

समाधान—‘जो विद्यमान है वह भेद व अभेद इन दोनोंका उल्लंघन करके नहीं रहता’
इस कारण जो उन दोनोंमेंसे किसी एकको विषय न करके विवक्षाभेदसे दोनोंको ही विषय
करता है वह नैगम नय कहा जाता है ।

अवत्तच्चके साथ विधि धर्मकी प्रधानतासे कार्य कथंचित् सन् व अवत्तच्च उत्पन्न होता
है । इसी प्रकार नैगम नयका आश्रय करके स्थित शेष भंगोंके भी अर्थका कथन करना चाहिये ।

१ ताप्रतौ ‘विहिपडिमेहणं’ इति पाठः । २ काप्रतौ ‘विविह’ इति पाठः ।

एत्थ पुव्वुत्तदोसा संभवन्ति, एयंतविसयाणं दोसाणमणेयंते संभवविरोहादो । को अणेयंतो णाम ? जच्चंतरत्तं । उप्पत्ती णाम ण परदो, अणवत्थापसंगादो । ण सदो, असंतस्स कारणत्ताणुववत्तीदो । दीसइ च सव्वत्थाणं सत्तं, तदो णिच्चा सव्वत्था त्ति णत्थि कज्जु-
प्पत्ती ? ण एस दोसो, पमाणगोयरमइकंतस्स णिच्चत्थस्स अत्थित्तविरोहादो । णिच्चत्थो पमाणविसयमइकंतो, अकमेण कमेण वा तत्थ कम्म-कत्तारपजायाणमभावादो, भावे च अणिच्चत्तपसंगादो । ण च कज्जं परदो चेव उप्पज्जदि सदो वा, दव्व-खेत्त-काल-भावे पडुच्च उप्पज्जमाणकज्जुवलंभादो । ण च पमाणेण विसईकयत्थो पमाणपडिकूलदाण^१ अवगयअप्पमाणत्तेहि वियप्पाभासेहि अण्णहा काउं सक्किज्जदि, अव्वत्थापसंगादो ।

वत्थुविणासो ण परदो होदि, पसज्ज-पज्जुदासलक्खणअभावाणमणेहिंते उप्पत्ति-

यहां पूर्वोक्ति (सत् व असत् एकान्त पक्षमें दिये गये) दोषोंकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, एकान्तको विषय करनेवाले दोषोंकी अनेकान्तके विषयमें सम्भावना नहीं है ।

शंका—अनेकान्त किसे कहते हैं ।

समाधान—जात्यन्तरभावको अनेकान्त कहते हैं ।

शंका—उत्पत्ति किसी दूसरेसे नहीं हो सकती, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है । [अर्थात् विवक्षित घटादि कार्योंकी उत्पत्ति जिस किसी दूसरेसे होती है, वह भी अन्य किसी दूसरेसे ही उत्पन्न होगा । इस प्रकार उत्तरोत्तर कल्पना करनेपर व्यवस्था नहीं बनेगी, इसलिये अनवस्था दोष सम्भव है ।] यदि कहा जाय कि कार्य किसी दूसरेसे उत्पन्न न होकर स्वतः उत्पन्न होता है, तो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, असत् पदार्थके कारणता बन नहीं सकती । और चूंकि सब पदार्थोंका सत्त्व देखनेमें आता है, इसीलिये समस्त पदार्थोंके नित्य होनेसे कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नित्य पदार्थ चूंकि प्रमाणगोचर नहीं है, अर्थात् प्रत्यक्ष व अनुमानादि किसी भी प्रमाणसे सिद्ध नहीं है, अत एव उसके अस्तित्वका विरोध है । नित्य अर्थ प्रमाणका विषय नहीं है, क्योंकि, युगपत् अथवा क्रमसे उसमें कर्म व कर्ता रूप पर्यायोंका अभाव है । और यदि उनका सद्भाव है तो फिर उसके अनित्य होनेका प्रसंग आता है । इसके अतिरिक्त कार्य परसे ही उत्पन्न होता हो अथवा स्वतः ही उत्पन्न होता हो, यह बात भी नहीं है; क्योंकि, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावका आश्रय करके उत्पन्न होनेवाला कार्य पाया जाता है । दूसरे, प्रमाणके प्रतिकूल होनेसे जिनकी अप्रमाणता ज्ञात हो चुकी है ऐसे विकल्पाभासों (परतः उत्पन्न है या स्वतः उत्पन्न है, इत्यादि) के द्वारा प्रमाणसे विषय किया गया पदार्थ अन्यथा करनेके लिये शक्य नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारसे अन्यवस्थाका प्रसंग आता है ।

शंका—वस्तुका विनाश परके निमित्तसे नहीं होता है, क्योंकि, प्रसज्य व पर्युदासरूप

१ काप्रती 'पडिकूलदाण' इति पाठः ।

विरोहादो । तदो गिरहेउओ विणासो । वुत्तं च भास्से'—

जातिरेव हि भावानां निरोधे हेतुरिष्यते ।

यो जातश्च न च ध्वस्तो नश्येत् पश्चात् स केन वः^२ ॥६॥

खणक्खइणो च ण कज्जमुप्पज्जदि, उप्पणुप्पज्जमाणेहिंतो कज्जुप्पत्तिविरोहादो । तदो ण कज्जमुप्पज्जदि त्ति ? ण, उप्पत्तीए विणा खणक्खइत्तविरोहादो । ण चाणुप्पणं विणस्सदि, गद्दहमिंगस्स वि विणासप्पसंगादो^३ । ण च खणक्खइवत्थू अत्थि, पमाण-पमेयाणमभावप्पमंगादो । वुत्तं च—

क्षणिकैकान्तपक्षेऽपि प्रेत्यभावसम्भवः ।

प्रत्यभिज्ञानभावान्न कार्यारम्भः कुतः फलम्^४ ॥ ७ ॥

तदो उप्पाद-ट्टिदि-भंगलक्खणं सध्वं दध्वं ति इच्छेयव्वं । उत्तं च—

अभावोंका दूसरोंसे उत्पन्न होनेका विरोध है । इसीलिये विनाश निर्हंतुक है । कहा भी भाष्य में—

पदार्थोंके विनाशमें जाति (उत्पत्ति) को ही कारण माना जाता है । परन्तु जो उत्पन्न होकर भी नष्ट नहीं होता है वह फिर पीछे आपके यहां किसके द्वारा नाशको प्राप्त होगा ? नहीं हो सकेगा ॥ ६ ॥

दूसरे, क्षणक्षयी कारणसे कार्य उत्पन्न भी नहीं हो सकता है; क्योंकि, उत्पन्न अथवा उत्पद्यमान कारणोंसे कार्यकी उत्पत्तिका विरोध है । इस कारण कार्य उत्पन्न नहीं होता ।

समाधान—ऐसा जो बौद्धका कहना है वह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उत्पत्तिके विना क्षणक्षयित्वका विरोध है । पदार्थ उत्पन्न हुए विना नष्ट नहीं हो सकता; क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर गधेके सींगके भी विनाशका प्रसंग आता है । दूसरे क्षणक्षयी वस्तुका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर प्रमाण और प्रमेय दोनोंके अभावका प्रसंग आता है । कहा भी है—

क्षणिक एकान्त पक्षमें भी प्रत्यभिज्ञान आदिका अभाव होनेसे कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता, और जब कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता है तब उसके अभावमें भला पुण्य एवं पाप रूप फलकी सम्भावना कहाँसे की जा सकती है ? तथा पुण्य व पापका अभाव होनेपर जन्मान्तर रूप प्रेत्यभाव एवं बन्ध-मोक्षादिका भी सद्भाव नहीं रह सकता ॥ ७ ॥

विशेषार्थ—सब पदार्थ क्षणक्षयी हैं, ऐसा एकान्त स्वीकार करनेपर स्मृति व प्रत्यभिज्ञान आदिकी सम्भावना नहीं की जा सकती है । कारण कि स्मृति पूर्वमें अनुभव किये गये पदार्थके विषयमें ही होती है । परन्तु जिसका वर्तमानमें अनुभव किया गया है वह तो उसी क्षणमें उत्पन्न होनेके साथ ही नष्ट हो चुका । इस प्रकार विषयका अभाव होनेसे स्मरण ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता । स्मरणके अभावमें प्रत्यभिज्ञान भी असम्भव है, क्योंकि, प्रत्यक्ष व स्मरणके

१ काप्रती 'भाष्ये', ताप्रती नोपलभ्यते पदमिदम् । २ उद्धृतयं कारिका कसायपाहुडे १, पृ० २२७.
३ काप्रती 'विणामपमंगादो वि' इति पाठः । ४ आ. मी. ४१.

घटमौलिसुवर्णार्थी नाशोत्पादस्थितिष्वयम् ।

शोक-प्रमोद-माध्यस्थ्यं जनो याति सहेतुकम्^१ ॥ ८ ॥

पयोव्रतो न दध्यत्ति न पयोऽत्ति दधिव्रतः ।

अगोरसव्रतो नोभे तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम्^२ ॥ ९ ॥

निमित्तमे 'यह वही देवदत्त है, गायके सदृश गवय होता है' इस प्रकार जो एकत्व व सादृश्य आदि विषयक ज्ञान उत्पन्न होता है उसे प्रत्यभिज्ञान कहा जाता है। पदार्थके सर्वथा क्षणिक होनेपर पूर्वोत्तर अवस्थाओंमें रहनेवाले एकत्व आदि धर्मोंके असम्भव होनेसे उक्त लक्षणवाले प्रत्यभिज्ञानकी भी सम्भावना नहीं की जा सकती है। इस प्रकार स्मरण व प्रत्यभिज्ञान आदिके साथ ही पूर्वोत्तर अवस्थाओंमें अवस्थित एक प्रमाता आत्माके भी न रह सकनेसे कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता। कार्यके अभावमें उसके फल स्वरूप पुण्य-पाप एवं बन्ध-मोक्ष आदि भी नहीं बन सकते। अतएव वह क्षणिक एकान्त पक्ष ग्राह्य नहीं है।

इसलिये सब द्रव्यको उत्पाद, स्थिति (ध्रौव्य) व भंग (व्यय) स्वरूप स्वीकार करना चाहिये। कहा भी है—

घट, मुकुट और सुवर्णसामान्यका अभिलापी यह मनुष्य क्रमशः घटके नाश, मुकुटके उत्पाद और सुवर्णसामान्यकी स्थितिमें शोक, प्रमोद एवं माध्यस्थ्य भावको प्राप्त होता है। यह सहेतुक है, अकारण नहीं है ॥ ८ ॥

विशेषार्थ—यहां वस्तुको उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य स्वरूप सिद्ध करनेके लिये निम्न प्रकार लौकिक दृष्टान्त दिया गया है—कल्पना कीजिये कि तीन मनुष्य क्रमसे सुवर्णघट, सुवर्णका मुकुट एवं सुवर्णसामान्यकी अभिलापासे किसी विशेष दकानपर जाते हैं। इसी समय दूकानदारके द्वारा सुवर्णघटको नष्ट करके मुकुटका निर्माण करानेपर उनमेंसे सुवर्णघटका अभिलापी दुखी, मुकुटका अभिलापी हर्षित और सुवर्णसामान्यका ग्राहक हर्ष-विपाद दोनोंस ही रहित होकर मध्यस्थ रहता है। अब यदि कार्यका विनाश न होता तो घटके नष्ट होनेपर तदभिलापी व्यक्तिको दुखी न होना चाहिये था। इसी प्रकार यदि कार्यका उत्पाद न होता तो मुकुटाभिलापी व्यक्तिका हर्षित होना असंगत था। निरन्वय विनाशके होनेपर (ध्रौव्यके अभावमें) सुवर्णसामान्यके ग्राहककी उदासीनता भी स्थिर नहीं रह सकती थी। परन्तु चूंकि व्यवहारमें वैसा देखा जाता है; अतएव द्रव्यको उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य स्वरूप मानना ही चाहिये।

'मैं केवल दूधको ग्रहण करूंगा' ऐसा नियम लेनेवाला व्यक्ति दहीको नहीं खाता है, 'मैं केवल दही खाऊंगा' ऐसा नियम रखनेवाला व्यक्ति दूधको नहीं लेता है, तथा 'मैं गोरससे भिन्न पदार्थको ग्रहण करूंगा' ऐसा व्रत लेनेवाला व्यक्ति दूध व दही दोनोंको ही नहीं खाता है। इमीलिये वस्तुतत्त्व उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य इन तीनों स्वरूप है ॥ ९ ॥

विशेषार्थ—पर्याय स्वरूपसे होनेवाले उत्पाद व व्ययमें न सर्वथा भेद है और न सर्वथा अभेद ही है, किन्तु वे कथंचित् भेदाभेदको प्राप्त हैं। कारण कि दूधके अपने स्वरूपको छोड़कर दही रूपमें परिणत होनेपर भी यदि उनमें सर्वथा अभेद ही स्वीकार किया जाय तो दूधका

न सामान्यात्मनोदेति न व्येति व्यक्तमन्वयात् ।

व्येत्युदेति विशेषात्ते सहैकत्रोदयादि सत्^१ ॥१०॥

सन्वं पि वत्थु विहि-पडिसेहण्यं ति वेत्तवं, अण्णहा कज्ज-कारणभावविरोहादो ।
वुत्तं च—

भावैकान्ते पदार्थानामभावानामपहवात् ।

सर्वात्मकमनाद्यन्तमस्वरूपमतावकम्^२ ॥११॥

नियम करनेवालेके दहीका ग्रहण तथा दहीका नियम करनेवालेके दूधका ग्रहण करना अनुचित ठहरेगा । उसी प्रकार अन्वय प्रत्ययके विषयभूत गोरस सामान्यसे भी दूध व दही रूप विशेषोंको यदि सर्वथा भिन्न स्वीकार किया जाय तो गोरस-भिन्न भोजनका नियम करनेवालेके उन दोनोंका त्याग करना अयुक्तिसंगत होगा । परन्तु ऐसा है नहीं, अतएव सिद्ध है कि वस्तुतत्त्व अनेकान्तसे अनुगत होकर उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य स्वरूप ही है ।

कोई भी वस्तु सामान्य स्वरूपसे न उत्पन्न होती है और न नष्ट भी होती है, क्योंकि, इनमें सामान्य स्वरूपसे स्पष्टतया अन्वय देखा जाता है । किन्तु वही विशेष स्वरूपसे नष्ट भी होती है और उत्पन्न भी होती है । हे भगवन् ! इस प्रकार आपके मतमें एक ही वस्तुमें उत्पादादि तीनों ही एक साथ रहते हैं । इन्हीं तीनोंसे युक्त वस्तुको सत् कहा जाता है ॥१०॥

विशेषार्थ—पूर्वोत्तर पर्यायोंमें रहनेवाले साधारण स्वभावका नाम सामान्य है, जैसे सुवर्णसे उत्तरोत्तर होनेवाली कटक व कुण्डलादि रूप पर्यायोंमें सुवर्णसामान्य । इसकी अपेक्षा वस्तुका उत्पाद व विनाश सम्भव नहीं है, क्योंकि, कटकरूप पर्यायका नाश होकर कुण्डलरूप पर्यायके उत्पन्न होनेपर भी 'यह वही सुवर्ण है जिसके पहिले कटक बनवाये गये थे' ऐसा अन्वय प्रत्यय पाया जाता है । उत्पाद व विनाश केवल विशेष (पर्याय) की अपेक्षा होता है । यदि कटक व कुण्डल रूप आकारके समान सुवर्णद्रव्यका भी विनाश व उत्पाद हुआ होता तो उन दोनोंमें समान रूपसे सुवर्णत्वका बोध नहीं हो सकता था । परन्तु होता अवश्य है, अतः सिद्ध है कि सामान्य स्वरूपसे वस्तु उत्पाद-व्ययसे रहित होकर कथंचित् नित्य और वही विशेषकी अपेक्षा कथंचित् अनित्य भी है । ये सामान्य और विशेष धर्म भी परस्पर सापेक्ष रहते हैं, न कि निरपेक्ष । इस प्रकार उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये तीनों ही वस्तुमें एक साथ पाये जाते हैं । इन्हीं तीनोंसे युक्त वस्तुको सत् कहा जाता है और यही द्रव्यका लक्षण है ।

सभी वस्तु विधि-प्रतिषेधात्मक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इसके विना कार्य-कारणभावका विरोध है । कहा भी है—

अस्तित्वविषयक एकान्त पक्षमें अभावोंका अपलाप होनेसे दूसरोंके मतमें पदार्थोंके सर्वरूपता, अनादिता, अनन्तता और अस्वरूपताका प्रसंग आता है ॥११॥

विशेषार्थ—सांख्योंका अभिमत है कि सब पदार्थ सत्स्वरूप ही हैं, कोई भी असत् (अभाव) स्वरूप नहीं है । उनमें जो परिवर्तित अवस्थायें देखी जाती हैं वे आविर्भाव व तिरोभावके कारण होती हैं । उनके यहां निम्न २५ तत्त्व स्वीकार किये गये हैं—पुरुष, प्रकृति, महान्

कार्यद्रव्यमनादि स्यात् प्रागभावस्य निह्वे ।
 प्रध्वंसस्य च धर्मस्य प्रच्यवेऽनन्ततां व्रजेत्^१ ॥१२॥
 सर्वात्मकं तदेकं स्यादन्यापोहव्यतिक्रमे ।
 अन्यत्रसमवाये न व्यपदिश्येत सर्वथा^२ ॥१३॥

(बुद्धि), अहंकार, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु व उपस्थ), मन, पांच तन्मात्र (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श व शब्द) और पांच भूत (पृथिवी, जल, तेज, वायु व आकाश) । इनमें प्रकृति कर्त्री और पुरुष भोक्ता है । प्रकृतिसे महान्, महान्से अहंकार, अहंकारसे ग्यारह इन्द्रियां व पांच तन्मात्र, तथा पांच तन्मात्रोंसे पांच भूतोंका आविर्भाव और इसके विपरीत क्रमसे उन सबका तिरोभाव (जैसे पृथिव्यादि पांच भूतोंका तिरोभाव गन्धादि पांच तन्मात्रोंमें) होता है । इस प्रकार सांख्यमतमें सब कार्य सत् ही हैं । उनके इस एकान्त पक्षको दूषित करते हुए उपर्युक्त कारिकामें कहा गया है कि सब पदार्थोंको सर्वथा सत् माननेपर अन्योन्याभाव, प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव और अत्यन्ताभाव, ये चारों ही अभाव नहीं बन सकेंगे । इनमेंसे महान् व अहंकारादिमें प्रकृतिका तथा प्रकृतिमें महदादिका अन्योन्याभाव न रहनेसे महदादिक प्रकृतिस्वरूप व प्रकृति महदादिस्वरूप भी हो सकती है । इस प्रकार अन्योन्याभावके अभावमें सबके सब स्वरूप हो जानेका प्रसंग अनिवार्य होगा । इसी प्रकार प्रागभाव (कार्योत्पत्तिके पूर्वमें उसका अभाव) के न रह सकनेसे महदादिके अनादिताका तथा प्रध्वंसाभाव (विनाश) के न रहनेसे उनके अनन्तताका प्रसंग भी दुर्निवार होगा । साथ ही प्रकृतिमें भोक्तृत्वका तथा पुरुषमें कर्तृत्वका अत्यन्ताभाव न रहनेपर प्रकृति व पुरुषका कोई निश्चित लक्षण भी नहीं बन सकेगा, अतः निःस्वरूपताका प्रसंग भी कैसे टाला जा सकेगा ? इसीलिये उक्त एकान्त पक्ष ग्राह्य नहीं हो सकता ।

प्रागभावका अपलाप होनेपर कार्यरूप द्रव्यके अनादि हो जानेका प्रसंग आता है । तथा प्रध्वंसरूप धर्मका (प्रध्वंसाभावका) अभाव होनेपर वह अनन्तता (अविनश्ररता) को प्राप्त हो जावेगा ॥१२॥

विशेषार्थ— कार्यके उत्पन्न होनेके पूर्वमें जो उसकी अविद्यमानता है उसे प्रागभाव कहा जाता है । इसको न माननेपर घट-पटादि कार्य अपने स्वरूपलाभ (उत्पत्ति) के पूर्वमें भी विद्यमान ही रहना चाहिये । इस प्रकार प्रागभावके अभावमें घटादि कार्यके अनादि हो जानेका अनिष्ट प्रसंग आता है । कार्यके विनाशका नाम प्रध्वंसाभाव है । इसे स्वीकार न करनेपर चूंकि घटादि कार्योका उत्पन्न होनेके पश्चात् कभी विनाश तो होगा ही नहीं, अत एव उनके अनन्त (अन्त रहित) हो जानेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि घटादि पर्यायविशेषोंका अपनी उत्पत्तिके पूर्वमें और विनाशके पश्चात् उन उन आकारविशेषोंमें अवस्थान देखा नहीं जाता । अत एव यह स्वीकार करना चाहिये कि पदार्थ सर्वथा भाव (अस्तित्व) स्वरूप नहीं है, किन्तु अपने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वे कथंचित् भावस्वरूप तथा दूसरे पदार्थोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा कथंचित् अभावस्वरूप भी हैं ।

अन्यापोह (अन्योन्याभाव) का उल्लंघन होनेपर विवक्षित कोई एक तत्त्व सब तत्त्वों

अभावैकान्तपक्षेऽपि भावापहववादिनाम् ।

बोध-वाक्यं प्रमाणं न केन साधन-दूषणम्^१ ॥१४॥

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।

अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते^२ ॥१५॥

स्वरूप हो जावेगा । अन्यत्रसमवाय, अर्थात् ज्ञानादि गुणविशेषोंका अपने समवायी (आत्मादि) के अतिरिक्त दूसरे समवायीमें समवाय होनेपर अर्थात् अत्यन्ताभावके अभावमें अभीष्ट स्वरूपसे किसी भी तत्त्वका निर्देश नहीं किया जा सकेगा ॥ १३ ॥

विशेषार्थ—विवक्षित स्वभावकी दूसरे स्वभावोंसे रहनेवाली भिन्नताका नाम अन्योन्याभाव है, जैसे गायरूप स्वभाव (पर्याय) की अश्ववादि स्वभावोंसे रहनेवाली भिन्नता । इस अन्योन्याभावको न माननेपर गाय अश्वस्वरूप और अश्व गायस्वरूप भी हो सकता है । इस प्रकार द्रव्यकी सध पर्यायें सभी पर्यायों स्वरूप हो सकती हैं । इससे लोकव्यवहारका विरोध होगा । अत एव द्रव्यकी विभिन्न पर्यायोंमें परस्पर भेदको प्रगट करनेवाले अन्योन्याभावको स्वीकार करना ही चाहिये । एक द्रव्यमें दूसरे द्रव्यसम्बन्धी असाधारण गुणोंके त्रेकालिक अभावको अत्यन्ताभाव कहा जाता है, जैसे पुद्गल द्रव्यमें चैतन्य गुणका अभाव और जीव द्रव्यमें रहनेवाला रूपादि गुणोंका अभाव । इस अत्यन्ताभावको स्वीकार न करनेसे एक द्रव्यके गुणोंका दूसरे द्रव्यमें समवाय सम्भव होनेपर दूसरोंके द्वारा कल्पित प्रकृति-पुरुषादिरूप तत्त्वोंका नियमित स्वरूप नहीं बन सकेगा । अत एव तत्त्वव्यवस्थाको स्थिर रखनेके लिये अत्यन्ताभावका भी अपलाप नहीं किया जा सकता है ।

‘कोई भी पदार्थ सत्स्वरूप नहीं है’ इस प्रकारसे सर्वथा अभाव पक्षको स्वीकार करनेपर भी सत्स्वरूपताका अपलाप करनेवाले शून्यैकान्तवादियों (माध्यमिक) के यहां बोधरूप स्वार्थानुमान और वाक्यरूप परार्थानुमान प्रमाणका भी सद्भाव नहीं रह सकेगा । ऐसी अवस्थामें शून्यता रूप स्वपक्षको सिद्ध किस प्रमाणसे की जावेगी, तथा सत्स्वरूप पदार्थका स्वीकार करनेवाले अन्य वादियोंके पक्षको दूषित भी किस प्रमाणके द्वारा किया जावेगा ? ॥१४॥

विशेषार्थ—‘पदार्थोंकी जिस स्वरूपसे रूपाणा की जाती है वह उनका स्वरूप वास्तवमें है नहीं, क्योंकि, पदार्थोंके एकानेकरूपता बनती नहीं है । अत एव बाह्य या आभ्यन्तर कोई भी पदार्थ सत्स्वरूप नहीं है ।’ यह शून्यैकान्तवादी माध्यमिकोंका अभिमत है । इस एकान्त पक्षको असंगत बतलाते हुए यहां कहा गया है कि जो वादी शून्यमय जगत्को स्वीकार करते हैं उनके यहां सत् स्वरूप किसी भी पदार्थके न रहनेसे अपने अभीष्ट (शून्यता) पक्षके साधक और परपक्ष (सत्स्वरूपता) को दूषित करनेवाले अनुमानादि प्रमाणकी भी सत्ता सम्भव नहीं है । और ऐसा होनेपर प्रमाणके अभावमें उनका अभीष्ट तत्त्व भी सिद्ध नहीं हो सकता । इसलिये यदि स्वपक्षको सिद्ध करनेके लिये किसी प्रमाणविशेषकी सत्ता स्वीकार की जाती है तो उसके सद्भावमें ‘सर्वथा शून्यमय जगत् है’ यह उनका एकान्त पक्ष नहीं रहता ।

‘पदार्थ सत् व असत् स्वरूप हैं’ इस प्रकार अनेकान्तविरोधियोंके यहां उभयस्वरूपताका भी एकान्त पक्ष नहीं बनता, क्योंकि, उसमें विरोध है । तथा ‘पदार्थ सर्वथा वचनके अगोचर

कथंचित्ते सदेवेष्टं कथंचिदसदेव तत् ।

तथोभयमवाच्यं च नययोगान्न सर्वथा^१ ॥१६॥

हैं' इस प्रकारका भी एकान्त पक्ष सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा हीनेपर 'अवाच्य है' इस वाक्यका प्रयोग भी अयुक्त होगा ॥१५॥

विशेषार्थ— जो वादी पदार्थको सत् व असत् (उभय) स्वरूप मानकर भी उन दोनों धर्मोंमें परस्पर सापेक्षता स्वीकार नहीं करते उनके यहां उभयस्वरूपता भी असम्भव है, क्योंकि, जिस स्वरूपसे वे सत् हैं उसी स्वरूपसे उन्हें असत् माननेमें विरोध आता है। इस प्रकार स्याद्वाद न्यायके विना उक्त प्रकारसे उभयस्वरूपता भी नहीं बनती। किन्तु स्याद्वादका अवलम्बन करनेपर पदार्थको उभय (सत्-असत्) स्वरूप माननेमें कोई विरोध नहीं रहता। कारण कि स्वकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा सत्स्वरूप वस्तुको परकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा असत्स्वरूप भी मानना ही पड़ेगा, क्योंकि, इसके विना सबके सब स्वरूप हो जानेका अनिवार्य प्रसंग आनेसे घट-पटादि पदार्थोंमें विभिन्नरूपता सम्भव नहीं है। जो वादी (बौद्ध) सत् व असत् पक्षोंमें दिये गये दोषोंके परिहारकी इच्छासे तत्त्वको अवक्तव्य स्वीकार करते हैं वे अपने इस अभिमतका परिज्ञान दूसरोंको किस प्रकारसे करावेंगे? कारण कि स्वसंवेदनसे तो दूसरोंको समझाया नहीं जा सकता है। यदि कहा जाय कि 'तत्त्व क्षणक्षयो व कल्पनातीत होनेसे अवाच्य है' इत्यादि वाक्योंके द्वारा दूसरोंको समझाया जा सकता है, सो यह भी उचित नहीं है; क्योंकि, ऐसा होनेपर 'सर्वथा अवक्तव्य है' यह सिद्धान्त स्वयमेव खण्डित हो जाता है। यह कथन तो उस व्यक्तिके समान स्ववचनबाधित है जो कि 'मैं मौनव्रती हूँ' इन शब्दोंके द्वारा अपने मौनव्रतकी सूचना देता है।

हे भगवन् ! आपका अभीष्ट तत्त्व कथंचित् सत् स्वरूप ही है, वह कथंचित् असत् स्वरूप ही है, कथंचित् उभय (सत्-असत्) स्वरूप भी है, और कथंचित् अवाच्य भी है। वह अभीष्ट तत्त्व नयके सम्बन्धसे ऐसा है, सर्वथा वैसा नहीं है ॥१६॥

विशेषार्थ— उक्त प्रकारसे सत्, असत्, उभय और अवाच्य स्वरूप एकान्त पक्षोंमें दोषोंको दिखाकर यहां इस कारिकाके द्वारा सप्तभंगीको प्रगट किया गया है। यद्यपि कारिकामें चार ही भंगोंका निर्देश है, तथापि उसमें प्रयुक्त 'च' शब्दके द्वारा शेष तीन भंगोंकी भी सूचना कर दी गयी है। प्रश्नके वश एक ही वस्तुमें विधि व निषेधकी कल्पना करनेको सप्तभंगी कहा जाता है। वह नयविवक्षाके अनुसार ही सम्भव है, न कि सर्वथा। वे सात भंग निम्न प्रकार हैं— (१) कथंचित् घट सत् स्वरूप है। इसमें द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे विधिकी कल्पना की गई है, क्योंकि, घटादिक सभी पदार्थ अपने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावसे सत् स्वरूप ही हैं। यदि उन्हें अपने द्रव्यादिककी अपेक्षा सत् न माना जाय तो फिर वे खरविपाणके समान वस्तु ही नहीं रहेंगे। (२) कथंचित् घट असत् स्वरूप है। इसमें पर्यायार्थिक नयकी प्रधानतासे प्रतिषेधकी कल्पना की गई है, क्योंकि, परकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावसे घट असत् ही है। यदि परकीय द्रव्यादिकी अपेक्षा विवक्षित वस्तुको असत् न स्वीकार किया जावे तो जिस प्रकार घट

१ आ. मी. १४. मिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य त्तिदयं । दव्वं खु मत्तभंगं आदेसवमेण संभवदि ॥ पंचा, १४.

ण च एयादो अणेयाणं कम्माणं वुत्पत्ती विरुद्धा, कम्मइयवग्गणाए अणंताणंत-
संखाए अट्टकम्मपाओग्गभावेण अट्टविहत्तमावण्णाए एयत्तविरोहादो । णत्थि एत्थ एयंतो,
एयादो घडादो अणेयाणं खप्पराणमुप्पत्तिदंसणादो । वुत्तं च—

कम्मं ण होदि एयं अणेयविहमेय वंधसमकाले ।

मूलुत्तरपयडीणं परिणामवसेण जीवाणं ॥१७॥

जीवपरिणामाणं भेदेण परिणामिज्जमाणकम्मइयवग्गणाणं भेदेण च कम्माणं बंध-
मसकाले चेव अणेयविहत्तं होदि त्ति घेत्तव्वं । कथं मुत्ताणं कम्माणममुत्तेण जीवेण सह
मबंधो ? ण, अणादिबंधणवद्धस्स जीवस्स संसारावत्थाए अमुत्तत्ताभावादो । अणादिबंधो

स्वकीय द्रव्यादिसे सत् है, उसी प्रकार वह परकीय द्रव्यादिककी अपेक्षा भी सत् ही ठहरेगा ।
और वैसा होनेपर 'यह घट है, पट नहीं है' इस प्रकारका भेद न रह सकनेसे सबके सब
स्वरूप हो जानेका प्रसंग अनिवार्य होगा । अतएव अपने द्रव्यादिककी अपेक्षा वस्तु जैसे सत् है
वैसे ही वह परकीय द्रव्यादिककी अपेक्षा असत् भी है, यह मानना ही चाहिये । (३) कथंचित् घट
सत् व असत् (उभय) स्वरूप है । यहां द्रव्याधिक और पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा क्रमसे विधि
व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है । कारण कि यदि ऐसा न माना जावे तो फिर घटादि वस्तुओंमें
क्रमशः होनेवाले सत् व असत् रूप विकल्पके व्यवहारका विरोध होगा । (४) कथंचित् घट
अवक्तव्य है । इसमें युगपत् विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है । चूंकि सत् व असत् रूप
दोनों धर्मोंको एक साथ सूचित करनेवाला कोई भी शब्द सम्भव नहीं है, अतएव उस अवस्थामें
वस्तुको अवक्तव्य मानना उचित ही है । 'च' शब्दसे सूचित शेष तीन भंग—(५) कथंचित् घट
सत् व अवक्तव्य है । यहां विधि के साथ ही युगपत् विधि व प्रतिषेध की कल्पना की गई है ।
(६) कथंचित् घट असत् व अवक्तव्य है । यहां प्रतिषेधके साथ युगपत् विधि व प्रतिषेधकी
कल्पना की गई है । (७) कथंचित् घट सत्-असत् व अवक्तव्य है । यहां क्रमशः विधि व प्रतिषेध-
की कल्पनाके साथ युगपत् भी विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है । इस प्रकार ये सात वाक्य
ही सम्भव हैं । प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ भंगोंमें दो अथवा तीनके संयोग से उत्पन्न वाक्य
इन्हींमें अन्तर्भूत होंगे, उनसे भिन्न सम्भव नहीं हैं ।

इसके अतिरिक्त एकसे अनेक कर्मोंकी उत्पत्ति विरुद्ध है, ऐसा कहना भी अयुक्त है :
क्योंकि, आठ कर्मोंकी योग्यतानुसार आठ भेदको प्राप्त हुई अनन्तानन्त संख्यारूप कर्मण वर्गणाको
एक माननेका विरोध है । दूसरे, एकसे अनेक कार्योंकी उत्पत्ति नहीं होती ; ऐसा एकान्त भी
नहीं है, क्योंकि, एक घटसे अनेक खप्परांकी उत्पत्ति देखी जाती है । कहा भी है—

कर्म एक नहीं है, वह जीवोंके परिणामानुसार मूल व उत्तर प्रवृत्तियोंके बन्धके समान-
कालमें ही अनेक प्रकारका है ॥ १७ ॥

जीवपरिणामोंके भेदसे और परिणामार्थी जानेवाली कर्मण वर्गणाओंके भेदसे बन्धके
समकालमें ही कर्म अनेकप्रकारका होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका—मूर्त कर्मोंका अमूर्त जीवके साथ सम्बन्ध कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अनादिकालीन बन्धनसे बद्ध रहनेके कारण जीवका संसार

कुदो णव्वदे ? जीव-मरीराणं वट्टमाणबंधणहाणुववत्तीदो । ण च वट्टमाणबंधघडावणट्टं जीवस्स विरूवित्तं वोत्तुं जुत्तं, जीव-देहाणं महापरिमाणत्तादो रूवित्तणेण च उवलद्वि-लक्खणपत्ताणं रूव-रस-गंध-पासाणं पुधभूदानमुवलं भप्पसंगादो । किं च—ण जीवद्वमत्थि, रूपिणः पुद्गलाः^१ इच्चेदेण लक्खणेण जीवाणं पोग्गलेसु अंतव्भावादो । ण च दव्वं दव्वं-तरस्स असाहारणगुणेण परिणमइ, अच्चंताभावेण णिरुद्धपवुत्तीदो । काणि दव्वाणमसा-हारणलक्खणाणि ? चेयणलक्खणं जीवदव्वं, रूव-रस-गंध-पासलक्खणं पोग्गलदव्वं, ओगाहणलक्खणमायासदव्वं, जीव-पोग्गलाणं गमणागमणणिमित्तकारणं धम्मदव्वं, तेसि-मवट्टाणस्स णिमित्तकारणलक्खणमधम्मदव्वं, दव्वाणं परिणमणस्स णिमित्तकारणलक्खणं कालदव्वं । किं दव्वं णाम ? स्वकासाधारणलक्षणापरित्यागेन द्रव्यांतरासाधारणलक्षण-परिहारेण द्रवति द्रोप्यत्यदुद्रुवत् तांस्तान् पर्यायानिति द्रव्यं^३ । तदो जीवो अमुत्तो चेव, पोग्गलस्स असाहारणगुणेहि तस्स परिणामाभावादो । मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगा

अवस्थामें अमूर्त होना सम्भव नहीं है ।

शंका—अनादिवन्धका परिज्ञान किस प्रमाणसे होता है ?

समाधान—चूंकि जीव और शरीरका वर्तमान बन्ध अनादिवन्धके विना बन नहीं सकता है, अत एव इस अन्यथानुपपत्तिरूप हेतुसे उसका ज्ञान हो जाता है ।

शंका—वर्तमान बन्धको घटित करानेके लिये पुद्गलके समान जीवको भी रूपी कहना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर जीव और शरीर दोनों चूंकि सहान् परिमाणवाले हैं और रूपी भी हैं; अतएव वे इन्द्रियप्राद्य हो जाते हैं । इसलिए उनके रूप, रस, गन्ध और स्पर्शके अलग अलग ग्रहण होनेका प्रसंग आता है । दूसरे, जीव द्रव्यको इस प्रकारसे रूपी स्वीकार करनेपर उसका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, 'जो रूपी हैं वे पुद्गल हैं' इस सूत्रोक्त लक्षणके अनुसार रूपी माननेसे जीवोंका पुद्गलोंमें अन्तर्भाव हो जाता है । तीसरे, एक द्रव्य दूसरे द्रव्यके असाधारण गुणरूपसे परिणत भी नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसी प्रवृत्ति अत्यन्ताभावके द्वारा रोकी जाती है । द्रव्योंके असाधारण लक्षण कौनसे हैं ? जीव द्रव्यका असाधारण लक्षण चेतना; पुद्गल द्रव्यका रूप, रस, गन्ध व स्पर्श; आकाश द्रव्यका अवगाहन, धर्म द्रव्यका जीवों और पुद्गलोंके गमनागमनमें निमित्तकारणता, अधर्म द्रव्यका उक्त जीवों और पुद्गलोंके अवस्थानमें निमित्तकारणता, तथा काल द्रव्यका असाधारण लक्षण द्रव्योंके परिणमनमें निमित्तकारण होना है । द्रव्य किस कहते हैं ? अपने असाधारण स्वरूपको न छोड़कर दूसरे द्रव्योंके असाधारण स्वरूपका परिहार करते हुए जो उन उन पर्यायोंको वर्तमानमें प्राप्त होता है, भविष्यमें प्राप्त होगा व भूतकालमें प्राप्त हो चुका है वह द्रव्य कहलाता है । इसलिये जीव अमूर्तिक ही है, क्योंकि पुद्गल द्रव्यके जो रूप और रसादिक असाधारण गुण हैं उनके स्वरूपसे उसका परिणमन हो नहीं सकता । इसके अतिरिक्त मिथ्यात्व, अमंयम, कपाय और

१ काप्रती 'वि' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते । २ तत्रवा० ५-१. ३ यथास्वं पर्यायैर्द्रव्यन्ते द्रवन्ति व तानि द्रव्याणि । स. सि ५-२.

जीवादो^१ अपुधभूदा कम्मइयवग्गणक्खंधाणं तत्तो पुधभूदाणं कथं परिणामांतरं संपादेति ? ण एस दौमो, जलणट्टिददहणगुणेण तेल्लस्स वट्ठिगयस्स^२ कज्जलागारेण परिणामुवलंभादो । वुत्तं च—

राग-द्वेषाद्यूष्मा स योगै-वर्त्यात्मदीप आवर्त^३ ।

स्कन्धानादाय पुनः परिणमयति तांश्च कर्मतया ॥१८॥

जदि मिच्छत्तादिपच्चएहि कम्मइयवग्गणक्खंधा अट्टकम्मागारेण परिणमंति तो एगसमएण सव्वकम्मइयवग्गणक्खंधा कम्मागारेण [कि ण] परिणमंति, णियमाभावादो ? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावे त्ति चदुहि णियमेहि णियामदाणं परिणामुवलंभादो । दव्वेण अभवत्तिद्विएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ चेव वग्गणाओ एगसमएण एगजीवादो कम्मसरूवेण परिणमंति । खेत्तेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तोगाहणाओ जीवेणोगाढखेत्तद्वियाओ चेव परिणमंति, ण सेसाओ । कालेण एगसमयमादिं कादूण जाव असंखेज्जलोगमेत्तकालं कम्मइयवग्गणसरूवेण ट्टिदाओ चेव परिणमंति, ण सेसाओ ।

योग ये जीवसे अभिन्न होकर उसमें उससे पृथग्भूत कर्मण वर्गणाके स्कन्धोंके परिणामान्तर (रूपित्व) को कैसे उत्पन्न करा सकते हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अग्निमें स्थित दहन गुणके निमित्तसे वत्तीमें रहनेवाले तेलका कज्जलके आकारसे परिणाम पाया जाता है । कहा भी है—

संसारमें राग-द्वेषरूपी उष्णतासे संयुक्त वह आत्मारूपी दीपक योगरूप वत्तीके द्वारा [कर्मण वर्गणाके] स्कन्धोंको ग्रहण करके फिर उन्हें कर्मस्वरूपसे परिणमाता है ॥१८॥

शंका—यदि मिथ्यात्वादिक प्रत्ययोंके द्वारा कर्मण वर्गणाके स्कन्ध आठ कर्मरूपसे परिणमन करते हैं तो समस्त कर्मण वर्गणाके स्कन्ध एक समयमें आठ कर्मरूपसे क्यों नहीं परिणत हो जाते, क्योंकि, उनके परिणमनका कोई नियामक नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव, इन चार नियामकों द्वारा नियमको प्राप्त हुए उक्त स्कन्धोंका कर्मरूपसे परिणमन पाया जाता है । यथा— द्रव्यकी अपेक्षा अभवसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणी और सिद्ध जं वोंके अनन्तवें भाग मात्र ही वर्गणायें एक समयमें एक जीवके साथ कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं । क्षेत्रकी अपेक्षा जीवके द्वारा अवगाहको प्राप्त क्षेत्रमें स्थित अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अवगाहनावाली वर्गणायें ही कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष वर्गणायें कर्मस्वरूपसे परिणत नहीं होतीं । कालकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असंख्यात लोक मात्र कालके भीतरकी कर्मणवर्गणा स्वरूपसे स्थित ही वे वर्गणायें कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष नहीं होती । भावकी अपेक्षा कर्मणवर्गणा पर्यायरूपसे परिणत

१ माप्रतो 'जोगजीवादो' इति पाठः । २ ताप्रतो 'वट्ठिगयस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतो 'सयोग-' इति पाठः । ४ मप्रतो 'आदत्ते' इति पाठः ।

भावेण कम्मइयवग्गणपज्जाएण परिणदाओ चेव कम्मसरूवेण परिणमंति, ण सेसाओ^१ ।
बुत्तं च—

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं ।

बंधइ जहुत्तहेऊ^२ सादियमहणादियं वा वि^३ ॥१९॥

सो च एवंविहलक्खणो पक्कमो पयडिपक्कमो ठिदिपक्कमो अणुभागपक्कमो चेदि
तिविहो । तत्थ पयडिपक्कमो दुावहो— मूलपयडिपक्कमो उत्तरपयडिपक्कमो चेदि । तत्थ
मूलपयडिपक्कमं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवं एगसमयपवद्धम्हि आउअदव्वं,
णामा-गोददव्वं अण्णोण्णं सरिसं होदूण विसेसाहियं, णाण-दंसणावरण-अंतराइयाणं
दव्वमण्णोण्णं सरिसं होदूण विसेसाहियं । मोहणीयदव्वं विसेसाहियं । वेयणीयदव्वं
विसेसाहियं । सव्वत्थ विसेसपमाणमणंतरहेट्ठिमदव्वमावलियाए असंखेज्जादिभागेण खंडेदूण
तत्थ एगखंडमेत्तं होदि । बुत्तं च—

आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ ।

आवरण-अंतराए तुल्लो अहिओ तु मोहे वि ॥२०॥

ही वे कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष नहीं । कहा भी है—

जीव एकक्षेत्रमें अवगाहको प्राप्त हुए तथा कर्मके योग्य सादि, अनादि अथवा उभय
स्वरूप पुद्गलप्रदेशसमूहको यथोक्त हेतुओं (मिथ्यात्व आदि) द्वारा अपने सब प्रदेशोंसे
वांधता है ॥१९॥

इस प्रकारके लक्षणसे संयुक्त वह प्रक्रम प्रकृतिप्रक्रम, स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमके
भेदसे तीन प्रकारका है । उनमें प्रकृतिप्रक्रम मूलप्रकृतिप्रक्रम और उत्तरप्रकृतिप्रक्रमके भेदसे
दो प्रकारका है । इनमें मूलप्रकृतिप्रक्रमका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—एक समयप्रवद्धमें
आयुका द्रव्य सबसे स्तोक है । नाम व गोत्र कर्मका द्रव्य परस्परमें समान होकर उससे विशेष
आधिक है । ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय इन तीन कर्मका द्रव्य परस्परमें समान होकर
नाम व गोत्रकी अपेक्षा विशेष अधिक है । मोहनीयका द्रव्य उससे विशेष अधिक है । वेदनीयका
द्रव्य उससे विशेष अधिक है । सब जगह विशेषका प्रमाण अनन्तर अधस्तन द्रव्यको आवलीके
असंख्यातवें भागसे खण्डित करके जो एक खण्ड प्राप्त होता है उतने मात्र है । कहा भी है—

आयु कर्मका भाग सबसे स्तोक है । नाम व गोत्र कर्ममें वह समान हो करके उससे
अधिक है । आवरण अर्थात् ज्ञानावरण व दर्शनावरण तथा अन्तरायमें वह समान होकर उक्त
दानों कर्मकी अपेक्षा विशेष अधिक है । मोहनीयमें उनसे विशेष अधिक है । किन्तु वेदनीय

१ ते खलु पुद्गलरकन्धा भवव्यानन्तगुणाः सिद्धानन्तभागप्रमितप्रदेशा घनांगुलस्यासंख्येयभागक्षेत्रावगाहिन
एक-द्वि-त्रि-चतुः-संख्येयासंख्येयसमयास्थितिकाः पंचवर्ण-पंचरस-द्विगन्ध-चतुःस्पर्शस्वभावा अष्टविधकमप्रकृति-
योग्याः योगवशादात्मनात्मसात् क्रियन्त इति प्रदेशबन्धः समासतो वेदितव्यः । स. सि. ८-२४. २ ताप्रती
'जुहुत्तुहेयो सादियमणादियं' इति पाठः । ३ एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं । बंधदि सगहेदूहिं य
अणादियं सादियं उभयं ॥ गो. क. १८५.

सव्युवरि वेदणीए भागो अहिओ दु कारण किंतु ।
सुह-दुखकारणत्ता ठिदियविसेसेण सेसाणं ॥२१॥

एवं सत्तविह-छव्विहबंधगेसु वि पदेसपकमो परूवेयव्वो, विसेसाभावादो । एवं मूलपयडिपकमो समत्तो ।

उत्तरपयडिपकमो दुविहो— उक्कस्सउत्तरपयडिपकमो जहण्णउत्तरपयडिपकमो चेदि । तत्थ उक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणकसायमाणपदेसग्गं । अपच्चक्खाणकोधे विसेसाहियं । अपच्चक्खाणमायाए विसेसाहियं । अपच्चक्खाणलोहपदेसग्गं विसेसाहियं । पच्चक्खाणमाणपदेसग्गं विसेसाहियं । कोहे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । अणंताणुबंधिमाणपदेसग्गं विसेसाहियं । कोधे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । मिच्छत्ते विसेसाहियं । केवलदंसणावरणे विसेसाहियं । पयलाए विसेसाहियं । णिदाए विसेसाहियं । पयलापयलाए पकमदव्वं विसेसाहियं । णिदाणिदाए विसेसाहियं । थीणगिद्धीए विसेसाहियं । केवलणाणावरणे विसेसाहियं । आहारसरीरणामाए पकमदव्वं अणंतगुणं । वेउव्वयसरीरणामाए पकमदव्वं विसेसाहियं । ओरालियसरीरणामाए

कर्मका द्रव्य सर्वोत्कृष्ट हो करके मोहनीयकी अपेक्षा विशेष अधिक है । इसका कारण वेदनीयका मुख व दुखमें निमित्त होना है । शेष कर्मका हीनाधिक भाग उनकी स्थितिविशेषसे है ॥२०-२१॥

इसी प्रकारसे सात प्रकारके व छह प्रकारके कर्मको बांधनेवाले जीवोंमें भी प्रदेशप्रक्रमका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार मूलप्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ ।

उत्तरप्रकृतिप्रक्रम दो प्रकारका है— उत्कृष्ट उत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जवन्य उत्तरप्रकृतिप्रक्रम । उनमें उत्कृष्ट उत्तरप्रकृतिप्रक्रम प्रकृत है— अपत्याख्यान कपायोंमें मानका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । अपत्याख्यान क्रोधमें उससे अधिक प्रदेशाग्र है । अपत्याख्यान मायामें उससे अधिक प्रदेशाग्र है । अपत्याख्यान लोभमें उससे अधिक प्रदेशाग्र है । उससे प्रत्याख्यान मानका प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है । मायामें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है । लोभमें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है । अनन्तानुबन्धी मानका प्रदेशाग्र उससे विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । वह प्रक्रमद्रव्य प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य आहारशरीर नामकर्ममें अनन्तगुणा है । प्रक्रमद्रव्य वैक्रियकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य औदारिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य तेजसशरीर नामकर्ममें

१ आउगभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो । धादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ॥
सुह दुखकारणमित्तादो बहुणिज्जरगो सि वेदणीयरस । सव्वेहितो बहुगं दव्वं होदि सि णिदिट्ठं ॥ सेसाणं पयडीणं
ठिदिपडिभागेण होदि दव्वं तु । आवन्दिउ.सम्बभागो पडिभागो होदि णियमेण ॥ गो. क. १९२-१९४.

पक्कमदव्वं विसेसाहियं । तेजासरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । कम्मइयसरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । देवगइ-णिरयगईणं पक्कमदव्वं संखेज्जगुणं । मणुसगईए विसेसाहियं । तिरिक्खगईए विसेसाहियं । अजसगितीए विसेसाहियं । दुगुंलाए पक्कमदव्वं संखेज्जगुणं । भयपक्कमदव्वं विसेसाहियं । हस्स-सोगपक्कमदव्वं विसेसाहियं । रदि-अरदिपक्कमदव्वं विसेसाहियं । इत्थि-णवुंसयवेदपक्कमदव्वं विसेसाहियं । दाणंतराए संखेज्जगुणं । लाभंतराए विसेसाहियं । भोगंतराए विसेसाहियं । परिभोगंतराए विसेसाहियं । विरियंतराए विसेसाहियं । क्रोहसंजलणे विसेसाहियं । मणपज्जवणाणावरणे विसेसाहियं । ओहिणाणावरणे विसेसाहियं । सुदणाणावरणे विसेसाहियं । मदिणाणावरणे विसेसाहियं । माणसंजलणे विसेसाहियं । ओहिदंसणावरणे विसेसाहियं । अचक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । चक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । पुरिसवेदे विसेसाहियं । मायासंजलणे^१ विसेसाहियं । अण्णदरग्भिह आउए विसेसाहियं । णीचागोदे विसेसाहियं । लोहसंजलणे विसेसाहियं । असादे विसेसाहियं । उच्चागोदे जसगितीए विसेसाहियं । सादे विसेसाहियं । एवमुक्कस्सपयडिपकमो समत्तो ।

जहण्णए पयदं— सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कमदव्वं । क्रोहे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । पच्चक्खाणमाणे विसेसाहियं । क्रोधे विसेसाहियं । मायाए

विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य कर्मणशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । देवगति और नरकगति का प्रक्रमद्रव्य संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । तिर्यगतिमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें प्रक्रमद्रव्य संख्यातगुणा है । भयमें प्रक्रमद्रव्य विशेष अधिक है । हास्य व शोकमें प्रक्रमद्रव्य विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेद व नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें संख्यातगुणा है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । मनःपर्यय-ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । अवधि-दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । अन्यतर आयुमें विशेष अधिक है । नीच गोत्रमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें विशेष अधिक है । उच्चगोत्र और यशःकीर्तिमें विशेष अधिक है । साता-वेदनीयमें विशेष अधिक है । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ ।

जघन्य प्रकृतिप्रक्रम प्रकृत है—प्रक्रमद्रव्य अप्रत्याख्यान मानमें सबसे स्तोक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यान मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष

१ प्रत्योक्तमयोरेव 'माणसंजलणे' इति पाठः ।

विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । अणंताणुबंधिमाणे विसेसाहियं । क्रोधे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । मिच्छत्ते विसेसाहियं । केवलदंसणावरणे विसेसाहियं । पयलाए विसेसाहियं । णिद्दाए विसेसाहियं । पयलापयलाए विसेसाहियं । णिद्दाणिद्दाए विसेसाहियं । थीणगिद्धीए विसेसाहियं । केवलणाणावरणे विसेसाहियं । ओरालियसरीरे अणंतगुणं । तेजइयसरीरे विसेसाहियं । कम्मइयमरीरे विसेसाहियं । तिरिक्खगईए संखेज्जगुणं । जमाजसगिच्छीए सरिसं विसेसाहियं । मणुसगईए विसेसाहियं । दुगुंच्छाए संखेज्जगुणं । भये विसेसाहियं । हस्स-सोगे विसेसाहियं । रदि-अरदीसु विसेसाहियं । अण्णदरग्ग्हि वेदे विसेसाहियं । माणसंजलणाए^१ विसेसाहियं । क्रोधे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । दाणंतराइए विसेसाहियं । लाहंतराइए विसेसाहियं^२ । भोगंतराइए विसेसाहियं । परिभोगंतराइए विसेसाहियं । तिरियंतराइए विसेसाहियं । मणपज्जवणाणावरणे विसेसाहियं । ओहिणाणावरणे विसेसाहियं । सुदणाणावरणे विसेसाहियं । मदिणाणावरणे विसेसाहियं । ओहिदंसणावरणे विसेसाहियं । अचक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । चक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । उच्च-णीचागोदेसु संखेज्जगुणं । सादासादेसु विसेसाहियं । वेउच्चिय-सरीरे असंखेज्जगुणं । देवगईए संखेज्जगुणं । मणुस-तिरिक्खाउआणं असंखेज्जगुणं । णिरयगईए

अधिक है । अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिच्छात्वमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । औदारिकशरीरमें अनन्तगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । तिर्यचगतिमें संख्यातगुणा है । यशकीर्ति व अयशकीर्तिमें समान होकर विशेष अधिक है । मनुष्य-गतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें संख्यातगुणा है । भयमें विशेष अधिक है । हास्य व शोकमें विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । अन्यतर वेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । उच्च व नीच गोत्रमें संख्यातगुणा है । साता व असाता वेदनीयमें विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें संख्यातगुणा है । मनुष्य व तिर्यच आयुका प्रक्रमद्रव्य असंख्यातगुणा है । नरकगतिका असंख्यातगुणा है । देव व नारक

१ तापता 'अण्णदरग्ग्हि विसे', वेदे माणसंजलणाए' इति पाठः । २ तापता 'लाहंतराइए विसेसाहियं' इत्येतद् वाक्यं नास्ति ।

असंखेज्जगुणं । देव-णिरयाउआणं असंखेज्जगुणं । आहारसरीरस्स पक्षमदव्वमसंखेज्जगुणं । एवं पयडिपक्षमो समत्तो ।

ठिदिपक्षमे पयदं— सव्वत्थोवं चरिमाए द्विदीए पक्षमिदपदेसग्गं । पठमड्विदीए पक्षमिदपदेसग्गमसंखेज्जगुणं । अपठम-अचरिमासु द्विदीसु पक्षमिदपदेसग्गमसंखेज्जगुणं । अपठमाए पदेसग्गं विसेमाहियं । अचरिमाए द्विदीए पदेसग्गं विसेसाहियं । सव्वासु द्विदीसु पदेसग्गं विसेमाहियं । कुदो एदमप्पाबहुगं ? ठिदीसु पक्षमिददव्वावेक्खत्तादो । तं जहा— जहणियाए द्विदीए बहुअं पदेसग्गं पक्षमदि । विदियाए विसेसहीणं । एवं विसेसहीणं होदूणं गच्छदि जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, तत्थ दुगुणहीणं^१ । एवं णेयव्वं जाव उक्खस्सड्विदि त्ति । एत्थ एयपदेसग्गुणहाणिट्ठाणंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । णाणा-पदेसग्गुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । णाणापदेसग्गुणहाणि-ट्ठाणंतराणि थोवाणि । एयपदेसग्गुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । एवं ठिदिपक्षमो समत्तो ।

अणुभागपक्षमे पयदं—जहणियाए वग्गणाए बहुअं पदेसग्गं पक्षमदि । विदियाए विसेसहीणमणंतभाएण । एवमणंताणि फहयाणि गंतूण दुगुणहीणं पक्षमदि । एवं णेयव्वं

आयुका असंख्यातगुणा है । आहारशरीरका प्रक्रमद्रव्य असंख्यातगुणा है । इस प्रकार प्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ ।

स्थितिप्रक्रम प्रकृत है—चरम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाप्र सबसे स्तोक है । प्रथम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाप्र असंख्यातगुणा है । अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रक्रमित प्रदेशाप्र असंख्यातगुणा है । अप्रथम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाप्र विशेष अधिक है । अचरम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाप्र विशेष अधिक है । सब स्थितियोंमें प्रक्रमित प्रदेशाप्र विशेष अधिक है ।

शंका—यह अल्पबहुत्व क्यों है ?

समाधान—कारण कि वह स्थितियोंमें प्रक्रमको प्राप्त हुए द्रव्यकी अपेक्षा करता है । यथा— जघन्य स्थितिमें बहुत प्रदेशाप्र प्रक्रान्त होता है । द्वितीय स्थितिमें विशेषहीन प्रदेशाप्र प्रक्रान्त होता है । इस प्रकार विशेषहीन होकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक जाता है । वहांकी स्थितिमें दुगुणा हीन प्रदेशाप्र प्रक्रान्त होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये ।

यहां एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । नानाप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातव भाग मात्र हैं । नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं । एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर उनसे असंख्यातगुणा है । इस प्रकार स्थितिप्रक्रम समाप्त हुआ ।

अनुभागप्रक्रम प्रकृत है—जघन्य वर्गणामें बहुत प्रदेशाप्र प्रक्रान्त होता है । द्वितीय वर्गणामें अनन्तवें भाग रूप विशेष हीन प्रदेशाप्र प्रक्रान्त होता है । इस प्रकार अनन्त स्पष्टक जाकर दुगुणा हीन प्रदेशाप्र प्रक्रान्त होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट वर्गणा तक ले जाना चाहिये ।

१ ताप्रतो 'दुगुहीणं' इति पाठः ।

जाव उक्स्सवग्गणे त्ति । एयगुणहाणिट्ठाणंतरे फद्दयाणि थोवाणि । गाणागुणहाणिट्ठाणं-
तराणि अणंतगुणाणि ।

एत्थ अप्पाबहुअं वुच्चदे । तं जहा—सव्वत्थोवमुक्कस्मियाए वग्गणाए पक्कमिददव्वं ।
जहणियाए वग्गणाए अणंतगुणं । अजहण-अणुक्कस्मियासु वग्गणासु पक्कमिददव्व-
मणंतगुणं । अजहणियासु विसेसाहियं । अणुक्कस्मियासु विसेसाहियं । सव्वासु विसेसा-
हियं । संपहि ट्ठिदीसु पक्कमिदअणुभागस्स अप्पाबहुअं उच्चदे—सव्वत्थोवो जहणियाए
ट्ठिदीए पक्कमिदअणुभागो । अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु अणुभागो अणंतगुणो । अचरिमासु
ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । चरिमाए ट्ठिदीए अणुभागो अणंतगुणो । अपढमासु
ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । सव्वासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । एसो
णिकखेवाइरियउवएसो ।

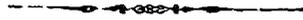
एवं पक्कमे त्ति समत्तमणिओगद्वारं ।

एकगुणहानिस्थानान्तरमें स्पष्टक स्तोक हैं । नानागुणहानिस्थानान्तर [में स्पष्टक] अनन्तगुणे हैं ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट वर्गणामें प्रक्रमप्राप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । जघन्य वर्गणामें अनन्तगुणा है । अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाओंमें प्रक्रमप्राप्त द्रव्य अनन्तगुणा है । अजघन्य वर्गणाओंमें विशेष अधिक है । अनुत्कृष्ट वर्गणाओंमें विशेष अधिक है । सब वर्गणाओंमें विशेष अधिक है ।

अब स्थितियोंमें प्रक्रमप्राप्त अनुभागके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं—जघन्य स्थितिमें प्रक्रमप्राप्त अनुभाग सबसे स्तोक है । अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रक्रमप्राप्त अनुभाग अनन्त-गुणा है । अचरम स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । चरम स्थितिमें अनुभाग अनन्तगुणा है । अप्रथम स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । सब स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । यह निक्षेपाचार्यका उपदेश है ।

इस प्रकार प्रक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



उक्कमाणियोगद्वारं

सयलिद्विद्वंदियमहिणंदियभव्व-पउमवणसंडं ।

अहिणंदणजिणणाहं गमिऊण उक्कमं वोच्छं ॥१॥

एत्थ उक्कमस्स ताव णिक्खेवो उच्चदं । तं जहा—णामउक्कमो, ठवणउक्कमो, दव्वउक्कमो, खेत्तउक्कमो, कालउक्कमो, भावउक्कमो चेदि छव्विहो उक्कमो । णाम-ठवणं गदं । दव्वउक्कमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वोवक्कमभेएण । उक्कम-अणियोगद्वारंजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वोवक्कमो । णोआगमदव्वोवक्कमो तिविहो जाणुग-सरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण । जाणुग-भवियं गदं । तव्वदिरित्तदव्वोवक्कमो दुविहो-क्कमोवक्कमो णोक्कमोवक्कमो चेदि । क्कमोवक्कमो अडुविहो । णोक्कमोवक्कमो तिविहो सच्चित्त-अच्चित्त-मिस्सभेएण^१ । खेत्तोवक्कमो^२ जहा उडुडलोगो उक्कंतो, गामो उक्कंतो, णयरमुवक्कंतं इच्चेवमादी । कालोवक्कमो जहा वसंतो उक्कंतो, हेमंतो उक्कंतो इच्चेवमादी । भावोवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमभावोवक्कमभेएण । उक्कमअणियोगद्वारजाणो

समस्त इन्द्रसमूहोंसे वन्दित और भव्य जीवों रूपी कमल-वनखण्डको अभिनन्दित करने-वाले अभिनन्दन जिनेन्द्रको नमस्कार करके उपक्रम अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ॥१॥

यहां पहिले उपक्रमका निक्षेप कहते हैं । वह इस प्रकार है—नामउपक्रम, स्थापनाउपक्रम, द्रव्यउपक्रम, क्षेत्रउपक्रम, कालउपक्रम और भावउपक्रम, इस तरह उपक्रम छह प्रकारका है । नाम व स्थापना उपक्रम अवगत हैं । द्रव्यउपक्रम आगम और नोआगम द्रव्यउपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उपक्रमअनुयोगद्वारका ज्ञायक, उपयोग रहित जीव आगमद्रव्योपक्रम कहलाता है । नोआगमद्रव्योपक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्रव्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्योपक्रम अवगत हैं । तद्रव्यतिरिक्त द्रव्योपक्रम दो प्रकारका है—कर्मापक्रम और नोकर्मापक्रम । कर्मापक्रम आठ प्रकारका है । नोकर्मापक्रम सच्चित्त, अच्चित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है ।

क्षेत्र-उपक्रम—जैसे ऊर्ध्वलोक उपक्रान्त हुआ, ग्राम उपक्रान्त हुआ व नगर उपक्रान्त हुआ इत्यादि । कालउपक्रम जैसे—वसन्त उपक्रान्त हुआ व हेमन्त उपक्रान्त हुआ इत्यादि । भाव-उपक्रम आगम और नोआगम भाव-उपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उपक्रम-अनुयोगद्वारका ज्ञायक

१ प्रत्योद्भवयोरेव 'उक्कमणियोगद्वारं' इति पाठः । से कि तं उक्कमं ? छव्विहे पणत्ते । तं जहा—णामोक्कमे ठवणोवक्कमे दव्वोवक्कमे खेत्तोवक्कमे कालोवक्कमे भावोवक्कमे । नाम-ठवणाओ गयाओ । से कि तं दव्वोवक्कमे ? दव्वोवक्कमे दुविहे पणत्ते । तं जहा—आगमओ अ नोआगमओ अ । जाव जाणुगसरीर-भवियसरीर-वइरित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पणत्ते । तं जहा—सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए । अणु. ६०. ३ से कि तं खेत्तोवक्कमे ? जणं हल-कुलिआईहि खेत्ताइ उक्कमिज्जित्ति, से तं खेत्तोवक्कमे । अणु. ६७.

उवजुत्तो आगमभावोवकमो— जहा पाहुडसुवकंतं, पुव्वं वत्थू वा उवकंतं । ओदइयादि-भावोवकमो णोआगमभावोवकमो णाम । एत्थ एदेसु उवकमेसु केण पयदं ? कम्मो-वकमेण पयदं । जो सो कम्मोवकमो सो चउच्चिहो— बंधणउवकमो उदीरणउवकमो उवसामणउवकमो विपरिणामउवकमो चेदि । पकम-उवकमाणं को भेदो ? पयडि-ट्टिदि-अणुभागेषु दुक्कमाणंपदेसग्गपरूवणं^२ पकमो कुणइ, उवकमो पुण बंधविदियसमयप्पहुडि संतसरूवेण ट्टिदकम्मपोग्गलाणं वावारं परूवेदि । तेण अत्थि विसेसो । जो सो बंधणउवकमो सो चउच्चिहो— पयडिबंधणउवकमो, ठिदिबंधण-उवकमो, अणुभागबंधणउवकमो, पदेसबंधणउवकमो चेदि । जीवपदेसेहि खीर-णीरं व अणुणोणुणायपयडीणं बंधकमपरूवणं पयडिबंधणउवकमो णाम । तो संत-पयडीणंभेगसमयादि जाव सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ ति कम्मभावेणावट्टाणकाल-परूवणं ट्टिदिबंधणउवकमो णाम । तासिं चैव संतपयडीणमणुभागस्स जीवेण सह एयत्तं गयस्स फइय-वग्ग-वग्गणा-ट्टाणाविभागपडिच्छेदादिपरूवणा अणुभागबंधणउवकमो णाम । तासिं चैव पयडीणं खविद-गुणितकम्मंसिय-तग्घोलमाणे अस्सिदूण संचिद-उपयोग युक्त जीव आगमभाव-उपक्रम कहलता है । जैसे- प्राभूत उपक्रान्त हुआ, पूर्व उपक्रान्त हुआ अथवा वस्तु उपक्रान्त हुई । औद्यिक आदि भावोंके उपक्रमको नोआगमभावोपक्रम कहते हैं ।

शंका— इन उपक्रमोंमें यहां कौनसा उपक्रम प्रकृत है ?

समाधान— यहां कर्मोपक्रम प्रकृत है ।

जो वह कर्मोपक्रम है वह चार प्रकारका है— बन्धन-उपक्रम, उदीरणा-उपक्रम, उपशामना-उपक्रम और विपरिणाम उपक्रम ।

शंका— प्रक्रम और उपक्रममें क्या भेद है ?

समाधान— प्रक्रम अनुयोगद्वार प्रकृति, स्थिति और अनुभागमें आनेवाले प्रदेशाप्रकी प्ररूपणा करता है; परन्तु उपक्रम अनुयोगद्वार बन्धके द्वितीय समयसे लेकर सत्त्वस्वरूपसे स्थित कर्म-पुद्गलोंके व्यापारकी प्ररूपणा करता है । इसलिये उन दोनोंमें विशेषता है ।

जो वह बन्धन-उपक्रम है वह चार प्रकारका है— प्रकृतिबन्धन-उपक्रम, स्थितबन्धन-उपक्रम, अनुभागबन्धन-उपक्रम और प्रदेशबन्धन-उपक्रम । दूधके साथ पानीके समान जीवप्रदंशोंके साथ परस्परमें अनुगत (एकरूपताको प्राप्त) प्रकृतियोंके बन्धके क्रमकी प्ररूपणा करनेको प्रकृतिबन्धन-उपक्रम कहते हैं । अनन्तर उन सत्त्वस्वरूप प्रकृतियोंके एक समयसे लेकर सत्तर कोडाकोडि सागरोपम काल तक कर्मस्वरूपसे रहनेके कालकी प्ररूपणाको स्थितबन्धन-उपक्रम कहते हैं । उन्हीं सत्त्वप्रकृतियोंके जीवके साथ एकताको प्राप्त हुए अनुभाग सम्बन्धी स्पष्टक, वर्ग, वर्गणा, स्थान और अधिभागप्रतिच्छेद आदिकी प्ररूपणाका नाम अनुभागबन्धन-उपक्रम है । उन्हीं प्रकृतियोंके क्षपितकर्मांशिक, गुणितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान जीवों-

१ काप्रती 'दुःकमण' इति पाठः । २ काप्रती 'परूवण-'; ताप्रती 'परूवणा (णं)' इति पाठः । ३ ताप्रती '[ति] संतपयडीण' इति पाठः ।

उक्कसाणुक्कसपदेमपरुवणा पदेसबंधणउवक्कमो णाम । एत्थ एदेसिं चटुण्णमुवक्कमाणं जहा संतक्कमपयडिपाहुडे परुविदं तथा परुवेयच्चं । जहा महाबंधे परुविदं तथा परुवणा एत्थ किण्ण कीरदे ? ण, तस्स पढमसमयबंधम्मि चेव वावारादो । ण च तमेत्थ वोत्तुं जुत्तं, पुणरुत्तदोमप्पसंगादो । एवं बंधणउवक्कमो समत्तो ।

उदीरणा चउत्विहा—पयडि-ट्टिठदि-अणुभाग-पदेमउदीरणा चेदि । तत्थ पयडि-उदीरणा दुविहा—मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि । तत्थ मूलपयडिउदीरणं वत्तइम्मामो । तं जहा—का उदीरणा णाम ? अपक्कवपाचनमुदीरणा । आवलियाए बाहिरट्टिदिमादिं कादूण उवरिमाणं ठिदीणं बंधावलियवदिककंतपदेसग्गमसंखेज्जलोगपडि-भागेण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागेण वा ओक्कट्टिदूण उदयावलियाए देदि^१ सा उदीरणा^२ । मूलपयडिउदीरणा दुविहा—एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्टाणउदीरणा चेदि ।

का आश्रय करके संचयको प्राप्त हुए उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट प्रदेशकी प्ररूपणाको प्रदेशबन्धन-उपक्रम कहा जाता है । इन चार उपक्रमोंकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मप्रकृतिप्राभृतमें की गई है उसी प्रकार यहां भी करनी चाहिये ।

शंका—जैसी महाबन्धमें प्ररूपणा की गई है वैसी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उसका व्यापार प्रथम समय सम्बन्धी बन्धमें ही है । और उसका यहां कथन करना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है । इस प्रकार बन्धन-उपक्रम समाप्त हुआ ।

उदीरणा चार प्रकारकी है—प्रकृतिउदीरणा, स्थितिउदीरणा, अनुभागउदीरणा, और प्रदेशउदीरणा । उनमें प्रकृतिउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—

शंका—उदीरणा किसे कहते हैं ?

समाधान—नहीं पके हुए कर्मोंके पकानेका नाम उदीरणा है । आवलीसे बाहिरकी स्थितिको लेकर आगेकी स्थितियोंके बन्धावली अतिक्रान्त प्रदेशप्रको असंख्यात लोक प्रतिभागसे अथवा पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अपकपेण करके उदयावलीमें देना, यह उदीरणा कहलाती है ।

मूलप्रकृति उदीरणा दो प्रकारकी है—एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा ।

१ काप्रती 'उदयावलियारा जादि' इति पाठः । २ तत्थ उदओ णाम कम्मणं जहाकालजणिदो फलविवागो कम्मोदयो उदयो ति भणिदं होइ । उदीरणा पुण अपरिपत्तकालाणं चेव कम्माणमुवायविमेषेण परिपाच्चणं, अपक्कपरिपाचनमुदीरणेति वचनात् । वुत्तं च—कालेण उवायेण य पच्चति जहा वणफइफलाई । तह कालेण तवेण य पच्चति कयायि क.मा [ग्मा] यि ॥ इदि । जयध. अ. प. ७४८. जं करणेणोक्कट्टिय उदये दिज्जइ उदीरणा एसा । पगइ-ट्टिइ-अणुभाग-प्पएसमूलत्तरविभागा ॥ क. प्र. ४, १. तत्र यत्तरमाण्वात्मकं दलिकं करणेण योगसंज्ञकेन वीर्यविशेषेण कप्पायसहितेन असहितेन वा उदयावलिकावर्हिर्वत्तिनीभ्यः स्थितीभ्योऽपकृष्य उदये दीयते उदयावलिकायां प्रक्षिप्यते एषा उदीरणा (मलय.) ।

एत्थ ताव एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं भणिस्सामो । णाणावरणीय-दंसणा-
वरणीय-अंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव खीणकसाओ त्ति ताव एदे उदी-
रया । णवरि खीणकसायद्वाए समयाहियावलिसेसाए एदासिं तिण्णं पयडीणं उदीरणा
वोच्छिण्णा । मोहणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइओ त्ति उदीरया ।
णवरि चडमाणसुहुमसांपराइयद्वाए समयाहियावलिसेसाए उदीरणा वोच्छिण्णा ।
वेयणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति उदीरया । णवरि पमत्तसंजदस्स
अप्पमत्ताहिमुहस्स चरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा । आउअस्स मिच्छाइट्ठी मरणकाले
चरिमावलियं मोत्तूण सेससत्त्वकाले उदीरओ । गुणं पुण पडिवज्जमाणो जाव चरिमसमयं
ताव उदीरओ । एवं वत्तव्वं जाव पमत्तसंजदो त्ति । उवरि उदीरणा आउअस्स णत्थि ।
कुदो ? साभावियादो । णामा-गोदाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति
उदीरणा । णवरि सजोगिकेवलिचरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो— वेयणीय-मोहणीयाणमुदीरओ अणादिओ अपज्जवसिदो,

यहां पहले एक-एक-प्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय
और अन्तराय इन तीन कर्मोंके मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकपाय पर्यन्त, ये जीव उदीरक हैं ।
विशेष इतना है कि क्षीणकपायके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर इन तीनों
प्रकृतियोंकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है । मोहनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परा-
यिक तक उदीरक हैं । विशेष इतना है कि चढ़ते समय सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय
अधिक आवलीके शेष रहनेपर उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है । वेदनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे
लेकर प्रमत्तसंयत तक उदीरक हैं । विशेष इतना है कि अप्रमत्त गुणस्थानके अभिमुख हुए
प्रमत्तसंयत जीवके अन्तिम समयमें उसकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है । मरणकालमें अन्तिम
आवलीको छोड़कर शेष सब कालमें आयुका उदीरक मिथ्यादृष्टि जीव होता है । परन्तु अन्य
गुणस्थानको प्राप्त होनेवाला जीव उस गुणस्थानके अन्तिम समय तक उदीरक होता है । इस
प्रकार प्रमत्तसंयत तक कहना चाहिये, क्योंकि, उसके आगे आयुकी उदीरणा नहीं है । इसका
कारण स्वभाव है । नाम व गोत्र कर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक है ।
विशेष इतना है कि सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है । इस प्रकार
स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— वेदनीय और मोहनीयका उदीरक जीव अनादि-अपर्यवसित,

१ घाईणं छउमत्था उदीरगा रागिणो व मोहस्स । क. प्र. ४, ३. घातिप्रकृतीना ज्ञानावरण-दर्शनावर-
णान्तरायरूपाणां सर्वेऽपि छउमत्थाः क्षीणमोहपर्यवसाना उदीरकाः । मोहनीयस्य तु रागिणः सरागाः सूक्ष्म-
सम्परायपर्यवसाना उदीरकाः (मलय. टीका) । २ तइयाऊण पमत्ता जोगंता उ त्ति दोण्हं च ॥ क. प्र. ४, ४.
तृतीयस्य वेदनीयस्य आयुषश्च प्रमत्ताः प्रमत्तगुणस्थानकपर्यन्ताः सर्वेऽप्युदीरकाः । केवलमायुषः पर्यन्तावलिकाया
नोदीरका भवन्ति । तथा द्वयोर्नाम-गोत्रयोर्योग्यन्ताः सयोगिकेवलिपर्यवसानाः सर्वेऽप्युदीरकाः (मलय. टीका) ।

अणादिओ सपञ्जवसिदो, सादिओ सपञ्जवसिदो वा । जो सो सादिओ सपञ्जवसिदो सो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उदीरेदि, अप्पमत्त-उवसंतकसायाणं हेट्ठा पदिदूण सञ्जजहण्णमंतो-मुहुत्तमच्छिय पुणो अप्पमत्तगुणं गयाणं समयाहियावलयिसुहुमसांपराइयचरिमममय-अपत्ताणं^१ च जहाकमेण वेयणीय-मोहणीयाणमंतोमुहुत्तकालपमाणउदीरणुवलंभादो । उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं, अप्पमत्त-उवसंतकसाएसु हेट्ठा पदिदूण उवड्ढपोग्गल-परियट्ठं परिभमिय जहाकमेण सग-सगगुणं गंतूण उदीरणावोच्छेदे कदे उक्कस्सेण उवड्ढ-पोग्गलमेत्तकालुवलभादो ।

आउअस्स जहण्णएण एगो वा दो वा समया । अप्पमत्तो पमत्तो होदूण जहण्णेण एगसमयं चेव आउअस्स उदीरओ होदूण विदियममयए आउअस्स अणुदीरओ होदि । उदयावलयियेत्तट्ठिदिविसेसो त्ति जे आइरिया भणंति तेसिमहिप्पाएण उदीरणकालो जहण्णओ एगसमयमेत्तो । जे पुण दोणिसमए जहण्णेण उदेरिदि त्ति भणति तेसि-महिप्पाएण वे समया त्ति परूविदं । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । कुदो ? उदयावलयियब्भंतरे पविट्ठिदीणं उदीरणाभावादो । सेसाणं कम्माणमणादिओ

अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है । जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है । इसका कारण यह है कि अप्रमत्त और उपशान्तकपाय गुणस्थानसे नीचे गिरकर और सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक वहां रहकर फिरसे अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवोंके, तथा एक समय अधिक आवली स्वरूप सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्त समयको न प्राप्त हुए अर्थात् सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके अवशिष्ट रहनेके पूर्व समयवर्ती जीवोंके, यथाक्रमसे वेदनीय और मोहनीय कर्मकी अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण उदीरणा पायी जाती है । उत्कर्षसे दोनों कर्मोंकी उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक उदीरणा करता है, क्योंकि, अप्रमत्त और उपशान्तकपाय गुणस्थानोंसे नीचे गिरकर व उपार्ध पुद्गल-परिवर्तन काल तक परिभ्रमण करके यथाक्रमसे अपने अपने गुणस्थानको प्राप्त होकर वहां उदीरणाकी व्युच्छित्ति करनेपर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण काल पाया जाता है ।

आयु कर्मकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक अथवा दो समय है । कारण कि अप्रमत्त जीव-प्रमत्त हो जघन्यसे एक समय ही आयुका उदीरक होकर द्वितीय समयमें आयुका अनुदीरक होता है । जो आचार्य उदयावली मात्र स्थितिविशेषकी प्ररूपणा करते हैं उनके अभिप्रायसे उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय मात्र होता है । किन्तु जो आचार्य 'जघन्यसे दो समय उदीरणा करता है' ऐसा कहते हैं उनके अभिप्रायसे दो समय मात्र जघन्य कालकी प्ररूपणा की गई है । आयुका उदीरणाकाल उत्कर्षसे एक आवली हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि, उदयावलीके भीतर प्रविष्ट स्थितियोंकी उदीरणा सम्भव नहीं है । शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-अपर्यवसित

१ काप्रतौ 'समयाहियावलिया' ताप्रतौ 'समयाहियावलिया (य)' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'समयअप्पमत्ताणं' इति पाठः ।

अपञ्जवसिदो । खवगसेडिमणारुहणमहावाणमेम भंगो । अणादिओ सपञ्जवसिदो, खवगसेडिमारुहिय विणासिदुदीरणाणमेसेव भंगो । एवं कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरेण पयदं— वेयणीय-मोहणीयउदीरणाणमंतरं जहणणेण एगो समओ । कुदो ? अप्पमत्त-आवलियसेसमुहुमउवसामयगुणेषु एगसमयमच्छिय विदियसमए मदानं तदुवलंभादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? अप्पमत्तगुणमुवसंतकसायगुणं च पडिवज्जिय सव्वुकस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पमत्तगुणे सकसायगुणे च पडिवण्णे^१ तदुवलंभादो । आउ-अस्स उदीरणंतरं जहणणेण आवलिया । कुदो ? सव्वेसु भवेसु आवलियमेत्तसेसेसु आउअस्स उदीरणाभावादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? अप्पमत्तादिउवरिमगुणट्ठाणेषु सव्वुकस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो पमत्तगुणं पडिवण्णस्स तदुवलंभादो । सेसाणं कम्माणं पत्थि अंतरं, खीणकसायगुणट्ठाणस्सिह उदीरणाणं गट्ठाए पुणो उदीरणाऽपादुब्भावादो^२ । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचए अट्टपदं— जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्व-वहारादो । एदेण अट्टपदेण आउअ-वेयणीयाणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया अणुदीरया च । सेसाणं कम्माणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरओ च,

जीव होता है । यह भंग क्षपकश्रेणिपर न चढनेवालं जीवोंके सम्भव है । तथा इन्हीं शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-सपर्यवसित जीव भी होता है । किन्तु क्षपकश्रेणिपर चढकर उदीरणाको नष्ट करनेवालोंके यही भङ्ग होता है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर प्रकृत है—वेदनीय और मोहनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, अप्रमत्त और आवली प्रमाण शेष सूक्ष्मसाम्पराय उपशामक इन दोनों गुणस्थानोंमें क्रमसे एक समय रहकर द्वितीय समयमें मरणको प्राप्त हुए जीवोंके उक्त अन्तरकाल पाया जाता है । उक्तपसे वह अन्तमुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्त गुणस्थान और उपशान्तकपाय गुणस्थानको प्राप्त होकर और वहाँ सर्वोत्कृष्ट अन्तमुहूर्त काल तक रहकर प्रमत्त गुणस्थान और सकपाय (सूक्ष्मसाम्पराय) गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वह पाया जाता है । आयुकी उदीरणाका अन्तर जघन्यस आवली काल प्रमाण है, क्योंकि, सब भवोंके आवली मात्र शेष रहनेपर आयुकी उदीरणाका अभाव होता है । उक्तपसे वह अन्तमुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्तादिक उपरिम गुणस्थानोंमें सर्वोत्कृष्ट अन्तमुहूर्त काल तक रहकर पश्चात् प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके वह पाया जाता है । शेष पांच कर्मोंकी उदीरणाका अन्तर नहीं है, क्योंकि, क्षीणकपाय गुणस्थान (वारहवें और तेरहवें) में उदीरणाके नष्ट होनेपर फिर उदीरणाका प्रादुर्भाव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयमें अर्थपद— जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे यहां प्रकृत हैं, क्योंकि, अवेदकोंमें उसका व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदसे आयु और वेदनीय कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक हैं और अनुदीरक भी हैं । शेष कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक,

१. ताप्रतौ 'पमत्तगुणे च पडिवण्णे' इति पाठः । २. ताप्रतौ 'पादुब्भावा [भावा-] दो' इति पाठः ।

सिया उदीरया च अणुदीरया च । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो— सव्वेसिं कम्माणं उदीणा केवचिरं कालादो होदि ? णाणा-
जीवे पडुच्च सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं गत्थि । अप्पाबहुअं पयदं । आउअस्स उदीरया थोवा । वेयणीयस्स
उदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? चरिमावलियाए मंचिदअणंतजीवमेत्तेण ।
मोहणीयस्स उदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अप्पमत्त-अपुव्व-अणियट्ठि-सुहुमसांप-
राइयजीवमेत्तेण । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमुदीरया विसेसाहिया । केत्तिय-
मेत्तेण ? उवसंत-खीणकसायमेत्तेण । णामा-गोदाणमुदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
मज्जोगिकेवल्लिमेत्तेण ।

णिरयगईए णेरइएसु सव्वेसिं पि कम्माणमुदीरया तुल्ला, णिरंतरं तत्थ मरंताण-
मभावादो । कदाचि आउअस्स उदीरया थोवा, सेसकम्माणं सरिसा विसेसाहिया ।
केत्तियमेत्तेण ? चरिमावलियाए मंचिदजीवमेत्तेण । एवं सव्वामिं गदीणं वत्तव्वं । णवरि
तिरिक्खेसु सरिसा त्ति ण वत्तव्वं । मणुस्सेसु ओघं । एवमप्पाबहुअं समत्तं ।

कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक व बहुत अनुदीरक होते
हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— सब कर्मोंकी उदीरणा कितने काल तक होती है ? नाना
जीवोंकी अपेक्षा सव्वदा होती है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है । अल्पबहुत्व प्रकृत है— आयु कर्मके उदीरक स्तोक
हैं । वेदनीयके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अन्तिम आवलीमें
संचित अनन्त जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं । मोहनीय कर्मके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने
मात्रसे अधिक हैं ? अप्रमत्त, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक जीवोंके
प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायके उदीरक विशेष अधिक
हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? उपशान्तकपाय और क्षीणकपाय जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं ।
नाम व गोत्रके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? सयोगकेवल्लियोंके
प्रमाणसे अधिक हैं ।

नरकगतिमें नारकियोंमें सभी कर्मोंके उदीरक तुल्य हैं, क्योंकि, वहां निरन्तर मरनेवाले
जीवोंका अभाव है । कदाचित् वहां आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं और शेष कर्मोंके उदीरक
समान होकर आयु कर्मके उदीरकोंकी अपेक्षा विशेष अधिक होते हैं ? कितने मात्रसे विशेष
अधिक होते हैं ? अन्तिम आवलीमें संचित जीवोंके प्रमाणसे वे विशेष अधिक होते हैं ।
इसी प्रकार सब गतियोंमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यचोंमें
'सदृश होते हैं' ऐसा नहीं कहना चाहिये । मनुष्योंकी प्ररूपणा ओघके समान है । इस प्रकार
अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढिउदीरणा च णत्थि, एगेगपयडिअधियारादो ।
एवमेगेगपयडिउदीरणा समत्ता ।

संपहि पयडिड्ढाणसमुक्कित्तणं कस्सामो । अट्टविह-सत्तविह-छव्विह-पंचविह-दुविह-
उदीरणा त्ति पंचपयडिड्ढाणाणि उदीरणाए होंति । तं जहा— सव्वाओ पयडीओ
उदीरंतस्स अट्टविहउदीरणा होदि । आउएण विणा सत्तविहउदीरणा होइ । आउअ-
वेयणीहि विणा अप्पमत्तादिसु छव्विहउदीरणा होदि । मोहाउअ-वेयणीयकम्महि विणा
खीणकसायम्हि उवसंतकसाए च पंचविहउदीरणा होदि । णाणावरण-दंसणावरण-
वेयणोय-मोहाउअ-अंतराइएहि विणा मजोगकेवल्लिम्हि दोण्णमुदीरणा होदि । एवं
ड्ढाणसमुक्कित्तणा समत्ता ।

सामित्तं—अट्टण्णमुदीरओ को होदि ? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं ण होदि
उदयावलियपविट्ठं । सत्तण्णमुदरओ को होदि ? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं उदया-
वलियं पविट्ठं । छण्णमुदीरओ को होदि ? अप्पमत्तो सकसाओ । पंचण्णमुदीरओ को
होदि ? छदुमत्थो वीयराओ आवलियचरिमसमयस्स हेट्ठा । दोण्णमुदीरओ को होदि ?
उप्पण्णणाण-दंसणहरो सजोगिकेवली^१ । एवं सामित्तं समत्तं ।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदीरणा नहीं है, क्योंकि, यहां एक एक प्रकृतिका अधिकार
है । इस प्रकार एक-एकप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई ।

अब प्रकृतिस्थानोंका समुत्कीर्तन करते हैं— आठ कर्मोंकी, सात कर्मोंकी, छह कर्मोंकी, पांच
कर्मोंकी और दो कर्मोंकी उदीरणा इस प्रकार उदीरणाके पांच प्रकृतिस्थान हैं । यथा— सब प्रकृतियोंकी
उदीरणा करनेवालेके आठ प्रकृतिक उदीरणा होती है । आयुके विना सात प्रकृतिक उदीरणा होती
है । आयु और वेदनीयके विना अप्रमत्त आदि गुणस्थानोंमें छह प्रकृतिक उदीरणा होती है ।
मोहनीय, आयु और वेदनीय कर्मोंके विना क्षीणकपाय और उपशान्तकपाय गुणस्थानोंमें पांच
प्रकृतिक उदीरणा होती है । ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायके
विना सयोगकेवली गुणस्थानमें दो प्रकृतिक उदीरणा होती है । इस प्रकार स्थानसमुत्कीर्तना
समाप्त हुई ।

स्वामित्व— आठ कर्मोंका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक अन्यतर प्रमत्त जीव
होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट नहीं है । सात कर्मोंका उदीरक कौन होता है ?
अन्यतर प्रमत्त जीव उनका उदीरक होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है । छहका
उदीरक कौन होता है ? अप्रमत्त सकपाय जीव उनका उदीरक होता है । पांचका उदीरक कौन
होता है ? उनका उदीरक छद्मस्थ वीतराग जीव होता है, मात्र वह क्षीणमोहके कालमें
एक आवली चरम समय शेष रहनेके पूर्व उनकी उदीरणा करता है । दोका उदीरक कौन होता
है ? उत्पन्न हुए ज्ञान व दर्शनका धारक सयोगकेवली उनका उदीरक होता है । इस प्रकार
स्वामित्व समाप्त हुआ ।

१ घाईणं छउमत्था उदीरणा रागिणो य मोहरस । तइयाउणपमत्ता जोगता उत्ति दोण्हं च ॥ क०प्र०४-४.

एगजीवेण कालो—अट्टणमुदीरओ जहणणेण एकं व दो व समए, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । सत्तणमुदीरओ [जहणणेण] एकं व दो व समए, पमत्ते उदयावलियपविट्ठआउए विदियसमए तदियसमए वा अप्पमत्तगुणं गदे वेदणीयउदीरणाए णट्ठाए एग-दोसमयसत्तउदीरणाकालुवलंभादो । उक्कस्सेण आवलिया । छणमुदीरओ जहणणेण एकं व दो व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । पंचणमुदीरओ जहणणेण एकं व दो व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । दोणमुदीरओ जहणणेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देखणा । एवं कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरं—अट्टणमुदीरणंतरं जहणणेण^१ एगावलिया, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सत्तणमुदीरणंतरं जहणणेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । छणमुदीरणंतरं जहणणेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवट्ठपोगगलपरियट्ठं । एवं पंचणमुदीरयाणं पि अंतरं वत्तव्वं । दोणमुदीरयाणं णत्थि अंतरं । कुदो ? अंतरिदे पुणो दोणमुदीरणाए पादुब्भावाभावादो^३ । एवमंतरं समत्तं ।

एक जीवकी अपेक्षा काल—आठ कर्मकी उदीरक जघन्यसे एक व दो समय तथा उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम काल तक होता है । सात कर्मकी उदीरक जघन्यसे एक व दो समय होता है, क्योंकि प्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीवके आयु कर्मके उदयावलीमें प्रविष्ट होनेपर जब वह द्वितीय समयमें अथवा तृतीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होता है तब चूंकि वेदनीयकी उदीरणा नष्ट हो जाती है, अतः उसके एक या दो समय प्रमाण सातकी उदीरणाका काल पाया जाता है । [तात्पर्य यह है कि जिस प्रमत्तसंयतके आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट हो गया उसके सात कर्मकी उदीरणा होती है । किन्तु उसके एक समय बाद या दो समय बाद अप्रमत्त संयत गुणस्थानको प्राप्त हो जानेपर प्रमत्तसंयतके सात कर्मकी उदीरणाका जघन्य काल एक या दो समय देखा जाता है ।] सातकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे आवली प्रमाण है । छहका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है । पांचका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उनकी उदीरणा करता है । दोका उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल तक उनकी उदीरणा करता है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर—आठ कर्मकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक आवली व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । सातकी उदीरणाका अन्तर जघन्यतः आवलीसे हीन क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । छहकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इसी प्रकार पांच कर्मकी उदीरकोंका भी अन्तर कहना चाहिये । दोके उदीरकोंका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, अन्तरको प्राप्त होनेपर फिर दोकी उदीरणाके प्रादुर्भावका अभाव है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

१ काप्रती 'एवं दो', ताप्रती 'एवं (गं) दो' इति पाठः । २ ताप्रती 'अट्टणमुदीरणंतरं, जहणणेण' इति पाठः । ३ काप्रती 'पादुब्भावादो' इति पाठः ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ—जे जं पयडिट्ठाणमुदीरेति तेसु पयदं । अट्टण्णं सत्तण्णं छण्णं दोण्णं ट्ठाणाणं णियमा सव्वे जीवा उदीरया । मिया एदे च पंचविहउदीरओ च, मिया एदे च पंचविहउदीरया च । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो— पंचण्णमुदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमृहुत्तं । सेसाणमुदीरयाणं सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं— पंचण्णमुदीरयाण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा । सेसाणं गत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

अप्पावहुअं— पंचण्णमुदीरया थोवा । दोण्णमुदीरया संखेज्जगुणा । छण्णमुदीरया संखेज्जगुणा । सत्तण्णमुदीरया अणंतगुणा । अट्टण्णमुदीरया संखेज्जगुणा । कुदो ? एगावलियमंचिदअट्टण्णमुदीरयाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । एवमप्पावहुअं समत्तं ।

भुजगारे अट्टपदं— जाओ एण्हि पयडीओ उदीरेदि तत्तो अणंतरओसक्काविदे समए अप्पदरियाओ उदीरेदि ति एमो भुजगारो । अणंतरविदिकंतसमए बहुदरियाओ उदीरेदि ति एसा अप्पदरउदीरणा । दोसु वि समएसु तत्तिया चैव पयडीओ उदीरेत्तस्म^१

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— जो जीव जिस प्रकृतिस्थानकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं । आठ, सात, छह और दो प्रकृतिक स्थानोंके नियमसे सब जीव उदीरक होते हैं । कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पांचका एक जीव उदीरक होता है । कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पांचके भी नाना जीव उदीरक होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— पांच कर्मोंके उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । शेष कर्मोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

अन्तर— पांच कर्मोंके उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । शेष कर्मोंके उदीरकोंका अन्तर नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

अल्पवहुत्व— पांचके उदीरक जीव स्तोक हैं । दोके उदीरक संख्यातगुणे हैं । छहके उदीरक संख्यातगुणे हैं । सातके उदीरक अनन्तगुणे हैं । आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सातके उदीरकोंसे एक आवलीमें संचित हुए आठके उदीरक संख्यातगुणे पाये जाते हैं । इस प्रकार अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

भुजाकारके विषयमें अर्थपद— इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उससे अनन्तर पिछले समयमें उनसे थोड़ी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह भुजाकार उदीरणा है । इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उनसे अनन्तर बीते हुए समयमें बहुत प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह अल्पतर उदीरणा है । दोनों ही समयोंमें उतनी मात्र प्रकृतियोंकी ही उदीरणा करनेवालेके अवस्थित उदीरणा होती है । अनुदीरणासे उदीरणा करनेवालेके

१ ताप्रता 'उदीरतम्म' इति पाठः ।

अवट्टिदउदीरणा । अणुदीरणाओ उदीरेंतस्स^१ अवत्तव्वउदीरणा^२ । एदेण अट्टुपदेण उवरिमअहियारा वत्तव्वा ।

सामित्तं— भुजगारउदीरओ, अप्पदरउदीरओ अवट्टिदउदीरओ च को होदि ? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा । अवत्तव्वउदीरया^३ णत्थि । एवं सामित्तं समत्तं^४ ।

एयजीवेण कालो—भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समयया । तं जहा—उवगंतकपाए सुहुमसांपराइए जादे छ उदीरेंतस्स एगो भुजगार-समओ । पुणो विदियसमए कालं कादूण देवेसुप्पण्णस्स पढमसमए अट्टु उदीरेंतस्स विदिओ भुजगारसमओ । एवं भुजगारस्स वे समयया । पमत्तसंजदचरिमसमए आउए उदयावलियं पविट्ठे सत्तउदीरंतस्स एगो अप्पदरसमओ । तदो विदियसमए अप्पमत्तगुणे पडिवण्णे वेदणीएण विणा छ उदीरेंतस्स विदिओ अप्पदरसमओ । एवमप्पदरउदीरणाए वि उक्कस्सेण वे चेव समयया । अवट्टिदउदीरणाए कालो^५ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयहियाए आवलियाए ऊणाणि, देवेसुप्पण्णपढमसमओ मरणावलिया च । एवं भुजगारकालो समत्तो ।

भुजगारउदीरणाए अंतरं जहण्णेण एक्को वा दो वा समयया । कुदो ? पंचविह-
अवक्तव्य उदीरणा होती है । इस अर्थपदके अनुसार आगेके अधिकारोंका कथन करना चाहिये ।

स्वामित्व—भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है ? अन्यतर मिथ्यादृष्टि अथवा सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक होता है । अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कपेसे दो समय प्रमाण है । वह इस प्रकारसं— उपशान्तकपाय जीवके सूक्ष्मसांपरायिक होकर लह प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका एक समय प्राप्त होता है । पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उक्त जीवके प्रथम समयमें आठ कर्मोंका उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका द्वितीय समय प्राप्त होता है । इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट काल दो समय है । प्रमत्तसंयत गुणस्थानके अन्तिम समयमें आयुके उदयावलीमें प्रविष्ट होनेपर सात कर्मोंकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका एक समय काल होता है । पश्चात् द्वितीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानका प्राप्त होनेपर वेदनीयके विना लहकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका द्वितीय समय पाया जाता है । इस प्रकार अल्पतर उदीरणाके भी उत्कपेसे दो ही समय हैं । अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कपेसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है । यहां एक समय और एक आवलीसे देवोंमें उत्पन्न होनेका प्रथम समय और मरणावली ली गई है । इस प्रकार भुजाकार-काल समाप्त हुआ ।

भुजाकार उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक व दो समय है, क्योंकि, पांच कर्मोंका उदीरक

१ ताप्रतौ 'उदीरंतस्स' इति पाठः । २ प्रत्येकमयोरेव 'अवत्तव्वत्तउदीरणा' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'अवट्टिद (अवत्तव्व) उदीरया' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'समत्तं' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते । ५ काप्रतौ 'काले' इति पाठः ।

उदीरओ उवसंतकसाओ हेट्टा ओदरिय सुहुमसांपराइयो होदूण छव्विहउदीरगो जादो, विदियसमए भुजगारउदीरणा अवट्टिदउदीरणाए अंतरिदा, तदियसमए कालं कादूण देवे-सुप्पज्जिय अट्ट उदीरयमाणो भुजगारं गदो, एवमेगसमयअंतरदंसणादो । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि । तं जहा— तेत्तीससागरोवमेसु उप्पणपढमसमए भुजगारं कादूण समऊणतेत्तीससागरोवमाणि अवट्टिद-अप्पदरउदीरणाए अंतरिय मणु-स्सेसु उप्पणपढमसमए कयभुजगारस्स समऊणतेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्सभुजगारंतरं होदि । एवमप्पदरउदीरणाए वि वत्तव्वं । कुदो ? आवलियकालेण देवेसुप्पज्जिहदि त्ति पुव्वं चेव अप्पदरं काऊण अंतरिय देवेसुप्पज्जिय आवालयूणतेत्तीससागरोवमाणि गमिय अप्पदरे कदे तदुवलंभादो । अधवा अप्पदरस्स उक्कस्सं अंतरं^१ तेत्तीससागरोवमाणि अंतोसुहुत्तेण सादिरेयाणि । अवट्टिदउदीरणाए जहण्णेण अंतरमेगसमओ, उक्कस्सेण वे समयया । एवं भुजगारंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि^२ भंगविचओ । वेदएसु पयदं— भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदउदीरया णियमा अत्थि, अवत्तव्वं णत्थि । एवमोघो समत्तो ।

सेसासु गदीसु जाणिदूण वत्तव्वं । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

उपशान्तकपाय जीव नीचे उतर कर सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह कर्मोका उदीरक हुआ, द्वितीय समयमें भुजाकार उदीरणा अवस्थित उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हुई, तृतीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हो आठ कर्मोकी उदीरणा करता हुआ भुजाकार उदीरणाको प्राप्त हुआ, इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका एक समय अन्तर देखा जाता है । उत्कर्षसे एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण अन्तर होता है । वह इस प्रकारसे— तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करके एक समय कम तेतीस सागरोपम तक अवस्थित या अल्पतर उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हो मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करनेपर एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर होता है । इसी प्रकार अल्पतर उदीरणाके विषयमें भी कहना चाहिये, क्योंकि, आवली प्रमाण कालके बाद देवोंमें उत्पन्न होगा, इस प्रकार पूर्वमें ही अल्पतर उदीरणा करके अन्तरको प्राप्त हो देवोंमें उत्पन्न होकर आवलीसे कम तेतीस सागरोपमोंको विताकर अल्पतर उदीरणा करनेपर उक्त अन्तर पाया जाता है । अथवा, अल्पतर उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय । वेदक प्रकृत हैं— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं, अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं । इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ ।

शेष गति आदिकोंके विषयमें जानकर कथन करना चाहिये । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

१ काप्रतौ 'अप्प० उक्क० अंतरिय', ताप्रतौ 'अप्प० उक्क० अंतरं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'णाणाजीवेण' इति पाठः ।

भागाभागो, परिमाणं, खेत्तं, पोसणं, कालो, अंतरं, भावो च जाणिदूण षेदव्वो ।
अप्पाबहुअं—भुजगारउदीरया थोवा । अप्पदरउदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो
[विसेसो] ? संखेज्जमाणुसजीवमेत्तो । अवट्ठिदउदीरया' असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
संखेज्जा समयया (?) । एवं मणुसगदीए वि अप्पाबहुअं वत्तव्वं । सेसासु गदीसु भुजगार-
अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । एवमप्पाबहुअं समत्तं ।

पदणिकखेवो— उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो पंचविहउदीरओ उवसंतकसाओ
मदो, तस्स पढमसमयदेवस्स अट्ठ उदीरयमाणस्स उक्कस्सिया वड्ढी । एदस्स चेव से
काले उक्कस्समवट्ठाणं । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो अट्ठणमुदीरगो पमत्तो अप्पमत्तो
जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी । पंचउदीरण दोसु उदोरिदासु उक्कस्सहाणी किण्ण
परुविदा ? ण, बहुपयडीहितो बहुहाणीए इहग्गहणादो । अधवा एसो वि संभवो एत्थ
संगहेयव्वो ।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । एवमोघो समत्तो ।

भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और भावको जानकर ले जाना चाहिये ।
अल्पबहुत्व— भुजाकर उदीरक स्तोक हैं । अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं ।

शंका— विशेष कितना है ?

समाधान— वह संख्यात मनुष्य जीवोंके बराबर है ।

अल्पतर उदीरकोंसे अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार
संख्यात समय है (?) । इसी प्रकार मनुष्य गतिमें भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये । शेष गतियोंमें
भुजाकर और अल्पतर उदीरक समान होकर स्तोक हैं । अर्वास्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

पदनिक्षेप— उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? पांचका उदीरक जो उपशान्तकपाय जीव
मृत्युको प्राप्त हुआ है, उसके देव होनेके प्रथम समयमें आठकी उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट वृद्धि
होती है । इसीके अनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है । उत्कृष्ट हानि किसके होती है ?
जो आठका उदीरक प्रमत्त जीव अप्रमत्त हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है ।

शंका— पांचके उदीरक जीवके द्वारा दोकी उदीरणा करनेपर उसके उत्कृष्ट हानिकी प्ररू-
पणा क्यों नहीं की गई ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, यहां बहुत प्रकृतियोंसे बहुत हानिको ग्रहण किया गया है ।
अथवा यह विकल्प भी चूँकि सम्भव है, अतः उसका भी यहां संग्रह करना चाहिये ।

हानि स्तोक है तथा वृद्धि व अवस्थान दोनों ही समान होकर उससे विशेष अधिक हैं ।
इस प्रकार ओष समाप्त हुआ ।

सेसासु गदीसु वडिठ-हाणि-अवट्टाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । एवं पदणिक्खेवो समत्तो ।

एत्तो वडिठउदीरणा— संखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागहाणी [संखेज्जगुणहाणी] अवट्टिउदीरणा चेदि एत्थ चत्तारि चैव पदाणि होंति । सेसं जाणिऊण वत्तव्वं ।

एवं मूलपयडिउदीरणा समत्ता ।

उत्तरपयडिउदीरणा दुविहा— एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्टाणउदीरणा चेदि । एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं उच्चदे— पंचणं णाणावरणीयाणं को उदीरगो ? अण्णदरो छट्ठमत्थो । आवलियचरिमसमयल्लुट्ठमत्थो णवरि अणुदीरओ । एवमुवरिमसव्वे ल्लुट्ठमत्था अणुदीरया जाव चरिमसमयल्लुट्ठमत्थो त्ति । एवं चत्तारिदंसणवरणीय-पंचंत-राइय-णिहा-पयलाणं वत्तव्वं, विसेसाभावादो' । णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं च

मनुष्यगतिके सिवा शेष गतियोंमें वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही समान हैं । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

आगे वृद्धिउदीरणाका कथन करते हैं—संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुण-हानि और अवस्थितउदीरणा, ये चार ही पद यहां होते हैं । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

विशेषार्थ— पहले पदनिक्षेपका कथन कर आये हैं । यहां उत्कृष्ट हानिका निर्देश करते समय पांचकी उदीरणा करनेवालेके दोकी उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट हानि सम्भव है, उत्कृष्ट हानिके इस विकल्पका भी निर्देश किया है । अब यदि इस विकल्पकी विवक्षा की जाती है तो संख्यातगुणहानिके साथ चार पद सम्भव हैं और यदि इसको विवक्षा नहीं की जाती है तो संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि और अवस्थित ये तीन पद ही सम्भव हैं ।

इस प्रकार मूलप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई ।

उत्तरप्रकृतिउदीरणा दो प्रकारकी है—एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा । इनमेंसे एक एकप्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं—

पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक अन्यतर छद्मस्थ होता है । विशेष इतना है कि छद्मस्थकालके अन्तमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है ऐसा छद्मस्थ जीव उनका उदीरक नहीं होता । इसी प्रकार छद्मस्थकी अन्तिम आवलीके प्रारम्भसे लेकर अन्तिम समय तकके आगेके सब छद्मस्थ जीव अनुदीरक हैं ।

इसी प्रकारस चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, निद्रा और प्रचलाके विषयमें कथन करना चाहिये, क्योंकि, उनमें इनसे कोई विशेषता नहीं है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और

१ मोत्तूण खीणरागं इंदियपज्जत्ता उदीरेति । णिहा-पयला सायासायाई जे पमत्त त्ति ॥ पं. सं. ४, १९. इह कर्मस्तवकारादयः क्षपक-क्षीणमोहयोरपि निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति, उदये च सत्यवश्यमुदीरणा । ततस्तन्मते-नोक्तं क्षीणरागमन्तावलिकामात्रकालभाविनं मुत्तवेति । ये पुनः सत्कर्मभिधग्रन्थकारादयस्ते क्षपक-खीण-मोहान् व्यतिरिच्य शेषाणामेव निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति । तथा च तद्ग्रन्थः—'णिहादुगस्स उदओ खीण-

उदीरओ को होदि ? अण्णदरो इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तो । एदमादिं कादूण एदांसि-
मुदीरणाए ताव पाओग्गो होदि जाव पमत्तसंजदो त्ति । णवरि पमत्तसंजदस्स उत्तर-
सरीरविउव्वणाभिमुहस्स चरिमावलियप्पहुडि उवरि जाव आहारसरीरमुट्टविय मूल-
सरीरं पविसदि ताव अणुदीरगो । थीणगिद्वितियस्स अप्पमत्तसंजदा च देव-णेरइया च
आहारसरीरया च उत्तरसरीरं विउव्विदतिरिक्ख-मणुस्सा च असंखेज्जवासाउआ च
अणुदीरया । सादासादाणमुदीरणाए^१ मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्ताहिमुहचरिम-
ममयपमत्तो त्ति पाओग्गो^२ ।

मिच्छत्तस्स मिच्छाइट्टी चेव उदीरगो जाव सम्मत्ताहिमुहचरिमममयमिच्छाइट्टि
त्ति । णवरि उवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणमिच्छाइट्टिस्म मिच्छत्तपढमट्टिदीए आव-
लियसेसाए णत्थि उदीरणा । सम्मामिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइट्टी जाव चरिमसमओ
त्ति ताव उदीरगो । सम्मत्तस्स असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति ताव-
उदीरया । णवरि सम्मत्तं खवेतुवसामंताणं^३ सम्मत्तट्टिदीए उदयावलियपविट्ठाए णत्थि

स्त्यानगृद्धि, इनका उदीरक कौन होता है ? इन्द्रिय पर्याप्तसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें रहने
वाला अन्यतर जीव उनका उदीरक होता है । इसको आदि लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक कोई
भी जीव इन प्रकृतियोंकी उदीरणाके योग्य होता है । विशेषता इतनी है कि उत्तर शरीरकी विक्रिया-
के अभिमुख हुए प्रमत्तसंयतकी अन्तिम आवलीसे लेकर आगे जब तक आहारकशरीर उत्थित
हो करके मूल शरीरमें प्रविष्ट नहीं होता तब तक वह इनका अनुदीरक है । अप्रमत्तसंयत, देव,
नारकी, आहारकशरीरी, उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त तिर्यञ्च व मनुष्य, तथा असंख्यातवर्पायुष्क
ये सब उक्त स्त्यानगृद्धि आदि तीन प्रकृतियोंके अनुदीरक हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्त
गुणस्थानके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयत तक साता व असाता वेदनीयकी
उदीरणाके योग्य होता है ।

सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि तक मिथ्यादृष्टि जीव ही मिथ्यात्व
प्रकृतिका उदीरक होता है । विशेष इतना है कि उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले मिथ्यादृष्टिके
मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिमें एक आवलीके शेष रहनेपर उदीरणा नहीं हाती । सम्यग्मिथ्यादृष्टि
जीव अपने अन्तिम समय तक सम्यग्मिथ्यात्वका उदीरक होता है । असंयतसम्यग्दृष्टिसे
लेकर अप्रमत्तसंयत तक सम्यक्त्व प्रकृतिके उदीरक होते हैं । विशेष इतना है कि सम्यक्त्व
प्रकृतिका क्षय अथवा उपशम करनेवाले जीवोंके सम्यक्त्वकी स्थितिके उदयावलीमें प्रविष्ट
होनेपर उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है ।

खवगे परिच्चज्ज ।^१ तन्मत्तनोदीरणापि निद्राद्विकस्य धपक-क्षीणमोहान् व्यतिरिच्य शैषाणामेव वेदितव्या । तथा
चोक्तं कर्मप्रकृतौ— इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तगाए पाउग्गा । णिहा-पयलाणं खीणराग-स्ववगे परिच्चज्ज ॥
[४-१८] (मलयगिरि टीका) ।

१ निदानिद्वाईण वि असखवासा य मणुय-तिरिया य । वेउव्वाहारतणू वज्जित्ता अप्पमत्ते य ॥ क. प्र.
४, १९. २ ताप्रतौ 'मुदीरया (णा) ए' इति पाठः । ३ वेयणियाण पमत्ता X X X ॥ क. प्र. ४, २०.
४ काप्रतौ 'खइयेतुवसामंताण' इति पाठः ।

उदीरणा^१ । अणंताणुबंधिचउकस्स मिच्छाइट्ठी सामणसम्माइट्ठी वा उदीरगो । अपञ्च-
 क्खणचउकस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठिचरिमसमओ त्ति ताव उदीरया ।
 पञ्चक्खणचउकस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स चरिमसमओ त्ति ताव
 उदीरया^२ । णवुंसयवेदस्स उदीरओ को होदि ? सच्चो णवुंसओ । णवरि खवओ
 उवसामओ वा णवुंसयवेदपढमट्ठिदीए उदयावलयमेत्तसेसाए अणुदीरगो णवुंसयवेदस्स,
 अवसेमो सच्चो णवुंसओ उदीरगो चेव । जहा णवुंसयवेदस्स तथा इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं
 पि वत्तच्चं । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अपुच्च-
 करणचरिमसमयं त्ति ताव उदीरगो । णवरि साद-हस्स-रदीणं पढमसमयदेवमादिं
 कादूण जाव अंतोमुहुत्तदेवो त्ति ताव णियमा उदीरणा, उवरि भज्जा । असाद-अरदि-
 सोगाणं पढमसमयणेरइयमादिं कादूण जाव अंतोमुहुत्तणेरइओ त्ति ताव णियमा उदी-
 रणा^३ । तिण्णं संजलणाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अणियट्ठिअद्वाए सग-सगबंध-
 ज्जवसाणाणं चरिमसमओ त्ति ताव उदीरणा । लोहसंजलणाए मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण
 जाव समयाहियावलयचरिमसमयसकमाओ त्ति ताव उदीरणा ।

णिरयाउअस्स^४ सच्चम्मिह णेरइयम्मिह उदीरणा । णवरि आवलयचरिमसमय-

अनन्तानुवन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव उदीरक होता है ।
 अप्रत्याख्यानचतुष्कके मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टिके अन्तिम समय तकके जीव उदी-
 रक होते हैं । प्रत्याख्यानचतुष्कके मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानके अन्तिम समय
 तकके जीव उदीरक होते हैं । नपुंसकवेदका उदीरक कौन होता है ? उसके उदीरक सभी नपुंसक
 जीव होते हैं । विशेष इतना है कि क्षपक और उपशामक नपुंसक जीव नपुंसकवेदकी प्रथम
 स्थितिके उदयावली मात्र शेष रहनेपर नपुंसकवेदके अनुदीरक होते हैं । शेष सब नपुंसक जीव उसके
 उदीरक ही होते हैं । जिस प्रकारसे नपुंसकवेदके उदीरकोंका कथन किया गया है उसी प्रकारसे
 स्त्री और पुरुष वेदोंके भी उदीरकोंका कथन करना चाहिये । हास्य, रति, अरति, शोक, भय व
 जुगुप्सा; इन प्रकृतियोंका उदीरक मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके अन्तिम समय तक रहने-
 वाला जीव होता है । विशेष इतना है कि देवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त
 तक सातावेदनीय, हास्य और रति इनकी उदीरणा नियमसे होती है । आगे वह भाज्य है,
 अर्थात् आगे वह होनी भी है और नहीं भी होती । तथा नारकीके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे
 लेकर अन्तर्मुहूर्त तक असाता वेदनीय, अरति और शोककी उदीरणा नियमसे होती है । तीन
 मंज्वलन कपायोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिर्वात्तकरणकालमें अपने-अपने बन्धाध्यव-
 सानोंके अन्तिम समय तक होती है । संज्वलनलोभकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अन्तिम
 समयवर्ती सकपाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहने तक होती है ।

नारकायुकी उदीरणा सब नारकियोंमें होती है । विशेष इतना है कि जिस नारक जीवके

१ क. प्र. ४, ६, २ × × × ते ते बंधतगा कसायाणं । क. प्र. ४, २०.३ हास-रई-सायाणं अंतमुहुत्तं
 तु आइमं देवा । इयरारं नेरइया उड्ढं परियत्तणविहीए ॥ पं. सं. ४, २१. ४ काप्रती 'णिरयाउआउअस्स,'
 ताप्रती 'णिरयाउ [आउ] अस्स' इति पाठः ।

तब्भवत्थणेरइयमादिं कादूण जाव चरिमसमयतब्भवत्थो त्ति ताव अणुदीरओ । जहा णिरयाउअस्स तथा सेसाउआणं पि परूवणा कायच्चा । णवरि तिरिक्ख-मणुम-देवाउ-आणं जहाकमेण तिरिक्ख-मणुस-देवा चव उदीरया । मणुसाउअस्स मिच्छाइड्डिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदस्स मरणकाले चरिमावलिंयं मोत्तण अण्णत्थ उदीरणा ।

णिरयगइणामाए सव्वो णेरइओ उदीरओ । तिरिक्खगइणामाए सव्वो तिरिक्ख-जोणिओ उदीरओ । मणुसगइणामाए अजोइं मोत्तण सेसो सव्वो मणुसो मणुसिणी वा उदीरओ । देवगदिणामाए सव्वो देवो सव्वदेवी वा उदीरया । एइंदियजादिणामाए सव्वो एइंदियो, बीइंदियजादिणामाए सव्वो बीइंदियो, तीइंदियजादिणामाए सव्वो तीइंदियो, चउरिंदियजादिणामाए सव्वो चउरिंदियो, पंचिंदियजादिणामाए सव्वो पंचिंदियो उदीरओ । णवरि पंचिंदियजादिणामाए अजोगिम्हि णत्थि उदीरणा । ओरालियसरीरणामाए उदीरगो अण्णदरो [जो] ओरालियसरीरस्स णिव्वत्तओ । वेउव्विय-सरीरणामाए उदीरओ अण्णदरो जो वेउव्वियसरीरस्स' णिव्वत्तओ । आहार-सरीरणामाए उदीरगो अण्णदरो जो आहारसरीरस्स णिव्वत्तओ । तेजा-कम्मइयसरीरण-मुदीरओ अण्णदरो जो सजोगो । जहा सरीरणं तथा तेसिमगोवंगणामाणं वत्तच्चं । एवं

अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें आवली मात्र काल शेष रहा है उससे लेकर अन्तिम समय-वर्ती तद्भवस्थ नारक तकके उसकी उदीरणा नहीं होती । जैसे नारकायुकी उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही शेष तीन आयु कर्मोंकी भी उदीरणाकी प्ररूपणा करनी चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यच, मनुष्य और देव आयुओंके उदीरक यथाक्रमसे तिर्यच, मनुष्य एवं देव ही होते हैं । मनुष्यायुकी मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक उदीरणा होती है । मात्र मरणकालमें अन्तिम आवलीको छोड़कर अन्य कालमें ही उदीरणा होती है ।

नरकगति नामकर्मके सभी नारकी उदीरक होते हैं । तिर्यचगति नामकर्मके सभी तिर्यच योनिवाले जीव उदीरक होते हैं । मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक अयोगी जिनको छोड़कर शेष सब मनुष्य और मनुष्यनियां होती हैं । देवगति नामकर्मके उदीरक सब देव और सभी देवियां हैं । एकेन्द्रियजाति नामकर्मके सब एकेन्द्रिय जीव, द्वीन्द्रियजाति नामकर्मके सब द्वीन्द्रिय जीव, त्रीन्द्रियजाति नामकर्मके सब त्रीन्द्रिय जीव, चतुरिन्द्रियजाति नामकर्मके सब चतुरिन्द्रिय जीव, तथा पंचेन्द्रियजाति नामकर्मके सब पंचेन्द्रिय जीव उदीरक होते हैं । विशेष इतना है कि पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उदीरणा आयोगी गुणस्थानमें नहीं है । औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि औदारिकशरीरका निर्वर्तक है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि वैक्रियिकशरीरका निर्वर्तक है । आहारशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि आहारशरीरका निर्वर्तक है । तैजस और कार्मण शरीरोंका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि योगसे सहित है । जैसे शरीरोंकी उदीरणाका कथन किया गया है वैसे ही उनके आंगोंपांग नामकर्मोंकी उदीरणाका भी कथन करना

१ काप्रती 'वेउव्वियसरीरणामस्स', ताप्रती 'वेउव्वियसरीरस्स णामस्स' इति पाठः ।

छसंठाण-वज्ररिसहवइरणारायणसंघडणाणं पि वत्तव्वं । सेसाणं संघडणणामाणं उदीरगो णिव्वत्तओ । तं जहा— वेउव्वियमरीरस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा । एवं तदंगोवंगस्स । आहारदुगस्स पमत्तसंजदम्मि चेव उदीरणा । वज्रणारायण-संघडण-णाराइणसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति उदीरणा । अद्वणारायणसंघडण-खीलियसंघडण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तमंजदो त्ति उदीरणा । पंचबंधण-पंचसंघादाणं पंचसरीरभंगो । वण्ण-गंध-रस-फासाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति उदीरणा ।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पढमसमयणेरइओ दुसमयणेरइओ वा मिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि वा उदीरओ । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए तिरिक्खो^१ पढम-समयतव्वभवत्थो विदियसमयतव्वभवत्थो वा सासणसम्माइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि वा, पढमसमय-दुसमय-तिसमयतव्वभवत्थमिच्छाइट्ठि वा उदीरओ । मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-णामाए पढमसमय दुसमयतव्वभवत्थो सासणसम्माइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि मिच्छाइट्ठि वा उदीरओ^२ । देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पढमसमयतव्वभवत्थो दुसमयतव्वभवत्थो

चाहिये । इसी प्रकारसे छह संस्थानों और वज्रर्पभवन्नाराचसंहनकी उदीरणाका भी कथन करना चाहिये । शेष संहनन नामकर्मका उदीरक उनका निर्वर्तक होता है । यथा—वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है । इसी प्रकार वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी भी उदीरणा जानना चाहिये । आहारद्विककी उदीरणा प्रमत्तसंयतमें ही होती है । वज्रनाराच-संहनन और नाराचसंहननकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपशान्तकपाय गुणस्थान तक होती है । अर्धनाराचसंहनन, क्रीलितसंहनन और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक होती है । पांच बन्धन और पांच संघातोंकी उदीरणाकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक होती है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती नारक अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती नारक मिथ्यादृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि होता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ तिर्यच सासादन-सम्यग्दृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि, अथवा प्रथम समय, द्वितीय समय और तृतीय समयवर्ती तद्-भवस्थ मिथ्यादृष्टि होता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समय अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होता है । देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि अथवा असंयत-

१ प्रत्योरुभयोरेव 'संघडणाणं' इति पाठः । २ काप्रतो 'तिरिक्ख' इति पाठः । ३ काप्रतो 'सासण सम्माइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि वा उदीरओ', ताप्रतो 'सासणसम्माइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि मिच्छाइट्ठि वा पढमसमयदुसमयतिसमयतव्वभवत्थमिच्छाइट्ठि वा उदीरओ' इति पाठः ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदमम्माइट्टी वा उदीरओ ।

अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिणणामाणं मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगि-केवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । उवघादणामाए मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिचरिम-समओ त्ति[उदीरणा] । णवरि आहारओ चेव उदीरेदि, णाणाहारओ । परघादणामाए मिच्छा-इट्टिप्पहुडि जाव सजोगिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । णवरि सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरेदि । 'उस्सासणामाए मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । णवरि आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ' । आदावणामाए बादर-पुढविजीवो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ । उज्जोवणामाए एइंदियो अणे-इंदियो वा बादरो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ^३ । पसत्थविहायोगदिणामाए पंचिंदियो पज्जत्तो सण्णी असण्णी वा मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरगो । एवमप्पसत्थविहायोगइणामाए वि वत्तव्वं । णवरि सरीरपज्जत्तीए पज्जत्त-यदो सव्वो तसकाइयो सजोगी उदीरेदि^४ ।

मम्यदृष्टि होता है ।

अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण, इन नामकर्मोंकी उदीरणा मिथ्या-दृष्टिसे लेकर सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समय तक होती है । उपघात नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । विशेष इतना है कि उसकी उदीरणा आहारक ही करता है, अनाहारक नहीं करता । परघात नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । विशेष इतना है कि शरीर-पर्याप्तसे पर्याप्त हुआ जीव ही उसकी उदीरणा करता है । उच्छ्र्वास नामकर्मकी उदीरणा मिथ्या-दृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । विशेष इतना है कि आनप्राण-पर्याप्तसे पर्याप्त हुआ जीव ही उसका उदीरक होता है । आतप नामकर्मका उदीरक शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त हुआ बादर पृथिवीकायिक जीव ही होता है । उद्योत नामकर्मका उदीरक शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त हुआ ही एकेन्द्रिय अथवा द्वीन्द्रिय आदि बादर जीव होता है । प्रशस्तविहायोगति नामकर्मका उदीरक पंचेन्द्रिय पर्याप्त संज्ञी और असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होता है । इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगति नामकर्मकी उदीरणाका भी कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त हुए सब त्रसकायिक सयोगकेवली तक उसकी उदीरणा करते हैं ।

१ ताप्रतावतः प्राक्—उदीरओ [आदावणामाए बादरपुढविजीवो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ] इत्येतावानयं पाठ उपलभ्यते कोष्ठकान्तर्गतः । २ उस्सासस्स सराण य पज्जत्ता आणपाण-भासासु । सव्वण्णुस्सासो भासा वि य जा न रुज्झति ॥ क. प्र. ४, १५. पं. सं. ४, १६. ३ वायरपुढवी आयावस्स य वज्जित्तु सुहुम-सुहुमतसे । उज्जोयस्स य तिरिए (ओ) उत्तरदेहो य देव-जई ॥ क. प्र. ४, १३. पज्जत्त-वायरे च्चिय आयवउदीरगो भोमो ॥ पुढवी-आउ-वणस्सइ-वायर-पज्जत्त उत्तरतणूय । विगल-पणिदियतिरिया उज्जोवुद्दीरगा भणिया ॥ पं० सं० ४, १३-१४. ४ सगला सुगति-सराणं पज्जत्तासंखवास-देवा य । इयराणं नेरइया नर-तिरि सुसरस्स विगला य ॥ प. सं. ४, १५.

तसणामाए तसकाइयमिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । वादरणामाए वादरमिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । पज्जत्तणामाए पज्जत्तमिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । पत्तेयसरीरणामाए पत्तेयसरीरमिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । णवरि आहारओ चैव उदीरओ, णाणाहारओ । थावरणामाए थावरो मिच्छाइट्टी उदीरओ । सुहुमणामाए सुहुमेइंदियो उदीरओ । अपज्जत्तणामाए अपज्जत्तो मिच्छाइट्टी उदीरओ । साहारणसरीरणामाए अण्णदरो साहारणकाइयो आहारओ चैव उदीरओ ।

जसगित्तिणामाए बीइंदियो तीइंदियो चउरिंदियो पंचिंदियो वा पज्जत्तो चैव उदीरओ, एइंदियो वि वादरो पज्जत्तो तेउकाइय-वाउकाइयवदिरित्तो उदीरेदि, संजदासंजदा संजदा^१ च णियमा जसगित्तीए उदीरया जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ त्ति^२ । जदा पग्गहेण पग्गहिदो तदा अजसगित्तिवेदगो वि जसगित्ति वेदयदि, तव्वदिरित्तो दो वि वेदयदि । पग्गहो णाम संजमो संजमासंजमो च । अजसगित्तिणामाए मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्टि त्ति उदीरणा । सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ त्ति उदीरणा । णवरि गम्भोवक्कंतियसण्णि-असण्णिणो अण्णदरा

त्रस नामकर्मकी उदीरणा त्रसकायिक मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । वादर नामकर्मकी उदीरणा वादर मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । पर्याप्त नामकर्मकी उदीरणा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे संयुक्त मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । प्रत्येकशरीर नामकर्मकी उदीरणा प्रत्येकशरीर मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । विशेष इतना है कि आहारक जीव ही उसका उदीरक होता है, अनाहारक नहीं होता । स्थावर नामकर्मका स्थावर मिथ्यादृष्टि उदीरक है । सूक्ष्म नामकर्मका सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव उदीरक है । अपर्याप्त नामकर्मका अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे संयुक्त मिथ्यादृष्टि उदीरक है । साधारणशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर साधारणकायिक आहारक जीव ही होता है ।

यशकीर्ति नामकर्मका उदीरक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक ही होता है; तेजकायिक व वायुकायिकको छोड़कर एकेन्द्रिय वादर पर्याप्त जीव भी उसकी उदीरणा करता है; तथा संयतासंयत और सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक संयत जीव भी नियमसे यशकीर्तिके उदीरक हैं । जब प्रग्रहसे प्रगृहीत अर्थात् संयमको स्वीकार करता है तब अयशकीर्तिका वेदक भी यशकीर्तिका वेदक होता है, दोष जीव दोनोंका वेदन करते हैं । प्रग्रहका अर्थ संयम और संयमासंयम है । अशयकीर्ति नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है । सुभग और आदेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है । विशेष इतना है कि अन्यतर गभोपकान्त संझी व असंझी

१ ताप्रतौ 'पज्जत्तणामाए मिच्छाइट्टिप्पहुडि' इति पाठः । २ काप्रतौ 'संजदासंजदा संजदो', ताप्रतौ 'संजदासंजदो संजदो' इति पाठः । ३ नेरइया सुहुमतमा वज्जिय सुहुमा य तह अपज्जत्ता । जगगित्तिउदीरगाइज्ज-सुभगणामाण सण्णि सुरा ॥ पं० सं० ४, १७.

णियमा देवा देवीओ संजदासंजदा^१ संजदा च उदीरेंति । दूभग-अणादेजाणं मिच्छाइड्ढि-
प्पहुडि जाव असंजदसम्माइड्ढि ति उदीरणा । सुस्सर-दुस्सराणं मिच्छाइड्ढिप्पहुडि जाव
सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ ति उदीरणा । णवरि वेइंदियो तेइंदियो चउरिंदियो
पंचिंदियो वा भासापज्जत्तीए पज्जत्तयो चैव उदीरेदि । तित्थयरणामाणे तित्थयरो उप्पण-
केवल्लणाणो सजोगी चैव उदीरगो ।

उच्चागोदस्स मिच्छाइड्ढिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमओ ति उदीरणा ।
णवरि मणुस्सो वा मणुस्सिणी वा सिया उदीरेदि, देवो देवी वा संजदो वा णियमा उदीरेंति,
संजदासंजदो सिया उदीरेदि । णीचागोदस्स मिच्छाइड्ढिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स
उदीरणा । णवरि देवेषु णत्थि उदीरणा, तिरिक्ख-णेरइएसु णियमा उदीरणा, मणुसेसु
सिया उदीरणा^२ । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उदीरओ अणादिओ अपज्ज-
वसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो । एवं सेसच्चारिणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-
तेजा-कम्मइयसरिीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिण-पंचंतराइ-
याणं दोहि भंगेहि कालपरुवणा कायव्वा । णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुदीरणाए

जीव उसकी उदीरणा करते हैं; तथा देव व देवियां, संयतासंयत एवं संयत जीव नियमसे उसकी
उदीरणा करते हैं । दुर्भग व अनादेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक
होती है । सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक
होती है । विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव भाषापर्याप्तिसे
पर्याप्त होकर ही उनकी उदीरणा करता है । तीर्थकर नामकर्मका उदीरक जिसके केवलज्ञान
उत्पन्न हो चुका है ऐसा सयोगी तीर्थकर ही होता है ।

उच्चगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है ।
विशेष इतना है कि मनुष्य और मनुष्यनी उसकी कदाचित् उदीरणा करते हैं, देव-देवी तथा
संयत जीव उसकी उदीरणा नियमसे करते हैं, तथा संयतासंयत जीव कदाचित् उदीरणा करते
हैं । नीचगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक होती है । विशेष इतना
है कि देवोंमें उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है, तीर्थचों व नारकियोंमें उसकी उदीरणा नियमसे
तथा मनुष्योंमें कदाचित् होती है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— आभिनिबोधिकज्ञानावरणीयका उदीरक अनादि-अपर्यवसित
और अनादि-सपर्यवसित जीव है । इसी प्रकारसे शेष चार ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,
तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण
और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियों (ध्रुवोदयी) के उदीरणाकालकी प्ररूपणा इन दो भंगोंसे करनी
चाहिये । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगुद्धिकी उदीरणाका काल जयन्यसे एक समय है,

१ देवो सुभगाए (इ) जाण गब्भवक्कंतिओ य... । क. प्र. ४, १६. २ उच्चं चिय जह अमरा केई
मणुया व नीयमेवणे । चउगइया दुभगाई तित्थयरो केवली तित्थं ॥ प. सं. ४, १८.

कालो जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? अद्भुवोदयादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं णिहा-
पयलाणं पि वत्तव्वं । सादस्स जहण्णएण एयसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा । असादस्स
जहण्णएण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तम्भहियाणि । कुदो ?
मत्तमपुढविपवेसादो पुव्वं पच्छा च असादस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालमुदीरणुवलंभादो ।

हस्म-रदीणं कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छमासा । अरदि-सोगाणं
जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तम्भहियाणि । मिच्छत्तस्स
तिण्णि भंगा— जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण
उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । सम्मत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण छावट्ठिमागरोवमाणि
आवलयूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं । सम्मत्त-मिच्छत्त-
सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णगो उदीरणकालो तुल्लो । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सउदीरणकालो
विसेसाहिओ । अणंताणुबंधिकोधस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण
अंतोमुहुत्तं । एवं माण-माय-लोभाणं पि वत्तव्वं । जहा अणंताणुबंधीणं तहा अपच्चक्खाण-
चउक्क-पच्चक्खाणचउक्काणं पि वत्तव्वं । कोहसंजलणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण
अंतोमुहुत्तं । एवं माण-माया-लोभसंजलणाणं वत्तव्वं । भय-दुगुंझाणं जहण्णेण एयसमओ,

क्योंकि, ये अधुवोदयी प्रकृतियां हैं । उनकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इसी
प्रकारसे निद्रा और प्रचला इन दो प्रकृतियोंके उदीरणाकाल कथन करना चाहिये । सातावेदनीयकी
उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । असातावेदनीयकी उदीरणाका
काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि,
सातवीं पृथिवीमें प्रवेश करनेसे पूर्व और पश्चान् अन्तर्मुहूर्त मात्र काल तक असातावेदनीयकी
उदीरणा पायी जाती है ।

हास्य व रतिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । अरति और
शोकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण
है । मिथ्यात्वके उदीरणाकालकी प्ररूपणामें तीन भंग हैं— उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका
काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है । सम्यक्त्व प्रकृतिका काल
जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे आवलीसे कम छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्व-
का काल जघन्यसे और उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्य-
ग्मिथ्यात्व, इन तीनों प्रकृतियोंका जघन्य उदीरणाकाल समान है । सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट उदीरणा-
काल उससे विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और
उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकारसे अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके भी उदीरणाकालका
कथन करना चाहिये । जैसे अनन्तानुबन्धी कषायोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही
अप्रत्याख्यानचतुष्क और प्रत्याख्यानचतुष्कके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये ।
संज्वलन क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इसी प्रकार
संज्वलन मान, माया और लोभके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । भय और जुगुप्साका

उकस्सेण अंतोमुहुत्तं । कथं भय-दुगुंल्लाणमुदीरणकालो एगसमओ ? अपुव्वकरणचरिम-समयम्मि पटमममयवेदगो होदूण से काले अणियट्टिगुणं गदस्स उदीरणवोच्छेददंमणादो । णवुंमयवेदस्स जहण्णेण एगममओ, उकस्सेण असंखेज्जपोग्गलपरियट्टं । इत्थिवेदस्स जहण्णेण एगममओ, उकस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उकस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

णिरयाउअस्स जहण्णेण दसवाससहस्साणि आवलियाए उणाणि, उकस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियाए उणाणि । एवं देवाउअस्स वि वत्तव्वं । मणुसाउअस्स जहण्णेण एगममओ, उकस्सेण तिण्णपलिदोवमाणि आवलियाए उणाणि । तिरिक्ख्खाउअस्स जहण्णेण खुदाभवग्गहणमावलियाए उणं, उकस्सेण तिण्ण पलिदोवमाणि आवलियाए उणाणि ।

णिरयगदिणामाए उदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण दसवाससहस्साणि, उकस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि । एवं देवगदीए वि वत्तव्वं । तिरिक्ख्खगदिणामाए मणुसगदिणामाए च जहण्णेण खुदाभवग्गहणं, उकस्सेण परिवाडीए अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं तिण्ण पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणभहियाणि । अजोगिवज्जा मणुसगदीए

उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका—भय और जुगुप्साका उदीरणाकाल एक समय कैसे है ?

समाधान—कारण कि अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उनका एक समयके लिये वेदक होकर अनन्तर समयमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानको प्राप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंकी उदीरणाकी व्युत्पत्ति देखी जाती है ।

नपुंसकवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । पुरुषवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

नारकायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक आवली कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । इसी प्रकार देवायुके उदीरणाकालका भी कथन करना चाहिये । मनुष्यायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तीन पत्योपम प्रमाण है । तिर्यच आयुका उदीरणाकाल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे आवली कम तीन पत्योपम प्रमाण है ।

नरकगति नामकर्मकी उदीरणा कितने काल होती है ? उसकी उदीरणा जघन्यसे दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है । इसी प्रकारसे देवगतिके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । तिर्यचगति नामकर्म और मनुष्यगति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल तथा पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पत्योपम प्रमाण है । अयागकेवलीको छोड़कर शेष (सब मनुष्य व मनुष्यनी) मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक हैं ।

उदीरया । एइंदियजादिणामाए जहण्णेण खुदाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्ज-पोग्गलपरियट्टं । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादीए जहण्णेण खुदाभवग्गहणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । पचिंदियजादिणामाए जहण्णेण खुदाभवग्गहणं, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं । ओरालियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विय मूलसरीरं पविसिय एगसमयमोरालियसरीरमुदीरिय विदिय-समए कालं कादूण विग्गहं गदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सेसु एगसमयमुत्तर-सरीरं विउव्विदूण विदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए^१ जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? आहारसरीर-मुट्ठावेंतस्स अपज्जत्तद्दाए मरणाभावादो । जहा तिण्णं सरीराणं तहा तेमिं अंगोवंग्गाणं पि वत्तव्वं । णवरि ओरालियसरीरंगोवंग्गणामस्स उक्कस्सेण^२ तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्व-कोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । जहा पंचण्णं सरीराणं तहा तेमिं बंधण-संघादाणं परूवणा कायव्वा ।

समचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? अणप्पिदसंठाणेण उत्तर-

एकेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक हजार सागरोपम प्रमाण है । औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर मूल शरीरमें प्रविष्ट होकर एक समय औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेके पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर जो विग्रहको प्राप्त हुआ है उसके उपर्युक्त काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, तिर्यचों या मनुष्योंमें एक समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक तेत्तीस सागरोपम प्रमाण है । आहारशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्दुहूर्त मात्र है, क्योंकि, आहारशरीरको उत्पन्न करनेवाले जीवका अपर्याप्तकालमें मरण सम्भव नहीं है । जैसे इन तीन शरीरोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके आंगोपांगोंके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि औदारिकशरीरांगोपांगका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पत्थोपम प्रमाण है । जैसे पांच शरीरोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके बन्धन और संघातोंके उदीरणाकालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि,

१ प्रत्योहमयोरेव 'णामाणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'उक्कस्स-', ताप्रतौ 'उक्कस्से०' इति पाठः ।

सरीरं विउच्चिय अप्पिदसंठाणमूलसरीरं पविट्टुविदियसमए कालं कादूण संठाणंतरं गदस्स एगसमयकालुवलंभादो । उक्कस्सेण तेवट्टि-मागरोवमसदं सादिरेयं । सेसाणं संठाणाण हुंड-संठाणवज्जाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं, पंचिदियतिरिक्ख-मणुस्से मोत्तूण अण्णत्थ सेससंठाणाणं संभवाभावादो । हुंडसंठाणाणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? विग्गहगदीए विणा हिंडमाणाएइंदिय-विग-लिंदिएसु संठाणंतराभावादो । अणंतकालो क्किण्ण परूविदो ? ण, विग्गहगदीए^१ वट्ट-माणाणं संठाणुदयाभावादो । तत्थ संठाणाभावे जीवाभावो क्किण्ण होदि ? ण, आणुपुव्वि-णिव्वत्तिदसंठाणे अवट्टियस्स जीवस्स अभावविरोहादो । वज्जरिसहवइरणारायणमरीर-संघडणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरादो मूलसरीरं गंतूण अप्पिदसंघडणेण^२ एगसमयं परिणमिय विदियसमए सुदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणव्महियाणि । सेसाणं संघडणाणं पंचण्णं पि जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ।

अविवक्षित संस्थानके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करके विवक्षित संस्थानवाले मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर संस्थानान्तरको प्राप्त हुए जीवके एक समय मात्र काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है । हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष चार संस्थानोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिप्रथक्त्व मात्र है, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यचां और मनुष्योंको छोड़कर अन्यत्र शेष संस्थानोंकी सम्भावना नहीं है । हुण्डकसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है, क्योंकि, विग्रहगतिके विना परिभ्रमण करनेवाले एकद्रियों व विकलेन्द्रियोंमें अन्य संस्थानकी सम्भावना नहीं है ।

शंका—अनन्त कालकी प्ररूपणा क्यों नहीं की ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके संस्थानका उदय सम्भव नहीं है ।

शंका—विग्रहगतिमें संस्थानके अभावमें जीवका अभाव क्यों नहीं हो जाता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहां आनुपूर्विके द्वारा रचे गये संस्थानमें अवस्थित जीवके अभावका विरोध है ।

वज्जर्पभवन्नाराचशरीरमंहनन नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरसे मूल शरीरको प्राप्त होकर विवक्षित संहननसे एक समय परिणत होकर द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है । उसका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिप्रथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । शेष पांचों ही संहननोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिप्रथक्त्व प्रमाण है ।

१. ताप्रतो 'विग्गहगदीसु' इति पाठः । २. प्रत्योरुमयोरेव 'सघादणेण' इति पाठः ।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समय। एवं मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं^१ वत्तन्वं । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णिण समय। उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । परघादणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय पज्जत्तयदविदियसमए मुदस्स एगसमओ लब्भदे । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । जहा परघादणामाए परूविदं तथा उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सरणं परूवेयव्वं ।

आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बावीसवस्ससहस्साणि देसूणाणि, सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयस्स आदावुदयाभावादो । उज्जोवणामाए^२ जहण्णेण एयसमयो, उक्कस्सेण तिण्णिण पलिदोवमाणि देसूणाणि । तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवससहस्साणि सादिरेयाणि । थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साधारणाणं जहण्णगो उदीरणकालो अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सओ थावरणामाए असंखेज्जपोग्गल-परियट्ठा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवससहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साधारणाणं

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है । इसी प्रकार मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके उदीरणकालका कथन करना चाहिये । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है । उपघात नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । परघात नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके एक समय काल पाया जाता है । उसका उदीरणकाल उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । जैसे परघात नामकर्मके उदीरणकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मके उदीरणकालकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

आतप नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष प्रमाण है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तसे अपर्याप्त जीवके आतप नामकर्मका उद्गम सम्भव नहीं है । उद्योत नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तीन पत्य प्रमाण है । त्रस नामकर्मका उदीरणकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है । स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक और साधारण नामकर्मके उदीरणकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । उत्कृष्ट उदीरणकाल स्थावर नामकर्मका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व

१ उभयोरेव प्रत्योः 'मणुसगइ-देवगइणामाणं' इति पाठः । २ उभयोरेव प्रत्योः 'उज्जोवणामाणं' इति पाठः ।

अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । जमगित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ उत्तर-
त्रिउव्वणाए कालं करंतस्स, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्ज-
णामाणं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण अजसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, दूभग-अणादेज्जाणं
असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । कधमेगसमओ ? अजसकित्तिमुदीरयमाणो संजदो जादो,
ताधे जसगित्ती उदयमागदा^१, पुणो अंतोमुहुत्तेण सासणं गदो, तत्थ अजसगित्तीए
उदीरणविदियसमए मुदो, तस्स एगसमओ लब्भइ । उत्तरत्रिउव्वणाए वि लब्भदे ।
एवं दूभग-अणादेज्जाणं पि वत्तव्वं, परियट्ठमाणउदयत्तादो ।

तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसणा । णीचागोदस्स
जहण्णेण एगसमओ, उच्चागोदादो णीचागोदं गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय विदिय-
समए उच्चागोदे उदयमागदे एगसमओ लब्भदे । उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।
उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय^३ एगसमएण मुदस्स तदुव-
लभादो । एवं णीचागोदस्स वि । उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । एवमोघाणुगमो

साधारण नामकर्मोका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यशकीर्ति, सुभग और आदेय नाम-
कर्मोका उदीरणाकाल उत्तर विक्रियासे मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवके जघन्यसे एक समय मात्र
है, उत्कर्षसे वह सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नाम-
कर्मोका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है । उत्कर्षसे वह अयशकीर्तिका असंख्यात
लोक तथा दुर्भग व अनादेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

शंका— इनका जघन्य उदीरणाकाल एक समय मात्र कैसे है ।

समाधान—अयशकीर्तिकी उदीरणा करनेवाला जीव संयत हो गया, उस समय उसके
यशकीर्तिका उदय हुआ, फिर वह अन्तमुहूर्तमें सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुआ, वहां अयश-
कीर्तिकी उदीरणाके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुआ, उसके अयशकीर्तिका उदीरणाकाल एक
समय पाया जाता है । यह काल उत्तर विक्रियासे भी पाया जाता है । इसी प्रकार दुर्भग व अना-
देय नामकर्मोके भी एक समयरूप उदीरणाकालका कथन करना चाहिये, क्योंकि, ये परिवर्तमान
उदयवाली प्रकृतियां हैं ।

तीर्थंकर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे वपपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि
प्रमाण है । नीचगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उच्चगोत्रसे नीचगोत्रको
प्राप्त होकर और वहां एक समय रहकर द्वितीय समयमें उच्चगोत्रका उदय हानपर एक समय
उदीरणाकाल पाया जाता है । उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । उच्चगोत्रका
उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया करके एक समयमें
मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है । नीचगोत्रका भी जघन्य काल एक समय मात्र
इसा प्रकारसे घटित किया जा सकता है । उच्चगोत्रका उत्कृष्ट काल सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण

१ मप्रतिपाटोऽयम्, का-ताप्रत्योः 'एगसमओ उक्क० उत्तरविउव्वणाए कालं करंतस्स सागरोवम-' इति
पाठः । २ प्रत्योरुभयोरैव 'उदयमागदो' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'विउव्विय' इति पाठः ।

समत्तो । आदेशो जाणियूण वत्तव्वो । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं— पंचणाणावरणीय-चदुदं सणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणसुदीरणाए अंतरं णत्थि, ध्रुवोदयत्तादो । णिदा-पयलाणमंतरं जहण्णमुक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं । णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि साहियाणि अंतोमुहुत्तेण । सादस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरो-वमाणि सादिरेयाणि । सादस्स गदियाणुवादेण जहण्णमंतरमंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं चैव । असादस्स जहण्णमंतरमेगसमओ, उक्कस्सं छम्मासा । मणुसगदीए असादस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । मिच्छत्तस्स जहण्ण-मंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेछावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । सम्मत्त-सम्मामिच्छ-त्ताणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं देख्खणं । अणंताणुबंधीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेछावट्टिमागरोवमाणि सादिरेयाणि । अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पुच्चकोडी देख्खणा । एवं चैव पच्चक्खाणावरणीयचदु-क्कस्स वत्तव्वं । कीह-माण-मायामंजलणाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतो-

है । इस प्रकार ओघानुगम समाप्त हुआ । आदेशका कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तेजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इनकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा और प्रचलाकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निद्रानिद्रा, प्रचला-प्रचला और स्थानगृद्धिका वह अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । गतिके अनुवादसे सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त ही है । असातावेदनीयका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट छह मास प्रमाण है । मनुष्यगतिके असाताका उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणा-अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्याग्मिथ्यात्वका वह अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम काल प्रमाण है । अप्रत्याख्यान कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है । इसी प्रकार ही प्रत्याख्याना-वरणीयचतुष्कके अन्तरका कथन करना चाहिये । संज्वलन क्रोध, मान और मायाका जघन्य

मुहुत्तं । लोहसंजलणाए^१ जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं अंतोमुहुत्तं । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं वत्तव्वं । भय-दुगुंछाण-मंतरं जहण्णं एगसमओ, उक्कस्सं अंतोमुहुत्तं । कधं एगसमओ ? चरिमसमयणियट्ठि-भयवेदगो^२ से काले अणियट्ठिगुणं पविट्ठो अवेदगो जादो, तदो से काले मदो देवो जादो भयं चैव वेदेदि, एवं भयवेदगस्स एगसमयमंतरं । एवं दुगुंछाए । पुरिसवेदस्स^३ उदीर-णंतरं जहण्णं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सं णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, इत्थिवेदस्स असं-खेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

देव-णिरयाउआणमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गल-परियट्ठा । तिरिकखाउअस्स जहण्णेण अन्तरमावलिया, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । एवं मणुस्साउअस्स वि । णवरि उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । संज्वलन लोभका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । जिस प्रकार साता वेदनीयके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे हास्य व रतिके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिये । जिस प्रकार असाता-वेदनीयके अन्तरका कथन किया है उसी प्रकारसे अरति और शोकके अन्तरका कथन करना चाहिये । भय और जुगुप्साका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका— उनकी उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय कैसे है ?

समाधान— भयका वेदक अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण अनन्तर समयमें अनिवृत्ति-करण गुणस्थानमें प्रविष्ट होकर उसका अवेदक हुआ । पश्चात् अनन्तर समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ । वह उस समय भयका ही वेदन करता है । इस प्रकारसे भयका वेदन करनेवाले उक्त जीवके एक समय अन्तर पाया जाता है । इसी प्रकार जुगुप्साके भी उपयुक्त एक समय मात्र अन्तरका कथन करना चाहिये ।

पुरुषवेदकी उदीरणाका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्री और नपुंसक वेदोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । उत्कृष्ट अन्तर नपुंसक-वेदका सागरोपमशतप्रथक्त्व और स्त्रीवेदका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

देव व नारक आयुओंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है । तिर्यंच आयुका अन्तर जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे सागरोपमशत-प्रथक्त्व प्रमाण है । इसी प्रकारसे मनुष्यायुके भी अन्तरका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

१ प्रत्योरुभयोरेव 'लोहसंजलणाणं' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'अणियट्ठिभयवेदगो' इति पाठः । ३ काप्रती 'पुरिसवेदस्स' इति पाठः ।

चदुष्णं पि गदीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण तिरिक्खगइणामाए सागरोवमसदपुधत्तं, सेसाणं गईणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । ओरालिय-वेउच्चियसरीराण-मुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण ओरालियसरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तंभहियाणि, वेउच्चियसरीरस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अहारसरीरस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । अण्णदरस्स संठाणस्स जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । णवरि हुंडसंठाणस्स तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेंयं । एइंदियजादीए जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वक्कोडिपुधत्तेणभहियाणि । सेसाणं जादीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । तिण्णमंगोवंग्गाणं सग-सगसरीराणं व जहण्णुकस्संतरं वत्तव्वं । णवरि ओरालियअंगोवंगस्स वेउच्चियभंगो । पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो । छण्णं संघडणाणं जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुच्चिणामाणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि साहियाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिममऊणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । मणुमगइपाओग्गाणुपुच्चिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं दुममऊणं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

चारों गतियोंका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है । उत्कर्षसे वह तिर्यचगतिका सागरोपमशतपृथक्त्व और शेष गतियोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । औदारिक और वैक्रियिक शरीरोंका उद्दीरण-अन्तर जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह औदारिकशरीरका अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तृतीस सागरोपम और वैक्रियिकशरीरका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । आहारकशरीरका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट उपाध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । अन्यतर संस्थानका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उत्कृष्ट अन्तर साधिक एक सौ तिरैसठ सागरोपम प्रमाण है । एकेन्द्रिय जातिका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकाटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है । शेष जातियोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । तीन अंगोपांग नामकर्मोंके जघन्य व उत्कृष्ट अन्तरका कथन अपने अपने शरीरोंके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि औदारिक अंगोपांगके अन्तरकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है । पांच शरीरबन्धनों और पांच संघातोंके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है । छह संहननोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

देवगति और नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवै भाग प्रमाण है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

उवघादणामाए उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्ण समया । परघाद-
उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणमुदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं, केवलि-
समुग्घादं पडुच्च पंचसमया । उक्कस्सेण परघादुस्सासाणमंतोमुहुत्तं, पसत्थापसत्थविहाय-
गइ-सुस्सर-दुस्सराणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । आदावुज्जोवाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,
उक्कस्सेण अणंतकालं^१ । तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गल-
परियट्टा । थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणं उदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ।
उक्कस्सेण थावरणामाए तसट्टिदी^२, सुहुमणामाए अंगुलस असंखेज्जदिभागो, बादरणामाए
असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, अपज्जत्तणामाए तसपज्जत्तट्टिदी । पत्तेय-
साहारणाणं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण पत्तेयसरीरणामाए णिगोदट्टिदी, साहारण-
सरीरणामाए असंखेज्जा लोगा । जसगित्ति-अजसगित्ति-सुभग-दुभग-आदेज्ज-अणादेज्जाण-
मंतरं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण जसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, सुभग-आदेज्जाणं
असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्जाणं सागरोवमसदपुघत्तं । तित्थ-
यरणामाए णत्थि अतरं । उच्चाणीचागोदाणं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण णीचा-

असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । उपघात नामकर्मकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय
और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है । परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर
और दुस्वर नामकर्मकी उदीरणाका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त मात्र है, केवलिसमुद्घातकी अपेक्षा
वह पांच समय प्रमाण है । उत्कर्षसे वह परघात व उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रशस्त व
अप्रशस्त विहायोगतियों, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मकी असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।
आतप व उद्योतका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । त्रस नाम-
कर्मका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्थावर, बादर,
मूक्ष्म, पर्याप्त और पर्याप्त नामकर्मकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उत्कर्षसे
वह स्थावर नामकर्मका त्रसस्थिति (साधिक दो हजार सागरोपम), मूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके
असंख्यातवं भाग, बादर नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा
अपर्याप्त नामकर्मका त्रस पर्याप्तकी स्थिति प्रमाण है । प्रत्येक और साधारणका अन्तर जघन्यसे
एक समय है । उत्कर्षसे वह प्रत्येकशरीर नामकर्मका निगोदस्थिति प्रमाण तथा साधारणशरीर
नामकर्मका असंख्यात लोक प्रमाण है । यश्कीर्ति, अयश्कीर्ति, सुभग, दुभग, आदेय और
अनादेयका अन्तर जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह यश्कीर्तिका असंख्यात लोक, सुभग
व आदेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; तथा अयश्कीर्ति, दुभग और अनादेयका सागरोपम-
शतपृथक्त्व प्रमाण है । तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है । ऊंच व नीच
गोत्रोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे नीच गोत्रकी उदीरणाका वह अन्तर सागरोपम-

१ प्रत्योरुभयोरेव 'अणता लोगा' इति पाठः । २ काप्रतिपाटोऽयम् । ता-मप्रत्योः 'तस्स ट्टिदी'
इति पाठः ।

गोदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, उच्चागोदस्स उदीरणंतरमुक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे । तत्थ अट्ठपदं— जेसिं कम्ममत्थि तेसु पयदं, अकम्महेहि^१ अव्वहारो । एदेण अट्ठपदेण पंचणं णाणावरणीयाणं सिया सव्वे जीवा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरयो च, सिया उदीरया च अणुदीरया च । एवं तिण्णि भंगा । चट्ठदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसररी-वण्ण-गंध-रस-फास-अगगुरुअलहुअ-थिरा-थिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो । णिद्दादीणं पंचणं पि उदीरया च अणुदीरया च णियमा अत्थि । णिरयगइ-देवगईसु णिद्दा-पयलाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च । सव्वे जीवा सादस्स असादस्स च णियमा उदीरया च अणुदीरया च । णेरइएसु सादस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया^२ च उदीरगो च, अणुदीरया च उदीरया च । णेरइयवज्जा जे पमत्ता^३ तसा ते सादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरगो च, उदीरया च अणुदीरया च । णेरइया असादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरओ च, उदीरया च अणुदीरया च । णेरइयवज्जा सेसा जे पमत्ता^३ तसा ते शतपृथक्त्व तथा ऊंच गोत्रकी उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं । उसमें अर्थपद—जिन जीवोंके कर्मका अस्तित्व है वे प्रकृत हैं, कर्मरहित जीवोंसे व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदसे पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके कदाचित् सब जीव उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी, इस प्रकारसे तीन भंग हैं । चार दर्शनावरणीय, तैजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इन कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । निद्रा आदि पांचोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक हैं । नरकगति और देवगतिमें निद्रा और प्रचलाके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं । साता व असाता वेदनीयके नियमसे सब जीव उदीरक और अनुदीरक हैं । नारक जीवोंमें सातावेदनीयके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, [कदाचित्] अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा [कदाचित्] अनुदीरक बहुत और उदीरक भी बहुत होते हैं । नारकियोंको छोड़कर जो प्रमत्त (प्रमाद युक्त) त्रस जीव हैं वे सातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं । नारकी जीव असातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं । नारकियोंको छोड़कर शेष जो प्रमत्त (प्रमाद

१ काप्रती 'अकम्महेहि' इति पाठः । २ काप्रती 'अणुदीरया च अणुदीरया' इति पाठः । ३ ताप्रती 'पम- (ज) ता' इति पाठः ।

असादस्स सिया अणुदीरया, अणुदीरया^१ च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया^२ च ।

सम्मामिच्छत्तस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च । एवमेत्थ तिण्णि भंगा वत्तव्वा । सेससत्तावीसमोहपयडीणं गियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि । एवं सव्वेत्तिमाउआणं । णवरि देव-णिरयाउ-आणं^३ अणुदीरया भयणिज्जा । णामस्म परियत्तमाणपयडीणमाहारसरीर-आणुपुव्वितिय-वज्जाणं सव्वजीवा गियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि । आहार-आणुपुव्वितियाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च । एवं तिण्णि भंगा । उच्चा-णीचागोदाणं गियमा उदीरया च अणुदीरया च । एवं णाणा-जीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो वुच्चदे— आहारसरीर-आणुपुव्वितिय-सम्मामिच्छत्तं मोत्तूण सेममव्वकम्माणं उदीरया सव्वद्धं । आहारसरीरस्स उदीरआ^४ जहण्णुक्सेण अंतो-मुहुत्तं । आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयममओ, उक्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । मम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्सेण पलिदोवमस्स अमंखेज्जदिभागो ।

सहित) त्रस जीव हैं वे असातावेदनीयके कदाचित् बहुत अनुदीरक, बहुत उदीरक व एक उदीरक, तथा बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यात्वके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं । इस प्रकारसे यहां तीन भंगोंको कहना चाहिये । शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी हैं । इसी प्रकार सब आयुआके विषयमें कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि देवायु और नारकायुके अनुदीरक भजनीय हैं । आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंको छोड़कर नामकर्मकी शेष परिचयमान प्रकृतियोंके सब जीव नियमसे उदीरक और अनुदीरक भी हैं । आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं । इस प्रकारसे तीन भंग हैं । उंच व नीच गोत्रोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग-विचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— आहारकशरीर, तीन आनुपूर्वी और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर शेष सब कर्मोंके उदीरक सब काल रहते हैं । आहारकशरीरके उदीरक जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल रहते हैं । तीन आनुपूर्वियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहते हैं । सम्मग्मिथ्यात्वके उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्लोपमके असंख्यातवें भाग तक रहते हैं । नाना जीवोंकी

१ काप्रती 'अणुदीरया' इति पाठः । २ काप्रती 'उदीरिया' इति पाठः । ३ काप्रती 'देवणिरयाउआ' इति पाठः । ४ काप्रती 'उदीरअ', ताप्रती 'उदीरओ' इति पाठः ।

णाणाजीवेहि सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णओ उदीरणकालो थोवो, तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं, तस्सेव उक्कस्मओ उदीरणकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छत्तस्स उदीरणए णाणाजीवेहि उक्कस्सओ विरहकालो असंखेज्जगुणो । एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि अंतरं वुच्चदे— सम्मामिच्छत्तस्स अंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण परिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि । आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण चउवीममुहुत्ता । सेमाणं कम्माणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

सण्णियासो दुविहो— सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि । सत्थाणसण्णियासे पयदं— मदिणाणावरणमुदीरेंतो सेसणाणावरणीयाणि णियमा उदीरेदि । एवं पुध पुध सेसपयडीणं वत्तव्वं । चक्खुदंसणावरणीयमुदीरेंतो अचक्खुओहि-केवलदंसणावरणीयाणं^१ णियमा उदीरओ । सेसपंचणं पयडीणं सिया उदीरओ । एवमचक्खुदंसणावरणीयओहिदंसणावरणीयकेवलदंसणावरणीयाणं वत्तव्वं । णिद्दमुदीरेंतो हेट्ठिमाणं चदुणं पयडीणं णियमा उदीरओ, सेसाणमुवरिमाणं णियमा अणुदीरओ । एवं पयलाए णिद्दाणिद्दापयलापयलाथीणगिद्धीणं पुध पुध वत्तव्वं ।

अपेक्षा सम्यग्मिध्यात्वका जघन्य उदीरणाकाल स्तोक है । उसीका द्रव्य असंख्यातगुणा है । उसीका उत्कृष्ट उदीरणाकाल असंख्यातगुणा है । नाना जीवोंकी अपेक्षा सम्यग्मिध्यात्वकी उदीरणाका उत्कृष्ट विरहकाल असंख्यातगुणा है । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरका कथन किया जाता है— सम्यग्मिध्यात्वकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । आहारकशरीरकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है । तीन आनुपूर्वियोंकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चौबीस मुहूर्त प्रमाण है । शेष कर्मकी उदीरणाका अन्तरकाल सम्भव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

संनिकर्ष दो प्रकार है— स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष । यहाँ स्वस्थान संनिकर्ष प्रकृत है— मतिज्ञानावरणीयकी उदीरणा करनेवाला शेष ज्ञानावरणीयोंकी नियमसे उदीरणा करता है । इसी प्रकार पृथक् पृथक् शेष चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके आश्रयसे संनिकर्षका कथन करना चाहिये । चक्षुदर्शनावरणीयकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणका नियमसे उदीरक होता है । शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकारसे अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके आश्रयसे संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । निद्राकी उदीरणा करनेवाला पिछली चार प्रकृतियोंका नियमसे उदीरक और शेष आगेकी प्रकृतियोंका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और म्यानगृह्ण प्रकृतियोंका आश्रय करके अलग अलग संनिकर्षका कथन करना चाहिये ।

१ प्रत्योसुभयोरेव 'दंसणावरणीयं' इति पाठः ।

सादमुदीरेंतो असादस्स अणुदीरओ, असादमुदीरेंतो सादस्स अणुदीरओ । मिच्छत्त उदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ, अणंताणुबंधिस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, संजोजिदअणंताणुबंधीणमावलियामेत्तकालमुदीरणाभावादो । जदि उदीरओ कोह-माण-माया-लोहाणं सिया उदीरगो । अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकसायाणं णियमा उदीरओ । एदेसिं बारसण्हं कसायाणं एकेकं पडुच्च सिया उदीरगो । तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेकदरस्स वेदस्स हस्स-रदि-अरदि-सोगजुगलेसु एकदरस्स जुगलस्स णियमा उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ ।

सम्मत्तमुदीरेंतो मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अणंताणुबंधीणं च णियमा अणुदीरगो, अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ अट्टुण्णं कसायाणं सिया उदीरओ । संजलणस्स णियमा उदीरओ, तस्सेव चट्टुण्णं कसायाणं सिया उदीरगो । तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेकदरस्स णियमा उदीरओ । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणमेकदरस्स णियमा उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ ।

सम्मामिच्छत्तमुदीरेंतो सम्मत्त-मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरगो ।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असाताका अनुदीरक और असाताकी उदीरणा करनेवाला साताका अनुदीरक होता है । मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक तथा अनन्तानुबन्धीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, अनन्तानुबन्धी कषायोंका संयोग हो जानेपर संयोगके समयसे लेकर आवली मात्र काल तक उदीरणा सम्भव नहीं है । यदि उनका उदीरक होता है तो क्रोध, मान, माया और लोभका कदाचित् उदीरक होता है । अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान व संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है । फिर भी इन बारह कषायोंमें एक एककी अपेक्षा कर कदाचित् उदीरक होता है । तीन वेद, हास्य, रति, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक होता है । परन्तु तीन वेदोंमेंसे किसी एक वेदका एवं हास्य-रति, और अरति-शोक इन युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है । वह भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है ।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व व अनन्तानुबन्धियोंका नियमसे अनुदीरक होता है । परन्तु अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यान कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है । यदि वह उनका उदीरक है तो आठ कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है । संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है । किन्तु वह उसीकी (संज्वलन) चार कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, किन्तु इन्हीं तीनों वेदोंमेंसे किसी एक वेदका नियमसे उदीरक होता है । हास्य, रति, अरति और शोकका वह कदाचित् उदीरक होता है; किन्तु इन दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है । भय व जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है ।

सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषायोंका

अपञ्चक्खाण-पञ्चक्खाण-संजलणकमायाणं गियमा उदीरओ, तेसिं वारमणं पयडीणं सिया उदीरओ । तिण्ण वेदाणं [मिया] उदीरओ, तिण्णं वेदाणं एकदरस्स गियमा उदीरगो । हस्म-रदि-अरदि-मोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ ।

अणंताणुबंधिकोधमुदीरंतो सम्मत्त-सम्माभिच्छत्ताणमणुदीरओ । मिच्छत्तस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, उदयावलयं पविट्टमिच्छत्तपढमट्टिदिमिच्छाइट्टिस्स सासणस्स च उदयाभावादो । अपञ्चक्खाण-पञ्चक्खाण-संजलणाणं तिण्णं कोहाणं गियमा उदीरओ, सेसाणं वारमणं कमायाणं गियमा अणुदीरओ । तिण्णं वेदाणं सिया उदीरगो, तिण्णं वेदाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । हस्म-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ । दोण्णं जुगलाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवमणताणुबंधिमाण-माया लोहाणं वत्तव्वं । पव्वणि माणे उदीरिञ्ज-माणे चदुण्णं माणाणं, मायाए उदीरिञ्जमाणे चदुण्णं मायाणं, लोभे उदीरिञ्ज-माणे चदुण्णं लोभाणं गियमा उदीरणा होदि त्ति वत्तव्वं ।

अपञ्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरंतो तिविहं दंमणमोहणीयं सिया उदीरेदि ।

नियमसे अनुदीरक होता है । अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन कपायोंका नियमसे उदीरक होता है । किन्तु इनकी वारह प्रकृतियोंका वह कदाचित् उदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य, रति, अरति व शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है । भय व जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है ।

अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक होता है । वह मिथ्यात्वका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, उदयावलीमें प्रविष्ट हुए मिथ्यात्वकी प्रथम स्थिति युक्त मिथ्यादृष्टिके और सासादनसम्यग्दृष्टिके उसका उदय सम्भव नहीं है । वह अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन इन तीन क्रोध कपायोंका नियमसे उदीरक होता है । शेष वारह कपायोंका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके आश्रयसे कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि मानकी उदीरणाके समय चार मान कपायोंकी, मायाकी उदीरणाके समय चार माया कपायोंकी, और लोभकी उदीरणाके समय चार लोभ कपायोंकी नियमसे उदीरणा होती है; ऐसा कहना चाहिये ।

अप्रत्याख्यान कपायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित्

अणंताणुबंधिकोधस्स सिया उदीरओ, अणंताणुबंधिसेसकसायाणं गियमा अणुदीरगो । पच्चक्खाणकोधस्स संजलणकोधस्स गियमा उदीरओ । सेसाणं णवण्णं कसायाणं गियमा अणुदीरओ । तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवं सेसतिण्णं कसायाणं ।

पच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणंताणु-बंधिं पि सिया उदीरेदि, जदि उदीरेदि तो कोधं गियमा उदीरेदि, सेसतिविहअणंताणु-बंधीणं गियमा अणुदीरओ । अपच्चक्खाणकसायस्स सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो गियमा कोधमुदीरेदि, तस्सेव सेसकसायाणमणुदीरओ । पच्चक्खाणस्स सेसतिण्णं कसायाणं गियमा अणुदीरओ । कोधस्संजलणस्स गियमा उदीरओ, सेससंजलणाणमणु-दीरगो^१ । तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेकदरस्स गियमा उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवं सेसपच्चक्खाणकसायाणं वत्तच्चं ।

उदीरणा करता है । अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक होता है, शेष अनन्तानुबन्धी मान आदि कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है । प्रत्याख्यान क्रोध और संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होता है । अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन मान, माया एवं लोभ इन शेष नौ कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकारसे अप्रत्याख्यान मान आदि शेष तीन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये ।

प्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित् उदीरणा करता है । अनन्तानुबन्धीकी भी कदाचित् उदीरणा करता है । यदि उसकी उदीरणा करता है तो क्रोधकी नियमसे उदीरणा करता है । शेष तीन प्रकार अनन्तानुबन्धी कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है । वह अप्रत्याख्यान कषायका कदाचित् उदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो नियमसे क्रोधकी उदीरणा करता है, उसीका शेष कषायोंका वह अनुदीरक होता है । प्रत्याख्यानकी शेष तीन कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है । संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होकर वह शेष संज्वलन कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकारसे मान आदि शेष प्रत्याख्यान कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ उभयोरेव प्रत्योः 'अणंताणुबंधिविसेस-' इति पाठः । २ उभयोरेव प्रत्योः 'सेससजलणाणमुदीरगो' इति पाठः ।

क्रोधसंजलणमुदीरंतो तिविहदंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणंताणुबंधि-अपच्च-
क्खाण-पच्चक्खाणाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो एदेसिं क्रोधाण णियमा उदीरओ,
सेमवारसणं कसायाणं णियमा अणुदीरओ । तिण्णं वेदाणं मिया उदीरओ, तिण्णं
वेदाणमेकदरस्स वि सिया उदीरगो । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरगो, दोण्णं
जुगलाणमेकदरस्स [वि] सिया उदीरओ^१, भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवं सेसतिण्णं
कसायाणं संजलणाणं वत्तव्वं ।

पुरिसवेदमुदीरंतो दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणताणुबंधि-अपच्चक्खाण-
पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ । संजलणाए णियमा उदीरओ । उदीरंतो वि सोल-
सण्हं कसायाणं पि सिया उदीरओ । इत्थि-णवुंसयवेदाणं णियमा अणुदीरओ । हस्स-
रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणं पि सिया उदीरओ । भय-दुगुंछाणं
सिया उदीरओ । एवमित्थि-णवुंसयवेदाणं पि वत्तव्वं ।

हस्समुदीरंतो र्दोए णियमा उदीरओ । अरदि-सोगाणं णियमा अणुदीरओ ।
दंसणतिय-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । रदिमुदीरंतो हस्सस्मं^२
णियमा उदीरओ । सेसं हस्सभंगो । अरदिमुदीरंतो सोगस्स णियमा उदीरओ । हस्स-

संज्वलन क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता
है । अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान कपायोंका वह कदाचित् उदीरक होता है ।
यदि उदीरक होता है तो इनके क्रोधोंका नियमसे उदीरक होता हुआ शेष बारह कपायोंका
नियमसे अनुदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उन तीनोंमेंसे किसी एक वेदका
भी कदाचित् उदीरक होता है । हास्य-रति व अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलों-
मेंसे किसी एकका भी कदाचित् उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता
है । इसी प्रकार मान आदि शेष तीन संज्वलन कपायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये ।

पुरुषवेदकी उदीरणा करनेवाला तीन दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है ।
अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कपायोंका कदाचित् उदीरक होता है ।
संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है । उदीरणा करता हुआ भी वह सोलह कपायोंका भी
कदाचित् उदीरक होता है । स्त्री और नपुंसक वेदोंका वह नियमसे अनुदीरक है । हास्य-रति और
अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होता हुआ दोनों युगलोंका भी कदाचित् उदीरक होता है ।
भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार स्त्री और नपुंसक वेदोंके
आश्रयसे भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

हास्यकी उदीरणा करनेवाला रतिकी नियमसे उदीरक होता है । अरति और शोकका नियमसे
अनुदीरक होता है । तीन दर्शनमोहनीय, सोलह कपाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित्
उदीरक होता है । रतिकी उदीरणा करनेवाला हास्यका नियमसे उदीरक होता है । शेष कथन
हास्यके समान है । अरतिकी उदीरणा करनेवाला शोकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य व

१ प्रत्योहभयोरेव 'णियमा उदीरओ' इति पाठः । २ काप्रतौ 'हस्स', ताप्रतौ 'हस्सं' इति पाठः ।

रदीणमणुदीरओ । सेसं रदिभंगो । सोगमुदीरेंतो अरदीए णियमा उदीरओ । सेसम-
रदिभंगो । भयमुदीरेंतो सेससत्तावीसमोहणीययड्डीणं मिया उदीरओ । एवं दुगुंछाए ।

णिरयाउअमुदीरेंतो सेसआउआणं णियमा अणुदीरओ । एवं सेसआउआणं वत्तव्वं ।

णिरयगइमुदीरेंतो णियमा सेसगईणमणुदीरओ । एवं सेसतिण्णं गईणं वत्तव्वं ।
एइंदियजादिमुदीरेंतो सेमजादीणं णियमा अणुदीरओ । एवं चटुण्णं जादीणं वत्तव्वं ।
ओरालियसरीरमुदीरेंतो वेउव्वियसरीर-आहारसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइय-
सरीराणं णियमा उदीरओ । वेउव्वियसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-आहारसरीराणं णियमा
अणुदीरओ, तेजा कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ । आहारसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-
वेउव्वियसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ ।

अण्णदरसंठाणमुदीरेंतो सेससंठाणाणं णियमा अणुदीरओ । एवं छण्णं संघडणाणं
वत्तव्वं । एवं चेवाणुपुव्वी-तम-थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पसत्थापसत्थविहायगइ-
सुभग दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्तीण वत्तव्वं । तिण्णमंगो-
वंग्माणं तिसरीरभंगो । वण्ण-गंध-रस-फासाणं सगभेदेसु अण्णदरमुदीरेंतो सेसाणं मिया

रतिका अनुदीरक होता है । शेष कथन रतिके समान है । शोककी उदीरणा करनेवाला अरतिका
नियमसे उदीरक होता है । शेष कथन अरतिके समान है । भयकी उदीरणा करनेवाला शेष
सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार जुगुप्साके आश्रयसे
प्ररूपणा करना चाहिये ।

नारक आयुकी उदीरणा करनेवाला शेष आयु कर्मका नियमसे अनुदीरक होता है ।
इसी प्रकार शेष आयु कर्मका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

नरकगतिकी उदीरणा करनेवाला नियमसे शेष गतियोंका अनुदीरक होता है । इसी प्रकार
शेष तीन गतियोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये । एकेन्द्रिय जातिकी उदीरणा करनेवाला
शेष जातियोंका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार शेष चार जातियोंका आश्रय करके
प्ररूपणा करना चाहिये । औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला वैक्रियिकशरीर और आहारक
शरीरका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस और कर्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है ।
वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और आहारक शरीरोंका नियमसे अनुदीरक
तथा तैजस व कर्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है । आहारकशरीरकी उदीरणा करनेवाला
औदारिक और वैक्रिय शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कर्मण शरीरोंका नियमसे
उदीरक होता है ।

अन्यतर संस्थानकी उदीरणा करनेवाला शेष संस्थानोंका नियमसे अनुदीरक होता है ।
इसी प्रकार छह संहननोंके आश्रयसे कथन करना चाहिये । इसी प्रकारसे ही आनुपूर्वी, त्रस,
स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुभग, दुर्भग, सुस्वर,
दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये । तीन
अंगोपांगोंकी प्ररूपणा तीन शरीरोंके समान है । वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्शके अपने भेदोंमेंसे

उदीरओ, विरोहाभावादो । आदावमुदीरंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ, उज्जोवमुदीरंतो आदावस्स णियमा अणुदीरओ । णिरयगइ-मणुमगईओ वेदंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ । देवगइ वेदंतो मूलमरीरेण उज्जोवस्स अणुदीरओ । आदावस्स पुढविजीवो चैव उदीरगो, ण अण्णो ।

उच्चागोदमुदीरंतो णीचागोदस्स णियमा अणुदीरगो । एवं णीचागोदस्स । सेसं जाणियूण वत्तव्वं । एवं सत्थाणमणियासो समत्तो । परत्थाणमणियासो जाणियूण वत्तव्वो । एवं सणियासो समत्तो ।

अप्पाबहुअं दुविहं— सत्थाणप्पाबहुअं परत्थाणप्पाबहुअं चेदि । सत्थाणे पयदं— पंचविहस्स णाणावरणस्स तुल्ला उदीरया । थीणगिद्धीए उदीरया' थोवा । णिहाणिहाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलापयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, णिहाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, सेसच्चदुण्णं दंमणावरणीयाणमुदीरया तुल्ला संखेज्जगुणा ।

सादस्स उदीरया थोवा, अमादस्स उदीरया संखेज्जगुणा । णिरयगईए सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया असंखेज्जगुणा । सेसेसु तसेसु अमादस्स उदीरया

किसी एककी उदीरणा करनेवाला शेष भेदोंका कदाचिन् उदीरक होता है, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है । आतपकी उदीरणा करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक और उद्योतकी उदीरणा करनेवाला आतपका नियमसे अनुदीरक होता है । नरकगति व मनुष्यगतिका वेदन करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक होता है । देवगतिका वेदन करनेवाला मूल शरीरसे उद्योतका अनुदीरक होता है । आतपका उदीरक पृथिवीकायिक जीव ही होता है, अन्य नहीं होता ।

उच्चगोत्रकी उदीरणा करनेवाला नीचगोत्रका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार नीचगोत्रके आश्रयसे कहना चाहिये । शेष कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थान संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये । इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है— स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व । इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— पांच प्रकार ज्ञानावरणकी उदीरणा करनेवाले परस्परमें समान हैं । स्थान-गृद्धिके उदीरक जीव स्तोक हैं, उनसे निद्रानिद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाप्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे निद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे शेष चार दर्शनावरणीय प्रकृतियोंके उदीरक परस्परमें तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ।

सातावेदनीयके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं । नरकगतिमें साताके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे अमंख्यातगुणे हैं । शेष त्रस जीवोंमें

थोवा । सादस्स उदीरया संखेज्जगुणा । एइंदिएसु सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा । उवरि उवदेमं लहिय वत्तव्वं । परत्थाणप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं । एवमप्पाबहुअं ममत्तं । भुजगार-पदणिकखेवो वड्ढीयो णत्थि, एगेगपयडिविवक्खत्तादो ।

एत्तो उदीरणट्टाणपरूवणा कीरदे— णाणावरणीयस्स उदीरणाए एकं चेव ट्टाणं । एत्थ [मामित्तं] णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं च परूवेयव्वं । णाणावरणीयस्स ट्टाणपरूवणा समत्ता । दंमणावरणीयस्स दुवे ट्टाणाणि चटुण्णमुदीरणा पंचण्ण-मुदीरणा चेदि । एदेमिं ट्टाणाणं मामित्तं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च कायव्वं । एवं दंसणावरणस्स ट्टाणउदीरणा समत्ता ।

वेयणीयस्स णत्थि ट्टाणउदीरणा । मोहणीयस्स ट्टाणउदीरणाए अत्थि एकस्से पवेसओ, दोण्णं पवेसओ, तिण्णं पवेसओ णत्थि, चटुण्णं पवेसओ अत्थि । एत्तो पाए णिरंतरं जाव दंसण्णं पवेसओ त्ति वत्तव्वं^१ । एकस्से पवेसयस्स चत्तारि भंगा । तं जहा— कोधसंजलणस्स उदएण एगो भंगो, माणसंजलणस्स उदएण विदियो भंगो, मायासंजलणस्स उदएण तिण्णि भंगा, लोभस्स उदएण चत्तारि भंगा । दोण्णं पवेसयस्स वारस भंगा । चटुण्णं पवेसयस्स चटुवीसभंगा । पंचण्णं पवेसयस्स चत्तारि चउवीसभंगा ।

असाताके उदीरक स्तोक और साताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं । एकेन्द्रिय जीवोंमें साताके उदीरक स्तोक और असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं । आगे उपदेशको प्राप्तकर कथन करना चाहिये । परस्थान अल्पबहुत्वकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि अनुयोगद्वार यहां नहीं हैं; क्योंकि, एक एक प्रकृतिकी विवक्षा है ।

आगे यहां उदीरणास्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है— ज्ञानावरणीयकी उदीरणाका एक ही स्थान है । यहां स्वामित्व, नाना जावोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । ज्ञानावरणीयकी स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई ।

दर्शनावरणीयके दो स्थान हैं— चारकी उदीरणाका एक स्थान और पांचकी उदीरणाका एक । इन स्थानोंके स्वामित्व, नाना जावोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इस प्रकार दर्शनावरणकी स्थानउदीरणा समाप्त हुई ।

वेदनीयकी स्थानउदीरणा नहीं है । मोहनीयकी स्थानउदीरणामें एक प्रकृतिका प्रवेशक (उदीरक) है, दो प्रकृतियोंका प्रवेशक है, तीन प्रकृतियोंका प्रवेशक नहीं है, चार प्रकृतियोंका प्रवेशक है । चार प्रकृतियोंके प्रवेशकको आदि करके दस प्रकृतियोंके प्रवेशक तक इन स्थानोंका प्रवेशक निरन्तर है । इनमें एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग हैं । वे इस प्रकार हैं— संज्वलन श्रोत्रके उदयकी अपेक्षा एक भंग, संज्वलन मानके उदयकी अपेक्षा द्वितीय भंग, संज्वलन मायाके उदयकी अपेक्षा तृतीय भंग, और संज्वलन लोभके उदयकी अपेक्षा चतुर्थ भंग । दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह भंग होते हैं । चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके चौबीस भंग होते हैं । पांच प्रकृतियोंके

^१ जयध. (च. म.) अ. प. ७२६.

छण्णं पवेसयस्स सत्त चउवीस भंगा । सत्तण्णं पवेसयस्स दस चउवीस भंगा । अट्टण्णं पवेसयस्स एकारस चउवीस भंगा । णवण्णं पवेसयस्स छ चउवीस भंगा । दसण्णं पवेसयस्स एक्को चउवीस भंगा । एदेमिं भंगाणं पमाणपरूवणद्धमेमा गाहा वुच्चदे । तं जहा—

एक य छक्केकारस दस सत्त चउक्कमेक्कयं चव ।

दोसु य वारस भंगा एक्कम्हि य होति चत्तारि^१ ॥ १ ॥

एवं ट्टाणसमुक्कित्तणा समत्ता । सामित्तपरूवणाए इमाओ वे सुत्तगाहाओ । तं जहा—

सत्तादि दमुक्कस्सं मिच्छे सण-मिस्सए णउक्कसं^२ ।

छादी य णवुक्कस्सं^२ अविददसम्मत्तमादिस्स ॥ २ ॥

पंचादि अट्टणिहणा विरदाविरदे उदीरणट्टाणा ।

एगादी तिथरहिदा सत्तुक्कस्सा य विरदस्स^३ ॥ ३ ॥

प्रवेशकके चार चौवीस (२४ × ४) भंग होते हैं । छह प्रकृतियोंके प्रवेशकके सात चौवीस (२४ × ७) भंग होते हैं । सात प्रकृतियोंके प्रवेशकके दस चौवीस (२४ × १०) भंग होते हैं । आठ प्रकृतियोंके प्रवेशकके ग्यारह चौवीस (२४ × ११) भंग होते हैं । नौ प्रकृतियोंके प्रवेशकके छह चौवीस (२४ × ६) भंग होते हैं । दस प्रकृतियोंके प्रवेशकके एक चौवीस (२४ × १) भंग होते हैं । इन भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये यह गाथा कही जानी है । वह इस प्रकार है—

दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके क्रमसे एक, छह, ग्यारह, दस, सात, चार और एक [इतनी शलाकाओंसे युक्त चौवीस] भंग; दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह, तथा एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग होते हैं ॥ १ ॥

इस प्रकार स्थानसमुक्तीर्तना समाप्त हुई । स्वामित्वकी प्ररूपणामें ये दो मूत्र गाथायें हैं । यथा— सातको आदि लेकर उत्कर्षसे दस (७, ८, ९, १०) प्रकृतियों तकके चार स्थान मिथ्यात्व गुणस्थानमें होते हैं, अर्थात् इन चार स्थानोंका स्वामी मिथ्यादृष्टि है । सातको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ प्रकृतियों तकके तीन (७, ८, ९,) स्थान सासादन और मिश्र गुणस्थानमें होते हैं । छह प्रकृतियोंको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ तकके चार (६, ७, ८, ९) स्थान अन्निरतसम्यग्दृष्टिके होते हैं । पांचको आदि लेकर आठ प्रकृतियों तकके चार (५, ६, ७, ८) उदीरणास्थान विरताविरत (देशविरत) गुणस्थानमें होते हैं । एकको आदि लेकर उत्कर्षसे त्रिप्रकृतिक स्थानसे रहित सात प्रकृतियों तकके छह (१, २, ४, ५, ६, ७) उदीरणास्थान संयत जीवके होते हैं ॥ २-३ ॥

विशेषार्थ— यहां सात प्रकृतियोंको आदि लेकर दस प्रकृतियों तकके जो चार उदीरणा-

१ एकग-च्छेक्के[छक्के]कारम दस सत्त चउक्क एककमेक्कयं चव । दोसु च वारस भंगा एक्कम्हि य होति चत्तारि ॥ जयध. अ. प. ७५८. एक य छक्केयार दस-सग-चदुरेक्कयं अपुणरुत्ता । एदे चउवीसगदा वार दुगे पंच एकम्मि ॥ गो. क. ४८८. २ ताप्रती 'ण उक्कस्सं' इति पाठः । ३ जयध. अ. प. ७५९. दस-णव-णवादि चउ-तिय-तिट्ठाण णवद्ध-सग-सगादि चऊ । टाणा छादि तियं च य चउवीसगदा अपुब्बो ति ॥ गो. क. ४८०.

एदासु दोसु गाहासु भामिदासु मोहणीयसामित्तं समप्पदि । एवं सामित्तं समत्तं ।
 एयजीवेण कालो— एकस्से पवेमओ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एग-
 समओ, उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं । दोण्णं पवेमओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं ।
 चट्ठण्णं पवेमयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं । पंचण्णं पवेमयस्स जहण्णेण

स्थान मिथ्यादृष्टिके वतलाये गये हैं वे इस प्रकारसे सम्भव हैं— मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धि-
 चतुष्कमेंसे एक, अप्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, प्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, संज्वलनचतुष्कमेंसे
 एक, तीन वेदोंमेंसे कोई एक, हास्य रति और अरति-शोकमेंसे एक युगल, तथा भय व जुगुप्सा;
 इन दस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है । इन दस प्रकृतियोंमें
 भय व जुगुप्सामेंसे किसी एकके बिना नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है, भय व जुगुप्सा इन
 दोनोंके बिना आठ प्रकृतियोंका स्थान होता है; तथा भय, जुगुप्सा व कोई एक अनन्तानुबन्धी
 कषाय इन तीन प्रकृतियोंके बिना सातका स्थान होता है । ये तीन स्थान भी मिथ्यादृष्टिके
 ही सम्भव हैं । उपर्युक्त दस प्रकृतियोंके स्थानमेंसे एक अनन्तानुबन्धी कषायको कम
 करके मिथ्यात्व प्रकृतिके स्थानमें सम्यग्मिथ्यात्वके ग्रहण करनेपर नौ प्रकृतियोंका स्थान
 होता है । इनमें भय व जुगुप्सामेंसे एकके बिना आठका, तथा दोनोंके बिना सातका
 स्थान होता है । ये तीन उदीरणास्थान सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही सम्भव हैं । इन
 तीनों स्थानोंमेंसे सम्यग्मिथ्यात्वको कम करके अनन्तानुबन्धी कषायको जोड़ देनेपर भी जो
 नौ, आठ व सात प्रकृतियोंके तीन उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी सासादनसम्यग्दृष्टि
 होता है । सम्यक्त्व प्रकृति, एक अप्रत्याख्यान कषाय, एक प्रत्याख्यान कषाय, एक संज्वलन
 कषाय, एक वेद, हास्यादिमेंसे एक युगल तथा भय व जुगुप्सा प्रकृतिको ग्रहण कर नौका; भय
 व जुगुप्सामेंसे एकके बिना आठका, इन दोनोंके ही बिना सातका, तथा उपशमसम्यग्दृष्टि
 एवं क्षायिकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षा सम्यक्त्व प्रकृतिको भी छोड़कर छहका; ये चार उदीरणास्थान
 अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पाये जाते हैं । अविरतसम्यग्दृष्टिके इन चार उदीरणास्थानोंमेंसे
 एक अप्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो आठ, सात, छह और पांच प्रकृतियोंके चार
 उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी संयतासंयत होता है । इसके उक्त चारों स्थानोंमेंसे
 एक प्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके चार
 उदीरणास्थान होते हैं वे प्रमत्त, अप्रमत्त और अपूर्वकरण इन तीन गुणस्थानोंमें पाये जाते
 हैं । संज्वलनचतुष्कमेंसे एक और तीन वेदोंमेंसे एक इन दो प्रकृतियोंका स्थान, तथा एक
 मात्र अन्यतर संज्वलन प्रकृतिका स्थान, ये दो स्थान अनिर्वृत्तिकरण गुणस्थानमें प्राप्त होते हैं । तीन
 प्रकृतियोंके स्थानकी सम्भावना ही नहीं है । तथा सूक्ष्म लोभकी अपेक्षा एक प्रकृतिक स्थान
 सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें भी होता है, इतना यहां विशेष जानना चाहिये ।

इन दो गाथाओंकी प्ररूपणा करनेपर मोहनीय कर्मका स्वामित्व समाप्त होता है । इस
 प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक कितने काल रहता है ? वह
 जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है । दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक
 जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है । चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका
 काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका

एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सत्तण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अट्टण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । णवण्णं^१ दसण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवमेगजीवेण कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरं— दसण्णं पवेसयस्स अंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण वेछावट्टिसागरोवमाणि । णवण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकीडी देसूणा । अट्टण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकीडी देसूणा । सत्तण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । जहा छण्णं तथा पंचण्णं । चट्टण्णं पवेसयस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अट्टपोग्गलपरियट्ठं । एवं दोण्णमेक्किस्से पवेसयस्स वत्तव्वं । एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— दसण्णं णवण्णं अट्टण्णं सत्तण्णं छण्णं पंचण्णं चट्टण्णं पवेसया जीवा णियमा अत्थि । दोण्णमेक्किस्से पवेसया जीवा भजिदव्वा । एवं णाणा-

काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । नौ और दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है । सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपाध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपाध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । जैसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल है वैसे ही पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर काल है । चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अर्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इसी प्रकारसे दो प्रकृतियोंके और एक प्रकृतिके उदीरकके अन्तरकालका कथन करना चाहिये । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव नियमसे हैं । दो और एक प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव भजनीय हैं ।

१ ताप्रतौ 'एवं णवण्णं' इति पाठः ।

जीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो— एकस्से दोण्णं च पवेसया जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सेसट्टाणप्पवेसयाणं कालो सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि अतरं— एकस्से दोण्णं च पवेसंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मामा । सेमाणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

मणियामो— एकस्से पवेसओ वेण्हमप्पवेसओ, १ । एवं सेमाणं वत्तव्वं । एवं मव्वट्टाणाणं परूवणा कायव्वा २ । एवं मणियामो समत्तो ।

[अप्पा बहुअं]-मव्वत्थोवा एकस्से पवेसया । दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । चट्ठणं पवेसया संखेज्जगुणा । पंचणं पवेसया असंखेज्जगुणा । छण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा । मत्तणं पवेसया असंखेज्जगुणा । दसणं पवेसया अणंतगुणा । णवणं पवेसया असंखेज्जगुणा । अट्ठणं पवेसया संखेज्जगुणा ।

आदेसेण गिरयगदीए मव्वत्थोवा छण्णं पवेसया । मत्तणं पवेसया असंखेज्जगुणा ।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— एक व दो प्रकृतियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्गृहीत काल तक रहते हैं । शेष स्थानोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर— एक और दो प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास तक होता है । शेष प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

संनिकर्ष— एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक नहीं होता है । इसी प्रकारसे चार, पांच आदि शेष प्रकृतिक स्थानोंको कहना चाहिये । इस प्रकार सब स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

अल्पवहुत्व— एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं । उनसे दो प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । उनसे चार प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । उनसे पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । उनसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । उनसे सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । उनसे दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक अनन्तगुणे हैं । उनसे नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । उनसे आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं ।

आदेशकी अपेक्षा नरकगतिमें छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं । सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं ।

१ उभयोरेव प्रत्योः 'वेण्हं पवेसओ' इति पाठः । २ सणियामो । एत्तो सणियामो कायव्वो त्ति अहियारसमाल्लणवक्कमेदं । एकस्से पवेसगो दोण्हमप्पवेसगो । कुदा ? परोपरविरुद्धमहावनादो । चउण्हं पंचण्हं छण्हं सत्तण्हं अट्ठण्हं णवण्हं दसण्हं च अपवेसगो त्ति एदमत्थदो लब्भवे, एकस्से पवेसगस्स सेसासेसट्टाणाणमपवेसयभावस्स देसामासयभावेणदस्स पयट्ठत्तादो । एवं सेमाणं । सुगमं । उच्चारणाहिपाएण सणियामो णत्थि त्ति, तत्थ सत्तारसण्हमेवाणिओगहारणं परूवणादो । जयध. अ. प. १७६३-६४.

दसण्णं पवेमया असंखेज्जगुणा । णवण्णं पवेमया संखेज्जगुणा । अट्ठण्णं पवेमया संखेज्जगुणा । एवं सव्वणेरइय-देव-भवणादि जाव महस्सारे ति ।

तिरिक्खेसु पंचपवेमया थोवा । छप्पवेमया अमंखेज्जगुणा । उवरि ओघं । एवं पंचिदियतिरिक्खतिगस्स । णवरि दसपवेमया अमंखेज्जगुणा । पंचिदियतिरिक्ख-मणुम-अपज्जत्तएमु दसपवेमया थोवा, णवपवेमया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेमया संखेज्जगुणा । मणुस्सेमु एक्किस्से पवेमया थोवा, दोण्णं पवेमया संखेज्जगुणा, [चट्ठण्णं पवेमया संखेज्जगुणा,] पंचण्णं पवेमया संखेज्जगुणा, छण्णं पवेमया संखेज्जगुणा, मत्तण्णं पवेमया संखेज्जगुणा, दसण्णं पवेमया अमंखेज्जगुणा, णवण्णं पवेमया संखेज्जगुणा, अट्ठण्णं पवेमया संखेज्जगुणा । एवं [मणुम] पज्जत्त-मणुमिणीमु । णवरि जम्हि अमंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कायव्वं । आणदादि जाव णवगेवज्ज ति दसण्णं पवेमया थोवा, छप्पवेमया संखेज्जगुणा, णवपवेमया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेमया संखेज्जगुणा, मत्तपवेमया संखेज्जगुणा । एवमणुदिमादि जाव मव्वट्ठे ति । णवरि दसपवेमया णत्थि ।

आउअस्स ट्ठाणदीरणा णत्थि । णिरयगईए णामस्स^१ एककोम पंचवीम सत्तावीम

नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे सब नारक, सामान्य देव और भवन्वासियोंसे लेकर सहस्रार स्वर्ग तकके देवोंके विषयमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

तिर्यचोंमें पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक हैं । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । आगे ओघके समान कथन करना चाहिये । इसी प्रकारसे पंचेन्द्रिय तिर्यच आदि तीनके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तकों और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, नौके उदीरक संख्यातगुणे तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । मनुष्योंमें एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, दोके उदीरक संख्यातगुणे, [चारके उदीरक संख्यातगुणे,] पांचके उदीरक संख्यातगुणे, छहके उदीरक संख्यातगुणे, सातके उदीरक संख्यातगुणे, दसके उदीरक असंख्यातगुणे नौके उदीरक संख्यातगुणे, तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंके विषयमें कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि जहां मनुष्योंमें असंख्यातगुणा कहा गया है वहां इनमें संख्यातगुणा कहना चाहिये । आनत स्वर्गको आदि लेकर नौ प्रवेयक पर्यंत देवोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, छहके उदीरक संख्यातगुणे, नौके उदीरक संख्यातगुणे, आठके उदीरक संख्यातगुणे और सातके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार अनुद्दिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्ध विमान तक कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां दसके उदीरक नहीं हैं ।

आयु कर्मकी स्थानउदीरणा नहीं है । नरकगतिमें नामकर्मके इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस,

१. काप्रती 'णिरयगईणामस्स' इति पाठः ।

अट्टावीम एगुणतीसं ति पंच उदीरणट्टाणाणि होंति । २१, २५, २७, २८, २९ । तत्थ इगिवीस-पयडिउदीरणट्टाणं वुच्चदे । तं जहा—णिरयगइ-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयमरीर-वण्ण-गंध-रस-फाम-णिरयगइपाओग्गाणुपुच्ची-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभामुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजमगित्ति-णिमिणाणि त्ति एदाओ पयडीओ घेत्तूण एकवीमाए ट्टाणं होदि । एदस्म ठाणस्स को सामी ? विग्गहगदीए वट्टमाणो णेरइया मम्माइट्ठी मिच्छा-इट्ठी वा । एदस्म कालो जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण वे ममया ।

आणुपुच्चीमवणेदूण वेउव्वियमरीर-हुंडसंठाण-वेउव्वियमरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेय-सरीरेसु पुव्वुत्तपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीमाए उदीरणट्टाणं होदि । तं कस्म ? मरीर-गहिदणेरइयस्स । तं केवचिरं कालादो होदि ? मरीरगहिदपढमममयमादिं कादूण जाव मरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमममओ त्ति, अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि ।

परघाद-अप्पमत्थविहायगदीसु पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्तासु सत्तावीसपयडीण-मुदीरणट्टाणं होदि । तं केवचिरं कालादो होदि ? मरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमममय-मादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमममओ त्ति । एमो वि कालो जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो ।

अट्टाईस और उनतीस प्रकृतियोंके पांच (२१, २५, २७, २८, २९) उदीरणास्थान होते हैं । उनमें इक्कीस प्रकृतियोंके उदीरणास्थानकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—नरकगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और निर्माण ; इन प्रकृतियोंको ग्रहण कर इक्कीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है ।

शंका— इस स्थानका स्वामी कौन है ?

समाधान—विग्रहगतिमें वर्तमान सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नारक जीव उक्त स्थानका स्वामी है ।

इसका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको क्रम करके वैक्रियिकशरीर, हुण्डकमंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह किसके होता है ? वह जिसने शरीर ग्रहण कर लिया है ऐसे नारक जीवके होता है । वह कितने काल तक होता है ? शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयको आदि करके शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । अभिप्राय यह कि वह अन्तमुहूर्त काल तक रहता है ।

पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें परघात और अप्रशस्त विहायोगति इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह कितने काल रहता है ? वह शरीर-पर्याप्तसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि लेकर आनप्राण पर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र है ।

१ काप्रतौ 'परघादपसत्थ-', ताप्रतौ 'परघाद- [अ-] पमत्थ-' इति पाठः ।

पुव्विल्लमत्तावीमपयडीसु उस्मासे पक्खित्ते अट्टावीसपयडीणं उदीरणट्टाणं होदि । तं केवचिरं कालादो होदि ? आणपाणपज्जतीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भासापज्जतीए अणिल्लेविदचरिममओ त्ति । एसो वि कालो जहण्णुक्खसेण अंतोमुहुत्तमेत्तो ।

पुव्विल्लअट्टावीमपयडीसु दुस्मरे पक्खित्ते एगुणतीसपयडीणमुदीरणट्टाणं होदि । एदस्म अट्टाणं भासापज्जतीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पणो आउट्टिदीए चरिममओ त्ति । तस्स कालो जहण्णेण दमवस्समहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्खसेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीमं सागरोवमाणि ।

तिरिक्खगदीए एक्खीम-चउवीम-पंचवीम-छव्वीम-सत्तावीम-अट्टावीम-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीमं ति णव उदीरणट्टाणाणि । तत्थ एइंदियाणमेक्खीम-चउवीम-पंचवीम-छव्वीम-सत्तावीमं ति पंच उदीरणट्टाणाणि । आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्म सत्तावीमट्टाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्टाणाणि । आदावुज्जोवुदएण महिदएइंदियस्म पशुवीसट्टाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्टाणाणि । तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्म भण्णमाणे तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयमरीर-वण्ण-गंध-रस - फाम-तिरिक्खगइपाओग्गा-णुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-थावर-वादर-मुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दूभगं अणादेज्जं जम-अजमक्कित्तीणमेक्कदरं णिमिणमेदाहि एक्खीमपयडीहि एग-

पूर्वाक्त सत्ताईस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर अट्टाईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह कितने काल तक रहता है ? आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके भाषापर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक रहता है । यह भी काल जघन्य व उत्कपसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

पूर्वाक्त अट्टाईस प्रकृतियोंमें दुस्वरके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । इसका अध्वान भाषापर्याप्तसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके अपनी अपनी आयुःस्थितिके अन्तिम समय तक है । उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कपसे अन्तर्मुहूर्त कम तैतीस सागरोपम प्रमाण है ।

तिर्यग्गतिमें इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छव्वीस, सत्ताईस, अट्टाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृतियोंके नौ उदीरणास्थान हैं । उनमें एकेन्द्रिय जीवोंके इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छव्वीस और सत्ताईस प्रकृतियोंके पांच उदीरणास्थान सम्भव हैं । उनमेंसे आतप व उद्योतके उद्यसे रहित एकेन्द्रिय जीवके सत्ताईसके विना चार उदीरणास्थान होते हैं । आतप व उद्योतके उद्यसे सहित एकेन्द्रिय जीवके पच्चीस प्रकृति रूप स्थानके विना चार उदीरणास्थान होते हैं । उनमें आतप व उद्योतके उद्यसे रहित एकेन्द्रिय जीवके उक्त चार स्थानोंका कथन करनेपर तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोगयानु-पूर्वा, अगुरुलघु, स्थावर, वादर व सूक्ष्ममेंसे एक, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण, इन इक्कीस

मुदीरणाद्वानं होदि । तं कथं ? विग्गहगदीए वट्टमाणएइंदियम्मि होदि । तं केवचिरं ? जहणणेण एमममओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । पुव्विच्छएक्कवीमपयडीसु आणुपुव्वीमवणे-
दूण ओरालियमरीर-हुंडमंठाण-उवघाद-पत्तेय-साहारणमेसरीराणमेकदरे पक्खित्ते चउवीसाए
उदीरणद्वानं होदि । तं कथं ? गहिदमरीरपढममयप्पहुडि जाव सरीरपज्जतीए अणिल्ले-
विदचरिमममओ त्ति एदम्मि अद्धाने^१ । तं केवचिरं ? जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं ।
पुणो अपज्जत्तमवणिय सेमचउवीमपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीणमुदीरणद्वानं
होदि । तं कथं ? सरीरपज्जतीए पज्जत्तयदपढममयमादिं कादूण जाव आणपाणपज्जतीए
अणिल्लेविदचरिमममओ त्ति । तं केवचिरं ? जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं । तस्सेव आण-
पाणपज्जतीए पज्जत्तयदस्म पुव्विच्छपंचवीमपयडीसु उस्मासे पक्खित्ते छव्वीमपयडीणमुदी-
रणद्वानं होदि । तं कस्म ? आणपाणपज्जतीए पज्जत्तयदस्म । तं केवचिरं ? जहणणेण
अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणवावीमवस्ससहस्साणि ।

आदावुज्जीवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे— एकवीस-चउवीसउदीरणद्वानाणं पुव्वं [व]
परूवणा कायव्वा । पुणो मरीरपज्जतीए पज्जत्तयदस्म परघाद-आदावुज्जीवाणमेकदरे च

प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है । वह कहाँपर होता है ? वह विग्रहगतिमें वर्तमान एके-
न्द्रिय जीवके होता है । वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे
तीन समय तक होता है ।

पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, उप-
घात तथा प्रत्येक व साधारण शरीरमेंसे एक, इन चार प्रकृतियोंको मिला देनेपर चौबीस प्रकृतिक
उदीरणास्थान होता है । वह कहाँपर होता ? वह शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर
शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक, इस अध्वानमें होता है । वह कितने काल तक
होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है ?

फिर इनमेंसे अपर्याप्तको कम करके शेष चौबीस प्रकृतियोंमें परघातको मिला देनेपर
पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह कहाँपर होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त
होनेके प्रथम समयको आदि करके आनप्राणपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है ।
वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है । आन-
प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त एकेन्द्रिय जीवकी पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला
देनेपर छव्वीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह किसके होता है ? वह आन-प्राण-
पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए एकेन्द्रिय जीवके होता है । वह कितने काल होता है । वह जघन्यसे अन्त-
र्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष तक होता है ।

अब आतप व उद्योतके उदयसे सहित एकेन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते
हैं— इक्कीस और चौबीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये ।
पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवकी पूर्वोक्त चौबीस प्रकृतियोंमें परघात और आतप-उद्योतमेंसे

१ काप्रतो 'अद्धानं' इति पाठः ।

पुत्रिह्वचदुवीमपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसट्टाणमुल्लंघिय छव्वीसपयडिट्टाणमुप्पज्जदि । तं कम्म ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । तं केवचिरं ? जहण्णकस्सेण अंतोमुहुत्तं । तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स छव्वीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते सत्तावीस-पयडीणमुदीरणट्टाणं होदि ।

विगलिंदियाणं मामण्णेण एकवीस-छव्वीस-अट्टावीस-एगूणतीस-तीस-एककत्तीसं ति छुदीरणट्टाणाणि । उज्जोवउदयविरहिदविगलिंदियाणं पंच उदीरणट्टाणाणि, एकत्तीस-उदीरणट्टाणाभावादो । उज्जोवुदयसंजुत्तविगलिंदियस्स वि पंचेवुदीरणट्टाणाणि, परघा-दुज्जोव-अप्पमत्थविहायगदीणमक्कमपवेसेण अट्टावीसट्टाणाणुप्पत्तोदो ।

उज्जोवुदयविरहिदवेइंदियस्स ताव उच्चदे । तं जहा- [तिरिक्खगइ-] वेइंदिय-जादि तेजा-कम्मइयमरीर वण्ण-गंध-रस - फाम-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तम-वादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ-दुभंग-अणादेज्ज जम-अजमगित्तीण-मेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिमेक्कवीमपयडीणमेगं ट्टाणं । तं कम्म ? वेइंदियस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स । तं केवचिरं ? जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण वे ममया । एदासु एकवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण गहिदमरीरपढममए ओरालियसरीर-

किसी एकके मिलानेपर पञ्चीस प्रकृतिक स्थानका उल्लंघन करके छव्वीस प्रकृतियोंका स्थान उत्पन्न होता है । वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है । वह कितने काल तक रहता है ? वह जघन्य और उत्कर्षसे अन्तर्हृत तक रहता है । आन-प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी छव्वीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासेके मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है ।

विकलेन्द्रिय जीवोंके सामान्यसे इक्कीस, छव्वीस, अट्टाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृति रूप ये छह उदीरणास्थान होते हैं । परन्तु उद्योतके उदयसे रहित विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उनके इकतीस प्रकृति रूप उदीरणास्थान नहीं होता । उद्योतके उदयसे संयुक्त विकलेन्द्रियके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि उनके परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंका युगपत् प्रवेश होनेसे अट्टाईस प्रकृतियोंका स्थान उत्पन्न नहीं होता ।

उद्योतके उदयसे रहित द्वीन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं । यथा— [तिर्यग्गति,] द्वीन्द्रियजाति, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, वादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुभंग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है । वह किसके होता है ? वह विग्रहगतिमें वर्तमान द्वीन्द्रिय जीवके होता है । वह कितने काल तक रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय रहता है । इन इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीर,

हुंडसंठाण-ओरालियमरीरंगोवंग-असंपत्तसेवद्वुसंधडण-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु छ्वीसाए द्वाणं होदि । तं कस्स ? वेइंदियस्स सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयदस्स' । तं केव-चिरं ? जहण्णुणक्कस्सेण अंतोमुहत्तं । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीमु अपज्जत्त-मवणिय परघाद-अप्पमत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु अट्टावीसाए द्वाणं होदि । आणापाण-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसद्वाणं होदि । भासा-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते तीसाए द्वाणं होदि ।

संपहि उज्जोवुदयसंजुत्तवेइंदियस्स भण्णमाणे एकवीस-छ्वीसाओ जघा पुव्वं वुत्ताओ तथा वत्तव्वाओ । पुणो छ्वीसाए उवरि परघादुज्जोव-अप्पमत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु एगुणतीसाए द्वाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए द्वाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स दुस्सरे पक्खित्ते एकतीसाए द्वाणं होदि । एदस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहत्तणवारसवासाणि । एवं तेइंदिय-चउरियाणं पि वत्तव्वं । णवरि तीसेक्कत्तीमाणं कालो जहाकमेण एगुणवण्णारादि-दियाणि छम्मामा अंतोमुहत्तणा ।

हुण्डकसंस्थान, औदारिकशरीरान्गोपांग, असंप्राप्तसुपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छ्वीस प्रकृतिक स्थान होता है । वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त न हुए द्वीन्द्रिय जीवके होता है । वह कितने काल रहता है ? वह जघन्य य उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है । शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवका पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और अप्रशस्त विहायोगतिको मिला देनेपर अट्टाईस प्रकृति रूप स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । भापापर्याप्तसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें दुस्वरको मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है ।

अब उद्योतके उदयसे संयुक्त द्वीन्द्रिय जीवके स्थानोंका कथन करते समय इक्कीस और छ्वीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा जैसे पहिले की गई है वैसे ही करना चाहिये । पुनः छ्वीस प्रकृति रूप स्थानके उपर परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगतिके इन तीन प्रकृतियोंको मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त हुए जीवके एक उच्छ्वास प्रकृतिके मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है । भापापर्याप्तसे पर्याप्त हुए उक्त जीवके दुस्वर प्रकृतिके मिला देनेपर इक्कीस प्रकृति रूप स्थान होता है । इसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बारह वर्ष प्रमाण है । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके भी स्थानोंका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि तीस और इक्कीस प्रकृति रूप स्थानोंका काल यथाक्रमसे अन्तर्मुहूर्त कम उनंचास रात्रि-दिवस और अन्तर्-मुहूर्त कम छह मास प्रमाण है ।

पंचिदियतिरिक्खस्स सामण्णेण एकवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्क-
 तीस ति छउदीरणट्ठाणाणि । उज्जोवुदयविरहिदपंचिदियतिरिक्खस्स पंच उदीरण-
 ट्ठाणाणि । कुदो ? तत्थ एकत्तीसाए उदयाभावादो । उज्जोवुदयमंजुत्तपंचिदियतिरिक्खस्स
 वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि । कुदो ? तत्थ अट्ठावीसट्ठाणाभावादो । उज्जोवुदयविरहिदपंचिदिय-
 तिरिक्खस्स भण्णमाणे तत्थ इदमेक्कवीसट्ठाणं' — तिरिक्खिगइ-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइय-
 मरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खिगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ - तस-वाद्दर पज्जत्ता-
 पज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जम-
 कित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च, एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं चे व ट्ठाणं ।
 सरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणिय ओरालियमरीरं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियमरीर-
 अंगोवंगं छण्णं संघट्टणाणमेक्कदरं उवघादं पत्तेयमरीरमिदि छसु पयडीसु पक्खित्तामु^१
 छव्वीसाए ट्ठाणं होदि । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादे^२ दोण्णं
 विहायगदीणमेक्कदरे च पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि । आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्त-
 यदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-
 दुस्सरेसु एकदरं पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि । एदिस्से तीसाए कालो जहण्णेण अंतो-

पंचेन्द्रिय तिर्यचके सामान्यसे इक्कीस, छव्वीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इक्कीस
 प्रकृति रूप छह उदीरणास्थान होते हैं । उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यचके पांच उदीरणा-
 स्थान होने हैं, क्योंकि, उसके इक्कीस प्रकृतिरूप उदीरणास्थानकी सम्भावना नहीं है । उद्योतके
 उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यचके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, वहां अट्ठाईस
 प्रकृति रूप स्थानकी सम्भावना नहीं है । उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यचके स्थानोंकी
 प्ररूपणा करते समय उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थान यह है— तिर्यग्गति, पंचेन्द्रियजाति, तेजस व
 कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, वाद्दर, पर्याप्त
 व अपर्याप्तमेसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग और दुर्भगमेसे एक, आदेय व
 अनादेयमेसे एक, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस
 प्रकृतियोंका एक ही स्थान होता है । शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके औदारिक-
 शरीर, छह संस्थानोंमेसे एक, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहननोंमेसे एक, उपघात और
 प्रत्येकशरीर, इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छव्वीस प्रकृतियोंका स्थान होता है । शरीर-
 पर्याप्तसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी उन छव्वीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्त-
 के साथ परघात और दो विहायोगतियोंमेसे एक, इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर अट्ठाईस
 प्रकृतियोंका स्थान होता है । उक्त जीवके आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त हो जानेपर उक्त प्रकृतियोंमें
 उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है । भाषापर्याप्तसे पर्याप्त होनेपर
 उपयुक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एकका मिला देनेपर तीस प्रकृतियोंका स्थान

१ काप्रतौ 'इदमेक्कवीसट्ठाणाणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'पक्खित्ता' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'परघाद'
 इति पाठः ।

मुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिणपलिदोवमाणि ।

उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स एकवीम-छ्वीमउदीरणट्टाणाणि पुच्चं व वत्तव्वाणि । पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघादुज्जोवेसु पसत्थापमत्थविहायगदीण-मेक्कदरे च पविट्ठेसु एगूणतीसाए ट्टाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्टाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स मुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पविट्ठे एकत्तीसाए ट्टाणं होदि । एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिणपलिदोवमाणि ।

मणुस्माणं सामण्णेण वीसेक्कीम-पंचवीम-छ्वीम-सत्तावीम-अट्टावीम-एगुणतीम-तीस-एक्कतीस इदि णव उदीरणट्टाणाणि । सामण्णमणुस्सा वीसेममणुस्सा वीसेमवीसेम-मणुस्सा चेदि तिविहा मणुस्सा होंति । तत्थ सामण्णमणुस्साणं वुच्चदे । तं जहा— मणुमगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फाम-मणुमगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तम-वादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुहासुह सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिण्णामं चेदि एदस्सि पयडीणमेक्कमुदीरणट्टाणं । गहिदसरीरस्स^१ मणुमगइपाओग्गाणुपुव्वामवणेदण ओगालिय-

होता है । तीस प्रकृति रूप इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यचके इक्कीस और छ्वीस प्रकृति रूप स्थानोंका कथन पहिलेके समान ही करना चाहिये । पुनः शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त दृष्ट पंचेन्द्रिय तिर्यचकी उक्त छ्वीस प्रकृतियोंमें परघात, उद्योत और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायगतियोंमेंसे एक, इन तीन प्रकृतियोंके प्रविष्ट होनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त हो जानेपर उनमें एक उच्छ्वासके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है । भापापर्याप्तसे पर्याप्त हो जानेपर मुखर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके उपयुक्त प्रकृतियोंमें प्रविष्ट होनेपर इक्कीस प्रकृति रूप स्थान होता है । इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

मनुष्योंके सामान्यसे वीस, इक्कीस, पच्चीस, छ्वीस, सत्ताईस, अट्टाईस, उनतीस, तीस और इक्कीस; ये नौ उदीरणास्थान होते हैं । सामान्य मनुष्य, विशेष मनुष्य और विशेषविशेष मनुष्य इस प्रकारसे मनुष्योंके तीन भेद हैं । उनमें सामान्य मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कर्मण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग व दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति व अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकम, इन प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है । शरीरके ग्रहण कर लेनेपर मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेंसे एक, औदारिक-

१ ताप्रती 'गहिदस्स सरीरस्स' इति पाठः ।

सरीरं छण्णं संठाणाणमेकदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेकदरं उवघाद-पत्तेयसरीरं च घेत्तूण पक्खित्ते छव्वीमाए द्वाणं होदि । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादं पमत्थापसत्थविहायगदीणमेकदरं च घेत्तूण पक्खित्ते अट्ठावीमाए द्वाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीमाए द्वाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स मुस्सर-दुस्सराणमेकदरे पक्खित्ते तीमाए द्वाणं होदि ।

संपहि आहारसरीरोदइल्लाणं विसेममणुस्माणं भण्णमाणे तेसि पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीसं चेदि चत्तारिउदीरणद्वाणाणि । मणुमगइ-पंचिदियजादि-आहार-तेजो-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस - फास-अगुरुअल-हुअ-उवघाद-तप्त - वादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभामुभ-सुभग-आदेज्ज - जसगित्ति-णिमिणं चेदि एदामि पणुवीसपयडीणमेकमुदीरणद्वाणं । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए द्वाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसाए द्वाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स मुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीमाए द्वाणं होदि ।

विसेसविसेसमणुस्माणं वीस-एक्कवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-

शरीरांगोपांग, छह संहननोंमें एक, उपघात और प्रत्येकशरीर इन प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेसे छव्वीस प्रकृतियोंका स्थान होता है । शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर अपर्याप्तको कम करके परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतिकोंमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतिरूप स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे उनतीस प्रवृत्ति रूप स्थान होता है । भापापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है ।

अब आहारशरीरके उदयसे संयुक्त विशप मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करनेपर उनके पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस प्रकृति रूप चार उदीरणास्थान होते हैं । मनुष्य-गति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारक, तेजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, आहारकशरीरांगो-पांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण नामकर्म; इन पच्चीस प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है । शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपर्युक्त प्रकृतियोंमें परघात और प्रशस्तविहायोगतिके मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है । भापापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके मिला देनेसे उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है ।

विशेषविशेष मनुष्योंके वीस, इक्कीस, छव्वीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और

एकत्तीसं चेदि अट्ट उदीरणट्टाणाणि । तं जहा— मणुसगइ-पंचिदियजादि-तेजा-कम्म-इयमरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ - तम-बादर - पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जमगित्ति-णिमिणं चेदि एदासिं वीसण्णं पयडीणमेगं चैव ट्टाणं । तं कस्स ? पदर-लोगवूरणगदसजोगिकेवलिस्सम । जदि तित्थयरो तो तित्थयरेण सह एकवीसाए ट्टाणं होदि । कवाडं गदस्स ओरालियमरीरं समचउरसमंठाणं, तित्थयरुदयरहियाणं छण्णं संठाणाणमेकदरं, ओरालियमरीरंगोवंगं वज्जरिसहमंघडणं उवघादं पत्तेयमरीरं च वीसाए एकवीसाए वा पक्खित्ते छव्वीमाए सत्तवीसाए वा ट्टाणं होदि । दंडं गदस्स परघादं पसत्थापमत्थविहायगदीणमेकदरं च घेत्तूण छव्वीमाए सत्तवीसाए च पक्खित्ते अट्ट-वीसाए एगुणतीसाए वा ट्टाणं होदि । णवरि तित्थयराणं पमत्थविहायगदी एक्का चैव उदेदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए तीसाए च ट्टाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एकदरे पविट्ठे तीसाए एकतीसाए वा ट्टाणं होदि । णवरि तित्थयराणं दुस्सर-अप्पमत्थविहायगदीणमुदओ णत्थि ।

संपहि एकत्तीसंपयडीणं णामणिदेमो कीरदे । तं जहा— मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयमरीर-समचउरसमंठाण-ओरालियमरीरंगोवंग-वज्जरिसहमंघडण-

इकतीस, ये आठ उदीरणास्थान होते हैं । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस व कामर्ण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण; इन वीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है । वह किसके होता है ? वह प्रतर व लोकपूर्ण समुद्घातगत सयोगकेवलीके होता है । वह यदि तीर्थकर होता है तो तीर्थकर प्रकृतिके साथ इक्कीस प्रकृति रूप स्थान होता है । कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवलीके औदारिकशरीर, [यदि वह तीर्थकर है तो] समचतुरस्रसंस्थान, तीर्थकर प्रकृतिके उदयसे रहित केवालियोंके छह संस्थानोंमेंसे कोई एक, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रपभसंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको वीस अथवा इक्कीस प्रकृति रूप स्थानमें मिला देनेपर छव्वीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है । दण्डसमुद्घातको प्राप्त केवलीकी अपेक्षा परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे किसी एकको ग्रहण कर छव्वीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थानोंमें मिला देनेसे अट्टाईस अथवा उनतीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं । विशेष इतना है कि तीर्थकरोंके एक प्रशस्त विहायोगतिका ही उदय होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त दो स्थानोंमें एक उच्छ्वास प्रकृतिको मिला देनेसे क्रमशः उनतीस और तीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं । भापापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर व दुस्वरमेंसे किसी एकके प्रविष्ट होनेपर तीस अथवा इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । विशेष इतना है कि तीर्थकरोंके दुस्वर और अप्रस्त विहायोगतिका उदय नहीं होता ।

अब इकतीस प्रकृतियोंके नामोंका निर्देश किया जाता है । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, औदारिक, तेजस, कामर्ण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रपभ-

वण्ण - गंध-रस-फाम-अगुरुअलहुअ-उवघाद - परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीर-थिराथिर - सुहासुह - सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति - णिमिणं-तित्थयरं चेदि एदाओ एकत्तीमपयडीओ तित्थयरो उदीरेदि । एदस्स कालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण गग्ग्मादिअट्टवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडो । सेसाणं ट्ठाणाणं कालो^१ जाणियूण वत्तच्चो ।

देवगदीए एकवीम-पंचवीम-सत्तावीस^२अट्टावीस-एगुणतीसउदीरणट्ठाणाणि हांति । तत्थ एकवीसाए पयडिपरूवणं कस्सामो । तं जहा—देवगइ-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइय मरीर - वण्ण-गंध-रस-फाम-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तम - वादर-पज्जत्त-थिरा-थिर-सुहासुह-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि । एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण एगस्समओ, उक्कस्सेण वे ममया । मरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियमरीर-सम-चउरममंठाण-वेउव्वियमरीरंगोवंग-उवघाद-पत्तेयमरीरेसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए ट्ठाणं होदि । मरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पविट्ठे अट्टावीसाए ट्ठाणं होदि । भापापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स मुस्सरे पविट्ठे एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ट्ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तणदसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तणतेत्तोसं सागरोव-संहनन, वण्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और तीर्थकर; इन इकतीस प्रकृतियोंकी उद्दीरणा तीर्थकर करते हैं । इसका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षतः गर्भसे लेकर आठ वर्षोंसे हीन एक पूर्वकोटि प्रमाण है । शेष स्थानोंके कालका कथन जानकर करना चाहिये ।

देवगतिमें इकीस, पचीस, सत्ताईस, अट्टाईस और उनतीस; ये पांच उद्दीरणास्थान हांत हैं । उनमें इकीस प्रकृति रूप स्थानकी प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— देवगति, पंचेन्द्रिय-जाति, तैजस व कामेण शरीर, वण्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण । इस स्थानका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है । शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वी-को कम करके वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येक-शरीर; इन पांच प्रकृतियोंको मिलानेपर पचीस प्रकृति रूप स्थान होता है । शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त होनेपर परघात और प्रशस्त विहायोगति, इन दो प्रकृतियोंको उपर्युक्त प्रकृतियोंमें मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वास प्रकृतिके प्रविष्ट होनेसे अट्टाईस प्रकृति रूप स्थान होता है । भापापर्याप्तसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके प्रविष्ट होनेसे उनतीस प्रकृतिरूप स्थान होता है । इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेनीस सागरोपम प्रमाण है । इन स्थानोंका एक जीवकी अपेक्षा

१ काप्रती 'सैसाणं कालो' इति पाठः । २ काप्रती 'सत्ताविस' इति पाठः ।

वमाणि । एदेसिं द्वाणाणमेयजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च जाणिदूण वत्तव्वं । गोदस्म णत्थि द्वाणउदीरणा । अंतराइयस्स एकं चेव द्वाणं । एवं द्वाणपरूवणा समत्ता ।

एत्तो भुजगारुदीरणा वुच्चदे । तं जहा — दंसणावरणीयस्स अत्थि भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरणाओ, अवत्तव्वउदीरणा णत्थि । एवं परूवणा समत्ता ।

एत्थ सामित्तं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं को उदीरगो ? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी मम्माइट्ठी वा । एवं सामित्तं समत्तं ।

कालो— भुजगार-अप्पदराणं जहण्णुकस्सेण एगसमओ । अवट्ठिदस्स जहण्णेण एग-ममओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं— एयजीवेण भुजगार-अप्पदराणमंतरं जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिद-उदीरणंतरं जहण्णुकस्सेण एगसमओ^१ । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे । तं जहा— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

कालो— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये । गोत्र कर्मकी स्थानउदीरणा सम्भव नहीं है । अन्तराय कर्मका एक ही स्थान है । इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां भुजाकारउदीरणाका कथन करते हैं । यथा— दर्शनावरणाय कर्मकी भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणायें हैं; अवक्तव्य उदीरणा नहीं है । इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां स्वामित्व— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन है ? अन्यतर मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

काल— भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्य और उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

अन्तर— एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

काल— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका काल सर्वदा है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

^१ ताप्रती 'भुजगारअप्पदराणमंतरं जहण्णुकस्सेण एगसमओ' इति पाठः ।

अंतरं— भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदाणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

अप्पाबहुअं— भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा । अवट्टिदउदीरया असंखेज्ज-
गुणा । एवमप्पाबहुअं समत्तं ।

मोहणीयस्स सामित्तं वुच्चदे— भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदाणमुदीरओ को होदि ?
अण्णदरो सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा । अवत्तव्वउदीरओ को होदि ? मणुसो वा मणुसिणी
वा देवो वा सम्माइट्ठी । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो— भुजगारउदीरओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि
समया । कुदो ? वेद-कसाय-भय-दुगुंछासु क्रमेण उदिण्णासु चदुण्णं समयाणमुवलंभादो ।
अधवा सेडीदो परिवदमाणस्स हस्स-रदीहि सह एको, भएण एको, दुगुंछाए एको,
कालगदस्स एको, एवं चत्तारि समया । अप्पदरस्स जहण्णमेगसमओ, उक्कस्सं तिण्णि
समया । अवट्टिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं— भुजगारस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।
एवमप्पदर-अवट्टिदाणं । अवत्तव्वं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्कस्समुवड्ढपोग्गलपरियट्ठं ।
एवमंतरं समत्तं ।

अन्तर— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका अन्तर नहीं है । इस प्रकार
अन्तर समाप्त हुआ ।

अल्पवहुत्व— भुजाकार और अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य होकर स्तोक हैं । अवस्थित
उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

मोहनीय कर्मके स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित
उदीरणाओंका उदीरक कौन होता है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि उनका उदीरक होता
है । अवक्तव्य उदीरक कौन होता है ? सम्यग्दृष्टि मनुष्य, मनुष्यनी और देव उमका उदीरक होता
है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— भुजाकार उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे
चार समय है, क्योंकि वेद, कपाय, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंकी क्रमसे उदीरणा होनेपर
चार समय पाये जाते हैं । अथवा श्रेणिसे नीचे गिरते हुए जीवके हास्य व रतिके साथ एक
समय, भयके साथ एक समय, जुगुप्साके साथ एक समय, तथा कालको प्राप्त हुएका एक
समय; इस प्रकार चार समय पाये जाते हैं । अल्पतरका काल जघन्यसे एक समय और
उत्कर्षसे तीन समय है । अवस्थितका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त प्रमाण
है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— भुजाकारका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे
अन्तमुहूर्त मात्र है । इसी प्रकार अल्पतर और अवस्थित उदीरणाका अन्तर है । अवक्तव्य
उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इस
प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

णणाजीवेहि भंगविचओ— भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदउदीरया गियमा अत्थि । मिया एदे च अवत्तव्वउदीरओ च, सिया एदे च अवत्तव्वउदीरया च, धुवससहिया तिण्णि । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

कालो— अवत्तव्वउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जा समया । सेमाणं सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो । अंतरं— अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि । सेसाणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

अप्पाबहुअं— अवत्तव्वउदीरया थोवा । भुजगारउदीरया अणंतगुणा । अप्पदर-उदीरया विसेसाहिया खवगसेडिं पडुच्च । अवट्टिदउदीरया अमंखेज्जगुणा । एवमप्पा-बहुअं समत्तं ।

पदणिकखेवो— उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो उवसामओ एगपयडिउदीरओ मदी देवो जादो, ताधे अट्ट उदीरेदि, तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । तस्सेव उक्कस्समवट्टाणं । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो मिच्छाट्टी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि, संपहि भय-दुगुंछाणं वेदगो, से काले पढमसमयसंजदो जादो भय-दुगुंछाणमवेदगो, तस्स मिच्छत्त-

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं । कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक एक, कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक बहुत, इस प्रकार इन दो भंगोंमें ध्रुवभंगको मिलानेपर तीन भंग होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग-विचय समाप्त हुआ ।

काल— अवक्तव्यउदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय प्रमाण है । शेष उदीरकोंका काल सर्वदा है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

अन्तर— अवक्तव्यउदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है । शेष उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व— अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं । उनसे भुजाकारउदीरक अनन्तगुणे हैं । उनसे क्षपकश्रेणिकी अपेक्षा अल्पतरउदीरक विशेष अधिक हैं । अर्थात् क्षपकश्रेणिमें मोहनीयका अल्प-तर पद ही होता है, भुजाकार पद नहीं होता ; इस अपेक्षासे भुजाकार उदीरकोंसे अल्पतर उदीरक विशेष अधिक कहे गये हैं । इनसे अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

पदानिक्षेप— उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो उपशामक एक प्रकृतिका उदीरक होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है, तब वह आठकी उदीरणा करता है, उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसीके [अनन्तर समयमें] उत्कृष्ट अवस्थान होता है । उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो मिथ्यादृष्टि अनन्तर समयमें संयमको प्राप्त होगा वह अभी भय व जुगुप्साका वेदक है, अनन्तर समयमें वह प्रथमसमयवर्ती संयत होकर उनका अवेदक हो जाता है, उस मिथ्यात्वसे

१ भुज० अप्प० अवट्टि० उदीर० गिय० अत्थि । सिया एदे च अवत्तव्वओ च सिया एदे च अवत्तव्वगा च भंगा तिण्णि ३ । जयध. अ. पं. ७६७.

पच्छायदस्स पढमसमयसंजदस्स उक्कस्सिया हाणी । एवं सामित्तं समत्तं ।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहियं । जहण्णिया वड्ढी जहण्णिया हाणी जहण्णमवट्ठाणं च एया पयडी । सेमं चित्तिय वत्तव्वं । एवं पदणिकखेवो समत्तो ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा— अत्थि मंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढिउदीरओ, एदेमिं चैव हाणीओ अवट्ठाणमवत्तव्वं च ।

अवत्तव्वउदीरया थोवा । संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढि-उदीरया अमंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया । अवट्ढिउदीरया अमंखेज्जगुणा । एवं णामकम्मस्स वि जाणिउण वत्तव्वं । पयडिउदीरणा समत्ता ।

ठिदिउदीरणा^१ दुविहा— मूलपयडिड्ढिदिउदीरणा उत्तरपयडिड्ढिदिउदीरणा चेदि । मूलपयडिड्ढिदिउदीरणा दुविहा— जहण्णिया उक्कस्सिया चेदि । तत्थ उक्कस्सिया ठिदि-उदीरणा णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तीमं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि उणाओ^२ । एवं णामा-गोदाणं । णवरि वीमं सागरोवमकोडाकोडीओ

आये हुए प्रथम समयवर्ती संयतके उत्कृष्ट हानि होती है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

हानि स्लोक है, उससे वृद्धि और अवस्थान दोनों समान होकर विशेष अधिक हैं । जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान एक प्रकृति स्वरूप हैं । शेष प्ररूपणा विचार कर करना चाहिये । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

यहां वृद्धिउदीरणा— संख्यातभागवृद्धिउदीरक और संख्यातगुणवृद्धिउदीरक हैं । इनकी ही हानियोंके उदीरक अर्थात् संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि उदीरक, अवस्थानउदीरक तथा अवक्तव्यउदीरक हैं ।

अवक्तव्यउदीरक स्लोक हैं । उनसे संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यात-गुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं । उनसे संख्यातभागहानिउदीरक विशेष अधिक हैं । अवस्थितउदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे नामकर्मकी भी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये । प्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई ।

स्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है—मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणा । मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है—जघन्य और उक्कृष्ट । उनमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण है । इसी प्रकार नाम और गोत्र कर्मकी भी स्थितिउदीरणा समझना चाहिये ।

१ संपत्ति ए उदए पओगओ दिस्सए उईरणा सा । सेची(वी)का-टिइहि ता जाहि तो तत्तिगा एसा ॥ क. प्र. ४,२९. तथा चाह— वा स्थितिरकालप्राप्तापि सती प्रयोगत उदीरणाप्रयोगेण संप्राप्त्युदए पूर्वोक्तस्वरूपे प्रक्षिप्ता सती दृश्यते केवल-चक्षुषा सा स्थित्युदीरणा (मलयगिरि) । २ तत्रोदए सति यासा प्रकृतीनामुत्कृष्टो बन्धः सम्भवति तासामुत्कर्षत आवलिकाद्रिकहीना सर्वाण्युत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या । क. प्र. ४,२९ (मलय.) ।

बेहि आवलियाहि ऊणाओ । उकस्सिया द्विदिउदीरणा मोहणीयस्स^१ सत्तरिसागरोवम-
कोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ । आउअस्स उकस्सिया ठिदिउदीरणा तेत्तीसं
सागरोवमाणि एगावलियाए ऊणाणि । एवमुक्कस्सिया द्विदिउदीरणा समत्ता ।

जहणिया द्विदिउदीरणा— णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहणद्विदि-
उदीरणा एया द्विदी । सा कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयखीणकसायस्स ।
मोहणीयस्स जहणिया द्विदिउदीरणा एगा द्विदी । सा कस्स ? समयाहियावलियचरिम-
समयसुहुमसांपराइयखवगस्स । वेदणीयस्स जहणिया द्विदिउदीरणा सागरोवमस्स
तिण्ण सत्त भागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणा । णामा-गोदाणं जहणिया
द्विदिउदीरणा अंतोमुहुत्तमेत्ता समयूणावलियाए ऊणा, अजोगिअद्दा चरिमफाली च होदि
त्ति भणिदं होदि । आउअस्स जहणिया द्विदिउदीरणा एगा द्विदी । तं कत्थ ?
मरणकाले समयाहियावलियसेसे । एवं मूलपयडिद्विदिउदीरणा समत्ता ।

उत्तरपयडीसु उक्कस्सिया द्विदिउदीरणा पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-
असादावेयणीय-पंचणमंतराइयाणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि

विशेषता यह है कि उनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन बीस कोडाकोड़ि सागरोपम
प्रमाण है । मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोडाकोड़ि सागरो-
पम प्रमाण है । आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवलीसे रहित तेतीस सागरोपम प्रमाण
है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्थितिउदीरणा— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी जघन्य स्थिति-
उदीरणा एक स्थिति मात्र है । वह किसके होती है ? वह जिसके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकपाय
होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके होती है । मोहनीयकी जघन्य स्थिति-
उदीरणा एक स्थिति मात्र है । वह किसके होती है ? वह जिस जीवके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-
सान्परायिक क्षपक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके होती है ।
वेदनीयकी जघन्य स्थितिउदीरणा सागरोपमके पत्योपमका असंख्यातवां भाग हीन तीन बटे सात
भाग(३) प्रमाण होती है । नाम और गोत्रकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक समय कम आवलीसे
हीन अन्तर्मुहूर्त मात्र होती है । अभिप्राय यह कि वह अयोगकेवलीके काल और अन्तिम फालि
रूप होती है ।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक स्थिति मात्र है । वह कहांपर होती है ? वह मरण-
समयमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर होती है । इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा
समाप्त हुई ।

उत्तर प्रकृतियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पांच अन्त-
रायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियों (बन्धावली और उद्यावली) से कम तीस कोडाकोड़ि

१ ताप्रती 'द्विदिउदीरणा । मोहणीयस्स' इति पाठः ।

ऊणाओ । सादस्स तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ^१ ।

मिच्छत्तस्स उक्खिसिया द्विदिउदोरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्खस्सद्विदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडाओ अंतोमुहुत्तूणाओ । सोलसणं कसायाणं उक्खस्सद्विदिउदीरणा चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ । णवणोकसायाणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ^२ । णिरय-देवाउआणं उक्खिसिया द्विदिउदीरणा तेत्तीससागरोवमाणि आवलिऊणाणि । तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तिण्णि पालदोवमाणि आवलियूणाणि ।

णिरयगइ-तिरिक्खगइ एइंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-हुंडसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुञ्जी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जीव-अप्प-सत्थविहायगइ-तम-थावर-बादर-पज्ज-पत्तेयसरीर-अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिण-णाचागोदाणमुक्खिसिया द्विदिउदीरणा वीसं सागरोवमकोडाकोडाओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ । मणुसगइ-पंचसंठाण-पंचसंघडण-पसत्थविहायगइ-थिरादि-सागरोपम प्रमाण है । साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियों (बन्धावली, संक्रमणावली और उदयावली) से हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है ।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियांस हीन सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा अन्तमुहूत कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । सोलह कपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमप्रमाण है । नौ नोकपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियोंसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है ।

नारकआयु और देवाउकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । तियेगायु और मनुष्यायुकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

नरकगति, तिर्यगति, एकेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कामण शरीर, हुण्डकसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगति व तिर्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । मनुष्यगति, पांच संस्थान, पांच संहनन, प्रशस्त विहायो-

१ येषां तु कर्मणां मनुजगति-सातावेदनीय... एकोनविंशत्संख्याकानामुदए सति संक्रमेणोत्कृष्टा स्थितिः, तेषामावलिकात्रिकहीना सर्वा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या, केवलं तानि कर्माणि वेदयमानानां वेदितव्या । क. प्र. (मलय) ४, ३२ । २ ओषेण मिच्छं उक्खिसिया द्विदिउदीरणा सत्तरिसागरावमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ । सम्मं सम्मामिं... । जयध. अ. प. ७९३ ।

छक-उच्चागोदानमुक्कस्मद्विदिउदीरणा वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ । देवगदि-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-देव-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहरणाणमुक्कस्मद्विदिउदीरणा वीसं कोडाकोडिसागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणाणि । आहारदुगस्स अंतोकोडाकोडिसागरोवमाणि उदीरणा । तिथ्यरस्स उक्कस्सिया द्विदिउदीरणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एवमुक्कस्सओ अद्धाच्छेदो ममत्तो ।

जहण्णए पयदं— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सम्मत्त-तिण्णिवेद-चत्तारिमंजलण^१-चत्तारिआउअ-पंचंतराइयाणं जहण्णिया द्विदिउदीरणा एगा द्विदी^२ । थीणगिद्वितिय-सादासाद-वारसकसाय-छण्णोकसाय^३-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-जादि-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ - तिरिक्ख-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव - थावर सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदानं जहण्णिया द्विदिउदीरणा सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा चत्तारि सत्त भागा वे सत्त भागा पलिदोवमस्स^४ असंखेज्जदिभागेण ऊणया । मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-

गति, स्थिर आदि छह और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियोंसे हीन वीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । देवगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, देवगति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वा, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर ; इनकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा अन्तर्मुहूर्त कम वीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । आहारद्विककी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा अन्तःकोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । तीर्थकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा पत्न्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । इस प्रकार उत्कृष्ट अद्धाच्छेद समाप्त हुआ ।

जघन्य अद्धाच्छेद प्रकृत है— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, तीन वेद, चार संज्वलन, चार आयु और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक स्थिति मात्र है । स्थानगृद्धि आदि तीन, साता व असाता वेदनीय, वारह कषाय, छह नोकषाय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जाति, पांच संहनन, तिर्यग्गति, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वा, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक सागरोपमके पत्न्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सात भागोंमेंसे तीन, चार और दो भाग (३, ३, ३) प्रमाण है । अर्थात् दर्शनावरण व वेदनीयकी प्रकृतियोंकी एक सागरके पत्न्योपमका असंख्यातवां भाग कम तीन बटे सात भाग प्रमाण, मोहनीयकी उत्तर प्रकृतियोंकी एक सागरके पत्न्योपमका असंख्यातवां भाग कम चार बटे सात भाग प्रमाण तथा नामकर्म और गोत्र कर्मकी उत्तर प्रकृतियोंकी एक सागरके पत्न्यका असंख्यातवां भाग कम दो बटे सात भाग प्रमाण जघन्य स्थितिउदीरणा होती है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कामण शरीर,

१ ताप्रती 'चत्तारिकसायसंजलण-' इति पाठः । २ ओषेण मिच्छ० सम्म० चदुमज्ज० तिण्णिवेद जह० द्विदिउदी० एया द्विदी समयाहियावलियद्विदी । जयध. अ. प. ७९३. ३ वारसक० छण्णोक० जह० द्विदिउदी० सागरोवमस्स चत्तारि सत्त भागा पलिदो० असंखे० भागेणूणा । जयध. अ. प. ७९३. ४ मतिपाठोऽयम् । उभयोरेव प्रत्योः 'सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा पलिदोवम०' इति पाठः ।

छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास- अगुरुअलहुअ-उव-
घाद-परघाद-उस्मास- दोविहायगइ-तस - वादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुभासुभ-
सुभग-सुस्मर-दुस्मर-आदेज्ज-जमगित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहणिया ठिदि-
उदीरणा अंतोमुहुत्तं । सा कत्थ ? सजोगिचरिमसमए । वेगुव्वियल्लकस्स जहणिया
ट्टिदिउदीरणा सागरोवममहस्स-वेसत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया ।
णवरि वेउव्वियमरीस्स सागरोवमस्स वे सत्त भागा देसूणा । उव्वेलणं पडुच्च सम्मा-
मिच्छत्तस्स जहणिया ठिदिउदीरणा सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण
ऊणयं^१ । सा पुण उव्वेल्लमाणेण सम्मामिच्छत्तपाओग्गजहणणट्टिदिसंतकम्मं कादृण
सम्मामिच्छत्ते पडिवण्णे तस्स चरिमसमए जहणिया ट्टिदिउदीरणा । आहारदुगस्स
जहणिया ट्टिदिउदीरणा अंतोकोडाकोडी । एवं जहणणट्टिदिअद्वाल्लेदो समत्तो ।

एत्तो सामित्तं— पंचणाणावरणीयाणं उक्खस्सट्टिदिउदीरओ को होदि ? जो
उक्खस्सट्टिदिं बंधिदृण आवलियादिकंतो एइंदिओ वा पंचिदियो वा पज्जत्तो वा अपज्जत्तो
वा । जदि अपज्जत्तो जाव आवलियतवभवत्थो त्ति उक्खस्सट्टिदिउदीरओ । अपज्जत्तो त्ति
वुत्ते कस्स गहणं ? गेरइओ वा वादरपत्तेयसरीरएइंदिओ गव्वोवकंतिओ णवुंसओ वा

उह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रपभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उप-
घात, परघात, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,
शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर और उच्चगोत्र; इनकी जघन्य
स्थितिउदीरणा अन्तःसंज्ञित काल प्रमाण है । वह कहांपर होती है ? वह सयोगकेवलीके अन्तिम
समयमें होती है । वैक्रियकशरीर आदि उह प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक हजार साग-
रोपमोंके सात भागोंमेंसे पत्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन दो भागप्रमाण है । विशेष इतना
है कि वैक्रियकशरीरकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे कुछ कम दो
भाग प्रमाण है । उद्वेलनाकी अपेक्षा सस्यग्मिभ्यात्वकी जघन्य स्थितिउदीरणा पत्योपमके
असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण है । परन्तु वह जघन्य स्थितिउदीरणा उद्वेलना-
को करनेवाले जीवके सस्यग्मिभ्यात्व गुणस्थानके योग्य जघन्य स्थितिमत्त्वको करके
सस्यग्मिभ्यात्वको प्राप्त होनेपर उसके अन्तिम समयमें होती है । आहारदिककी जघन्य स्थिति-
उदीरणा अन्तःकोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । इस प्रकार जघन्य स्थितिअद्वाल्लेदु समाप्त हुआ ।

यहां स्वामित्व— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता
है ? उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर जिसने आवली मात्र कालको विताया है ऐसा एकेन्द्रिय और
पंचेन्द्रिय, पर्याप्त व अपर्याप्त जीव उसका उदीरक होता । यदि अपर्याप्त है तो वह आवली
कालवर्ती तदभवस्थ होने तक उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है ।

शंका— 'अपर्याप्त' कहनेपर किसका ग्रहण किया गया है ?

समाधान— नारक, वादर प्रत्येकशरीर एकेन्द्रिय और गर्भोपक्रान्तिक नपुंसकका ग्रहण

धेत्त्वो । जहा णाणावरणीयस्स परुविदं तथा चत्तारिदंसणावरणीय-असादावेदणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-णिमिण-हुंडमंठाण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं च वत्तव्वं ।

सादस्स उक्कस्सद्विदिउदीरगो को होदि ? जो असादस्स उक्कस्सियं द्विदि बंधेदूण पडिभग्गो संतो सादं बंधमाणो आवलियूणमसादुक्कस्सद्विदि पडिच्छिय संकमणावलियकालं गमिय उदयावलियबाहिरसव्वद्विदीओ ओक्कड्डिय उदए णिसिचमाणो । एवं हस्स-रदि-पुरिम-इत्थिवेदाणं । थीणगिद्वितिय-णिहा-पयलाणमुक्कस्सद्विदिउदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सियं द्विदि बंधियूण पडिभग्गो संतो पंचणमेक्कदरपयडोए पवेसओ उदयावलिय-बाहिरसव्वद्विदीओ बंधावलियादिकंताओ ओक्कड्डियूण उदए संछुहमाणो । थीणगिद्वि-तियस्स उक्कस्सद्विदिउदीरओ^१ णियमा पज्जत्तओ । सम्मत्तस्स उक्कस्सद्विदिउदीरओ को होदि ? जो मिच्छत्तस्स उक्कस्सद्विदि बंधियूण अंतोसुहुत्तेण पडिभग्गो चैव सम्मत्तं पडिवण्णो तस्स विदियममयसम्माइद्विस्स । सम्मामिच्छत्तस्स सो चैव सम्माइद्वी सम्मामिच्छाइद्वी जादो, तस्स उक्कस्सद्विदिउदीरणा^२ ।

करना चाहिये ।

जिस प्रकार ज्ञानावरणायका उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, अज्ञाना वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, अरति शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, तेजस व कामेण शरीर, वणे, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, निर्माण, हुण्डकसंस्थान, नीचगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर प्रतिभन्न होकर साता वेदनीयको बांधता हुआ एक आवलीसे हीन असताकी उत्कृष्ट स्थितिको सातारूप संक्रान्त कर व मंक्रमणावलीकालको विताकर उदयावलीके बाहिरकी सब स्थितियोंका अपकर्षण करके उदयमें देता है वह साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । इसी प्रकार हास्य, रति, पुरुष और स्त्री वेदके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । स्यान-गृद्धि आदिक तीन, निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर प्रतिभन्न होता हुआ उक्त पांच प्रकृतियोंमेंसे किसी एकका उदीरक होकर बन्धावलीसे अतिक्रान्त उदयावलीके बाहिरकी सब स्थितियोंका अपकर्षण कर उदयमें दे रहा है वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । स्यानगृद्धि आदि तीनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक नियमसे पर्याप्तक जीव होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर अन्तर्मुहूर्तमें प्रतिभन्न होकर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है उसके सम्यग्गृष्टि होनेके द्वितीय समयमें सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा होती है । वही सम्यग्गृष्टि सम्यग्मिथ्यागृष्टि हो गया, तब उसके सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा होती है ।

१ काप्रती 'द्विदिउदीरणा णियमा', ताप्रती 'द्विदि उदीरणा (ओ)' इति पाठः । २ तथा सप्तसागरोपम-कोटीकोटीप्रमाणा मिथ्यात्वस्य स्थितिर्मिथ्यागृष्टिना सता चद्धा । ततोऽन्तर्मुहूर्तं कालं यावन्मिथ्यात्वमनुभूय सम्यक्त्वं प्रतिपद्यते । ततः सम्यक्त्वे सम्यग्मिथ्यात्वे चान्तर्मुहूर्तानां मिथ्यात्वस्थितिं सकलामपि संक्रमयति ।

चदुण्णमाउआणमुक्कस्मद्धिदिउदीरगो को होदि ? जो अप्पण्णो उक्कस्माउद्धिदोसु उववण्णो पढमसमयतव्वभवत्थो सो उक्कस्सियाए द्धिदीए उदीरओ । णिरयगदिणामाए उक्कस्सद्धिदीए उदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सद्धिदि बंधियूण णिरयगदीए उववण्णो जहण्णेण पंचमाए पुढवीए उक्कस्सेण सत्तमाए पुढवीए पढमसमयतव्वभवत्थो दुसमयतव्वभवत्थो तिसमयतव्वभवत्थो चदुसमयतव्वभवत्थो वि एवं^१ जाव आवलियतव्वभवत्थो त्ति उक्कस्मद्धिदीए उदीरओ^२ । तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सियाए द्धिदीए उदीरओ को होदि ? णियमा अपजत्तओ देवगइपच्छायदएइंदियो वा देव-णिरयगदिपच्छायद-गव्वभोवकंतिरिक्खजोणिणवुंसयवेदो वा । एवमेइंदियजादीए । णवरि देवपच्छायद-एइंदियस्सेव । पंचिंदियजादीए णाणावरणभंगो । णवरि एइंदियो त्ति ण वत्तव्वं ।

चार आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो अपनी अपनी उत्कृष्ट आयु-स्थितिमें उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ है वह उस उस आयुकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उसकी उत्कृष्ट स्थितिको वांचकर नरकगतिमें उत्पन्न हुआ है, वह जघन्यसे पांचवीं और उत्कृष्टसे सातवीं पृथिवीमें तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें, द्वितीय समयमें, तृतीय समयमें, चतुर्थ समयमें; इस प्रकार तद्भवस्थ होनेके आवली मात्र काल तक नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? नियमसे देवगतिसे लौटकर आया हुआ एकेन्द्रिय अपर्याप्त, अथवा देवगति व नरकगतिसे लौटकर आया हुआ गर्भोपक्रान्तिक तिर्यचयोनिवाला नपुंसकवैदी जीव तिर्यग्गतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे एकेन्द्रिय जाति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामीका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि देव पर्यायसे पीछे आये हुए एकेन्द्रिय जीवके ही उसकी उदीरणा सम्भव है । पंचेन्द्रिय जातिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामीका कथन ज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि यहां 'एकेन्द्रिय' यह नहीं कहना चाहिये । मनुष्यगति

संक्रमावलिक्वायां चातीतायासुदीरणायोग्या, तत्र संक्रमावलिक्वातिक्रमेऽपि सान्तर्मुहूर्तानेव । ततः सम्यक्त्व-मनुभवतः सम्यक्त्वस्यान्तर्मुहूर्ताना सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या । ततः कश्चित् सम्यक्त्वोऽप्यन्तर्मुहूर्तं स्थित्वा सम्यग्मिथ्यात्वं प्रतिपद्यते । ततः सम्यग्मिथ्यात्वमनुभवतः सम्यग्मिथ्यात्वस्यान्तर्मुहूर्तद्विक्रान्ता सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति । क. प्र. (मलय.) ४. ३२.

१ ताप्रती 'वि । एवं' इति पाठः । २ अद्वाच्छेओ सामित्ते पि य टिइसंक्रमे जहा नवर (रि) । तव्वेइसु निरयगइए वा वि तिसु द्धि (रे)ट्टिमखिइसु ॥ क. प्र. ४, ३२. नरकगते; अपिशब्दान्नरकानुपूर्वाश्च तिर्यक्, चेन्द्रियो मनुष्यो वात्कृष्टा स्थिति बद्ध्वा उत्कृष्टस्थितिबन्धानन्तरं चान्तर्मुहूर्तं व्यतिक्रान्ते सति तिसृष्वध्वस्तनपृथिवीषु मध्येऽन्यतरस्यां पृथिव्या समुत्पन्नः, तस्य प्रथमसमये नरकगतेरन्तर्मुहूर्तहीना सर्वापि स्थितिर्विशति-सागरोपमकीटीकोटीप्रमाणा उदीरणायोग्या भवति । अधस्तनपृथिवीत्रयग्रहणे कि प्रयोजनमिति चेदुच्यते— इह नरकगत्यादीनामुत्कृष्टा स्थिति बन्धनवश्यं कृष्णलेश्यापरिणामोपेतो भवति । कृष्णलेश्यापरिणामो-पेतश्च कालं कृत्वा नरकपूत्यद्यमानो जघन्यकृष्णलेश्यापरिणामः पंचमपृथिव्यामुत्पद्यते, मध्यमकृष्णलेश्यापरिणामः षष्ठपृथिव्याम्, उत्कृष्टकृष्णलेश्यापरिणामः सप्तमपृथिव्यामित्यध्वस्तनपृथिवीत्रयग्रहणम् । (मलय. टीका)

३ काप्रती 'देवा' इति पाठः ।

मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्टिदिउदीरगो को होदि ? जो मणुस्सो णिरयगइणामाए उक्कस्सयं ट्टिदिं वंधिदूण पडिभग्गो संतो मणुसगदिं वंधदि तस्स आवलियादिकंतस्स पडिच्छिदणिरयगदिउक्कस्सट्टिदिस्स मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्टिदिउदीरणा । देवगदि-णामाए उक्कस्साट्टिदिउदीरगो को होदि ? मणुस्सो वा तिरिक्खो वा णिरयगदिमंजुत्त-मुक्कस्सट्टिदिं वंधिदूण पडिभग्गो संतो ताथे चैव जो देवगदिं वंधिदूण अंतोसुहुत्तेण देवो^१ जादो तस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स^२ ।

जहा तिरिक्खगइणामाए तहा ओरालियसरीरणामाए । वेउच्चियसरीरस्स णिरय-गइभंगो । अहारसरीरणामाए उक्कस्सट्टिदिउदीरओ को होदि ? आहारसरीरस्स^५ तप्पाओग्गउक्कस्सट्टिदिसंतवम्मिओ पढमसमयआहारसरीरओ^६ । ओरालियसरीर-

नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो मनुष्य नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उससे भ्रष्ट होता हुआ मनुष्यगतिको बांधता है उसके नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिका मनुष्यगतिरूपसे संक्रमण होनेपर एक आवली कालके पश्चात् मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है । देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? मनुष्य और तिर्यच होता है, जो नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर भ्रष्ट होता हुआ उसी समयमें देवगतिको बांधकर अन्तर्मुहूर्तमें देव हो जाता है उसके देव होनेके प्रथम समयमें देवगतिकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा होती है ।

जिस प्रकार तिर्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाके स्वामीकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार आहारिकशरीरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? आहारशरीरका उदीरक तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके सत्त्ववाला प्रथम समयवर्ती आहारक-

१ ताप्रती -उक्कस्सट्टिदिमणुस- इति पाठः । २ मप्रतिपाटोऽयम् । उभयोरेव प्रत्योः 'अंतोसुहुत्तूण देवो' इति पाठः । ३ देवगति-देव-मणुयाणुपूर्वी आयाव-वंगल-सुहुमतिगे । अंतोसुहुत्तूणग्गो तावयगूणं तदुक्कस्स ॥ क. प्र. ४, ३३. देवगतिं चि— देवगत-देवानुपूर्वी-मनुष्यानुपूर्वीणामातपस्य विकलात्रकस्य द्वाग्नित्रय-त्रान्द्रिय-चतुर्निद्रयजातिरूपस्य सूक्ष्मात्रिकस्य च सूक्ष्म-साधारणापर्याप्तकलक्षणस्य (१०) स्व-स्वोदये वर्तमान अन्तर्मुहूर्त-भग्ना उत्कृष्टस्थितिबन्धाध्यवसायादनन्तरमन्तर्मुहूर्त काले यावत् परिभ्रष्टाः सन्तस्तावदूनामन्तर्मुहूर्ताना तदुत्कृष्टां देवगत्यादीनामुत्कृष्टां स्थितिरुदीरयन्ति । इयमत्र भावना— कश्चित्त्थाविधपरिणामाविशेषभावतो नरकगतेउत्कृष्टा स्थिति विशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा बन्धा ततः शुभपरिणामविशेषभावतो देवगतेरुत्कृष्टां स्थिति दश-सागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा बद्धुमारभते । ततस्तस्यां देवगतिस्थितौ बध्यमानायामावलिकाया उपरि बन्धा-वलिकाहीनामावलिकात उपरितनी सर्वापि नरकगतिस्थिति संक्रमयति । ततो देवगतेरपि विशतिसागरोपम-कोटीकोटीप्रमाणा स्थितिरावलिकामात्रहीना जाता । देवगति च बध्नन् जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त काले यावद् बध्नाति । बन्धानन्तर च काले कृत्वाऽनन्तरसमये देवो जातः । ततस्तस्य देवत्वमनुभवतो देवगतेरन्तर्मुहूर्ताना विशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा उत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोभ्या भवति । (मलय. टीका). ४ उभयोरेव प्रत्योः 'आहारसरीरदुग्गस्स' इति पाठः ।

५ ताप्रती 'आहारसरीर (?) ।' इति पाठः । ६ तथाहारकसप्तकमप्रमत्तं सता तद्योग्योत्कृष्टसंक्लेशेनो-त्कृष्टस्थितिकं बद्धम्, तत्कालोत्कृष्टस्थितिकं (स्व) मूलप्रकृत्यभिन्नप्रकृत्यन्तरदलिकं च तत्र संक्रमितम्,

अंगोवंगणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? देवो णएइओ वा उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण तिरिक्खजोणिगब्भोवकंतियणवुंसए उववण्णो तस्स जाव आवलियतब्भवत्थस्से त्ति ओरालियंगोवंगणामाए उक्कस्सिथा ट्ठिदिउदीरणा । जहा वेउव्वियाहारसरीरणं तहा तेसिमंगोवंगणामाणं । जहा पंचण्णं सरीरणं तहा पंचबंधण-संवादाणं पि परूवणा कायव्वा ।

पंचसंठाणेसु जस्स जस्स इच्छिज्जदि तस्स तस्स संठाणस्स वेदगो उक्कस्सियं ठिदिं कादूण आवलियादिकंतमुदीरेदि । जहा ओरालियसरीरअंगोवंगणामाए तहा असंपत्त-सेवट्टसंघडणामाए वत्तव्वं । सेसाणं पंचण्णं संघडणाणं जहा पंचण्णं संठाणाणं कदं तहा कायव्वं । जहा णिरयगई तहा णिरयाणुपुव्वीए । जहा तिरिक्खगई तहा तिरिक्खिणाणु-पुव्वीए । जहा देवगई तहा देवाणुपुव्वीए मणुसाणुपुव्वीए च^१ ।

जहा धुवउदीरयाणं पयडीणं तहा उवघादणामाए परघादणामाए उस्सासणामाए च । उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण अमरंतो चेव आवलियादिकंतमुदीरेदि त्ति वत्तव्वं । एव-

शरीरी होता है । औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक देव अथवा नारक जीव होता है, जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर तिर्यच योनिवाल गर्भोप-क्रान्तिक नपुंसकमें उत्पन्न हुआ है उसके उक्त भवमें स्थित होनेके आवली मात्र कालके भीतर औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है । जिस प्रकार वैक्रियिक और आहारकशरीर सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे उनके आंगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये । जैसे पांच शरीरोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही पांच बन्धन और पांच संघात नामकर्मोंके सम्बन्धमें भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

पांच संस्थानोंमेंसे जिस जिसकी विवक्षा हो उस संस्थानका वेदक जीव उत्कृष्ट स्थिति-को करके आवली मात्र कालको विताकर उसका उदीरक होता है । जैसे औदारिकशरीरांगोपांग नाम-कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन किया गया है वैसे ही असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये । शेष पांच संहननोंका कथन पांच संस्थानोंके समान करना चाहिये । नरकगत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । तिर्यग्गत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यचगतिके समान है । देवगत्यानुपूर्वी और मनुष्यगत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ।

उपघातनामकर्म, परघात नामकर्म और उच्छवास नामकर्मकी प्ररूपणा धुवउदीरणावाली प्रकृतियोंके समान है । मात्र उनकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर मरणसे रहित होता हुआ एक आवलीके ततस्तत्सर्वोत्कृष्टान्तःसागरोपमकोटीकोटीस्थितिकं जातम् । बन्धानन्तरं चान्तमुहूर्तमतिक्रम्याहारकसरीरमारभते । तच्चारभमाणो लब्धुपजीवनेनोत्सुक्यभावतः प्रमादभागभवति । ततस्तस्य प्रमत्तस्य सत आहारकसरीरमुत्पादयत आहारकसरोरसप्तकस्यान्तमुहूर्तोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या । अथ प्रमत्तस्य सत आहारकसरीरारम्भकत्वा-दुत्कृष्टस्थित्युदीरणास्वामी प्रमत्तसंयत एवं वेदितव्यः । क. प्र. (मलय.) ४, ३३. १ देवगति-देव-मणुयाणुपुव्वी आयाव-विगल-सुहुमतिगे । अंतोमुहुत्तभग्गा तावयगृणं तहुक्कस्सं ॥ क. प्र. ४, ३३.

मुज्जोवणामाए । णवरि उत्तरविउच्चिददेवस्स । आदावस्स देवपच्छायदपुढविकाइयस्स सरीर-
पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स तप्पाओग्गमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेमाणस्स' । पसत्थापसत्थविहायगइ-
णामाए उस्सासभंगो' । णवरि एदासिं पयडीणं जो वेदओ तत्थ वत्तव्वं ।

तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरणामाणं जहा धुवउदीरणापयडीणं परूविदं तथा
परूवेयव्वं । थावरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा [कस्स] होदि ? जो देवो उक्क-
स्सियं द्विदि वंधिदृण मदो एइंदिएमु उववण्णो तस्स जाव आवलियतभवत्थो त्ति ताव
उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा । सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं उक्कस्सट्ठिदिमुदीरओ को
होदि ? जो वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वंधिदृण पणिभग्गो संतो अप्पिदपयडीओ
बंधिय उक्कस्सियं पडिच्छिय अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरे-
सुप्पणपढमसमयतभवत्थो उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो । एइं वेइंदि य-तेइंदि य-चउरिदि यणामाणं
पि वत्तव्वं ।

बाद उसकी-उदीरणा करता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकारसे उद्योत नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट
स्थिति उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उसकी उदीरणा उत्तर
विक्रियायुक्त देवके होती है । आतप नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा देव पर्यायसे पीछे
आये हुए पृथिवीकायिक जीवके शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त होकर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा
करते समय होती है । प्रशस्त और अप्रशस्त विहायोगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा उच्छ्वास नाम-
कर्मके समान है । विशेषता इतनी है कि इन प्रकृतियोंका जो जीव वेदक है उसके कहना चाहिये ।

त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर नामकर्मों सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा
जैसे ध्रुव-उदीरणावाली प्रकृतियोंकी की गई है वैसे करना चाहिये । स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट
स्थितिकी उदीरणा किसके होती है ? जो देव उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर मरणको प्राप्त हो एकेन्द्रियों-
में उत्पन्न हुआ है उसके आवली मात्र कालवर्ती तद्भवस्थ रहने तक उसकी उत्कृष्ट स्थिति-
उदीरणा होती है । सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक
कौन होता है ? जो जीव वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिको बांधकर प्रतिभन्न होता
हुआ विवक्षित प्रकृतियोंको बांधकर उत्कृष्ट स्थितिको संक्रान्त कर अन्तर्मुहूर्त स्थित रहकर सर्वलघु
कालमें सूक्ष्म अपर्याप्त साधारणशरीरवालोंमें उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुआ है
वह उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और
चतुरिन्द्रिय नामकर्मोंकी भी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ एवमातपादीनामप्यन्तर्मुहूर्तोना उत्कृष्टा स्थितिरुदीरणा भावनीया । ननुदयसंक्रमोत्कृष्टस्थितीना
प्रकृतीनामन्तर्मुहूर्तोना उत्कृष्टस्थितिरुदीरणायोग्या भवतु, आतपनाम तु बन्धोत्कृष्टम्, ततस्तस्य बन्धोदयावलिक्का-
द्विकरहितैवोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या प्राप्नोति, कथमुच्यतेऽन्तर्मुहूर्तोनेति ? उच्यते— इह देव एवोत्कृष्टे
संकलेदो वर्तमान एकेन्द्रियप्रायोग्याणामातप-स्थावरैकेन्द्रियजातीनामुत्कृष्टां स्थितिं बध्नाति, नान्यः । स च
तां बध्वा तत्रैव देवमन्तर्मुहूर्त कालं यावदवतिष्ठते । ततः कालं कृत्वा बादरपृथिवीकायिकेषु मध्ये समुत्पद्यते ।
समुत्पन्नः सन् शरीरपर्याप्त्या पर्याप्त आतपनामोदये वर्तमानस्तद्दुदीरयति । तत एवं सति तस्यान्तर्मुहूर्तोनेवो-
त्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति (मलय, टीका) । २ काप्रती 'उक्कस्सभंगो' इति पाठः ।

थिर-सुभ-सुभग-सुस्वर-आदेज्ज-जसगितीणमुक्कस्मट्टिदिउदीरगो को होदि ? जो उक्कस्मट्टिदिं बंधिदूण पडिभग्गो होदूण बंधावलियादिकंतं पडिच्छिय मंक्रमणावलिया-दीदमदुयावलियावाहिरमोक्कट्टियूण उदए देदि मो उक्कस्मट्टिदिउदीरओ । अथिर-असुह-दूभग-दुस्वर-अणादेज्ज-अजसगितीणं जहा धुवउदीरयाणं तहा कायव्वं । णवरि सुस्वर-दुस्सराणमपज्जत्तकाले गत्थि उदीरणा । तित्थयस्स [उक्कस्मट्टिदि] उदीरगो को होदि ? जो पढमसमयकेवली तप्पाओग्गुक्कस्सट्टिदिमंतकम्मिओ^१ । उच्चागोदस्स उक्कस्सट्टिदि-उदीरगो को होदि ? जो णीचागोदस्स उक्कस्सट्टिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो^२ उच्चागोदस्सेव वेदओ तस्स उक्कस्मट्टिदिउदीरणा । एवं उक्कस्ससामित्तं ।

एत्तो जहण्णसामित्तं उच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-छद्मसणावरणीय-पंचंत-राइयाणं जण्णट्टिदिउदीरगो को होदि ? जो समयाहियावलियाचरिमसमयछद्मत्था^३ । खीणकसायम्मि णिहा-पयलाणमुदीरणा गत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीहि^४ मह जहण्णसामित्तं वत्तव्वं^५ । तिण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्ण-

स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर व उससे प्रतिभन्न होकर बन्धावलीसे अतिक्रान्त स्थितिको संक्रान्त कर संक्रमणावलीके बाद उद्यावलीसे बाह्य स्थितिका अपकरण कर उद्यमें देता है वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति; इनकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका कथन ध्रुवउदीरणावाली प्रकृतियोंके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा अपर्याप्तकालमें नहीं होती । तीर्थकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिसत्त्ववाला प्रथम समयवर्ती केवली तीर्थकर प्रकृतिका उदीरक होता है । उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उच्चगोत्रका ही वेदक नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उससे प्रतिभन्न हुआ है उसके उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्त्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वामित्त्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसा छद्मस्थ जीव उपर्युक्त प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है । क्षीणकपाय गुणस्थानमें निद्रा और प्रचलाकी उदीरणा नहीं है, ऐसा कहनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे उनकी उदीरणाके जघन्य स्वामित्त्वका कथन निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्थानगृद्धि प्रकृतियोंके साथ करना चाहिये । तीन

१ तित्थयस्स य पल्लाम्मिज्जद्दं × × × ॥ क. प्र. ४, २४. इह पूर्व तीर्थकरनामः स्थिति शुभैरध्यवसायैरपवर्त्यापवर्त्य पर्योपमासख्येयभागमात्रा शेषाकृता । ततोऽनन्तरसमये उपन्नकेवलज्ञानः सन्तामुदारयति । उदीरयतश्च प्रथमसमये उत्कृष्टोदीरणा । सर्वदेव चैयन्मात्रैव स्थितिरुत्कृष्टा तथैकरनाम उदीरणाप्रायोग्या प्राप्यते, नाधिकेति । (मलय.). २ ताप्रतौ 'पडिभागे सते' इति पाठः ।

३ छद्मस्थखीणरागे षडुदस समयाहियालिंगटिइए । क. प्र. ४, ४२. ४ काप्रतौ 'मभिप्पाएण गिद्धीहि', ताप्रतौ 'मभिप्पाएण [थीण-] गिद्धीहि' इति पाठः । ५ इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्ताए (उ) पाउग्गा ।

द्विदिउदीरओ को होदि ? जो पञ्जत्तो हदसमुप्पत्तियकम्मणेण सव्वचिरं कालं जहण्ण-
द्विदिसंतकम्मस्म हेट्ठा बंधिदूण तदो तं चेव जहण्णसंतकम्मं बंधिय पुणो तत्तो उवरिच्छ
द्विदि बंधमाणस्म आवलियमेत्ते काले गदे तिण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णद्विदि-
उदीरणा । सादस्स जहण्णद्विदिउदीरगो को होदि ? जो वादरएइंदिओ हदसमुप्पत्ति-
एण कम्मणेण सव्वचिरं जहण्णद्विदिमंतादो हेट्ठा बंधिदूण से काले उवरिं बंधिहिदि ति
तदो मदो सण्णीसु उववण्णो, तत्थ असादं सव्वचिरं बंधियूण सादस्स बंधगो जादो,
तस्स सादं बंधमाणस्म गमिदावलियकालस्स सादस्स जहण्णिया द्विदिउदीरणा । एव-
मसादस्स वि वत्तव्वं । णवरि सण्णीसुप्पण्णो मंतो सादं बंधावेयव्वो, तदो सादबंधगद्वाए
उक्कस्मियाए गदाए असादं बद्धं, तदो आवलियमधिच्छिदूण जहण्णद्विदिमसादस्स
उदीरेदि ति वत्तव्वं ।

दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो पर्याप्त जीव हतममुत्पत्तिक
कर्मके साथ सर्वाचिरकाल (दीर्घ अन्तर्मुहूर्त काल) तक जघन्यस्थितिसत्त्वसे कम बांधकर, पुनः उसी
जघन्य स्थितिसत्त्वके कर्मको बांधकर, तत्पश्चात् ऊपरकी स्थितिको बांधता हुआ जब आवली मात्र काल
विताता है तब उसके तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है । साता-
वेदनीयकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो वादर एकेन्द्रिय जीव हतममुत्पत्तिक कर्मके
साथ सर्वाचिरकाल जघन्य स्थितिसत्त्वसे कम बांधकर, अनन्तर कालमें अधिक स्थितिको बांधेगा
कि इसी बीचमें मरकर संज्ञी जीवोंमें उत्पन्न हुआ, फिर उनमें सर्वाचिरकाल तक असाता वेदनीयको
बांधकर साता वेदनीयका बन्धक हुआ है, उसके साताको बांधते हुए आवली मात्र कालके वीतनेपर
साता वेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । इसी प्रकार असाता वेदनीयके विषयमें भी कहना
चाहिये । विशेष इतना है कि संज्ञियोंमें उत्पन्न होते हुए उसे साता वेदनीयका बन्ध कराना चाहिये,
तत्पश्चात् उत्कृष्ट साताबन्धककालके वीतनेपर जो असाताका बन्धक हुआ है वह आवली मात्र कालको
विताकर असाता वेदनीय सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा करता है, ऐसा कहना चाहिये ?

निहा-पयल्लणं खीणराग-खवगे परिच्चज्ज ॥ क. प्र. ४, १८, ईदिप त्ति—इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्ताः सन्तो द्वितीय-
समयादारभ्येन्द्रियपर्याप्त्यनन्तरसमयादारभ्येत्यर्थः निन्दा-प्रचल्योरुदीरणाप्रायाग्या भवन्ति । किं सर्वेऽपि ?
नेत्याह—खीणरागान क्षपकाश्च परित्यज्य । उदीरणा हि उदये सातं भवति, नान्यथा । न च क्षणराग-क्षपकयोर्निन्दा-
प्रचलोदयः सम्भवति, “निहादुगस्स उदओ खीणग-खवगे परिच्चज्ज” इति वचनप्रमाण्यात् । तदस्तान् वर्जयित्वा
शेषा निन्दा-प्रचलयोरुदीरका वेदितव्याः । (मलय, टीका)।

१ थावरजह असंतेण समं अहि (हा) गं व धंधतो ॥ गंतूणावलमित्तं कमायचारसग-मय-दुग(गु) छाणं ।
निहाय (इ) पच्चगस्स य आयावुज्जायनामस्स ॥ क. प्र. ४, ३४-३५.

२ भावना त्वियम्— एकेन्द्रियो जघन्यस्थितिसत्त्वका एकेन्द्रियभवाद्बुद्धृत्य पर्याप्त-संज्ञिपंचेन्द्रियेषु मध्ये
समुत्पन्नः, उत्पत्तिप्रथमसमयादारभ्य च सातवेदनीयमनुभवन् असातवेदनीयं बृहत्तरमन्तर्मुहूर्तकालं यावद्
वप्राति । ततः पुनरपि सातं बद्धुमारभते । ततो बन्धावलिकायाश्चरममये पूर्ववद्धस्य सातवेदनीयस्य जघन्या
स्थित्युदीरणां करोति । एवमसातवेदनीयस्यापि दृष्टव्यम् । केवलं सातवेदनीयस्थानेऽसातवेदनीयमुच्चारणीयम्,
असातवेदनीयस्थाने सातवेदनीयमिति । क. प्र. (मलय.) ४, ३७.

मिच्छत्तस्स जहण्णाट्टिउदीरगो को होदि ? जो दंसणमोहणीयउवसामगो समय-
हियावलयचरिमसमयमिच्छाइट्ठी । सम्मत्तस्स जहण्णाट्टिउदीरगो को होदि ? जो
समयाहियावलयचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणिजो^१ । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाट्टि-
उदीरगो को होदि ? जो अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छाइट्ठी एइदियं गंतूण तत्थ
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उव्वेह्लिय तदो तसेसु
उववण्णो, तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवमट्टिदि-
संतकम्मेण सह सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो तस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स जहाण्णया
ट्टिदिउदीरणा^२ । तसेसु चेव उव्वेह्लाविय^३ सम्मामिच्छत्तं किण्ण णीदो ? ण, एइदिएसु
उव्वेह्लिदसम्मामिच्छत्तट्टिदिसंतकम्मस्सेव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणसागरो-

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो जीव दर्शनमोहनीयका
उपशामक है उसके मिथ्यादृष्टि रहनेके अन्तिम समयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष
रहनेपर मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थितिका
उदीरक कौन होता है ? जिसके दर्शनमोहनीयके क्षीण होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल
शेष रहा है वह उसकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका
उदीरक कौन होता है ? जो अट्ठाईस प्रकृतियोंके सत्त्ववाला मिथ्यादृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें जाकर
वहां पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालके द्वारा सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्वेलना करके
पश्चात् त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त काल रहकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक
सागरोपम प्रमाण स्थितिसत्त्वके साथ सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है; उस अन्तिम समयवर्ती
सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है ।

शंका—त्रस जीवोंमें ही उद्वेलना कराकर सम्यग्मिथ्यात्वको क्यों नहीं प्राप्त कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिसने एकेन्द्रियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वकी उद्वेलना की है
उसके ही पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र स्थितिसत्त्वके शेष रहनेपर

^१ मिच्छत्तस्स जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा कम्म ? अण्णदरस्स मिच्छाइट्ठिस्स उवसमसम्मत्ताहिमुहम्म समय-
हियावलयपट्टमट्टिदिउदीरगस्स तम्म जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा । सम्मत्तस्स जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा कम्म ?
अण्णदरस्स दंसणमोहववयस्स समयहियावलयउदीरगस्स । जयध. अ. प. ७९.४. समयहिगात्तिगाए
पट्टमट्टिइए उ सेसवेत्ताए । मिच्छत्ते वेएसु य संजल्लणामु वि च सम्मत्ते (त्तं) ॥ क. प्र. ४, ३०.

^२ सम्मामिच्छत्तजहण्णिया ट्टिदिउदीरणा कम्म ? अण्णदरो जो मिच्छाइट्ठी वेदगपाओग्गजहण्णाट्टिदिसंत-
कम्मिओ सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो अंतोमुहुत्तं विगट्ठं सम्मामिच्छत्तद्धमणुपालिय चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स
तस्स जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा । जयध. अ. प. ७९.४. पट्टासंखियमाणु पुदही एगिदियागए मिस्से । क. प्र. ४, ४०.
पल्योपमासंख्येयभागेण न्यूनं यदेकं सागरोपमं तावन्मात्रसम्यग्मिथ्यात्वस्थितिसत्त्वकर्मा एकेन्द्रियभवाद्दुद्घृत्य
संज्ञिपंचेन्द्रियमध्ये समायातः । तस्य यतः समयादारभ्यान्तर्मुहूर्तानन्तरं सम्यग्मिथ्यात्वस्थोदीरणाऽपगमिध्यति
तस्मिन् समये सम्यग्मिथ्यात्वप्रतिपन्नस्य चरमसमये सम्यग्मिथ्यात्वस्य जघन्या स्थित्युदीरणा । एकेन्द्रियसत्त्व-
जघन्यस्थितिसत्त्वकर्मणश्च सकाशादधो वर्तमानं सम्यग्मिथ्यात्वमुदीरणायोग्यं न भवति, तावन्मात्रस्थितिके तस्मिन्नवश्यं
मिथ्यात्वोद्यमसम्भवतस्तदुद्वलनसम्भवात् (मलय.) । ३ उभयोरेव प्रत्योः 'वउव्वेह्लाविय' इति पाठः ।

वममेत्तद्विदिसंतकम्मे सेसे सम्मामिच्छत्तग्गहणपाओग्गस्सुवलंभादो^१ । जो पुण तसेसु एइंदियद्विदिसंतसमं सम्मामिच्छत्तं कुणइ मो पुव्वमेव सागरोवमपुधत्ते सेसे चेव तदपाओग्गो होदि ।

वारमणं कमायाणं जहण्णद्विदिउदीरगो को होदि ? जो वादरेइंदियो पज्जत्तो मव्वविसुद्धो हदसमुपपत्तियकमेण जहण्णद्विदिसंतकम्मस्स हेट्ठा मव्वचिरं बंधिऊण से काले ममद्विदिं वा उवरिं वा बंधिय तदो आवलियसुवरिं गदस्स जहण्णिया द्विदिउदीरणा वारमणं कमायाणं होदि^२ । कोधसंजलणस्स जहण्णद्विदिउदीरणा कस्स होदि ? खवओ वा उवमामओ वा जो कोधवेदओ से काले उदय-उदीरणाओ वोच्छिज्जिहिंति त्ति तस्स जहण्णिया द्विदिउदीरणा । माणसंजलणस्स जहण्णद्विदिउदीरणा कस्स ? खवगो वा उव-सामगो वा जो माणवेदओ से काले उदय-उदीरणाओ वोच्छिज्जिहिंति त्ति तस्स जहण्ण-द्विदिउदीरणा । मायासंजलणाए जहण्णद्विदिउदीरया वि^३ एवं चेव वत्तव्वा । लोभसंजल-णस्स जहण्णद्विदिउदीरओ को होदि ? समयाहियावलियचरिमसमयसकमाओ^४ ।

सम्यग्मिध्यात्वके ग्रहणकी योग्यता पायी जाती है । परन्तु जो त्रस जीवोंमें एकेन्द्रियके स्थितिसत्त्वके बराबर सम्यग्मिध्यात्वके स्थितिसत्त्वको करता है वह पहिले ही सागरोपमपृथक्त्व प्रमाण स्थितिके शेष रहनेपर ही उसके ग्रहणके अयोग्य हो जाता है ।

वारह कपायोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त सर्वविशुद्ध जीव हतसमुत्पत्तिक क्रमसे जघन्य स्थितिसत्त्वके नीचे सर्वचिर काल तक बांधकर अनन्तर समयमें समान स्थिति अथवा अधिक स्थितिको बांधकर उससे आगे एक आवली मात्र काल उपर गया है उसके वारह कपायोंकी जघन्य स्थितिउदीरणा होती है । संज्वलनक्रोधकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? जो क्षपक अथवा उपशामक क्रोधवेदक जीव अनन्तर कालमें उदय व उदीरणाकी व्युच्छित्ति करेगा उसके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । संज्वलनमानकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? जो क्षपक अथवा उपशामक मानवेदक जीव अनन्तर कालमें उदय व उदीरणाकी व्युच्छित्ति करेगा उसके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । इसी प्रकारसे संज्वलनमायाकी जघन्य स्थितिके उदीरकोंका भी कथन करना चाहिये । संज्वलनलोभकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती सकपाय रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है वह उसकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है । हास्य व रति सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी

१ प्रत्योरुभयोरेव - 'पाओग्गाणुवलंभादो' इति पाठः । २ वारसक० जह० द्विदिउदी० कस्स ? अण्णद० वादरेइंदियस्स हदसमुपपत्तियस्स जावदि मक्कं ताव संतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण समद्विदि वा बंधिदूण संतकम्मं वोलेदूण वा आवलियादीदस्स । जयध, अ, प, ७९४, ३ ताप्रतौ 'उदीरया त्ति' इति पाठः । ४ च्चदुसंज० जह० द्विदिउदीर० कस्स ? अण्णद० उवसामगस्स वा खवगन्म वा अपपण्णो कमाएहिं सेटिमारूदस्स समयाहियावलियउदी० तस्स जह० । जयध, अ, प, ७९४,

हस्स-रदीणं सादभंगो । अरदि-सोगाणमसादभंगो । भय-दुगंछाणं चारसकसायभंगो । तिण्णं वेदाणं कोधसंजलणस्स भंगो । णवरि जस्स जस्स वेदस्स इच्छिज्जदि तस्स तस्स वेदस्सुदण्ण खवगुवसामगसेडीयो चढाविय समयाहियावलियचरिमममयसवेदस्स जहण्ण-ट्टिदिउदीरणा वत्तव्वा ।

आउआणं जहण्णट्टिदिउदीरणा कस्स ? समयाहियावलियचरिमममयतवभवत्थस्स । णिरयगइणामाए जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा कस्स ? जो असण्णिपंचिदियो तप्पाओग्गजहण्ण-ट्टिदिसंतकम्मिओ तप्पाओग्गुक्कस्सियाए ट्टिदीए पढमपुढविणेरइएसु उववण्णो तस्स चरिम-ममयणेरइयस्स जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा । तिरिक्खगइणामाए जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा कस्स ? जो तेउकाइयो वा वाउकाइयो वा हदसमुत्पत्तिकम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्टिदिमंतकम्म-स्स हेट्ठा वंधिदूण सण्णिपंचिदियतिरिक्खेसुववण्णो, उप्पण्णपढमसमए चेव मणुसगइबंधगो जादो, पुणो तं सव्वचिरं वंधिऊण तदो तिरिक्खगई बद्धा^१ तस्सावलियकालं वंधमाणस्स तिरिक्खगईए जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा^२ । तेउकाइय-वाउकाइयपच्छायदो तिरिक्खगई

उदीरणाका कथन सानावेदनीयके समान है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन असातावेदनीयके समान है । भय व जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन बारह कपायोंके समान करना चाहिये । तीन वेदोंकी प्ररूपणा संज्वलनक्रोधके समान है । विशेष इतना है कि जो जो वेद अभीष्ट हो उस उस वेदके उदयसे क्षपक अथवा उपशम श्रेणिपर चढ़ाकर अन्तिम समयवर्ती सवेद रहनेमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये ।

आयु कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके आयु कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । नरकगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणा किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य स्थिति-सत्कर्मवाला असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके साथ प्रथम पृथिवीके नारक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती नारक जीवके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । तिर्यच-गति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? जो तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचर काल तक जघन्य स्थितिसत्त्वके नीचे बांधकर संज्ञो पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही मनुष्यगतिका बन्धक हुआ है, पश्चात् सर्वचर काल तक उसे बांधकर जिसने तिर्यचगतिका बन्ध किया है, आवली मात्र काल तक बांधनेवाले उसके तिर्यचगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । तेजकायिक और वायुकायिक

१ काप्रती 'बद्धो' इति पाठः । २ तथा तेजस्कायिको वायुकायिको वा वादरः सर्वजघन्यस्थितिसत्कर्मार्थात्त-संज्ञि-तिर्यक्पंचेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पन्नः । ततो बृहत्तरमन्तर्मुहूर्तं कालं यावन्मनुजगतिं बध्नाति । तद्बन्धानन्तरं च तिर्यग्गतिं बद्धुमारभते । ततो बन्धावलिकायाश्चरमसमये तस्यास्तिर्यग्गतेर्जघन्यां स्थित्युदीरणा करोति । क. प्र. (मन्त्र्य,) ४, ३७.

चेव अंतोसुहुत्तं बंधदि त्ति भणंतबंधसामित्तेण^१ णेदस्स विरोहो, तत्थ णियमाभावादो । मणुमगईए जहणिया द्विदिउदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । जहा णिरयगईए तथा देवगईए वत्तव्वं^२ । णवरि तत्पाओग्गेण जहण्णाद्विदिमंतकम्मेण असण्णिपंचिदियो तत्पाओग्गउक्कस्सद्विदिमंतकम्मिण्णसु देवेषु उप्पादेदव्वो । चट्टुजादिणामाणं वादरेइंदियं मच्चविसुद्धपरिणामेण कयजहण्णाद्विदिसंतकम्मं सग-सगजादिमुप्पादिय पडिवक्खबंध-गद्धाओ वोलाविय अप्पिदजादि बंधमाणस्स पढमावलियचरिमसमए जहण्णाद्विदिउदीरणा वत्तव्वा । पंचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं जहण्णाद्विदिउदीरणो को होदि ? चरिमसमयसजोगिकेवली । वेउच्चियसरीरस्स जहण्णाद्विदिउदीरओ को होदि ? जो एइंदियो वेउच्चियसरीरस्स तत्पाओग्गजहण्णाद्विदिमंतकम्मिओ विउच्चिदुत्तरसरीरो तस्स^५ चरिमसमए जहणिया द्विदिउदीरणा । आहारसरीरस्स जहणिया द्विदिउदीरणा

जीवोंमेंसे पीछे आया हुआ जीव अन्तर्मुहूर्त काल तक तिर्यचगतिको ही बांधता है, इस प्रकारकी प्ररूपणा करनेवाले बन्धम्यामित्वके साथ इसका कोई विरोध नहीं है, क्योंकि, वहाँ ऐसा नियम नहीं है। मनुष्यगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? उसकी उदीरणा अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है । जैसे नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कही गई है वैसे ही देवगति सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्वके साथ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट आर्युस्थितिसत्त्ववाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये । सर्वाविशुद्ध परिणामके द्वारा किये गये जघन्य स्थितिसत्त्वसे संयुक्त बादर एकेन्द्रियको उस उस जातिवाले जीवोंमें उत्पन्न कराकर प्रतिपक्ष जातियोंके बन्धककालको विताकर विचाक्षत जाति नामकर्मको बांधनेवाले उस उस जीवके प्रथम आवलीके अन्तिम समयमें एकेन्द्रिय आदि चार जाति नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय जाति, आहारिक, तेजस व कार्मण शरीर इनकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवली जीव उनकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है । वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? वैक्रियिकशरीरके तत्प्रायोग्य स्थितिसत्त्ववाले जिस एकेन्द्रिय जीवने उत्तर शरीरकी विक्रिया की है उसके उत्तर शरीरकी विक्रियाके अन्तिम समयमें वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । आहारकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा

१ तिरिवखगइ-ओरालियहुग-तिरिवखगइपाओग्गानुपुव्वी-णीचागोडाणं सांतर-णरंतरो, तेउ-वाउकाइयाणं तेउ-वाउकाइय-सत्तमपुट्ठवणेरइएहितो आगंतूण पंचिदियतिरिवख-तप्पजत्त-जोगिणीसु उप्पण्णं सणक्कुमारादि-देव-णेरइएहितो तारवखेसुप्पण्णाणं च णिरंतरबंधदसणादो । प. खं. पु. ८, पृ. १२१. २ अमणागयस्स चिरट्टिइ अंत (ते) सुर-नरयगइ-उव्वगाणं । अणुपुव्वीतिसमइणे नराण एगिदियागयणे ॥ क. प्र. ४, ३८. ३ उभयोरेव प्रत्योः 'जहण्णओद्विदि' इति पाठः । ४ उभयोरेव प्रत्योः 'विउच्चिदुत्तरसरीरोत्तरस्स' इति पाठः । ५ एतदुक्तं भवति— बादरवायुकायिकः पत्योपमासख्येयभागहीनसागरोपमद्वि-सप्तभागप्रमाणवैक्रियिक-पट्टकजघन्यस्थितिसत्त्वकर्मा बहुशो वैक्रियमारस्य चरमे वैक्रियारम्भे चरमसमये वर्तमानो जघन्यां स्थित्युदीरणां करोति । अनन्तरसमये च वैक्रियिकपट्टकमेकेन्द्रियसत्त्वजघन्यसत्त्वकर्मापेक्षया स्तोक्तरमिति कृत्वा उदीरणा-योग्यं न भवति, किन्तूद्वलनायोग्यम् । क. प्र. (मलय.) ४, ४०.

कस्स ? जो आहारसरीरस्स तप्पाओगेण जहणणेण द्विदिसंतकम्भेण आहारसरीरमुट्ठावेंतस्स मच्चमहंतीए उत्तरविउव्वणद्वाए चरिमसमए होदि । कस्स पुण जहणणद्विदिसंतकम्भं वुच्चदे ? जो चत्तारिवारे क्कमाए उव्वसामेदूण पच्छा दंमणमोहणीयं खवेदूण देवेषु तेत्तीससागरोवमिएसु उव्वण्णो तत्तो चुदो मणुस्सेसु संजमं पुव्वकोडिकालमणुपालेउण तदो पुव्वकोडीए अंतोमुहुत्तावसेमाए आहारएण उत्तरं विउव्विदो सच्चमहंतीए विउव्वणद्वाए चरिमसमये जहणणद्विदिसंतकम्भं । जधा आहारसरीरस्स तथा तदंगोवंगस्स वि वत्तव्वं । जधा ओरालियसरीरस्स तथा तदंगोवंगस्स सजोगिचरिमसमए वत्तव्वं । वेउव्वियअंगोवंगस्स णिरयगदिभंगो । जधा पचण्णं सरीराणं तथा तेषिं बंधण-संधादाणं परुवेयव्वं । छसंठाण-वज्जरिसहसंधडणाणं जहणणद्विदिउदीरणा कस्स ? चरिमसमयमजोगस्स । पंचण्णं संघडणाणं भण्णमाणे एइंदिएसु तप्पाओग्गजहणणद्विदि कादूण सण्णीसु अप्पिद-मंधडणेणुप्पादिय अवेदिज्जमाणमंधडणाणि सच्चचिरं बंधाविय तदो जं वेदेदि तं पच्छा

किसके होती है ? जो जीव आहारशरीरके तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्वके साथ आहारक-शरीरको उत्पन्न कर रहा है उसके सबसे महान् उत्तर विक्रियाकालके अन्तिम समयमें उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है ।

शंका— जघन्य स्थितिसत्त्व किस जीवके होता है ?

समाधान— जो जीव चार चार कपायोंको उपशमा कर पश्चात् दर्शनमोहनीयका क्षय करके तेनीस सागरोपम स्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, तत्पश्चात् वहांसे च्युत होकर मनुष्योंमें पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन करके पूर्वकोटिमें अन्तमेहूर्तके शेष रहनेपर जो आहारकशरीरके साथ उत्तर विक्रियाको प्राप्त हुआ है, उसके सबसे महान् विक्रियाकालके अन्तिम समयमें उसका जघन्य स्थितिसत्त्व होता है ।

जिस प्रकार आहारकशरीर सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे उसके अंगोपांगकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । जैसे औदारिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कही गई है वैसे ही उसके अंगोपांगकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संयोगकेवलीके अन्तिम समयमें कहनी चाहिये । वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी प्ररूपणा नरकगतिके समान करना चाहिये । पांच शरीरों सम्बन्धी बन्धनों और संघातोंकी प्ररूपणा उन पांच शरीरोंके ही समान करना चाहिये । इह संस्थानों और वज्रपभसंहनन सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? उनकी जघन्य स्थिति उदीरणा अन्तिम समयवर्ती संयोगकेवलीके होती है । पांच संहननोंकी प्ररूपणा करते समय एकेन्द्रिय जीवोंमें तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिको करके संज्ञी जीवोंमें विवक्षित संहननके साथ उत्पन्न कराकर उदयमें न आनेवाले संहननोंको सर्वचिर काल तक बंधाकर पश्चात् जिस संहननका वेदन करता है उसे पीछे बंधाना चाहिये, उसके प्रथम

बंधावेयवं, पढमसमयपबद्धस्स आवलियकाले गदे तस्स जहणिया द्विदिउदीरणा^१ ।
वण्ण-गंध-रस-फासाणं जहण्णद्विदिउदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । गिरयाणु-
पुच्चीए जहण्णद्विदिउदीरणा कस्स ? असण्णिपच्छायदस्स तप्पाओग्गजहण्णद्विसंत-
कम्मस्स दुसमयणेरइयस्स । मणुस्साणुपुच्चीए जहण्णद्विदिउदीरणा कस्स ? जो बादरे-
इंदिओ हदसमुत्पत्तियकम्मेण सच्चचिरं जहण्णद्विसंतकम्मादो [हेट्टा] बंधिदूण से काले
संतकम्मस्स उवरि बंधिहिदि त्ति मणुस्सो जादो तस्स दुसमयमणुस्स जहण्ण-
द्विदिउदीरणा^२ । जहा देवगदिणामाए जहण्णसामित्तं परूविदं तथा देवगइपाओग्गाणु-
पुच्चीणामाए परूवेयवं । णवरि देवेसुपण्णविदियसमाए जहण्णसामित्तं वत्तवं ।
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चीजहण्णद्विदिउदीरणाए को सामी ? जो तेउकाइयो वाउ-
काइयो वा सच्चविसुद्धो सच्चजहण्णेण द्विदिसंतकम्मेण मदो सण्णित्तिरक्खजोणिएसु
विग्गहगदीए उववण्णो तस्स विदियसमयतवभवत्थस्स । अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-
उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस - बादर - पजत्त - पत्तेयसरीर-थिराथिर - सुहासुह-

समयमें बांधनेके पश्चात् आवली मात्र कालके वीतनेपर उसके विवक्षित संहनन सम्बन्धी
जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श सम्बन्धी जघन्य स्थिति-
उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है । नरकगत्यानु-
पूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? वह असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये
हुए ऐसे तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्व युक्त द्वितीय समयवर्ती नारक जीवके होती है । मनुष्य-
गत्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? जो बादर एकेन्द्रिय जीव हत-
समुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल तक जघन्य स्थितिसत्त्वसे कर्मको बांधकर अनन्तर कालमें
उक्त स्थितिसत्त्वके ऊपर बांधेगा कि इस बीचमें जो मनुष्य हुआ है उसके मनुष्य भवके द्वितीय
समयमें जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । जिस प्रकार देवगति नामकर्मके जघन्य स्वामित्वकी
प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा
करना चाहिये । विशेष इतना है कि देवोंमें उत्पन्न होनेके द्वितीय समयमें जघन्य स्वामित्व
कहना चाहिये । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाका स्वामी कौन है ?
जो सर्वाविशुद्ध तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव सर्वजघन्य स्थितिसत्त्वके साथ मरकर विग्रह-
गति द्वारा संज्ञी तिर्यचयोनि जीवोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें
तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । अगुरुलघु, उपघात,
परघात, उच्छ्र्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,

१ वेयणिया (य) नोकसाया सम्मत्त-संघडणपंच-नीयाणं । तिरियदुग-अयस-दूभगणाइजाणं च संनिगए ॥
क. प्र. ४, ३७. संहननपंचकस्य तु मध्ये वेद्यमानं संहननं मुक्त्वा शेषसंहननानां प्रत्येकं बन्धकालोऽतिदीर्घो
वक्तव्यः । ततो वेद्यमानसंहननस्य बन्धे बन्धावलिकाचरमसमये जघन्या स्थित्युदीरणा । (मलय.). २ एकेन्द्रियः
सर्वजघन्यमनुष्यानुपूर्वीस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्धृत्य मनुष्येषु मध्ये उत्पद्यमानोऽपान्तरालगतौ वर्तमानो
मनुष्यानुपूर्व्यास्तृतीयसमये जघन्यस्थित्युदीरणास्वामी भवति । क. प्र. (मलय.) ४, ३८.

मुभग-मुस्मर-दुस्मर-आदेज्ज-जमगित्ति-तित्थयर-णिमिणणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि ? चरिममयसजोगी^१ । आदावणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो वादरपुढविजीवो पज्जत्तओ हदममुप्पत्तिएण सव्वचिरं हेट्ठा वधियूण तदो उवरिं वा समट्ठिदियं वा वंधिय आवलियादिकंतस्म^२ आदावणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा । उज्जोवणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्म ? जो वादरेइंदिओ पज्जत्तयदो हदममुप्पत्तिय-कम्मेण सव्वचिरं हेट्ठदो वधिय पुणो उवरि समट्ठिदियं वा वंधिय आवलियादिकंतस्म^३ । थावर-सुहुम-अपज्जत्त-माहारणणामकम्माणं जहण्णट्ठिदिउदीरणाए एइंदियस्म^४ सामित्तं वत्तव्वं । दुभग-अणादेज्ज-अजमगित्तीणमेइंदियस्म हदममुप्पत्तियकम्मेण पंचिदिएसुप्पाइय पडिवक्खवंधगद्दाओ गालिय तदो आवलियादीदस्म वत्तव्वं । णीचागोदस्म तिरिक्खगइ-भंगो । उच्चागोदस्म जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्म ? चरिममयसजोगिस्स^५ । गदीमु

अस्थिर, शुभ, अशुभ, मुभग, मुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थकर और निर्माण; इन नाम-कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उद्दीरक कौन होता है ? उनका उद्दीरक अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवली होता है । आतप नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिका उद्दीरक कौन होता है ? जो वादर पृथिवी-कायिक पर्याप्त जीव हतममुत्पत्तिक कर्मसे सर्वोच्च काल तक कमको बांधकर पश्चात् उससे अधिक अथवा समान स्थितिको बांधकर आवली मात्र कालको विताता है उसके आतप नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उद्दीरणा होती है । उद्योत नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उद्दीरणा किसके होती है ? जो वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हतममुत्पत्तिक कर्मसे सर्वोच्च काल कमको बांधकर, फिर उससे अधिक अथवा समान स्थितिको बांधकर आवली मात्र कालको विताता है उसके उद्योत सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उद्दीरणा होती है । स्यावर, मूक्षम, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी उद्दीरणाका स्वामित्व एकेन्द्रिय जीवके कहना चाहिए । दुभग, अनादेय और अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी उद्दीरणाके स्वामित्वका कथन ऐसे एकेन्द्रिय जीवके करना चाहिये जिसने हतममुत्पत्तिक कर्मके साथ पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धकवालोको गलाकर पश्चात् आवली मात्र कालको विताया है । नीच गोत्र सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उद्दीरणाकी प्ररूपणा तीर्थचगतिके समान करना चाहिये । उच्चगोत्र सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उद्दीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोग-केवलीके होती है । गतियोंमें जानकर जघन्य स्थिति-उद्दीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस

१. सेसाणुदीरणंते मिण्णमुहुनोटिईकालो ॥ क. प्र. ४, ४२. शेषाणां च प्रकृतीनां मनुजगति-पंचेन्द्रियजाति-प्रथममहन्नोदारिकममक-संस्थानपट्कोपघात - परघातोच्छ्वास-प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगति - त्रम - वादर-पर्याप्त-प्रत्येक-मुभग-मुस्वगदेय-यशःकीर्ति-तार्थकरोच्चैर्गोत्र-दुःस्वरलक्षणानां द्वात्रिंशत्प्रकृतीनां पूर्वोक्तानां च नामध्रुवो-दीरणानां त्रयन्त्रिंशत्प्रकृतीनां सर्वसखया पंचपट्टिसखयानां सयोगिकवल्लिचरमसमये जघन्या स्थित्युद्दीरणा । तस्याश्च जघन्यायाः कालो भिन्नमुद्दृतांस्तमुद्दृतामित्यर्थः । (मलय.). २ ताप्रती 'आवलियादिकं [तो-] तस्स' इति पाठः । ३ काप्रती 'उदीरणा एइंदियस्म', ताप्रती 'उदीरणा० एइंदियस्स' इति पाठः । ४ काप्रती

जाणिदूण पेदव्वं । एवं जहण्णद्विदिउदीरणा समत्ता ।

एयजीवेण कालो— पंचणाणावरणीयस्स उक्कस्सद्विदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सद्विदिउदीरणाए कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । जहा णाणा-वरणीयस्स तहा सव्वासि धुवउदयपयडीणं^१ वत्तव्वं । दंमणावरणपंचयस्स उक्कस्स-अणुक्कस्सद्विदिउदीरणकालो जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । णवरि उक्कस्सस्स^२ एगावलिया, उक्कस्सद्विदिबंधकाले णिहादिपंचयस्स उदयाभावादो । मादस्स उक्कस्सद्विदि-उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सद्विदिउदीरणकालो जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण छम्मामा । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं । अमादस्स उक्कस्सद्विदिउदीरणकालो जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सद्विदिउदीरणकालो जहण्णेण एगमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं मागरोवमाणि मादिरेयाणि । जहा अमादस्स तहा अरदि-मोगाणं वत्तव्वं ।

मोलमकमाय-भय-दुगुच्छाणमुक्कस्साणुक्कस्सठिदीणमुदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सम्मत्तस्स उक्कस्सद्विदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगममओ । प्रकार जघन्य स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— पांच ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल तक होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अमंख्यात पुद्गलपरिवर्तनस्वरूप अनन्त काल है । जैसे ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन किया गया है वैसे ही सब ध्रुवोद्गी प्रकृतियोंकी भी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन करना चाहिये । पांच दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । विशेष इतना है कि इनकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल एक आवली प्रमाण है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिबन्धके कालमें निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उदय सम्भव नहीं है । सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । जिस प्रकार साताकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन किया है उसी प्रकार हास्य और रति प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन करना चाहिये । असाता-वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम है । जैसे असातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही अरति और शोककी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

सोलह कषाय, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितियोंकी उदीरणा काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका

१ ताप्रती 'धुवउत्तरपयडीणं' इति पाठः । २ ताप्रती 'उक्कस्स०' इति पाठः ।

अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि देख्णाणि । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । णवुंसयवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । इत्थिवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

चट्ठुण्हमाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो णिरय-देवाउआणं जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि आवलियूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियआवलियाए ऊणाणि । तिरिक्खाउअस्स अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियआवलियाए ऊणाणि । मणुस्माउअस्स अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियावलियाए ऊणाणि ।

काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम छ्वांसठ सागरोपम है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अमंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली प्रमाण है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्न्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । पुरुषवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

चार आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । नारकायु और देवायुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यतः एक आवलीसे कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षतः एक समय अधिक आवलीसे हीन तेत्तीस सागरोपम है । तिर्यच-आयुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पत्न्योपम है । मनुष्यआयुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पत्न्योपम प्रमाण है ।

णिरयगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण तेत्तीभं सागरोवमाणि । तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । मणुमगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा^१ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि^२ ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । देवगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगममओ । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा जहण्णेण दसवाममहस्साणि समयूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीभं सागरोवमाणि ।

एइंदियजादिणामाए तिरिक्खगइभंगो । वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियणामाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुदाभवग्गहणं समऊणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वामसहस्साणि । पंचदियजादिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुदाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं वा, उक्कस्सेण सागरोवममहस्सं

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली मात्र काल तक होती है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है । तिर्यचगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली तक होती है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली काल तक होती है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पत्योपम प्रमाण काल तक होती है । देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा जघन्यसे एक समय कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है ।

एकेन्द्रियजाति नामकर्मकी प्ररूपणा निर्यचगतिके समान है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष है । पचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे

१ ताप्रती 'उदीरणाकालो' इति पाठः । २ ताप्रती 'अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो' इति पाठः ।

पुव्वकोट्टिपुधत्तेणभहियं ।

ओरालियसरीरणामाए उक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए उक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए उक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । ओरालियसरीरणंगोवंगणामाए उक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । वेउव्विय-आहारसरीरणंगोवंगणामाणं वेउव्विय-आहार-सरीरणामाणं भंगो । पंचबंधण-पंचसंघादणामाणं पंचसरीरणं भंगो ।

पंचणं संठाणाणं उक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो समचउरससंठाणस्स' जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेवट्टिसागरोवम-सदं सादिरेयं । सेसाणं चदुण्णं संठाणाणं जहण्णेण एगसमओ,

क्षुद्रभवग्रहण अथवा अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक एक हजार सागरोपम है ।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । वैक्रियकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । औदारिक-शरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पत्योपम मात्र है । वैक्रियक और आहारक शरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा वैक्रियक और आहारक शरीर-नामकर्मके समान है । पांच बंधन और पांच संघात नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है ।

पांच संस्थान नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उनमें समचतुरस्रसंस्थानकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपमप्रमाण है । शेष चार संस्थानोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं । हुंडसंठाणस्स उक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । छण्णं संघडणाणमुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण सादिरेयाणि । सेसाणं पंचण्णं संघडणाणमणुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ।

तिण्णमाणुपुव्वीणामाणमुक्कस्साणुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया । णवरि मणुस्स-देवाणुपुव्वीणमुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए उक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया । अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया ।

उवघाद-परघाद - उस्सास-उज्जोव - अप्पमत्थविहायगइ-तम-पत्तेयसरीर-दुभग-अणा - देज्ज-दुस्मरणामाणं णीचागोदस्म उक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ; दुभग-अणादेज्ज-

हुण्डकसंस्थानकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । छह संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । इनमें वज्रर्षेभवज्रनाराचसंहननकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पर्योपम मात्र है । शेष पांच संहननोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । विशेष इतना है कि मनुष्यानुपूर्वी और देवानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय है ।

उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, प्रत्येकशरीर, दुर्भग, अनादेय और दुस्वर नामकर्मोंकी तथा नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा काल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि इनमें दुर्भग, अनादेय व नीचगोत्रको छोड़कर शेष प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी

णीचागोदवजाणमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदण तदो अणुक्कस्समेगसमयमुदीरिय कालगदस्स विग्गह-
गदस्स च, दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुण उत्तरविउव्विदस्स तदुवलंभादो । णवरि
तसणामाए अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण उवघादणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, परघाद-
उस्सास-अप्पमत्थविहायगइ-दुस्सरणं च तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, उज्जोवणामाए
देसूणतिण्णिपलिदोवमाणि, तसणामाए वे सागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि, पत्तेय-
सरीरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमसंखेज्जा
पोग्गलपरियट्ठा ।

आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णु-
क्कस्सेण एगममओ । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,
उक्कस्सेण चावीसवामसहस्साणि देसूणाणि । सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं जहण्णकालो
अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं,
साहारणसरीरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

पमत्थविहायगइ-जसगित्ति-सुभगादेज्जणामाणमुच्चागोदस्स य एदेसिं कम्माणमु-
क्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एसममओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदि
उदीरणकालो पमत्थविहायगइ-जसगित्ति-सुभगादेज्जाणं जहण्णेण एगममओ । उक्कस्सेण

उदीरणा करके तत्पश्चात् उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी एक समय उदीरणा करके कालको प्राप्त होकर
विग्रहको प्राप्त हुए जीवके उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका उपर्युक्त एक समय मात्र काल पाया
जाता है; तथा दुभग, अनादेय और नीचगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका वह एक समय
रूप काल उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त हुए जीवके पाया जाता है । विशेष इतना है कि
त्रस नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है । उत्कर्षसे अनुत्कृष्ट
स्थिति-उदीरणाका काल उपघात नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग; परघात, उच्छ्वास,
अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वरका कुल कम तेतीस सागरोपम; उद्योत नामकर्मका कुल कम
तीन पत्त्योगम, त्रस नामकर्मका साधिक दो हजार सागरोपम, प्रत्येकशरीर नामकर्मका अंगुलके
असंख्यातवें भाग; तथा दुभग, अनादेय और नीचगोत्रका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल
जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । उनमें अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल आतप नामकर्मका
जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुल कम चाईस हजार वर्ष प्रमाण है; सूक्ष्म, अपर्याप्त व
साधारण नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है । उत्कर्षसे वह
सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा साधारणशरीर
नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग है ।

प्रशस्त विहायोगति, यशकीर्ति, सुभग व आदेय नामकर्मकी तथा उच्चगोत्र इन कर्मकी
उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । अनुत्कृष्ट
स्थिति-उदीरणाका काल प्रशस्त विहायोगति, यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मका जघन्यसे

पसत्थविहायगईए तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, जसगित्ति-सुभगादेज्जाणं सागरो-
वममदपुधत्तं । उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

थावरणामाए उक्कस्मट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण
एगावलिया । अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा
पोगलपरियट्टा । बादर-पजत्तणामाणमुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ,
उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं^१ । उक्कस्सेण
बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जादिभागो, पजत्तणामाए वेसागरोवमसहस्साणि । थिर-
सुभाणमुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलिया^२ ।
अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा
पोगलपरियट्टा । तित्थयरस्स उक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।
अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ।
एवमुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो समत्तो ।

जहण्णट्टिदिउदीरणकालो वुच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-
सादासाद-सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-चदुमंजलणाणि तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-

एक समय है । उत्कर्षसे वह प्रशस्त विहायोगतिका कुछ कम तेतीस सागरोपम तथा यशकीर्ति,
सुभग और आदेय नामकर्मोका सागरोपमशतपृथक्त्व मात्र है । उच्चगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थिति-
उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक
आवली है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे
असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । बादर और पर्याप्त नामकर्मोकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल
जघन्यसे अन्तमुहूर्त मात्र है । तथा उत्कर्षसे वह बादर नामकर्मोका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण
और पर्याप्त नामकर्मोका दो हजार सागरोपम है । स्थिर और शुभ नामकर्मोकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा-
का काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली प्रमाण है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका
काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है । तीर्थकर
प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-
उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । इस प्रकार
उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञाना-
वरणीय, चार दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व,

१ 'अणुक्कस्सट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं' इत्येतावानयं पाठ उभयोरेव प्रत्योरनुपलभ्यमानो
मप्रतितोऽत्र योजितः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'आवलियाए' इति पाठः ।

सोग-चत्तारिगदि-पंचजादि-पंचसरीर-तिण्णिअंगोदंग-पंचसरीरबंधण-पंचसंघाद-छसंठाण-
छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चत्तारिआणुपुच्चि-अगुरुअलहुअ - उवघाद-परघाद - उस्सास-
पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरोर-थिरादि-
छजुगला तित्थयर-णिमिण-उच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं चदुण्णमाउआणं जहण्णट्टिदि-
उदीरणकालो जहण्णक्कस्सेण एगसमओ ।

अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो पंचणाणावरणीय-चउदसंणावरणीय-पंचंतराइय-तेजा-
कम्मइयमरीर-वण्णचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-अगुरुअलहुअ-णिमिणणामपयडीणं अणादिओ
अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो वा । सादासादाणं अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो
जहण्णेण एगममओ । उक्कस्सेण सादस्स छम्मासा, असादस्स तेत्तीससागरोवमाणि
अंतोमुहुत्तब्भहियाणि ।

मिच्छत्तस्स अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्ज-
वसिदोत्ति तिण्णि भंगा । तत्थ जो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,
उक्कस्सेण उवढ्ढपोग्गलपरियट्टं । चउसंजलणाणमजहण्णट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण
एगममओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । हस्म-रदि-अरदि-सोगाणं अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो
जहण्णेण एगममओ । उक्कस्सेण हस्म-रदीणं छम्मासा, अरदि-सोगाणं तेत्तीसं सागरो-
वमाणि सादिरेयाणि । इत्थिवेदस्म अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ,

चार संज्वलन, तीन वेद, हास्य, रति, अरति, शोक, चार गतियां, पांच जातियां, पांच शरीर,
तीन अंगोपांग, पांच शरीरबन्धन, पांच संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस,
स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति,
त्रस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर आदि छह
युगल, तीर्थकर, निर्माण, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और पांच अन्तराय तथा चार आयु कर्म; इनकी
जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है ।

अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय,
तेजस व काम्मण शरीर, वर्णादिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरुलघु और निर्माण नाम-
कर्मका अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित है । साता व असाता वेदनीयकी अजघन्य
स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह सातावेदनीयका छह मास
और असातावेदनीयका अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोप प्रमाण है ।

मिथ्यात्वकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाके कालके अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित
और सादि-सपर्यवसित, ये तीन भंग हैं । इनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे
अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपाधे पुद्गलपरिवर्तन है । चार संज्वलन कपायोंकी अजघन्य स्थिति-
उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । हास्य, रति, अरति और
शोककी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह हास्य व रतिकी
छह मास तथा अरति व शोकका साधिक तेतीस सागरोपमप्रमाण है । स्त्रीवेदकी अजघन्य स्थिति-

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । णवुंसयवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । सम्मत्तस्स अजहण्णद्विदिउदीरणाकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण छावट्ठिमागरोवमाणि समयाहियावलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

णिरयाउअस्स जहण्णेण दसवाससहस्साणि समयाहियावलियूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियावलियूणाणि^१ । देआउअस्स णिरयाउअभंगो । मणुमाउअस्स अजहण्णद्विदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि ममयाहियावलियूणाणि^२ । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण खुदाभवग्गहणं ममयाहियावलियूणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियावलियूणाणि ।

णिरय-देवगइणामाणमजहण्णद्विदिउदीरणाकालो जहण्णेण दसवस्समहस्साणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि । तिरिक्ख-मणुमगइणामाणं जहण्णेण खुदाभवग्गहणं, उक्कस्सेण जहाकमेण अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा तिण्णि पलिदोवमाणि पुच्चकोडिपुधत्तेण-

उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । उक्त काल पुरुषवेदका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व मात्र है । नपुंसकवेदका उक्त काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिध्यात्वकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है ।

नारकायुकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अधिक आवलीसे हीन दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है । देवायुकी उक्त प्ररूपणा नारकायुके समान है । मनुष्यआयुकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम प्रमाण है । तिर्यचआयुकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यतः एक समय अधिक आवलीसे हीन क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम प्रमाण है ।

नरकगति और देवगति नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे दस हजार वर्ष और उत्कर्षतः तेतीस सागरोपम प्रमाण है तिर्यचगति और मनुगति नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तथा पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । एकेन्द्रियजाति

१ ताप्रती 'समयाहियावलियूणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि' इति पाठः । २ ताप्रती 'समयाहियावलियूणाणितिण्णि पलिदोवमाणि' इति पाठः ।

व्भहियाणि । एइंदियजादिणामाए अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुदाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अमंखेज्जा लोगा । वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादीणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । णवरि पंचिंदियजादिणामाए संखेज्जाणि मागरोवमाणि ।

ओरालियसरीरणामाए अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स अमंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं मागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तिण्णमंगोवंगणमणुक्कस्सभंगो । पंचसंघाद-पंचबंधणाणं पि^१ मग-सगसरीरभंगो । ममचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेवट्टि-सागरोवममदं सादिरेयं । हुंडसंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स अमंखेज्जदिभागो । सेसाणं मंठाणाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं । वज्जरिमहवइरणारायण-णामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणव्भहियाणि । सेसाणं संघडणाणं अजहण्णट्टिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण

नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रह और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । विशेष इतना है कि पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उक्त उदीरणाका काल उत्कर्षसे संख्यात सागरोपम प्रमाण है ।

औदारिकशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । आहार-शरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । तीन आंगोपांग नामकर्मकी अजघन्य स्थिति उदीरणाका काल उनकी अनुकृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालके समान है । पांच मंघातों और पांच बन्धनोंकी भी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल अपने अपने शरीरनामकर्मके समान है । समचतुरम्रसंस्थान नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है । हुण्डक-भंस्थान नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । शेष संस्थानोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है । वज्रपंभवज्रनाराचसंहनन नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पत्थोपम प्रमाण है । शेष संहननोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय

^१ मप्रतिपाटोऽयम् । काप्रती 'पंचसंघादपंचसंघडणाणं पि', ताप्रती 'पंचसंघाद-पंचसंघडणाणं पि (पंचबंधण-पंचसंघादाणं पि)' इति पाठः ।

पुव्वकोडिपुधत्तं ।

णिरयगइ-देवगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं अजहण्णद्विदिउदीरणाकालो^१ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए वत्तव्वं । णवरि उक्कस्सेण तिण्णि समया । उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । परघादणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं मागरोवमाणि देसुणाणि । उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सरारणं परघादभंगो । तमणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि । थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीराणं अजहण्णद्विदिउदीरणाकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण थावरणामाए असंखेज्जा लोगा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बे-सागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साहारणाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । जसक्कित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसद-पुधत्तं । अजसगिन्ति-दुभग-अणादेज्जणामाणं^२ जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण अजसगिन्तीए

और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नाम-कर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाके कालकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार है । विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट काल तीन समय प्रमाण है । उपघात नाम-कर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । परघात नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा परघात नामकर्मके समान है । त्रस नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है । स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उत्कर्षसे स्थावर नामकर्मका असंख्यात लोक, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका साधिक दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व साधारण शरीरनामकर्मोंका उपर्युक्त काल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक

१ काप्रती 'णामाणं ज० कालो', ताप्रती 'णामाणं कालो' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव '-णामाए' इति पाठः ।

असंखेज्जा लोणा, सेसाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकीडी देसूणा । णीचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । उचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं वा, उक्कस्सेण मागरोवम-सदपुधत्तं ।

दंसणावरणीयपंचयस्म जहण्ण-अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । वारमकमाय-भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो अजहण्णट्ठिदि-उदीरणकालो च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । आदावुज्जीवाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अजहण्णट्ठिदिउदीरण-कालो जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण^१ आदावणामाए वावीमं वाममहम्माणि देसूणाणि, उज्जीवणामाए तिण्णि पल्लिदोवसाणि देसूणाणि । एवं जहण्णट्ठिदिउदीरणो समत्ता ।

अंतराणुगमेण उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं उचदे । तं जहा— पंचणं णाणावरणीयाणं छणं दंसणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । थीणगिट्ठितियम्म उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं

समय है । उक्त काल उत्कर्षसे अयशकीर्तिका असंख्यात लोक तथा शेष दोका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । तीर्थकर नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षप्रथक्त्व और उत्कर्षसे कुल कम पूर्वकोटि मात्र है । नीचगोत्रकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । उच्चगोत्रकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अथवा अन्तमुहूर्ते और उत्कर्षसे सागरोपमशतप्रथक्त्व प्रमाण है ।

निद्रा आदिक पांच दर्शनावरणप्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र है । वारह कपाय, भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल और अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्ते मात्र है । आतप व उद्योतकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्ते मात्र है । उनकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उक्त काल उत्कर्षसे आतप नामकर्मका कुल कम चाईस हजार वर्ष तथा उद्योत नामकर्मका कुल कम तीन पन्धोपम प्रमाण है । इस प्रकार जघन्य स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई ।

अन्तराणुगमके द्वारा उक्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरका कथन करते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण और छह दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उक्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तरकाल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुक्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्ते मात्र होता है । स्थानगृद्धि आदि तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी उक्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका

^१ ताप्रतौ । उक्क०० । इति पाठः ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सट्ठिदि-उदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । मादा-मादवेदणीयाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एग-ममओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि छम्मासा ।

मिच्छत्तस्म उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण वे-छावट्ठि-सागरोवमाणि देसूणाणि । मम्मत्त-मम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अट्ठपोग्गलपरियट्ठं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ अंतोमुहुत्तं च, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । चट्ठणं मंजलणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जह-ण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणंताणुअधिचउक्कस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सट्ठिदि-उदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण वे-छावट्ठिसागरोमाणि देसूणाणि । अट्ठकसायाण-मुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तृतीय सागरोपम प्रमाण होता है । साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काल है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सातावेदनीयका साधिक तृतीय सागरोपम तथा असातावेदनीयका छह मास प्रमाण होता है ।

मिश्रयात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम दो छथासठ सागरोपम प्रमाण होता है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिश्रयात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे अर्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और अन्तमुहूर्त तथा उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । चार संज्वलन कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र होता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम दो छथासठ सागरोपम प्रमाण होता है । आठ कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर

अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण पुव्वकोडी देसुणा । अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-णवुंसयवेदान्णमुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण अणंत-कालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण छम्मासा अंतोमुहुत्तं, णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं । इत्थिवेद-पुरिसवेद-हस्स-रदीण-मुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । णवरि हस्स-रदीणं तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ।

मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि, उक्खस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगावलिया । उक्खस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं, मणुस्साउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । णिरयाउअस्स उक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाणि मासपुधत्तेण-ब्भहियाणि, मासपुधत्तादो हेट्ठा उक्खस्सणिरयाउअस्स बंधाभावादो; उक्खस्सेण अणंतकालम-संखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्खस्सेण

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र होता है । अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अरति व शोकका छह मास तथा भय और जुगुप्साका अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है । नपुंसकवेदकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका यह अन्तर उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य व रतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । विशेष इतना है कि उक्त अन्तर हास्य और रतिका उत्कर्षसे साधिक तेत्तीस सागरोपम प्रमाण होता है ।

मनुष्य व तिर्यंच आयुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक तीन पल्यो-पम और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक आवली मात्र होता है । उत्कर्षसे वह तिर्यंच आयुका सागरोपमशतपृथक्त्व और मनुष्यायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । नारकायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे मासपृथक्त्वसे अधिक तेत्तीस सागरोपम प्रमाण होता है, क्योंकि [ऐसे जीवके तिर्यंच होनेपर] मासपृथक्त्वसे नीचे उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध सम्भव नहीं है । उक्त-अन्तर उसका उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्तकाल प्रमाण होता है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे वह एकेन्द्रियकी स्थितिके

१ काप्रतौ 'णिरयाउअजीवस्स', ताप्रतौ 'णिरयाउअ [जीव] स्स' इति पाठः ।

एइंदियडिदी । देवाउअस्स उक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं णत्थि । अणुक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

णिरयगइ-तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, णिरयगईए सत्तारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि वा जहण्णंतरं । उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण जहाकमेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा सागरोवमसदपुधत्तं । देवगइ-णामाए उक्कस्साणुक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि अंतो-मुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । मणुसगइणामाए उक्कस्साणु-क्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । एइंदिय-बीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं उक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण दस-वाममहस्साणि सादिरेयाणि अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । णवरि एइंदियजादिणामाए अणुक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं वेसागरोवम-महस्साणि पुव्वकोटिपुधत्तेणअभहियाणि । पंचिंदियजादिणामाए उक्कस्सड्विदिउदीरणंतरं

वरावर होता है । देवायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है ।

नरकगति और तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है । अथवा, नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका जघन्य अन्तर साधिक सत्तरह सागरोपम प्रमाण होता है । उक्त दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्तकाल और सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है । देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्तकाल मात्र होता है । एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय जातिनामको अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण होता है । पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्त-

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । अणुकस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण दोण्णं पि पमाणमणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

ओरालियसरीरस्म उक्कस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दग्गवासमहस्साणि सादि-
रेयाणि, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुकस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण
एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तञ्चमहियाणि । वेउव्वियमरीरस्म
उक्कस्सट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।
अणुकस्सट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।
आहारमरीरस्म उक्कस्म-अणुकस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढ-
पोग्गलपरियट्ठं । तेजा-कम्मइयमरीरणं उक्कस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,
उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुकस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एग-
समओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । जहा मरीरणामाणं तथा तेमिमंगोवंग-बंधण-संघादाणं पि
वत्तञ्चं । णवरि ओरालियअंगोवंगअणुकस्मट्टिदिउदीरणंतरं कम्मइयमरीर-एइंदियट्टिदी ।

छण्णं संटाणाणमुक्कस्मट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । णवरि हुंडमंटाणम्म

मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है ।
उत्कर्षसे उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा इन दोनोंके ही अन्तरका प्रमाण
असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है ।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार
वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उसकी
अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक, समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस
सागरोपम प्रमाण होता है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्य-
से एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है ।
उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गल-
परिवर्तन प्रमाण होता है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका
अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्थ पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । तेजस और
कामेण शरीरनामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे
असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काल मात्र होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा-
का अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । जैसे शरीरनामकर्मकी
उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके आंगोपांग,
बंधन और संघात नामकर्मकी भी उक्त दोनों उदीरणाओंके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिए ।
विशेष इतना है कि औदारिकशरीर आंगोपांगकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर कामेण-
शरीर अर्थात् कर्मेणकाययोगके दो समय अधिक एकेन्द्रियकी कार्यस्थिति प्रमाण होता है ।

छह संस्थानोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है ।
विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उक्त अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है । उत्कर्षसे छहों

अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेजा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सद्विदिउदीरणंतरं सागरोवमसदं सादिरेयं । लुण्णं मंघडणाणं उक्कस्सद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ । णवरि असंपत्तसेवट्टमंघडणस्स दसवामहस्साणि सादिरेयाणि । उक्कस्सेण असंखेजा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण असंखेजा-पोग्गलपरियट्टा ।

वण्ण-गंध-रस-फाम-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पमत्थविहाय-गदि-तम-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुहपंचय-णिमिण-णीचागोदंतराइयाणमुक्कस्स-द्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेजा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्स-द्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगममओ, उक्कस्सेण वण्ण-गंध-रस-फाम-अगुरुअलहुअ-सुह-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणंतराइय-उवघाद-परघाद-उस्साभाणमंतोमुहुत्तं, अप्पमत्थविहायगइ-दुस्सर-तग्गाणमसंखेजा पोग्गलपरियट्टा, उज्जोव-वादरणामाणमसंखेजा लोगा, पज्जत्तस्स अंतोमुहुत्तं, पत्तेयसरीरम्म अट्टाइज्जा पोग्गलपरियट्टा, दुभग-अणादेज्ज-अजमगित्ति-णीचा-गोदाणं सागरोवमसदपुधत्तं ।

तिण्णमाणुपुव्वीणं जहा गदिणामाणं तहा वत्तव्वं । णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणु-

संस्थानोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर साधिक सौ सागरोपम प्रमाण होता है । लह संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है । विशेष इतना है कि असंप्रानासृपाटिकानंहननकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार बपे प्रमाण होता है । उक्तपसे लहां संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उक्तपसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है ।

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघान, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभादिक पांच, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उक्तपसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है । उक्तपसे वह वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, शुभ, गुस्वर, आदेय, निर्माण, अन्तराय, उपघात, परघात और उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त मात्र; अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और त्रसका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; उद्योत और वादर नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्तका अन्तर्मुहूर्त, प्रत्येकशरीरका अड़ाई पुद्गलपरिवर्तन; तथा दुर्भग अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रका सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है ।

तीन आनुपूर्वियोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाने अन्तरका कथन गतिनामकर्मोंके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी अनुत्कृष्ट

पुच्चीए अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण खुदाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्खस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जादिभागो । देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुच्चीणं अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि त्ति वत्तव्वं । मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीए उक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्खस्सट्ठिदि वंधिदूण पडिभग्गो होदूण मणुस्सेसुप्पज्जिय मणुस्साणुपुच्चीए उक्खस्सट्ठिदि वेदिय तदो अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं समाणिय गम्भे चैव उक्खस्ससंकिलेसं गंतूण पुणो तदुक्खस्सट्ठिदिं कादूण मणुस्सेसुप्पणस्स तदुवलंभादो । णेदमसिद्धं, सत्तमाए पुढवीए उप्पजंतस्स मणुस्सेसुप्पत्तिं पडि विरोहा-भावदो । उक्खस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण खुदाभवग्गहणं दुसमऊणं' उक्खस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।

आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुक्खस्सट्ठिदिउदीणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । णवरि आदावस्स दसवस्ससहस्साणि सादिरेयाणि । उक्खस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्खस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । णवरि साहारणसरीरस्स एगसमओ । उक्खस्सेण आदाव-साहारणसरीराणं जहाकमेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा असंखेज्जा लोगा,

स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम झुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यात-वें भाग मात्र होता है, तथा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है, ऐसा कहना चाहिये । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर और प्रतिभन्न होकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थितिका वेदन करके तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा पर्याप्तिको पूर्ण कर गभमें ही उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर फिरसे उसकी उत्कृष्ट स्थितिको करके मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके उपर्युक्त अन्तर पाया जाता है । यह असिद्ध भी नहीं, क्योंकि, जो जीव सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाला है उसके मनुष्योंमें उत्पन्न होनेका कोई विरोध नहीं है । उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे दो समय कम झुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है ।

आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । विशेष इतना है कि आतप नामकर्मका वह अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है । उन सबकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । विशेष इतना है कि साधारणशरीर नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका वह अन्तर एक समय मात्र होता है । उत्कर्षसे वह अन्तर आतप और साधारणशरीर नामकर्मका यथाक्रमसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन और असंख्यात लोक, सूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके

सुहमस्स अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, अपज्जत्तस्स सागरोवमसहस्सं सादिरेगं । थावरस्स एइंदियभंगो । जहा पंचणं मंठाणाणं तहा पसत्थविहायगइ-उच्चागोद-सुहपंचयाणं' । णवरि उच्चागोदउक्कस्सद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । तित्थयरस्स उक्कस्सा-णुक्कस्सद्विदिउदीरणंतरं णत्थि । एवमुक्कस्सद्विदिउदीरणंतरं समत्तं ।

जहण्णए पयदं— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-आहारसरीर-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णद्विदिउदीरणंतरं णत्थि । णिहा-पयलाणं पि जहण्णद्विदिउदीरणंतरं णत्थि त्ति एत्थ ण परूविदं । कुदो ? एदस्साइरियस्स उवदेसेण खीणकसायन्दि जहण्णद्विदिउदीरणाभावादो । एसि^१णामपयडीणं सजोगिचरिमममए जहण्णद्विदिउदीरणा तामिं पि अंतरं णत्थि । पंचणं दंसणावरणीयाणं जहण्णद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ।

मिच्छत्तस्स जहण्णद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । सम्मत्तस्स जहण्णद्विदिउदीरणंतरं णत्थि । उवसामगं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । मम्मामिच्छत्तस्स जहण्णद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

असंख्यातवें भाग, तथा अपर्याप्त नामकर्मका साधिक एक हजार सागरोपम प्रमाण होता है । स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा एकेन्द्रियजाति नामकर्मके समान है । जैसे पांच संस्थानोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही प्रशस्त विहायोगति, उच्चगोत्र तथा शुभ आदि पांच प्रकृतियोंके भी उक्त अन्तरकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका वह अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त मात्र होता है । तीर्थकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर नहीं होता । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर अधिकारप्राप्त है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, आहारशरीर, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । निद्रा और प्रचलाकी भी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता, यह यहाँ नहीं कहा गया है; क्योंकि, इन आचार्यके उपदेशसे क्षीणकपाय गुणस्थानमें इन दोनोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा नहीं होती । जिन नाम प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें होती है उनकी भी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है ।

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्त्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । परन्तु उपशामककी अपेक्षा उसका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त प्रमाण होता है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्त्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है । इन तीनों ही प्रकृतियों-

१ ताप्रती 'सुह-पंचंतराइयाणं' इति पाठः । २ काप्रती 'एदासि' इति पाठः !

उक्कस्सेण तिण्णं पि जहण्णट्टिदिउदीरणंतरमुवड्ढपोग्गलपरियट्टं । वारसण्णं कसायाणं जहण्णट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । सादा-साद-हस्म-रदि-अरदि-सोगाणं^१ जहण्णेण पलिदोवमस असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । भय-दुगुंछाणं वारसकसायभंगो । तिण्णं वेदाणं चदुण्णं सजलणाणं जहण्णट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।

देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुदाभवग्गहणं समउणं । उक्कस्सेण मणुस्साउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, तिरिक्खाउअस्स सागरोवमसदपुधत्तं ।

तिण्णं गइणामाणं जहण्णट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । मणुसगईए णत्थि अंतरं, सजोगिचरिमसमए जहण्णट्टिदिउदीरण-दंसणादो । वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । तिण्णं सरीराणं जहण्णट्टिदिउदीरणंतरं जहण्णुक्कस्सेण णत्थि अंतरं । एवं दोण्णमंगोवंगणामाणं । वेउव्वियसरीरअंगोवंगस्म

की जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । वारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण और उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा वारह कषायोंके समान है । तीन वेदों और चार संज्वलन कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है ।

देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । मनुष्यायु और तिर्यचआयुकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है । उत्कर्षसे उक्त अन्तर मनुष्यायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण तथा तिर्यचआयुका सागरोपम शतपृथक्त्व प्रमाण होता है ।

तीन गतिनामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण तथा उत्कर्षसे वह अनन्त काल प्रमाण होता है । मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, जघन्य स्थितिकी उदीरणा सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें देखी जाती है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है । तीन शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे होता ही नहीं है । इसी प्रकारसे दो आंगोपांग नामकर्मोंके उक्त अन्तरका कथन करना चाहिए । वैक्रियिक-

^१ ताप्रतौ 'हस्म-रदि-सोगाणं' इति पाठः ।

देवगइभंगो । पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो । एइंदियजादिणामाए जहण्णद्विदि-उदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोणा । वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-जादिणामाणं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । पंचिंदियजादिणामाए णत्थि अंतरं । छसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणं च णत्थि अंतरं । पंचणं संघडणाणं जहण्णद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं ।

णिरयणइ-देवगइपाओग्गाणुपुच्चिणामाणं जहण्णद्विदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुच्ची-णामाणं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालं । एवमुज्जोवणामाए । थावर-सुहुम-साहारणाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोणा । दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-अपजत्त-णीचागोदाणमसादभंगो । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो— जहण्णपदभंगविचओ उक्कस्सपदभंगविचओ

शरीरांगोपांगकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर देवगतिके समान है । पांच शरीरबन्धन और पांच शरीरसंघात नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरनामकर्मोंके समान है । एकेन्द्रिय जातिनामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनाम-कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग तथा उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है । पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । छह संस्थानों और वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता है । पांच संहनन नामकर्मोंकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा-का अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । आतप नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । इसी प्रकार उद्योत नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर भी समझना चाहिये । स्थावर, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है । दुर्भंग, अनादेय, अयशकीर्ति, अपर्याप्त और नीचगोत्र-की जघन्य स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकारका है— जघन्यपदभंगविचय और उत्कृष्टपद-

चेदि । तत्थ अट्टपदं— जे उक्कस्सियाए ङ्घिदीए उदीरया ते अणुक्कस्सियाए अणुदीरया, जे अणुक्कस्सियाए ङ्घिदीए उदीरया ते उक्कस्सियाए अणुदीरया । जे जं पयडिमुदीरेंति तेमु पयदं । अणुदीरएसु अव्ववहारो । एदमेत्थ अट्टपदं कादूण उवरिमपरूवणा कायच्चा— पंचणं णाणावरणीयाणं उक्कस्सङ्घिदीए सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च । एवमणुक्कस्सियाए । णवरि तप्पडिल्लोमेण तिण्णि भंगा वत्तच्चा । एवं सेससव्वकम्माणं पि वत्तच्चं । णवरि सम्मामिच्छत्त-आहारदुग-आणुपुच्चीतिगाणं पादेकमट्टभंगा । उक्क.साणुक्कस्सङ्घिदिउदीरयाणं मच्चभंग-ममासो सोलस १६ । एवमुक्कस्सओ णाणाजीवभंगविचओ समत्तो ।

जहणपदभंगविचए ताव अट्टपदं वुच्चदे— जे जहणियाए उदीरया ते अजहणियाए ङ्घिदीए णियमा अणुदीरया, जे अजहणियाए उदीरया जीवा ते जहणियाए ङ्घिदीए णियमा अणुदीरया । एदेण अट्टपदेण जहणपदभंगविचओ उच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-सादासदवेदणीय-दोदंसणमोहणीय-चदुसंजलण-सत्त-णोकसाय-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जेसि णामाणं तसा जहणं करेति तेसि च कम्माणं जहणपदभंगविचए छच्चेव भंगा होंति । तं जहा— एदेसि कम्माणं जहणङ्घिदीए सिया

भंगविचय । उनमें अर्थपद— जो जीव उत्कृष्ट स्थितिके उदीरक हैं वे अनुत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं, जो जीव अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरक होते हैं वे उत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं । जो जिस प्रकृतिकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं । अनुदीरक जीवोंका व्यवहार नहीं है । यहां इस अर्थपदको करके आगेकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और एक जीव उदीरक होता है, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व बहुत जीव उदीरक होते हैं । इसी प्रकारसे उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके विषयमें भी प्ररूपणा करनी चाहिये । विशेष इतना है कि उनके विपरीत क्रमसे तीन भंगोंका कथन करना चाहिये । इसी प्रकारसे शेष दर्शनावरणादि सब कर्मोंके सम्बन्धमें प्रकृत प्ररूपणा करनी चाहिये । विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्व, आहारद्विक और तीन आनुपूर्वियोंमेंसे प्रत्येकके आठ भंग कहना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंके सब भंगोंका जोड़ सोलह (१६) होता है । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट भंगविचय समाप्त हुआ ।

जघन्यपदभंगविचयके विषयमें पहिले अर्थपदका कथन करते हैं— जो जीव जघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे अजघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं, तथा जो जीव अजघन्य स्थितिके उदीरक हैं वे जघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं । इस अर्थपदके अनुसार जघन्यपदभंगविचयका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, दो दर्शनमोहनीय, चार संज्वलन कपाय, सात नोकपाय, नीच व ऊंच गोत्र, पांच अन्तराय तथा जिन नामकर्मप्रकृतियोंका त्रस जीव जघन्य करते हैं उन नामकर्मप्रकृतियोंके भी जघन्यपदभंगविचयक छह ही भंग होते हैं । वे इस प्रकारसे— इन कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत

सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, मिया अणुदीरया च उदीरया च । एवं तिण्णि भंगा ३ । अजहणस्स वि तिण्णि चेव भंगा लब्भंति ३ । एदेसिं समासो छभंगा होंति ६ । पंचदंमणावरणीय-वारसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्खाउ-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणणामाणं जहणणट्टिदीए णियमा उदीरया अणुदीरया च अत्थि । मणुसगइ-देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं जहणणट्टिदिउदीरणाए सोलस-सोलस भंगा । मणुस-देव-णिरयआउआणं च जहणणट्टिदिउदीरयाणं छ भंगा होंति । सम्मामिच्छत्त-आहारसरीराणं सोलस भंगा । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो अंतरं च णाणाजीवेहि भंगविचयादो साहेदुण वत्तव्वं । एवं कालंतरपरूवणा समत्ता ।

सण्णियासो बुच्चदे—मदिणाणावरणीयस्स उक्कस्सट्टिदिमुदीरेंतो सुदणाणावरणीय-ट्टिदीए किमुदीरओ अणुदीरओ ? णियमा उदीरओ । जदि उदीरओ किमुक्कस्सियाए ट्टिदीए उदीरओ आहो अणुक्कस्सियाए ? उक्कस्सियाए अणुक्कस्सियाए वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समउणमादिं कादूण जाव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा । एवं सेमतिण्णिणाणावरणीय-चउदंमणावरणीयाणं वा । पंचदंमणावरणीयाणं असादस्स च अणु-

जीव अनुदीरक और एक जीव उदीरक होता है, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत जीव उदीरक भी होते हैं । इस प्रकार तीन (३) भंग हुए । अजघन्य स्थितिके भी तीन (३) ही भंग प्राप्त होते हैं । इनके जोड़से छह (६) भंग होते हैं । पांच दर्शनावरणीय, वारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तियेचआयु, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण नामकर्माकी जघन्य स्थितिके नियमसे बहुत जीव उदीरक और अनुदीरक भी होते हैं । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके सोलह-सोलह भंग होते हैं । मनुष्यायु, देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिके उदीरकोंके छह भंग होते हैं । सम्यग्मथ्यात्व और आहारकशरीरके सोलह भंग होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयसे सिद्ध करके करनी चाहिये । इस प्रकार काल और अन्तरकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है— मतिज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करने-वाला जीव श्रुतज्ञानावरणीयकी स्थितिका क्या उदीरक होता है या अनुदीरक ? वह नियमसे उसका उदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो वह क्या उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है या अनुत्कृष्ट स्थितिका ? वह उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उसके उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कम उत्कृष्ट स्थितिकी आदि करके उत्कर्षसे पर्योपमके अरुख्यातवं भागसे कम तक होती है । इसी प्रकार शेष तीन ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये । वह पांच दर्शनावरण और असाता वेदनीयका अनुदीरक और उदीरक भी होता है । यदि उनका उदीरक

दीरओ उदीरओ वा । जदि उदीरओ उक्कस्सियाए अणुक्कस्सियाए वा द्विदीए उदीरओ । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समउणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा । सादस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहूत्तणमादिं कादूण जाव संखेज्जगुणहीणा । सम्मत्त-सम्मा-मिच्छत्ताणं णियमा अणुदीरओ । मिच्छत्तस्स णियमा उदीरओ^१, तं तु समउणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण उणा । सोलमकसाय-भय-दुगुंछा-णवुंमयवेद-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरगो । जदि उदीरगो तं तु समउणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण हीणा त्ति । णवरि कसायवज्जाणं समउणमादिं करिय पलिदोवमस्स असंखेज्जभागहीण-वीसं-सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति । इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदीणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्मद्विदिमुदोरेदि अंतोमुहूत्तणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडीओ त्ति । णिरयाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरणो । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा चउट्ठाणपदिदा । मणुत्त-तिरिक्खाउआणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि

होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उसके उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि लेकर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है । सातावेदनीयका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर संख्यातगुणी हीन तक होती है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका वह नियमसे अनुदीरक होता है । मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक होता है । वह उत्कृष्ट स्थितिसे एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है । सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, नपुंसक वेद, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है । विशेष इतना है कि कपायोंको छोड़कर शेष प्रकृतियोंकी एक समय कम स्थितिकी आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन बीस कोडाकोडि सागरोपम तक स्थिति होती है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य व रतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम स्थितिकी आदि लेकर अन्तःकोडाकोडि सागरोपम तक अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करता है । नारकआयुका वह कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति चतुःस्थानपतित होती है । मनुष्यायु व तिर्यंचआयुका कदाचित् उदीरक और कदाचित्

१ प्रयोहमयोरेव 'उदीरया' इति पाठः ।

उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा असंखेज्जगुणहीणा । देवाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरआ । जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा सादिरेयअट्टारससागरोवममादिं कादूण जाव समयाहियावलिया त्ति । णिरयगइणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । जदि अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोसागरोवमसहस्सस्स । मणुसगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव मंखेज्जगुणहीणा । तिरिक्खगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतो-कोडाकोडि त्ति । देवगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव अंतोसागरोवम-सहस्सस्स । एइंदिय-पंचिंदियजादिणामाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा^१ समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो^२ त्ति । वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादीणं णियमा अणु-

अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे असंख्यातगुणी हीन अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । देवायुक्का कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे साधिक अटारह सागरोपमको आदि लेकर एक समय अधिक आवली मात्र तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । नरकगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो वह अनुत्कृष्ट उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर हजार सागरोपमके भीतर तक होती है । मनुष्यगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उसके नियमसे अनुत्कृष्ट स्थिति होती है । यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर संख्यात-गुणी हीन तक होती है । तिर्यग्गति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर अन्तःकोडाकोडि सागरोपम प्रमाण तक होती है । देवगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर हजार सागरोपमके भीतर तक होती है । एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मोंका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है । यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक होती है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय

१. ताप्रती 'अणुक्कस्सा' [वा] इति पाठः । २. ताप्रती '-भागा' इति पाठः ।

दीरओ । ओरालियसरीरस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि ति । वेउव्वियसरीरणामाए णिरयगइभंगो । तेजा-कम्मइयसरीरणं सुदणाणावरणभंगो । पंच-संठाण-पंचसंघडणाणं मादभंगो । हुंडसंठाणस्स असादभंगो । असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स तिरिक्खभंगो । णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीए^१ मिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा ममयूणमादिं कादूण जाव पल्लस्स असंखेज्जदिभागो ऊणो ति । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए । मणुसगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वीणमणुदीरओ । उवघाद-परघाद-उस्सास-अप्पमत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीरणमसादभंगो । णवरि वादर-पज्जत्ताणं णियमा उदीरओ । उज्जोवणामाए मिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा^२ । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडीए । आदावस्स अणुदीरओ । पसत्थविहायगदि-थिर-सुभ-सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं सादभंगो । णवरि थिर-

जातिनामकर्मोका वह नियमसे अनुदीरक होता है । औदारिकशरीरका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है । उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि करके अन्तःकोडाकोडि सागरोपम प्रमाण तक होनी है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । तैजस और कामेण शरीरनामकर्मोको प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है । पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी प्ररूपणा तिर्यगगतिके समान है । नरकगति-प्रायोग्यानुपूर्वीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टका उदीरक होता है । उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक कम होता है । इसी प्रकार तिर्यगगतिप्रायोग्यानु-पूर्वीकी प्ररूपणा समझना चाहिये । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका वह अनुदीरक होता है । उपघात, परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर, इनके संनिकपकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । विशेष इतना है कि वह वादर और पर्याप्तका नियमसे उदीरक होता है । उद्योत नामकर्मका वह कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है । उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके अन्तःकोडाकोडि सागरोपम तक होता है । वह आतप नामकर्मका अनुदीरक होता है । प्रशस्त विहायोगति, थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । विशेष इतना है कि स्थिर और शुभका वह नियमसे उदीरक होता है । अस्थिर,

१ उभयोरेव प्रत्योः 'णिरयगइदेवाणुपुव्वीए' इति पाठः । २ ताप्रती 'वा' इत्येतपदं नास्ति ।

सुभाणं णियमा उदीरओ । अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदानं
असादभंगो । णवरि अथिर-असुहाणं णियमा उदीरओ । अगुरुअलहुअ-णिमिणाणं सुदणाणा-
वरणभंगो । अपज्जत्त-सुहुम-साहारणाणमणुदीरओ । वण्ण-गंध-रस-फामाणं सुदणाणावरण-
भंगो । उच्चागोदस्स सादभंगो । एवमाभिणिबोहियणाणावरणीयस्स णिरोहणं काऊण
परूवणा कदा । एवं सव्वासिं ध्रुवबंधपयडीणं कायव्वं ।

एत्तो समासेण कासिं पि पयडीणं सणियासं वत्तइस्सामो । तं जहा— णाणावरणी-
यस्स णियमा उदीरओ । उदीरेंतो वि णियमा अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव
पलिदोवमस्स अमंखेज्जदिभागेणूणं^१ ति । एवं सव्वासिं ध्रुवबंधपयडीणं वत्तव्वं । हस्स-रदि-
इत्थि-पुरिसवेदानं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा
वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादि कादूण जाव अंतोकोडाकोडि ति । णवुंसयवेद-
अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा ।
उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स अमंखेज्जदिभागेणूण-वीसं-
सागरोवमकोडाकोडीओ ति । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि

अशुभ, दुभग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी यह संनिकर्षप्ररूपणा असातावेद-
नीयके समान है । विशेष इतना है कि अस्थिर और अशुभका नियमसे उदीरक होता है । अगुरु-
लघु और निर्माणके संनिकर्षकी प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है । अपर्याप्त, सूक्ष्म और साधारण-
का अनुदीरक होता है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शकी यह प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान
है । उच्चगोत्रकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । इस प्रकार आभिनिबोधकज्ञानावरणीयकी
विवक्षा करके यह संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है । इसी प्रकारसे सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी
विवक्षा करके संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

यहां संक्षेपसे कुछ प्रकृतियोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—
[सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला] ज्ञानावरणीयका नियमसे उदीरक
होता है । उदीरक होकर भी वह उत्कृष्टसे एक समय कमको आदि करके पत्योपमके
असंख्यातवें भागसे हीन तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे सब
ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये । हास्य, रति, स्त्रीवेद और पुरुषवेदका कदाचित्
उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट
दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है । उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि
करके अन्तःकोडाकोडि सागरोपम तक होती है । नपुंसकवेद, अरति और शोकका कदाचित्
उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों-
का उदीरक होता है । उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके पत्योपमके
असंख्यातवें भागसे कम बीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण तक होती है । भय और जुगुप्साका
कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और

१ काप्रती 'भागेणूण' इति पाठः ।

उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पल्लिदोव मम्म असंखेज्जदिभागेणूण चत्तालीसं-सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति । गिरयाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ गियमा^१ अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तमादिं कादूण जाव ममयाहियावलिया त्ति । मणुम-तिरिक्खाउआणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ गियमा असंखेज्जगुणहीणट्ठिदीए उदीरओ । देवाउअस्स सिया उदीरओ सिया^२ अणुदीरओ । जदि उदीरओ सादिरेयअट्टारससागरोवमाणि आदिं कादूण जाव^३ [ममयाहियावलिया त्ति । गिरयगइ-देवगइणामाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ गियमा अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तमादिं कादूण जाव] सागरोवममहस्सअंतो । मणुमगदीए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । जदि अणुक्कस्सा ममऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति । तिरिक्खगदीए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ गियमा अणुक्कस्सा ममऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति । एवं सेमाओ वि मव्वणामपयडीओ जाणिदूण परूवेयव्वाओ । जहा सादेण सह सण्णियासो कदो तथा इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदीणं परियत्तमाणसुह-

अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि लेकर पल्लयोपमकं असंख्यातवें भागसे कम चालीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण तक होती है। नारकायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता हुआ अन्तर्मुहूर्तको आदि लेकर एक समय अधिक आवली मात्र अनुत्कृष्ट स्थिति तकका उदीरक होता है। मनुष्य व तिर्यच आयुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे असंख्यातगुणी हीन स्थितिका उदीरक होता है। देवायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उसका उदीरक होता है तो साधिक अठारह सागरोपमोंको आदि करके एक समय अधिक आवली मात्र स्थिति तकका उदीरक होता है। नरकगति व देवगति नामकर्मोंका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अन्तर्मुहूर्तको आदि करके हजार सागरोपमोंके भीतर तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। मनुष्यगतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उत्कृष्टसे एक समय कम स्थितिको आदि करके अन्तःकोडाकोडि सागरोपम प्रमाण तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। तिर्यच-गतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे एक समय कमको आदि करके अन्तःकोडाकोडि सागरोपम तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे शेष सभी नामप्रकृतियोंकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। जिस प्रकार सातावेदनीयके साथ संनिकर्षकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य

१ ताप्रती 'उदीरओ [ण] गियमा' इति पाठः । २ काप्रती 'देवाउअस्स उदीरया सिया', ताप्रती 'देवाउअस्स [सिया] उदीरया (ओ) सिया । ३ कोष्ठकस्थोऽर्थ पाठस्ताप्रती नोपलभ्यते ।

गामकम्मपयडीणं च सण्णियासो कायव्वो । जहण्णपदसण्णियासो वि चित्थिय वत्तव्वो ।
एवं सण्णियासो समत्तो ।

अप्पावहुअं उच्चदे— सव्वत्थोवा तित्थयरुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा । मणुम-तिरिक्खाउ-
आणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा । देव-णिरयाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा
संखेज्जगुणा । आहारसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । जट्ठिदिउदीरणा^१
विसेमाहिया । देवगदीए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । जट्ठिदिउदीरणा^२ विसे-
साहिया । मणुसगदि-उच्चागोद-जसगित्तीणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । एदास्सि
चेव पयडीणं जट्ठिदिउदीरणा^३ विसेसाहिया । णिरयगइ-तिरिक्खगइ-चटुसरीर-अजसगित्ति-
णीचागोदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । सादस्स
उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । सादस्स जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया ।
पंचणाणावरणीय-णवदंमणावरणीय-असातावेदणीय-पंचंतराइयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा
सरिसा । एदामिं चेव जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । णवण्णं णोकमायाणमुक्कस्सट्ठिदि-
उदीरणा विसेसाहिया । एदेमिं चेव कम्माणं जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । सोलसण्हं
कमायाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा त्ति^४ । एदेमिं कम्माणं जट्ठिदिउदीरणा विसेसा-

व रति तथा परिवर्तमान शुभ नामकर्म प्रकृतियोंकी मुख्यतासे भी संनिकर्षकी प्ररूपणा करना
चाहिये । जघन्य पदविषयक संनिकर्षकी भी विचारकर प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार
संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है— तोर्थकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सबसे
स्तोक है । मनुष्यायु और तिर्यचआयुकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा असंख्यातगुणी है । देवायु
और नारकायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है । आहारशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा
संख्यातगुणी है । उससे उसीकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । देवगतिकी उत्कृष्ट स्थिति-
उदीरणा संख्यातगुणी है । उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । मनुष्यगति, उच्चगोत्र और
यशकीर्तिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । इन्हीं प्रकृतियोंकी ज-स्थिति-उदीरणा
विशेष अधिक है । नरकगति, तिर्यचगति, आहारकको छोड़कर शेष चार शरीर, अयशकीर्ति
और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है । इनकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।
सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी ज-स्थिति-उदीरणा
विशेष अधिक है । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय और पांच अन्तराय;
इनकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है । इन्हींकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नौ
नोकपायोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । इन्हीं कर्मोंकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष
अधिक है । सोलह कपायोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है । इन कर्मोंकी ज-स्थिति-उदीरणा

१ प्रत्येकभयोरेव 'जहण्णट्ठिदिउदीरणा' इति पाठः । २ काप्रती 'ज० ट्ठिदि-', ताप्रती 'जहण्णट्ठिदि०'
इति पाठः । ३ ताप्रती 'जह० ट्ठिदिउदीरणा' इति पाठः । अग्रे त्वत्र काप्रती प्रायशः 'ज० ट्ठिदि' तथा ताप्रती
'जह० ट्ठिदि०' इत्येवंविधः पाठ उपलभ्यते । ४ काप्रती 'सरिसा होति' इति पाठः ।

हिया । मम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । मम्मत्तस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । एवमोघुकस्सअप्पाबहुअं समत्तं । एवं गदियादिसु वि उक्कस्सदंडओ कायव्वो ।

जहण्णप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुमंजलण-तिण्णिवेद-चत्तारिआउअ-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा थोवा । जट्ठिदिउदीरणा अमंखेज्जगुणा । मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । वेउच्चिय० जहण्णट्ठिदिउदीरणा अमंखेज्जगुणा, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । अजसगित्ति० विसे० । जाट्ठिदि० विसे० । तिरिक्खगदि० जह० ट्ठिदि० विसे० । जट्ठिदि० विसे० । 'णीचागोदस्स जह० ट्ठिदिउदीरणा विसे० । जट्ठिदि० विसे० । सादस्स जहण्ण-ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदि० विसे० । असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदि० विसेसाहिया । पंचणं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा मिसेसाहिया । जट्ठिदि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया ।

विशेष अधिक है । सम्यग्मिध्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । मिध्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघ उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । इसी प्रकारसे गति आदि मार्गणाओंमें भी उत्कृष्ट दण्डक करना चाहिये ।

जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सम्यक्त्व, मिध्यात्व, चार संज्वलन, तीत वेद, चार आयु और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा म्तोक है । ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । मनुष्यगति, औद्गारिकशरीर, तैजसशरीर, कामणशरीर, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनको जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तिर्यचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है । नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य व रतिकी जघन्य-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा

१ काप्रती 'णीचागोदस्स' इत्यादिवाक्यद्वयं नास्ति ।

जट्टिदि० विसेसाहिया । अरदि-सोगाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदि० विसेसाहिया । भय-दुगुंछाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदि० विसेसाहिया । वारसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा तत्तिया चेव । जट्टिदि० विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदि० विसेसाहिया । देवगदीए जहण्णाट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । जट्टिदि० विसेसाहिया । देवगदिपाओग्गाणु० विसे० । जट्टिदि० विसेसाहिया । णिरयगइ० विसे० । जट्टिदि० विसे० । णिरयगइपाओग्गाणु० विसे० । जट्टिदि० विसे० । आहारदुग० संखेज्जगुणा । जट्टिदि० विसेसाहिया । एवमोघ-जहण्णाट्टिदिउदीरणां समत्तं ।

णिरयगइए सम्मत्त-मिच्छत्त-णिरयाउआणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा थोवा, जट्टिदिउदी० असंखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्टिदि० विसेसाहिया । वेउव्वियसरीर-णिरयगइणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टिदि० विसेसाहिया । अजसगित्तीए जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । णीचागोदस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । सादस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । असादस्स जहण्णाट्टिदि-विशेष अधिक है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है । बारह कपायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । देवगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । आहारद्विककी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघ जघन्य अल्प-बहुत्व समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और नारकायुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है; ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीर और नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तैजस और कार्मण शरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेद-

उदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । पंचणाणावरण-चउदंसणावरण पंचंतराइ-
याणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं जहण्णट्टिदि-
उदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । णवुंसयवेदस्स' जहण्णट्टिदिउदीरणा
विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । अरदि-मोगाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया,
जट्टिदि० विसेसाहिया । भय-दुगुंलाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि०
विसेसाहिया । मोलमण्णं कमायाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा तत्तिया चैव, तेसिं चैव
जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । णिद्दा-पयलाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टिदि०
विसेसाहिया । एवं णिरयगइजहण्णट्टिदिउदीरणदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगइए मम्मत्त-मिच्छत्त-तिरिक्खाउआणं जहण्णट्टिदिउदीरणा थोवा, जट्टिदि-
उदी० असंखेज्जगुणा' । वेउव्वियमरीरणामाए जहण्णट्टिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्टिदि०
विसेसाहिया । जमगित्तीए जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया ।
अजमगित्तीए जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदिउदी० विसेसाहिया ।
तिरिक्खगइणामाए जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । णीचा-
गोदस्स जहण्णया ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जाट्टादि० विसेसाहिया । ओरालिय-

नीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच
ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है;
ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य व रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है,
ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है,
ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक
है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष
अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है । सोलह कपायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा
उतनी मात्र ही है, उन्हींकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य
स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिमें
जघन्य स्थिति-उदीरणादण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और तिर्यचआयुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है,
ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यात-
गुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक हैं । यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष
अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष
अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तिर्यचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा
विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा
विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । औदारिक, तैजस और कामेण

१ ताप्रतो 'एवं णवुंसयवेदस्स' इति पाठः । २ काप्रतो 'संखेज्जगुणा' इति पाठः ।

तेजा-कम्मइयसरीरणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । सादस्स जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । अमादस्स जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । पंचणाणावरणीय-णवदंमदणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । पुरिमवेदस्स जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । अरदि-मोगाणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । णवुंसयवेदस्स जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, एइंदिएसु चैव पडिवक्खबंधगद्धं गालिय जहण्णद्विदिउदीरणाविहाणादो । पंचदिय-तिरिक्खपडिवक्खबंधगद्धाओ क्किण्ण गलिदाओ ? णवुंसयवेदपाओग्गविमोहीए णवुंसयवेदे वज्झमाणे तद्विदीए बहुत्तप्पसंगादो । जद्विदि० विसेसाहिया । भय-दुगुंछाणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जद्विदि० विसेसाहिया । सोलमकसायाणं जहण्णद्विदिउदीरणा मरिसा, जद्विदि० विसेसाहिया । इत्थिवेदस्स जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो कसायाद्विदीदो इत्थिवेदद्विदीए गलिदपडिवक्खबंधगद्धाए विसेसाहियत्तं ? ण, इत्थिवेदो-

शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । साता-वेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेदनीय जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य व रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अरति व शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवोंमें ही प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धककालको गला कर जघन्य स्थिति-उदीरणाका विधान है ।

शंका— पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धककाल क्यों नहीं गलते ?

समाधान— कारण कि नपुंसकवेदके बन्धयोग्य विशुद्धिके द्वारा नपुंसकवेदके बांधे जानेपर चूंकि उसकी स्थिति-उदीरणा बहुत होनेका प्रसंग आता है, अतएव वे वहां नहीं गलते ।

नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणासे उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सोलह कपायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा समान है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।

शंका— कपायस्थिति-उदीरणाकी अपेक्षा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धककालसे रहित स्त्रीवेदकी स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक क्यों है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि स्त्रीवेदके उदय युक्त जीवमें स्त्रीवेदके उदयके समुत्पादनार्थ

दडल्ले मसुप्पायणट्टं इत्थिवेदविमोहीए इत्थिवेदेण सह वज्झमाणकसायाणमहियट्ठिदीदो पडिवक्खबंधगद्धाओ वि बहुत्तुवलंभादो । जट्ठिदि० विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया । उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदि-उदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया । तिरिक्खेसु णीचागोदस्स चैव उदीरणा होदि त्ति सव्वत्थ परूविदं । एत्थ पुण उच्चागोदस्स वि परूवणा परूविदा, तेण पुच्चावरविरोहो त्ति भणिदे- ण, तिरिक्खेसु संजमासंजमं परिवालयंतेसु उच्चागोदत्तुवलंभादो । उच्चागोदे देम-सयलमंजमणिबंधणे संते मिच्छाइट्ठिसु तदभावो त्ति णासंक्कणिज्जं, तत्थ वि उच्चागोदजणिदमंजमजोगत्तावेक्खाए उच्चागोदत्तं पडि विरोहाभावादो । एवं तिरिक्ख-गदीए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खणीसु मिच्छत्त-तिरिक्खाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा । जसगित्तिए जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया । अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया । तिरिक्खगइणा-माए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया । णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदि-

स्त्रीवेदके बन्ध योग्य विशुद्धिके द्वारा स्त्रीवेदके साथ बन्धको प्राप्त होनेवाली कपायोंकी अधिक स्थितिसे प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धककाल भी बहुत पाया जाता है ।

स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणासे उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।

शंका— तिर्यंचोंमें नीचगोत्रकी ही उदीरणा होती है, ऐसी प्ररूपणा सर्वत्र की गयी है । परन्तु यहां उच्चगोत्रकी भी उनमें प्ररूपणा की गयी है, अतएव इससे पूर्वापर विरोध आता है ?

समाधान— ऐसा कहनेपर उत्तर देते हैं कि इसमें पूर्वापर विरोध नहीं है, क्योंकि, संयम-संयमको पालनेवाले तिर्यंचोंमें उच्चगोत्र पाया जाता है ।

यदि उच्चगोत्रके कारण देशसंयम और सकलसंयम हैं तो फिर मिथ्यादृष्टियोंमें उसका अभाव होना चाहिये ?

समाधान— ऐसी आशंका करना योग्य नहीं है, क्योंकि, उनमें भी उच्चगोत्रके निमित्तसे उत्पन्न हुई संयमग्रहणकी योग्यताकी अपेक्षा उच्चगोत्रके होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

इस प्रकार तिर्यंचगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणादण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यंच स्त्रियोंमें मिथ्यात्व और तिर्यंच आयुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है,

उदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्टिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । सादस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । असादस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्टिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । इत्थिवेदस्स जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । हस्स-रदोणं जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । अरदि-सोगाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । भय-दुगुंछाणं जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । सोलसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा तत्तिया चैव, जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । सम्मत्तस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । दंसणा-वरणपंचयस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टिदि० विसेसाहिया । वेउन्वियसरीर-णामाए उच्चागोदस्स च जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । एवं पंचिदियतिरिक्खजोणिणी० जहण्णट्टिदिउदीरणदंडओ' समत्तो ।

ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । औदारिक, तैजस और कर्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच ज्ञाना-धरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यग्मध्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीर नामकर्म और उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । इस प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतौ 'उदीरणसकमो दंडओ' इति पाठः ।

मणुसगदीए पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-
तिण्णवेदाउआणं पंचंतराइयाणं जह० द्विदिउदीरणा थोवा, जट्टि० उदी० असंखेज्ज-
गुणा । मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जह० द्विदि-
उदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । अजसगत्तीए जह० द्विदिउदीरणा असंखेज्ज-
गुणा, जट्टि० विसेसाहिया । णीचागोदस्स जहणिया द्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि०
विसेसाहिया । सादस्स जहणिया द्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया ।
असादस्स जहणिया द्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं
जहणिया द्विदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । अरदि-सोगाणं जहणिया
ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । भय-दुगुंछाणं जहणिया द्विदि-
उदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । बारसणं कसायाणं जहणिया द्विदि-
उदीरणा तत्तिया चेव, जट्टि० विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स जहणिया द्विदिउदीरणा
विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । दंसणावरणपंचयस्स जहणिया द्विदिउदीरणा
संखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । आहारसरीरणाभाए जहणिया द्विदिउदीरणा संखेज्ज-
गुणा, जट्टि० विसेसाहिया । वेउव्वियसरीरस्स जहणिया द्विदिउदीरणा विसेसाहिया,
जट्टि० विसेसाहिया । एवं^१ मणुसगईए जहणद्विदिउदीरणदंडओ समत्तो ।

मनुष्यगतिमें पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार संज्वलन,
तीन वेद और आयु कर्मोंकी तथा पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है; ज-स्थिति-
उदीरणा असंख्यातगुणी है । मनुष्यगति, औदारिक, तैजस, कामेण शरीर, यशकीर्ति और
उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।
अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।
नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।
सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक
है । असतावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष
अधिक है । हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा
विशेष अधिक है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-
उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है,
ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही
है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष
अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी
जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । आहारकशरीर
नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है ।
वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक
है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतौ 'एवं' इत्येतत्पदं नास्ति ।

देवगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-देवाउआणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा थोवा, जट्टि० उदी० असंखेज्जगुणा । सम्मामिच्छज्जस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । देवगइ-वेउव्वियसरीरणामाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । उच्चागोदस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । जसक्कित्तीए जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० उदी० विसेसाहिया । अजसगित्तीए जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । सादस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । असादस्स जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । पुरिसवेदस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । अरदि-सोगाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । भय-दुगुंलाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । सोलसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा तत्तिया चेत्र, जट्टि० विसेसाहिया । इत्थिवेदस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । णिदा-पयलाणं जहण्णाट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया ।

देवगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और देवायुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । देवगति और वैक्रियिकशरीर नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तेजस और कर्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सोलह कपार्योंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है,

देवगईए जहण्णट्टिदिउदीरणदंडओ समत्तो ।

असणीसु आउअस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा थोवा, जट्टिदि० उदी० असंखेज्जगुणा । जसगित्तीए जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । तिरिक्खगईए जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जाट्टि० विसेसाहिया । णीचागोदस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । अजसगित्तीए जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । सादस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । असादस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टिदि० विसेसाहिया^१ । पुरिसवेदस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । अरदि-सोगाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । भय-दुग्गुछाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । सोलसकसायाणं जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा तत्तिया चैव, जट्टि० विसेसाहिया । इत्थिवेदस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसेसाहिया । णवुंसयवेदस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्टि० विसे-

ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । देवगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञी जीवोंमें आयु कर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । औदारिक, तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक

१ ताप्रतौ [ज० ट्टिदि० विसे०-] इति पाठः ।

साहिया । पंचणं दंसणावरणीयाणं जहण्णद्विदिउदीरणा संखेअगुणा, जट्टि० विसेसाहिया । असण्णीसु जहण्णद्विदिउदीरणदंडओ समत्तो ।

भुजगारउदीरणाए अट्टपदं— अप्पदराओ द्विदीओ उदीरेदूण अणंतरउवरिमसमए बहुदरासु ठिदीसु उदीरिदासु एसा भुजगारउदीरणा । बहुदराओ द्विदीओ उदीरेदूण अणंतरउवरिमसमए थोवासु उदीरिदासु अप्पदरउदीरणा । जत्तियाओ द्विदीओ एण्ह उदीरिदाओ अणंतरउवरिमसमए तित्तियासु चैव उदीरिदासु एसा^१ अवट्टिदउदीरणा । अणुदीरण उदीरिदे भुजगार-अप्पदर-अवाट्टिदउदीरणाहि पुधभूदत्तादो एसा अवत्तव्व-उदीरणा^२ । एदमेत्थ अट्टपदं । संपहि सामित्तं बुच्चदे । भुजगारउदीरओ को होदि ? अण्णदरो । अप्पदर-अवट्टिद-अवत्तव्वउदीरओ को होदि ? अण्णदरो । णवरि धुवियाणमवत्तव्वउदीरगो णत्थि^३ । एवं सामित्तपरूवणा गदा ।

एयजीवेण कालो— पंचणाणावरणीयस्स भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ, उक्त्सेण संखेज्जाणि समयसहस्साणि । एइंदियस्स अप्पिदणाणावरणीयपयडीए उवरि अणप्पिदसंखेज्जसहस्सपयडिद्विदीणं संकमेण संकंत-

है । पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असंज्ञियोंमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ ।

भुजाकारउदीरणामें अर्थपद— अल्पतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह भुजाकार उदीरणा होती है । बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें स्तोक स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर अल्पतर उदीरणा होती है । जितनी स्थितियोंकी इस समय उदीरणा की गयी है आगेके अनन्तर समयमें उतनी ही स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह अवस्थित उदीरणा होती है । अनुदीरकके द्वारा उदीरणा की जानेपर यह अवक्तव्य उदीरणा कही जाती है, क्योंकि, वह भुजाकार, अल्पतर व अवस्थित उदीरणाओंसे भिन्न है । यह यहाँ अर्थपद हुआ । अब स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । भुजाकार उदीरणा करनेवाला कौन होता है ? अन्यतर जीव भुजाकार उदीरक होता है । अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरक कौन होता है ? अन्यतर जीव उनका उदीरक होता है । विशेष इतना है कि ध्रुवोदयी प्रकृतियोंका अवक्तव्य उदीरक नहीं होता । इस प्रकार स्वामित्व प्ररूपणा समाप्त हुई ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे संख्यात हजार समयों तक होती है । एकेन्द्रयके विवक्षित प्रकृतिस्थितिके आगे अविवक्षित संख्यात हजार प्रकृतिस्थितियोंके संक्रमसे संक्रान्त

१ काप्रती 'एसो' इति पाठः । २ करणोदय-संताणं पगइट्ठाणेसु सेसगतिगे य । भूयक्कारप्पयरो अवट्टिओ तह अवत्तव्वो ॥ एगादहिगे पदमो एगाईऊणगम्मि विइओ उ । तत्तियमेत्तो तईओ पदमे समये अवत्तव्वो ॥ क. प्र. ७, ५१-५२ ३ प्रत्योरुभयोरेव 'धुवियाणमवत्तव्वा उदीरगो' इति पाठः ।

पयडिमेत्ता ठिदिभुजगारसमया एइंदिएसु^१ लद्धूण पुणो अप्पिदपयडीए^२ अद्धाक्खएण एक्को, संकिलेसक्खएण सच्चासु वडिठदासु अण्णेगो, पुणो सण्णिपंचिदिएसुप्पणयस्स विग्गहगदीए असण्णिट्ठिदीए अवरो, गहिदसरीरस्स सण्णिट्ठिदीए अण्णेगो, एवं वडिठदट्ठिदीसु^३ कमेणुदीरिज्जमाणासु भुजगारुदीरणाए कालो संखेज्जाणि समयसहस्साणि ।

चदुण्णं दंसणावरणीयाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण बारस समया । तंजहा— एइंदियस्स अण्णप्पिदअद्धपयडीणं जहापरिवाडीए संकमेण अद्ध भुजगारसमया, पुणो अप्पिदपयडीए अद्धाक्खएण एक्को, संकिलेसक्खएण सच्चासु वडिठदासु अण्णेगो, पुणो सण्णीसुप्पणयस्स विग्गहगदीए अवरो, गहिदसरीरस्स सण्णिट्ठिदीए अण्णेगो; एवं बारस समया । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं^४ भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण णव समया अत्थदो दस समया वा ।

सादासाद-मिच्छत्ताणं भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण चत्तारि समया । सोलसण्णं कसायाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण एगूणवीस समया । णवण्णं णोकसायाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्खस्सेण अट्ठावीससमया । अत्थदो एगूणवीस समया दीसंति ।

हुई प्रकृतियोंके बराबर स्थितिभुजाकार समयोंको एकेन्द्रियोंमें प्राप्त करके पश्चात् विवक्षित प्रकृतिके अद्धाक्षयसे एक, संक्लेशक्षयसे सबके वृद्धिको प्राप्त होनेपर अन्य एक समय, पुनः संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेपर विग्रहगतिमें असंज्ञी स्थितिका अन्य एक समय, शरीरके ग्रहण कर लेनेपर संज्ञी स्थितिका अन्य एक समय, इस प्रकार वृद्धिप्राप्त स्थितियोंकी क्रमसे उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका काल संख्यात हजार समय प्रमाण होता है ।

चक्षुदर्शनावरण आदि चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे बारह समय तक होती है । वह इस प्रकारसे— एकेन्द्रियके अविवक्षित आठ प्रकृतियोंके परिपाटी अनुसार संक्रमण द्वारा आठ भुजाकार समय, पुनः विवक्षित प्रकृतिके अद्धाक्षयसे एक समय, संक्लेशक्षयसे सब प्रकृतियोंके वृद्धिगत होनेपर अन्य एक समय, पुनः संज्ञियोंमें उत्पन्न होनेपर विग्रहगतिमें एक, शरीरके ग्रहण कर लेनेपर संज्ञी स्थितिका अन्य एक समय; इस प्रकार उपर्युक्त बारह समय प्राप्त होते हैं । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे नौ समय अथवा अर्थतः दस समय होती है ।

साता व असाता वेदनीय तथा मिथ्यात्वकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है । सोलह कपायोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उन्नीस समय होती है । नौ नोकपायोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अट्ठाईस समय होती है । अथवा अर्थतः उसके उन्नीस समय दिखते हैं ।

१ काप्रती 'समयासु एइंदिएसु', ताप्रती 'समया [सु] एइंदिएसु' इति पाठः । २ ताप्रती 'अण्णप्पिदयडीए' इति पाठः । ३ ताप्रती 'वडिठेसु ट्ठिदीसु' इति पाठः । ४ काप्रती 'दंसणावरणीय', ताप्रती 'दंसणावरणीय(याणं)' इति पाठः ।

आउआणं भुजगारउदीरणा गत्थि । णामाणमण्णदरपयडीए भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेजाणि समयसहस्साणि । उच्चागोद-णीचागोदाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पंच समया । अत्थदो चत्तारि समया दीसंति । पंचणमंतराइयाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अट्ठ समया ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीयाणं णामम्हि धुवोदयपयडीणं पंचंतराइयाणं च अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे-छावट्टिसागरोवमाणं सादिरेयाणि । पंचणं दंमणावरणीयाणमप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सादस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासे समऊणे । असादस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सम्मादिट्ठीसु असंजदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेसिं पुव्वुत्तसव्वक्कमाणमवट्टियस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

मिच्छत्तअप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सम्मत्तस्स भुजगारो अवट्टिदो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अप्पदरउदीरणा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,

आयु कर्मोकी भुजाकार उदीरणा नहीं होती । नाम कर्मकी प्रकृतियोंमें अन्यतर प्रकृतिकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात हजार समय तक होती है । उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पांच समय होती है । अर्थतः उसके चार समय दिखते हैं । पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय होती है ।

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, नामकर्मकी ध्रुवोदयी प्रकृतियों तथा पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छथासठ सागरोपम काल तक होती है । पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक होती है । सातावेदनीयकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम छह मास तक होती है । असाता वेदनीयकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंयत सम्यग्दृष्टियोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है । पूर्वोक्त इन सब कर्मोकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

मिथ्यात्वकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी भुजाकार और अवस्थित उदीरणाओंका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उसकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे

उक्कस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि देसूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अवट्टिदउदीरणाओ
णत्थि । अप्पदरउदीरणा जहण्णुकस्सेण अंतोसुहुत्तं ।

सोलसण्णं कसायाणं भय-दुगुंछाणं च अप्पदरउदीरणा अवट्टिदउदीरणा च
जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं ।
जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं । णवुंसयवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ,
उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ,
उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं । इत्थिवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण
पणवण्णपलिदोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतो-
सुहुत्तं । पुरिसवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्टिसागरोव-
माणि सादिरेयाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं । कुदो ?
एदासु पयडीसु बज्झमाणासु कसायअवट्टिदबंधस्स अंतोसुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो । आउ-
आणमप्पदरउदीरणा जहण्णेण सग-सगजहण्णट्टिदी समयाहियावलिघाए ऊणा । णवरि
मणुस्साउअस्म एयो'समयो । उक्कस्सेण सग-सगउक्कस्सट्टिदी समयाहियावलिघाए हीणा ।

अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम छथासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिध्यात्वकी भुजाकार
और अवस्थित उदीरणा नहीं होती । उसकी अहरतर उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे
अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

सोलह कषार्योकी तथा भय व जुगुप्साकी अल्पतर उदीरणा और अवस्थित उदीरणाका
काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । जिस प्रकार असातावेदनीयकी
इन प्रकृत उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार अरति व शोककी उक्त
उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा करना चाहिये । जिस प्रकार सातावेदनीयकी उन
उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार हास्य व रतिकी भी उन उदीरणाओंके
कालकी प्ररूपणा करना चाहिये । नपुंसकवेदकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय
और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । स्त्रीवेदकी अल्पतर उदीरणाका काल
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक पचवन पत्य प्रमाण है । उसकी अवस्थित
उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पुरुषवेदकी अल्पतर
उदीरणा काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छथासठ सागरोपम प्रमाण है ।
उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।
इसका कारण यह है कि इन प्रकृतियोंके बंधनेपर कषायके अवस्थित बन्धका अन्तर्मुहूर्त मात्र काल
पाया जाता है । आयु कर्मोंकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अधिक आवली-
से हीन अपनी अपनी जघन्य स्थिति है । विशेष इतना है कि मनुष्यायुकी उक्त उदीरणाका
काल जघन्यसे एक समय है । उनकी उपर्युक्त उदीरणाका काल उत्कर्षसे एक समय अधिक
आवलीसे हीन अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण है ।

गिरयगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि । अवट्टियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्त्सेण समऊणावलिया । तिरिक्ख-गईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण अंतोमुहुत्तं । मणुसगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण अंतोमुहुत्तं । देवगईए गिरयगईभंगो । सेमाणं^१ पि णामाणं जाणिदूण णेयव्वं जाव (?) ।

णीचागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्त्सेण अंतोमुहुत्तं । उच्चागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण वे-च्छावट्टिसागरोवमाणि देसूणाणि । अवट्टिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्त्सेण अंतोमुहुत्तं । एवमेयजीवेण कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं कालादो साधेदूण भाणियव्वं । णाणाजीवेहि भंगविचओ— जे जं पयडिं वेदंति तेषु पयदं । अवेदएहि अव्वहारो । णाणावरणीयपंचयस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदउदीरया णियमा अत्थि । सव्वाओ पयडीओ णाणाजीवेहि एवं जाणि-

नरकगति नामकर्मकी अल्पर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम आवली प्रमाण है । तिर्यग्गति नामकर्मकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । मनुष्यगतिकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्य प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । देवगतिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । शेष नामकर्मकी भी उक्त उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये ।

नीचगोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । ऊंच गोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा कालसे सिद्ध करके करना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— जो जीव जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं । अवेदकोंका व्यवहार नहीं है । पांच ज्ञानावरणीयके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं । इसी प्रकारसे

१ काप्रतो 'देवगईए गिरयगई सेमाणं', ताप्रतो 'देवगईए गिरयगईए सेमाणं' इति पाठः ।

दूण भाणिदव्वाओ । णाणाजीवेहि कालो अंतरं च जाणिदूण भाणिदव्वं ।

अप्पाबहुगं— सव्वत्थोवा णाणावरणपंचयस्स भुजगारउदीरया जीवा, अवट्टिद-उदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । एवं चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं ध्रुवोदयणामपयडीणं च वत्तव्वं । सव्वत्थोवा णिद्दाए भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । एवं सेसच्चदुण्णं दंसणावरणीयाणं । सादासादाणं णिद्दाभंगो ।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्टिद-उदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा । सम्मत्तस्स' सव्वत्थोवा अवट्टिदउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदउदीरया असंखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया अप्पदर-उदीरया असंखेज्जगुणा । सोलसण्हं कसायाणमण्णदरस्स कसायस्स सव्वत्थोवा भुजगार-उदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । एवं हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं । इत्थि-पुग्गिसवेदाणं सव्वत्थोवा

सब प्रकृतियोंके विषयमें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन जानकर करना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका कथन भी जानकर करना चाहिये ।

अल्पबहुत्व— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके भुजाकार उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं, उनसे अवस्थित उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय और ध्रुवोदयी नामप्रकृतियोंके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । निद्रा दर्शनावरणके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, उनसे अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं । उनसे अर्वास्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये । साता व असाता वेदनीयकी प्रकृत अल्पबहुत्वप्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है ।

मिध्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक उनसे अनन्तगुणे हैं, अर्वास्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थित-उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिध्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं । सोलह कपायोंमें अन्यतर कपायके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर-उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साके विषयमें इस अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । स्त्री और पुरुष वेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं,

१ ताप्रतौ 'अवत्तव्वउदीरया, [अप्पदरउदीरया] असंखे० गुणा, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्टिद-उदीरया असंखेज्जगुणा । सम्मत्तस्स' इति पाठः ।

अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा । अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदर-
उदीरया संखेज्जगुणा । णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया
अणंतगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा ।

आउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा । णिरय-
गइणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्टिदउदीरया
असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । मणुसगइणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्व-
उदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया
संखेज्जगुणा । जहा णवुंसयवेदस्स तहा तिरिक्खगइणामाए । देवगईए णिरयगइभंगो ।
ओरालियसरीरणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा,
अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । वेउव्वियसरीरणामाए
देवगदिभंगो । संठाण-संघडणाणं ओरालियसरीरभंगो ।

णिरयाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्टिदउदीरया असंखेज्ज-
गुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया । एवं मणुम-देवाणु-
पुव्वीणं । तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्टिदउदीरया
असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया विसेसाहिया । उवघाद-
भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक
संख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनन्तगुणे
हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं ।

आयु कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
नरकगति नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं,
अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके
अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असं-
ख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं । जैसे नपुंसकवेदके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी
प्ररूपणा की गयी है वैसे ही तिर्यचगति नामकर्मके विषयमें भी उसे करना चाहिये । देवगतिकी
प्रकृत प्ररूपणा नरकगतिके समान है । औदारिकशरीर नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे
स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर
उदीरक संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी यह प्ररूपणा देवगतिके समान है । संस्थानों
और संहननोंकी यह प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक
असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं । इसी
प्रकारसे मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके विषयमें प्रकृत प्ररूपणा करना
चाहिये । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित
उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं ।

परघाद-उस्सास - आदावुजोव - पसत्थापसत्थविहायगदि - तस-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-
पत्तेय-साहारण-सुहुदुहपंचय-उच्चागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया
असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । थावर-
णीचागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिद-
उदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । सेमअवुत्तपयडीणं पि जाणिऊण
भाणियव्वं । एवं भुजगारो समत्तो ।

पदणिक्खेवो वुच्चदे— सव्वत्थोवा उक्खिसिया हाणी । कुदो ? उक्खसट्ठिदिखंडय-
ग्गहणादो । उक्खिसिया वड्ढी अवट्ठणं च विसेसाहिया । कुदो ? उक्खसट्ठिदिखंडयादो
ट्ठिदिबंधुक्खसवड्ढीए विसेसाहियदंसादो । जहणिया वड्ढी हाणी अवट्ठणं च तिण्णि
वि तुल्लाणि, एगट्ठिदिपमाणत्तादो । वड्ढिउदीरणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि
भंगविचओ कालो अंतरं च जाणिदूण कायव्वं ।

अप्पाबहुअं कीरदे । तं जहा— सव्वत्थोवा णाणावरणीयस्स असंखेज्जगुणाहाणि-
उदीरया । संखेज्जगुणाहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा ।
संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । अव-

उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, सूक्ष्म,
पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुह-दुहपंचक (सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय
और यशकीर्ति) और ऊंच गोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक
असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं । स्थावर
और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनन्तगुणे हैं, अवस्थित
उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं । यहां जिन शेष प्रकृतियोंका उल्लेख
नहीं किया गया है उनके विषयमें भी उपर्युक्त अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिये । इस
प्रकार भुजाकार समाप्त हुआ ।

पदनिक्षेपका कथन करते हैं— उत्कृष्ट हानि सबसे स्तोक है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थिति-
काण्डकका ग्रहण है । उत्कृष्ट वृद्धि व अवस्थान विशेष अधिक हैं, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिकाण्डककी
अपेक्षा स्थितिवन्धकी उत्कृष्ट वृद्धि विशेष अधिक देखी जाती है । जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान
ये तीनों ही समान हैं; क्योंकि, वे एक स्थिति प्रमाण हैं । वृद्धिउदीरणाके स्वामित्व, काल, अन्तर
और नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल तथा अन्तरका कथन जानकर करना चाहिये ।

अल्पबहुत्वका कथन किया जाता है । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयकी असंख्यात-
गुणाहाणिके उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणाहाणिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यात-
भागहाणिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यात-
भागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थितउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहाणिके

१ मप्रतौ संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखे० गुणा संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा असंखेज्जभागवड्ढि-
उदीरया असंखेज्जगुणा? इति पाठः ।

द्विदउदीरया संखेजगुणा । असंखेजभागहाणुददीरया संखेजगुणा । एवं पंचणाणावरणीय-
चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं ध्रुवउदीरणसव्वणामपयडीणं च वत्तव्वं ।

णिहाए वेदओ द्विदिघादं ण करेदि । णिहाए वेदओ द्विदिवंधं बंधदि । असादस्स
चउट्टाणियजवमज्झादो संखेजगुणहीणं अंतोकोडाकोडीए हेट्टदो बंधतो वि सादस्स
तिट्टाणिय-चदुट्टाणियाणि [ण] बंधदि, दुट्टाणियाणि चैव बंधदि । एदं^१ णिहाद्विदिउदीरण-
वड्ढिअप्पावहुअस्स साहणं भणिदं । अप्पावहुअं । तं जहा— सव्वत्थोवा णिहाए
संखेजभागवड्ढिउदीरया । संखेजगुणवड्ढिउदीरया असंखेजगुणा । असंखेजभाग-
वड्ढिउदीरया अणतगुणा । अवत्तव्वउदीरया संखेजगुणा । अवद्विदउदीरया असंखेजगुणा ।
असंखेजभागहाणुददीरया संखेजगुणा । एवं पयला-णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धोणं
पि वत्तव्वं ।

सव्वत्थोवा सादस्स संखेजगुणहाणुददीरया । संखेजभागहाणुददीरया संखेज-
गुणा । संखेजगुणवड्ढिउदीरया असंखेजगुणा । संखेजभागवड्ढिउदीरया संखेजगुणा ।
असंखेजभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । अवत्तव्वउदीरया संखेजगुणा । अवद्विउदीरया
असंखेजगुणा । असंखेजभागहाणुददीरया संखेजगुणा । असाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-
अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सादभंगो । णवरि चदुसंजलणाणमसंखेजगुणवड्ढि-हाणुददीरया

उदीरक संख्यातगुणे हैं । इस प्रकार पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय
और ध्रुव उदीरणावाली सब नामप्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

निद्राका वेदक स्थितिघातको नहीं करता है । निद्राका वेदक स्थितिवन्धको बांधता है । वह
असातावेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यसे संख्यातगुणे हीन अन्तःकोड़ाकोड़िके नीचे स्थितिवन्ध-
को बांधता हुआ भी सातावेदनीयके त्रिस्थानिक व चतुःस्थानिक स्थितिवन्धको [नहीं] बांधता है,
किंतु उसके द्विस्थानिकको ही बांधता है । यह निद्राकी स्थिति-उदीरणावृद्धिके अल्पबहुत्वका साधन
कहा है । उसका अल्पबहुत्व कहा जाता है । यथा— निद्राके संख्यातभागवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक
हैं । संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं ।
अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानि-
उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्थानगृद्धिके
विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये ।

सातावेदनीयके संख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातभागहानिउदीरक
संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यात-
गुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं । अव-
स्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असातावेदनीय,
सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी यह प्ररूपणा सातावेदनीयके समान
है । विशेष इतना है कि चार संज्वलन कषायोंके असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि-

१ ताप्रती 'एदं' इति पाठः ।

वि अत्थि । ते एत्थ ण विवक्खिया ।

मिच्छत्तस्स सच्चत्थोवा अवत्तच्चउदीरया । संखेज्जगुणा (?) । संखेज्जगुणाहाणि-
उदीरया अमंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया अमंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया
अमंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया
अणंतगुणा । अवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा ।
सम्मामिच्छत्तस्स सच्चत्थोवा अवत्तच्चउदीरया । असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्ज-
गुणा । सम्मत्तस्स सच्चत्थोवा असंखेज्जगुणाहाणिउदीरया । अवड्ढिउदीरया असंखेज्ज-
गुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्ज-
गुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । एदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-
छेदणएहि ओवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणाहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा ।
कुदो ? आवलियाए अमंखेज्जदिभागछेदणएहि ओवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणाहाणिउदीरया
अवत्तच्चउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? सम्मत्तपवेसणरासिपमाणं । संखेज्जगुणाहाणिउदीरया
असंखेज्जगुणा । कुदो ? सम्मत्तपवेसणरासिग्गहणादो । संखेज्जभाग-
हाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । अवत्तच्चउदीरया णाम एगममयपवेसया, संखेज्जभागहाणि-
उदीरया पुण सच्चो पविट्ठरासी अंतोमुहुत्तस्संतो संखेज्जवारं संखेज्जभागवड्ढिखंडयवादओ,
तेण मंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा ।

उदीरक भी होते हैं । परन्तु उनकी यहां विवक्षा नहीं की गयी है ।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणाहाणिउदीरक असंख्यातगुणे
हैं । संख्यातभागहाणिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थित-
उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहाणिउदीरक संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके
अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं । असंख्यातभागहाणिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व
प्रकृतिके असंख्यातगुणाहाणिउदीरक सबसे स्तोक हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
असंख्यातभागवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यात-
भागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । ये पत्त्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित
सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशि प्रमाण हैं । संख्यातगुणाहाणिउदीरक असंख्यातगुणे
हैं, क्योंकि, वे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट
होनेवाले जीवोंकी राशि प्रमाण हैं । अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां सम्यक्त्व-
में प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशिका ग्रहण है । संख्यातभागहाणिउदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
इसका कारण यह है कि अवक्तव्यउदीरक एक समयमें प्रविष्ट होनेवाले जीव हैं, परन्तु संख्यात-
भागहाणिउदीरक अन्तर्मुहूर्तके भीतर संख्यात वार संख्यातभागवृद्धिकाण्डकोंकी घातक सब प्रविष्ट
राशि है । इसीलिये संख्यातभागहाणिउदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहाणि-
उदीरक असंख्यातगुणे हैं

इत्थिवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया^१ । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा । अवट्ठिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । पुरिसवेदस्स इत्थिवेदभंगो । णवरि असंखेज्जगुणवड्ढिउदीरया वि अत्थि, ते एत्थ ण विवक्खिया । गंथाहिप्पाओ जाणिय वत्तव्वो । णवुसयवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया । संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा । कुदो ? असण्णिपंचिदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियेसु सण्णिपंचिदियेसु च संखेज्जभागहाणीए संभवुवलंभादो । संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा । अवट्ठिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा ।

देव-णिरयाउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया । असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । तिरिक्ख-मणुस्साउआणं चत्तारि पदाणि, तेसिं जाणिय वत्तव्वं । णिरयगईए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया । संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा^२ । संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्ज-

स्त्रीवेदके असंख्यातगुणहानि उदीरक सबसे स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदकी यह प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है । विशेष इतना है कि उसके असंख्यातगुणवृद्धिउदीरक भी हैं । किन्तु उनकी विवक्षा यहां नहीं की गयी है । ग्रन्थके अभिप्रायका जानकर कथन करना चाहिये । नपुंसकवेदके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । कारण यह कि असंज्ञी पंचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय तथा संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें संख्यातभागहानिकी सम्भावना पायी जाती है । संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं ।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यंचआयु और मनुष्यायुके चार पद हैं, उनका जानकर कथन करना चाहिये । नरकगतिनामकर्मके संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक

१ काप्रतौ 'असंखेज्जगुणहाणि', ताप्रतौ 'असंखे० [गुणा] गुणहाणि०' इति पाठः । २ काप्रतौ 'सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा' इति पाठः ।

भागवद्द्विउदीरया संखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणुउदीरया संखेज्जगुणा, संखेज्जवासाउअरासीए पाहाणियादो । देवगदिणामाए णिरयगइभंगो । तिरिक्खगइणामाए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणाहाणीए उदीरया । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवइटीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवइटीए संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवइटीए अणंतगुणा । अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । मणुमगदीए सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणाहाणीए उदीरया । संखेज्जगुणाहाणुउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणुउदीरया संखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवइट्टिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जभागवइट्टिउदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवइट्टिउदीरया संखेज्जगुणा । अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । ओरालियसरीरस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणाहाणीए उदीरया । संखेज्जगुणाहाणीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवइटीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवइटीए संखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया अणंतगुणा । असंखेज्जभागवइटीए संखेज्जगुणा । अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । वेउव्वियसरीरस्स णिरयगइभंगो । आहारसरीरस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया ।

असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहाँ संख्यातवर्षायुष्क राशिकी प्रधानता है । देवगति नामकर्मकी यह प्ररूपणा नरकगतिके समान है । तिर्यचगति नामकर्मके संख्यातगुणाहानि उदीरक सबसे स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके असंख्यातगुणाहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणाहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । औदारिकशरीरके असंख्यातगुणाहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणाहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक अनन्तगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । आहारशरीरके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे

१ काप्रतावतः प्राक्, 'संखेज्जगुणा' इत्येतदधिकं पदमुपलभ्यते ।

असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुण-
हाणीए उदीरया । संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा^१ ।
संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया
असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा ।
असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । आहारसरीरअंगोवंगस्स आहारसरीरभंगो । वेउव्विय-
मरीरअंगोवंगस्स वेउव्वियमरीरभंगो । समचउरसमंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुण-
हाणी० । [संखेज्जगुणहाणी०] असंखेज्जगुणा^२ । संखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा ।
अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा । संखेज्जभाग-
हाणीए संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-
गुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । णग्गोहपरिमंडलसंठाणस्स सव्वत्थोवा
असंखेज्जगुणहाणिउदीरया । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढीए
संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा ।
संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा । अवट्ठिदउदीरया
असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । एवं सादिय-वामण-कुज्जसंठाणार्णं ।
हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो । वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स णग्गोहपरि-
हें । औदारिकशरीरअंगोपांगके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुण-
हानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यात-
गुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवत्तव्व-
उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक
असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । आहारशरीरअंगोपांगकी
प्ररूपणा आहारशरीरके समान है । वैक्रियिकशरीरअंगोपांगकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान
है । समचतुरस्रसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणहानिउदीरक
असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अवत्तव्वउदीरक असंख्यात-
गुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं ।
असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभाग-
हानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे
स्तोक हैं । अवत्तव्वउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यात-
गुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि-
उदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यात-
गुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार स्वाति, वामन और कुब्जक
संस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है ।
वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननकी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके समान है । शेष संहननोंकी

१ ताप्रती 'असंखे०[गुणा-]०' इति पाठः । २ काप्रती 'सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणा', ताप्रती
'सव्वत्थोवा असंखे० गुणहाणी० असंखे० गुणा ?' इति पाठः ।

मंडलसंठाणभंगो । सेसाणं संघट्टणं पि णग्गोहपरिमंडलसंठाणभंगो । णवरि असंखेज्ज-
गुणहाणी णत्थि । णिरय-देवाणुपुव्वीणं सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया । संखेज्ज-
भागवड्ढीए असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा । हेदुणा उवदेसेण^१
पुण संखेज्जगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्ज-
गुणा । अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया । मणुस्साणुपुव्वीए देवाणुपुव्वीभंगो । तिरिक्खाणु-
पुव्वीए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया । संखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा ।
असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया
संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए विसेसाहिया । एदेण बीजपदेण सेसाओ वि
पयडीओ जाणिदूण भाणिदव्वाओ । एवं ट्ठिदिउदीरणा समत्ता ।

एत्तो अणुभागुदीरणा दुविधा— मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि ।
तत्थ मूलपयडिउदीरणा जाणिदूण भाणिदव्वा । उत्तरपयडिउदीरणाए पयदं— तत्थ
इमाणि चउवीस अणियोहाराणि । तं जहा— सण्णा, सव्वउदीरणा, णोसव्वउदीरणा,
उकस्सउदीरणा, अणुकस्सउदीरणा, जहणउदीरणा, अजहणउदीरणा, सादिउदीरणा,
आणादिउदीरणा, धुवउदीरणा, अधुवउदीरणा, एगजीवेण सामित्तं, कालो, अंतरं,
णाणाजीवेहि भंगविचओ, भागाभागानुगमो, परिमाणं, खेत्तं, फोसणं, णाणाजीवेहि कालो,

भी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानके समान है । विशेष इतना है कि उनके असंख्यातगुण-
हानि नहीं है । नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक
सबसे स्तोक हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक
असंख्यातगुणे हैं । किन्तु वे हेतुपूर्वक उपदेशसे संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यात-
गुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं ।
मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके समान है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-
पूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्य-
उदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक विशेष अधिक हैं । इस वीजपदसे शेष
प्रकृतियोंकी भी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई ।

यहां अनुभागउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी
हैं । इनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन जानकर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदीरणा प्रकृत
है—उसमें ये चौबीस अनुयोगद्वार हैं । यथा— संज्ञा, सर्वउदीरणा, नोसर्वउदीरणा, उत्कृष्ट-
उदीरणा, अनुत्कृष्टउदीरणा, जघन्यउदीरणा, अजघन्यउदीरणा, सादिउदीरणा, अनादिउदीरणा ध्रुव-
उदीरणा, अध्रुवउदीरणा, एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी
अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, भागाभागानुगम, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन,

१ काप्रती 'होदुणा उवदेसेण', ताप्रती 'होदु णा ? उवदेसेण' इति पाठः ।

अंतरं, भावो, अप्पाबहुअं, सण्णियासो चेदि । एदाणि भण्णिदूण पुणो भुजगारो पद-
णिक्खेवो^१ वड्ढी ठाणं च^२ वत्तव्वं । तत्थ ताव सण्णा वुच्चदे । सा दुविहा घादिसण्णा
ट्ठाणसण्णा चेदि । तत्थ घादिसण्णा उच्चदे । तं जहा— आभिणिवोहिय-सुदणाणा-
वरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा । ओहि-मणपज्जव-
णाणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा । केवल-
णाणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा सव्वघादी । अचक्खुदंसणावरणीयस्स
उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी । चक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी,
अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा । केवलदंसणावरण-णिदाणिहा-पयलापयला-
थीणगिद्धि-णिदा-पयलाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी । सादासादाउचउक्कस्स
सव्वणामपयडीणं उच्चाणीचागोदाणं उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा अघादी सव्वघादि-
पडिभागो । मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-वारसकसायाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी ।
सम्मत्तस्स पंचंतराइयाणं उदीरणा उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी । चटुसंजलण-णव-
णोकसायाणमुदीरणा उक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा । जेसिं^४
कम्माणमुदीरणाए देसघादित्तं सव्वघादित्तं च संभवदि तेसिं कम्माणं जहणिया उदीरणा

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और संनिकर्ष ।
इनकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदानिक्षेप, वृद्धि और स्थानका कथन करना चाहिये ।
उनमें पहिले संज्ञाका कथन करते हैं । वह दो प्रकारकी है— घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा ।
उनमें घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरण
और श्रुतज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट अणुभागउदीरणा
सर्वघाती और देशघाती है । अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा
सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है । केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट
व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है । अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती
है । चक्षुदर्शनावरण और अर्वाधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट
उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है । केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि,
निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है । साता व असाता वेदनीय,
आयु चार, सब नामप्रकृतियों, तथा ऊंच व नीच गोत्रकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा
अघाती है जो सर्वघातीके प्रतिभाग स्वरूप है । मिध्यात्व, सम्यग्मिध्यात्व और वारह
कषायोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है । सम्यक्त्व व पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी
उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है । चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट
उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है । जिन कर्मोंकी
उदीरणामें देशघातीपना और सर्वघातीपना सम्भव है उन कर्मोंकी जघन्य उदीरणा नियमसे

१ ताप्रतौ 'पुणो पदणिक्खेवो' इति पाठः । २ काप्रतौ 'व' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'चउक्कसव्व' इति
पाठः । ४ काप्रतौ 'तेसिं' इति पाठः ।

णियमा देसघादी, अजहणिया देसघादी वा सव्वघादी वा । जेसिं कम्माणमुक्कस्सिया उदीरणा णियमा देसघादी तेसिं कम्माणं जहणिया अजहणिया वि उदीरणा णियमा देसघादी । जेसिं कम्माणमुक्कस्समणुक्कस्सं पि सव्वघादी तेसिं जहणमजहणं पि सव्वघादी । भवोवग्गहियाणमुदीरणा जहण्णा अजहण्णा च णियमा अघादी वादिपडिभागिया ।

एत्तो सामित्ते भण्णमाणे तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्वाराणि । तं जहा— पच्चयपरूवणा विवागपरूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा चेदि । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-तिदंसणमोहणीय-सोलसकसायाणमुदीरणा परिणामपच्चइया । को परिणामो ? मिच्छत्तासंजम-कसायादी । णवण्हं^१ णोकसायाणं उदीरणा पुव्वाणुपुव्वीए असंखेज्जादिभागो परिणामपच्चइया, पच्छाणुपुव्वीए असंखेज्जा भागा भवपच्चइया । सादासादवेदणीय-चत्तारिआउअ-चत्तारिगदि-पंचजादीणं च उदीरणा भवपच्चइया । ओरालिय-सरीरस्स उदीरणा तिरिकख-मणुस्साणं^२ भवपच्चइया । वेउव्वियसरीरस्स उदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिकख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया । आहारसरीरस्स उदीरणा परिणामपच्चइया । तेजा-कम्मइयसरीराणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिकख-मणुस्सेसु परिणामपच्चइया । तिण्णमंगोवंग्गाणं संघाद-वंधणाणं सगसरीरभंगो ।

देशघाती तथा अजघन्य उदीरणा देशघाती और सर्वघाती होती है । जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे देशघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य और अजघन्य भी उदीरणा नियमसे देशघाती होती है । जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट भी उदीरणा सर्वघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य व अजघन्य भी उदीरणा सर्वघाती होती है । भवोपगृहीत (आयु) प्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य उदीरणा नियमसे अघाती होकर घातिप्रतिभागस्वरूप होती है ।

यहां स्वामित्वके कथनमें ये चार अनुयोगद्वार हैं । यथा— प्रत्ययप्ररूपणा, विपाक-प्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, तीन दर्शन-मोहनीय और सोलह कपाय; इनकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है ।

शंका—परिणाम किसे कहते हैं ?

समाधान—मिथ्यात्व, असंयम एवं कपाय आदिको परिणाम कहा जाता है ।

पूर्वानुपूर्विके अनुसार नौ नोकपायोंकी असंख्यातवें भाग प्रमाण उदीरणा परिणाम-प्रत्ययिक तथा पश्चादानुपूर्विके अनुसार असंख्यात बहुभाग प्रमाण उदीरणा भवप्रत्ययिक है । साता व असाता वेदनीय, चार आयुकर्म तथा चार गति और पांच जाति नामकर्मोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है । औदारिकशरीरकी उदीरणा तिर्यच्चों व मनुष्योंके भवप्रत्ययिक होती है । वैक्यिकशरीरकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यच्चों व मनुष्योंके परिणाम-प्रत्ययिक होती है । आहारशरीरकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक होती है । तेजस व कर्मण शरीरोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यच्चों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है । तीन आंगोपांग, पांच संघात व पांच वन्धन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरके

१ काप्रती च्चुत्तिनोउच्च पाठः; मप्रती 'कसायादियाणं णवण्हं' इति पाठः । २ काप्रती 'मणुस्स-' इति पाठः ।

समचउरससंठाणस्स उदीरणा मूलसरीरे भवपच्चइया आहारसरीरस्स उत्तरसरीरं विउच्चिदतिरिक्ख-मणुस्साणं च सव्वेसिं परिणामपच्चइया । सेसपंचसंठाणाणमुदीरणा भवपच्चइया । छण्णं संघडणाणमुदीरणा भवपच्चइया । वण्ण-गंध-रसणामाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया । सीदुण्ण-णिद्ध-ल्हुक्खाण-मुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चया^१ । कक्खड-गरुआणं उदीरणा एयंतभवपच्चइया । मउअ-लहुआणमुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउच्चिदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया । चदुण्णमाणुपुच्चीणमुदीरणा भवपच्चइया । अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुहाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया । उवघादादानुस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-तस-थावर-वादर-सुहुम-साहारण-पज्जत्तापज्जत्त-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाण-मुदीरणा एयंतभवपच्चइया । परघादुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउच्चिदस्स च परिणाम-पच्चइया, अण्णत्थ भवपच्चइया । उज्जोवुदीरणा उत्तरं विउच्चिदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया । पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परघादभंगो । णिमिण-तित्थयग्-पंचंतराइयाणमुदीरणा परिणामपच्चइया । सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति^३-उच्चागोदाणमुदीरणा

अनुसार हैं । समचतुरस्रसंस्थानकी उदीरणा मूल शरीरमें भवप्रत्ययिक होती है, और आहार-शरीरी तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले सभी तिर्यचों व मनुष्योंके उसकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक होती है । शेष पांच संस्थानोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है । छह संहननोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है । वर्ण, गन्ध व रस नामकर्मोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है । शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्षकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है । कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है । मृदु और लघु नामकर्मोंकी उदीरणा आहारकशरीरी तथा उत्तरशरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक और शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है । चार आनुपूर्वियोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है । अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभ प्रकृतियोंकी उदीरणा देवों और नारकियोंके भव-प्रत्ययिक तथा तिर्यचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है । उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, साधारण, पर्याप्त, अपर्याप्त, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है । परघातकी उदीरणा आहारशरीरी एवं उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक तथा अन्यत्र भवप्रत्ययिक होती है । उद्योतकी उदीरणा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले जीवके परिणाम-प्रत्ययिक तथा शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है । प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वर-की प्ररूपणा पर घातके समान है । निर्माण, तीर्थकर और पांच अन्तरायकी उदीरणा परिणाम-प्रत्ययिक है । सुभग, आदेय, यशकीर्ति और ऊंच गोत्रकी उदीरणा गुणप्रतिपन्न जीवोंमें परिणाम-

१ काप्रती 'परिणामपच्चया ण', ताप्रती 'परिणामपच्चया [ण] ।' इति पाठः । २ काप्रती 'एदंतभव-' इति पाठः । ३ ताप्रती 'अजगिति' इति पाठः ।

गुणपडिवणेषु परिणामपचइया, अगुणपडिवणेषु भवपचइया । को पुण गुणो ? मंजमो संजमासंजमो वा । एवं पचयपरूवणा गदा ।

विवागपरूवणागदाए जहा णिवंधो पुवं परूविदो तथा एत्थ विवागो वि परूवे-यव्वो, भेदाभावादो ।

ठाणपरूवणदाए आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्सिया उदीरणा णियमा चउट्टाणिया । अणुक्कस्सा चउट्टाणिया तिट्टाणिया विट्टाणिया एयट्टाणिया वा । सुदणाणा-वरण-ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरण-चदुसंजलण - णवुंसयवेदाणमाभिणिबोहियणाणा-वरणभंगो । मणपजवणाणावरण-केवलणाणदंसणावरण-णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिदा-पयला-सादासादवेदणीय - मिच्छत्त-वारसकसाय-छण्णोकसाय-णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-पंचिदियजादि - चदुसरीर - वेउच्चिय - आहारअंगोवंग - वेउच्चिय - आहार - तेजा - कम्मइयपाओग्गबंधण-संघाद-समचउरस-हुंडसंठाण-वण्ण-गंध-रस-सीदुसुण-णिद्ध-ल्लुक्ख-मउअ-लहुअ - अगुरुअलहुअ - उवघाद-परघाद-उज्जोवुस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ - तस-बादर-पजत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-दुभग-दुस्सर - अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदाणमुक्कस्सिया उदीरणा चउट्टाणिया । अणुक्कस्सा चउट्टाणिया तिट्टाणिया दुट्टाणिया वा । चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-सम्मत्त-इत्थि-पुरिम-

प्रत्यायिक और अगुणप्रतिपन्न जीवोंमें भवप्रत्यायिक होती है ।

शंका—गुणसे क्या अभिप्राय है ?

समाधान—गुणसे अभिप्राय संयम और संयमासंयमाका है ।

इस प्रकार प्रत्ययरूपणा समाप्त हुई ।

विपाकप्ररूपणाकी विवक्षा होनेपर जैसे पहिले निबन्धकी प्ररूपणा की गयी है वैसे यहां विपाककी भी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

स्थानप्ररूपणामें आभिनिबोधकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक, द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है । श्रुतज्ञानावरण, अर्वाधज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण, चार संज्वलन और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा आभिनिबोधकज्ञानावरणके समान है । मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, वारह कपाय, छह नोकपाय, नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, चार शरीर, वैक्रियिक व आहारक आंगोपांग, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीरोंके योग्य बंधन व संघात ; समचतुरस्रसंस्थान, हुण्डकसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, मृदु, लघु, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण तथा नीच व ऊंच गोत्र, इनकी उत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक और द्विस्थानिक

‡ ताप्रती 'गुणगो' इति पाठः ।

वेदाणं पंचंतराइयाणं च उक्कस्सिया उदीरणा दुट्ठाणिया, अणुकस्सिया दुट्ठाणिया एय-
ट्ठाणिया वा । चक्खु-अचक्खुदंसणाणमुदओ जस्स वि एगमक्खरमत्थि तस्स णियमा एग-
ट्ठाणिया उदीरणा । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया अणुकस्सिया वा णियमा दुट्ठाणिया
एक्कम्मि ट्ठाणे । तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-चउजादि-ओरालियसरीर-
तदंगोवंग-ओरालियसरीरबंधण-संघाद-चउसंठाण-छसंघडण-क्कखड-गरु-आणुपुव्वीचउक्क-
आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुक्कस्सा अणुकस्सा वा उदीरणा दुट्ठाणिया ।
तित्थयरस्स उक्कस्सा अणुकस्सा चदुट्ठाणिया । एवमुक्कस्सिया ट्ठाणपरूवणा समत्ता ।

जहण्णट्ठाणसमुक्कित्तणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वकम्मणं पि अणुकस्सियाए
उदीरणाए जं जस्म जहण्णियट्ठाणं अभिवाहरिदं तं चेव जहण्णट्ठाणं उदीरणाए
ट्ठाणमभिवाहरियव्वं । अजहण्णाए अणुकस्सभंगो । भवोवग्गाहियाणं दुट्ठाणियपडिभागियं
टिट्ठाणपडिभागियं चउट्ठाणपडिभागियं चेदि अभिवाहरियव्वं । दुट्ठाणिय-तिट्ठाणिय-
चउट्ठाणियं ति च ण भाणियव्वं । एवं टाणपरूवणा समत्ता ।

एत्तो सुहासुहपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-
अमादावेदणीय-अट्ठावीसमोहणीय - णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ - एइंदिय - बेइंदिय-
तेइंदिय-चउरिंदियजादि-पंचसंठाण-पंचसंघडण - अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फाम-णिरयगइ-
होती है । चक्षु व अचक्षु दर्शनावरण, सम्यक्त्व, स्त्री व पुरुष वेद तथा पांच अन्तराय;
इनकी उत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती
है । चक्षु व अक्षु दर्शनावरणका उदय जिसके भी एक अक्षर है उसके नियमसे उनकी
एकस्थानिक उदीरणा होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा एक
स्थानमें नियमसे द्विस्थानिक होती है । तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यचगति, मनुष्यगति, चार
जातिनामकर्म, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकशरीरबन्धन, औदारिकशरीर-
संघात, चार संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, चार आनुपूर्वी, आतप, स्थावर, सूक्ष्म,
अपर्याप्त और साधारणशरीर; इनकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक होती है ।
तिर्यकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट
स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्थानसमुक्कीर्तनका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— सभी कर्माकी अनुत्कृष्ट
उदीरणामें जिसका जो जघन्य स्थान कहा गया है वही जघन्य स्थान उदीरणाका स्थान कहना
चाहिये । अजघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा अनुत्कृष्ट उदीरणाके समान है । भवोपगृहीत
प्रकृतियोंके द्विस्थानप्रतिभागिक, त्रिस्थानप्रतिभागिक और चतुःस्थानप्रतिभागिक कहना
चाहिये; उनके द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक नहीं कहना चाहिये । इस
प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां शुभाशुभप्ररूपणा कहते हैं । वह इस प्रकार है पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण,
असातावेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, नरकगति, तिर्यचगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय,
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श, नरक-

तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - उपघाद - अप्पसत्थविहायगदि - थावर - सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोद - पंचंतराइय-पयडीओ असुहाओ । सादावेदणीय-आउतिय-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउन्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण- ओरालिय-वेउन्विय-आहारसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहमंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस - फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस - बादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्त-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदपयडीओ सुहाओ । एवं सुहासुहपरूवणा समत्ता ।

एत्तो सामित्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— आभिनिबोहियणाणावरणीयस्म उक्कस्मिया अणुभागउदीरणा कस्स ? सण्णस्स पज्जत्तयदस्स उक्कस्ससंक्किलिट्ठस्स । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणमाभिनिबोहियणाणावरणभंगो । चक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्सउदीरणा कस्स ? तीइंदियपज्जत्तयस्स सव्वसंक्किलिट्ठस्स^१ । ओहि-केवल-दंसणावरणाणं उक्कस्सिया कस्स ? सण्णपज्जत्तयस्स सव्वसंक्किलिट्ठस्स । णवरि ओहि-णाण-दंसणावरणीयाणं उक्कस्सुदीरणा ओहिलंभेणुज्जियस्स वत्तव्वा । अचक्खुदंसणावर-

गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; ये प्रकृतियां अशुभ हैं । मानावेदनीय, शेष तीन आयु, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपंग, वज्रपंभवन्नाराचसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यनुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर और ऋच गोत्र; ये प्रकृतियां शुभ हैं । इस प्रकार शुभा-शुभप्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां स्वामित्वप्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनभागउदीरणा किसके होती है ? वह संज्ञी, पर्याप्त एवं उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है । चक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह त्रीन्द्रिय पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट जीवके होती है । अवधिदर्शनावरण और केवल-दर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह संज्ञी पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट जीवके होती है । विशेष इतना है कि अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा अवधिज्ञान और अवधिदर्शनकी प्राप्तिसे रहित जीवके कहना चाहिये । अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट

१ X X X चक्खुगो पुण तेइंदिय सध्वपज्जे ॥ क, प्र. ४, ५८.

णीयस्स उक्कस्मिया अणुभागुदीरणा कस्स^१ ? सुहुमस्स पढमममयतब्भवत्थस्स जहण्ण-
लद्धियस्स^२ । सेमपंचणं दंसणावरणीयाणं उक्कस्सउदीरणा कस्स ? सण्णिपज्जत्तयस्स
मज्झिमपरिणामस्स तप्पाओग्गमंक्किलिद्धस्स^३ । सादस्स० कस्स ? देवस्स तेत्तीसंसागरोव-
मियस्स पज्जत्तस्स । अमादस्स णेरइयस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स मिच्छा-
इट्ठिस्स मज्झिमपरिणामस्स । किं कारणं ? उक्कस्समंक्किलिद्धो वेदणीयं^४ ण वुज्झदि^५ ति ।

सम्मत्तस्स कस्स ? सम्माइट्ठिस्स से काले मिच्छत्तं पडिवज्जमाणतप्पाओग्ग-
मंक्किलिद्धस्स । सम्मामिच्छत्तस्स कस्स ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले मिच्छत्तं गच्छंतस्स
तप्पाओग्गमंक्किलिद्धस्स^६ । मिच्छत्त-सोलसकमायाणं कस्स ? उक्कस्समंक्किलिद्धस्स मिच्छा-
इट्ठिस्स । णवुंमयवेद-अग्गदि-सोग-भय-दुग्गुंछाणं कस्स ? तेत्तीससागरोवमियणेरइयस्स
पज्जत्तयस्स मज्झिमपरिणामस्स तप्पाओग्गमंक्किलिद्धस्स । हस्स-रदीणं कस्स ? सहस्सार-
देवस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गमंक्किलिद्धस्स^७ । इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं कस्स ?

उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य लब्धिवाले मूक्ष्म जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम
समयमें होती है । शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह
तत्प्रायोग्य संक्लेशसे सहित मध्यम परिणामवाले संज्ञी पर्याप्त जीवके होती है । सातावेदनीयकी
उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त
देवके होती है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले
मध्यम परिणामयुक्त पर्याप्त मिथ्यादृष्टि नारकीके होती है ।

शंका—इसका कारण क्या है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव वेदनीयके
अनुत्कृष्ट अनुभागका अनुभवन नहीं करता है ।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अनन्तर समयमें मिथ्यात्वको
प्राप्त होनेवाले ऐसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टि जीवके होती है । सम्यग्मिथ्यात्व-
की उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अनन्तर समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले ऐसे
तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके होती है । मिथ्यात्व व सोलह कपायोंकी
उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि जीवके होती है ।
नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस
सागरोपम प्रमाण आयुवाले नारक पर्याप्त जीवके होती है जो मध्यम परिणामोंसे युक्त होता हुआ
तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त है । हास्य व रतिकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह
तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सहस्रार कल्पवासी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि देवके होती है । श्रीवेद

१ काप्रतावतोऽग्रे 'सण्णिपज्जत्तस्स मव्वमक्किलिद्धस्स' इत्येतावानयमधिकः पठोऽस्ति । २ वाणाइ अचक्खुणं
जेट्ठा आयम्मि हीणलद्धिस्स । सुहुमस्स × × × ॥ क. प्र. ४, ५८. ३ निदाइपंचगस्स व मज्झिमपरिणाम-
मंक्किलिद्धस्स । क. प्र. ४, ५९. ४ प्रत्योरुभयोरेव 'वेदं' इति पाठः । ५ मप्रतिपाठोऽयम्, का-ताप्रत्योः
'वुज्झदि' इति पाठः । ६ सम्मत्त-मीसगाणं से काले गहिहिइत्थि मिच्छन्ते । क. प्र. ४, ६१. ७ हाम-रदीण
सहस्सारगस्स पज्जत्तयस्स ॥ क. प्र. ४, ६१.

तिरिक्खस्स अट्टवाम्माउअस्स अट्टवस्सजादस्स सव्वमंक्किलिड्डस्स ।

णिरयाउअस्स कस्स ? णेरइअस्स तेत्तीसंमागरोवमियस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइड्डिस्स उक्कस्ससंक्किलिड्डस्स । मणुम-तिरिक्खाउआणं कस्स ? तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तयस्स^१ । देवाउअस्स कस्स ? तेत्तीसंमागरोवमियस्स पज्जत्तस्स^२ ।

णिरयगइणामाए कस्स ? तेत्तीसंमागरोवमियस्स पज्जत्तस्स उक्कस्ससंक्किलिड्डस्स^३ मज्झिमपरिणामस्स वा । तिरिक्खगइणामाए कस्स ? तिरिक्खस्स अट्टवाम्माउअस्स अट्टवस्सजादस्स तप्पाओग्गसंक्किलिड्डस्स । मणुसगदिणामाए कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तस्स । देवगदिणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीसंमागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । ओरालियणामाए उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तस्स । वेउव्वियसरीरणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीसंमागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । आहारसरीरणामाए कस्स ? पज्जत्तस्स आहारसरीरमुट्ठाविदसंजदस्स । तेजा-कम्मइय-सरीरणमुक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयमजोगिस्स । तिण्णिअंगोवंग-बंधण-

और पुरुषचेदकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्ष प्रमाण आयुवाले अष्टवर्षीय सर्वसंक्लष्ट तिर्यच जीवके होती है ।

नारकायुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकी जीवके होती है । मनुष्यायु और तिर्यचायुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त जीवके होती है । देवायुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है । वह तेतीस सागरोपमकी आयुवाले पर्याप्त देवके होती है ।

नरकर्गत नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त अथवा मध्यम परिणाम युक्त तेतीस सागरोपमकी आयुवाले पर्याप्त जीवके होती है । तिर्यगगत नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तन्प्रायोग्य संक्लेशसे युक्त आठ वर्ष प्रमाण आयुवाले अष्टवर्षीय तिर्यच जीवके होती है । मनुष्यगत नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले मनुष्य पर्याप्तके होती है । देवगत नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपमकी आयुवाले देव पर्याप्तके होती है । औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले मनुष्य पर्याप्तके होती है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम आयुवाले देव पर्याप्तके होती है । आहारशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरको पूर्ण करनेवाले संयत पर्याप्तके होती है । तैजस और कार्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवन संयोगी केवलीके होती है । तीन आंगोपांग, बन्धन और संघात नामकर्मकी प्ररूपणा अपने

१ ताप्रता 'पज्जनयस्स' इत्येतत्पदं नास्ति । २ नियगटिई उक्कोसो पज्जतो आउगाणं पि ॥ क. प्र. १. ७. ८. ३ काप्रती 'मागरोवमियस्स पज्जत्तस्स उदीरणामंक्किलिड्डस्स' इति पाठः ।

अंधादणामाणं सरीरभंगो ।

पसुत्थवण्ण-गंध-रसाणं कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । अप्पमत्थाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिड्डस्स । णिद्ध-उण्हाणं कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । सीद-ब्हुक्खाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिड्डस्स । मउअ-लहुआणं कस्स ? आहारसरीरेण पज्जत्तयदस्स मंजदस्स^१ । कक्खड-गरुआणं कस्स ? तिरिक्खस्स अट्टवासाउअस्स अट्टवासाणमंते वट्टमाणस्स^२ ।

णिरयाणुपुच्चीणामाए कस्स ? तेत्तीमंसागरोवमियस्स णेरइयस्स त्रिममयतव्भवत्थस्स तप्पाओग्गमंकिलिड्डस्स । मणुमाणुपुच्चीणामाए कस्स ? तिपलिदोवमियस्स मणुस्सस्स त्रिममयतव्भवत्थस्स । तिरिक्खाणुपुच्चीणामाए कस्स ? तिरिक्खस्स अट्टवस्मियस्स त्रिममयतव्भवत्थस्स । देवाणुपुच्चीणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीमंसागरोवमियस्स त्रिममयतव्भवत्थस्स ।

अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाण-मुक्कस्मिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स^३ । उवघादणामाए कस्स ? तेत्तीमं-

अपने शरीरके समान है ।

प्रशस्त वर्ण, गन्ध और रसकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है । उन अग्रशस्त वर्णादिकोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संकलेशकी प्राप्त जीवके होती है । स्निग्ध और उष्ण स्पर्शकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । शीत और रूक्षकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संकलेश युक्त जीवके होती है । मृदु और लघुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरसे पर्याप्त हुण संयत जीवके होती है । कर्कश और गुरुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षकी आयुवाले व आठ वर्षोंके अन्तमें वर्तमान तिर्यच जीवके होती है ।

नरकानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संकलेशसे संयुक्त तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले नारकी जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पत्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षकी आयुवाले तिर्यच जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । देवानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले देवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थकर, निर्माण और ऊंच गोत्रकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है ।

१ तापती 'पज्जत्तयदसंजदस्स' इति पाठः । २ कक्खड-गरु-संघयणा-त्थी-पुम-संटाण-तिरियणामाणं । पंचिदिओ तिरिक्खो अट्टमवासट्टवासाओ ॥ क. प्र. ४, ६३. ३ जोगते सेसाणं सुभाणमियराणि चउसु वि

सागरोवमियस्स णेरइयस्स पज्जत्तस्स । परघाद-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीराणं कस्स ? मंजदस्स आहारमरीमुट्ठाविदस्स पज्जत्तस्स । आदावणामाए कस्स ? बावीम्वस्ससहस्साउ-अस्स पुट्टविकाइयपज्जत्तस्स । उज्जीवणामाए कस्स ? संजदस्स विउव्विदुत्तरसरीरम्स पज्जत्ति गयस्स ।

त्रीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं कस्स ? जहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए^१ णिव्वत्तिदूण अंतोमुहुत्तपज्जत्तरस^२ । एइंदियजादिणामाए कस्स ? जहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए णिव्वत्तिय अंतोमुहुत्तपज्जत्तयग्ग एइंदियस्स । पंचिंदियजादि-उस्सास-तस-वादर-पज्जत्त-णामाणं कस्स ? देवस्स तेत्तीसंमागरोवमियस्स^३ । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं कस्स ? णेरइयस्स तेत्तीसंमागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । अथिर-असुहणामाणं कस्स ? उक्कम्मसंकलिड्डस्स ।

थावरणामाए कस्स ? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववणस्स वादरेइंदियस्स

उपघात नामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त नारकीके होती है । परघात, प्रशस्त विहायोगति और प्रत्येकशरीरकी उत्कृष्ट अनुभाग-उद्दीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरको उत्पन्न कर लेनेवाले संयत पर्याप्तके होती है । आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? वह बाईस हजार वर्षकी आयुवाले पृथिवीकार्यायक पर्याप्त जीवके होती है । उद्योत नामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? वह उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले संयत पर्याप्तके होती है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट उद्दीरणा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे निर्वृत्त होकर अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए उन उन जीवांके होती है । एकेन्द्रियजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे निर्वृत्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त एकेन्द्रियके होती है । पंचेन्द्रियजाति, उच्छ्र्वास, त्रस, वादर और पर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट उद्दीरणा तेतीस सागरोपमकी आयुवाले देवके होती है । अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयश-कीर्ति और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट उद्दीरणा तेतीस सागरो-पमकी आयुवाले नारक पर्याप्तके होती है । अस्थिर और अशुभ नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशयुक्त जीवके होती है ।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट उद्दीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न

गईसु । पज्जत्तुक्कडमिच्छस्सोहीणमणोहिलद्धिरस ॥ क. प्र. ४, ६८. जोमंते ति— योगिनः सयोगकेवलिनोऽन्ते सर्वापवर्तनरूपे वर्तमानस्य शोषाणमुक्तव्यतिरिक्ताना शुभप्रवृत्तीना तैजससप्तक-मृदु-लघुवर्जशुभवर्णायेकादशका-गुणलघु-स्थिर-शुभ-सुभगादेय-वशःकीर्ति-निर्माणोच्चैर्गोत्रतीर्थकरनाम्ना (२५) पंचविशतिसंख्यानामुत्कृष्टानुभागे-दीरणा भवति । (मलयगिरिटीका). १ तापतौ 'जहण्णपज्जत्तीए' इति पाठः । २ हस्सट्ठीं पज्जना तन्नामा विगलजाइ-सुट्टमाणं । क. प्र. ४, ६५. ३ पंचिंदिय-तम-वादर-पज्जनग-साइ-सुम्सर-गईणं । वेउव्वुम्मामाणं देवो जट्टट्टिइममना ॥ क. प्र. ४, ६०.

अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स^१ उक्कस्समंक्किलिट्ठस्स । सुहुमणामाए कस्स ? जहणियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववणस्स अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स उक्कस्ससंक्किलिट्ठस्स । अपज्जत्तणामाए कस्स ? मणुस्सस्स उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए चरिमसमए^२ उक्कस्ससंक्किलेसं गदस्स^३ । साहारणसरीरणामाए कस्स ? वादराणिगोदस्स जहणियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए अंतोमुहुत्तं पज्जत्तस्स उक्कस्ससंक्किलिट्ठस्स समचउरमसंठाणस्स उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? संजदस्स आहारसरीरस अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स । सेसाणं हुंडमंठाणवज्जाणं मंठाणाणं पंचण्णं मंघडणाणं च उक्कस्सिया कस्स ? तिरिक्खस्स अट्टवामियस्स अट्टवामंते वट्टमाणस्स^४ । हुणमंठाणस्स कस्स ? णेरइयस्स अग्गाट्टिदीए उववणअंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स^५ । पढमसंघडणस्स कस्स ? मणुसम्म तिपलिदोवमियस्स अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयदरस^६ । अंतराइयपंचयस्स अचक्खुदंसणभंगो । एदाणि मच्चाणि मामित्ताणि अप्पप्पणो मंतकम्मणेण उक्कस्सेण वा छट्टाणगुण-

तथा उत्कृष्टसंक्लेशको प्राप्त हुए अन्तमुहूर्तवर्ती पर्याप्त वादर एकेन्द्रिय जीवके होती है । सूक्ष्म नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न तथा उत्कृष्ट संक्लेशका प्राप्त हुए अन्तमुहूर्तवर्ती पर्याप्त सूक्ष्म जीवके होती है । अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके चरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए मनुष्यके होती है । साधारणशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे अन्तमुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए उत्कृष्ट संक्लेश युक्त वादर निगोद जीवके होती है । समचतुरन्ध्रसंस्थानकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तमुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए आहारशरीर संयत जीवके होती है । हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष चार संस्थानोंकी तथा वज्रपेभनाराचसंहननको छोड़कर शेष पांच संहननोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षोंके अन्तमें वर्तमान अष्टवर्षीय तिर्यचके होती है । हुण्डकसंस्थानकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट स्थितिके साथ उत्पन्न होकर अन्तमुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए नारकीके होती है । प्रथम संहननकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले अन्तमुहूर्तवर्ती पर्याप्त मनुष्यके होती है । पांच अन्तराय कर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा अचक्षुदर्शनावरणके समान है । ये सब स्वामित्व अपने अपने उत्कृष्ट सत्कर्मके साथ अथवा पटस्थान-

१ ताप्रतो 'अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स' इति पाठः । २ काप्रतो 'समय' इति पाठः । ३ तथा उपर्याप्तनाम्नो मनुष्योऽपर्याप्तश्रमसमये वर्तमानः सर्वसंक्लिष्ट उत्कृष्टानुभागोदीरणास्वामी । संज्ञितिर्यक्पंचेन्द्रियादपर्याप्तान्मनुष्योऽपर्याप्तोऽतिसंक्लिष्टतर इति मनुष्यप्रहणम् । क. प्र. (मलय.) ४, ६२. ४ कक्खड-गुरुसघयणा-रथी-पुम-संठाण-तिरियनामाणं । पंचिदिओ तिरिक्खो अट्टमवासट्टवासओ ॥ क. प्र. ४, ६३. ५ गह-हुंडुवघाया-णिट्टवगइ-नीयाण दुहचउक्कस्स । निरउक्कस्स-समत्ते व्यसमत्ताए नरस्सते ॥ क. प्र. ४, ६२. गह ति— नरयिक उक्कृष्टस्थितो वर्तमानः सर्वाभिः पर्याप्तभिः पर्याप्तः सर्वोत्कृष्टसंक्लेशयुक्तो नरकगति-हुंडसंस्थानोपघाता-प्रशस्तविहायोगति-नीचगोत्राणां 'दुहचउक्कस्स ति' दुर्भगचतुष्कस्य दुर्भग-दुःस्वरानादेयायशःकीतिरूपस्य सर्वसंखयया नवाना प्रकृतानामुत्कृष्टानुभागोदीरणास्वामी । मलय. ६ मणु-आरालय-वज्रासहाण मणुअं तिपल्लपज्जत्तो । क. प्र. ४, ६४.

हीणेण वा होंति त्ति दट्ठव्वाणि । एवमुक्कस्साणुभागुदीरणा समत्ता ।

जहण्णयं सामित्तं उच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहिय-सुदणाणावरणीय-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणीयाणं जहण्णिया अणुभागउदीरणा कस्स ? चोदसपुन्विद्यस्स समया-हियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? परमोहिस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । मणपज्जवणाणावरणीयस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? विउलमदिस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुम-त्थस्स^१ । केवलणाण-केवलदंसणावरणीयाणं जहण्णिया कस्स ? समयाहियावलियचरिम-समयछदुमत्थस्स । णिहा-पयलाणं जहण्णिया कस्स ? उवसंतकमायवीयरागछदुमत्थस्स^२ । णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? पमत्तसंजदस्स तप्पा-ओग्गविमुद्धस्स^३ । सादासादाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? अण्णदरो णेरइयो तिरिक्खो मणुस्सो^४ देवो वा उक्कस्स-मज्झिमजहण्णासु द्विदीसु वड्डमाणो मज्झिमपरिणामो^५ ।

पातित गुणहानिस्वरूप सत्कर्मके साथ होते हैं, ऐसा जानना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट-अनुभाग-उदीरणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह चौदह पूर्वधारीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह परमावधिज्ञानीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह विपुलमतिमनःपयेयज्ञानीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? उनकी जघन्य उदीरणा छद्मस्थकालमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह उपशान्तकपाय वीतराग छद्मस्थके होती है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुए प्रमत्तसंयतके होती है । साता व असाता वेदनीयकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? जो अन्यतर नारकी, तिर्यच, मनुष्य अथवा देव उत्कृष्ट, मध्यम या जघन्य स्थितिमें वर्तमान होकर मध्यम परिणामसे युक्त होता है उसके

१. सुयकेवल्लिणे मइ-सुय-अचक्खु चक्खुणुदीरणा मंदा । विपुल-परमोहिणाणं मणणाणोहीदुगस्सावि ॥ क. प्र. ४, ६९. २. ग्ववणाए विघ-केवल-सजलणाण य सनोकसायाणं । सय-सयउदीरणंतं निहा-पयलाणमुवसंतं ॥ क. प्र. ७०. क्षपणायोत्थितस्स पंचविधान्तराय-केवलज्ञानावरण-केवलदर्शनावरण-संज्वलनचतुष्टय-नवनाकपायरूपाणं विशतिप्रकृतीना स्व-स्वोदीरणापर्यवसाने जघन्यानुभागोदीरणा । तत्र पंचविधान्तराय-केवलज्ञानावरण-केवल-दर्शनावरणाना क्षीणकपायस्य × × × स्व-स्वोदीरणापर्यवसाने । तथा निद्रा-प्रचलयोरुपशान्तमोहे जघन्यानु-भागादीरणा लभ्यते । (म. टीका) ३ निहानिहाईणं पमत्तविरए विसुज्झमाणम्मि । क. प्र. ४, ७१. ४ काप्रती 'अण्णदरा णेरइया तिरिक्खमणुस्सो', ताप्रती 'अण्णदरणेरइयो तिरिक्खो मणुस्सो' इति पाठः ।

मिच्छत्तस्म जहणिया उदीरणा कस्स ? मिच्छाडडिस्स सव्वविसुद्धस्स पुव्वुप्पणेण सम्मत्तेण से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ड्ढिदस्स जहणणाणुभागउदीरणा^२ । सम्मत्तस्म जहणिया उदीरणा कस्स ? समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणिज्जस्स^३ । सम्मामिच्छत्तस्म जहणिया उदीरणा कस्म ? से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति ड्ढियस्स सम्मामिच्छाडडिस्स^४ । अणंताणुबंधीणं जहणिया उदीरणा कस्स ? मिच्छाडडिस्स सव्वविसुद्धस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ड्ढियस्स । अपच्चक्खाणावरणचदुकस्म जहणिया उदीरणा कस्स ? सम्माडडिस्स सव्वविसुद्धस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ड्ढियस्स । पच्चक्खाणावरणचदुकस्स जहणिया उदीरणा कस्स ?

उन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है ।

मिथ्यात्वकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो सर्वविशुद्धमिथ्यादृष्टि जीव पूर्वोत्पन्न सम्यक्त्वसे अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे अवस्थित है उसके मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? जिसके दर्शनमोहनीयके अक्षीण रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त करेगा, इस अवस्थामें स्थित है ऐसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है । अनन्तानुबन्धी कर्पायोंकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे स्थित उस सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीवके उनकी जघन्य उदीरणा होती है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? अन्तर कालमें संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे स्थित सर्वविशुद्ध सम्यग्दृष्टि जीवके अप्रत्याख्यानावरणचतुष्की जघन्य उदीरणा होती है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त

१. संसाण पगइवई मांज्झमपरिणामपरिणओ होजा । क. प्र. ४, ७९. संसाण नि— शंषाणां माता-सातवेदनीय-गतिचतुष्टय- × × × चतुस्त्रिंशत्संख्यानां प्रकृतीनां तत्तत्प्रकृत्युदये वर्तमानाः सर्वेऽपि जीवा-मध्यमपरिणामपरिणता जघन्यानुभागोदीरणारवामिनो भवन्ति (मलय. टीका) । २. से काले सम्मत्तं संजमं गिण्हओ य तंरसमं । क. प्र. ४, ७२. से नि— अनन्तरे काले द्वितीये यः सम्यक्त्वं संयमं सयममहित गृहीष्यति तस्य त्रयोदशाना मिथ्यात्वानन्तानुबन्धचतुष्टयाप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यानावरणरूपाणा प्रकृतीना जघन्यानुभागोदीरणा । अयमिह संप्रदायः— योऽनन्तरसमये सम्यक्त्वं सयमसहितं गृहीष्यति तस्य मिथ्यादृष्टे-मिथ्यात्वानुबन्धनां जघन्यानुभागोदीरणा । (म. टीका). इंधमसम्मत्तस्म उ समखवणोदीरणचरिमे ॥ क. प्र. ४, ७१. तथा क्षायिकसम्यक्त्वमुत्पादयतो मिथ्यात्व-सम्यग्मिथ्यात्वयोः क्षपितयोर्वेदकसम्यक्त्वस्य क्षायोपशमिकस्य सम्यक्त्वस्य क्षपणकाले चरमोदीरणायां समयाधिकावलिक्काशोपाया स्थितां मत्यां प्रवर्तमानाया जघन्यानुभागोदीरणा भवति । सा च चतुर्गतिकानामन्यतरस्य वदितव्या (म. टीका) । ४. सम्मत्तमेव मीसे × × × ॥ क. प्र. ४, ७२. तथा 'सम्मत्तमेव मीसे' इति यः सम्यग्मिथ्यादृष्टिरनन्तरसमये संयमं प्रतिपत्स्यते तस्य सम्यग्मिथ्यात्वस्य जघन्यानुभागोदीरणा । सम्यग्मिथ्यादृष्टिर्युगपत् सम्यक्त्वं संयमं च न प्रतिपत्स्यते, तथा विशुद्धेर्भावात्, किन्तु केवलं सम्यक्त्वमेवेति कृत्वा तदेव केवलमुक्तम् (म. टीका) ।

मंजदासंजदस्म सञ्चविसुद्धस्म से काले मंजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ।

कोधमंजलणाए जहणिया उदीरणा कस्स ? कोधोदएण खवगसेडिसुवट्टियस्म चरिमसमयकोधवेदयस्म । माणमंजलणाए जहणिया उदीरणा कस्स ? कोधोदएण माणोदएण वा खवगसेडिमारूढस्म चरिमममयमाणवेदगस्स । मायामंजलणाए जहणिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयमायवेदयस्म खवगस्म । लोभमंजलणाए जहणिया उदीरणा कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयसकमायस्म खवयस्म । णवुंसयवेदस्म जहणिया उदीरणा कस्स ? ममयाहियावलियचरिमसमयणवुंसयवेदयखवयस्म । पुरिसवेदस्म जहणिया उदीरणा कस्स ? ममयाहियावलियचरिमसमयपुग्गिमवेदखवयस्म । इत्थिवेदस्म जहणिया उदीरणा कस्स ? ममयाहियावलियइत्थिवेदस्म खवयस्म । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जहणिया उदीरणा कस्स ? चरिमममयअपुव्वकरण-खवगस्स सञ्चविसुद्धस्स ।

णिरयाउअस्स जहणिया उदीरणा कस्स ? दसवस्ससहस्सियाए^१ द्विदीए उव-वण्णस्स णेरइयस्स पढमे वा चरिमे वा अण्णम्हि वा कम्हि वि एगममए वट्टमाणस्स ।

करेगा, इस प्रकारसे स्थित सर्वविशुद्ध संयातसंयतके उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है ।

संज्वलनक्रोधकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह क्रोधोदयके साथ क्षपक श्रेणिपर आरूढ हुए अन्तिम समयवर्ती क्रोधवेदक जीवके होती है । संज्वलनमानकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह क्रोधके उदयके साथ अथवा मानके उदयके साथ क्षपक श्रेणिपर आरूढ हुए अन्तिम समयवर्ती मानवेदकके होती है । संज्वलनमायाकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती मायावेदक क्षपकके होती है । संज्वलन लोभकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जिसकी सकषाय अवस्थाके अन्तिम समयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है ऐसे क्षपक जीवके संज्वलनलोभकी जघन्य उदीरणा होती है । नपुंसकवेदकी जघन्य-उदीरणा किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती नपुंसकवेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसे क्षपकके नपुंसकवेदकी जघन्य उदीरणा होती है । पुरुषवेदकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती पुरुषवेदकी होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसे क्षपक जीवके उसकी जघन्य उदीरणा होती है । स्त्रीवेदकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? स्त्रीवेदवेदक क्षपकके उसके वेदनमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहनेपर स्त्रीवेदकी जघन्य उदीरणा होती है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अपृव-करण क्षपकके होती है ।

नारकयुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिके साथ उत्पन्न हुए नारकीके प्रथम, अन्तिम अथवा अन्य किसी भी एक समयमें वर्तमान रहनेपर होती

१ काप्रती 'वयणीयखवयस्स', ताप्रती 'विदणीयखवयस्स' इति पाठः । २ काप्रती 'देवस्स महस्सियाए', ताप्रती 'देवस्स (दसवस्स) सहस्सियाए' इति पाठः ।

मणुस-तिरिक्खाउआणं जहणिया उदीरणा कस्म ? जहणियासु अपज्जत्तणिव्वत्तीसु उववण्णस्म पढमे अपढमे वा चरिमे अचरिमे वा ममए वट्टमाणस्म मणुस-तिरिक्खस्म । देवाउअस्म जहणिया उदीरणा कस्म ? दमवम्मसहस्मियाए ङ्घिदीए उववण्णस्स पढमसमयदेवस्स वा चरिमममयस्स वा तव्वदिरित्तस्स वा ।

णिरयगइणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्म ? णेरइयस्स अण्णदरिस्से पुढवीए वट्टमाणस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा मज्झिमपरिणामस्स । तिरिक्खगदिणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्म ? णइंदिय-वीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिदिणसु अण्णदरस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा तिपलिदोवमट्ठिदियस्स अण्णदरस्स वा । मणुस-गदिणामाए जहणिया उदीरणा कस्म ? अण्णदरस्स मंखेज्जवामाउअस्स अमंखेज्जवामाउअस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा मणुस्स मज्झिमपरिणामस्स । देवगदिणामाए जहणिया उदीरणा कस्म ? अण्णदरस्स कप्पोपपादियस्स वा अणुत्तरोपपादियस्स वा देवस्स मज्झिमपरिणामस्स । पंचणं जादिणामाणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स पयडिवेदयस्स ।

है । मनुष्यायु और तिर्यच आयुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निवृत्तियोंमें उत्पन्न और प्रथम-अप्रथम अथवा चरम-अचरम समयमें वर्तमान मनुष्य और तिर्यचके होती है । देवायुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयु-स्थितिके साथ उत्पन्न हुए देवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, चरम समयमें अथवा उनसे भिन्न किसी भी समयमें स्थित रहनेपर होती है ।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें वर्तमान मध्यम परिणामवाले पर्याप्त अथवा अपर्याप्त नारकीके होती है । तिर्यचगति नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवोंमें अन्यतर पर्याप्त अथवा अपर्याप्तके तीन पल्योपम प्रमाण स्थितिसे अथवा अन्यतर आयुस्थिति युक्त होते हुए होती है । मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर संख्यातवर्षायुष्क अथवा असंख्यातवर्षायुष्क पर्याप्त अथवा अपर्याप्त मध्यम परिणामवाले मनुष्यके होती है । देवगति नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर कल्पोपपादिक अथवा अनुत्तरोपपादिक मध्यम परिणामवाले देवके होती है । पांच जातिनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उस उम प्रकृतिके वेदक अन्यतर जीवके होती है ।

१ आऊण जहन्नगटिईसु ॥ क.प्र.४, ७२. तथा चतुर्णामायुपामात्मीयात्मीयजघन्यस्थितौ वर्तमानो जघन्य-मनुभागमुदारयति । तत्र त्रयाणामायुषां संकलेशादेव जघन्यस्थितिवन्धो भवतीति कृत्वा जघन्यानुभागोऽपि तत्रैव लभ्यते । तथा नारकायुषो विशुद्धिवशाज्जघन्यः स्थितिवन्धः, ततो जघन्यानुभागोऽपि नारकायुषस्तत्रैव लभ्यते । तथा च सति त्रयाणामायुषामतिसन्निष्टो जघन्यानुभागादीरकः नारकायुषस्तत्रैव विशुद्ध इति । (म. टीका).

ओरालियसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? सुहुमस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स अविग्गहगदीए उववण्णस्स । वेउच्चियसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स वा जीवस्स ? जहण्णियाए उत्तर-विउव्वणद्धाए पढमसमयआहारयस्स^१ । आहारसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? जहण्णियाए आहारविउव्वणद्धाए पढमसमयआहारयस्स^२ । तेजा-कम्मइयाणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स उकस्समंक्किलिद्धस्स^३ । ओरालियसरीअंगो-वंगणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? बेइंदियस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहारयस्स । वेउच्चियअंगोवंगणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? पढमसमयणेइयस्स अमण्णिपच्छायदस्स पढमसमयआहारयस्स तप्पाओग्गउकस्सियाए द्विदीए उववण्णस्स^४ । आहारसरीअंगोवंगस्स आहारसरीअंगो । पंचसरीअंगो-

औदारिकशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे एवं ऋजुगतिसे उत्पन्न हुए मृक्षम जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किस जीवके होती है ? वह जघन्य उत्तरविक्रियाकालमें प्रथम समयवर्ती आहारकके होती है । आहारशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य आहारविक्रियाकालमें प्रथम समयवर्ती आहारकके होती है । तेजस और कामण शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त हुए अन्यतर जीवके होती है ? औदारिकशरीरअंगोपांग नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न ऐसे द्वीन्द्रिय जीवके आहारक होनेके प्रथम समयमें होती है । वैक्रियिकशरीरअंगोपांग नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आकर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके साथ नरकमें उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती नारकीके आहारक होनेके प्रथम समयमें होती है । आहारक-शरीरांगोपांगकी जघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है । पांच शरीरबन्धनों और

१ ताप्रती 'कस्स ? वा जीवस्स ?' इति पाठः । २ पोग्गलविवागियाणं भवाइसमए विमेममवि चामि । आइतण्णं दोण्णं सुहुमो वाऊ य अप्पाऊ ॥ क. प्र. ४, ७३. × × × तत एतदुक्तं भवति— औदारिक-शरीरौदारिकसघातोदारिकबन्धनचतुष्टयरूपस्यादारिकपट्टकस्याप्यपर्याप्तमृक्षमैकेन्द्रियो वायुकायिको वैक्रियिक-पट्टकस्य च पर्याप्तो वादरो वायुकायिकोऽल्पायुर्जघन्यानुभागोदीरको भवति । (म. टीका) ३ × × × तत आहारकसप्तकस्य यत्तेराहारकशरीरमुत्पादयतः संकिलष्टस्याल्पे काले, प्रथमसमय इत्यर्थः, जघन्यानुभा-गोदीरणा । क. प्र. ४, ७४. (म. टीका) . ४ तथा तेजससप्तक-मृदु-लघुवर्जशुभवर्णाद्येकाशदकागुरुलघु-स्थिर-शुभ-निर्माणरूपाणां (२०) विशतिप्रकृतीना सविलष्टोऽपान्तरालगता वर्तमानोऽनाहारको मिथ्यादृष्टिर्जघन्यानु-भागोदीरणास्वामी वेदितव्यः । क. प्र. ४, ७६. (म. टीका) . ५ इयमत्र भावना— द्वीन्द्रियोऽल्पायुरादारि-कांगोपांगनाम्न उदयप्रथमसमये जघन्यमनुभागमुदीरयति । तथाऽसंज्ञिपंचेन्द्रियः पूर्वोद्धतवैक्रियो वैक्रियांगोपांगं स्तोककाले बद्ध्वा स्वभूमिकानुसारेण चिरस्थितिको नैरयिको जातस्तस्य वैक्रियांगोपांगनाम्न उदयप्रथमसमये वर्तमानस्य जघन्यानुभागोदीरणा । क. प्र. ४, ७४. (म० टीका) .

संघादाणं सग-मगसरीरभंगो ।

ममचउरससंठाणणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? जहण्णियाए पज्जत्त-
णिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमममयतव्वभवत्थस्स अमण्णिस्स । हुंडसंठाणवज्जाणं सेमाणं
संठाणणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? पुव्वकोडाउअस्स पढमममयआहार-पढमममय-
तव्वभवत्थस्स । हुंडसंठाणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सुहुमेइंदियस्स उक्कस्सियाए
पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमममयआहार-पढमममयतव्वभवत्थस्स । पढम-
संघडणस्स पढमसंठाणस्स भंगो । चटुण्णं संघडणणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ?
मणुस्स पुव्वकोडाउअस्स पढमममयआहार-पढमममयतव्वभवत्थस्स^१ । असंपत्त-
सेवट्टसंघडणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? वेइंदियस्स बारसवस्साउट्टिदीए उववण्णस्स
पढमममयआहार-पढमममयतव्वभवत्थस्स^२ ।

वण्ण-गंध-रसाणमपसत्थाणं सीद-न्हुकखाणं च^३ जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ?
चरिमसमयसजोगिस्स । एदासिं चैव पडिवक्खाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? उक्कस्स-
मंक्किलिट्टस्स । कक्खड-गरुआणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? केवलिस्स मंथगदस्स

पांच संघातोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरनामकर्मके समान है ।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य
पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए असंज्ञी जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है । हुण्डक-
संस्थानको छोड़कर शेष संस्थानोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह पूर्वकोटि
वर्ष प्रमाण आयुवाले प्रथम समयवर्ती आहारकके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है ।
हुण्डकसंस्थानकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न
होकर प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके होती
है । प्रथम संहननकी जघन्य अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा प्रथम संस्थानके समान है । चार
संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम
समयवर्ती तद्भवस्थ हुए पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाले मनुष्यके होती है । असंप्राप्तासृपाटिका-
संहननकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह चारह वर्ष प्रमाण आयुस्थितिके साथ
उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए द्वीन्द्रिय जीवके होती है ।

अग्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस तथा शीत एवं रुक्ष स्पर्शकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके
होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । इनकी ही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी जघन्य
अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेश युक्त जीवके होती है । कर्कश
और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह मंथसमुद्घातगत-

१ अमणो चउरससभाणणाऊ सगचिरट्टिई सेसे । संघयगाण य मणुओ हुंडुवयायाणमवि सुहुमां ॥ क, प्र.
४, ७५. २ सेवट्टस विइंदिय बारसवासस्स X X X ॥ क, प्र. ४, ७६. ३ काप्रती 'सीदुल्लहुक्खाणं',
ताप्रती 'सीदुल्ल-न्हुकखाणं' इति पाठः ।

णियत्तमाणस्म^१ । लहुअ-मउआणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्म ? सण्णिस्स अणाहारयस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स^२ । णिरयाणुपुच्चिणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्म ? णेरइ-यस्स अण्णदरिस्से पुटवीए वट्टमाणस्स पढमसमयतवभवत्थस्स दुसमयतवभवत्थरस वा । तिरिक्खवगइपाओग्गाणुपुच्चिणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्म ? अण्णदरस्स तिरिक्खस्स पढमसमयतवभवत्थस्स दुसमयतवभवत्थस्स तिसमयतवभवत्थस्स वा । मणुसगइ-पाओग्गाणुपुच्चिणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स मणुस्सस्स पढमविग्गहे विदियविग्गहे वा वट्टमाणस्स ? देवाणुपुच्चिणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्म ? अण्णदरस्स दसवस्ससहस्सियस्स वा तेत्तीमंमागरोवमियस्स^३ वा ।

अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? उक्कस्स-मंक्लिद्धस्स । अथिर-असुहाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सजोगिचरिमसमए । उवघादणामाए जह० कस्स ? सुहुमेइंदियस्स उक्कम्मियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतवभवत्थस्स^४ । पग्घादणामाए जह० कस्स ? सुहुमस्स जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए वट्टमाणस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स ।

केवलीके उनसे पीछे हटनेकी अवस्थामें होती है । लघु और मृदुकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संज्ञी अनाहारक जीवके होती है । नारकानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें वर्तमान नारकीके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें अथवा उसके द्वितीय समयमें होती है । तियेगति-प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ, द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ, अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ अन्यतर तिर्यच जीवके होती है । मनुष्यगतिप्रयोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम विग्रह अथवा द्वितीय विग्रहमें वर्तमान अन्यतर मनुष्यके होती है । देवानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुवाले अथवा तेनीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले अन्यतर देवके होती है ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त हुए जीवके होती है । अस्थिर और अशुभकी जघन्य अनुभाग-उदीरणा किसके होती है ? वह सयोग केवलीके अन्तिम समयमें होती है । उपघात नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके होती है । परघात नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिमें वर्तमान सूक्ष्म जीवके पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें होती है ।

१ व.कवड-गुरुण मंते (धे) नियत्तमाणस्स केवलीणो ॥ क. प्र. ४, ७८. २ X X X मउय लहुगाणं । सन्नियसुद्धाणाहारगस्स X X X ॥ क. प्र. ४, ७६. ३ अप्रती 'सागरोवमेयस्स', वाप्रती 'सागरोवमाणि', ताप्रती 'सागरोवमाणियस्स । ४ हुंडुवघायणमवि सुहुमो ॥ क. प्र. ४, ७९. तथा सूक्ष्मैकेन्द्रियः सुदीर्घायुः-स्थिक आहारकः प्रथमसमये हुंडोपघातनाम्नोर्जघन्यानुभागोदीरकः । म. टीका.

आदावणामाए जह० कस्म ? बादरपुढविजीवस्स जहणियाए पज्जत्तीए उव-
वणस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमए वड्डमाणस्स । उज्जीवणामाए आदावभंगो ।
उस्सासणामाए जह० कस्स ? अण्णदरस्स देवस्स षेण्डियस्स एइंदिय-वेइंदिय-तीइंदिय-
चउरिंदिय-पंचिंदियस्स वा । पसत्थापसत्थविहायगदीणं जह० कस्स ? अण्णदरस्स
तद्दइल्लस्स । तस-थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं जह० कस्स ? एदासिं पयडीणं जो
वेदओ सो मव्वो पाओग्गो जहण्णाणुभागउद्दीरणमुदीरेदुं । पत्तेयसरीरणामाए जह० कस्स ?
सुहुमस्स जहणियाए अपज्जत्तणिच्चत्तीए उववणस्स पढममयआहार-पढमसमयतब्भ-
वत्थस्स । माहारणसरीरणामाए जह० कस्स ? सुहुमस्स पढमसमयआहारयस्स
उक्कस्सियाए पज्जत्तणिच्चत्तीए उववणस्स । सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणा-
देज्ज-जसगित्ति-अजसगित्ति-णीचुच्चागोदाणं जह० कस्स ? एदासिं पयडीणं जो वेदओ
सो मव्वो पाओग्गो जहणियाए अणुभागउद्दीरणमुदीरेदुं । तित्थयरणामाए जह० को
होदि ? पढममयकेवल्लिप्पहुडि जाव केवल्लसमुग्घादस्स चग्गिममयअणावज्जिदगो त्ति
ताव जहण्णाणुभागउद्दीरणो ? पंचणमंतराइयाणं जह० करम ? ममयाहियावल्लिय-

आतप नामकर्मकी जघन्य अनुभागउद्दीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्तसे उत्पन्न
हुए बादर पृथिवीकायिक जीवके शरीरपर्याप्तसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें वर्तमान होनेपर होती
है । उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा आतप नामकर्मके समान है । उच्छ्वास नामकर्मकी जघन्य
उद्दीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर देव, नारकी अथवा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतु-
रिन्द्रिय व पंचेन्द्रियके होती है । प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतिकी जघन्य अनुभागउद्दीरणा
किसके होती है ? वह उनके उदयसे संयुक्त अन्यतर जीवके होती है । त्रस, स्थावर, बादर,
सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्तकी जघन्य उद्दीरणा किसके होती है ? जो जीव इन प्रकृतियोंके वेदक
हैं वे सब उनकी जघन्य अनुभागउद्दीरणा करनेके योग्य होते हैं । प्रत्येकशरीर नामकर्मकी
जघन्य उद्दीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती
आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म जीवके होती है । साधारणशरीर नामकर्मकी
जघन्य उद्दीरणा किसके होती है ? वह उच्छ्वासे पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती
आहारक हुए सूक्ष्म जीवके होती है । सुभग, दुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति,
अयशकीर्ति, नीचगोत्र और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य उद्दीरणा किसके होती है ? जो इन प्रकृतियोंके
वेदक हैं वे सब उनकी जघन्य अनुभागउद्दीरणा करनेके लिये योग्य होते हैं । तीर्थकर नामकर्मकी
जघन्य उद्दीरणा किसके होती है ? प्रथम समयवर्ती केवलीसे लेकर केवलसमुग्घातके पूर्व
अनावर्जितकरण अवस्थाके अन्तिम समय तक उसकी जघन्य अनुभागउद्दीरणा होती है ।
पांच अन्तराय कर्मकी जघन्य उद्दीरणा किसके होती है ? वह छद्मस्थ अवस्थामें एक

१ तथा आतपोद्योतनाम्नोस्तद्योग्यः पृथिवीकायिकः शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः प्रथमसमये वर्तमानः
संबिल्लो जघन्यानुभागोद्दीरकः । क. प्र. (म. टीका) ४, ७७. २ प्रतिपु 'अजहण्णाणुभागउद्दीरणो' इति
पाठः । जा नाउजियकरणं तित्थगरस्स × × × । क. प्र. ४, ७८. जत्ति— आयोजिकाकरणं नाम

चरिमसमयच्छदुमत्थस्स । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्साणुभाग-
उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वेसमया । अणुक्कस्स० जह० एगममओ,
उक्क० अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरणीयाणं आभिणि-
बोहियणाणावरणभंगो । चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणीय-मिच्छत्त-अथिर-असुह-
दुभग-अणादेज्ज-णीचागोद-पंचंतराइयाणं उक्कस्सअणुभागुदीरणकालो जह० एगसमओ,
उक्क० वेसमया । णवरि अचक्खुदंसण-पंचंतराइयाणमुक्कस्साणुभागउदीरणा जहण्णु-
क्कस्सेण एगममओ । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।
णवरि अचक्खुदंसण-पंचंतराइयाणं जहण्णेण खुदाभवग्गहणं समऊणं, उक्कस्सेण

समय अधिक आवली मात्र शेष रह जानेपर होती है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिक-
ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है ।
उसकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरि-
वर्तन प्रमाण है । श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी
उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाके कालकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है । चक्षुदशना-
वरण, अचक्षुदशनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, मिथ्यात्व, अस्थिर, अशुभ,
दुभग, अनाद्य, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे
एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है । विशेष इतना है कि अचक्षुदर्शनावरण और
पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र
है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात
पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । विशेष इतना है कि अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियों-
की अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

केवलिसमुदघातादवाग् भवति । तत्राङ् मर्यादायाम् । आ मर्यादाया केवलिवृष्ट्या योजनं व्यापारणं
आयोजनम् । तच्चातिशुभयोगानामवसेयम् । आयोजनमायोजिका, तस्याः करणं आयोजिकाकरणम् ।
केचिदावर्जितकरणमाहुः । तत्राय शब्दार्थः— आवर्जितो नाम अभीमुखीकृतः । तथा च लोके वक्तारः—
आवर्जितोऽयं मया, संमुखीकृत इत्यर्थः । ततश्च तथा भव्यत्वेनावर्जितस्य मोक्षगमनं प्रत्यभिमुखीकृतस्य
करणं शुभयोगव्यापारणं आवर्जितकरणम् । अपरे 'जा नाउत्सयकरणं' इति पठन्ति । तत्रायं शब्दसंस्कारः—
आवश्यककरणमिति । अन्वर्थश्चायं आवश्यककेनावश्यकभावेन करणमावश्यककरणम् । तथाहि— समुदघातं
केचित् कुर्वन्ति, केचित्च न कुर्वन्ति । इदं त्वावश्यककरणं सर्वेऽपि केवलिनः कुर्वन्तीति । तच्चा-
योजिकाकरणमसंख्येयसमयात्मकमन्तमुर्हुर्तप्रमाणम् । × × × तद्यावन्नाद्याप्यारभ्यते तावत्तीर्थंकरकेवलिन-
स्तीर्थकरनाम्नो जघन्यानुभागोदीरणा । (म. टीका). १ काप्रती 'मुक्कस्साणुक्कस्सजहण्णुक्क०', ताप्रती 'मुक्कस्सा-
णुक्कस्स० (मुक्कस्साणुभागु०) जहण्णुक्कस्स०', इति पाठः ।

असंखेजा लोगा । दंसणावरणपंचयस्स उक्क० अणुभागु० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुभाग० जहणुक्क० एगसमओ^२ । अणुक्क० जह० अंतोमुहुत्तं । उक्क० सम्मामिच्छ० अंतोमु०, सम्मत्त० छावट्टिसागरोवमाणि आवलियूणाणि । सादासाद-सोलसकसाय-णवणीकसायाणमुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसमया । अणुक्क० अणुभागउदीरणा साद-हस्स-रदीणं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । असाद-अरदि-सोगाणं जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीमं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवुंमयवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० अमंखेजा पोग्गलपरियट्टा । पुरिसवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं । इत्थि-वेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं ।

णिरयाउ-देवाउआणमुक्कस्सअणुभागउदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीमं सागरोवमाणि आवालिपूणाणि । तिरिक्ख-

असंख्यात लोक प्रमाण है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय प्रमाण है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । उत्कर्ष वह सम्यग्मिथ्यात्वका अन्तर्मुहूर्त और सम्यक्त्वका एक आवलीसे कम उद्यासठ सागरोपम प्रमाण है । साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय और नौ नोकपाय; इनके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल सातावेदनीय, हास्य व रतिका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे छह मास; असातावेदनीय, अरति और शोकका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम; सोलह कपाय, भय व जुगुप्साका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त; नपुंसकवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; पुरुषवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व; तथा स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

नारकायु व देवायुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है । इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवलीसे

१ ताप्रती 'अणुक्क० (भा०)' इति पाठः २ ताप्रती 'एगसमओ' इति पाठः । ३ सम्मत्तस्स उक्त्वाणुभागुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहणुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्साणुभागउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्त्वाणुभागउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहणुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्साणुभागउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहणुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । क. पा. (च. सू.) प्रे. व. पृ. ५४३५.

परघाद-आदाव-उज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-[वादर-]सुहुम-पज्जत्ता-
पज्जत्त-पत्तेय-माहारण-दुस्सर-अजमक्कित्तीणमुक्कस्माणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णेण
एगममओ, उक्कस्सेण वेममया । अणुक्क० जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण जच्चिरं पयडि-
उदीरणा तच्चिरं कालं । जसगित्ति-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्क० अणुभागु-
दीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अणुक्कस्सं जच्चिरं पयडिउदीरणा तच्चिरं
कालं । तिन्थयरणामाए उक्कस्सअणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगममओ ।
अणुक्कस्सा० केवचिरं० ? जह० वामपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । एवमुक्कस्स-
अणुभागउदीरणाए कालो समत्तो ।

एत्तो जहण्णाणुभागउदीरणाकालो बुच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणा-
वरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागउदीरणा जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्णाणु-
भागउदीरणा अणादिओ अपज्जवमिदो अणादिओ सपज्जवमिदो वा । णिहा-पयलाणं
जहण्णाणुभागुदीरणा जह० एगममओ, उक्क० अंतोसुहुत्तं । अजहण्णउदीरणाए जह०
एगममओ, उक्क० अंतोसुहुत्तं । णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जह० एगममओ,
उक्क० वेममया । अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोसु० । सादासादाणं

व अपशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, [वादर,] सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण,
दुस्वर और अयशुकीर्तिकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक
समय और उत्कर्षसे दो समय होती है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय
और उत्कर्षसे जितने काल उनकी प्रकृतिउदीरणा होती है उतने काल होती है । यशुकीर्ति, सुभग,
मुस्वर, आदेय और ऊंच गोत्रकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व
उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जितने काल प्रकृतिउदीरणा होती
है उतने काल होती है । तीर्थकर नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह
जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उसकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती
है ? वह जघन्यसे वर्षपृथक्त्व व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल तक होती है । इस प्रकार
उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य अनुभागउदीरणाका काल कहा जाता है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञाना-
वरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय कर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे
एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित और
अनादि सपर्यवसित भी है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय
और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे
एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य
उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है । उनकी अजघन्य उदीरणा जघन्य-
से एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक होती है । साता व असाता वेदनीयके जघन्य अनु-

जहण्णाणुभागस्म जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारिसमया । अजहण्ण०जह० एगसमओ । उक्क० सादस्स छम्मामा, असादस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तंभहियाणि ।

मिच्छत्त-सम्मत्त-मम्मामिच्छत्ताणं जह० केवचिरं० ? जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्ण० मिच्छत्तस्स तिण्णिभंगा । तत्थ जो सो सादिओ सपञ्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवइठपोग्गलपरियट्ठं । सम्मत्तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठि-सागरोवमाणि समयाहियावलयुणाणि । मम्मामिच्छत्तस्स जहण्णुक० अंतोमुहुत्तं । सोलसणं कमायाणं जहण्णाणुभागउदीरणा^१ केवचिरं० ? जहण्णुकस्सेण एगममओ । अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवणं णोकमायाणं जहण्णाणुभाग-उदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्ण० हस्स-रदीणं जह० एगममओ, उक्क० छम्मामा । अरदि-सोगाणं जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । भय-दुगुल्लाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवुंसयवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । इत्थिवेदस्स जह० एगममओ, उक्क० पल्लिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं ।

भागकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह सातावेदनीयका छह मास और असातावेदनीयका अन्तमुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है ।

मिथ्यात्व, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । मिथ्यात्वकी अजघन्य उदीरणाके विषयमें [अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित व सादि-सपर्यवसित ये] तीन भंग हैं । उनमें जो सादि-सपर्यवसित भंग है उसका काल जघन्यसे अन्तमुहूर्त व उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । सम्यक्त्वकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे अन्तमुहूर्त व उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन छयासठ सागरोपम काल तक होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी अजघन्य उदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त काल तक होती है । सोलह कपायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त काल तक होती है । नौ नोकपायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य उदीरणा हास्य व रतिकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे छह मास, अरति व शोककी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम, भय व जुगुप्साकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त, नपुंसकवेदकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, स्त्रीवेदकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पश्योपम शतपृथक्त्व, तथा पुरुषवेदकी जघन्यसे अन्तमुहूर्त व उत्कर्षसे सागरोपम शतपृथक्त्व काल तक होती है ।

१ मप्रती 'जहण्णाणुभागउदीरणा अणुभागउदीरणा' इति पाठः ।

आउआणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि-
ममया । अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० गिरय-देवाउआणं तेत्तीसं सागरोवमाणि
आवलियूणाणि, तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियूणाणि ।

चदुण्णं गदीणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि-
समया । अजहण्ण० जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण गिरय-देवगईणं तेत्तीसं सागरोव-
माणि, मणुमगदीए तिण्णिपलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुव्वत्तेणभहियाणि, तिरिक्खगईए
असंखेज्जा लोगा । ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं० ?
जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्ण० ओरालियसरीरस्स जह० एगसमओ, उक्क०
अंगुलस्स असंखे० भागो; वेउव्विय० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि
सादिरेयाणि; आहारसरीरस्स जहण्णुक्कस्सेण^१ अंतौमुहुत्तं । तेजा-क्कम्मइयसरीराणं जह-
ण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० वे समयया । अजहण्ण० जह०
एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । तिण्णिअंगोवंग-पंचसरीरबंधण-पंचसरीर-
संघादाणं सग-सगसरीरभंगो । णवरि ओरालियअंगोवंग० अजहण्णुक्कस्स० तिण्णि

आयु कर्मोकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय
और उत्कर्षसे चार समय तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय
होती है । उत्कर्षसे वह नारकायु व देवायुकी एक आवलीसे कम तेतीस सागरोपम, तथा तिर्यचायु
और मनुष्यायुकी एक आवलीसे कम तीन पल्योपम प्रमाण होती है ।

चार गति नामकर्मोकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक
समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय
होती है । उत्कर्षसे वह नरकगति व देवगतिकी तेतीस सागरोपम, मनुष्यगतिकी पूर्वकोटि-
पृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम, तथा तिर्यचगतिकी असंख्यात लोक प्रमाण काल तक होती है ।
औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह
जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य अनुभागउदीरणा औदारिकशरीरकी जघन्यसे
एक समय व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, वैक्रियिकशरीरकी जघन्यसे एक समय व
उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम, तथा आहारशरीरकी जघन्य व उत्कर्षसे अन्तमुहुत्त काल
तक होती है । तैजस व कर्मण शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य-
से एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होती है । तीन आंगोपांग,
पांच शरीरबन्धन और पांच शरीरसंघात प्रकृतियोंकी उक्त उदीरणाकी प्ररूपणा अपने अपने शरीर-
के समान है । विशेष इतना है कि औदारिकशरीरआंगोपांगकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका

१ प्रतिपु 'आहारसरीरस्स जह० अणु० (अ. जहण्णुक्क०) केवचिरं ? जह० उक्क० एगसमओ । अजह०
जहण्णुक्कस्सेण' इति पाठः ।

पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ।

छमंठाण-छमंघडणाणं जहण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्ण० समचउरससंठाणस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्क० वे-छावट्टिसागरो-वमाणि । हुंडमंठाणस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो । वज्जरिसह-वइरणारायण० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण-ब्भहियाणि । सेसाणं संठाणाणं संघडणाणं च जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । काल-णीलय-तित्त-कडुअ-दुग्गंध-सीद-न्हुकुक्खाणं जहण्णाणुभागउदीरणा जहण्णुकस्सेण एगसमओ । अजहण्ण० अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा । पसत्थ-वण्ण-गंध-रसाणं^१ णिद्धुण्णाणं च जहण्णाणुभागउदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० वे-समया । अजहण्ण० जह० एगस० उक्क० अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । मउअ-लहुआणं जहण्णाणुभागुदी० केवचिरं ? जहण्णु० एगसमओ । अजहण्णअणुभागउदीरणा जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ! ककखड-गरुआणं जहण्णाणु० केवचिरं ? जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्णाणुभागउदीरणा अणादिय-अपज्जवमिदा अणादिय-सपज्जवसिदा सादि-सपज्जवमिदा वा । जा सादि-सपज्जवसिदा सा जहण्णुक० अंतोमुहुत्तं ।

उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पर्योपम प्रमाण है ।

छह संस्थानों और छह संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होनी है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य अनुभागउदीरणा समचतुरम्रसंस्थानकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे दो लयासठ सागरोपम, हुण्डकसंस्थानकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, वज्रपंभवन्नाराचसंहननकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पर्योपम, तथा शेष संस्थानों और संहननोंकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व काल तक होती है । कृष्ण व नील वर्ण, तित्त व कटु रस, दुर्गन्ध तथा शीत व रूक्ष स्पर्श नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । प्रशस्त वर्ण, गन्ध और रस नामकर्मोंकी तथा सिग्ध व रूक्ष स्पर्श नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक होती है । मृदु और लघु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक होती है । कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल तक होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभाग-उदीरणा अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होती है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त काल तक होती है ।

ताप्रती-‘रसादीर्णं’ इति पाठः ।

चदुण्णमाणुपुच्चीणामाणं जहण्णाणुभागउदी० अजहण्णाणुभागु० च केवचिरं० ? जहण्णेण एगममओ, उक्क० बेसमया । णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चीणामाए तिण्णिसमया । केसिं पि आइरियाणं अहिप्पाएण सव्वामिमाणुपुच्चीणमुक्खस्सकालो तिण्णिसमया, तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चीए चत्तारिममया । अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाणं तेजा-कम्मइयभंगो ।

अथिर-असुह-उवघाद-परघाद-पत्तेय-साहारणमगीर-आदावुज्जोवणामाणं जहण्णाणु-भागुदी० जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्णाणुभागुदी० अथिर-असुहाणं अणादिया अपज्ज-वमिदा अणादिया सपज्जवसिदा । उवघादणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अंगुलस्स अमंखे० भागो । परघादणामाए जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीमं सागरोवमाणि देसूणाणि, पत्तेय-साहारणसरीराणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अंगुलस्स अमंखेज्जदिभागो । आदावणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० वावीसवासमहस्साणि देसूणाणि । उज्जोवणामाए जह० एग-समओ, उक्क० तिण्णिलिदोवमाणि देसूणाणि ।

जादिपंचय-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-सुभग - दुभग-सुस्सर - दुस्सर-आदेज - अणादेज-जमकित्ति-अजसकित्ति-उच्चा-णीचागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारिममया । अजहण्णाणुभागुदी०

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा और अजघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है । विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे तीन समय मात्र है । किन्हीं आचार्योंके अभिप्रायसे सब आनुपूर्वियोंका उत्कृष्ट काल तीन समय और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका चार समय है । अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी इन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा तैजस व कामण शरीरके समान है ।

अस्थिर अशुभ, उपघात, परघात, पत्येकशरीर, साधारणशरीर, आतप और उद्योत नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य अनुभाग-उदीरणा अस्थिर और अशुभकी अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित, तथा उपघात नामकर्मकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, परघात नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम, प्रत्येक व साधारण शरीरकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, आतप नामकर्मकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम वाईस हजार वर्ष, तथा उद्योत नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तीन पत्योपम काल तक होती है ।

पांच जातियां, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, ऊंचगोत्र और नीचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक

१. ताप्रतौ 'जादिपंचयस्स' इति पाठः ।

जह० उस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । तसणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसागरोवममहस्साणि सादि-रेयाणि । थावर-एइंदियणामाणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । चटुण्णं जादीणं जह० एगसमओ, उक्क० सगड्ढिदी । बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं जह० एगसमओ; उक्क० बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए अमंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं । जसगित्ति-सुभग-आदेज्जाणं जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं । अजसगित्ति-दुभग-अणा-देज्जाणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । उच्चागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं । णीचागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । तित्थयरणामाए जहण्णाणुभागुदा० केवचिरं० ? जह० वासपुधत्तं, उक्क० पुच्चकोडी देसूणा देसूणचउरामीदिलक्खमेत्तपुव्वाणि वा । अजहण्ण० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । एवमेयजीवेण कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं । तं जहां— पंचणाणावरणीय-अद्दुदंसणावरणीय-असातावेदणीय-

होती है । अजघन्य अनुभागउदीरणा उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति और सुस्वरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक होती है । त्रस नामकर्मकी अजघन्य अनु-भागउदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम काल तक होती है । उक्त अजघन्य उदीरणा स्थावर और एकेन्द्रिय नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होती है । चार जाति नामकर्मकी वह उदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अपनी स्थिति प्रमाण होती है । बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त व अपर्याप्तकी जघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय होती है । उत्कर्षसे वह बादर नामकर्मकी अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मकी असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मकी दो हजार सागरोपम, तथा अपर्याप्त नामकर्मकी अन्तमुहूर्त काल तक होती है । यशकीर्ति, सुभग और आदेयकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे सागरोपमशतप्रथक्त्व काल तक होती है । अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक काल तक होती है । ऊंच गोत्रकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतप्रथक्त्व काल तक होती है । नीचगोत्रकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होती है । तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे वषपृथक्त्व तथा उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल अथवा कुल कम चौरासी लाख मात्र पूर्व तक होती है । उसकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त काल तक होती है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञाना-वरण, आठ दर्शनावरण, असातावेदनीय, मिश्र्यात्व, म्मोलह कषाय, नौ नोकषाय, नारकायु,

मिच्छत्तं-सोलसकसाय-णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुसाउअ-णिरय-तिरिक्ख-मणुसगइ-ओरालियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-मंघाद-पंचसंठाण-छसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-विगलिदियजादि- उवघाद-अप्पमत्थविहायगइ-अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणं उक्कस्माणुभागुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अचक्खुदंमणावरणीयस्स उक्कस्माणुभागुदीरणंतरं जह० खुद्दाभवग्गहणं ममउणं, उक्क० असंखेज्जा लोगा । सातावेदणीय-देवाउ-देवगइ-पंचिदियजादि-आहार-वेउच्चिय-सरीराणं तदंगोवंग-बंधण-मंघादणामाणं ममचउरससंठाण-मउअ-लहुग-परघाद-उज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-उस्सामणामाणं च उक्कस्माणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० उवइट्ठपोग्गलपरियट्ठं । णवरि साद-देवाउ-देवगदि-वेउच्चियचउक्क-पंचिदिय-तस-बादर-पज्जत्ताणं तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकिच्चि-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणमुक्कस्माणुभागउदीरणाए णत्थि अंतरं ।

णिरयाणुपुव्वीए उक्कस्माणुभागुदी० जह० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । तिरिक्खाणुपुव्वीए अट्ठवस्साणि समउणाणि । मणुस्माणुपुव्वीए तिण्णि पलिदोवमाणि

तिर्यगायु, मनुष्यायु, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पांच संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, विकलेन्द्रिय जाति, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुभंग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है । सातावेदनीय, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारकशरीर, वैक्रियिकशरीर, उन दोनों शरीरोंके आंगोपांग, बन्धन व संघात नामकर्म, समचतुरस्रसस्थान, मृदु, लघु, परघात, उद्योत, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और उच्छ्वास नामकर्म; इनकी उत्कृष्ट अनु-भागउदीरणाका अन्तर जन्यसे एक समय व उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक होता है । विशेष इतना है कि सातावेदनीय, देवायु, देवगति, वैक्रियिकचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका उपर्युक्त अन्तर उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक होता है । तैजस व कामर्ण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थकर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता ।

उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे नारकानुपूर्विका साधिक तेतीस सागरोपम, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्विका एक समय कम आठ वर्ष, और मनुष्यानुपूर्विका साधिक तीन पर्योपम

१ मिच्छत्तस्स उक्कस्माणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । अणुक्कस्माणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण बे-छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि । क. पा. (चू. म्.) प्रे. ब. पृ. ५४४८-४९.

सादिरेयाणि । उक्कस्सं तिण्णं पि एइंदियद्धिदी । देवाणुपुव्वीए जहणुक्कस्सेण णत्थि अंतरं । मम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवइठपोग्गलपरियट्टं । अणुक्कस्सस्स पयडिउदीरणंतरभंगो । आदावणामाए उक्कस्साणु-भागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । थावर-सुहुम-साहा-रणमरीगणं उक्कस्साणुभागउदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखे० लोगा । अपज्जत्तणामाए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरि-यट्टा । एवमोघुक्कस्सं समत्तं ।

जहण्णाणुभागुदीरणंतरं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-णवणो-कमाय-चदुमंजलण - मम्मत्त-अप्पसत्थैवण्ण-गंध-रम-फास - अथिर-असुभ - पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं णत्थि । णिद्दा-पयला-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-वारसकसायाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवइठपोग्गलपरियट्टं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणणिद्दीणं जहण्णाणुभाग० जह० अंतोमु०, उक्क० उवइठपोग्गलपरियट्टं । सादामादाणं जह० उदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा ।

मात्र काल तक होता है । उत्कृष्ट अन्तर इन तीनोंका भी एकेन्द्रियकी स्थिति प्रमाण होता है । देवा-नुपूर्वीकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे व उत्कृष्टसे भी नहीं होता । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कृष्टसे उपार्थ पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा प्रकृति-उदीरणाके अन्तर जैसी है । आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । स्थावर, सूक्ष्म और साधारण शरीरकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे असंख्यात लोक मात्र होता है । अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कृष्टसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । इस प्रकार ओष उत्कृष्ट समाप्त हुआ ।

जघन्य अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, नौ नोकपाय, चार संज्वलन, सम्यक्त्व, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर, अशुभ और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता । निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और वारह कपाय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कृष्टसे उपार्थ पुद्गल मात्र काल तक होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्यातगृद्धिकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कृष्टसे उपार्थ पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । साता व असाता वेदनीयकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है ।

१ एव सेसाणं कम्ममाणं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तवज्जाणं । णव्वरि अणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं पयडिअंतरं कादव्वं । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देवणं । क. पा. (चु. म्.) पे. व. पृ. ५४५०-५१. २ अ-काप्रत्योः 'चदुमंजलण-अप्पसत्थ' इति पाठः ।

चंद्रुणमाउआणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ । उक्क० तिण्णमाउआण-मसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, तिरिक्खाउअस्स अमंखेज्जा लोगा । चट्ठुणं गईणं मग-सग-आउअभंगो । ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीगणं ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरंगो-वंगणं तेसिं बंधण-मंघादाणं उवघाद-परघाद-आदावुज्जीव-पत्तेय-साहारणाणं च जहण्णाणु-भागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं । उक्क० ओरालियसरीरबंधण-मंघाद-उवघाद-परघाद-साहारणसरीगणमसंखेज्जा लोगा, वेउव्वियसरीर-ओरालिय-वेउव्वियसरीरंगोवंग-तबंधण-संघाद-पत्तेय०-आदावुज्जीवाणं उक्क० अमंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-तबंधण-मंघादाणं उक्क० उवइट्ठपोग्गलपरियट्ठं । णवरि वेउव्विय-अंगोवंगणामाण् जहण्णेण पलिदो० अमंखे० भागो, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो । पंचसंठाण-ल्लमघडणाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अमंखे० पोग्गलपरियट्ठा । मउअ-लहुआणं संघडणभंगो ।

णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं जहण्णेण दमवाममहस्साणि भादिरेयाणि, उक्क० असंखे० पो० परियट्ठा । अधवा, जहण्णाणुभागंतरमेगममओ, देव-णोइण्णु अणाहार-

चार आयुक्रमोंकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय होता है । उक्त अन्तर उत्कर्षसे तीन आयुक्रमोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन और तिर्यंचआयुका असंख्यात लोक प्रमाण काल तक होता है । चार गतियोंक उक्त अन्तरकी प्ररूपणा अपनी अपनी आयुके समान है । औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर; औदारिक, वैक्रियिक व आहारक आंगोपांग; उनके बन्धन व संघात तथा उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । उक्त अन्तर उत्कर्षसे औदारिक-शरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकमंघात, उपघात, परघात और साधारणशरीरका असंख्यात लोक मात्र; वैक्रियिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन, वैक्रियिकसंघात, प्रत्येकशरीर, आतप और उद्योतका वह अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण; तथा आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग, आहारकबन्धन और आहारकसंघातका वह अन्तर उत्कर्षसे उपाध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । विशेष इतना है कि वैक्रियिकआंगोपांगका उक्त अन्तर जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । हुण्डकसंस्थानके इस अन्तरकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । पांच संस्थानों और छह संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । मृदु और लघुके प्रकृत अन्तरकी प्ररूपणा संहननोंके समान है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वा और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । अथवा उनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्रहोता है, क्योंकि, देवों

१ अर्थात् आयुसम्बन्धमदमी समयके 'परघाद-साधारणसरीगणमसंखेज्जा लोगा' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते ।

कालस्म तिममयपमाणवभुवगमादो । मणुमाणुपुव्वीए जहण्णाणुभागंतरं जह० एगसमओ अधवा खुद्दाभवग्गहणं दुसमउणं, उक्क० असंखे० पो० परियट्ठा । तिरिक्खाणुपुव्वीए जहण्णाणुभागंतरं जह० एगममओ अधवा खुद्दाभवग्गहणं तिसमउणं चदुममउणं वा, उक्क० असंखेज्जा लोगा । उस्साम-थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-जस-अजसकित्ति-दुर्भग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगममओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । दोविहायगइ-तम-सुभगादेज्ज-सरदुग-तेजा-कम्मइयमरीर-तब्बंधण-संघाद-पसत्थ-वण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगममओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । तित्थयरस्स जहण्णाणुभागउदीरणंतरं णत्थि । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्मपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ चेदि । उक्कस्मपदभंगविचयरम अट्टपदं । तं जहा— जो उक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ सो अणुक्कस्सअणुभागस्स अणुदीरओ, जो अणुक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ सो उक्कस्सअणुभागस्स अणुदीरओ^१ । जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्वहारो । एदेण अट्टपदेण पचणं णाणावरणीयपयडोणं उक्कस्साणुभागस्स मिया सव्वे जीवा व नारत्ति षोसे अनाहारकालका प्रमाण तीन समय स्वीकार किया गया है । मनुष्यानुपूर्वीकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय अथवा दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है, उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । तिर्यगानुपूर्वीकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र अथवा तीन समय कम या चार समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है, उत्कर्षसे वह असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है । उच्छ्वास, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है । दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, आदेय, स्वरद्विक, तैजसशरीर, कामेणशरीर, उन दोनोंके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, निर्माण और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा अन्तर नहीं होता । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है — उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय । इनमें उत्कृष्ट-पद-भंगविचयका अर्थपद कहा जाता है । यथा— जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है वह अनुत्कृष्ट अनुभागका अनुदीरक होता है । जो अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है वह उत्कृष्ट अनुभागका अनुदीरक होता है । जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं, अवेदकोंका व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदके अनुसार पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व एक जीव

१ ताप्रतौ 'उदीरणा (ओ)' इति पाठः । २ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'उक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ णत्थि' इति पाठः ।

अणुदीरया, मिया अणुदीरया च उदीरओ च, मिया अणुदीरया च उदीरया च । एवमणुकस्मस्म वि पडिलोमेणं तिणिभंगा वत्तवा । अट्टविहस्स दंसणावरणीयस्म णाणावरणभंगो । अचक्खुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं च उक्कस्मअणुभागस्म णियमा उदीरया अणुदीरया च^२ अत्थि । सादासादाणं मोहणिज्जस्स सत्तावीसं पयडीणं चउच्चिहस्म आउअस्स आहारचउक्कवज्जाणं णामपयडीणं णीचुच्चागोदाणं च जहा णाणावरणस्स छभंगा परूविदा तथा परूवेदवा । सम्मामिच्छत्त-आहारचउक्क-तिण्णमाणु-पुव्वीणं च सोलस भंगा वत्तवा^३ ।

जहणपदभंगविचण् अट्टपदं जहा उक्कस्सपदभंगविचण् कदं तथा कायव्वं । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सत्तावीसमोहणीय-तिणिआउ-तिणिगदि-जादिचउक्क-वेउच्चिय-तेजा-क्कमइयपयडीणं तव्वंधण-संधाद-अंगोवंगाणं पंचसंठाण-छसंधण-वण्ण-गंध-रस-फाम-आदाव-तम-अगुरुअलहु-पमत्थापसत्थविहायगइ-थिराथिर - सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-सुस्वर-दुस्वर-तिथयर-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं च जहणणाणुभागस्स मिया सव्वे जीवा अणुदीरया, मिया अणुदीरया च उदीरओ च, मिया अणुदीरया च उदीरया

उदीरक होता है, तथा कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत जीव उदीरक भी होते हैं । इसी प्रकारसे अनुत्कृष्ट अनुभागके सम्बन्धमें भी प्रतिलोम स्वरूपसे इन तीन भंगोको कहना चाहिये । आठ प्रकार दर्शनावरणके भंगविचयकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियों सम्बन्धी उत्कृष्ट अनुभागके नियमसे बहुत जीव उदीरक और बहुत जीव अनुदीरक भी होते हैं । साता व असाता वेदनीय, मोहनीयकी सत्ताईस प्रकृतियों, चार प्रकार आयुर्कर्म, आहारकचतुष्कको छोड़कर शेष नामप्रकृतियों तथा नीच व उंच गोत्रके विषयमें जैसे ज्ञानावरणके छह भंगोकी प्ररूपणा की गयी है, वैसे ही उनकी प्ररूपणा करना चाहिये । सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकचतुष्क और तीन आनुपूर्वियोंके सोलह भंग कहना चाहिये ।

जिस प्रकार उत्कृष्ट-पद-भंगविचयमें अर्थपद बतलाया गया है उसी प्रकार जघन्य-पद-भंगविचयमें भी बतलाना चाहिये । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सत्ताईस मोहनीयप्रकृतियों, तीन आयु, तीन गति, चार जातियां, वैक्रियिक, तेजस व कामण प्रकृतियां एवं उनके बन्धन, मंत्रान व आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, आतप, त्रस, अगुरुल्लु, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, सुस्वर, दुस्वर, तीर्थकर, निर्माण, उंचगोत्र और पांच अन्तराय; इनके जघन्य अनुभागके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत ही जीव उदीरक भी होते हैं । विशेष इतना है कि तीर्थकर प्रकृतिके अजघन्यकी प्ररूपणा

१ अ काप्रत्योः 'पडिलोवमेण', ताप्रती 'पडिलोवमेण' इति पाठः २ अप्रती 'पंचंतराइयस्स उक्कस्स'..... उदीरया च अणुदीरया च' इति पाठः । ३ ओषेण मिच्छं सोलसकं सम्मं णवणोकं उक्कं अणुभागुदीरणाए मिया सव्वे अणुदीरया, मिया अणुदीरया च उदीरओ च, मिया अणुदीरया च उदीरया च । एवमणुकं । णवरि उदीरया पुव्वं व वत्तव्वं । सम्मामिं उक्कं अणुकं अणुभागुदीं अट्टभंगा । जयध. प्रे. व. पृ. ५४६७.

च । णवरि तित्थयरस्स अजहणं पुब्बं वत्तव्वं^१ । एवमजहणस्स वि तिण्णिभंगा वत्तव्वा । णवरि तित्थयरस्स जहणं पुब्बं व वत्तव्वं^२ ।

सादासाद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइदियजादि-ओरालियसरीर-तव्वंधण-संघाद-हुंडसंठाण-तिरिक्खाणुपुव्वी-उवघाद-परघादुज्जोव-उस्सास-थावर-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-जसकित्ति-अजसकित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं जहण्णाजहण्णाणु-भागस्स उद्दीरया अणुद्दीरया च णियमा अत्थि । सम्मामिच्छत्त-तिण्णिआणुपुव्वी-आहारसरीराणं जहण्णाजहण्णाणुभागउद्दीरणाम् सोलस भंगा वत्तव्वा । एवं भंग-विचओ ममत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-अट्टदंसणावरणीय-मादासाद-अट्टवीसमोहणीय-णिरयाउ-देवगइ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-जाइचउ-णिरय-तिरिक्खाणुपुव्वी-पंचमंठाण-पंचमंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रम-फास-उवघाद-आदाव-उस्सास -अप्पसत्थ-विहायगइ-तस-वादर-पज्जत्तापज्जत्त-अत्थिर-असुह-दुभग-अणादेज्ज-अजमगित्ति-दुस्सर-णीचा-गोदाणं उक्कस्साणुभागुद्दीरणा केवचिरं० ? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णेण एगममओ, उक्क० आवलि० अमंखे० भागो । अणुक्कस्सउद्दीरणा केवचिरं० ? मव्वद्धा । णवरि सम्मामिच्छत्तस्स

पहिले करना चाहिये । इस प्रकार अजघन्यके भी तीन भंग कहने चाहिये । विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउद्दीरणाविषयक भंगोंका कथन पहिलेके समान करना चाहिये ।

साता व असाता वेदनीय, निर्यचआयु, निर्यचगति, एकेंद्रिय जाति, औदारिकशरीर, औदारिकवधन, औदारिकसंघात, हुण्डसंस्थान, निर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उद्योन, उच्छ्वास, स्थावर, वादर, सृष्टम, पर्याप्त, अपर्याप्त, ग्रत्येक, साधारण, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र; इनके जघन्य व अजघन्य अनुभागके नियमसे बहुत जीव उद्दीरक और बहुत अनुद्दीरक भी होते हैं । सम्यग्मिथ्यात्व, तीन आनुपूर्वियों और आहारकशरीरकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उद्दीरणाके विषयमें सोलह भंग कहने चाहिये । इस प्रकार भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, अट्टाईस मोहनीय, नारकायु, देवगति, नरकगति, निर्यगति, चार जातियां, नरकानुपूर्वी, निर्यगानुपूर्वी, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, दुस्वर और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउद्दीरणा कितने काल होती है ? वह नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है । इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउद्दीरणा कितने काल होती है ? वह सर्वकाल होती है । विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्वकी वह उद्दीरणा जघन्यसे

१ अ-काप्रत्योः 'अहणपुव्वं वत्तव्वं', ताप्रती 'अजहणं पुव्वं व वत्तव्वं' इति पाठः । २ अप्रती 'जहणं पुव्वं वत्तव्वं', काप्रती 'जहणपुव्वं वत्तव्वं' इति पाठः ।

जह० अंतोमुहुत्तं, उक्त० पलिदो० अगंखे० भागो । गिरयाणुपुव्वीए अणुक्कस्सं पि आवलियाए अगंखे० भागो । अचक्खुदंमणावरणीय-एइंदिय-थावर - सुहुम-साहारण-पंचंतराइयाणमुक्कस्साणुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं० ? सच्चद्धा ।

मणुम-तिरिक्खाउ-मणुमगइ-देवाउ-पंचमरीर-तिणिणअंगोवंग-बंधण-संघाद-ममचउ-रससंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-पसत्थयण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहु-परघाद-उज्जोव-पमत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगिति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदाणं उक्कस्सअणुभागउदीरणा णाणा-जीवेहि जह० एगममओ, उक्त० संखेज्जा ममया । अणुक्कस्स० गच्चद्धा । णवरि आहार-सरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं अणुक्क० उदीरणा जहणुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । देव-मणुमगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं अणुक्कस्साणुभाग० जह० एगममओ उक्त० आवलि० अगंखे० भागो । एवमुक्कस्सकालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि जहण्णाणुभागउदीरणकालो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-सत्त-दंसणावरणीय-सत्तावीसमोहणीयाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगममओ, उक्त० संखेज्जा ममया । अजहण्णस्स सच्चद्धा । णिहा-पयलाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगममओ, उक्त० अंतोमुहुत्तं । अजहण्णस्स गच्चद्धा । मम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणु-

अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है । नरकानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका भी काल आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है । अचक्षुदर्शनावरण, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह सर्वकाल होती है ।

मनुष्यायु, तिर्यगायु, मनुष्यगति, देवायु, पांच शरीर, तीन आंगोपांग, बन्धन, संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रपंभवन्नाराचशरीरसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस, व स्पर्श, मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येक-शरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय तक होती है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वकाल होती है । विशेष इतना है कि आहारक-शरीर, आहारकआंगोपांग, आहारकशरीरबन्धन और आहारकशरीरसंघातकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्य-गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट काल समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अनुभागउदीरणाका काल कहा जाता है । यथा— पांच ज्ञानावरण, सात दर्शनावरण और सत्ताईस मोहनीय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । इनकी अजघन्य उदीरणाका काल सर्वकाल है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है । सम्य-

भागुदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । सादासाद-तिरि-
क्खाउआणं जहण्णाजहण्णाणुभागउदीरणकालो सच्चद्व्वा ।

णिरय-देव-मणुस्साउ- णिरय- देव-मणुस्सगदि- चउजादि- वेउच्चिय- तेजा-कम्मइय-
सरीर-ओरालिय-वेउच्चियअंगोवंग- वेउच्चिय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-
गंध-रस-फास-णिरय-देव- मणुस्साणुपुच्चि -अगुरुअलहुअ-आदाव- पसन्थापसत्थविहायगड-
तस-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो
जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । अजहण्णाणुभागुदीरणण सच्चद्व्वा ।
णवरि तिण्णमाणुपुच्चिणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असं० भागो ।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चि - एइंदियजादि- ओरालियसरीर- तब्बंधण-
मंघाद-हंडसंठाण-उवघाद-परघाद-उज्जोव-उस्सास-थावर-चादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त- पत्तेय-
साहारणसरीर-जमकित्ति-अजमकित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोद-तिन्थयरणं जहण्ण-अज-
हण्णअणुभागउदीरणकालो मच्चद्व्वा । णवरि तित्थयरस्स अजहण्णाणुभागउदीरणकालो
जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-तब्बंधण-मंघादाणं जह-
ण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । अजहण्ण० जहण्णु-

निमथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असं-
ख्यातवें भाग मात्र है । साता व असाता वेदनीय और तिर्चचायुकी जघन्य व अजघन्य
अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है ।

नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, चार जातियां, वैक्रियिक,
तैजस व कामेण शरीर, औदारिक व वैक्रियिक आंगोपांग, वैक्रियिक, तैजस व कामेण शरीरके
बन्धन और संघात, प्रशस्त वण, गन्ध, रस व स्पर्श, नरकानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी,
अगुरुलघु, आतप, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर,
आदेय, निर्माण और ऊचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय
और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है । इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल
सर्वकाल है । विशेष इतना है तीन आनुपूर्वियोंकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे
एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है ।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एककेन्द्रियजाति, औदारिकशरीर, औदारिकबन्धन,
औदारिकसंघात, हुण्डकसंस्थान, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, वादर, सूक्ष्म,
पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादय, नीच-
गोत्र और तीर्थकर; इनकी जघन्य व अजघन्य उदीरणाका काल सर्वकाल है । विशेष इतना है
कि तीर्थकर प्रकृतिकी अजघन्य अनुभागउदीरणा काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।
आहारकशरीर, अहारकशरीरंगोपांग, तथा उसके बन्धन व संघात, इनकी जघन्य अनुभाग-
उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । इनकी अजघन्य
अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पांच संस्थानों और छह

कस्सेण अंतोसु० । पंचसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागउदी० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । अजहण्ण० सच्चद्धा । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अथिर-असुभाणं जहण्णाणुभाग० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा समया । अजहण्ण० सच्चद्धा । एवं कालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि अंतरं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-अट्टदंसणावरणीय-सादामाद-अट्टावीसमोहणीय-णिरय-देव-तिरिक्ख-मणुस्साउ-चत्तारिगदि - चत्तारिजादि-ओरालिय-वेउच्चिय-आहारमरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण-छसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फाम मउअ-लहुअ - चत्तारिआणुपुव्वी - उवघाद-परघाद - आदावुज्जीव-उस्सास - पसत्था-पसत्थविहायगइ-तम-वाद्दर-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेयसरीर - अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसक्कित्ति-णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणुक्क० णत्थि अंतरं । णवरि सम्मामिच्छत्त-आहारचउक्क-तिण्णिआणुपुव्वीणं जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो वासपुधत्तं चउवीसअंतोसुहुत्तं । अचक्खुदंसणावरण० उक्कस्साणुक्कस्स० णत्थि अंतरं ।

तेजा-कम्मइयसरीर-तदबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास णिद्धुण्ण-अगुरुअलहुअ-संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है । इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर तथा अशुभ; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात समय मात्र है । इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है । इस प्रकार काळ समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, अट्टाईस मोहनीय, नारकायु, देवायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार गतियां, चार जातियां, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त, वर्ण गन्ध, रस तथा मृदु व लघु स्पर्श चार आनुपूर्वियों, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायागति, त्रस, वाद्दर, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयश-कीर्ति और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है । उनकी अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता । विशेष इतना है कि सम्याग्मिभ्यात्व, आहारकचतुष्क और तीन आनुपूर्वियोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्षसे क्रमशः सम्याग्मिभ्यात्वका पत्योपमके असंख्यातवें भाग, आहारचतुष्कका वर्षपृथक्त्व, और तीन आनुपूर्वियोंका चौबीस अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता ।

तैजस व कामर्ण शरीर, उनके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस तथा स्निग्ध व उष्ण

१ अप्रती 'उक्क० पलिदो० असंखे० भागवामपुधत्तं', काप्रती 'उक्क० पलि० वासपुधत्तं', ताप्रती 'उक्क० पलिदोवमवामपुधत्तं' इति पाठः । २ ओषण मच्चपयदी उक्क० अणुभागुदी० अंतरं जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा

थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं
जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा । अणुक्कस्साए णत्थि अंतरं । एवं तित्थयरस्स ।
णवरि उक्कस्साणु० उदी० उक्कस्सेण वासपुधत्तं । थावर-सुहुमेइंदियजादिं-साहारणसरीर-
पंचंतराइयाणं उक्कस्साणुक्कस्मअणुभागुदीरणंतरं णत्थि । एवमुक्कस्संतरं समत्तं ।

एत्तो जहण्णअणुभागउदीरणंतरं । तं जहा— आभिणिवोहियणाणावरणीय-सुद-
णाणावरणीय-मणपञ्जवणाणावरणीय-चक्खुदंमणावरणीयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह०
एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्साणि । ओहिणाणावरणीय-ओहिंदंसाणावरणीयाणं
जहण्णाणुभागुदीरणंतरं णि जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्साणि । केवलणाणा-
वरणीय-केवलदंमणावरणीय-लोहसंजलण - अप्पसत्थववण्ण-गंध - रस-फाम - अथिर-असुह-
पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । णिहा-पयलाणं
जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जवस्साणि । सम्मत्तस्स जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा ।
इत्थि-णचुंमयवेदाणं जह० एगसमओ, उक्क० संखे० वस्साणि । पुरिमवेद-कोध-माण [-माया]-

स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और ऊंच गोत्र; इनकी उत्कृष्ट
अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है । इनकी
अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता । इसी प्रकारसे तीर्थकर प्रकृतिके सम्बन्धमें भी कहना
चाहिये । विशेष इतना है कि उसकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व
मात्र होता है । म्थावर, मूक्ष्म, एकेन्द्रियजाति, साधारणशरीर और पांच अन्तराय; इनकी
उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता । इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर कहा जाता है । यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरण,
श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है । अवधिज्ञानावरण और अवधि-
दर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर भी जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात
वर्ष मात्र होता है । केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, संज्वलनलोभ, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस
व स्पर्श, अस्थिर, अशुभ और पांच अन्तरायकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक
समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य उदीरणाका अन्तर
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी उक्त उदीरणाका
अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है । त्स्त्रिवेद और नपुंसकवेदकी
उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है । पुरुषवेद
और संज्वलन क्रोध, मान व मायाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और

लोगो । अणुक्क० णारिय अंत० । णवरि संमामि० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पंचदं० अस० भागो ।
जयध. प्रे. व. पु. ५४८८. १ अ-कापत्तोः 'जदि' इति पाठः । २ ताप्रतो 'संखेज्जाणि वग्गसमहस्साणि'
इति पाठः ।

मंजलणाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० वासं सादिरेयं ।

णिदाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धि - मिच्छत्त- सम्मामिच्छत्त- वारसकसाय-छण्णो-
कसाय-णिरय- देव-मणुमाउ-णिरयगइ - मणुसगइ-देवगइ- चदुजादि-णिरय-देव-मणुस्साणु-
पुव्वी-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-तिण्णिअंगोवंग-पंचसंठाण- छसंघटण-
पसत्थवण्ण-गंध-रस-फासमउअ-लहुअ-अगुरुअलहुअ-आदाव-पसत्थापसत्थविहायगइ - तस-
थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह०
एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । ककखड-गरुआणं जह० एगसमओ, उक्क०
वासपुधत्तं । तिरिकखाउ-तिरिक्खगइ-एइदियजादि - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरा-
लियसरीर-तब्बंधण-संघाद-हुंडमंठाण-उवघाद-परघाद-उज्जीव-उस्सास-थावर-सुहुम-वादर-
पज्जत्ता-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर- जसगित्ति- अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्ज - णीचुच्चागोद-
तित्थयरणं जहण्णाजहण्ण० णत्थि । णवरि तित्थयरं० जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह०
एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं । एवमंतरं समत्तं ।

सण्णियासो दुविहो उक्कस्सपदसण्णियासो जहण्णपदसण्णियासो चेदि । तत्थं
उक्कस्सपदसण्णियासो दुविहो मत्थाण-परत्थाणसण्णियासभेदेण । तत्थ सत्थाणे पयदं ।

उत्कर्षसे साधिक एक वर्षे मात्र होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, वारह कपाय, छह नो-
कषाय, नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, चार जातियां, नरकानुपूर्वी,
देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, वैक्रियिक, तेजस व कर्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, तीन
आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व मृदु-लघु स्पर्श, अगुरुलघु,
आतप, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, निर्माण
और ऊंच गोत्रकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात
लोक मात्र होता है । कर्कश और गुरुकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्ष-
से वर्षपृथक्त्व मात्र होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी,
औदारिकशरीर व उसके बन्धन-संघात, हुण्डकसंस्थान, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्र्वास, स्थावर,
सूक्ष्म, वादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अना-
देय, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और तीर्थकर; इनकी जघन्य व अजघन्य उदीरणाका अन्तर नहीं होता ।
विशेष इतना है कि तीर्थकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और
उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

संनिकर्ष दो प्रकार है— उत्कृष्टपदसंनिकर्ष और जघन्यपदसंनिकर्ष । उनमें उत्कृष्टपदसंनि-
कर्ष स्वस्थानसंनिकर्ष और परस्थानसंनिकर्षके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें स्वस्थानसंनिकर्ष प्रकृत

१ अप्रती 'फास महुअलहुअगुरुअलहुअ', ताप्रती 'फास-अगुरुअलहुअ-म [हुअ] उ-लहुअ', मप्रती 'फास-
महुअलहुअगुरुअलहुअ' इति पाठः । २ अप्रती 'तित्थयरणं', ताप्रती 'तित्थयर-' इति पाठः । ३ अ-काप्रतीः
'जय' इति पाठः ।

तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्समुदीरेंतो सुदणाणावरणस्स उक्कस्स-
मणुक्कस्सं वा उदीरेदि । जदि अणुक्कस्सं, छट्ठाणपदिदं । एवमोहिणाणावरणीय-मणपञ्जव-
णाणावरणीय-केवलणाणावरणीयाणं पि वत्तव्वं । सेसचट्ठणं पयडीणं आभिणिबोहिय-
णाणावरणीयभंगो ।

चक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्समुदीरेंतो अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं
णियमा अणुक्कस्समुदीरेदि अणंतगुणहीणं । अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो
सेसाणं तिण्णं पि णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि । सेसपंचणं दंसणावरणीयाणं णियमा
अणुदीरओ । ओहिदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागं उदीरेंतो पंचणं दंसणावरणीयाणं
उदीरओ । केवलदंसणावरणस्सं णियमा, तं तु छट्ठाणपदिदं^१ । सेसाणं दोणं दंसणा-
वरणीयाणं णियमा अणुक्कस्साणुभागस्स अणंतगुणहीणस्स उदीरओ । केवलदंसणावरणी-
यस्स ओहिदंसणावरणभंगो । णिहाए उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो दंसणावरणचउक्कस्स णियमा
अणतगुणहीणमुदीरेदि । सेसाणं चट्ठणं दंसणावरणीयाणं णियमा अणुदीरओ । सेम-

है । यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरणके
उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता
है तो पटस्थानपतितकी करता है । इसी प्रकार अवधिज्ञानावरण, मन-पर्ययज्ञानावरण और
केवलज्ञानावरणके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये । शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंको मुख्यतासे
संनिकर्षकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है ।

चक्षुदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधि-
दर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा
करता है । अचक्षुदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष तीनों ही प्रकृतियोंके
नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागकी उदीरणा करता है । वह शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका
नियमसे अनुदीरक होता है । अवधिदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करने-
वाला निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका [कदाचित्] उदीरक होता है । केवलदर्शना-
वरणका नियमसे उदीरक होता हुआ पटस्थानपतितका उदीरक होता है । शेष दो दर्शना-
वरण (चक्षुदर्शनावरण व अचक्षुदर्शनावरण) प्रकृतियोंका उदीरक होकर वह नियमसे उनके
अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है । केवलदर्शनावरणके संनिकर्षकी प्ररूपणा
अवधिदर्शनावरणके समान है । निद्राके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शना-
वरणादि चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागका उदीरक होता है ।
शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है । प्रचला आदि शेष चार

१ अप्रती 'केवलदंसणावरणं', काप्रती 'केवलदंसणावरणं', ताप्रती 'केवलदंसणावरणं' इति पाठः ।
२ ताप्रती '-पदिदा' इति पाठः ।

चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णिदाए भंगो ।

सादावेदणीयमुदीरंतो असादावेदणीयस्स णियमा अणुदीरओ । एवमसादस्स वि वत्तव्वं । मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागमुदीरंतो सोलसकसाय-णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ, सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्समणुक्कस्सं वा उदी-रेदि । जदि अणुक्कस्सं तो^१ छट्ठाणपदिदमुदीरेदि । इत्थि-पुरिसवेदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं^२ । हस्स-रदीणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ^३ । जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सं^४ णियमा अणंतगुणहीणमुदीरंदि । सोलसण्णं कसायाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि कोधे णिरुद्धे माणादीणमुदीरणा णत्थि । एवं माणादीणं पि वत्तव्वं । णवुंसयवेदस्स मिच्छत्तभंगो । णवरि इत्थि-पुरिसवेदाणमुदीरणा णत्थि । अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि अरदि-सोगमुदीरंतो हस्स-रदीणमणुदीरओ । इत्थि-पुरिसवेदाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि एगवेदे णिरुद्धे सेसवेदाणमणुदीरओ^५ । हस्स-रदीणमुक्कस्साणु-भागमुदीरंतो जासिं पयडीणमुदीरओ णियमा तामिमणुक्कस्समुक्कस्सादो अणंतगुणहीण-

दर्शनावरण प्रकृतियोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है ।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असातावेदनीयका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार असाताके भी सम्बन्धमें कहना चाहिये ।

मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सोलह कपाय, नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि वह उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । वह यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणाके सम्बन्धमें भी इसी प्रकार कहना चाहिये । हास्य व रतिका कदाचित् उदीरक होता है और कदाचित् अनुदीरक । यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे अनुत्कृष्ट और नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागकी उदीरणा करता है । सोलह कपायोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि क्रोधकी विवक्षा होनेपर मानादिकी उदीरणा नहीं होती । इसी प्रकार मानादिकोंकी विवक्षामें भी कहना चाहिये । नपुंसकवेदके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि नपुंसकवेदके उदीरकके स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणा नहीं होती है । अरति शोक, भय व जुगुप्साके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि अरति व शोककी उदीरणा करनेवाला हास्य व रतिका अनुदीरक होता है । स्त्री और पुरुष वेदोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि एक वेदके विवक्षित होनेपर शेष वेदोंका वह अनुदीरक होता है । हास्य व रतिके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जिन प्रकृतियोंका उदीरक होता है उनके नियमसे उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन

१ ताप्रतौ 'अणुक्कस्साणुभागमुदीरंतो' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'वेदाण पि चेव वत्तव्वं', ताप्रतौ 'वेदाण पि चेव (एवं) वत्तव्वं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'हस्स-रदीणं णियमा उदीरओ सिया अणुदीरओ' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'अणुक्कस्सा' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'मणुदीरेदि' इति पाठः ।

मुदीरेदि ।

णिरयगइणामाए उक्कस्साणुभागमुदीरेतो हुंडसंठाण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-सीद-ल्हुक्ख-उवघाद-अप्पसत्थविहायगदि - अथिर-अशुभ-दुभग-दुस्सर - अणादेज्ज- अजस-गिचीणमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो तस्स छट्ठाणपदिदस्स उदीरओ । एवं सेमणामपयडीणं पि जाणियूण वत्तव्वं । दाणं-तराइयस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेतो लाभ-भोग-परिभोग-वीरियंतराइयाणमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो णियमा छट्ठाणपदिद-मुदीरेदि । जहा सादासादाणं तहा गोदाउआणं । एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो ।

एत्ता परत्थाणसण्णियासो बुच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेतो चउणाणाणावरणीय-ओहि-केवलदंसणावरणीय-असाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-पंचगंठाण-चत्तारिसंघडण-णीचागोदाणमण्णेमिं च जेसिमसुभाणमुदीरओ तेसिमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो छट्ठाणपदिदं । आभिणि-

अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है ।

नरकगति नामकर्मके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला दृण्डकसंस्थान, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व शीत-रुक्ष स्पर्श, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, आंस्थर, अशुभ, दुभग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्तिके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो वह उसके पटस्थानपतितका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे शेष नामकर्मकी प्रकृतियोंके सम्बन्धमें भी जानकर कथन करना चाहिये ।

दानान्तरायके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला लाभान्तराय, भोगान्तराय, परिभोगान्तराय और वीर्यान्तरायके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है तो वह नियमसे पटस्थानपतितकी उदीरणा करता है । जैसे साता व असाता वेदनीयके संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही दोनों गोत्रों और चारों आयुर्कर्मके संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थानसंनिकर्ष समाप्त हुआ ।

यहां परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिक-ज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष चार ज्ञानावरणीय, अर्वाध व केवल-दर्शनावरणीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, तीन वेद, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नारकायु, नरकगति, तिर्यग्गति, पांच संस्थान, चार संहनन और नीच गोत्र; इनका तथा अन्य भी जिन अशुभ प्रकृतियोंका उदीरक होता है उनके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उनके अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो पटस्थानपतितकी उदीरणा करता है । आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी

बोहियणावरणीयस्स उक्कस्समणुभागमुदीरेंतो साद-हस्स-रदि-तिण्णिआउअ-मणुस्सगइ-
देवगइ-उच्चागोद-पंचंतराइयाणमण्णेसिं च पसत्थपयडीणं जासिमुदीरओ णियमा तासिं-
मणुकस्समुक्कस्सादो अणंतगुणहीणमुदीरेदि । एवमेदीए दिसाए अण्णेसिं पि कम्माणं
परत्थाणसण्णियासो जाणयूण कायव्वो । एवं परत्थाणुकस्ससण्णियासो समत्तो ।

एत्तो जहण्णओ सत्थाणसण्णियासो । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स
जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सुद-केवलणाणावरणीयस्स णियमा जहण्णयमणुभागमुदीरेदि ।
ओहि-मणपज्जवणाणावरणाणं सिया जहण्णं सिया अजहण्णमुदीरेदि । यदि जहण्णं तो
छट्ठाणपदिदमुदीरेदि । सुदणाणावरणीयस्स आभिणिबोहियणाणावरणभंगो । ओहिणाणा-
वरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सुद-मदिआवरणाणं सिया जहण्णं सिया अजहण्णं वा
उदीरेदि । यदि अजहण्णं णियमा अणंतगुणं । मणपज्जवणाणावरणीयस्स सिया जहण्णं
सिया अजहण्णं वा उदीरेदि । यदि अजहण्णं तो छट्ठाणपदिदं । केवलणाणावरणं
णियमा जहण्णमुदीरेदि । मणपज्जवणाणावरणस्स ओहिणाणावरणभंगो । केवलणाणावरणस्स
जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सेसाणं चटुण्णं पि जहण्णमजहण्णं वा उदीरेदि । [यदि]
उदीरणा करनेवाला सातावेदनीय, हास्य, रति, तीन आयुकर्म, मनुष्यगति, देवगति, उच्चगोत्र और
पांच अन्तराय; इनका तथा अन्य भी जिन प्रशस्त प्रकृतियोंका उदीरक होता है वह
नियमसे उनके उत्कृष्टकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है ।
इस प्रकार इसी रीतिसे अन्य कर्मोंके भी परस्थान संनिकर्षकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये ।
इस प्रकार परस्थान उत्कृष्ट संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—आभिनि-
बोधिकज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरण और केवलज्ञाना-
वरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । वह अवधिज्ञानावरण और मनः-
पर्ययज्ञानावरणके कदाचित् जघन्य अनुभागका और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा
करता है । यदि वह इनके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है तो पटस्थानपतितकी उदीरणा करता
है । श्रुतज्ञानावरणकी विवक्षासे संनिकर्षकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है ।
अवधिज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरण और मतिज्ञाना-
वरणके कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि
अजघन्यकी उदीरणा करता है तो नियमसे अनन्तगुणे अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता
है । मनःपर्ययज्ञानावरणके कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा
करता है । यदि उसके अजघन्यकी उदीरणा करता है तो पटस्थानपतितकी उदीरणा करता है ।
केवलज्ञानावरणके वह नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी
विवक्षासे संनिकर्षकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है । केवलज्ञानावरणके जघन्य
अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष चारों ही ज्ञानावरण प्रकृतियोंके जघन्य व अजघन्य अनु-
भागकी उदीरणा करता है । यदि अजघन्यकी उदीरणा करता है तो वह श्रुतज्ञानावरण व

१ ताप्रता 'जेसिमुदीरओ णियमा तेसिं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'सेसाणं पि चटुण्णं' इति पाठः ।

अजहणं तो सुद-मदिआवरणां गियमा अणंतगुणमुदीरेदि । ओहि-मणपञ्जवणाणा-
वरणां छट्टाणपदिदमुदीरेदि ।

चक्खुदंसणावरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेतो अचक्खुदंसणावरण-केवलदंसणावरणां
गियमा जहणमुदीरेदि । ओहिदंसणावरणस्स सिया जहणं सिया अजहणमुदीरेदि ।
जदि अजहणमुदीरेदि तो छट्टाणपदिदं । सेसपंचणं दंसणावरणीयाणं अणुदीरओ ।
अचक्खुदंसणावरणीयस्स चक्खुदंसणावरणीयभंगो । ओहिदंसणावरणीयमुदीरेतो^१ चक्खु-
अचक्खुदंसणावरणीयाणं जहणमजहणं वा उदीरेदि । जदि अजहणं तो गियमा
अणंतगुणं । केवलदंसणावरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेतो चक्खु-अचक्खु ओहिदंसणा-
वरणीयाणं जहणमजहणं वा उदीरेदि । जदि अजहणं तो चक्खु-अचक्खु०
अणंतगुणं, ओहिदंसणावरणस्स छट्टाणपदिदं । आउअ-वेदणिज्ज-गोदाणं णत्थि मत्थाण-
सण्णियासो । मोहणिज्ज-णामाणं^२ जाणिदूण पेयव्वं । दाणंतराइयस्स जहण्णाणुभाग-
मुदीरेतो सेसाणं चदुणं गियमा जहणमुदीरेदि । सेसचदुणमंतराइयाणं दाणंतराइय-

मतिज्ञानावरणके नियमसे अनन्तगुणे अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । वह अवधि-
ज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणके पटस्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा
करता है ।

चक्षुदर्शनावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण और केवल-
दर्शनावरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । वह अवधिदर्शनावरणके कदाचित्
जघन्य और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि अजघन्यकी उदीरणा करता
है तो पटस्थानपतितकी उदीरणा करता है । शेष निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह
अनुदीरक होता है । अचक्षुदर्शनावरणके संनिकर्षकी प्ररूपणा चक्षुदर्शनावरणके समान है ।
अवधिदर्शनावरणके अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्श-
नावरणके जघन्य व अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि वह अजघन्य अनुभागकी
उदीरणा करता है तो नियमसे अनन्तगुणे अनुभागकी उदीरणा करता है । केवलदर्शनावरणके
जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शना-
वरणके जघन्य व अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि वह उनके अजघन्य अनुभागकी
उदीरणा करता है तो चक्षुदर्शनावरण व अचक्षुदर्शनावरणके अनन्तगुणे तथा अवधिदर्शना-
वरणके पटस्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है ।

आयु, वेदनीय और गोत्र कर्मोंके स्वस्थान संनिकर्ष सम्भव नहीं है । मोहनीय ओर
नामकर्मके संनिकर्षको जानकर लेजाना चाहिये । दानान्तरायके जघन्य अनुभागकी उदीरणा
करनेवाला शेष चार अन्तराय प्रकृतियोंके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । शेष
चार अन्तराय प्रकृतियोंकी विवक्षासे संनिकर्षकी प्ररूपणा दानान्तरायके समान है । इस प्रकार

१ अप्रती 'वरणस्स जहणस्स जहण्णाणु-' इति पाठः । २ अप्रती 'वरणीयस्समुदीरेतो' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'मोहणिज्जमाणं' इति पाठः ।

भंगो । एवं मत्थाणमणियासो ममत्तो ।

परत्थाणजहण्णाणुभागमणियासो । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स जहण्णाणुभागमुदीरंतो सुद-केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणी-याणं^१ णियमा जहण्णहुदीरदि । एदेण कमेण परत्थाणमणियासो जाणिदण णेयव्वो । एवं मणियासो ममत्तो ।

एवं सैमाणि अणियोगद्वाराणि जाणिदण णेयव्वाणि । अत्पावहुअं दुविहं जहण्ण-मुकस्सं च । उकस्सए पयदं । तं जहा— मच्चतिव्वाणुभागं मादवेदणीयाणं । जस-गित्ति-उच्चागोदाणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा । कम्मइय० अणंतगुणहीणा । तेजासरीर० अणंतगुणहीणा । आहारसरीर० अणंतगुणहीणा । वेउच्चिय० अणंतगुणहीणा । मिच्छन० अणंतगुणहीणा । केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-अमाद० उदीरणा अणंतगुणहीणा । अणंताणुबंधीसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा । मंजलणेसु अण्णदरउदी० अणंतगु० हीणा । पच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउ० अणंतगुणहीणा । अपच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउदी० अणंतगु० हीणा । मदिणाणावरण० अणं० गु० हीणा^३ । मुदणाणाव०

स्वस्थान संनिकर्प समाप्त हुआ ।

परस्थान जघन्य अनुभागके संनिकर्पका कथन करते हैं । यथा— आभिनिबोधकज्ञाना-वरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शून्यज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवल-दर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण और अक्षुदर्शनावरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है । इस क्रमसे परस्थान संनिकर्पको जानकर ले जाना चाहिये । इस प्रकार संनिकर्प समाप्त हुआ ।

इसी प्रकारभे शेष अनुयोगद्वारोंको जानकर ले जाना चाहिये । अल्पवहुत्व दो प्रकार है— जघन्य अल्पवहुत्व और उत्कृष्ट अल्पवहुत्व । इनमें उत्कृष्ट अल्पवहुत्व प्रकृत है । यथा— साता-वेदनीयकी अनुभागउदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है । यशकीति और उच्चगोत्रकी अनुभाग-उदीरणा उससे अनन्तगुणी हीन है । काम्पकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवल-ज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण और अमातापेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानु-बन्धी कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मंज्वलन कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरण कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरण कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञाना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधि-

१ ताप्रता 'केवलदंसणावरण-चक्खुदंसणावरणीयाणं' इति पाठः । २ ताप्रता 'अणंतगुणा' इति पाठः । ३ ताप्रता 'मदिणाणावरणेसु अणं० उ० अणंत० हीणा' इति पाठः ।

अणं० गु० हीणा । ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अणं० गु० हीणा । मणपञ्जव-
णाणाव० अणंतगुणहीणा । णवुंसयवेद० अणंत० हीणा । थीणगिद्धि० अणं०
गु० हीणा । अरदि० अणं० गु० हीणा । सोग० अणंतगुणहीणा । भय०
अणंतगुणहीणा । दुगुंछा० अणंतगुणहीणा । णिहाणिहा० अणंतगुणहीणा । पयला-
पयला० अणंतगुणहीणा । णिहा० अणंतगुणहीणा । पयला० अणंतगुणहीणा । णीचागोद-
अजमगिन्ति० अणंतगुणहीणा । णिरयगइ० अणंतगुणहीणा । देवगइ० अणंतगुणहीणा ।
रदि० अणंतगुणहीणा । हस्म० अणंतगुणहीणा । देवाउ० अणं० गु० हीणा । णिरयाउ०
अणंतगु० हीणा । मणुसगइ० अणं० गु० हीणा । ओरालिय० अणं० गु० हीणा ।
मणुमाउ० अणं० गु० हीणा । तिरिक्खाउ० अणंतगुणहीणा । इत्थिवेद० अणंतगुणहीणा ।
पुरिसवेद० अणंतगुणहीणा । तिरिक्खगइ० अणंतगुणहीणा । चक्खुदं० अ० गु० हीणा ।
मम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ०
गुणहीणा । भोगंतराइय० अणंतगुणहीणा । परिभोगंतराइय० अणंतगुणहीणा । अचक्खुदं०
अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । मम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

णिरयगईए णेरइएमु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाणावरण० केवलदंसणा-
ज्ञानावरण और अवधिदर्शनवरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञाना-
वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।
स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।
शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचला-
प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा
अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्र और अयशकीतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नरक-
गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा
अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी
हीन है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।
औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।
नियेगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । पुरुषवेदकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शना-
वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

नरकगतिमें नारकियोंमें सबसे नीच अनुभागवाली मिथ्यात्व प्रकृति है । केवलज्ञाना-

* ताप्रती 'भय० अणंतगुणहीणा' इति नास्तीदं वाक्यम् ।

वरण० असादावेदणीय० अणंतगुणहीणा । अणंताणुबंधीसुं अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा । चदुमंजलणम्मि अण्णदर० अणं० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अणं० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा । मदिणाणावर०^२ अणंतगुणहीणा । मुदणाणावर० अ० गु० हीणा । मणपज्जवणाणावरण० अ० गु० हीणा । णवुंसयवेद० अ० गु० हीणा । अरदि० अणं० गु० हीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा अ० गु० हीणा । णिहा० अ० गु० हीणा । पयला० अ० गुणहीणा । णीचागोद० अजसगित्ति० अ० गु० हीणा । णिरयगइ० अ० गु० हीणा । णिरयाउ० अ० गु० हीणा । सादावेदणी० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउ० अ० गु० हीणा । ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अ० गु० हीणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गुणहीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खुदं० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । वीरियंतवरण, केवलदर्शनावरण और असादावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा उससे अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धी कपायोंमें अन्यतर प्रकृतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चार संज्वलन कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चार प्रत्याख्यानावरण कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चार अप्रत्याख्यानावरण कपायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सादावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कामणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अर्वाधिज्ञानावरण और अर्वाधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । त्याभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी

१ ताप्रती 'असादावेदणी० अणंताणुबंधीसुं' इति पाठः । २ ताप्रतावतोऽग्रे वक्ष्यमाणप्रकृतिबोधकपदानाम्भ्ये 'अणंतगुणहीणा' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते— तच्च प्रायः सदर्थम्यान्त एवैकवाग्मप्लभ्यते ।

गइय० अ० गुणहीणा । मम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

पढमाण् पुढवीण् सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाणावरण-केवलदंसणाव०
अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । संजलणचउक्कम्मि
अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । अपच्च०
चउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । मदिणाणावरण० अ० गु० हीणा । सुदणाणाव०
अ० गु० हीणा । मणपज्जवणाणाव० अ० गु० हीणा । णिहा० अ० गु० हीणा ।
पचला० अ० गु० हीणा । अमाद० अणंतगुणहीणा । णवुंसयवेद० अ० गु० हीणा ।
अरदि० अ० गु० हीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा०
अ० गु० हीणा । णीचागोद० अजसगि० अ० गु० हीणा । णिरयाउ० अ० गु० हीणा ।
माद० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । कम्मइय०
अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउव्विय० अ० गु० हीणा । ओहिणाण०
ओहिदंसण० अ० गु० हीणा । मम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय०
अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा ।
परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । चक्खु०

उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

प्रथम पृथिवीमें सबसे तीव्र अनुभागवाली मिथ्यात्व प्रकृति है । केवलज्ञानावरण और
केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा
अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्याना-
वरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा
अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन
है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी
हीन है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन
है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कामणशरीरकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी
उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी
हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी
हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी
हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्त-
गुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्त

अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । सम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

तिरिक्खगदीए सव्वतिच्चाणुभागं सादवेदणीयउदीरणा । अजसगित्ति-उच्चागोद०
अ० गुणहीणा । कम्मइय० अ० गुणहीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउ० अ० गु०
हीणा । मिच्छत्त० अ० गु० हीणा । केवलणाण० अ० गु० हीणा । केवलदंमण० अ० गु०
हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मिह अण्णदर० अ० गु० हीणा । मंजलणचउक्कम्मिह अण्णदर०
अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क०
अण्ण० अणंतगुणहीणा । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । सुदआव० अ० गु० हीणा ।
ओहिणाणाव० ओहिदंमणाव० अ० गु० हीणा । मणपज्जव० अ० गु० हीणा । थीण-
मिद्धि० अ० गु० हीणा । णिदाणिदा अ० गु० हीणा । पयलापयला० अ० गु० हीणा ।
णिदा० अ० गु० हीणा । पयला० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स०
अ० गु० हीणा । ओरालिय० अ० गु० हीणा । तिरिक्खाउ० अ० गु० हीणा । असाद०
अ० गु० हीणा । णवुंमय० अ० गु० हीणा । इत्थिवेद० अ० गु० हीणा । पुरिस०
अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गुणहीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु०
हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णीचागोद० अणंतगुणहीणा । अजसगित्ति अ० गु०

गुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

तिर्यग्गतमें सबसे तीव्र अनुभागवाली सातावेदनीय प्रकृति है । उससे अयशकीर्ति और ऊंच गोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कर्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्थानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अगन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्त-

हीणा । तिरिक्खण्ड० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा० । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । मम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

मणुस्सेसु सव्वतिव्वाणुभागा सादावेदणीय० । उच्चागोद० जसक्कित्ति० अणंतगुण-
हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । आहार० अ० गु०
हीणा । वेउच्चि० अ० गु० हीणा । मिच्छत्त० अ० गु० हीणा । केवलणाण० केवल-
दंमण० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणहीणा । संजलण-
चउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खा० चउक्क० अण्ण० अ० गु० हीणा ।
अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । मुद-
णाणाव० अ० गु० होणा । ओहिणाणाव० ओहिदं० अ० गु० हीणा । मणपज्जव० अ०
गु० हीणा । थीणग्गिद्धि० अ० गु० हीणा । णिदाणिदा० अ० गु० हीणा । पचला-
पचला० अ० गु० हीणा । णिदा० अ० गुणहीणा । पचला० अ० गु० हीणा । रदि०

गुणी हीन है । अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

मनुष्योंमें सातावेदनीयकी उदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है । उससे उच्चगोत्र व यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कामणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपयेयज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी

अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । मणुसगइ० अ० गु० हीणा । ओरालिय० अणंतगुणहीणा । मणुसाउ० अणंतगुणहीणा । अमाद० अ० गु० हीणा । णवुंसयवे० अ० गु० हीणा । इत्थि० अ० गु० हीणा । पुरिस० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णीचागोद० अ० गु० हीणा । अजसकित्ति० अ० गु० हीणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइअ० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । सम्मत्त-अणंतगुणहीणा ।

देवगदीण मच्चतिव्वाणुभागं सादावेदणीयं । उच्चागोद० जसगित्ति० अ० गु० हीणा । मिच्छत्त० अ० गु० हीणा । केवलणाण० अ० गु० हीणा । केवलदंसण० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणहीणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । सुद० अ० गु० हीणा ।

हीन है । मनुष्यगतिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । औदारिकशरीरकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनुष्यायुकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्रीवेदकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । पुरुषवेदकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्रकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । अयशकीर्तिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्निश्चयात्वकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

देवर्गानमें सातावेदनीय सबसे तीव्र अनुभागवाली प्रकृति है । उससे उच्चगोत्र व यशकीर्तिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । मिश्चयात्वकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलज्ञानावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलदर्शनावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । संख्यलनचतुष्कमें अन्यतरकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्यय-

मणपञ्जव० अ० गु० हीणा । णिदा० अ० गु० हीणा । पचला० अ० गु० हीणा । देवगइ० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गुणहीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउच्चि० अ० गु० हीणा । देवाउ० अ० गु० हीणा । असाद० अ० गु० हीणा । इत्थिवेद० अ० गु० हीणा । पुरिम० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा । मोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । अजसगिच्छि० अ० गु० हीणा । ओहिणाणाव० अ० गु० हीणा । ओहिदंस० अ० गु० हीणा^१ । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गुणहीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । सम्मत्त० अणंतगुणहीणा । भवणवामियदेवेमु सव्वतिच्चाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाण० केवलदंमण० अणंतगुणहीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । मंजलणचउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । अपच्च०

ज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रादर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलादर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कर्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यात्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें

१ कापवा 'ओहिदंस० ओहिदंस० अणंतगुणहीणा' इति पाठः ।

चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । सुद० अ० गु० हीणा । मणपज्जव० अ० गु० हीणा । णिदा० अ० गु० हीणा । पयला० अणंतगुणहीणा । साद० अ० गु० हीणा । उच्चागोद० अ० गु० हीणा । जसगित्ति० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउ० अ० गु० हीणा । देवाउ० अ० गु० हीणा । असाद० अ० गु० हीणा । इत्थि० अ० गु० हीणा । पुरिम० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा । मोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । अजस० अ० गु० हीणा । ओहिणाणा० अ० गु० हीणा । ओहिदं० अ० गु० हीणा । मम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । सम्मत्त० अ० गु० हीणा ।

एइंदिएसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाण० केवलदंमण० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । संजलणचउक्क० अण्ण० अ० गु०

अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कामेणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

एकेन्द्रिय जीवोंमें मिथ्यात्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है । केवलज्ञानावरण और हवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संजलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्याना-

हीणा । पञ्चकखाणचउकम्मि अण्ण० अ० गु० हीणा । अपञ्चकखाणचउकम्मि अण्ण०
 अ० गु० हीणा । मदिआवरण० अ० गु० होणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । मुद०
 अ० गु० हीणा । ओहिणाण० अ० गु० हीणा । ओहिदंम० अ० गु० हीणा । मण-
 पञ्जव० अ० गु० हीणा । श्रीणगिद्धि० अ० गु० हीणा । णिदाणिदा० अ० गु० हीणा ।
 पचलापचला० अ० गु० हीणा । णिदा० अ० गु० हीणा । पचला० अ० गु० हीणा ।
 असाद० अ० गु० हीणा । णवुंमय० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा ।
 भोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णोचा-
 गोद० अजमगिन्ति० अ० गु० हीणा । तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा । माद० अ०
 गु० हीणा । जमगिन्ति० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हम्म० अ०
 गु० हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउ० अ०
 गु० हीणा । ओरालिय० अ० गु० हीणा । तिग्गिखाउ० अ० गु० हीणा ।
 दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय०
 अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा ।

वरणचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमे अन्यतरकी
 उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शना-
 वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।
 अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्त-
 गुणी हीन है । मनःपयप्रज्ञानावरणका उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्थानगृद्धिकी उदीरणा
 अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा
 अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन
 है । असातावेदनायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन
 है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदी-
 रणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचमोत्र और अयशकीर्तिकी
 उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निर्यैर्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मातावेदनीयकी उदीरणा
 अनन्तगुणी हीन है । यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन
 है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कामणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजस
 शरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । औदा-
 रिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निर्यैगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्त-
 रायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । आभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्त-
 रायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षु-
 दर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीर्यान्तगयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । इमी

१ अन्कान्ताप्रतिप्लुपल्लवमानं तावयमिदं मपतिवोत्तव योजितम् । २ अप्रत्याख्यावर्ण च तिरिक्खगइ० अ०
 गु० हीणा इत्यधिकः पाठोऽस्ति ।

वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । एवं विगलिंदिएसु वि । णवरि पसत्थकम्मंसाणमुवारि
कायच्चं । एवमुक्कस्मप्पावद्दुअं समत्तं ।

मच्चमंदाणुभागं लोहमंजलणं । मायमंजलणं अणंतगुणा । माणमंज० अणंतगुणा ।
कोधमंज० अणंतगुणा । वीरियंतराइय० अणंतगुणा । सम्मत्त० अणंतगुणा । चक्खुदंस०
मुदणा० अणंतगुणा । मदि० अणंतगुणा । अचक्खु० अणंतगुणा । ओहिणाण० ओहि-
दंस० अणंतगुणा । परिभोगंतराइय० अणंतगुणा । भोगंतराइय० अणंतगुणा । लोहं-
तराइय० अणंतगुणा । दाणंतराइय० अणंतगुणा । पुरिमवे० अणंतगुणा । इत्थि० अ०
गुणा । णयुंम० अ० गुणा । मणपज्जव० अ० गुणा । हस्स० अ० गुणा । रदि० अ०
गुणा । दुगुंला० अ० गुणा । भय० अ० गुणा । सोम० अ० गुणा । अरदिं० अ०
गुणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा । पचला० अ० गुणा । णिदा० अ०
गुणा । पचलापचला० अणंतगुणा । णिदाणिदा अ० गुणा । थीणागिद्धि० अ० गुणा ।
पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । अपच्च० चउक्क० अण्ण० अ० गुणा ।
मम्मामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । मिच्छत्त०

प्रकारसे विकलेन्द्रियोंमें भी प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि
प्रशस्त कर्माशोंका अल्पबहुत्व ऊपर करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

संज्वलनलोभ सबसे मंद अनुभागवाली प्रकृति है । उससे संज्वलनमायाके जघन्य अनुभाग-
की उद्दीरणा अनन्तगुणी है । संज्वलनमानकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । संज्वलनक्रोधकी उद्दीरणा
अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । सम्यक्त्वकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है ।
चक्षुदर्शनावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी उद्दीरणा अनन्त-
गुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरण-
की उद्दीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । भोगान्तरायकी उद्दीरणा
अनन्तगुणी है । लोभान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । दानान्तरायकी उद्दीरणा अनन्तगुणी
है । पुरुषवेदकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । स्त्रीवेदकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदकी
उद्दीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उद्दीरणा
अनन्तगुणी । रतिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । जुगुप्साकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । भयकी
उद्दीरणा अनन्तगुणी है । शोककी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । अरतिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है ।
केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उद्दीरणा अनन्त-
गुणी है । निद्राकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाप्रचलाकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । निद्रा-
निद्राकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । स्त्यानगुद्धिकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्क-
में अन्यतरकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उद्दीरणा अनन्त-
गुणी है । सग्यमिश्रयाव्वकी उद्दीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उद्दीरणा

अ० गुणा । ओरालिय० अ० गुणा । वेडविय० अ० गुणा । तिरिक्खाउ० अ० गुणा । मणुसाउ० अ० गुणा । आहार० अ० गुणा । तेजइय० अ० गुणा । कम्मइय० अ० गुणा । तिरिक्खगइ० अ० गुणा । गिरयगइ० अ० गुणा । मणुमगइ० अ० गुणा । देवगइ० अ० गुणा । णीचागोद० अ० गुणा । अजम० अ० गुणा । अमादावेदणीय० अ० गुणा । उच्चागोद० अ० गुणा । जसगिति० अ० गुणा । माद० अ० गुणा । गिरयाउ० अ० गुणा । देवाउ० अणंतगुणा ।

गिरयगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । चक्खुदं० अ० गुणा^१ । अचक्खु० अ० गुणा । हस्स० अ० गुणा । रदि० अ० गुणा । दुगुंछा० अ० गुणा । भय० अ० गुणा । सोग० अ० गुणा । अरदि० अ० गुणा । णवुंसय० अ० गुणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । वीरियंतराइय० अ० गुणा । परिभोगंतराइय० अ० गुणा । भोगंतराइय० अ० गुणा । लाहंतराइय० अ० गुणा । दाणंतराइय० अ० गुणा । ओहिणाण-ओहिदंमण० अ० गुणा । मणपज्जव० अ० गुणा । सुदावरण० अ० गुणा । मदिआव० अ० गुणा । अपच्चक्खाण० अण्णदर० अ० गुणा । पच्चक्खा० चउक्क०

अनन्तगुणी है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वैक्रियकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । कामणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तिर्यगगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अयशकीतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है । यशकीतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।

नरकगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है । उससे चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । त्रुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अर्वाधज्ञानावरण और अर्वाधदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्य-

१ ताप्रतौ 'चक्खु० अण्ण० अणंतगुणा' इति पाठः ।

अण्ण० अ० गुणा । केवलज्ञानाण० केवलदर्शनाण० अ० गुणा । प्रचला० अणंतगुणा । णिद्दा० अ० गुणा । सम्भामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणुवधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । सिच्छत्त० अ० गुणा । वेउत्वि० अ० गुणा । तेज्जइय० अ० गुणा । कम्मइय० अ० गुणा । णिरय्यगइ० अ० गुणा । अजमगित्ति० अ० गुणा । णीचागोद० अ० गुणा । अमाद० अ० गुणा । साद० अ० गुणा । णिरयाउ० अणंतगुणा^१ । एं दीच्चाए वि । णवरि वीरियंतराइयमग परिभोगंतराइयमग सज्जे सम्मत्तं कायव्व ।

तिरिक्खत्तगदीए सव्वसंदाणुभाणं सम्मत्तं । चक्खु० अणंतगुणा । अचक्खु० अ० गुणा । ओहिणाण० ओहिदंमण० अ० गुणा । हम्म० अ० गुणा । रदि० अ० गुणा । दुमुंछा० अ० गुणा । भय० अ० गुणा । भोग० अ० गुणा । अरदि० अ० गुणा । पुरिम० अ० गुणा । इत्थि० अ० गुणा । णवुंसय० अ० गुणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । वीरियंतराइय० अ० गुणा । परिभोगंतराइय० अ० गुणा । भोगंतराइय० अ० गुणा । लाहंतगइय० अ० गुणा । दाणंतगइय० अ० गुणा ।

नरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अयशकीर्तिका उदीरणा अनन्तगुणी है । नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अभातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । इसी प्रकार दूसरी पृथिवीमें भी जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व प्रकृतिको वीर्यान्तराय और परिभोगान्तरायके मध्यमें करना चाहिए ।

तिर्यचगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । रज्ज्वलनचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी

१ अ-काप्रत्योः 'णिरयाउ अण्णदर अणंतगुणा', ताप्रती 'णिरयाउ० अण्णदर अणंतगुणा' इति पाठः ।

मणपञ्जव० अ० गुणा । मुद० अ० गुणा । मदिणाण० अ० गुणा । पच्चक्खाण-
चउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंम० अ० गुणा । पंचला० अ०
गुणा । णिद्दा० अ० गुणा । पचलापचला० अ० गुणा । णिद्दाणिद्दा० अ० गुणा ।
श्रीणगिद्धि० अ० गुणा । अपच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । सम्मामिच्छत्त०
अ० गुणा । अणंताणुवंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । मिच्छत्त अ० गुणा । ओरा-
लिय० अ० गुणा । वेउच्चि० अणंतगुणा । तिग्गिक्खाउ० अ० गुणा । तेज० अ० गुणा ।
क्कम्मइय० अ० गुणा । तिग्गिक्खगह० अ० गुणा । णीचाओद० अजसगिति० अणंत-
गुणा । अमाद० अ० गुणा । जसगिति० अ० गुणा । माद० अ० गुण । उच्चाओद०
अणंतगुणा^१ ।

मणुस्सेसु ओवं । णवग्गि तिग्गिक्खाउ-तिग्गिक्खगह-णिग्गिक्खाउ-णिग्गिक्खगह-देवाउ-देव-
गईणमुदीरणा गत्थि ।

देवगदीण मच्चतिव्वाणुभागं सम्भत्तं । चक्कमु० अ० गुणा । मुदावरण० अ०
गुणा । मदिआवरण० अ० गुणा । अचक्कमु० अ० गुणा । ओहिणाण० ओहिदंम०

उदीरणा अनन्तगुणी है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी
उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । केवल-
ज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी
है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाप्रत्याकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्रानिद्राकी
उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्यानगुद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमे
अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यग्गिग्गिक्खकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानु-
वन्धिचतुष्कमे अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मिग्गिक्खात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । औद्दा-
रिक्कशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वेगिक्कशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तियेगायुकी
उदीरणा अनन्तगुणी है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वामेणशरीरकी उदीरणा
अनन्तगुणी है । तियेगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नाचगोत्र व अयसकीर्तिकी उदीरणा
अनन्तगुणी है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वसकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी
है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।

मणुष्प्योमें जघन्य अनुभागउदीरणाके अल्पवद्भुत्वकी प्ररूपणा ओवके समान है । विशेष
इतना है कि तियेगायु, तियेगति, नारकायु, नारकगति, देवायु और देवगतिकी उदीरणा उनमें
सम्भव नहीं है ।

देवगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है । उससे चक्षुदर्शनावरणकी
जघन्य अनुभागउदीरणा अनन्तगुणी है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञाना-
वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञाना-
वरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।

१ ताप्रती 'उच्चाओद० अण्ण० अणंतगुणा' इति पाठः ।

अ० गुणा । हस्म० अ० गुणा । रदि० अ० गुणा । दुगुंछा० अ० गुणा । भय०
 अ० गुणा । मोग० अणंतगुणा । अरदि० अ० गुणा । पुरिम० अ० गुणा । इत्थि०
 अ० गुणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । वीरियंतराइय० अ० गुणा ।
 परिभोगंतराइय० अणंतगुणा । भोगंतराइय० अ० गुणा । लाहंतराइय० अ० गुणा ।
 दाणंतराइय० अ० गुणा । मणपज्जव० अ० गुणा । अपच्चक्खाणचउक्क० अण्णदर०
 अणंतगुणा । पच्चक्खाणचउक्क० अण्णदर० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ०
 गुणा । पचला० अ० गुणा । णिहा० अ० गुणा । मम्मामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणु-
 वंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । मिच्छत्त० अ० गुणा । वेउ० अ० गुणा ।
 तेज० अणंतगुणा । कम्मइय० अ० गुणा । देवगइ० अ० गुणा । अजसगिति० अ०
 गुणा । अमाद० अ० गुणा । उच्चागोद० जमगिति० अ० गुणा । माद० अ० गुणा ।
 देवाउ० अणंतगुणा ।

एइंदिएसु सव्वमंदाणुभागं हस्म० । रदि० अ० गुणा । दुगुंछा० अ० गुणा ।
 भय० अ० गुणा । मोग० अ० गुणा । अरदि० अ० गुणा । णवुंम० अ० गुणा ।

रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भयकी उदीरणा अनन्त-
 गुणी है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । पुरुषवेदकी
 उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । संजलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा
 अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी
 है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । दाना-
 न्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्या-
 ख्यानवरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानवरणचतुष्कमें अन्यतरकी
 उदीरणा अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।
 प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा
 अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मिथ्यात्वकी
 उदीरणा अनन्तगुणी है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तेजसशरीरकी उदीरणा
 अनन्तगुणी है । कामेणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।
 अयशकीतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । उच्चगोत्र
 और यशकीतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । देवायुकी
 उदीरणा अनन्तगुणी है ।

एकेन्द्रियोंमें हास्य प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है । उससे रतिकी उदीरणा अनन्त-
 गुणी है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । शोककी उदीरणा
 अनन्तगुणी है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।

मंजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । वीरियंतराइय० अ० गुणा । अचक्खु० अ० गुणा । परिभोगंतराइय० अ० गुणा । भोगंतराइय० अ० गुणा । लाहंतराइय० अणंतगुणा । दाणंतराइय० अ० गुणा । मणपज्जव० अ० गुणा । ओहिणाण० ओहिदंम० अ० गुणा । सुदआवरण० अ० गुणा । चक्खुदं० अ० गुणा । मदिआवर० अ० गुणा । अपचक्खाणचउक्क० अण्ण० अ० गुणा । पचक्खा० चउक्क० अण्ण० अ० गुणा । अणंतानुबंधिचउक्क० अण्ण० अ० गुणा । जमगित्ति० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा । मिच्छत्त० अ० गुणा । पचला० अ० गुणा । णिदा० अ० गुणा । पचलापचला० अ० गुणा । णिदाणिदा० अ० गुणा । थीणगिट्ठि० अ० गुणा । ओरालिय० अणंतगुणा । वेउव्वि० अ० गुणा । तिरिक्खाउ० अ० गुणा । तेजइय० अ० गुणा । कम्मइय० अ० गुणा । तिरिक्खगइ० अ० गुणा । णीचागोद० अ० गुणा । अजमगित्ति० अ० गुणा । अमाद० अ० गुणा । जमगित्ति० अणंतगुणा । साद० अणंतगुणा । एवमणुभागउदीरणाए अप्पावहुअं ममत्तं ।

एत्तो भुजगारउदीरणाए अट्टपदं— अणंतरविदिकंते ममए अप्पदराणि फहयाणि

संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । त्रैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । त्रियेगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तेजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । कामणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । त्रियेगातिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । इस प्रकार अनुभागउदीरणाका अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

यहां भुजाकार उदीरणाका अर्थपद कहा जाता है— अनन्तर अतीत समयमें अल्पतर

उदीरेदूण जदि एण्हिं बहुदराणि फहयाणि उदीरेदि तो एमा भुजगारउदीरणा । जदि अणंतगविदिक्कंते समए बहुदराणि फहयाणि उदीरेदूण एण्हिं थोवाणि उदीरेदि तो एमा अप्पदरउदीरणा । जदि तत्तियाणि तत्तियाणि चैव फहयाणि उदीरेदि तो एमा अवट्टिदउदीरणा । अणुदीरणेण उदाग्घिं एमा अवत्तव्वउदीरणा । एदेण अट्टुपदेण मामित्तं भुजगार० अप्पदर० अवट्टिद० अवत्तव्व० उदीरणानं वत्तव्वं ।

एयजीवेण कालो वुच्चदे— पंचणाणावरणीव-छहंमणावरणीय-पंचंतगइयाणं च भुजगार-अप्पदरउदीरणाणं कालो जहणेण एगममओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अवट्टिद० जह० एगममओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । निदानिद्रा-पचलापचला-थीणगिद्धि-मादामादवेयणीय-सोलसकमाय-णवणोकमाय-मिच्छत्त-मम्मत्त-मम्मामिच्छत्त-आउचउक्क-चत्तागिदि-पंच-जादि-ओगालिय-वेउव्विय-आहारमगीर- तिण्णिअंगोवंग-ओगालिय-वेउव्विय-आहारमगीर-पाओग्गबंधण-संघाद-छभंटाण-संघडण-कक्खड-गरुअ-लहुअ-उवघाद-परघाद-आदावुजोव-उस्साम-पसत्थापसत्थविहायगइ-तम-थावर-वादर-मुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-माहारण-दुभग-मुस्सर-दुस्सर-अणादेज्ज-अजमगित्ति-णीचागोदाणं भुजगार-अप्पदरउदीरणकालो जह० एगममओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्टिदउदीरणकालो जह० एगममओ, उक्क०

स्पष्टकोंकी उदीरणा करके यदि इस समय बहुत स्पष्टकोंकी उदीरणा करना है तो यह भुजाकार-उदीरणा है । यदि अनन्तर अतीत समयसे बहुत स्पष्टकोंकी उदीरणा करके इस समय स्तोत्र-स्पष्टकोंकी उदीरणा करता है तो यह अल्पतर-उदीरणा है । यदि उतने उतने मात्र ही स्पष्टकोंकी उदीरणा करता है तो यह अर्वास्थित-उदीरणा है । यदि पूर्वसे उदीरणा नहीं की है और अब उदीरणा करता है तो यह अवक्तव्य-उदीरणा है । इस अर्थपक्षे अनुसार यहाँ भुजाकार, अल्पतर, अर्वास्थित और अवक्तव्य उदीरणाओंके स्वामित्वका कथन करना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अर्वास्थित-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, चार आयुर्कर्म, चार गतियाँ, पांच जातियाँ, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, तीन आंगोपांग, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरके योग्य बन्धन एवं संघात, छह संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, लघु, उपघात, परघात, आनप, उद्योत, उच्छ्रवाम, प्रशमन व अप्रशमन विहायोगति, व्रस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अवर्षाप्त, प्रत्येक, साधारण, दुर्भग, मुस्वर, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इन प्रकृतियोंकी भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सात समय मात्र है । तेजस व कामेण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघात, वर्ण, गन्ध, रस,

५ ताप्रती 'अणुदीरणा उदीरेदि' इति पाठः ।

मत्तसमया । तेजा-कम्मइयसररीर-तप्पाओग्गबंधण-संघाद-वण्ण-गंध-रस-फाम-अगुरु-अलहुअ-थिराथिर-सुभामुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोदाणं भुजगार-अप्पदर-उदीरणकालो जह० एगममओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्टिदउदीरणकालो जह० एगममओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । चटुण्णमाणुपुव्वीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्टिद-कालो जो जिस्से पयडीए उदीरणकालो सो समऊणो' होदि । तित्थयरणामाए भुजगारउदीरणकालो जह० उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं । णत्थि [अप्पदरउदीरणा ।] अवट्टिदउदीरणकालो जह० वामपुधत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा देसूणचुलमीदि-पुव्वमदमहस्साणि वा ।

एयजीवेण अंतरं । तं जहा— णाणावरणीयस्मं भुजगार-अप्पदरउदीरणाणमंतरं जह० एगममओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्टिदमंतरं जह० एगममओ, उक्क० अमंखेज्जा लोणा । एवं मव्वामि ध्रुवोदयपयडीणं । णवरि कक्खड-गरुववज्जअमुहणामाणं अप्पदर-उदीरणंतरं मउअ-लहुअवज्जसुहणामाणं भुजगारुदीरणंतरं च उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । मिच्छत्तस्म भुजगार-अप्पदरउदीरणाणमंतरं जह० एगममओ, उक्क० वे-छावट्टिमागरोवमाणि सादिरेयाणि । तित्थयरस्म णत्थि अंतरं । जाणि कम्माणि

स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और उच्चगोत्रकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इनकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । चार आनुपूर्वियोंकी भुजाकार, अल्पतर व अवस्थित उदीरणाओंका काल, जो जिस प्रकृतिका उदीरणाकाल है उससे एक समय कम है । तीर्थंकर नामकर्मकी भुजाकार उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उसकी अल्पतर उदीरणा नहीं होती । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे वषपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि अथवा कुछ कम चौरासी लाख वषपूर्व प्रमाण है ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—ज्ञानावरणीयकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । उसकी अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है । इसी प्रकारसे समस्त ध्रुवोदयी प्रकृतियोंकी उदीरणाके अन्तरका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि कर्कश व गुरुको छोड़कर शेष अशुभ नामप्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणाका अन्तर तथा मृदु व लघुको छोड़कर शेष शुभ नामप्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र काल तक होता है । मिथ्यान्व प्रकृतिकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओं का अन्तर जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक दो लयासठ सागरोपम प्रमाण होता है । तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता । जो कर्म उदयकी अपेक्षा परिवर्तमान हैं उनकी

१ अ-काप्रत्योः 'समऊणा' इति पाठः । २ ताप्रती 'ण (अ) स्थि' इति पाठः । ३ ताप्रती [उक्क०] इति पाठः । ४ अप्रती 'देसूणा चुलमीदि', काप्रती 'देसूणचूलमीदि' इति पाठः । ५ प्रतिप 'णाणाजीवस्स' इति पाठः । ६ ताप्रती 'कक्खडगारुव वज्ज अमुहणामाणं इति पाठः ।

उदएण परियत्तमाणयाणि तेमिं भुजगार-अप्पदरउदीरणंतरं जहा पयडिउदीरणण अंतरं परूविदं तथा परूवेयच्चं । एवमंतरं समत्तं ।

णाणजीवेहि भंगविचओ । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जाओ णामपयडीओ ध्रुवमुदीरिज्जंति तामिं चं भुजगार-अप्पदर-अवट्टिद-उदीरया णियमा अत्थि । मिच्छत्त-तिरिक्खगइ-एइदियजादि-णवुंसयवेद-थावर-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदउदीरया णियमा अत्थि । अवत्तच्च-उदीरया भजियच्चा— मिया एदे च अवत्तच्चउदीरओ च, मिया एदे च अवत्तच्च-उदीरया च, ध्रुवसहिया एत्थ तिण्णि भंगा । सम्मामिच्छत्त-आहारसरीराणं आहारसरीरपाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघादाणं तिण्णमाणुपुच्चीणं च अमीदिभंगा, ध्रुवभंगाभावादो । ८० ।

सम्मत्त-इत्थि-पुरिमवेद - तिण्णिआउ-तिण्णिगइ-जादिचउक्क-ओरालियसरीरअंगोवंग-वेउध्वियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदाव-पंचमंठाण-छसंधण-पसत्थापसत्थविहाय-गइ-तम-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं भुजगार-अप्पदरउदीरया णियमा अत्थि । अवट्टिद-अवत्तच्चउदीरया भजियच्चा । तेणेत्थ णव भंगा होति ९ । पंचदंसणा-वरणीय - सादासाद - सोलसकसाय - हस्स-रदि-अरदि - सोग-भय - दुगुंछा-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ - ओरालियसरीर - तप्पाओग्गबंधण-संघाद - हुंडसंठाण - तिरिक्खाणुपुच्ची - भुजाकार व अल्पतर अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा प्रकृतिउदीरणाके अन्तरके समान करना चाहिये । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन करते हैं । यथा—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायके तथा जिन नामप्रकृतियोंकी ध्रुव उदीरणा होती है उनके भी भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे होते हैं । मिथ्यात्व, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, नपुंसकवेद, स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे होते हैं । अवक्तव्य उदीरक भजनीय हैं— कदाचित् उपर्युक्त ये तीन उदीरक बहुत व अवक्तव्य उदीरक एक होता है, कदाचित् ये तीन उदीरक बहुत और अवक्तव्य उदीरक भी बहुत होते हैं, इनमें ध्रुवभंगके मिला देनेसे यहां तीन भंग होते हैं । सम्यग्मिथ्यात्व, आहारक-शरीर, आहारकशरीरप्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात तथा तीन आनुपूर्वा; इनके अस्सी (८०) भंग होते हैं, कारण ध्रुव भंगका अभाव है ।

सम्यक्त्व, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, तीन आयुर्कर्म, तीन गतियां, चार जातियां, औदारिकशरीर-रांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिक बन्धन व संघात, आतप, पांच संस्थान, उह संहनन, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र; इनके भुजाकार व अल्पतर उदीरक नियमसे होते हैं । अवस्थित व अवक्तव्य उदीरक भजनीय हैं । इस कारण यहां नौ (९) भंग होते हैं । पांच दर्शनावरण, साता व असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, औदारिकशरीर, तत्प्रायोग्य

१ ताप्रतौ 'च' इत्येतत्पदं नास्ति । २ ताप्रतौ 'अंगोवंगण' इति पाठः ।

उवघाद-परघाद-आदाव-उज्जोव-उस्साम-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेयमरीर- साहारण-जमगिति-अजमगितीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरया णियमा अत्थि । णवरि पत्तेयमरीरस्स अवट्ठिदउदीरया भजियव्वा । तंणेत्थ तिण्णिभंगा ।

णाणाजीवेहि कालो— जेसिं कम्माणं भंगविचए एक्को भंगो तेमिं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरयकालो सव्वद्धा । जेमिं तिण्णिभंगा तेमिमवत्तव्वउदीरयाण कालो जह० एगममओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । सेसाणं सव्वद्धा । जेमिं णवभंगा तेसिं अवत्तव्व-अवट्ठिदउदीरयकालो जह० एगममओ, उक्क० आव० अमंखे० भागो । अमीदिभंगएसु सम्मामिच्छत्तस्म भुजगार-अप्पदराणं जह० एगममओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवत्तव्व-अवट्ठिदउदीरयाणं जह० एगममओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । तिण्णमाणुपुव्वीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद अवत्तव्व-उदीरयाणं जह० एगममओ, उक्क० आवलि० अमंखे० भागो । आहारचउक्क० भुजगार-अप्पदर० जह० एगममओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदावत्तव्वउदीरयाणं जह० एगममओ, उक्क० संखेज्जा ममया । एवं णाणाजीवेहि कालो ममत्तो ।

बन्धन व संघात, हण्डकसंस्थान, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्ति; इनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरक नियमसे होते हैं । विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरके अवस्थित उदीरक भङ्गनीय हैं । इसलिये यहां तीन भंग होते हैं ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालका कथन किया जाता है—जिन कर्मोंका भंगविचयमें एक भंग होता है उनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरकोंका काल सर्वकाल होता है । जिन कर्मोंके तीन भंग होते हैं उनके अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीका असंख्यातवें भाग होता है । शेष कर्मोंका सर्वकाल होता है । जिन कर्मोंके नौ भंग होते हैं उनके अवक्तव्य व अवस्थित उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । अस्सी भंगवाले कर्मोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरकों और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । अवक्तव्य व अवस्थित उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है । तीन आनुपूर्वियोंके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है । आहारकचतुष्कके भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र होता है । आहारकचतुष्कके अवस्थित व अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात समय मात्र होता है । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा काल समाम हुआ ।

णाणाजीवेहि अंतरं । तं जहा— जेमिं कम्माणमवट्टिदउदीरया भज्जा तेसिमवट्टिद-उदीरयंतरमसंखेज्जा लोगा । मम्मत्तस्स अवत्तव्वउदीरयंतरं वारस अहोरत्ता । चदुगदिं पडुच्च सत्त रादिदियाणि । भुजगार-अप्पदरउदीरयंतरं णत्थि । मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णमेगममओ, उक्क० चउवीसमहोरत्ते मादिरेगे पलिदो० असंखे० भागो । तिण्णं वेदाणमवत्तव्वउदीरयंतरं अंतोमुहुत्तं । चत्तारिगदि-पंचजादि-वेउव्विय-यरीर-पंचमंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग - छमंघडण-तिण्णिआणुपुव्वी-दोविहायगट्-तस-थावर-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुग्गर-आदेज्ज-अणादेज्ज-उच्चा-णीचागोदाणं अवत्तव्व० जह० णगममओ, उक्क अंतोमुहुत्तं ।

अप्पावहुअं । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स अवट्टिदउदीरया थोवा । अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा । भुजगारउदीरया विसेमाहिया । विसेमो मगमंखेज्जदि-भागो । मुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं आभिणि-बोहियणाणावरणभंगो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकमाय-अट्टणोकसायाणं मच्चन्थोवा अवट्टिदउदीरया । अवत्तव्वउदीरया अमंखेज्जगुणा । अप्पदर० अमंखे० गुणा । भुजगार० विसेमाहिया । जेमिं णामकम्माणमवत्तव्वउदीरया अमंखे० भागो

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—जिन कर्मोंके अवस्थित उदीरक भजनीय हैं उनके अवस्थित उदीरकोंका अन्तर असंख्यात लोक मात्र काल तक हाता है। सम्यक्त्व प्रकृतिके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर वारह अहोरात्र प्रमाण होता है। चार गतियोंकी अपेक्षा वह सात रात्रिदिन प्रमाण होता है। उसके भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है। मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कपसे क्रमशः साधिक चौबीस अहोरात्र और पत्योपसके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। तीन वेदोंके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर अन्तमुहूर्त मात्र होता है। चार गतियां, पांच जातियां, वैक्रियकशरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक आंगोपांग, छह संहनन, तीन आनुपूर्वियां, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, उच्चगोत्र और नीचगोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कपसे अन्तमुहूर्त मात्र होता है।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधकज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। उनसे उसके अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण अपना संख्यातवां भाग है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अविधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरण; इनके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा आभिनिबोधकज्ञानावरणके समान है। पांच दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय और आठ नोकपाय; इनके अवस्थित उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। जिन नामकर्मोंके अवक्तव्य उदीरक असंख्यातवें भाग मात्र

तेसिं णामकम्माणमवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० अमंखे० गुणा । अप्पदर० अमंखे० गुणा । भुजगार० विसेसाहिया । मिच्छत्त-णवुंमयवेद-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमवत्तव्व० थोवा । अवट्ठिय० अणंतगुणा । अप्पदर० अमंखे० गुणा । भुजगार० विसेसाहिया । अचक्खवुदंमणावरण-सम्मत्त-पंचंतराइयाणं अवट्ठिदउदीरया थोवा । जत्थ अवत्तव्वया अत्थि ते अमंखे० गुणा । भुजगार० अमंखे० गुणा । अप्पदर० विसेसाहिया । मम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठि० थोवा । अवत्तव्व० अमंखे० गुणा । अप्पदर० अमंखे० गुणा । भुजगार० विसे० । मम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणे मत्थाणे भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला । मिच्छत्तादो मम्मामिच्छत्तं गच्छंतजीवा थोवा । मम्मत्तादो गच्छंता अमंखे० गुणा । जे मम्मत्तादो मम्मामिच्छत्तं गच्छंति ते मम्मामिच्छत्तस्स भुजगारउदीरया हांति । कदो ? संकिलेमत्तादो । जे मिच्छत्तादो मम्मामिच्छत्तं गच्छंति ते मम्मामिच्छत्तस्स अप्पदरउदीरया हांति, विसुज्जमाणपरिणामादो । तेण अप्पदरउदीरएहिंनो भुजगार-उदीरयाणं विसेसाहियत्तं सिद्धं ।

पदणिकखेवे सामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया अणुभागउद्दीरणवइटी कस्स ? जो संतकम्मेषं उक्कस्सउद्दीरणापाओग्गेण तप्पाओग्गसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं

हैं उन नामकर्मांके अवस्थित उद्दीरक स्तोक हैं । अवत्तव्व उद्दीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उद्दीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारउद्दीरक विशेष अधिक हैं । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यंच-गति, एकैन्द्रिय जर्गति, स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके अवत्तव्व उद्दीरक स्तोक हैं । अवस्थित उद्दीरक अनन्तगुणे हैं । अल्पतर उद्दीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारउद्दीरक विशेष अधिक हैं । अचक्षुदृशनावरण, सम्यक्त्व और पांच अन्तरायके अवस्थित उद्दीरक स्तोक हैं । जहाँ अवत्तव्व उद्दीरक हैं वे असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उद्दीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उद्दीरक विशेष अधिक हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थित उद्दीरक स्तोक हैं । अवत्तव्व उद्दीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उद्दीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उद्दीरक विशेष अधिक हैं । सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानमें स्वस्थानमें भुजाकार और अल्पतर उद्दीरक दोनों तुल्य हैं । मिथ्यात्व-में सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव स्तोक हैं, परन्तु सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । जो जीव सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं वे सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उद्दीरक होते हैं, क्योंकि, वे संकलेश परिणामोंसे युक्त होते हैं । जो मिथ्यात्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं वे सम्यग्मिथ्यात्वके अल्पतरउद्दीरक होते हैं, क्योंकि, वे विशुद्धमान परिणामोंसे संयुक्त होते हैं; इसीलिये उसके अल्पतर उद्दीरकोंकी अपेक्षा भुजा-कारउद्दीरकोंका विशेष अधिक होना सिद्ध है ।

पदनिक्षेपमें स्वामित्वका कथन किया जाता है । यह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उद्दीरणा-वृद्धि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट उद्दीरणाके योग्य सत्कर्मके साथ

गदो तस्म उक्स्मिया वड्ढी । उक्स्मिया हाणी कस्म ? जो उक्स्ममुदीरणमुदीरेदण मदो एइंदियो जादो तस्म उक्स्मिया हाणो । तत्थेव उक्स्ममवट्ठाणं । मुद-मणपञ्चवणाणावरण-केवलणाण-केवलदंमणावरण- मिच्छत्त-सोलमंकमायाणं मदिआवरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंमणावरणाणमुक्स्मियाए वड्ढीए मदिआवरणभंगो । णवरि ओहिलंभो णत्थि । उक्स्मिया हाणी कस्म ? जो विणा ओहिलंभेण उक्स्ममुदीरणमुदीरेदण मदो णेरइयो जादो तस्म उक्स्मिया हाणी । उक्स्ममवट्ठाणं कस्म ? जो उक्स्ममुदीरण-मुदीरेतो संतो सागारक्खणण पडिभग्गो^१ तप्पाओग्गजहण्णउदए पदिदो से काले तत्थेव अवट्ठिदो तस्म उक्स्ममवट्ठाणं ।

चक्षुदंमणावरणस्म उक्स्मिया वड्ढी कस्म ? जो तीइंदियो^२ तप्पाओग्गविमुट्ठो संतो मंक्किलेसं गदो तस्म उक्स्मिया वड्ढी । उक्स्मिया हाणी कस्म ? जो तेइंदियो तप्पाओग्गमंक्किलिड्ढो संतो मदो एइंदियो जादो तस्म उक्स्मिया हाणी । तस्सेव उक्स्ममवट्ठाणं । अचक्षुदंमणावरणस्म उक्स्मिया वड्ढी कस्म ? जो पुव्वहरो मिच्छाइड्ढो^३ तप्पाओग्गमंक्किलिड्ढो संतो मदो मुहुमेइंदियो जहण्णखओवससो जादो

तत्प्रायोग्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट उदीरणापूर्वक उदीरणा करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रिय हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है । वहींपर उत्कृष्ट अवस्थान भी होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपयथज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, मिथ्यात्व और सोलह कपायोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि अवधिज्ञानकी प्राप्ति सम्भव नहीं है । उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-हानि किसके होती है ? जो जीव अवधिज्ञानकी प्राप्तिके विना उत्कृष्ट उदीरणा पूर्वक उदीरणा करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ नारकी हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है । उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो उत्कृष्ट उदीरणा पूर्वक उदीरणा करता हुआ साकार उपयोगके क्षयसे प्रतिभय होकर तत्प्रायोग्य जघन्य उदयमें आ पड़ता है व अनन्तर कालमें वहींपर अवस्थित होता है उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

चक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि किसके होती है ? जो त्रीन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो त्रीन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त होकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रिय होता है उसके उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके उत्कृष्ट अवस्थान होता है । अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो पूर्वधर मिथ्यादृष्टि जाव तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर जघन्य क्षयोपशमसं संयुक्तसूक्ष्म एकेन्द्रिय होता है उसके

^१ प्रतिपु 'मिच्छन्नस्स सोलस' इति पाठः । ^२ अ-काप्रत्योः 'भंगो' इति पाठः । ^३ अ-काप्रत्योः 'तीइंदिय' इति पाठः । ^४ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'उक्स्मसंसंक्किलेसं' इति पाठः । ^५ अप्रती 'तस्म उक्स्म उक्स्मिया' इति पाठः ।

तस्म उक्कस्मिया वड्ढी । अचक्खुदंमणावरणस्म उक्कस्मिया हाणी कस्स ? सुद्धुमेइंदियस्म जहण्णलद्धिस्म से काले तप्पाओग्गविसोहीए मच्चविसुद्धस्म उक्कस्मिया हाणी । उक्कस्म-मवट्ठाणं कस्म ? जो वादरेइंदिओ उक्कस्मसंक्किलिट्ठो सागारक्खण्ण तप्पाओग्गविसुद्धो जादो तत्थेव अवट्ठिदो तस्म उक्कस्ममवट्ठाणं । दंमणावरणपंचयस्म उक्कस्मिया वड्ढी कस्स ? जो णिहावेदओ तप्पाओग्गविसुद्धो मंतो तप्पाओग्गउक्कस्मसंक्किलिट्ठो जादो तस्म उक्कस्मिया वड्ढी । उक्कस्मिया हाणी कस्स ? जो णिहावेदओ उक्कस्मसंक्किलिट्ठो सागारक्खण्ण तप्पाओग्गजहण्णण उदए पदिदो तस्म उक्कस्मिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्ममवट्ठाणं । एवं सेसाणं चट्ठुणं पि वत्तच्चं ।

सादस्म उक्कस्मिया वड्ढी कस्म ? जो देवो तेत्तीमसागरोवमट्ठिदीओ तप्पाओग्ग-जहण्णमादोदयादो उक्कस्मयं मादोदयं गदो तस्म उक्कस्मिया वड्ढी । उक्कस्मिया हाणी कस्म ? जो देवो उक्कस्ममादवेदओ मदो मणुस्सो तप्पाओग्गजहण्णमादावेदओ जादो तस्म उक्कस्मिया हाणी । तत्थेव उक्कस्ममवट्ठाणं । असादस्म उक्कस्मिया वड्ढी कस्म ? जो णेरइओ तेत्तीमसागरोवमट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णअमादोदयादो उक्कस्मयं अमादोदयं गदो तस्म उक्कस्मिया वड्ढी । उक्कस्मिया हाणी कस्म ? उक्कस्मअसादोदण्ण वड्ढ-

उत्कृष्ट वृद्धि होती है । अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे सर्वविशुद्ध होनेवाले ऐसे जघन्य क्षयोपशम संयुक्त सूक्ष्म एकान्द्रिय जीवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो वादरे एकान्द्रिय जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ वहींपर अवस्थित रहता है उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो निद्राका वेदक जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर फिर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके निद्रा प्रकृतिकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि होती है । इसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो निद्राका वेदक जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य उदयमें आ पहुँचा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसके ही अनन्तर कालमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है । इसी प्रकारसे प्रचला आदि शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये ।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा वृद्धि किसके होती है ? तृतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो देव तत्प्रायोग्य जघन्य साताके उदयसे उत्कृष्ट साताके उदयको प्राप्त होता है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उत्कृष्ट सातावेदनीयका वेदक जो देव मृत्युको प्राप्त होकर तत्प्रायोग्य जघन्य साताका वेदक मनुष्य होता है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । वहींपर उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तृतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो नारकी जीव तत्प्रायोग्य जघन्य असाताके उदयसे उत्कृष्ट असाताके उदयको प्राप्त होता है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उत्कृष्ट असाताके उदयमें वर्तमान जो जीव भरकर तत्प्रायोग्य असाताके

माणओ^१ मदो तप्पाओग्गजहण्णअमादोदण पदिदो तस्मं उक्स्सिया हाणी । से काले उक्स्समवट्ठाणं ।

अरदि-मोग-भय-दुगुंछा-णवुंगयवेदाणं अमादभंगो । मम्मत्त-मम्मामिच्छत्ताणं उक्स्सिया वड्ढी कस्म ? जो तप्पाओग्गजहण्णमंक्विलेमादो उक्स्समंक्विलेमं गदो तस्म उक्स्सिया वड्ढी । उक्स्सिया हाणी कस्म ? जो उक्स्समंक्विलेसादो तप्पाओग्गजहण्ण-मंक्विलेमं गदो तस्म उक्स्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्स्समवट्ठाणं । हस्म-रदीणं मादभंगो । णवरि महस्सारओ त्ति वत्तव्वं । इत्थि-पुरिसवेदाणं उक्स्सिया वड्ढो कस्म होदि ? जो तिरिक्खो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ^२ जादो तप्पाओग्गजहण्णवेदोण्ण उक्स्समंक्विलेमं गंतूण उक्स्सयं वेदोदयं गदो तस्म उक्स्सिया वड्ढी । उक्स्सिया हाणी कस्म ? जो तिरिक्खो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ जादो उक्स्सवेदोदयादो मागार-क्खण्ण तप्पाओग्गजहण्णमंक्विलेमं जहण्णवेदोदयं गदो च तस्म उक्स्सिया हाणी । तस्सेव उक्स्सयमवट्ठाणं ।

णिरयाउअस्स उक्स्सिया वड्ढी कस्म ? जो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पा-ओग्गजहण्णमंक्विलेमादो उक्स्समंक्विलेमं गदो तस्म उक्स्सिया वड्ढी । उक्स्सिया

जघन्य उदय में आया है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अनन्तर कालमें उसके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

अर्थात्, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेश-से उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके हाती है ? जो उत्कृष्ट संक्लेशसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसके ही अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । हास्य और रतिकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । विशेष इतना है कि यहाँ तेत्तीस साग-रोपम स्थितिवाले देवके स्थानमें सहस्रार कल्पवासी देवका कथन करना चाहिये । स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो आठ वर्षकी आयुवाला तिर्यच आठ वर्षका होकर तत्प्रायोग्य जघन्य वेदोदयके साथ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर उत्कृष्ट वेदोदयको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि हाती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो आठ वर्षकी आयुवाला तिर्यच आठ वर्षका होकर उत्कृष्ट वेदोदयसे साकार उपयोगके क्षयके साथ तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेश और जघन्य वेदोदयको भी प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि हाती है । उर्भाके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

नारकायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तेत्तीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रा-योग्य जघन्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी

१ ताप्रती 'वट्ठमाणओ' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'पल्लिटोवमस्स तस्म', ताप्रती 'पल्लिटोवमस्स (पदिदो)तस्म' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'वस्म' इति पाठः ।

हाणी कस्स ? जो तेत्तीससागरोवमड्ढिदीओ उक्कस्ससंकिलिद्धो सागारक्खएण तप्पाओग्ग-जहण्णे संकिलेसे पदिदो तस्से उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । मणुस-तिरिक्खाउआणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तिण्णिपलिदोवमाउड्ढिदीओ तप्पाओग्ग-जहण्विसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्विसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । देवाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तेत्तीससागरोवमाउड्ढिदीओ तप्पाओग्गजहण्विसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? तस्सेव उक्कस्सआउओदयादो जो सागारक्खएण पडिभग्गो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं ।

णिरयगईए णिरयाउभंगो । मणुमगईए मणुसाउभंगो । देवगईए देवाउभंगो । तिरिक्खगईए इत्थिवेदभंगो । ओरालियसरीर-ओरालियअंगोवंग-बंधण-संघादाणं मणुस-गइभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? तप्पाओग्गजहण्विसोहीदो जो उक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी

उत्कृष्ट हानि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव उत्कृष्ट संकलशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य संकलेशमें आ पड़ा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । मनुष्यायु और तिर्यगायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तीन पत्न्योपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उक्त दो आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगका क्षय होनेसे तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो साकार उपयोगके क्षयपूर्वक आयुके उत्कृष्ट उदयसे प्रतिभभ हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अनन्तर कालमें उसके ही उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

नरकगतिकी वृद्धि-हानिकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । मनुष्यगतिकी उक्त वृद्धि-हानिकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान, देवगतिकी देवायुके समान, और तिर्यचगतिकी स्त्रीवेदके समान है । औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग तथा औदारिक बन्धन व संघातकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । आहारकशरीर, अहारकशरीरांगोपांग एवं आहारक बन्धन व संघातकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके

१ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमस्स तस्स', ताप्रतो पलिदोवमस्स (पदिदो) तस्स' इति पाठः । २ अपतो 'पडिभागो' इति पाठः ।

कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएणं जहण्णविसोहिं गदो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । वेउव्वियमरीरचउक्क-समचउरससंठाण-परघाद-पसत्थ-विहायगइ-पत्तेयसरीराणं आहारसरीरभंगो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ण-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-जसक्कित्ति-सुभग-आदेज्ज-णिमिण-उच्चागोदाणं उक्क० वट्ठी कस्स ? चरमसमयमजोगिस्स । उक्क० हाणी कस्स ? पटमसमयसकमायस्स । जेणेदाओ तिरिक्ख-मणुसाणं परिणामपच्चइयाओ तेण ण देवस्स, सुट्टुमसांपराइयस्सेव । उक्कस्सय-मवट्ठाणं कस्स ? जो अप्पमत्तसंजदो मच्चविसुट्ठो सागारक्खएणं अवट्ठाणं गदो तस्स । चदुसंठाण-पंचसंधडणाणं तिरिक्खगादिभंगो । वज्जरिसहस्स मणुस्सो तिपलिदोवमिओ । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-लहुक्खाणं मिच्छत्तभंगो । मउअ-लहुअ-उज्जोवाणमाहार-सरीरभंगो । कक्खड-गरुआणमित्थिवेदभंगो । अथिर-असुभ-दुभग-अणादेज्ज-अजस-क्कित्तीणं मिच्छत्तभंगो । पंचिदियजादि-उस्साम-तस-बादर-पज्जत्त-सुस्मराणं देवगइभंगो ।

उन चारों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयपूर्वक जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । वैक्रियिकशरीरादि चार, समचतुरस्रसंस्थान, परघात, प्रशस्त विहायोगति और प्रत्येकशरीर; इनकी वृद्धि व हानिकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है ।

तैजसशरीर, कार्मणशरीर, तैजसशरीर बन्धन व संघात, कार्मणशरीर बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, निर्माण और उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । इनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट हानि प्रथम समयवर्ती सकपाय प्राणीके होती है । चूंकि ये तिर्यचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती हैं, इसीलिये वे देवके सम्भव न होकर सूक्ष्मसाम्परायिक मनुष्यके ही सम्भव हैं । इनका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध अप्रमत्तसंयत साकार उपयोगके क्षयसे अवस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । चार संस्थानों व पांच संहननोंकी प्ररूपणा तिर्यचगतिके समान है । वज्रपभनाराचसंहननकी उत्कृष्ट वृद्धि तीन पर्योपम प्रमाण आयुवालेके होती है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस तथा शीत व रूक्ष स्पर्शको प्ररूपणा मिथ्यात्व प्रकृतिके समान है । मृदु, लघु और उद्योतकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है । कर्कश और गुरु स्पर्शकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है । अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय और अयशकीर्तिकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । पंचेन्द्रिय जाति, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और सुस्वरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ।

१ अगतो 'सागरक्खएण' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'संक्किलिद्ध' इति पाठः ।

थावरणामाए उक्क० वड्ठी कस्स ? जो बादरो तप्पाओग्गजहण्णसंक्किलसादो उक्कस्समंक्किलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ठी । सो चेव मदो तप्पाओग्गजहण्णमंक्किलेसे पदिदो तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्सयमवट्ठाणं । एइंदिय-विगलिंदिय-सुहुम-साहारणणामाणं थावरभंगो । णवरि वेदओ कायव्वो । साहारणणामाए बादर-साहारणकाइओ कायव्वो । अपज्जत्तणामाए उक्कस्सिया वड्ठी कस्स ? मणुस्सस्स अपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उप्पज्जिय चरिमसमयतव्वभवत्थस्स । सो चेव मदो सुहुमेइंदियअपज्जत्तएसु उववण्णो तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । अप्पमत्थविहायगदि-दुस्सर-णीचागोदाणं णिरयगइभंगो ।

पंचणमंतरायाणमुक्कस्सिया वड्ठी कस्स ? जो सण्णिपंचिदिओ तप्पाओग्गुक्कस्सियाए लद्धीए संजुत्तो मदो सुहुमेइंदिएसु जहण्णलद्धिसंजुत्तो जादो तस्स उक्कस्सिया वड्ठी । तस्सेव उक्कस्समंक्किलिद्धस्से मागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णमंक्किलेसे पदिदस्स तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । आदावणामाए उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं थावरभंगो । णवरि बादरपुठविकाइएसु विसोहीए वत्तव्वं । तित्थयरणामाए उक्क० वड्ठी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । एवं [उक्कस्स] सामित्तं समत्तं ।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो बादर जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । वही मरकर जब तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आता है तब उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मकी प्ररूपणा स्थावर नामकर्मके समान है । विशेष इतना है कि विवक्षित प्रकृतिका वेदक कहना चाहिये । साधारण नामकर्मकी प्ररूपणामें बादर साधारणकार्यिक कहना चाहिये । अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह मनुष्य अपर्याप्तके होती है जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर चरम समयवर्ती तदभवस्थ होता है । वही मरकर जब सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होता है तब उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । अप्रशस्त विहायोगति, दुस्वर और नीचगोत्रकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है ।

पांच अन्तराय कर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट क्षयोपशमसे संयुक्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य क्षयोपशमसे संयुक्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त वही जब साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा स्थावर नामकर्मके समान है । विशेष इतना है कि बादर पृथिवीकार्यिकोंमें विशुद्धिके द्वारा स्वामित्व कहना चाहिये । तीर्थकर नाकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मदिआवरणस्म जहणिया वड्ठी कस्म ? जो चोद्दसपुच्चहरो उदएण अणंतभाग-
ड्ठीए वड्ढिदो तस्म जह० वड्ढी । तेणेव जहणवड्ढिमेत्तं चैव हाइदूण उदीरिदे तस्स
जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । सुदावरणस्म मदिआवरणभंगो । चक्खु अचक्खु-
दंसणाणं पि मदिआवरणभंगो चैव, चोद्दसपुच्चहरमिह चक्खु-अचक्खुदंसणावरणाण-
मुक्कस्सखओवममदंसणादो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहणवड्ढि-हाणि-
अवट्ठाणाणि कस्म ? परमोहिणाणिस्म जहणवड्ढीए वड्ढियस्स वड्ढी, तेणेव
हाइदस्स हाणी, एगदरत्थमवट्ठाणं । मणपज्जवणाणावरणस्स जहण-वड्ढि-हाणि-
अवट्ठाणाणि कस्म ? विउलमइस्स । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं जह० हाणी कस्म ?
समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । जह० वड्ढी कस्स ? पढमसमयसकमायस्स
संजदस्स । अवट्ठाणं कस्म ? उवसंतकसायस्स । णिदा-पयलाणं जहणवड्ढि-हाणि-
अवट्ठाणाणि कस्म ? तप्पाओग्गविसुद्धस्स अप्पमत्तमंजदस्स उदएण सव्वजहणणाणंत-
भागवड्ढीए वड्ढिदस्स जहणिया वड्ढी । तं चैव हाइदूण उदीरिदे जहणिया हाणी ।
एगदरत्थमवट्ठाणं । णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं णिदाभंगो । णवरि पमत्तमंजदो

मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो चौदह पूर्वोका धारक उदयकी
अपेक्षा अनन्तभाग वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त है उसके मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि होती है । वही
जब जघन्य वृद्धि मात्र ही हानिको प्राप्त होकर उदीरणा करता है तब उसके उसकी जघन्य हानि
होती है । दोनोंमेंसे एकतरमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । श्रुतज्ञानावरणकी प्ररूपणा
मतिज्ञानावरणके समान है । चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणकी प्ररूपणा भी मतिज्ञाना-
वरणके ही समान है, क्योंकि, चौदह पूर्वोके धारक प्राणीके चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शना-
वरणका उत्कृष्ट क्षयोपशम देखा जाता है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य
वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुए परमावधिज्ञानीके
उनकी वृद्धि, जघन्य हानिसे हानिको प्राप्त हुए उसके ही उनकी हानि, तथा दोनोंमेंसे किसी एकमें
अवस्थान होता है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ?
वे विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानीके होते हैं । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य
हानि किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली
मात्र शेष रही है उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके
होती है ? वह प्रथम समयवर्ती सकपाय संयतके होती है । उनका जघन्य अवस्थान किसके
होता है ? उपशान्तकपायके उनका जघन्य अवस्थान होता है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य
वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होते हैं ? जो उदयकी अपेक्षा सर्वजघन्य अनन्तभाग-
वृद्धिके द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त अप्रमत्तसंयतके उनकी जघन्य
वृद्धि होती है । उतनी ही हानिको प्राप्त होकर उदीरणा करनेपर उसके उनकी जघन्य हानि होती
है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वजहणणाणंतभागवड्ढीए', ताप्रती 'सव्वजहणणाणं तभागवड्ढीए' इति पाठः
२ ताप्रती 'एगदरत्थमवट्ठाणं' इति पाठः ।

सामी । सादासादाणं जहणवड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणि कस्स ? अणुदरस्स ।

मिच्छत्तस्स जहणिया हाणी कस्स ? चरिमममयमिच्छाइड्ढिस्स से काले मंजमं पडिवजंतस्स । वड्ढि-अवट्टाणाणि कस्स ? अधापवत्तमिच्छाइड्ढिस्स तप्पाओग्ग-विसुद्धस्स उदयादो अणंतभाएण वड्ढियस्स जह० वड्ढी । तस्सेव से काले जहण-मवट्टाणं । अणंताणुबंधिचउकस्स मिच्छत्तभंगो । सम्मत्तस्स जहणिया हाणी कस्स ? ममयाहियावलयिचरिमममयअकखीणदंमणमोहणीयस्स । वड्ढि-अवट्टाणाणि कस्स ? अधापमत्तसम्माइड्ढिस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स उदयादो अणंतभाएण वड्ढियस्स तस्स जहणिया वड्ढी अवट्टाणं च । सम्मामिच्छत्तस्स जहणिया वड्ढी कस्स ? जो अधापमत्तसम्मामिच्छाइड्ढी तप्पाओग्गविसुद्धो अणंतभाएण उदयादो वड्ढिदो तस्स जहणिया वड्ढी । तस्सेव से काले जहणमवट्टाणं । सम्मामिच्छत्तस्स जह० [हाणी] कस्स ? से काले सम्मत्तं पडिवजंतस्स ।

अपच्चक्खाणकसायाणं जहणिया हाणी कस्स ? सम्माइड्ढिग्ग असंजदस्स से

और स्त्यानगृद्धिकी प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है । विशेष इतना है कि उनका स्वामी प्रमत्तसंयत होता है । साता व असाता वेदनीयकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किमके होते हैं ? वे किसीके भी होते हैं ।

मिथ्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होनेवाला है ऐसे अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी जघन्य हानि होती है । उसकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होते हैं ? तत्प्रायोग्य विशुद्ध व उदयकी अपेक्षा अनन्तभाग-वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त ऐसे अधःप्रवृत्त मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । सम्यक्त्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? जिसके दर्शन-मोहनीयके अक्षीण रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसका सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य हानि होती है । उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान किसके होते हैं ? जो अधः-प्रवृत्त सम्यग्दृष्टि तत्प्रायोग्य विशुद्धसे संयुक्त है व उदयकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान होता है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि तत्प्रायोग्य विशुद्धसे संयुक्त व उदयकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे वृद्धिगत है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें जो सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाला है उसके उसकी जघन्य हानि होती है ।

अप्रत्याख्यानारण कपायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो अविरोध सम्यग्दृष्टि

१ ताप्रती 'अधाम (व) त्तिमिच्छाइड्ढिस्स' इति पाठः । २ ताप्रती 'सम्मत्ते' इति पाठः । ३ अतोऽग्रे अ-काप्रत्योः 'पच्चक्खाणावरणकसायाणं जहणिया हाणी कस्स' इत्येतावत्पर्यन्तः पाठस्त्वृत्तितोऽस्ति ।

काले संजमं पडिवज्जंतस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्म ? अधापमत्तअमंजदसम्माइड्ढिस्स । पच्चक्खाणावरणकसायाणं जहणिया हाणी कस्म ? संजदामंजदस्स से काले संजमं पडिवज्जंतस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्म ? अधापमत्तसंजदामंजदस्स । चदुण्णं संजलणाणं जहणिया हाणी कस्म ? क्रोध-माण-मायाणं खवओ चरिमममयवेदओ सामी । लोभस्स पुण समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स खवयस्स जहणिया हाणी । लोभस्स जहणिया वड्ढी कस्म ? परिवदमाणस्स दुममयसुहुममांपराइयस्स । मायाए जह० वड्ढी कस्म ? परिवदमाणस्स दुममयमायावेदयस्स । माणस्स जह० वड्ढी कस्म ? परिवदमाणस्स दुममयमाणवेदयस्स । क्रोधस्स जह० वड्ढी कस्म ? परिवदमाणस्स दुममयक्रोधवेदयस्स । चदुण्णं पि संजलणाणं जहणभवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तमंजदस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स अणंतभाएण वड्ढिदूण हाइदूण वा अवड्ढियस्स ।

तिण्णं पि वेदाणं जह० हाणी कस्स ? खवयस्स समयाहियावलियचरिमममय-वेदयस्स अप्पिदवेदोदयजुत्तस्स जह० हाणी । जह० वड्ढी कस्म ? अप्पिदवेदोदएण

अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होनेवाला है उसके उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान किसके होता है ? अधःप्रवृत्त अमंयत सम्यग्दृष्टिके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है । प्रत्याख्यानावरण कपायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त करनेवाले संयतासंयत जीवके उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होते हैं ? वे अधःप्रवृत्त संयतासंयतके होते हैं । चार संज्वलन कपायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? उसका स्वामी संज्वलन क्रोध, मान और मायाके क्षपणमें उद्यत उनका अन्तिम समयवर्ती वेदक जीव होता है । परन्तु संज्वलन लोभकी जघन्य हानि, जिस क्षपकके अन्तिम समयवर्ती सकपाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है, उसके होती है । संज्वलन लोभकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । संज्वलन मायाकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती मायावेदकके होती है । संज्वलन मानकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती मानवेदकके होती है । संज्वलन क्रोधकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती क्रोधवेदकके होती है । चारों ही संज्वलन कपायोंका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? वह अनन्तर्वे भागसे वृद्धि अथवा हानिको प्राप्त होकर अर्वास्थत हुए तत्प्रायोग्य विशुद्ध अधःप्रवृत्तसंयतके होता है ।

तीनों ही वेदोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? विवक्षित वेदके उदयसे संयुक्त क्षपकके उसके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है । विवक्षित वेदके उदयके साथ श्रेणिसे

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वट्ठअवट्ठाणाणि' इति पाठः । २ अप्रतो 'क्रोधवेदएण' इति पाठः ।

परिवदमाणस्स दुसमयवेदयस्स । तिण्णं वेदानं जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंज-
दस्स । छण्णोकसायाणं जह० हाणी कस्स ? चरिमसमयअपुव्वखवयस्स । वड्ढी ओदर-
माणविदियसमयअपुव्वस्स । अवट्ठाणं सत्थाणसंजदस्स ।

चदुण्णमाउआणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अप्पप्पणो जहण्णियाए
णिव्वत्तीए उववण्णाणं जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च ।

णिरयगइणामाए जह० वड्ढी कस्स ? अण्णदरस्स अण्णदरस्से पुढवीए जहण्ण-
वड्ढीए वड्ढियस्स । हाइदस्स हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । तिरिक्खगइ-मणुमगइ-देवगइ-
पंचजादीणं च णिरयगइभंगो । ओरालियमरीरणामाए जहण्णिया वड्ढी कस्स ? सुहुमेइंदि-
यस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स दुसमयआहारयस्स दुसमयतच्चमवस्थस्स
जह० वड्ढी । जह० हाणी वा कस्स ? तस्स चैव खुदाभवग्गहणं जीविदण मदस्स
सुहुमेसुववण्णस्स पढमसमयआहारयस्स जह० हाणी । जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? जह-
ण्णियाए वड्ढीए हाणीए वा वड्ढिदण हाइदण अवट्ठियस्स सुहुमेइंदियग्ग पज्जत्तस्स ।
ओरालियमरीरबंधण-ओरालियमरीरसंघाद-हुंडमंठाण-उवघादाणं ओरालियमरीरभंगो ।

गिरते हुए उनके द्वितीय समयवर्ती वेदकके उनकी जघन्य हानि होती है । तीन वेदोंका जघन्य
अवस्थान किसके होता है ? वह अधःप्रवृत्त संयतके होता है । छह नोकषायोंकी जघन्य हानि
किसके होती है ? उनकी जघन्य हानि अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है । और
उनकी जघन्य वृद्धि श्रंणसे उतरते हुए द्वितीय समयवर्ती अपूर्वकरणके होती है । उनका जघन्य
अवस्थान स्वस्थान संयतके होता है ।

चार आयु कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? अपनी अपनी
जघन्य निर्वृत्तिसे उत्पन्न जीवोंके उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होते हैं ।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें जघन्य वृद्धिसे
वृद्धिको प्राप्त अन्यतर नारक जीवके होती है । उसीके हानिको प्राप्त होनेपर उसकी जघन्य हानि और
दोनोंमेंसे किसी एकमें जघन्य अवस्थान होता है । निर्गमगति, मनुष्यगति, देवगति और पांच जाति
नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । औदारिकशरीर नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती
है ? जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर द्वितीय समयवर्ती आहारक और द्वितीय समयवर्ती
तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके
होती है ? क्षुद्रभवग्रहण मात्र जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए उपयुक्त
जीवके ही प्रथम समयवर्ती आहारक होनेपर उसकी जघन्य हानि होती है । उसका जघन्य अव-
स्थान किसके होता है ? जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त होकर अथवा जघन्य हानि द्वारा हानिको
प्राप्त होकर अवस्थानको प्राप्त हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके उसका जघन्य अवस्थान होता है ।
औदारिकशरीरबन्धन, औदारिकशरीरसंघात, हुण्डकसंस्थान और उपघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा
औदारिकशरीरके समान है । औदारिकशरीरांगोपांग और असंप्राप्तमृपाटिकासंहननकी जघन्य

१ ताप्रणो 'अण्णदरस्स' इत्येतत्पदं नास्ति । २ अ-काप्रणोः 'हाणीए' इति पाठः ।

ओरालियमरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टमरीरसंघडणाणं^१ जह० वड्ढी कस्स ? दुसमय-वेइंदियस्स । णवरि संघडणस्स वारमवासाउदुसमयवेइंदियो^२ सामी । ओरालियमरीर-अंगोवंगस्स जहणियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो दुसमयवेइंदियो सामी । जहणिया हाणी कस्स ? जो एसु चैव खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण मदो एदासु^३ चैव ट्टिदीसु उववण्णो पटमसमयआहारओ पटमसमयतव्वभवत्थो तस्स जह० हाणी । जहणमवट्टाणं कस्स ? वेइंदियस्स बहुसमयपज्जत्तयग्ग । वेउव्वियमरीरस्स जह० वड्ढी कस्स ? बादरवाउ-जीवस्स बहुसमयउत्तरविउव्वियस्स । हाणि-अवट्टाणाणि कस्स ? तस्स चैव बादरवाउ-जीवस्स वेउव्वियमरीरेण दुसमयपज्जत्तयस्स । वेउव्वियमरीरबंधण-संघादाणं वेउव्विय-मरीरभंगो । आहारचउकस्स वेउव्वियचउकभंगो । पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं जहणिया वड्ढी^४ कस्स ? जा जस्स जहणिया अणुभागउदीरणा तत्तो से काले मव्वजहणियाए वड्ढीए वड्ढिदस्स जह० वड्ढी । तेणेव हाइदस्स जहणिया हाणी । एगदरत्थ अवट्टाणं ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहणवड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणि कस्स ? अण्णदरस्स विग्गह-गदीए वट्टमाणस्स जहणवड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणि कुणंतस्स । तेजा-कम्मइयमरीर-पसत्थ-

वृद्धि किसके होती है ? वह द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय जीवके होती है । विशेष इतना है कि उक्त संहननकी जघन्य वृद्धिका स्वामी वारह वर्ष प्रमाण आयु वाला द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय होता है । औदारिकशरीरांगोपांगकी जघन्य वृद्धिका स्वामी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय होता है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो इनमें ही क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो इन्हीं स्थितियोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थके उसकी जघन्य हानि होती है । उसका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? बहुसमयवर्ती पर्याप्त द्वीन्द्रियके उसका जघन्य अवस्थान होता है । वैक्रियिकशरीरकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह बहुत समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले बादर वायुकायिक जीवके होती है । उसकी जघन्य हानि व अवस्थान किसके होता है ? वे वैक्रियिकशरीरके द्वारा द्वितीय समयवर्ती पर्याप्त हुए उसी बादर वायुकायिक जीवके होते हैं । वैक्रियिकशरीरवन्धन और संघातकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है । आहारकचतुष्ककी प्ररूपणा वैक्रियिकचतुष्कके समान है । पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो जिसकी जघन्य अनुभागउदीरणा है उसके अनन्तर कालमें सर्वजघन्य वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत जीवके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उसीसे हानिको प्राप्त हुए जीवके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है ।

चार आनुपूर्वियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? विग्रहगतिमें वर्तमान होकर जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानको करनेवाले अन्यतरके उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होता है । तेजस व कार्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, व रस, स्निग्ध, उष्ण,

१ अ-काप्रलो 'सरीरससंघडणाणं', ताप्रतो ' [मरीग्गम्स] संघडणाणं' इति पाठः । २ अ-काप्रलो 'वेइंदियाणि', ताप्रतो 'वेइंदियाणि (वेइंदियो)' इति पाठः । ३ अप्रतो 'एदोसु', का-ताप्रयोः 'एदोसु' इति पाठः । ४ अप्रतो नोपलभ्यते पदमिदम् ।

वण्ण-गंध-रस-णिद्ध-उण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाणं जहणवड्ढि-हाणि-
अवट्टाणाणि कस्स ? उक्कस्ससंकिलिद्धस्स । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-ल्लुक्ख-अथिर-
असुहणामाणं जहणिया हाणी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । जहणिया वड्ढी
कस्स ? पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स परिवदमाणयस्स । अवट्टाणं कस्स ? दुसमयउव-
संतकसायरस । कक्खड-गरुआणं जह० हाणी कस्स ? णियत्तमाणमंथे^१ वट्टमाणयस्स ।
वड्ढि-अवट्टाणाणि कस्स ? सण्णिस्स दुसमयतव्वन्थस्स । एवं मउअ-लहुआणं । णवरि
हाणी सण्णिस्स आहारयस्स तप्पाओग्गविमुद्धस्स ।

उस्साम-पमत्थापमत्थविहायगइ-थावर - वादर-सुहुम -पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-
जमगित्ति-अजमगित्ति-मुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-उच्च-णीचागोदाणं जह०
वड्ढी हाणी अवट्टाणं वा कस्स ? अण्णदरस्स अप्पिदपयडिवेदयस्स । आदाव-उज्जोवाणं
विहायगइभंगो । तिथयरस्स जहणवड्ढि-अवट्टाणाणि कस्स ? सजोगिकेवलिस्स ।
पंचणमंतराइयाणं केवलणाणावरणभंगो ।

एत्तो अप्पावहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स मव्वत्थोवा उक्कस्मिया वड्ढी ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके
होता है ? उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि आदि उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त जीवके होती हैं । अप्र-
शस्त वर्ण, गन्ध व रस, शीत, रूक्ष, अस्थिर और अशुभ नामप्रकृतियोंकी जघन्य हानि किसके
होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह
श्रेणिसे गिरते हुए प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है । उनका जघन्य अवस्थान किसके
होता है ? द्वितीय समयवर्ती उपशान्तकपायके उनका जघन्य अवस्थान होता है । कर्कश और
गुरुकी जघन्य हानि किसके होती है ? वह निवर्तमान अवस्थामें मन्थ (प्रतर) समुद्धातमें वर्तमान
केवलीके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होती है ? द्वितीय समयवर्ती तद्-
भवस्थ संज्ञी जीवके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है । इसी प्रकारसे मृदु और लघु
स्पर्श नामकर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनकी हानि तत्प्रायोग्य विशुद्धिको
प्राप्त संज्ञी आहारकके होती है ।

उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त,
प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति मुभग, दुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय,
अनादेय, उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? विवक्षित
प्रकृतिके वेदक अन्यतर जीवके उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि आदि होती हैं । आतप और उद्योत-
की प्ररूपणा विहायोगतिके समान है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके
होता है ? वे सयोगकेवली होते हैं । पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा केवलज्ञानावरणके
समान है ।

अब यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाकी जाती है । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी

१ मप्रतिपाटोऽयम । अ-का-ताप्रतिपु 'मज्झे' इति पाठः ।

हाणि-अवट्टाणाणि दो वि तुल्लाणि विसेमाहियाणि । सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-
केवलदंमणावरण - चक्खुदंमणावरण-णिहाणिहा-पयलापयला - थीणगिद्धि-णिहा - पयला-
सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसायाणं णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुम-देवाउ-णिरयगई-
तिरिक्ख-मणुम-देवगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउच्चिय-आहारसरीर - ओरालिय - वेउच्चिय-
आहार-सरीरअंगोवंग-तिण्णबंधण-संघाद- छमंठाण-छसंघडण - चत्तारिआणुपुव्वी - उवघाद-
परघाद-आदावुज्जोव-उस्साम-पसत्थावसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-
पत्तेयं-माहारणसरीर - अथिर-असुह-अजसगित्ति- दुभग-सुस्सर - दुस्सर^१ - अणादेज्ज-णीचा-
गोदाणं उक्कस्सपदणिक्खेवप्पावहुअस्स मदिआवरणभंगो । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणा-
वरणाणं उक्क० वड्ढी थोवा । अवट्टाणं विसेमाहियं । हाणी विसेमाहिया । अचक्खुदंमणावर-
णस्स सच्चत्थोवमुक्कस्समवट्टाणं^२ । हाणी अणंतगुणा । वड्ढी अणंतगुणा । पंचणमंतरा-
इयाणं अचक्खुदंसणावरणभंगो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सहाणि-अवट्टाणाणि दो
वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । तेजा-कम्मइयमरीर-पमत्थवण्ण-गंध-रस-
णिद्धुण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-जसगित्ति-सुभग-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्कम्मिया हाणी
थोवा । अवट्टाणमणंतगुणं । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-

उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है । उसकी हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पांच जातियां, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग; तीन बन्धन और संघात, छह संस्थान, छह संहनन, चार आनुपूर्वियां, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्र्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्ति, दुर्भग, सुम्बर, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र; इनके उत्कृष्ट-पद-निक्षेपविषयक अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । अवस्थान उससे विशेष अधिक है । हानि विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनारायणका उत्कृष्ट अवस्थान सबसे स्तोक है । हानि अनन्तगुणी है । वृद्धि अनन्तगुणी है । पांच अन्तरा्योंकी प्ररूपणा अचक्षुदर्शनावरणके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उत्कृष्ट वृद्धि अनन्तगुणी है । तैजस व कर्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्च-गोत्रकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । उनका उत्कृष्ट अवस्थान अनन्तगुणा है । उत्कृष्ट वृद्धि अनन्त-गुणी है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, शीत, रूक्ष, कर्कश, गुरु, मृदु और लघु; इनके उक्त

^१ अप्रती 'दित्राउ वि णिरयगइ' इति पाठः । ^२ अ-काप्रत्योः 'पज्जत्तापत्तेय' इति पाठः । ^३ ताप्रतो 'दुस्सर-सुस्सर' इति पाठः । ^४ अप्रती '-सुवट्टाणं' इति पाठः ।

ल्हुक्ख-क्कखड-गरुअ-मउअ-लहुआणं च मदिणाणावरणभंगो । अपज्जत्तणामाए उक्क० वड्ढी थोवा । हाणि-अवट्टाणाणि दो वि तुल्लाणि विसेमाहियाणि ।

जहणपदणिकखेवे अप्पावहुअं । तं जहा— आभिणि-मुद-ओहि-मणपज्जवणाणा-वरणीय-चक्खु अचक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणं जह० वड्ढी जह० हाणी जहणमवट्टाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि, तेणेत्य अप्पावहुअं णत्थि । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं जहणिया हाणी थोवा । अवट्टाणमणंतगुणं । वड्ढी अणंतगुणा । पंचदंसणावरण-सादासादाणं जहण-वड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणि तुल्लाणि, तेणेत्य अप्पावहुअं णत्थि । मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मा-मिच्छत्त-क्कखड-मउअ-लहुआणं जहणिया हाणी थोवा । वड्ढि-अवट्टाणाणि दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि । बारसकसायाणं मिच्छत्तभंगो । चदुमंजलण-तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुल्लाणं जह० हाणी थोवा । वड्ढी अणंतगुणा । अवट्टाणमणंतगुणं । चदुण्णमाउआणं चदुण्णं गदीणं पंचणं जादीणं सादभंगो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं जह० वड्ढी थोवा । हाणी अणंतगुणा । अवट्टाणमणंतगुणं । वेउव्वियआहार-सरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जह० वड्ढी थोवा । हाणि-अवट्टाणाणि दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि । छसंठाण-छसंघडण-उवघाद-पत्तेय-साहारणसरीराणं ओरालियसरीरभंगो । पमत्थवण्ण-गंध-रस-फास-आणुपुव्वीचउक्क-अगुरुवलहुअ-उस्सास-अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । उसकी हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ।

जघन्य-पद-निक्षेपके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— आभिनिबोधिक-ज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अर्वाधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षु-दर्शनावरण और अर्वाधिदर्शनावरणकी जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं; इसीलिये उनमें अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य हानि स्तोक है । उनका जघन्य अवस्थान उससे अनन्तगुणा है । वृद्धि अनन्त-गुणी है । पांच दर्शनावरण तथा साता व असाता वेदनीयकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं; इसलिये इनमें अल्पबहुत्व नहीं है । मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, कर्कश, मृदु और लघु; इन प्रकृतियोंकी जघन्य हानि स्तोक है । वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं । बारह कपायोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । चार संज्वलन, तीन वेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी जघन्य हानि स्तोक है । वृद्धि अनन्तगुणी हैं । अवस्थान अनन्तगुणा है । चार आयु कर्मों, चार गतियों और पांच जातियोंकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगो-पांग, औदारिकबन्धन व औदारिकसंघातकी जघन्य वृद्धि स्तोक है । हानि अनन्तगुणी है । अवस्थान अनन्तगुणा है । वैक्रियिक व आहारक शरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग तथा उनके बन्धन और संघातकी जघन्य वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्त-गुणे हैं । छह संस्थान, छह संहनन, उपघात, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीरकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, चार आनुपूर्वी नामकर्म, अगुरु-

पसत्थापसत्थविहायगड-तस-थावर-वादर-सुहुम-पञ्जत्तापञ्जत्त-थिर-सुभ-सुभग-दुभग-सुस्सर-
दुस्सर - आदेज्ज-अणादेज्ज - जसकित्ति-अजसकित्ति - णिमिण-णीचुच्चागोदाणं जहण्णवड्ढि-
हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । अप्पमत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अथिर-असुहणामाणं
जहण्णिया हाणी थोवा । अवट्ठाणमणंतगुणं । वड्ढी अणंतगुणा । पंचण्णमंतराइयाणं
जह० वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि सरिसाणि । एवं पदणिकखेवो समत्तो ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा । तं जहा— मदिआवरणस्म अत्थि अणंतभागउदीरणा
असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणा संखेज्जभागवड्ढिउदीरणा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणा अमंखेज्ज-
गुणवड्ढिउदीरणा अणंतगुणवड्ढिउदीरणा अणंतभागहाणिउदीरणा अमंखेज्जभागहाणि-
उदीरणा संखेज्जभागहाणिउदीरणा संखेज्जगुणहाणिउदीरणा अमंखेज्जगुणहाणिउदीरणा
अणंतगुणहाणिउदीरणा अवट्ठिउदीरणा चेदि । एवं सव्वेमिं कम्माणं तेरम पदाणि
होति । अवत्तव्वउदीरणाए सह केसिं चिं चोदस पदाणि । एवं समुत्तिणा समत्ता ।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पावहुए
त्ति एदाणि अणियोगहागणि जहा अणुभागवड्ढिवंधे परुविदाणि तहा एत्थ
परुवेयव्वाणि । पुणो अणुभागउदीरणट्ठाणपरुवणा जीवममुदाहारो च परुवेयव्वो ।
एवमणुभागउदीरणा समत्ता ।

लघु, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, वादर, मूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त,
स्थिर, शुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण,
नीच और ऊंच गोत्र; इनकी जघन्य हानि, वृद्धि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं । अप्रशस्त वर्ण,
गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर और अशुभ नामकर्मोंकी जघन्य हानि स्तोके हैं । अवस्थान अनन्त-
गुणा है । वृद्धि अनन्तगुणी है । पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान
सदृश हैं । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

यहां वृद्धि-उदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी अनन्तभाग-
वृद्धिउदीरणा, असंख्यातभागवृद्धिउदीरणा, संख्यातभागवृद्धिउदीरणा, संख्यातगुणवृद्धिउदीरणा,
असंख्यातगुणवृद्धिउदीरणा, अनन्तगुणवृद्धिउदीरणा, अनन्तभागहानिउदीरणा, असंख्यातभाग-
हानिउदीरणा, संख्यातभागहानिउदीरणा, संख्यातगुणहानिउदीरणा, असंख्यातगुणहानिउदीरणा
अनन्तगुणहानिउदीरणा और अवस्थितउदीरणा भी होती है । इस प्रकार सब कर्मोंके ये तैरह पद
होते हैं । किन्हीं कर्मोंके अवक्तव्यउदीरणाके साथ चौदह पद भी होते हैं । इस प्रकार समुत्कीर्तना
समाप्त हुई ।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और
अरूपबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा जिस प्रकार अनुभागवृद्धिवन्धमें की गयी है उसी
प्रकारसे यहां भी प्ररूपणा करना चाहिये । तत्पश्चात् अनुभागउदीरणास्थानप्ररूपणा और जीव-
समुदाहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अनुभागउदीरणा समाप्त हुई ।

१ अत्रतो 'कस्मि पि' इति पाठः ।

एत्तो पदेसउदीरणा दुविहा मूलपयडिपदेसउदीरणा उत्तरपयडिपदेसउदीरणा चेदि । मूलपयडिपदेसउदीरणं चउवीसअणियोगहारेहि मग्गिदूण भुजगार-पदणिकखेव-वइठीसु परूविदासु मूलपयडिपदेसउदीरणा समत्ता होदि ।

उत्तरपयडिपदेसउदीरणाए सामित्तं । तं जहा—मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेसउदीरणा कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । सुदावरण-केवलणाण-केवलदंसण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-मणपज्जवणाणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो । एवमोहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पि उक्कस्सपदेसउदीरणा वत्तच्चा । णवरि विणा ओहिलंभेण, पमत्ता-पमत्तद्दासु ओहिणाणमहेज्जुकस्मविसोहीहि ओकड्डिय सुहुमीकयउदयगोवुच्छत्तादो । णिहा-पयलाणमुक्कस्सिया पदेसउदीरणा कस्स ? उवमंतवीयरागस्स । णिहाणिहा-पयला-पयला-थीणगिद्धि-सादामादाणं उक्कस्सिया उदीरणा करस्स ? पमत्तमंजदस्स से काले अप्पमत्तगुणं पडिवज्जिहिदि त्ति ड्डियस्स ।

मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं उक्क० उदीरणा कस्स ? चरिमसमयमिच्छाड्डिस्स से काले सम्मत्तं मंजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ड्डिदस्स । सम्मत्तस्स उक्क० उदीरणा कस्स ? समयाहियावलियकदकरणिज्जस्स । सम्मामिच्छत्तस्स उक्क० उदी० कस्स ? चरिम-

यहां प्रदेशउदीरणा दो प्रकारकी है— मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा और उत्तरप्रकृतिप्रदेश-उदीरणा । इनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणाको चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा खोजक भुजाकार, पदानिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर चुकनेपर मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा समाप्त हो जाती है ।

उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणामें स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— मति-ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है । श्रुतज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और मनःपर्ययज्ञानावरण सम्यन्धी उक्त उदीरणाकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । इसी प्रकार अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि उसका कथन अवधिलब्धिके विना करना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त व अप्रमत्त कालोंमें अवधिज्ञानसे सहकृत उत्कृष्ट विशुद्धियोंके द्वारा अपकर्षण करके उदय-गोपुच्छाओंको सूक्ष्म किया गया है । निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? वह उपशान्तकपाय वीतरागके होती है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, साता-वेदनीय व असातावेदनीयकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो प्रमत्तसंयत अनन्तर कालमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होगा, इस अवस्थामें स्थित है; उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है ।

मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कपायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त होगा, इस स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उनकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जिसके कृतकरणीय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी

ममयसम्मामिच्छाड्डिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि ति ड्डियस्स ।

अपच्चक्खाणचउक्कस्स उक्क० उदी० कस्स ? चरिमसमयअमंजदसम्माड्डिस्स से काले मंजमं पडिवज्जिहिदि ति ड्डियस्स । पच्चक्खाणचदुक्कस्स उक्क० उदी० कस्स ? चरिमसमयमंजदामंजदस्स से काले मंजमं पडिवज्जिहिदि ति ड्डियस्स । संजलणकोहस्स उक्कस्सपदेसउदीरणए को मामी ? खवओ चरिमसमयकोधवेदओ । माणस्स० चरिमसमयमाणवेदओ । मायाए० खवओ चरिमसमयमायावेदओ । लोभस्स० खवओ ममयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ । तिण्णं वेदानं पदेसउदीरणए उक्कस्सियाए को मामी ? खवओ अप्पणो वेदस्स ममयाहियावलियचरिमसमयवेदगो । छण्णं णोकमायवेदणीयाणमुक्कस्सउदीरणए को मामी ? खवओ मव्वविसुद्धो चरिमसमयअपुव्वकरणो ।

णिरयाउअस्स उक्कस्सपदेसउदीरणओ को होदि ? जो तेत्तीससागरोवमाउड्ढिदीओ णेरइओ उक्कस्सए अमादोदए वट्टमाणओ । मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सपदेसउदीरणओ

उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है । सम्यग्मध्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त होगा, ऐसी स्थिति युक्त अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मध्याहृष्टिके उसकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है ।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्हृष्टिके उक्त उदीरणा होती है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके उक्त उदीरणा होती है । संज्वलनक्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी अन्तिम समयवर्ती क्रोधका वेदक क्षपक होता है । संज्वलनमानकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी अन्तिम समयवर्ती मानका वेदक क्षपक होता है । संज्वलनमायाकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी अन्तिम समयवर्ती मायाका वेदक क्षपक होता है । संज्वलनलोभकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी ऐसा क्षपक जीव होता है जिसके अन्तिम समयवर्ती सकपाय रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है । तीन वेदोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी ऐसा क्षपक जीव होता है जिसके अपने अपने वेदके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है । छह नोकषाय वेदनीयोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपक होता है ।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? तेत्तीस सागरोपम प्रमाण आयुस्थितिवाला जो नारकी जीव उत्कृष्ट असातोदयमें वतमान है वह उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है । मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? आठ वर्ष प्रमाण आयुवाला

को होदि ? जो अवट्टवस्सिओ अवट्टवस्सओ^१ जादो उक्कस्सए असादोदए^२ वट्टमाणओ । देवाउअस्स उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? जो दसवस्ससहस्साउओ उक्कस्सए^३ असादोदए वट्टमाणो ।

गिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसस्स उदीरगो को होदि ? णेरइओ सम्माइट्टी सच्च-विसुद्धो । तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? संजदासंजदो सच्च-विसुद्धो । देवगइणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? देवसम्माइट्टी सच्चविरुद्धो । मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण-पठमसंघडण-त्रण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-पसत्थापसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्ज-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज-जसगित्ति-तित्थ-यर-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? चरिमसमयसजोगिकेवली । वेउव्विय-आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ^४ को होदि ? संजदो सच्चविरुद्धो ।

पंचणं संघडणाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि । मंजदो तप्पाओग्गविसुद्धो । चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? तप्पाओग्गविसुद्धो मम्माइट्टी ।

जो जीव आठ वर्षका होकर उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह उनका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है । देवायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवाला जो देव उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह देवायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है ।

नरकगति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध नारक सम्यग्दृष्टि होता है । तिर्यग्गति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध संयतासंयत [तिर्यच] होता है । देवगति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध देव सम्यग्दृष्टि होता है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, आंदारिक, तैजस व कामेण शरीर तथा तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात, लह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पर-घात, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थकर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक चरम समयवर्ती संयोगकेवली होता है । वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके योग्य आंगोपांग, बन्धन व संघातके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक सर्वविशुद्ध संयत जीव होता है ।

पांच संहननोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संयत होता है । चार आनुपूर्वियोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य

१ प्रतिषु 'अट्टवस्स' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'असादोदएण', ताप्रतो 'असादोएण [ण]' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्स' इति पाठः । ४ अप्रतो 'उदीरणा' इति पाठः ।

आदावणामाए उक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ? पुढवीजीवो सव्वविसुद्धो । उज्जोव-
णामाए उक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ? वेउव्वियउत्तरसरीरो संजदो सव्वविसुद्धो ।
उस्सामणामाए^१ उक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ? चरिममयउस्सामणिरोहकारओ^२
सजोगी । अजमगित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ?
सव्वविसुद्धो असंजदसम्मइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति । बेइंदिय-तीइंदिय-
चउरिंदियजादिणामाणमुक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ? जहाकमेण बेइंदिय-तीइंदिय-
चउरिंदियमव्वविसुद्धो । एइंदिय-थावर-माहारणमरीराणमुक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ?
वादरेइदियसव्वविसुद्धो । सुहुमणामाए उक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ? सुहुमेइंदिय-
सव्वविसुद्धो^३ । अपज्जत्तणामाए उक्कस्सपदेमउदीरओ को होदि ? मणुम्मो उक्कस्सियाए
अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववणो चरिममयतव्ववत्थो सव्वविसुद्धो ।

पंचणमंतराइयाणमुक्कस्सपदेस० को होदि ? समयाहियावलियचरिममयउदु-
मत्थो । सुस्सर-दुस्सरणामाणं उक्कस्सपदेस० को होदि ? वचिजोगस्स चरिममयणिरोह-

विशुद्धिको प्राप्त सम्यग्दृष्टि होता है । आतप नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध प्रथिवीकायिक जीव होता है । उद्योत नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसने उत्तर शरीरकी विक्रिया की है ऐसा सर्वविशुद्ध संयत जीव उद्योतके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है । उच्छवास नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उच्छवासनिरोधके अन्तिम समयमें वर्तमान सयोगकेवली उसके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक होता है । अयशकीर्ति, दुभग, अनादेय और नीचगोत्रके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध असंयत सम्यग्दृष्टि होता है जो कि अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक यथाक्रमसे सर्वविशुद्ध द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव होते हैं । एकेन्द्रिय, स्थावर और साधारणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध वादर एकेन्द्रिय जीव होता है । सूक्ष्म नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होता है । अपर्याप्त नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर तदुभवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें वर्तमान है ऐसा सर्वविशुद्ध मनुष्य अपर्याप्तके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है ।

पांच अन्तराय कर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसके चरम समयवर्ती लक्ष्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आबली मात्र शेष रही है ऐसा जीव उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है । सुस्वर व दुस्वर नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वचन-योगनिरोधके अन्तिम समयमें वर्तमान सयोगकेवली उन दो प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक

१ अ-काप्रत्यो: 'उक्कस्सासमाणाए' इति पाठः । २ अ-काप्रत्यो: 'णिरोहोकारओ' इति पाठः । ३ ताप्रती 'इंदियो सव्वविसुद्धो' इति पाठः ।

कारओ सजोगिकेवली । एवमुकस्सं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्णयं सामित्तं । तं जहा—मदि-सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं जहण्णपदेसउदीरओ^१ को होदि ? उक्कस्समंक्किलिद्धो । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णपदेसउदीरओ^२ को होदि ? पंचिदियो उक्कस्स-संक्किलिद्धो जरस्स ओहिलंभो अत्थि सो जहण्णपदेसउदीरओ । दंसणावरणपंचयस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? सण्णिपंचिदियो पज्जत्तो तप्पाओग्गमंक्किलिद्धो ।

मादासाद-मिच्छत्त-मोलसक्रमाय-णवणोकसायाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? उक्कस्ससंक्किलिद्धो । सम्मत्तस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? वेदगसम्माइट्ठी असंजदो से काले मिच्छत्तं पडिवज्जंतओ । मम्मामिच्छत्तस्स जहण्णपदेस० को होदि ? मम्मा-मिच्छाइट्ठी से काले मिच्छत्तं पडिवज्जंतओ । णिरयाउअस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? दमवस्समहस्साउओ उक्कस्सए मादोदए वट्टमाणओ णेरइयो । तिरिक्ख-मणुस्साउआणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? जहाकमेण मणुस्स-तिरिक्खो^३ तिपलिदो-

होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरण, श्रुत-ज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव होता है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसके अवधिलब्धि है ऐसा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव उन दो प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव होता है ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय और नौ नोकपायोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव इनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीव सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होता है ।

नारकायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक दस हजार वर्षकी आयु-वाला व उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान नारक जीव होता है । तिर्यगायु व मनुष्यायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? तीन पन्थोपम प्रमाण आयुस्थितिवाले एवं उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान

१ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः । २ अप्रती 'उदीरणा' इति पाठः । ३ ताप्रती 'मणुस्स (सो) तिरिक्ख (खो)' इति पाठः ।

वमाउट्टिदीया उक्कस्सए^१ सादोदए वट्टमाणो^२ । देवाउअस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? देवो तेत्तीससागरोवमाउओ उक्कस्सए सादोदए वट्टमाणओ ।

चत्तारिगदि-पंचजादि-चत्तारिसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघाद-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उज्जोव^३-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग - सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-गित्ति-अजसगित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? सण्णिपंचिदिओ पज्जत्तओ उक्कस्समंक्किलिट्ठओ । णवरि गदि-जादीणं अप्पप्पणो जादि-वेदओ सच्चमंक्किलिट्ठो । छमंट्ठाण-छसंघडणाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? अप्पिद-अप्पिदमंटाणं-मंघडणाणं वेदओ उक्कस्समंक्किलिट्ठो ।

आहारसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? पमत्तसंजदो उट्ठाविदआहारसरीरो तप्पाओग्गमंक्किलिट्ठो । चटुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्ण-पदेसउदीरओ को होदि ? तप्पाओग्गमंक्किलिट्ठो विग्गहगदीए वट्टमाणओ । आदाव-णामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? पुढवीजीवो पज्जत्तो सच्चमंक्किलिट्ठो । थावर-मनुष्य व तिर्यंच यथाक्रमसे उन दो आयुक्रमोंके जघन्य प्रदेशके उदीरक होते हैं । देवायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला व उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान ऐसा देव होता है ।

चार गतिनामकर्म, पांच जातिनामकर्म, चार शरीर और तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन एवं संघात नामकर्म, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्र्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच गोत्र, ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय; इनके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव उक्त प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । विशेषता इतनी है कि गति व जाति नामकर्मोंमें अपनी अपनी जातिका वेदक सर्वसंक्लिष्ट जीव उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । छह संस्थानों और छह संहननोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? विवक्षित विवक्षित संस्थान व संहननका वेदक प्राणी उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता हुआ उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है ।

आहारकशरीर और तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघातके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाला तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ प्रमत्तसंयत जीव होता है । चार आनुपूर्वी नामकर्मोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ विग्रहगतिमें वर्तमान जीव होता है । आतप नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? सर्वसंक्लिष्ट पृथिवीकायिक पर्याप्त

१ अ-काप्रत्योः 'ट्टिदीयादिउक्कस्सए, ताप्रती 'ट्टिदीयादि (यो) उक्कस्सए' इति पाठः । २ ताप्रती 'वट्टमाणओ' इति पाठः । ३ ताप्रती 'उवघाद-उज्जोव' इति पाठः । ४ ताप्रती 'अप्पिदअणप्पिदसंटाण-इति पाठः ।

साधारणणामाणं जहणपदेसउदीरओ को होदि ? बादरइंदिओ सव्वसंकिलिट्ठो । सुहुमणामाए जहणपदेसउदीरओ को होदि ? सुहुमेइंदिओ मव्वसंकिलिट्ठो । अपज्जत्तणामाए जहणपदेसउदीरओ को होदि ? मणुस्सो उक्कस्मियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववणो चरिमसमयतव्वत्थो उक्कस्ससंकिलिट्ठो । तित्थयरस्स जहणपदेसउदीरओ को होदि ? पढमसमयकेवलमादिं कादूण जाव आवज्जिदकरणस्स अकारओ' त्ति । एवं जहणसामित्तं समत्तं । एगजीवेण कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहणपदभंगविचओ चेदि । एदेसिं दोण्णं पि भंगविचयाण अट्टपदं मामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं । णाणा-जीवेहि कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं ।

एत्तो सण्णियासो दुविहो सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि । तत्थ सत्थाणसण्णियासो । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेसमुदीरेत्तो सुद-मणपज्जव-केवलाणावरणाणं णियमा उक्कस्सपदेसमुदीरेदि' । ओहिणाणावरणस्स सिया उक्कस्सं सिया अणुकस्सं उदीरेदि । जदि अणुकस्सं णियमा असंखेज्जगुणहीणं । एवं सेस-

जीव आतपके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । स्थावर और साधारण नामकर्मोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वसंकलेशको प्राप्त हुआ बादर एकेन्द्रिय जीव होता है । सूक्ष्म नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वसंकलेशको प्राप्त हुआ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होता है । अपर्याप्त नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निवृत्तिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें वर्तमान है ऐसा उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त हुआ मनुष्य अपर्याप्तके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । तीर्थंकर प्रकृतिके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? प्रथम समयवर्ती केवलीको आदि करके जब तक वह आवर्जित करणको नहीं करता है तब तक तीर्थंकर प्रकृतिके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ । एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय । इन दोनों ही भंगविचयोंके अर्थपदका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका भी कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ।

यहां संनिकर्ष दो प्रकार है—स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष । इनमें स्वस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करनेवाला नियमसे श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है । वह अवधिज्ञानावरणके कदाचित् उत्कृष्ट और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है । यदि वह उसके अनुत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है तो नियमसे असंख्यातगुणे हीनकी करता है । इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतिर्योंकी विवक्षामें भी संनिकर्षका कथना

चदृष्णमावरणां वि वत्तञ्चं ।

मिच्छत्तस्म उक्स्मपदेममुदीरेतो अणंताणुबंधिकोधस्म मिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्स्ममणुकस्मं वा उदीरेदि । जदि अणुकस्मं असंखेज-
भागहीणं संखे० भागहीणं संखे० गुणहीणं असंखे० गुणहीणं वा उदीरेदि । एवमुक्स्म-
मणियासो जाणिदूण णेदञ्चो ।

जहणपदमणियासं वत्तइस्सामो । तं जहा—मदिआवरणस्स जहणपदंसउदीरओ^१
सुदआवरणस्स जहणमजहणं वा उदीरेदि । जदि अजहणं तो चउट्टाणपदिदमुदीरेदि ।
एद्रेण वीजपदेण जहणपदमणियासो वत्तञ्चो । एवं परत्थाणमणियासो वि
जहणुकस्मपदभेयभिणो णेयञ्चो । एवं मणियासो ममत्तो । एत्थेव अप्पावहुअं
जाणिदूण भाणियञ्चं ।

पदेमभुजगारउदीरणाए अट्टपदं— अणंतरहेट्टिमममए उदीरिदपदेसग्गादो
एहिंसुदीरिज्जमाणपदेसग्गं जदि बहुअं होदि तो एमा भुजगारउदीरणा । अणतरादिक्कंते
ममए उदीरिदपदेसग्गादो जमेणिसुदीरिज्जमाणपदेसग्गं जइ थोवं होदि तो एमा
अप्पदरउदीरणा । जदि दोसु वि ममएसु तत्तियं चैव उदीरेदि तो एमा अवट्टिद-

करना चाहिये ।

मिश्रयात्वके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करनेवाला अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक
और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि वह उदीरक होता है तो उत्कृष्ट अथवा अनुत्कृष्ट प्रदेशका
उदीरक होता है । यदि वह अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है तो असंख्यातभागहीन, संख्यात-
भागहीन संख्यातगुणहीन अथवा असंख्यातगुणहीनकी उदीरणा करता है । इस प्रकार उत्कृष्ट
संनिकर्षको जानकर ले जाना चाहिये ।

जघन्य-पद-संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणके जघन्य
प्रदेशका उदीरक श्रुतज्ञानावरणके जघन्य अथवा अजघन्य प्रदेशकी उदीरणा करता है । यदि वह
अजघन्य प्रदेशकी उदीरणा करता है तो वह चतुःस्थानपतित (असंख्यातभागहीन, संख्यात-
भागहीन, संख्यातगुणहीन व असंख्यातगुणहीन) की उदीरणा करता है । इस वीजपदसे जघन्य-
पद-संनिकर्षका कथन चाहिये । इसी प्रकारसे जघन्य व उत्कृष्ट पदभेदोंमें विभक्त परस्थान संनि-
कर्षको भी ले जाना चाहिये । इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ । यहींपर अल्पबहुत्वकी भी जान-
कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

प्रदेश-भुजाकार-उदीरणामें अर्थपद— अनन्तर अधस्तन समयमें उदीरित प्रदेशाग्रसे इस
समय उदीयमाण प्रदेशाग्र यदि बहुत होता है तो यह भुजाकार उदीरणा कही जाती है । अनन्तर
अतीत समयमें उदीरित प्रदेशाग्रसे यदि इस समय उदीयमाण प्रदेशाग्र स्तोक होता है तो यह
अल्पतर उदीरणा कहलाती है । यदि दोनों ही समयोंमें उतने मात्र ही प्रदेशाग्रकी उदीरणा की

१ ताप्रतौ 'असंखे० भागहीणं संखे० गुणहीणं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'पदेसमुदीरओ' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'उदीरेदि' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'एणिण-' इति पाठः ।

उदीरणा । अणुदीरओ होदूण जदि उदीरगो होदि तो एमा अवत्तव्वउदीरणा ।

मामित्तं— मदिआवरणस्म भुजगारउदीरओ अप्पदरउदीरओ अवट्टिदउदीरओ वा को होदि ? अण्णदगे । एवं सव्वेसिं कम्माणं । णवरि अवत्तव्वउदीरओ केमिंचि कम्माणं भाणियव्वो । एवं मामित्तं ममत्तं ।

एयजीवेण कालो जहा अणुभागउदीरणाए तहा वत्तव्वो । णवरि भवपच्चइएँ जहा चेव परिणामपच्चइएस्सु तहा कायव्वो । तं जहा— मणुसगदिणामाए पदेसउदीरणाए अवट्टिदउदीरओ पुव्वकोडिं देसुणं । भवपच्चइयाणमवट्टिदउदीरयकालं मोत्तण सेमाणं कम्माणमेयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं चँ जहाँ अणुभाग-उदीरणाए तहा पदेसउदीरणाएँ वि भुजगारो कायव्वो ।

अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्टिदउदीरया थोवा । भुजगार-उदीरया असंखे० गुणा । अप्पदरउदीरया विसेसाहिया । सेसच्चदुण्णं णाणावरणीयाणं चदुण्णं दंसणावरणीयाणं च मदिआवरणभंगो । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं एवं चेव । णवरि अवट्टिदउदीरया थोवा । अवत्तव्वउदी० असंखे० गुणा । सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा जाती है तो यह अवस्थित उदीरणा होती है । अनुदीरक हो करके यदि उदीरक होता है तो यह अवक्तव्य उदीरणा कहलाती है ।

स्वामित्व— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है ? अन्यतर जीव उक्त प्रकारका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे सब कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि अवक्तव्य उदीरक किन्हीं विशेष कर्मोंका कहना चाहिये । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां भी करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि वहां जिस प्रकार भवप्रत्ययिक प्रकृतियोंका काल कहा है उसी प्रकार यहां परिणामप्रत्ययिक प्रकृतियोंका कहना चाहिए । यथा— मनुष्यगति नामकर्मकी प्रदेशउदीरणाके अवस्थितपदका काल कुछ कम एक पूर्वकोटि है । भवप्रत्ययिक प्रकृतियोंके अवस्थित पदके उदीरककालको छोड़कर शेष कर्मोंका एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तर; इनका कथन जिस प्रकार अनुभागउदीरणामें किया है उसी प्रकार यहां प्रदेशउदीरणामें भी भुजाकार पदका आश्रय लेकर करना चाहिए ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं । शेष चार ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वको प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि इनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक उनसे असंख्यात-

१ का-ताप्रत्योः 'तहा कायव्वो' इति पाठः । २ अप्रतौ 'भवपच्चएस्सु' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'उदीरयाकालं', ताप्रतौ 'उदीरया (य) कालं' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'कालो च अंतर' इति पाठः । ५ प्रतिपु 'उदीरणाए तप्पदेसउदीरणाए' इति पाठः ।

अवद्विदउदी० । अवत्तव्वउ० असंखे० गुणा । अप्पदरउ० असंखे० गुणा । भुजगार०
 विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स अवद्विदउदीरया थोवा । अवत्तव्वउ० असंखे० गुणा ।
 भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला असंखे० गुणा । अणुभागउदीरणाएँ वि सम्मामिच्छत्तस्स
 भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला कायव्वा । केण कारणेण भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं
 तुल्लत्तं उच्चदे ? जत्तिया मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति तत्तिया चेव सम्मा-
 मिच्छत्तादो मिच्छत्तं गच्छंति । जत्तिया सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति तत्तिया
 चेव सम्मामिच्छत्तादो सम्मत्तं गच्छंति^१ । एदेण कारणेण भुजगारउदीरएँहितो अप्पदर-
 उदीरयाणं तुल्लत्तं । पुव्वमणुभागउदीरणाएँ अप्पदरुदीरएँहितो भुजगारुदीरया विसेसाहिया
 त्ति जं भणिदं तेणेदस्स कधं ण विरोहो ? मच्चं विरोहो चेव, किंतु दोण्णमुवदेसाणं
 थप्पत्तपरूवणदुं तदुभयणिद्वेसो ण विरुज्झदे । सादासाद-सोलसकसाय-अट्टणोकसाय-
 णिरय-देव-मणुसगइ-वीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - ओरालिय वेउव्वि-
 यसरीर-ओरालिय - वेउव्वियसरीरंगोवंग-बंधण-संघाद - छसंठाण-छसंघडण - उवघाद - पर-
 घाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-चादर-सुहुम- पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय-

गुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थित उदीरक सबमें स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
 अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं । सम्यग्मिध्यात्वके
 अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार व अल्पतर उदीरक
 दोनों तुल्य व असंख्यातगुणे हैं । अनुभागउदीरणामें भी सम्यग्मिध्यात्वके भुजाकार उदीरकों व
 अल्पतर उदीरकोंको तुल्य करना चाहिये ।

शंका—भुजाकार व अल्पतर उदीरकोंकी समानता किस कारणसे कही जाती है ?

समाधान—जितने जीव मिध्यात्वसे सम्यग्मिध्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही जीव
 सम्यग्मिध्यात्वसे मिध्यात्वको प्राप्त होते हैं । जितने जीव सम्यक्त्वसे सम्यग्मिध्यात्वको प्राप्त
 होते हैं उतने ही सम्यग्मिध्यात्वसे सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं । इस कारण भुजाकार उदीरकोंसे
 अल्पतर उदीरकोंकी समानता कही गयी है ।

शंका—पहिले अनुभागउदीरणामें “भुजाकार उदीरक अल्पतर उदीरकोंसे विशेष अधिक
 हैं” ऐसा जो कहा गया है, उससे इसका विरोध कैसे न होगा ?

समाधान—सचमुच ही उससे इसका विरोध होता है, किन्तु दोनों उपदेशोंको स्थापित
 करनेकी प्ररूपणा करनेके लिये उन दोनोंका निर्देश करना विरुद्ध नहीं है ।

साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकपाय, नरकगति, देवगति, मनुष्यगति,
 द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक व वैक्रियिक शरीर तथा उनके
 आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, उपघात, परघात, आतप, उद्योत,
 उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक,

१ प्रतिपु ‘उदीरयाएँ’ इति पाठः । २ प्रतिपु ‘तुल्लं’ इति पाठः । ३ ताप्रती ‘जत्तिया सम्मामिच्छत्तादो
 सम्मत्तं गच्छंति तत्तिया सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति’ इति पाठः ।

साधारण-सुभग-सुस्वर-दुस्वर-अजसगिति-उच्चागोदानं अवद्विदउदीरया थोवा । अव-
त्तव्वउदी० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदरउ० विसेसा० ।
मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खगइ - एइंदियजादि - थावर - दूभग - अणादेज्ज - णीचागोदानं
अवत्तव्व० थोवा । अवद्विद० अणंतगुणा । भुज० असंखे० गुणा । अप्पदर० विसेसा० ।

जहा मदिआवरणस्स तहा ध्रुवउदीरयाणं पंचणमंतराइयाणं च वत्तव्वं ।
चदुण्णमाउआणं अवद्विय० थोवा० । अवत्त० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे०
गुणा । भुजगार० विसेसा० । केण कारणेण आउआणं भुजगारउदीरया बहुआ ? जे
असादअपज्जत्ता ते असादोदएण बहुअयरा वइदंति^१ । जे सादा अपज्जत्तया ते बहुयरा
सादोदएण परिहायंति, थोवयरा वइदंति^२ । एदेण कारणेण आउआणं अप्पदर० थोवा,
भुजगार० बहुआ । चउण्णमाणुपुव्वीणं अवद्विय० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा ।
अवत्तव्व० विसेसा० । अप्पदर० विसेसा० । आदेज्ज-जसगित्तीणं उच्चागोदभंगो ।

साधारण, सुभग, सुस्वर दुस्वर, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र; इनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं ।
अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरउदीरक
विशेष अधिक हैं । मि०यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, दुर्भग, अनादेय,
और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक स्तोक हैं । अवस्थित उदीरक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार उदीरक
असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं ।

जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही ध्रुव उदीरणावाली
प्रकृतियोंके एवं पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । चार आयु
कर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उदीरक
असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं ।

शंका—आयु कर्मोंके भुजाकार उदीरक बहुत किस कारणसे हैं ?

समाधान—जो जीव असातारूप संक्लेश परिणामसे सहित होते हुए पर्याप्तियोंसे अपरि-
पूर्ण होते हैं उनमें अधिकतर जीव दुःखानुभवनरूप असाताके उदयसे संयुक्त होकर बढ़ते हैं,
अर्थात् आयुके भुजाकारको करते हैं । तथा जो जीव सातारूप मध्यम विशुद्धि परिणामोंसे
परिणत होते हुए अपर्याप्त होते हैं उनमें अधिकतर सुखानुभवनरूप साताके उदयसे संयुक्त होकर
हीन होते हैं, अर्थात् आयुके अल्पतरको करते हैं; कुछ थोड़ेसे जीव संक्लेश परिणामोंसे
परिणत होते हुए अपर्याप्त होकर बढ़ते हैं, अर्थात् भुजाकारको करते हैं । इस कारणसे आयु
कर्मोंके अल्पतर उदीरक स्तोक व भुजाकार उदीरक बहुत होते हैं ।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक होते हैं । भुजाकार उदीरक असंख्यात-
गुणे होते हैं । अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक होते हैं । अल्पतर उदीरक विशेष अधिक होते
हैं । आदेय और यशकीर्ति नामकर्मोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा उच्चगोत्रके समान है । तीर्थकर

१ अप्रती 'बहुअयरा भवंति', काप्रती 'बहुअयरा हवंति', ताप्रती 'बहु [अ | यग हवंति' इति पाठः ।

२ प्रतिपु 'वद्वंति' इति पाठः ।

तित्थयर० अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्ठिद० असंखे०(?) गुणा ।
एवं भुजगारउदीरणा समत्ता ।

एत्तो पदणिकखेवो । तत्थ सामित्तं— मदिआवरणीयस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछद्दुमत्थस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? पढम-समयदेवस्स वीयरायपच्छायदस्स । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? विदियसमयदेवस्स वीयरायपच्छायदस्स । सुद-मणपञ्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिआवरणभंगो । ओहिणाणावरण-ओहिदंमणावरणाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछद्दुमत्थस्स जस्स ताधे चेव ओहिलंभो णट्ठो । हाणि-अवट्ठाणाणं मदिआवरणभंगो । अधवा, ओहिणाण-ओहिदमणावरणाणं वड्ढीए वि मदि-णाणावरणभंगो होदि त्ति केमिं पि आइरियाणमुवणसो ।

णिदा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो अधापमत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्ण-विसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारंक्खएण उक्कस्समंकिलेमं गदो तस्स उक्कस्सिया

प्रकृतिके अवक्तव्य उदीरक स्तोक होते हैं । भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं । अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं । इस प्रकार भुजाकार उदीरणा समाप्त हुई ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणा करते हैं । उसमें स्वामित्व इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके चरम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? वीतराग (उपशान्तमोह) से पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वीतरागसे पीछे आये हुए द्वितीय समयवर्ती देवके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है तथा उसी समय ही जिसकी अवधिलब्धि नष्ट हुई है उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । इनकी उत्कृष्ट हानि एवं अवस्थानकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अथवा, अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिका कथन भी मतिज्ञानावरणके ही समान है, ऐसा कितने ही आचार्योंका उपदेश है ।

निद्रा और प्रचला दर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अधःप्रवृत्तसंयत तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयपूर्वक उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । जब वह

हाणी । हाइदूण अवट्टाणं गयस्स उक्कस्समवट्टाणं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-धीणगिद्धीणं उक्कस्सिया वइठी कस्स ? जो पमत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्ग-उक्कस्सविसोहिं^१ गदो तस्स उक्कस्सिया वइठी । उक्क० हाणी कस्स ? जो उक्कस्मविसोहीदो सागारं^२कखएण उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्म उक्कस्सिया हाणी । से काले अवट्टाणं गयस्म उक्कस्समवट्टाणं^३ ।

सादस्स उक्क० वइठी कस्स ? जो संजदो चरिमसमयपमत्तो मच्चविसुद्धो तस्म उक्क० वइठी । उक्क० हाणी कस्स ? मो चैव चरिमसमयपमत्तो मच्चविसुद्धो मदो देवो जादो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्टाणं । अमादस्म उक्क० वइठी कस्स ? जो संजदो^४ चरिमसमयपमत्तो मच्चविसुद्धो तस्म उक्क० वइठी । हाणी अवट्टाणं च तस्सेव उक्कस्सविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्ससंकिलेसं गयस्स ।

मिच्छत्तस्स उक्क० वइठी कस्स ? जो मिच्छाइद्धी से काले मंजमं पडिवज्जदि त्ति ट्ठिदो तस्स उक्क० वइठी । हाणी अवट्टाणं च कस्स ? जो मिच्छाइद्धी तप्पाओग्गविसुद्धो

हीन होकर अवस्थानको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो प्रमत्तसंयत तप्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयके साथ उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अनन्तर कालमें अवस्थानको प्राप्त होनेपर उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयत जीव सर्व-विशुद्धिको प्राप्त है उसके सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? वही अन्तिम समयवर्ती प्रमत्त सर्वविशुद्ध संयत जीव मरणको प्राप्त होकर जब देव हो जाता है तब उसके उक्त सातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती प्रमत्त संयत सर्वविशुद्धिको प्राप्त है उसके असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त होनेपर उसीके उसकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान भी होता है ।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितिमें वर्तमान है उसके मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त जो मिथ्यादृष्टि साकार उपयोगके

१ अप्रती 'उक्कस्स हिं' इति पाठः । २ अप्रती 'सागर' इति पाठः । ३ अप्रती 'स काले अवट्टाणं मदो देवो जादो तस्स उक्क० हाणी तस्सेव से काले उक्कस्समवट्टाणं' इति पाठः । ४ अप्रती 'मंजदा०', ताप्रती 'मंजदा० (दो)' इति पाठः ।

सागारक्खएण तप्पाओग्गुक्खस्ससंक्किलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च । सम्मत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स । हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स । जो अधापमत्तसम्माइट्ठी सच्चविशुद्धो सागारक्खएण तप्पा-ओग्गसंक्किलेसं गदो तस्स उक्क० हाणि-अवट्ठाणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । सम्मामिच्छत्त० उक्क० हाणी अवट्ठाणं च कस्स ? जो सम्मामिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो परिणामक्खएण तप्पाओग्गजहण्णविसोहीए पदिदो तस्स उक्क० हाणी अवट्ठाणं च ।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । अपच्चक्खाणकसायाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? जो असंजदसम्माइट्ठी से काले संजमं गाहदि^१ त्ति ट्ठिदो तस्स उक्क० वड्ढी । हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसम्माइट्ठिस्स सच्चविसुद्धस्स सागारक्खएण से काले तप्पाओग्गजहण्णविसोहिं गयस्स । पच्चक्खाणकसायाणं अपच्चक्खाणकसायभंगो । णवरि संसदामंजदेसु परूवणा कायव्वा । संजलणाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? कोह-माण-मायाणं खवगस्स चरिमसमयवेदयस्स तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । लोभस्स उक्क०

क्षयसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके चरम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि सर्वविशुद्ध होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है । सम्यग्मिध्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितिमें स्थित है उस सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । सम्यग्मिध्यात्वकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान किसके होता है ? जो सम्यग्मिध्यादृष्टि जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर परिणामक्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिमें आ पड़ा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान होता है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्कके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मिध्यात्वके समान है । अप्रत्याख्यानावरण कपायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो असंयत सम्यग्दृष्टि अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त करेगा, ऐसी अवस्थामे स्थित है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि साकार उपयोगके क्षयसे अनन्तर कालमें तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है । प्रत्याख्यानावरण कपायोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा अप्रत्याख्यानावरण कपायोंके समान है । विशेष इतना है कि उसकी प्ररूपणा संयतासंयत जीवोंमें करना चाहिये । संज्वलन कपायों (क्रोध, मान व माया) की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो क्रोध, मान व मायाका क्षपक अन्तिम समयवर्ती तद्देदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । संज्वलन लोभकी

१. अपत्तो 'गहिदि' इति पाठः ।

वड्ठी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयसकसायखवगस्स । एदेसि हाणी कस्स ? जो उवसामगो अप्पिदकसायस्स उकस्सउदयट्ठाणं पत्तो संतो मदी देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उकस्समवट्ठाणं ।

छण्णोक्कसायाणमुक्कस्सिया वड्ठी कस्स ? चरिमसमयअपुव्वखवगस्स । हाणी कस्स ? तस्सेव उवसामयस्स कालं कादूण देवेसु उववण्णस्स । तस्सेव से काले उकस्समवट्ठाणं । णवरि अरदि-सोगाणं पडिवदमाणयस्स दुसमयवेदगस्स उकस्सिया हाणी । उकस्समवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स कदउकस्सावट्ठाणस्स । पुरिमवेदस्स संजलणभंगो । इत्थि-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सिया वड्ठी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयवेदगस्स खवगस्स । उक्क० हाणी कस्स ? उवममसेडीदो पडिवदमाणस्स दुसमयवेदयस्स । अवट्ठाणं कस्स ? सत्थाणसंजदस्स सागारक्खण्ण उकस्समवट्ठाणं गदस्स ।

णिरयाउअस्स उक्क० वड्ठी कस्स ? णिरयगईए जस्स णेरइयस्स असादोदयस्स अणुभागउदीरणाए उकस्सिया वड्ठी तस्से णिरयाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० वड्ठी । उक्क० हाणी कस्स ? णिरयगईए णेरइयस्स असादोदयस्स अणुभागउदीरणाए उक्क०

उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस क्षपकके अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । इन चारोंकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उपशामक जीव विवक्षित कषायके उत्कृष्ट उदयस्थानको प्राप्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है उसके देव होनेके प्रथम समयमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

छह नोकपायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उसी अपूर्वकरण उपशामकके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । विशेषता इतनी है कि अरति और शोककी उत्कृष्ट हानि श्रेणिसे गिरनेवाले द्वितीय समयवर्ती तद्देदकके होती है । उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह उत्कृष्ट अवस्थानको प्राप्त अधःप्रवृत्तसंयतके होता है । पुरुषवेदकी प्ररूपणा संज्वलन कषायके समान है । स्त्री व नपुंसक वेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस क्षपकके उनके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उन दो वेदोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उपशामश्रेणिसे गिरनेवाले द्वितीय समयवर्ती तद्देदकके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उनका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह साकार उपयोगके क्षयसे उत्कृष्ट अवस्थानको प्राप्त हुए स्वस्थान संयतके होता है ।

नारकायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? नरगतिमें जिस नारकीके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होनी है उसके नारकायुकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? नरकगतिमें जिस नारकीके असातोदयकी अनुभाग-

हाणी^१ तस्स णिरयाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? णेरइयस्स उक्कस्सियं हाणिं कादूण अवट्ठियस्स । तिरिक्खाउअस्स उक्क० पदेसवड्ढी कस्स ? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागुदीरणाए असातोदयवड्ढी उक्कस्सिया तस्स तिरिक्खस्स तिरिक्खाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागउदीरणाए असातोदयहाणी उक्क० तस्स उक्क० पदेमहाणी । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागउदीरणाए असातोदयस्स उक्कस्समवट्ठाणं तस्स तिरिक्खाउअस्स पदेमउदीरणाए उक्कस्समवट्ठाणं । मणुमाउअस्स तिरिक्खाउअभंगो । णवरि मणुस्सेसु वत्तव्वं । देवाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जस्स देवस्स अणुभागदीरणाए असातोदयवड्ढी उक्क० तस्स पदेसउदीरणाए देवाउअस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जस्स देवस्स अणुभागउदीरणाए असातोदयहाणी उक्कस्सिया तस्स पदेसउदीरणाए देवाउअस्स उक्क० हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जस्स देवस्स अणुभागुदीरणाए असातोदयस्स उक्कस्समवट्ठाणं तस्स देवाउअपदेमउदीरणाए उक्कस्समवट्ठाणं ।

उदीरणामें उत्कृष्ट हानि होती है उसके नारकायुकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह उत्कृष्ट हानिको करके अवस्थानको प्राप्त हुए नारक जीवके होता है । तिर्यचआयुकी उत्कृष्ट प्रदेशवृद्धि किसके होती है ? जिस तिर्यचके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उस तिर्यचके तिर्यचआयु सम्बन्धी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जिस तिर्यचके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट हानि होती है उसके तिर्यच आयुकी उत्कृष्ट प्रदेशहानि होती है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जिस तिर्यचके अनुभागउदीरणामें असातोदयका उत्कृष्ट अवस्थान होता है उसके तिर्यचआयुकी प्रदेशउदीरणाका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । मनुष्यायुकी प्ररूपणा तिर्यच आयुके समान है । विशेष इतना है कि मनुष्यायुकी प्रदेशउदीरणाकी वृद्धि आदिका कथन मनुष्योंमें करना चाहिये । देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उसके प्रदेशउदीरणामें देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट हानि होती है उसके प्रदेशउदीरणामें देवायुकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयका उत्कृष्ट अवस्थान होता है उसके देवायुकी प्रदेशउदीरणाका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

१ अप्रती वृत्तितो जातोऽत्र पाठः, का-ताप्रत्योः 'वड्ढी' इति पाठः । २ अप्रती 'कस्स तिरिक्खस्स तिरिक्खाउअस्स', काप्रती 'कस्स तिरिक्खाउअस्स' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'पदेसउदीरणा' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'कम्म अवट्ठाणं', ताप्रती '[कस्स] । अवट्ठाणं' इति पाठः ।

णामकम्मस्स जाओ पयडीओ सुभाओ असुभाओ वा केवली वेदयदि तामिं चरिमसमयसजोगिम्हि उक्कस्सिया वड्ढी ? जाओ णामपयडीओ सुहाओ असुहाओ वा उवसंतकसाओ वेदेदि तामिसुक्कस्सिया हाणी पढमसमयदेवस्स उवसंतकसायपच्छायदस्स होदि । तामिं चैव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । णवरि मणुसगइ-ओरालिय-चदुक्क-सरदुग-विहायगइदुगाणसुक्कस्सिया हाणी ओदरमाणपढमसमयसुहुमसांपराइस्स, अवट्ठाणं विदियसमयउवसंतकसायस्स । जामिं णामपयडीणं केवली उदीरओ ण होदि तामिं तप्पाओग्गजहण्णविमोहीदो उक्कस्सविमोहिं गदस्स संजदस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० विमोहीदो जहण्णविमोहिं गदस्स सागारक्खण्ण भवक्खण्ण वा तस्स उक्क० हाणी । अवट्ठियस्स उक्कस्समवट्ठाणं । णीचागोद-दुभंग-अणादेज्ज-अजसगितीणं उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमयअसंजदस्स उक्क० वड्ढी । उक्क०हाणी कस्स ? णीचागोदस्स (?) मम्माइट्ठिस्स मवुक्कस्सविमोहीदो जहण्णविमोहिं गयस्स तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । उचागोदस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमय-सजोगिस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? पढमसमयदेवस्स उवसंतकसायस्स पच्छायदस्स । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । पंचणमंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो । एवमुक्कस्स-

नामकर्मकी जिन शुभ अथवा अशुभ प्रकृतियोंका वेदन केवली करते हैं उनकी उत्कृष्ट वृद्धि अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है । जिन शुभ-अशुभ नामप्रकृतियोंका उपशान्तकपाय वेदन करता है उनकी उत्कृष्ट हानि उपशान्तकपायसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके होती है । उन्हींका अनन्तर कालमें उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है । विशेष इतना है कि मनुष्यगति, औदारिकचतुष्क, स्वरद्विक और दोनों विहायोगितियोंकी उत्कृष्ट हानि श्रेणिसे उतरते हुए प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्प्रायिकके होती है; तथा उनका उत्कृष्ट अवस्थान द्वितीय समयवर्ती उपशान्तकपायके होता है । जिन नामप्रकृतियोंके केवली उदीरक नहीं होते हैं उनकी उत्कृष्ट वृद्धि तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुए संयतके होती है । साकार उपयोगके क्षयसे अथवा भवके क्षयसे उत्कृष्ट विशुद्धिसे जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुए उक्त जीवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानिको करके अनन्तर कालमें अवस्थानको प्राप्त हुए उक्त जीवके ही उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । नीचगोत्र, दुर्भंग, अनादेय और अयशकीर्तिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? चरम समयवर्ती असंयत जीवके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिसे जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुए उक्त सम्यग्दृष्टि जीवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उपशान्तकपायसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । पांच अन्तराय

१ अन्ताप्रत्योः 'हाणी कादूण अवट्ठियस्स' इति पाठः । २ ताप्रती '[णीचागोदस्स]' इति पाठः । ३ अन्ताप्रत्याः 'णीचागोदस्स', ताप्रती 'णीचा (उचा) गोदस्स' इति पाठः ।

मामित्तं समत्तं ।

मदिआवरणस्स जहणिया पदेसउदीरणावड्ढी कस्स ? जो उक्कस्ससंकिलिद्धो तत्तो अणंतभागेण हीणो तस्स जहणिया वड्ढी । जहणिया हाणी कस्स ? दुचरिमादो संकिलेसादो जो उक्कस्ससंकिलेभं गदो तस्स जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । सुद-मणपज्व - केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरण-सादासाद - मिच्छत्त-सोलसकमाय-णवणोकमायाणं मदिणाणावरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पि मदिणाणावरणभंगो । णवरि देव-णेरइएसु जहणणसामित्तं दादव्वं । पंचणं दंसणा-वरणीयाणं मदिणाणावरणभंगो । णवरि तप्पाओग्गसंकिलिद्धे जहणणसामित्तं दादव्वं । णिरयाउअस्स जहणिया वड्ढी कस्स ? जो उक्कस्सादो सादोदयट्ठाणादो दुचरिम-सादोदयट्ठाणं गदो णेरइओ तस्स णिरयाउअस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? जो दुचरिमसादोदयादो चरिमसादोदयं गदो तस्स जहणिया हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । तिरिक्ख-मणुम-देवाउआणं णिरयाउअभंगो । णवरि तिरिक्ख-मणुस-देवेसु उक्कस्स-अणुक्कस्ससादोदएसु जहाकमेण सामित्तं वत्तव्वं ।

सव्वणामपयडीणं जहणणवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि भण्णमाणे मदिणाणावरणभंगो । णवरि अप्पिद-अप्पिदणामयडीणमुदयसंभवपदेसम्मिह उक्कस्स-अणुक्कस्ससंकिलेसेसु जहणण-कर्मोकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मतिज्ञानावरणकी जघन्य प्रदेशउदीरणावृद्धि किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जो जीव उसके अनन्तर्वे भागसे हीन होता है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । श्रुत-ज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, केवल-दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, सिध्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी यह प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उक्त प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्वामित्व देव-नारकियों-में देना चाहिये । निद्रा आदि पांच दर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य संक्लेश युक्त जीवमें उनका जघन्य स्वामित्व देना चाहिये । नारकायु-की जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो नारकी जीव उत्कृष्ट सातोदयस्थानसे द्विचरम सातोदय-स्थानको प्राप्त हुआ है उसके नारकायुकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम सातोदयस्थानसे चरम सातोदयस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी भी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । तिर्यगायु, मनुष्यायु और देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट सातोदय युक्त तिर्यच, मनुष्य और देवमें यथाक्रमसे उनका जघन्य स्वामित्व कहना चाहिये ।

सब नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानकी प्ररूपणा करनेपर वह मतिज्ञाना-वरणके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि विवक्षित विवक्षित नामप्रकृतियोंके उदयकी

सामित्तं दादव्वं । उच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं जह० वड्ढी कस्स ? जो उक्कस्ससंकिले-सादो दुचरिमसंकिलेसं गदो तस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? जो दुचरिमसंकिले-सादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स जह० हाणी । एगदरत्थमवट्ठाणं । एवं जहण-सामित्तं समत्तं ।

अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्क० वड्ढी असंखेज्जगुणा । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरण-सम्मत्त - मिच्छत्त - मम्मामिच्छत्त - सोलमकसाय-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा - पुरिसवेद - पंचिंदियजादि - तेजा-कम्मइयसरीर - तव्वंधणं - संघाद-समचउरससंठाण-वण्ण- गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - तस - बादर - पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणंपदेस-उदीरणाए उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा । असादस्स उक्क० हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । वड्ढी असंखे० गुणा । दंसणावरणपंचयस्स उक्क० वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । सादस्स हाणि-अवट्ठाणाणि थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । इत्थिणवुंसयवेद-

सम्भावना युक्त ऐसे उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट संकलेशवाले जीवोंमें उनके जघन्य स्वामित्वको देना चाहिये । उच्च व नीच गोत्र तथा पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट संकलेशसे द्विचरम संकलेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उनकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम संकलेशसे उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उसकी उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कपाय, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस व कर्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यज्ञकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य एवं स्तोक हैं । उनकी उत्कृष्ट वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उससे उसकी वृद्धि असंख्यातगुणी है । निद्रादिक पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । सातावेदनीयकी हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । ऋग्वेद, नपुंसकवेद,

अरदि-सोगाणं सव्वत्थोवमवट्ठाणं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखेज्जगुणा । आउआणं वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । तिण्णं गईणं चट्ठुणं जादीणं च उक्कस्सिया वट्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसा० । मणुसगइणामाए उक्क० हाणी थोवा । अवट्ठाणमसंखे० गुणं । वड्ढी असंखे० गुणा । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग- बंधण-संघाद - पंचसंठाण - वज्जरिसहसंघडण - परघाद - उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-दुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सिया हाणी थोवा । अवट्ठाणमसंखे० गुणं । वड्ढी असंखे० गुणा । वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदावुज्जोव-थावर-सुद्धम-अपज्जत्त-साहारणाणं उक्क० वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च विसेसाहियं । चट्ठुणमाणुपुव्वीणमुक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । उवसम-सेट्ठिम्हि उदयमंभवसंघडणाणं वड्ढी अवट्ठाणं थोवं । हाणी विसे० । सेसाणं संघडणाणं वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च विसे० । अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवं । वड्ढी असंखेज्जगुणा । एवमुक्कस्सप्पावहुअं समत्तं ।

पदेसउदीरणाए मदिआवरणस्स जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । जघा मदिआवरणस्स तथा सव्वकम्माणं पि अप्पावहुअं अत्थि, सव्वकम्भ-जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं तुल्लत्तुवलंभादो । णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णिया

अरति व शोकका अवस्थान सवमें स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । आयु कर्मोंकी वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । तीन गतियों व चार जातियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । अवस्थान असंख्यातगुणा है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पांच संस्थान, वज्रपभनाराचसंहनन, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । अवस्थान असंख्यातगुणा है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात; आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं । चार आनुपूर्वियोंका उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । उपशमश्रेणिमे जिनका उदय सम्भव है उन संहननोंकी वृद्धि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं । हानि विशेष अधिक है । शेष संहननोंकी वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं । अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशउदीरणामें मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं । जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है वैसे ही सभी कर्मोंके अल्पबहुत्व की प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थानमें तुल्यता पायी जाती है ।

१. का-ताप्रत्योः 'पुषअमंगव' इति पाठः । २. अ-काप्रत्योः 'णत्थि', ताप्रती 'ण (अ) त्थि' इति पाठः ।

हाणी थोवा । वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि अमंखे० गुणाणि । तित्थयरणामाए हाणि-अवट्ठाणाणि णत्थि, वड्ढी एका चैव ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा^१० । तत्थ ममुक्कित्तणा— मदिआवरणस्स अत्थि अमंखे० भागवड्ढी मंखे० भागवड्ढी मंखे० गुणवड्ढी अमंखे० गुणवड्ढी अमंखेज्जभागहाणी मंखे० भागहाणी मंखे० गुणहाणी असंखे० गुणहाणी अवट्ठाणं चेदि । एवं सच्चक्कम्माणं । णवरि केसिंचि मादादीणं अवत्तव्वेण मह दम हांति । तित्थयरणामाए अमंखे० गुणवड्ढी अवट्ठिमवत्तव्वं च तिण्णि चैव हांति । ममुक्कित्तणा म्हा ।

मामित्तं वुच्चदे । तं जहा— चउच्चिहाए वड्ढीए चउच्चिहाए हाणीए अवट्ठाणस्स य को मामी ? अण्णदरो । एवं सच्चक्कम्माणं वत्तव्वं । एयजीवेण कालो— तिण्णि-वड्ढि-तिण्णिहाणीणं जहं० एगममओ, उक्क० आवलि० असंखे भागो । अमंखेज्जगुण-वड्ढि-असंखेज्जगुणहाणीणं जहं० एगममओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । जाणि कम्माणि उवसामगो^२ उदीरेदि तेसिं कम्माणमवट्ठाणस्स उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं । जाणि केवली उदीरेदि तेसिमवट्ठियस्स उक्कस्सकालो पुव्वकोडो देसूणा । एयजीवेण अंतरे

विशेष इतना है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य हानि स्तोक है । वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व असंख्यातगुणे हैं । तीर्थकर नामकर्मकी हानि व अवस्थान सम्भव नहीं है, उसकी एक मात्र वृद्धि ही होती है ।

यहां वृद्धिउदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं । उसमें समुत्कीर्तना— मतिज्ञानावरणके असंख्यात-भागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभाग-हानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अवस्थान भी होता है । इसी प्रकार सब कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि किन्हीं सानावेदनीय आदि विशेष कर्मोंके अवक्तव्यके साथ ये दस पद होते हैं । तीर्थकर नामकर्मके असंख्यातगुणवृद्धि, अवस्थित और अवक्तव्य ये तीन ही पद होते हैं । समुत्कीर्तना समाप्त हुई ।

स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा—मतिज्ञानावरणकी चार प्रकारकी वृद्धि, चार प्रकारकी हानि और अवस्थानका स्वामी कौन है ? उनका स्वामी अन्यतर जीव है । इसी प्रकार सब कर्मोंके कहना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन करते हैं— तीन वृद्धियों और तीन हानियोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवे भाग मात्र है । असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र है । जिन कर्मोंकी उपशामक उदीरणा करता है उन कर्मोंके अवस्थानका उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त मात्र है । जिन कर्मोंकी केवली उदीरणा करते हैं उनके अवस्थानका उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटि मात्र

१ ताप्रतो 'वड्ढिउदीरणा' इति पाठः । २ अप्रतो 'हाणीणं जहणीणं' इति पाठः । ३ अ-काप्रतोः 'उवसामगो' इति पाठः ।

कालेण साधेदूण णेयव्वं ।

एत्तो णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च भाणियव्वं^१ । एत्तो अप्पावहुअं—
मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा । अमंखेज्जभागवड्ठिदउदीरया अमंखेज्जगुणा ।
अमंखे० भागहाणुउदीदया विसेमाहिया । संखे० भागवड्ठिदउ० संखे० गुणा । संखे०
भागहाणुउ० विसेमा० । संखे० गुणवड्ठिदउ० संखे० गुणा । संखेज्जभागहाणुउदी०
विसे० । अमंखे० गुणवड्ठिदउ० अमंखे० गुणा । अमंखे० गुणहाणुउदीरया विसेमाहिया ।
एवं सव्वकम्माणं कायव्वं ।

जेमि कम्माणं अवत्तव्वया अणंता तेमिं अप्पावहुअं । तं जहा— अवट्ठिदउदीरया
थोवा । अमंखेज्जभागवड्ठिदउदीरया अमंखे० गुणा । अमंखेज्जभागहाणुउदीरया
विसेमाहिया । संखेज्जभागवड्ठिदउ० संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणुउ० विसेमा० ।
संखेज्जगुणवड्ठिदउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणुउ० विसे० । अवत्तव्व०
अमंखे० गुणा । अमंखेज्जगुणवड्ठिदउ० अमंखे० गुणा । अमंखेज्जगुणहाणुउ०
विसेमा० । परित्तजीवियाणं कम्माणं जिया अत्थि तेमिं एसो चव अप्पावहुगाला
वो कायव्वो । जाणि कम्माणि अणंतजीवियाणि परित्ता जेमिं अवत्तव्वया तेमिं

है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरको कालसे सिद्ध करके ले जाना चाहिये ।

यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरका कथन करना चाहिये । यहां
अल्पबहुत्व— मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । असंख्यातभागवृद्धि उदीरक
असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातभागवृद्धि उदीरक
संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातगुणवृद्धि उदीरक
संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक
असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सब कर्मोंके
सम्बन्धमें अल्पबहुत्व करना चाहिये ।

जिन कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक अनन्त हैं उनका अल्पबहुत्व कहा जाता है । वह इस
प्रकार है— उनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । असंख्यातभागवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं ।
असंख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं ।
संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातगुणवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं ।
संख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यात-
गुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । जिन कर्मों-
के उदीरक परीत संख्यावाले जीव हैं उनके यही अल्पबहुत्व आलाप करना चाहिये । जिन कर्मों-
के उदीरक अनन्त हैं, उनमें भी जिनका अवक्तव्य पद परीतसंख्याक जीवोंके होता है, उन

१ ताप्रती 'भाणियव्वो' इति पाठः । २ अप्रतो 'उदीरणा' इति पाठः । ३ मप्रतिपाटोऽयम् । अन्का-
तिप 'निया' इति पाठः ।

कम्मणं अवत्तव्वयादिसेमाणं पदाणं जहापरिवाडीए अप्पावहुअं वत्तव्वं । एवं पदेस-
उदीरणा समत्ता । एवमुदीरणाउवक्कमो समत्तो ।

उवसामणाउवक्कमे उवसामणा णिक्खिखविदव्वा । तं जहा— णाम-द्वुवणा-दविय-
भावुवसामणा चेदि उवसामणा चउव्विहा । णाम-द्वुवणं गदं । आगमभावुवसामणा च
गदा । णोआगमभावुवसामणा उवसंतो कलहो जुद्धं वा इच्चेवमादि । आगमदो दव्वुव-
सामणा सुगमा । णोआगमदो दव्वुवसामणा दुविहा कम्मउवसामणा णोकम्मउवसामणा
चेदि । कम्मउवसामणा दुविहा करणुवसामणा अकरणुवसामणा चेदि । जा सा अकरणुव-
सामणा तिस्से दुवे णामाणि— अकरणुवसामणा त्ति च अणुदिण्णोवसामणा त्ति च ।
सा कम्मपवादे सवित्थरेण परूविदा । जा सा करणुवसामणा सा दुविहा देमकरणुव-
सामणा सव्वकरणुवसामणा चेदि । तत्थ सव्वकरणुवसामणाए अण्णाणि दुवे णामाणि
गुणोवसामणा त्ति च पसत्थुवसामणा त्ति च । एसा सव्वकरणुवसामणा कसायपाहुडे
परूविज्जिहिदि । जा सा देमकरणुवसामणा तिस्से अण्णाणि दुवे णामाणि अगुणोवसामणा

कर्मोंके अवत्तव्य उदीरक आदि शेष पदोंके अल्पबहुत्वका कथन परिपाटीक्रमके अनुसार करना
चाहिये । इस प्रकार प्रदेशउदीरणा समाप्त हुई । इस प्रकार उदीरणा-उपक्रम समाप्त हुआ ।

उपशामनाउपक्रममें उपशामनाका निक्षेप करते हैं । यथा— नाम, स्थापना, द्रव्य और
भाव उपशामनाके भेदसे उपशामना चार प्रकारकी है । उनमें नाम व स्थापना अवगत हैं ।
आगमभावोपशामना भी अवगत है । नोआगमभावोपशामना— जैसे कलह उपशान्त हो गया,
अथवा युद्ध उपशान्त हो गया, इत्यादि । आगमद्रव्योपशामना सुगम है । नोआगमद्रव्योपशामना
दो प्रकारकी है— कर्मद्रव्योपशामना और नोकर्मद्रव्योपशामना । इनमें कर्मद्रव्योपशामना दो
प्रकारकी है— करणोपशामना और अकरणोपशामना । जो वह अकरणोपशामना है उसके दो
नाम हैं—अकरणोपशामना और अनुदीर्णोपशामना । उसकी कर्मप्रवादमें विस्तारके साथ
प्ररूपणा की गयी है । जो वह करणोपशामना है वह दो प्रकार है— देशकरणोपशामना और
सर्वकरणोपशामना । उनमें सर्वकरणोपशामनाके दो नाम और हैं— गुणोपशामना और
प्रशस्तोपशामना । इस सर्वकरणोपशामनाकी प्ररूपणा कपायप्राभृतमें करेंगे । जो वह देश-
करणोपशामना है उसके दो नाम और हैं— अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना ।

१ करणकया अकरणा वि य दुविहा उवसामण त्थ त्रिय्याए । अकरण-अणुइच्चाए अणुयोगधरे पणिवयामि ॥
क. प्र. ५, १. करणकय त्ति— इह द्विविधा उपशामना करणकृताऽकरणकृता च । तत्र करणं क्रिया यथा-
प्रवृत्तापूर्वानिवृत्तिकरणसाध्यः क्रियाविशेषः, तेन कृता करणकृता । तद्विपरीताऽकरणकृता । या संसारिणा
जीवाना गिरि-नदीपाषाणवृत्तादिसंभववयथाप्रवृत्तादिकरणक्रियाविशेषमन्तरेणापि वेदनानुभवनादिभिः कारणै-
रुपशामनोपजायते साऽकरणकृतेत्यर्थः । इदं च करणकृताकरणकृतत्वरूप द्वैविध्यं देशोपशामनाया एव दृष्टव्यम्,
न सर्वोपशामनायाः; तस्याः करणेभ्य एव भावान् । मलय. २ ताप्रती 'जा करणुवसामणा' इति पाठः ।
३ ताप्रती 'गुणोवसामणा त्ति' इति पाठः ।

त्ति च अप्पसत्थुवसामणा त्ति च । एदाए पयदं ।

तत्थ अप्पसत्थुवसामणाए अट्टपदं तं । जहा— अप्पसत्थुवसामणाए जमुवसंतं पदेसग्गं तमोकड्डिदुं पि सक्कं, उक्कड्डिदुं पि सक्कं^१; पयडीए मंकाभिदुं पि सक्कं, उदयावलियं पवेसिदुं^२ ण उ सक्कं । वुत्तं च—

उदए संकम-उदए चटुमु वि दादुं कमेण णो सक्कं ।

उवसंतं च णिधत्तं णिकाचिदं चावि जं कम्मं^३ ॥ ४ ॥

एदएण अट्टपदेण सामित्तं तत्थ पुव्वं गमणिज्जं । सामित्तणिद्वेसस्स पयदकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वकम्माणि चरित्तमोहणीयक्खवग-उवसामगाणं मणियट्ठिपटमममयं पविट्ठस्स चैव अप्पसत्थुवसामणाए अणुवसंताणि । दंमणमोहणीयक्खवग-उवसामगाणं अणियट्ठिकरणपटमममयपविट्ठस्सेव दंमणमोहणीयं अप्पसत्थुवसामणाए अणुवसंतं होदि । सेसाणि सव्वकम्माणि तत्थ उवसंताणि अणुवसंताणि च । अणंताणुवंधिविमंजोयणाए अणियट्ठिपटमममए पविट्ठंतकाले^४ चैव अणंताणुवंधिचउक्कमप्पसत्थुवसामणाए अणुवसंतं । सेसाणि सव्वकम्माणि उवसंताणि अणुवसंताणि च । णत्थि यह यहां प्रकृत है ।

उनमेंसे अप्रशस्तोपशामनामें अर्थपदका कथन करते हैं । यथा— अप्रशस्तोपशामनाके द्वारा जो प्रदेशाग्र उपशान्त होता है वह अपकर्षणके लिये भी शक्य है, उत्कर्षणके लिए भी शक्य है, तथा अन्य प्रकृतिमें संक्रमण करानेके लिये भी शक्य है । वह केवल उदयावलीमें प्रविष्ट करानेके लिये शक्य नहीं है । कहा भी है—

जो कर्म उदयमें नहीं दिया जा सकता है वह उपशान्त, जो संक्रमण व उदय दोनोंमें नहीं दिया जा सकता है वह निधत्त, तथा जो चारों (उदय, संक्रमण, अपकर्षण व उत्कर्षण) में भी नहीं दिया जा सकता है वह निकचित्त कहा जाता है ॥ ४ ॥

इस अर्थपदके अनुसार प्रथमतः स्वामित्वका परिज्ञान कराना योग्य है । स्वामित्वनिर्देशपूर्वक प्रकृत करणका कथन करते हैं । यथा— चारित्रमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही सब कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होते हैं । दर्शनमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही दर्शनमोहनीय कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होता है । शेष सब कर्म वहां उपशान्त और अनुपशान्त भी होते हैं । अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनमें अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट होनेके कालमें ही अनन्तानुबन्धिचतुष्क अप्रशस्त उपशामनासे अनुपशान्त होता है । शेष सब कर्म उपशान्त और अनुपशान्त होते हैं । किसी भी कर्मका सब प्रदेशाग्र

१ सव्वस्स य देसस्स य करणुवसमणा दुसन्नि एक्किक्का । सव्वस्स गुण-पसत्था देसस्स वि तामि विवरीया ॥ क. प्र. ५, २. २ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'तमोकड्डिदुं वपि' इति पाठः । ३ ताप्रती 'उक्कड्डिदुं व सक्कं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'पदेसिदुं' इति पाठः । ५ गो. क. ४४०. ६ अप्रती 'क्खवणउवसामणाण', का-ताप्रत्योः 'क्खवण उवसामणाण' इति पाठः । ७ अप्रती 'पविट्ठंतकाले', ताप्रती 'पविट्ठतकाले' इति पाठः, काप्रती वृत्तितोऽत्र पाठः ।

कस्स वि कम्मस्स पदेसग्गं सच्चमुवसंतं णाम अथवा सच्चमणुवसंतं णाम, सच्चमुवसंतं च अणुवसंतं च । एदेण पयदकरणेण सामित्तं गदं होदि ।

एत्तो एयजीवेण कालो । तं जहा— णाणावरणस्म उवसामगो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवमिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सेमसत्तणं कम्माणं णाणावरणभंगो ।

एयजीवेण अंतरं जह०^१ एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एवमट्टणं पि मूलपयडीणं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ । संतकम्मिएसु पयदं— णाणावरणस्म सिया सच्चे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामया च, सिया उवसामया च अणुवसामओ च । एवं तिण्णं घादिकम्माणं तिण्णि तिण्णि भंगा । अघादीणं उवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि ।

णाणाजीवेहि कालो— अट्टणं पि पयडीणं उवसामया सच्चद्धा । णाणजीवेहि णत्थि अंतरं । अप्पावहुअं—अट्टणं पि उवसामया तुल्ला । भुजगारउवसामया णत्थि । पदणिकखेव-वड्ढिउवसामणा च णत्थि । एवं मूलपयडिउवसामणा समत्ता ।

उपशान्त अथवा सब अनुपशान्त नहीं होता, किन्तु सब प्रदेशात्र उपशान्त भी होता है और अनुपशान्त भी होता है । इस प्रकृत करणके साथ स्वामित्व समाप्त होता है ।

यहां एक जीवकी अपेक्षा कालका वर्णन करते हैं । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणका उपशामक जीव अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गल-परिवर्तन मात्र है । शेष सात कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है ।

एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । इसी प्रकारसे आठों ही मूल प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं । सत्कर्मिक जीव प्रकृत हैं— ज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक, कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक और एक अनुपशामक होता है । इस प्रकारसे तीन घातिया कर्मोंके तीन तीन भंग होते हैं । अघातिया कर्मोंके बहुत उपशामक और बहुत अनुपशामक नियमसे हाते हैं ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— आठों ही प्रकृतियोंके उपशामक सर्व काल होते हैं । नाना जीवोंकी अपेक्षा उनका अन्तर नहीं होता । अत्वबहुत्व— आठों ही कर्मोंके उपशामक तुल्य होते हैं । भुजाकार उपशामक नहीं होते । पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामना भी नहीं है । इस प्रकार मूल-प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई ।

१ अ-काप्रत्योः 'अंतरं जहा जह०' इति पाठः । २ प्रतिपु 'उवसामओ' इति पाठः ।

उत्तरपयडिउवसामणा बुच्चदे । तं जहा— सामित्तं तेणेव पायदकरणेण पुव्वपरूविदेण परूवेयव्वं । तं जहा— मव्वकम्माणमुवसामओ को होदि ? अण्णदरो । एयजीवेण कालो । तं जहा— सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्क० वे-छ्वावड्ढि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि । मणुम-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुदाभवग्गहणं सादिरेयं । उकरसेण मणुस्साउअस्स तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणव्वमहियाणि, तिरिक्खाउअस्म असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवाम्म-महस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । णिरय-मणुम-देवगइ-तदाणुपुव्वी - वेउच्चिय-आहारसरीर - वेउच्चिय - आहारसरीरंगोवंग - वंधण संघाद-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहा मंतकम्मियस्स कालो परूविदो तहा परूवेयव्वो । सेमाणं मव्वकम्माणं उवमामयकालो अणादिओ अपज्जवमिदो अणादिओ सपज्जवमिदो सादिओ सपज्जवमिदो वा । जो सो सादिओ सपज्जवमिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवइट्ठपोग्गलपरियट्ठं ।

एयजीवेण अंतरं— जेमिं कम्माणं अणादिओ सपज्जवमिदो सादिओ सपज्जवमिदो वा उवमंतकालो तेमिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एयममओ, उक्क० अतोमुहुत्तं । जेमिं

उत्तरप्रकृतिउपशामनाकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— स्वामित्वकी प्ररूपणा पूर्वप्ररूपित उसी प्रकृत करणके अनुसार करना चाहिये । यथा— सब कर्मोंका उपशामक कौन होता है ? सब कर्मोंका उपशामक अन्यतर जीव होता है ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— सम्यक्त्व और सम्यग्मिग्यात्व-के उपशामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छ्वासठ सागरोपम मात्र है । मनुष्यायु और तिर्यगायुका उक्त काल जघन्यसे साधिक क्षुद्रभवग्रहण मात्र है । उत्कर्षसे वह मनुष्यायुका पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पर्योपम और तिर्यगायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । उक्त काल देवायु और नारकायुका जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तैतीस सागरोपम मात्र है । नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, वे तीनों आनुपूर्वी प्रकृतियों, वैक्रियिक व आहारकशरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपाग, उनके बन्धन व संघात, तीर्थकर तथा उच्चगोत्र; इनके कालकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मिकके कालकी की गयी है वैसे करना चाहिये । शेष सब कर्मोंका उपशामककाल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है । जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपाधे पुद्गलपरिवर्तन मात्र है ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— जिन कर्मोंका उपशान्तकाल अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है उन कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे

१ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'जहाकमेण' इति पाठाः । २ ताप्रतो 'वा । उवसंतकालो तेमिं कम्माणं जो' इति पाठः ।

कम्माणं सादियसंतकम्मिओ जीवो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क०
जं जिस्से पयडोए संतकम्मस्स अंतरं उक्कस्सेण परूविदं तं परूवेयव्वं । णवरि देवाउअ-
वज्जाणमाउआणं जह० अंतोमुहुत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— मदिआवरणस्स मिया सव्वे जीवा उवसामया,
मिया उवसामया च अणुवसामओ च, मिया उवसामया च अणुवसामया च । जहा
मदिआवरणस्स तिण्णि भंगा परूविदा तहा सव्वपयडोणं पि तिण्णि तिण्णि भंगा
परूवेयव्वा । णवरि जासिं पयडिमंतं मज्जोगिम्मि अत्थि तामिमुवसामया अणुवसामया
च णियमा अत्थि ।

कालो—णाणाजीवे पडुच्च मव्वद्दा । अंतरं—णाणाजीवे पडुच्च णत्थि अंतरं ।
अप्पाचहुअं । तं जहा— सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए उवसामया । मम्मत्तम्म
उवसामया अमंखे० गुणा । मम्मामिच्छत्तस्स उव० विसेमाहिया । मणुमाउअस्म
अमंखेज्जगुणा । णिरयाउअस्स अमंखे० गुणा । देवाउअस्म अमंखे० गुणा । देवगइणामाए
मंखे० गुणा । णिरयगइणामाए विसेसा० । वेउव्वियसरीरणामाए विसेमा० वेउव्विय-
ल्लकमुव्वेत्तिरुण पुव्वं देवदुगबंधगे पडुच्च । उच्चागोदस्म अणंतगुणा । मणुमगइणामाए

अन्तमुहूर्त मात्र होता है । जिन कर्मोंका उपशामक सादिसत्कर्मिक जीव है उन कर्मोंके उपशामकका
अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे जिस प्रकृतिके सत्कर्मका जो अन्तर उत्कर्षसे बतलाया
गया है उसको कहना चाहिये । विशेष इतना है कि देवायुको छोड़कर शेष आयु कर्मोंके उप-
शामकका अन्तर जघन्यसे अन्तमुहूर्त मात्र होता है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— मतिज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक होते
हैं, कदाचित् बहुत उपशामक व एक अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत
अनुपशामक होते हैं । जिस प्रकार ये मतिज्ञानावरणके तीन भंग कहे गये हैं उसी प्रकार सब
ही प्रकृतियोंके तीन भंग कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जिनका प्रकृतिसत्त्व संयोगकेवलीमें
है उनके बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं ।

काल— नाना जीवोंकी अपेक्षा उपशामकोंका काल सर्वकाल है । अन्तर— नाना जीवोंकी
अपेक्षा अन्तर सम्भव नहीं है । अल्पबहुत्वकी ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— आहारशरीर
नामकर्मके उपशामक सबमें स्तोक हैं । सम्यक्त्वके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । सम्य-
ग्मिथ्यात्यके उपशात्मक विशेष अधिक हैं । मनुष्यायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके
उपशामक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके
उपशामक संख्यातगुणे हैं । नरकगति नामकर्मके उपशात्मक विशेष अधिक हैं ।
वैक्रियिकशरीर नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं । इसका कारण यह है कि वैक्रियिकपट्ट-
की उद्वेलना करके पहिले देवद्विकके बन्धकोंकी अपेक्षा यह अल्पबहुत्व कहा है । उच्चगोत्रके उप-
शामक अनन्तगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं । तिर्यगायुके

विसेसा० । तिरिक्खाउअस्स विसेसा० । अणंताणुवंधीणं विसेसा० । मिच्छत्तस्स विसेसा० । सेसाणं कम्माणमुवसामया तुल्ला विसेसाहिया । एत्थ भुजगारो पदणिकखेवो वड्ढी च णत्थि ।

पयडिड्डाणुवसामणा— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणमेक्कं चेव द्वाणं । गोदाउआणं दोणिण द्वाणाणि । मोहणीयस्स अत्थि अट्टावीस-मत्तावीस-छ्वीस-पणुवीस-चउवीस-एक्कीसपयडिउवसामणद्वाणाणि । एदेसिं द्वाणाणं एयजीवेण मामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पावहुअं भुजगार-पदणिकखेव-वड्ढिउवसामणाओ कायव्वाओ । णामस्स तिउत्तरसदं विउत्तरसदं छण्णवुदि-पंचाणउदि-त्तिणउदि-चउरामीदि-वासीदि त्ति सत्तणं द्वाणाणमुवसामणा अत्थि, सेसाणं णत्थि । एवं पयडिउवसामणा समत्ता ।

ठिदिउवसामणा दुविहा मूलपयडिड्डिदिउवसामणा उत्तरपयडिड्डिदिउवसामणा चेदि । तत्थ मूलपयडिड्डिदिउवसामणाए ताव अट्टाच्छेदो वुच्चदे । तं जहा— णाणा-वरणस्स उक्कस्सड्डिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडोओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ । जड्डिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ आवलियाए ऊणाओ । एवं दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं । मोहणीयस्स सत्तरिमागरोवमकोडाकोडीओ दोहि

उपशामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धी कषायोंके उपशामक विशेष अधिक हैं । मिथ्यात्वके उपशामक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंके उपशामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । यहां भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी सम्भावना नहीं है ।

प्रकृतिस्थानउपशामना— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायका एक ही उपशामनास्थान है । गोत्र व आयुके दो उपशामनास्थान हैं । मोहनीयके अट्टाईस, सत्ताईस, छव्वीस, पञ्चीस, चौवीस और इक्कीस प्रकृतियोंके उपशामनास्थान हैं । एक जीवकी अपेक्षा इन स्थानोंके स्वामित्व, काल व अन्तर एवं नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर तथा अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामनाकी करना चाहिये । नामकर्म सम्बन्धी एक सौ तीन, एक सौ दो, छ्यानवै, पंचानवै, तेरानवै, चौरासी और व्यासी प्रकृतियों रूप इन सात स्थानोंकी उपशामना है । शेष स्थानोंकी उपशामना नहीं है । इस प्रकार प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई ।

स्थितिउपशामना दो प्रकार है— मूलप्रकृतिस्थितिउपशामना और उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामना । उनमें पहिले मूलप्रकृतिस्थितिउपशामनाके अट्टाछेदकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र काल तक होती है । उसकी जस्थितिउपशामना एक आवलीसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र काल तक होती है । इसी प्रकार दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना तथा जस्थितिउपशामनाका कथन करना चाहिये । मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र

आवलियाहि ऊणाओ । आउअस्स पुव्वकोडितिभागेण सादिरेयतेत्तीसंसागरोवमाणि दोआवलिऊणाणि^१ । जड्ढिदि आवलिऊणा । णामा-गोदाणं वीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ ।

जहण्णअद्वाच्छेदो— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय - अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदि-उवसामणा सागरोवमस्स तिण्णिण-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण ऊणया । मोहणी-यस्स सागरोवमं पलिदो० असंखे० भागेण ऊणयं । णामा-गोदाणं सागरोवमस्स वे-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण ऊणया । आउअस्स खुद्दाभवग्गहणसंखेज्जदि-भागो । एवमद्वाच्छेदो समत्तो ।

सामित्तं । तं जहा— सव्वकम्मणं जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए सामित्तं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं । जहा अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णट्ठिदिउदीरणासामित्तं कदं तहा उवसामणाट्ठिदिसामित्तं ओघजहण्णम्मि कायव्वं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणियोगद्वाराणि जहा अभवसिद्धियपाओग्गट्ठिदिउदीरणाए कदाणि तहा एत्थ कायव्वाणि । भुजगारो^२ पदणिक्खेवो वड्ढी च जहा ट्ठिदिउदीरणाए कदा तहा ट्ठिदिउवसामणाए वि कायव्वा । उत्तरपयडि-

काल तक होती है । आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम और पूर्व-कोटिभागसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र काल तक होती है । उसकी जस्थित उपशामना एक आवलीसे कम उतनी मात्र होती है । नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आव-लियोंसे कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र होती है ।

जघन्य अद्वाच्छेद— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी जघन्य स्थितिउप-शामना एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन भाग प्रमाण होती है । वह मोहनीयकी पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र काल तक होती है । नाम व गोत्र कर्मकी एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग-से हीन दो भाग मात्र होती है । आयुकी जघन्य स्थितिउपशामना क्षुद्रभवग्रहणके संख्यातवें भाग मात्र होती है । इस प्रकार अद्वाच्छेद समाप्त हुआ ।

स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें सब कर्मोंका स्वामित्व किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये । जिस प्रकारसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य स्थितिउदीरणाका स्वामित्व किया गया है उसी प्रकारसे ओघ जघन्यमें उपशामना-स्थितिस्वामित्वको करना चाहिये । एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंको जैसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य स्थितिउदीरणामें किया गया है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा जैसे स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे स्थितिउपशामनामें भी करना

१ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'आवलिऊणाणि' इति पाठः । २ अप्रती 'तहा कायव्वाणि एत्थ भुजगारो' इति पाठः ।

ट्टिदिउवसामणाए जहा उत्तरपयडिट्टिदिउदीरणाए परूवणा कदा तथा कायव्वा । एवं ट्टिदिउवसामणा समत्ता ।

अणुभागउवसामणा दुविहा मूलपयडिअणुभागुवसामणा उत्तरपयडिअणुभागुवसामणा चेदि । मूलपयडिअणुभागुवसामणा गुगमा । उत्तरपयडिअणुभागुवसामणाए पयदं— तत्थ उक्खस्सेण जहा उक्खस्सओ अणुभागसंतकम्मस्स पमाणाणुगमो कदो तथा उक्खस्सओ अणुभागुवसामणापमाणाणुगमो कायव्वो । जहा अक्खवयअणुवसामयपाओग्गो जहण्णओ अणुभागसंतकम्मपमाणाणुगमो कदो तथा जहण्णगो अणुभागुवसामणापमाणाणुगमो कायव्वो । सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं मण्णियामो च जहा अणुभागसंतकम्मस्स परूविदो तथा अणुभागुवसामणाए वि परूवेयव्वो । एत्तो अणुभागुवसामणाए तिव्वमंदप्पाबहुअं । तं जहा— उक्खस्सेण छावट्टिपदेहि जहा उक्खस्सए अणुभागबंधे अप्पाबहुअं कदं तथा एत्थ वि कायव्वं । एवं जहण्णं पि कायव्वं । एवमणुभागउवसामणा समत्ता । पदेसउवसामणा जाणिदूण परूवेयव्वा ।

विपरिणामउवकमो चउच्चिहो पगदिविपरिणामणा ट्टिदिविपरिणामणा अणुभागविपरिणामणा पदेसविपरिणामणा चेदि । पयडिविपरिणामणा दुविहो मूलपयडिविपरिणामणा

चाहिये । उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामनाकी प्ररूपणा जैसे उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहाँ भी करना चाहिये । इस प्रकार स्थितिउपशामना समाप्त हुई ।

अनुभागउपशामना दो प्रकार की है— मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना और उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना । इनमें मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना सुगम है । उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना प्रकृत है— उसमें उत्सर्पेसे जैसे उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये । जिस प्रकार अक्षएक और अनुपशामक प्रायोग्य जघन्य अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है उसी प्रकारसे जघन्य अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये । स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्षको प्ररूपणा जैसे अनुभागसत्कर्ममें की गयी है वैसे ही उसे अनुभागउपशामनामें भी करना चाहिये । यहाँ अनुभागउपशामनामें तीव्रमन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— उत्कर्षसे लयासठ पदोंके द्वारा जिस प्रकार उत्कृष्ट अनुभागबन्धमें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही यहाँ भी उसे करना चाहिये । इसी प्रकारसे उसके जघन्य अल्पबहुत्वको भी करना चाहिये । इस प्रकार अनुभागउपशामना समाप्त हुई । प्रदेशउपशामनाकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये ।

विपरिणामउपक्रम चार प्रकार का है— प्रकृतिविपरिणामना, स्थितिविपरिणामना, अनुभागविपरिणामना और प्रदेशविपरिणामना । इनमें प्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है— मूलप्रकृति-

उत्तरपयडिविपरिणामणा ति । तत्थ मूलपयडिविपरिणामणा दुविहा देसविपरिणामणा सच्चविपरिणामणा चेदि । एत्थ अट्टपदं — जामिं पयडीणं देसो णिज्जरिज्जदि अधट्टिदि-गलणाए सा देसपयडिविपरिणामणा णाम । जा पयडी सच्चणिज्जराए णिज्जरिज्जदि सा सच्चविपरिणामणा णाम । एदेण अट्टपदेण मूलपयडिविपरिणामणाए मामिचं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियामो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च णेयव्वं । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च एत्थ णत्थि ।

उत्तरपयडिविपरिणामणाए अट्टपदं । तं जहा — णिज्जिण्णा पयडी देसेण सच्च-णिज्जराए वा, अण्णपयडीए देससंक्रमणेण वा सच्चसंक्रमणेण वा जा संक्रामिज्जदि एसा उत्तरपयडिविपरिणामणा णाम । एदेण अट्टपदेण मामिचं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियामो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च कायव्वं । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि । पुणो पयडिड्ढाणविपरिणामणा परूवेयव्वा । एवं पयडि-विपरिणामणा समत्ता ।

ट्टिदिविपरिणामणाए अट्टपदं — ट्टिदो आवट्टिज्जमाणा वा उच्चट्टिज्जमाणो वा अण्णं पयडिं संक्रामिज्जमाणा वा विपरिणामिदा होदि । एदेण अट्टपदेण जहा ठिदिसंक्रमो तथा अविसेसेण ट्टिदिविपरिणामणा कायव्वा ।

विपरिणामना और उत्तरप्रकृतिविपरिणामना । उनमें मूलप्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है— देश-विपरिणामना और सर्वविपरिणामना । यहाँ अर्थपद— जिन प्रकृतियोंका अधःस्थितिगलनके द्वारा एक देश निर्जराको प्राप्त होता है वह देशप्रकृतिविपरिणामना कही जाती है । जो प्रकृति सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जराको प्राप्त होती है वह सर्वविपरिणामना कही जाती है । इस अर्थपदके अनुसार मूल-प्रकृतिविपरिणामनाके स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्पबहुत्वको भी ले जाना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहाँ नहीं हैं ।

उत्तरप्रकृतिविपरिणामनामें अर्थपद । यथा— देशनिर्जरा अथवा सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण प्रकृति अथवा जो प्रकृति देशसंक्रमण या सयसंक्रमणके द्वारा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त करायी जाती है यह उत्तरप्रकृतिविपरिणामना कहलाती है । इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्प-बहुत्वको भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहाँ नहीं हैं । तत्पश्चात् प्रकृति-स्थानविपरिणामनाकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिविपरिणामना समाप्त हुई ।

स्थितिविपरिणामनामें अर्थपद— अपवर्तमान, उद्वर्तमान अथवा अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण करायी जानेवाली स्थिति विपरिणामिता (स्थितिविपरिणामना) कहलाती है । इस अर्थपदके अनुसार जैसे स्थितिसंक्रम किया गया है वैसे ही निविशेष स्वरूपमें स्थितिविपरिणामनाको भी करना चाहिये ।

१ अ-काप्रत्योः 'उच्चट्टिज्जमाणा', ताप्रती [उ] वट्टिज्जमाणा' इति पाठः । २ अप्रतो 'विपरिणामदा' इति पाठः ।

अणुभागविपरिणामणाए अट्टपदं— ओकड्ढिदो वि उकड्ढिदो वि अणपयडिं णीदो वि अणुभागो विपरिणामिदो होदि । एदेण अट्टपदेण जहा अणुभागसंकमो तथा णिरवयवं अणुभागविपरिणामणा कायन्वा ।

पदेसविपरिणामणाए अट्टपदं— जं पदेसग्गं णिज्जिण्णं अणपयडिं वा संकामिदं सा पदेसविपरिणामणा णाम । एदेण अट्टपदेण जारिसो पदेससंकमो तारिसी पदेसविपरिणामणा । णवरि जं णिज्जरिज्जमाणं उदएण तमदिरेगं पदेससंकमादो विपरिणामणाए । एवमुवकमो त्ति ममत्तमणिओगहारं ।

अनुभागविपरिणामनामें अर्थपद— अपकर्षणप्राप्त, उत्कर्षणप्राप्त अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया भी अनुभाग विपरिणामित होता है । इस अर्थपदके अनुसार जैसे अनुभागसंक्रम किया गया है वैसे ही पूर्णतया अनुभागविपरिणामनाको करना चाहिये ।

प्रदेशविपरिणामनामें अर्थपद— जो प्रदेशाप्र निर्जराको प्राप्त हुआ है अथवा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त हुआ है वह प्रदेशविपरिणामना कही जाती है । इस अर्थपदके अनुसार जैसे प्रदेशसंक्रम किया गया है वैसे ही प्रदेशविपरिणामनाको करना चाहिये । विशेष इतना है कि जो प्रदेशाप्र उदयके द्वारा निर्जीर्यमाण है वह प्रदेशसंक्रमसे विपरिणामनामें अधिक है । इस प्रकार उपक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

उदयाणियोगद्वारं

पणमिय संतिजिणिंदं घाइयणिस्सेसदोसमंघायं ।

उदयाणियोगद्वारं किचि समासेण वण्णेहं ॥ १ ॥

एत्तो उदओ कायव्वो— णामादिउदएसु एत्थ केण उदएण पयदं ? णोआगमदो कम्मदव्वउदएण पयदं । सो कम्मदव्वुदओ चउविहो । तं जहा— पयडिउदओ द्विदि-उदओ अणुभागउदओ पदेमउदओ चेदि । तत्थ पयडिउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि । मूलपयडिउदओ चितिय वत्तव्वो । उत्तरपयडिउदएण पयदं । तत्थ मामित्तं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-पंचंतराइयाणं को वेदओ ? सव्वो छद्दुमत्थो । पंचणं दंसणावरणीयाणं को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तमादिं कादृण उवरिमो अण्णदरो तप्पाओग्गो वेदओ । णवरि थीणगिद्धि-तियस्स देव-णेइय-अप्पमत्तसंजदा आहारसरीरमुट्ठावियपमत्तसंजदा च अवेदया । अण्णेसिमुवदेसेण एदे पुव्वुत्ता अवेदया होदृण असंखेज्जवस्साउआ च उत्तरविउव्विद-तिरिक्ख-मणुस्सा च अवेदया । सादासादाणमण्णदरो संमारत्थो तप्पाओग्गो वेदओ । मिच्छत्तं सव्वो मिच्छाइट्ठी वेदयदि, सम्मामिच्छत्तं सव्वमम्मामिच्छाइट्ठी, मम्मत्तं

समस्त दोषसंघातको नष्ट कर देनेवाले शान्ति जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं कुछ संक्षेपसे उदयानुयोगद्वारका वर्णन करता हूँ ॥ १ ॥

यहाँ उदयकी प्ररूपणा की जाती है— नामउदयादिकोंमें यहाँ कौनसा उदय प्रकृत है ? यहाँ नोआगमकर्मद्रव्यउदय प्रकृत है । वह कर्मद्रव्यउदय चार प्रकारका है । यथा— प्रकृतिउदय, स्थितिउदय, अनुभागउदय और प्रदेशउदय । उनमें प्रकृतिउदय दो प्रकार है— मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय । मूलप्रकृतिउदयका कथन विचार कर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदय प्रकृत है । उसमें स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— पांच ज्ञानावरण, चक्षु आदि चार दशनावरण, और पांच अन्तरायका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी छद्मस्थ जीव होते हैं । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वेदक कौन होता है ? शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयवर्ती-को आदि करके आगेका कोई भी तत्प्रायोग्य जीव उनका वेदक होता है । विशेष इतना है कि देव, नारकी, अप्रमत्तसंयत तथा आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले प्रमत्तसंयत भी स्थानगृद्धित्रिकके अवेदक होते हैं । अन्य आचार्योंके उपदेशके अनुसार ये पूर्वोक्त जीव स्थानगृद्धित्रिकके अवेदक हैं, इनके अतिरिक्त असंख्यातवर्षायुष्क तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले तियंच व मनुष्य भी उसके अवेदक होते हैं । साता व असाता वेदनीयका वेदक तत्प्रायोग्य अन्यतर संसारी जीव होता है ।

मिथ्यात्वका वेदन सब ही मिथ्यादृष्टि जीव करते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वका वेदन सब

वेदयसम्माइट्ठी सच्चो । अणंताणुबंधीणं मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वा वेदओ । अपच्चक्खाणकमायाणं अमंजदो वेदओ । पच्चक्खाणावरणीयस्म को वेदओ ? असंजदो मंजदामंजदो वा वेदओ । तिण्णं संजलणाणं अप्पणो बंधज्जवमाणेसु वट्टमाणओ । लोहमंजलणाणं को वेदओ ? अण्णदरो मकमाओ । छण्णं णोकमायाणं को वेदओ ? अण्णदरो णियट्ठिम्हिं वट्टमाणओ । णवरि पढमसमयदेवो णियमा माद-हस्म-रदीणं वेदओ । पढमसमयणेरइओ णियमा अमाद-अरदि-मोगाणं वेदओ । पुरिमवेदं पुरिमो, इत्थिवेदमित्थी, णवुंमयवेदं णवुंमओ वेदेदि ।

मणुमाउअं मच्चो मणुस्सो, णिरयाउअं मच्चो णेरइओ, तिरिक्खवाउअं मच्चो तिरिक्खो, देवाउअं मच्चो देवो वेदेदि ।

मणुमगइं मणुस्सो, णिरयगइं णेरइओ, तिरिक्खगइं तिरिक्खो, देवगइं देवो वेदेदि । जादिणामाणं गदिभंगो । ओरालियमरीरस्स को वेदओ ? ओरालियमरीरो मजोगो । ओरालियमरीरबंधण-संघादाणं ओरालियमरीरभंगो । ओरालियमरीरअंगोवंग-वेउच्चिय-आहारमरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं को वेदओ ? मत्थाणे आहारओ ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सम्यक्त्वका वेदन सब वेदकसम्यग्दृष्टि करते हैं । अनन्तानुबन्धी कपायोंका वेदक मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि होता है । अप्रत्याख्यानावरण कपायोंका वेदक असंयत होता है । प्रत्याख्यानावरणका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक असंयत और संयतासंयत होता है । तीन संज्वलन कपायोंका वेदक अपने अपने बन्धाध्यवसानोंमें वर्तमान जीव होता है । संज्वलनलोभका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक अन्यतर सकपाय जीव होता है । छह नोकपायोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक निवृत्ति अवस्थामें वर्तमान (मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक) अन्यतर जीव होता है । विशेष इतना है कि प्रथम समयवर्ती देव नियमसे सातावेदनीय, हास्य और रतिका वेदक होता है । प्रथम समयवर्ती नारकी नियमसे असातावेदनीय, अरति और शाकका वेदक होता है । पुंषवेदका वेदन पुरुष, स्त्रीवेदका वेदन स्त्री, और नपुंसकवेदका वेदन नपुंसक करता है ।

मनुष्यायुका वेदन सब मनुष्य, नारकायुका वेदन सब नारकी, तिर्यगायुका वेदन सब तिर्यच और देवायुका वेदन सब देव करते हैं ।

मनुष्यगतिका वेदन मनुष्य, नरकगतिका वेदन नारकी, तिर्यग्गतिका वेदन तिर्यच, और देवगतिका वेदन देव करता है । जाति नामकर्मोंके उदयकी प्ररूपणा गतिनामकर्मोंके समान है । औदारिकशरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक औदारिकशरीरसे संयुक्त सयोग जीव होता है । औदारिकशरीरबन्धन और संघातके उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, इन दोनोंके आंगोपांग, बन्धन और संघातका वेदक कौन होता है ? इनका वेदक स्वस्थानमें वर्तमान आहारक जीव होता है । नैजम और

तेजा-कम्महय-तप्पाओग्गबंधण-संघादाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो ।

छण्णं संठाणाणं को वेदओ ? आहारओ^१ सजोगो । छण्णं संघडणाणं को वेदओ ? जो जेण आहारओ सो णियमा वेदओ । वण्ण-गंध-रस-फासाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो । तिण्णमाणुपुव्वीणं को वेदओ ? पढमसमयतब्भवत्थो [विदियममय-तब्भवत्थो] वा । तिरिक्खाणुपुव्वीए वेदओ को होदि ? पढमममय-दुसमय-तिममय-तब्भवत्थो वा । अगुरुअलहुअ-थिराथिर-मुहासुह-णिमिणणामाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो ।

उवघादस्स को वेदओ ? आहारओ । परघादस्स को वेदओ ? मरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगो । आदावुज्जोवाणं को वेदओ ? मरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तप्पाओग्गो । उस्सासस्स आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव चरिमसमयउस्सासणिरोहकारओ त्ति ताव वेदओ । पसत्थापसत्थविहायगईणं को वेदओ ? तसो मरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगो । तम-बादर-पज्जत्तणामाणं को वेदओ ? सजोगो अजोगो वा । पत्तेयमरीरस्स को वेदओ ? आहारओ । थावर-सुहुम-अपज्जत्तणामाणं को वेदओ ? थावर-सुहुम-

कर्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघातका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी सयोग प्राणी होते हैं ।

छह संस्थानोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक योगसहित आहारक जीव होता है । छह संहननोंका वेदक कौन होता है ? जो जिस संहननसे आहारक है वह नियमसे उसका वेदक होता है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक योग सहित सब जीव होते हैं । तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा [द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ] जीव होता है । तिर्यगानुपूर्वीका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक प्रथम समयवर्ती, द्वितीय समयवर्ती अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ जीव होता है । अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सब योग सहित प्राणी होते हैं ।

उपघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । परघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ सयोग प्राणी होता है । आतप और उद्योतका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ तत्प्रायोग्य जीव होता है । उच्छ्वासका वेदक आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक चरम समयवर्ती उच्छ्वास-निरोधकारक है तब तक होता है । प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ योगसे संयुक्त त्रस जीव है । त्रस, बादर और पर्याप्त नाम-कर्मोंका वेदक कौन है ? उनका वेदक योगसे सहित और उससे रहित भी जीव होता है । प्रत्येक-शरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक क्रमशः स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त

१ ताप्रतो 'आहारो' इति पाठः ।

अपञ्चत्तया । साहारणमरीरस्स को वेदओ ? आहारओ । जसक्कित्ति-सुभग-आदेज्जाणं को वेदओ ? मज्जोगो अजोगो वा । अजमक्कित्ति-दुभग अणादेज्जाणं को वेदओ ? अगुण-पडिवण्णो अण्णदरो तप्पाओग्गो । तित्थयरणामाए को वेदओ ? सजोगो अजोगो वा । उच्चागोदस्स तित्थयरभंगो । णीचागोदस्स अणादेज्जभंगो । मुस्सर-दुस्सरणं को वेदओ ? भासापञ्चत्तोए पञ्चत्तयदो जाव भामाणिरोहस्स अकारओ त्ति । एवं सामित्तं ममत्तं ।

एगजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियामो त्ति एदाणि अणियोगदाराणि मामित्तादो माहेदूण वत्तव्वाणि । एत्तो अप्पाबहुअं पि जहा पयडिउदीरणाए कदं तथा कायव्वं । णवरि णाणत्तं— मणुसगइणामाए मणुस्साउअस्स च तुल्ला वेदया । एवं सेसाणं पि गदि-आउआणं च । पवाइजंतेण उवएसेण हस्सरदिवेदएहितो सादवेदया जीवा विसेसा० । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जजीवमेत्तेण । अण्णेण उवएसेण सादवेदएहितो हस्सरदिवेदया विसेसा० असंखे० भागमेत्तेण । जुत्तोए च विसेसाहियत्तं णव्वदे । तं जहा— मव्वो आउअघादओ णियमा जेण अमादवेदओ हस्सरदीसु भज्जो तेण सादवेदएहितो हस्सरदिवेदया अमंखेज्जा भागा

जीव होते हैं । साधारणशरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । यशकीर्ति, सुभग और आदेयका वेदक कौन होता है ? इनका वेदक योग सहित और उससे रहित भी जीव होता है । अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक गुणप्रतिपन्नसे भिन्न तत्प्रायोग्य अन्यतर जीव होता है । तीर्थकर नामकर्मका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक सयोग व अयोग जीव भी होता है । उच्चगोत्रके उदयका कथन तीर्थकर प्रकृति-के समान है । नीचगोत्रके उदयका कथन अनादेयके समान है । सुस्वर और दुस्वरका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक भाषाके निरोधको नहीं करता तब तक होता है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संतिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये । अल्पबहुत्व भी जैसे प्रकृतिउदीरणमें किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये । परन्तु यहां इतनी विशेषता है— मनुष्यगति नामकर्म और मनुष्यायुके वेदकोंकी संख्या समान है । इसी प्रकार शेष भी गतिनामकर्मों और आयु कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । परस्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार हास्य और रतिके वेदकोंसे सातावेदनीयके वेदक जीव विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं । अन्य उपदेशके अनुसार सातावेदनीयके वेदकोंकी अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं । इनकी विशेषाधिकता युक्तिसे भी जानी जाती है । यथा— आयुके घातक सब जीव नियमसे असाताके वेदक होकर भी चूँकि हास्य व रतिके वेदनमें भजनीय हैं इसीलिए सातावेदकोंकी

१ प्रतिपु 'अजसक्किन्ति' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः । ३ काप्रती 'असंखेज्ज'- इति पाठः ।

विसेसा० । अरदि-सोगवेदया थोवा । अमादवेदया विसे० । के० मेत्तेण ? पवाइजंतेण उवदेसेण संखेज्जजीवमेत्तेण विसे० । अण्णेण उवदेसेण असंखे० भागमेत्तेण विसे० । एदाणि पयडिउदीरणअप्पावहुआदो पयडिउदयअप्पावहुअस्स णाणत्ताणि । भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढीओ णत्थि । जहा पयडिड्ढाणउदीरणा तहा पयडिड्ढाणउदओ वि कायव्वो । एवं पयडिउदओ समत्तो ।

एत्तो द्विदिउदओ दुविहो मूलपयडिद्विदिउदओ उत्तरपयडिद्विदिउदओ चेदि । मूलपयडिद्विदिउदए अट्टपदं— उदओ दुविहो पओअसा द्विदिक्खण चेदि । द्विदिक्खओ उदओ सुगमो । जो सो पओअसा उदओ सो दुविहो संपत्तीदो सेचीयादो च । संपत्तीदो एगा द्विदी उदिण्णा, संपहि उदिण्णपरमाणूमेगममयावट्ठाणं मोत्तण दुममयादिअवट्ठाणंतराणुवलंभादो । सेचीयादो अणगाओ द्विदीओ उदिण्णाओ, ण्हिह जं पदेमग्गं उदिण्णं तस्स दव्वद्वियणयं पडुच्च पुच्चिह्लभावोवयारमंभवादो । एदेण अट्टपदेण द्विदिउदयपमाणाणुगमो चउच्चिहो उक्कस्सो अणुक्कस्सो जहण्णो अजहण्णो चेदि । णाणावरणस्स उक्कस्सओ द्विदिउदओ तीमं सागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि समउणाहि उणाओ । दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं णाणा-

अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवं भागसे विशेष अधिक हैं । अरति व शोकके वेदक स्तोक हैं । उनसे असातावेदनीयके वेदक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे अधिक हैं ? पारम्परित उपदेशके अनुसार वे संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं । अन्य उपदेशके अनुसार वे असंख्यातवं भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं । प्रवृत्तिउदीरणा सम्बन्धी अल्पबहुत्वसे प्रकृतिउदय सम्बन्धी अल्पबहुत्वमें ये ही कुछ विशेषतायें हैं । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहाँ नहीं हैं । जैसे प्रकृतिस्थानउदीरणा की गयी है वैसे ही प्रकृतिस्थानउदयको भी करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिउदय समाप्त हुआ ।

यहाँ स्थितिउदय दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिस्थितिउदय और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदय । मूल-प्रकृतिस्थितिउदयके विषयमें अर्थपद— प्रयोगजनित और स्थितिक्षयजनितके भेदसे उदय दो प्रकारका है । उनमें स्थितिक्षयजनित उदय सुगम है । जो वह प्रयोगजनित उदय है वह दो प्रकारका है— संप्राप्तिजनित और निषेकजनित । संप्राप्तिकी अपेक्षा एक स्थिति उदीर्ण होती है, क्योंकि, इस समय उदयप्राप्त परमाणुओंके एक समय रूप अवस्थानको छोड़कर दो समय आदि रूप अवस्थानान्तर पाया नहीं जाता । निषेककी अपेक्षा अनेक स्थितियां उदीर्ण होती हैं, क्योंकि, इस समय जो प्रदेशाग्र उदीर्ण हुआ है उसके द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा पूर्वीयभावके उपचारकी सम्भावना है । इस अर्थपदके अनुसार स्थितिउदयप्रमाणानुगम चार प्रकार है— उत्कृष्ट, अनुकृष्ट, जघन्य और अजघन्य । ज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायके स्थितिउदयका प्रमाण ज्ञानावरणके

१ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः । २ प्रतिपु 'णाणत्ताणं' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'गिक्खेवो' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'चे द्विदिक्खाओदओ' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'सपत्ती' इति पाठः ।

वरणीयभंगो । मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि सम-
ऊणाहि ऊणाओ । आउअस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाए आवलियाए ऊणाणि ।
णामा-गोदाणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ ।

जहण्णट्टिदिउदयपमाणाणुगमो । तं जहा— अट्टुणं पि^१ मूलपयडीणं जहण्णओ
ट्टिदिउदओ एगा ट्टिदी । एत्तो सामित्तं । तं जहा— उक्कस्सट्टिदिउदयसामित्तं जहा
उक्कस्सट्टिदिउदीरणाए परूविदं तथा परूवेयव्वं । जहण्णट्टिदिउद० मामी उच्चदे— णाणा-
वरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्टिदिउदओ कस्स ? चरिम [ममय] छट्टुमत्थ-
मादिं कादूण जाव आवलियचरिमसमयछट्टुमत्थो त्ति । मोहणीयस्स जहण्णट्टिदिउदओ^२
कस्स ? चरिमसमयसकमायस्स, तमादिं काऊण जाव आवलियचरिमसमयसकमाओ
त्ति । णामा-गोदाणं जहण्णट्टिदिउदओ कस्स ? पट्टमसमयअजोगिस्स, तमादिं कादूण
जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति । आउअ-वेदणीयाणं जहण्णट्टिदिउदओ कस्स ?
पट्टमसमयअप्पमत्तस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति । आउअस्स
अण्णो वि जहण्णट्टिदिउदओ अत्थि जस्स आउअमुदयावलियं पविट्टुं ।

समान है । मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोड़ा-
कोड़ि सागरोपम प्रमाण है । आयुका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम एक आवलीसे हीन
तेतीस सागरोपम प्रमाण है । नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे
हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र है ।

जघन्य स्थितिउदयके प्रमाणानुगमका कथन करते हैं । यथा— आठों ही मूल प्रकृतियोंके
जघन्य स्थितिउदयका प्रमाण एक स्थिति है । अब यहां स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस
प्रकार है— उत्कृष्ट स्थितिउदयके स्वामित्वकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें की गयी है
वैसे ही यहां भी करना चाहिये । जघन्य स्थितिउदयके स्वामित्वका कथन करते हैं—
ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह अन्तिम
समयवर्ती छट्टुमस्थको आदि लेकर जिसके अन्तिम समयवर्ती छट्टुमस्थ होनेमें आवली मात्र
काल तक शेष है उसके होता है । मोहनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह अन्तिम
समयवर्ती सकषाय जीवके तथा उसको आदि लेकर जिसके चरम समयवर्ती सकषाय होनेमें
आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिउदय किसके
होता है ? वह प्रथम समयवर्ती अयोगीके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक
तकके होता है । आयु और वेदनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह प्रथम समय-
वर्ती अप्रमत्तके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है । आयुका
अन्य भी जघन्य स्थितिउदय उसके होता है जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है ।

१ ताप्रती [सम] इति पाठः । २ 'एत्तो सामित्त' इत्यतः प्राक्तनोऽयं पाठस्ताप्रती नास्ति । ३ अप्रती
'अट्टु पि' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः '-ट्टिदिउदओ सामी०' इति पाठः । ५ ताप्रती '-ट्टिदि [ओ] उदओ'
इति पाठः ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— जहा उक्स्मट्टिदिउदीरणकालो परुविदो तथा उक्स्मट्टिदिउदयकालो वि परुवेयव्वो । जहण्णट्टिदिउदओ । तं जहा— णामा-भोद-वेदणिज्जाणं जहण्णट्टिदिउदिउदओ^१ केवचिरं० ? जहण्णुकं^२ अंतोमुहुत्तं । णवरि वेयणीयं० जहं० एयममओ, उक्कं पुव्वकोडी देसूणा । आउअस्स जहं० ट्टिदिउदओ केव० ? जहं० एगावलिया, उक्कं पुव्वकोडी देसूणा । चदुण्णं पि घाइक्कमाणं जहं० केवचिरं० ? जहण्णुकं० आवलियाँ । सत्तण्णं कम्माणमजहण्णट्टिदिउदयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो । मोहणीयं वेयणीयं च पडुच्च सादिओ सपज्जवसिदो । तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो^३ तस्स जहं० अंतोमुहुत्तं, उक्कं उवइठ-पोग्गलपरियट्ठं । आउअस्स अजहण्णट्टिदिवेदयकालो जहं० अंतोमुहुत्तमेगसमओ वा, उक्कं तेत्तीममागरोवमाणि आवलियूणाणि ।

एयजीवेण अंतरं । तं जहा— जहो उक्स्मट्टिदिउदीरयंतरं परुवियं तथा उक्स्मट्टिदिवेदयंतरं परुवेयव्वं । आउअस्स जहण्णट्टिदिवेदयंतरं जहं० खुदाभवग्गहणं आवलियूणं एगममओ वा, उक्कं तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । पंचण्णं कम्माणं जहण्णट्टिदिवेदयंतरं णत्थि । मोहणीय-वेदणीयाणं जहण्णट्टिदिवेदयंतरं जहं०

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । जघन्य स्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— नाम, गोत्र और वेदनीयका जघन्य स्थिति-उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है । विशेष इतना है कि वेदनीयके जघन्य स्थितिउदयका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । आयुर्कर्मका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र रहता है । चारों ही घातिया कर्मोंका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक आवली मात्र रहता है । सात कर्मोंके अजघन्य स्थितिउदयका काल अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित है । मोहनीय व वेदनीयकी अपेक्षा वह सादि-सपर्यवसित है । उसका जो सादि-सपर्यवसित काल है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । आयुकी अजघन्य स्थितिका वेदककाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र है ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका कथन करते हैं । यथा— जिस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरकके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार उत्कृष्ट स्थितिवेदकके अन्तरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । आयुर्कर्मके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र होता है । पांच कर्मोंके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर नहीं होता । मोहनीय और वेदनीयके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्य-

१ प्रतिपु 'ट्टिदिउदीरओ' इति पाठः । २ प्रतिपु 'अणुकं' इति पाठः । ३ अप्रती 'आव-लियाए', काप्रती 'आवलिया०' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो' इत्येतावान पाठो नोपलभ्यते । ५ ताप्रती नोपलभ्यते पदमिदम् ।

अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणियोगदाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणए कदाणि तथा उक्कस्सट्ठिदिउदए कादव्वाणि । एदाणि चैव जहण्णट्ठिदिउदए वत्तइस्सामो । तं जहा— भंगविचए ताव अट्टपदं । जो जहण्णट्ठिदीए वेदओ सो अजहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ, जो अजहण्णट्ठिदीए वेदओ सो जहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ । जाओ पयडीओ वेदयदि तासु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारो । एदेण अट्टपदेण आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णियाए ट्ठिदीए णाणाजीवा वेदया णियमा अस्थि । सैसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदीए सिया सव्वे जीवा अवेदया, सिया अवेदया च वेदओ च, सिया अवेदया च वेदया च । एवं तिण्णिभंगा । अजहण्णियाए ट्ठिदीए वेदयाणं तत्त्विवरीणण तिण्णिभंगा वत्तव्वा ।

[णाणाजीवेहि कालो—] आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं० ? सव्वद्धा । णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं० ? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सैसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदया जह० आवलि० उवसामगं पडुच्च मोहणीयस्स एगसमओ वा, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अट्टण्णं पि कम्माणं अजहण्णट्ठिदिवेदयाणं णाणा-

से अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी करना चाहिये । इन्हींका कथन जघन्य स्थितिउदयमें किया जाता है । यथा—पहिले भंगविचयमें अर्थपद बतलाते हैं । जो जीव जघन्य स्थितिका वेदक होता है वह अजघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है, जो अजघन्य स्थितिका वेदक होता है वह जघन्य स्थितिका नियमसे अवदक होता है । जिन प्रकृतियोंका वेदन करता है वे प्रकृत हैं, अवेदकोंमें व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदके अनुसार आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक नाना जीव नियमसे हैं । शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अवेदक, कदाचित् बहुत अवेदक व एक वेदक, तथा कदाचित् अवेदक भी बहुत और वेदक भी बहुत; इस प्रकार तीन भंग हैं । इनकी अजघन्य स्थितिके वेदकोंके तीन भंग पूर्वोक्त भंगोंकी अपेक्षा विपरीत (कदाचित् सब जीव वेदक, कदाचित् बहुत वेदक व एक अवेदक, तथा कदाचित् बहुत वेदक और बहुत अवेदक भी) क्रमसे कहने चाहिये ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं ? सर्वकाल रहते हैं । नाम व गोत्र कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं ? वे नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं । शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक जघन्यसे आवली मात्र, अथवा उपशामककी अपेक्षा मोहनीयकी उक्त स्थितिके वेदक जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहते हैं । आठों ही कर्मों सम्बन्धी

१ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः । २ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'च तिण्णिभंगा एवं अजहण्णियाए' इति पाठः ।

जीवे पडुच्च मच्चद्धं ।

णाणाजीवेहि अंतरं— आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्टिदिवेदयाणं^१ गत्थि अंतरं ।
सेसाणं कम्माणं जहण्णट्टिदिवेदगंतरं^२ जह० एगममओ, उक्क० छम्माया ।

सण्णियासो । तं जहा— णाणावरणस्स जहण्णट्टिदिवेदओ मोहणीयस्स अवेदओ,
णामा-गोदाणं णियमा अजहण्णट्टिदिवेदओ, जहण्णादो अजहण्णा अमंखेज्जगुणब्भहिघा ।
सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्टिदिवेदओ । दंमणावरणंतराइयाणं णाणावरणभंगो ।
वेदणीयस्स जहण्णट्टिदिवेदओ चदुण्णं घादिकम्माणं मिया वेदओ मिया णोवेदओ ।
जदि वेदओ मिया जहण्णं मिया अजहण्णं वेदेदि । जदि अजहण्णं दुगुणमादिं कादूण
णिरंतरं जाव असंखे० गुणं वेदेदि । आउअस्स णियमा जहण्णं वेदेदि । णामा-गोदाणं
जहण्णमजहण्णं वा वेदेदि । जदि अजहण्णं णियमा अमंखे० गुणं वेदेदि । जहा
वेयणीयं घाइकम्मेहि मण्णिकामिदं तथा आउअं पि घाइकम्मेहि मण्णिकामियच्चं ।

आउअस्स जहण्णट्टिदिवेदओ णामा-गोद-वेदणिज्जाणं जहण्णट्टिदिमजहण्णट्टिदिं
वा वेदेदि । जदि अजहण्णं णियमा अमंखे० गुणं । णामा-गोदाणं जहण्णट्टिदिवेदओ
अजघन्य स्थितिके वेदकोंका काल नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर— आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर
नहीं होता । शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कपसे
छह मास प्रमाण होता है ।

अब संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—ज्ञानावरणकी जघन्य स्थितिका वेदक
मोहनीयका अवेदक तथा नाम व गोत्रकी नियमसे अजघन्य स्थितिका वेदक होता है । जघन्यकी
अपेक्षा यह अजघन्य स्थिति असंख्यातगुणी अधिक है । वह शेष कर्मोंकी नियमसे जघन्य
स्थितिका वेदक होता है । दर्शनावरण और अन्तरायके संनिकर्षकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान
है । वेदनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक चार कर्मोंका कदाचित् वेदक और कदाचित् नोवेदक
होता है । यदि वह वेदक होता है तो कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य स्थितिका वेदन
करता है । यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो दुगुणी स्थितिकी आदि करके
निरन्तर असंख्यातगुणी तकका वेदन करता है । वह आयु कर्मकी नियमसे जघन्य स्थितिका
वेदन करता है, नाम व गोत्रकी जघन्य अथवा अजघन्यका वेदन करता है । यदि वह अजघन्यका
वेदन करता है तो नियमसे असंख्यातगुणीका वेदन करता है । जिस प्रकार घातिया कर्मोंके
साथ वेदनीयका संनिकर्ष बतलाया गया है उसी प्रकारसे घातिया कर्मोंके साथ आयुका भी
संनिकर्ष बतलाना चाहिये ।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव नाम, गोत्र और वेदनीयकी जघन्य स्थिति अथवा
अजघन्य स्थितिका वेदन करता है । यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो नियमसे

१ प्रतिपु 'वेदणीयाणं' इति पाठः । २ अप्रती 'वेदगंतं', काप्रती 'वेदगं', ताप्रती 'वेदगन्तं' इति पाठः ।
३ अ-का-ताप्रतिपु 'जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिघा । सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्टिदिवेदओ'
इत्यर्थे पाठो नास्ति, मप्रतितोऽत्र योजितः सः । ४ अप्रती 'गोदाणं' इति पाठः ।

आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णाट्टिदिं वेदेदि । सेसाणमवेदगो । मोहणिज्जस्स जहण्णाट्टिदिवेदओ आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णाट्टिदिवेदगो । सेसाणं कम्माणं णियमा अजहण्णं असंखेज्जगुणं वेदगो । एवं सण्णियासो समत्तो ।

एत्तो अप्पाबहुअं । तं जहा— जहा उक्कस्सट्टिदिउदीरणाए अप्पाबहुअं कदं तहा उक्कस्सट्टिदिउदए कायव्वं । जहण्णाट्टिदिउदए अप्पाबहुअं । तं जहा— अट्टुण्णं पि कम्माणं जहण्णाट्टिदिउदओ तत्तियो^१ चेव । एवं अप्पाबहुअं गदं । जहा ट्टिदिउदीरणाए भुजगारो पदणिकखेवो वड्ढी च कदा तहा एत्थ वि ट्टिदिउदए कायव्वा । एवं मूल-पयडिडिदिउदओ समत्तो ।

एत्तो उत्तरपयडिडिदिउदओ— तत्थ अट्टुपदं पुव्वं व कायव्वं । जहा उक्कस्सट्टिदि-उदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा उक्कस्सट्टिदिउदए वि पमाणाणुगमो कायव्वो । णवरि उदयट्टिदीए अब्भहियं । जहण्णाट्टिदिउदयपमाणाणुगमं वत्तइस्समामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-मादासादवेदणीय - लोभसंजलण - तिण्णिवेद-सम्मत्त-मिच्छत्त - आउचदुक्क-मणुमगइ - पंचिंदियजादि-तस्स - बादर-पज्जत्त- जसकित्ति-सुभगादेज-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णाट्टिदिउदओ एगा ट्टिदी एगसमयकालो ।

असंख्यातगुणीका वेदन करता है। नाम व गोत्रकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, शेष कर्मोंका वह अवेदक है। मोहनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक तथा शेष कर्मोंकी नियमसे असंख्यातगुणी अजघन्य स्थितिका वेदक होता है। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी उसे करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयमें अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा— आठों ही कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उदय उतनाही है अर्थात् समान है। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिका कथन जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदय समाप्त हुआ।

यहां उत्तरप्रकृतिस्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है— उसमें अर्थपद पहिलेके ही समान करना चाहिये। जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थिति-उदयमें भी प्रमाणानुगम करना चाहिये। विशेष इतना है कि उदयस्थितिमें अधिक है। जघन्य स्थितिउदयके उदयका प्रमाणानुगम कहते हैं। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता-वेदनीय, असातावेदनीय, संज्वलनलोभ, तीन वेद, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार आयु कर्म, मनुष्य-गाति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशस्वीर्ति, सुभग, आदेय, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिका उदय एक समय कालवाली एक स्थिति मात्र है। संज्वलनक्रोध,

१ अ-काप्रत्योः 'तत्तिया' इति पाठः ।

कोह-माण-मायासंजलणाणं जहण्णट्टिदिउदओ दोण्णिट्टिदीओ । जट्टिदिउदओ आवलिया समयाहिया । सेसाणं कम्माणं जहा जहण्णट्टिदिउदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा जहण्णट्टिदिउदए वि कायव्वो । एवमद्वाछेदो । समत्तो ।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पावहुअं चेदि एदाणि अणिओगद्वाराणि जहा उक्कस्मट्टिदिउदीरणाए कदाणि तहा उक्कस्मट्टिदिउदए वि कायव्वाणि । जहण्णट्टिदिउदीरणादो जं किंचि णाणत्तं पि सामित्तादो साधेदूण कायव्वं । भुजगार-पदणिकखेव-वड्ढिउदओ च जहा ट्टिदिउदीरणाए कदो तहा ट्टिदिउदए वि कायव्वो । एवं ट्टिदिउदओ समत्तो ।

एत्तो अणुभागउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि । तत्थ मूलपयडिअणुभागउदए चउव्वीस अणियोगद्वाराणि परूविय पुणो भुजगार-पदणिकखेव-वड्ढीसु परूविदासु मूलपयडिउदओ समत्तो भवदि । एत्तो उत्तरपयडिअणुभागुदए तत्थ पमाणाणुगमो जहा अणुभागुदीरणाए परूविदो तहा एत्थ वि परूवेयव्वो । पच्चय-परूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा त्ति एदेहि अणिओगद्वारेहि अणुभागपरूवणं काऊण तदो सामित्तं जहा अणुभागउदीरणाए कदं तहा कायव्वं । णवरि जहण्णसामित्ते णाणत्तं वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-

मान और मायाकी जघन्य स्थितिका उदय दो स्थिति मात्र होता है । जस्थितिउदय एक समय अधिक आवली मात्र होता है । शेष कर्मोंके प्रमाणाणुगमका कथन जैसे जघन्य स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही जघन्य स्थितिउदयमें भी करना चाहिये । इस प्रकार अद्धाछेद समाप्त हुआ ।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी करना चाहिये । यहां जघन्य स्थितिउदीरणाकी अपेक्षा जो कुछ विशेषता है उसे भी स्वामित्वसे सिद्ध करके कहना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदय जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे स्थितिउदयमें भी करना चाहिये । इस प्रकार स्थिति-उदय समाप्त हुआ ।

यहां अनुभाग उदय दो प्रकार है— मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय । उनमेंसे मूलप्रकृतिअनुभागउदयमें चौबीस अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर देनेपर मूलप्रकृतिअनुभागउदय समाप्त हो जाता है । यहां उत्तरप्रकृति-अनुभागउदयमें उनमेंसे प्रमाणाणुगमकी प्ररूपणा जैसे अनुभागउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये । प्रत्ययप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा इन तीन अनुयोग-द्वारोंके द्वारा अनुभागकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् स्वामित्व जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां अनुभागउदयमें भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि जघन्य स्वामित्वमें कुछ विशेषता है, उसे कहते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, तीन वेद, संज्वलन-

तिष्णिवेद-लोहसंजलण-पंचअंतराइयाणं जहण्णओ अणुभागउदओ कस्स ? जो एदेमिं कम्मणं जहण्णअणुभागउदीरओ होदूण तदो आवलियाए अदिकंताए सो चेव जहण्णाणु-भागवेदओ होदि । एवं जहण्णाणुभागउदीरणासामित्तादो जहण्णाणुभागउदयस्स सामि-त्तस्स णाणत्तं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पावहुअं भुजगारो पदणिकखेवो वड्हि त्ति एदेहि अणियोगदारेहि अणुभागउदीरणादो अणुभागउदयस्स णाणत्ताभावादो जहा एदेहि अणियोगदारेहि अणुभागउदीरणा परूविदा तहा अणुभागउदओ परूवेयव्वो । एवमणुभागउदओ ममत्तो ।

एत्तो पदेमउदओ दुविहो मूलपयडिपदेमउदओ उत्तरपयडिपदेमउदओ चेदि । तत्थ मूलपयडिपदेमउदओ मव्वाणिओणदारेहि जाणिऊण परूवेयव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । सामित्तं जाणावणहं इमाओ एत्थ दम गुणसेडीओ परूवेदव्वाओ । तं जहा—

सम्मत्तुप्पत्तीए सावय विरदे अणंतकम्मंसे ।
दंसणमोहक्खवए कसायउवसामए य उवसंते ॥ ५ ॥
खवए य खीणमोहे जिणे य णियमा भवे असंखेज्जा ।
तव्विवरीओ कालो संखेज्जगुणाए सेडीए^१ ॥ ६ ॥

एदाहि दोहि गाहाहि दमण्णं गुणसेडीणं परूवणं णिकखेवं च परूवेदूण तदो

लोभ और पांच अन्तराय, इनका जघन्य अनुभागउदय किसके होता है ? जो जीव इन कर्मोंका जघन्य अनुभागउदीरक होकर तत्पश्चात् एक आवलीको विताता है वही उक्त आवलीके वीतनेपर उनके जघन्य अनुभागका वेदक होता है । इस प्रकार जघन्य अनुभागउदीरणाके स्वामीको अपेक्षा जघन्य अनुभागउदयके स्वामीमें विशेषता है । एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जावांकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष, अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि; इन अनुयोगद्वारोंमें अनुभागउदीरणाकी अपेक्षा चूंकि अनुभागउदयमें कोई भेद नहीं है अत एव इन अनुयोगद्वारोंके द्वारा जैसे अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही अनु-भागउदयकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अनुभागउदय समाप्त हुआ ।

यहां प्रदेशउदय दो प्रकारका है—मूलप्रकृतिप्रदेशउदय और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदय । उनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदयकी प्ररूपणा सब अनुयोगद्वारोंके द्वारा जानकर करना चाहिये । उत्तरप्रकृति-उदय प्रकृत है । स्वामित्वक ज्ञापनार्थ यहां इन दस गुणश्रेणियोंकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—

सम्यक्त्वोत्पत्ति, श्रावक, विरत (संयत), अनन्तकर्मांश (अन्तानुबन्धविसंयोजक), दर्शन-मोहक्षपक, कपायापशामक, उपशान्तकपाय, क्षपक, क्षीणमाह और जिन; इनके क्रमशः उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी निर्जरा होती है । किन्तु इस निर्जराका काल संख्यातगुणित श्रेणि रूपसे विपरीत है । जैसे—जिन भगवान्की गुणश्रेणिनजरका जितना काल है उससे क्षीणकषायकी गुणश्रेणि-निर्जराका काल संख्यातगुणा है, इत्यादि ॥ ५-६ ॥

इन दो गाथाओंके द्वारा दस गुणश्रेणियोंकी प्ररूपणा और निक्षेपकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् जो

जाओ गुणसेडीओ अण्णभवं संकामंति ताओ वत्तइस्सामो । तं जहा— उवसमसम्मत्तगुण-
सेडी संजदासंजदगुणसेडी अधापमत्तगुणसेडी एदाओ तिण्णिगुणसेडीओ अप्पमत्थमर-
णेण वि मदस्स परभवे दिसंति । सेसासु गुणसेडीसु झीणासु अप्पअत्थमरणं भवे' । एत्तो
सामित्तं कायव्वं । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सपदेसउदओ
कस्स ? जो गुणिदकम्मंमिओ मणुस्सो गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवण्णो, तत्थ
अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं चरित्तमोहकखवणाए उवट्ठिदो तस्स चरिमसमयच्छदुमत्थस्स
आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं
चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंसणाणं पि
मदिआवरणभंगो चेव । णवरि जस्स ओहिलंभो णत्थि तस्स उक्कस्सं सामित्तं दादव्वं ।
णिहा-पयलाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स उवसंतकसायस्स ।
थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? दोण्णिगुणसेडिसीमगगुणिदकम्मं-
मियस्स ।

सादासादाणं उक्कस्सपदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमय-
भवसिद्धियस्स । मिच्छत्तम्म उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स दोगुण-
गुणश्रेणियां अन्य भवमें संक्रमणको प्राप्त होती हैं उनको बतलाते हैं । यथा— उपशमसम्यक्त्व
गुणश्रेणि, संयतासंयत गुणश्रेणि और अधःप्रमत्त गुणश्रेणि; ये तीन गुणश्रेणियां अप्रशस्त मरणसे
भी मृत्युको प्राप्त हुए जीवके परभवमें दिखती हैं । शेष गुणश्रेणियोंके क्षीण होनेपर अप्रशस्त मरण
होता है ।

यहां स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका
उदय किसके है ? जो गुणितकर्मांशिक मनुष्य गर्भसे लेकर आठ वर्षोंमें संयमको प्राप्त हुआ है
तथा उस अवस्थामें अन्तर्मूर्त रहकर सर्वलघु कालमें चरित्रमोहनीयके क्षपणमें उद्यत हुआ है
उस अन्तिम समयवर्ती लघुस्थके आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय होता है ।
श्रुतज्ञानावरण, मत्तःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण तथा चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण
और केवलदर्शनावरणके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अर्वाधिज्ञाना-
वरण और अर्वाधिदर्शनावरण के भी उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके ही समान है ।
विशेष इतना है कि जिसके अवधिलब्धि नहीं है उसके उनका उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिये ।
निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह गुणितकर्मांशिक उपशान्तकषाय-
के होता है । स्यानगृद्धि आदि तीनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह दो गुणश्रेणि-
शीर्षक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

साता और असाता वेदनीयका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक
जीव अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक है उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । मिथ्यात्वका
उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह दो गुणश्रेणिशीर्षवाले गुणितकर्मांशिकके होता है ।

१ क. प्र. ५, १०. २मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ 'सीसगुणिद', काप्रतौ 'सीसयस्स गुणिद', ताप्रतौ 'सीस
[यस्स-] गुणिद' इति पाठः ।

सेडिसीसयस्स । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स उदिण्णसंजमासंजम-संजमगुणसेडिसीसयस्स । सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।

अणंताणुवंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । अट्टुणं पि कसायाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स अंतोमुहुच-सुववण्णस्स जाधे गुणसेडिसीसयसुदिण्णं ताधे उक्कस्सओ उदओ^१ । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयमुदयमागदं ताधे उक्कस्सओ उदओ । अपज्जत्तपाओग्गजहण्णया हस्स-रदिवेदगद्धा थोवा । जेण कालेण गुणसेडिसीसगमुदयमेदि सो कालो संखेज्जगुणो^२ । उक्कस्सिया हस्स-रदिवेद-गद्धा संखेज्जगुणा । एदेण कारणेण जस्म हस्स-रदीणमुक्कस्सओ उदओ तस्स चव अरदि-सोगाणं पि उक्कस्सओ उदओ कायव्वो । अधवा छण्णमेदासिं हस्सादियाणं उक्कस्सओ पदेसुदओ चरिमसमयअपुच्चकरणखवयस्स । तिण्णं वेदाणं उक्कस्सओ उदओ कस्स ? चरिमसमयउदए वट्टुमाणस्स खवयस्स गुणिदकम्मंसियस्स । तिण्णं संजलणाण-

सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह संयमासंयम और संयम गुणश्रेणिशीर्षके उदय युक्त गुणितकर्मांशिकके होता है । सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो अन्तिम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह है ऐसे गुणितकर्मांशिक जीवके सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । आठों ही कषाओंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें वर्तमान रहकर मरणको प्राप्त होता हुआ देव उत्पन्न हुआ है उसके उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्तमें जब गुणश्रेणिशीर्षक उदीर्ण होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें मरणको प्राप्त होकर देव उत्पन्न हुआ है उसके जब अन्तिम गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य और रतिका अपर्याप्त योग्य जघन्य वेदककाल स्तोक है । जिस कालमें गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है वह संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट हास्य-रतिवेदक-काल संख्यातगुणा है । इस कारण जिसके हास्य व रतिका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है उसके ही अरति और शोकका भी उत्कृष्ट उदय करना चाहिये । अथवा इन हास्यादि छह प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होता है । तीन वेदांका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

१ अप्रती 'गुणसेडीए सीसय-', का ताप्रत्यो: 'गुणसेडीसीसय-' इति पाठः । २ अ-काप्रत्यो: 'उक्कस्स-ओदहओ' इति पाठः । ३ अप्रती 'असखेज्जगुणो' इति पाठः ।

मुक्कस्सओ उदओ कस्स ? सग-सगउदएण खवगसेडिं चडिय सगचरिमोदए वट्टमाणस्स । लोभसंजलणस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? खवगस्स गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमय-सरागस्स ।

णिरयाउअस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? सण्णिणा उक्कस्सजोगेण उक्कस्सियाए बंधगद्धाए उक्कस्सआवाधाए दससहस्साणि जेण आउअं णिवट्ठं जहण्णियाए ट्टिदीए कदण्णिसेगुक्कस्सपदं तस्स पढमसमयणेरइयस्स उक्कस्सओ उदओ । देवाउअस्स णिरयाउ-भंगो । मणुस्स-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? उक्कस्सियाए बंधगद्धाए तप्पाओग्गेण उक्कस्सजोगेण च आउअं बंधिट्ठण कमेण कालं करिय तिपलिदोवमिएसु उववण्णो सव्वलहुं आउअं पभिण्णो सव्वजहण्णं जीविदव्वं मोत्तण सेसं ओवट्ठिदं, जम्हि समए ओवट्ठिज्जमाणमोवट्ठिदं तत्थ उक्कस्सओ पदेसउदओ तिरिक्ख मणुस्साउआणं ।

णिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसउदओ कस्स ? जो संजदामंजदो सव्वुकस्सविसोहीए गुणसेडिणिज्जरं कुणमाणो मंजमं पडिवज्जिय संजमगुणसेडिणिज्जरं काहुं पयट्ठो^१ तत्थ

तीन संज्वलन कपायोका उत्कृष्ट उदय किसके होता है ? अपने अपने उदयके साथ क्षपकश्रेणि चढ़कर अपने उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । संज्वलनलोभका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सरागी क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? उत्कृष्ट योग युक्त जिस संज्ञी जीवने उत्कृष्ट बन्धककालमें उत्कृष्ट आवाधाके साथ दस हजार वर्ष मात्र आयुको बांधकर जघन्य स्थितिके निपेका उत्कृष्ट पद किया है ऐसे उस प्रथम समयवर्ती नारकीके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । मनुष्य व तिर्यच आयुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उत्कृष्ट बन्धककालमें तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा आयुको बांधकर क्रमसे मृत्युको प्राप्त हो तीन पत्त्योपम प्रमाण आयुवाले जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा जिसने सर्व-लघु कालमें आयुको प्रभेद कर सर्वजघन्य जीवितव्य (अन्तर्मुहूर्त मात्र) को छोड़कर शेषका अप-वर्तन किया है उसके जिस समयमें अपवर्त्यमान आयु अपवर्तित हो चुकती है उस समयमें तिर्यच आयु और मनुष्यायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

नरकगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिके द्वारा गुणश्रेणिनिर्जराको करनेवाला जो संयतासंयत जीव संयमको प्राप्त होकर संयमगुणश्रेणिनिर्जराको

१ अ-काप्रत्योः 'सण्णयासउक्कस्स-' इति पाठः । २ अद्दा-जोगुक्कोसो बंधिता भोगभूमिगेषु लहुं । सव्वप-जीवियं वज्जइत्तु ओवट्ठिया दोण्हं ॥ क. प्र. ५, १६. अद्ध त्ति- उत्कृष्टे बन्धकाले उत्कृष्टे च यागे वर्तमानो भोगभूमिगेषु तिर्यक्षु मनुष्येषु वा विषये कश्चित्तिर्यगायुः कश्चिन्मनुष्यायुः उत्कृष्टं त्रिपत्त्योपमस्थितकं बंध्वा लघु शीघ्रं च मृत्वा त्रिपत्त्योपमायुध्वेकस्तिर्यक्ष्वपरो मनुष्येषु मन्थे समुत्पन्नः तत्र च सर्वालपजीवितमन्तर्मुहूर्तप्रमाणं वर्जयित्वाऽन्तर्मुहूर्तमेकं धृत्वात्यर्थः, शेषमशेषमपि (तां द्वावपि) स्व-स्वायुरपवर्तनाकरणेनापवर्तयतः । ततो-ऽपवर्तनानन्तरं प्रथमसमये तयोस्तिर्यङ्-मनुष्ययोर्थथासख्यं तिर्यङ्-मनुष्यायुषोरुत्कृष्टः प्रदेशोदयः । मलय. ३ ताप्रतौ 'पविट्ठो' इति पाठः ।

अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउअं बंधिय सम्मत्तं घेत्तूण पुणो दंसणमोहणीयं खइय अंतोमुहुत्तस्सुवरि संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीसु उदयमागच्छ-माणासु णेरइएसु उववण्णो, तस्स णिरयगइणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ । तिरिक्ख-गदिणामाए णिरयगदिभंगो । मणुमगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिम-समयभवामिद्वियस्स । देवगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेडिमीसयस्स से काले उदओ होहिदि त्ति मदस्स देवेसुप्पज्जिय पढमसमयदेवस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ ।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो' । आहार-सरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? पमत्तसंजदस्स उट्ठाविदआहारसरीरस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स जाधे गुणसेडिमीसयं उदयं अमपत्तं ताधे तेसि उक्कस्सओ पदेसउदओ, णत्थि अण्णा गुणसेडी ।

ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग - ओरालिय-तेजा- कम्मइय-सरीरबंधण-संघाद - पढमसंघडण-वण्ण - गंध-रम-फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद-

करनेके लिये प्रवृत्त हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो नारकायुको बांधकर व सम्यक्त्वको ग्रहण कर पुनः दर्शनमोहका क्षय करके अन्तर्मुहूर्तके ऊपर संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहक्षपक गुणश्रेणियोंके उदयमें आनेपर नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके नरकगतिनाम-कर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । तिर्यग्गति नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा नरकगति नामकर्मके समान है । मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । देवगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? अनन्तर कालमें जिसके प्रथम गुणश्रेणिशीर्षकका उदय होगा, इस स्थितिमें वर्तमान जो उपशान्त-कपाय मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नाम-कर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन और संघातकी प्ररूपणा देवगति-के समान है । आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन व संघातका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने आहारकशरीरको उत्पादित किया है तथा जो तत्प्रायोग्य विशद्विसे संयुक्त है ऐसे प्रमत्तसंयत जीवके जब गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त नहीं होता तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है, अन्य गुणश्रेणि नहीं होती ।

औदारिक, तेजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिक, तेजस व कार्मण शरीरबन्धन एवं संघात, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,

१ उवमतपढमगुणसेटीए निहादुग्गस्स तस्सेव । पावइ सीसगमुदयंति जाय देवस्स सुरनवगे ॥ क. प्र. ५, १२. X X X तथा तस्यैवोपशान्तकपायस्यात्मीयप्रथमगुणश्रेणीशीर्षकोदयमनन्तरसमये प्राप्स्यतीति तस्मिन् पाश्चात्ये समये जाते देवस्य, ततः प्रथमगुणश्रेणीशिरसि वर्तमानस्य सुरनवकस्य वैक्रियिकसप्तक-देवद्विकरूपस्यो-त्कृष्टः प्रदेशोदयः । मलय. २ आहारग-उज्जोयाणुनरतणु अप्पमत्तस्स ॥ क. प्र. ५, १८.

पसत्थापसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणगामाणमुक्कस्सओ पदेस-उदओ कस्स ? चरिमसमयमजोगिस्स । पंचणं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-मंजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ङ्खिय-संजदस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि तिण्णि वि उदयमागदाणि ताधे पंचणं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ । गिरयाणुपुव्वीए गिरयगइभंगो । तिरिक्खाणुपुव्वीए तिरिक्खगइभंगो । देवाणुपुव्वीए देवगइभंगो । मणुसाणुपुव्वीए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण मणुस्सेसु विग्गहं कादूणुववणस्स ।

उज्जोवणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो संजदो उत्तरसरीरं विउव्विदो अप्पमत्तभावं गदो तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । आदावणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो गुणितकम्मंमिओ मदो बीइंदिएसु बीइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण एइंदियत्तं गदो, तत्थ वि सच्चलहुअं एइंदियसमगं ठिदिमंतकम्मं कादूण बादरपुठवी-जीवेषु उववणो तस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । उस्सासस्स

प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण ; इन नामकर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होता है । शेष पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और अनन्तानु-बन्धिविभंयोजन रूप तोनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके स्थित संयतके जब तीनों ही गुणश्रेणि-शीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उन पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । नारकानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । तिर्यगानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यगगतिके समान है । देवानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है । मनुष्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमा-संयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षण स्वरूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके मनुष्यामें विग्रह करके उत्पन्न हुए जीवके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो संयत जीव उत्तर शरीरकी विक्रिया करके अप्रमत्त अवस्थाको प्राप्त हुआ है उसके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । आतप नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक मरणको प्राप्त होकर द्वीन्द्रियोंमें द्वीन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके एकेन्द्रियपनेको प्राप्त हुआ है, वहां भी सर्वलघु कालमें एकेन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । उच्छ्वासका

१ वेइंदिय थावरमो कम्मं काऊण तस्समं खिण्णं । आयावस्स उ तव्वेइ पढमसमयम्मि वट्ठतो ॥ क. प्र. ५, १९. गुणितकर्मांशः पंचेन्द्रियः सभ्यदृष्टिजातः, ततः सम्यक्त्वनिमित्ता गुणश्रेणिं कृतवान् । ततस्तस्या गुण-श्रेणीतः प्रतिपतितो मिथ्यास्त्वं गतः । गत्वा च द्वीन्द्रियमध्ये समुत्पन्नः । तत्र च द्वीन्द्रियप्रायोग्या स्थितिं मुक्त्वा शेषां सर्वात्म्यपवर्तयति । ततस्ततोऽपि मृत्वा एकेन्द्रियो जातः । तत्रैकेन्द्रियसमां स्थितिं करोति । शीघ्रमेव च शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः, तस्य तद्वेदिन आतपवेदिन खरबादरपृथ्वीकायिकस्य शरीरपर्याप्त्यनन्तरं प्रथमसमये

उक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? चरिमसमयउस्सासणिरोहकारयस्स । सुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? चरिमसमयवचिजोगणिरोहकारयस्स ।

पंचिंदियजादि-तस-वादर-पज्जत्त-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स । सर्व्वकम्मणं पिं जम्हि जम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति ण भणिदं तम्हि तम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति वत्तव्वं । चदुजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणमरीरणमुक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजमगुणसेडीओ एगट्ठं कादूण अप्पिदेमुप्पणस्स । अजमकित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णोचा-गोदाणमुक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवगगुण-सेडिसीसयाणिं तिण्णि वि एगट्ठं कादूण द्वियस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि उदयमागदाणि ताधे उक्कस्सओ पदेमउदओ ।

पंचणमंतराइयाणं उक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? चरिमसमयछदुमत्थस्स । तिथ्यरणामाए उक्कस्सओ पदेमउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धि-यस्स । एवमुक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्हमामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेमउदओ कस्स ? जो

उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती उच्छ्वासनिरोधकके होता है । सुस्वर और दुस्वरका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती वचनयोग-निरोधकके होता है ?

पचेन्द्रिय जाति, त्रस, वादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । सभी कर्मोंके जहां जहां 'गुणितकर्मांशिक' नहीं कहा है वहां वहां 'गुणितकर्मांशिक' कहना चाहिये । चार जाति नामकर्म, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम और संयम गुणश्रेणियोंको एकत्र करके विवक्षित जीवोंमें उत्पन्न हुए जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपक; इन तीनों ही गुणश्रेणिशीपकोंको एकत्र करके स्थित जीवके जब गुणश्रेणिशीपक उदयको प्राप्त होते हैं तब उक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है । तीर्थंकर नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह गुणित-कर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा— मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय

आतपनाम्नः उत्कृष्टः प्रदेशोदयः । एकेन्द्रियो द्वीन्द्रियस्थितिं झटित्येव स्वयोग्या करोति, न त्रीन्द्रियादिस्थिति-मिति द्वीन्द्रियग्रहणम् । मलय. १ अ-काप्रत्योः 'भवसिद्धियसव्व' इति पाठः । २ ताप्रती नोपलभ्यते पदमिदम् । ३ ताप्रती 'सजमगुणसेडीओ-दसणमोहणीयक्खवगसीसयाणि' इति पाठः ।

सुहुमणिगोदजीवेषु कम्मट्टिदिमच्छिदाउओ सच्चवेहि आवासएहि अभवसिद्धियपाओग्ग-
जहण्णयं काऊण तदो संजमामंजमं संजमं च बहुमो लडूण चत्तारिवारे कसाए
उवसामेदूण एइंदिएसु सुहुमेसु गदो, तत्थ य अमंखेज्जाणि वस्ससहस्माणि अच्छिदूण
मणुस्सेसु आगदो पुव्वकोडि^१ संजममणुपालेदूण अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो दमवास-
सहस्सिएसु देवेषु उववण्णो पुणो तत्थ सम्मत्तं घेत्तूण आउअमणुपालिय अंतोमुहुत्तावसेसे
मिच्छत्तं गदो वियट्टिदाओ ट्टिदीओ उक्कस्ससंकिलिट्टो एइंदिएसु गदो तस्स पढमसमयस्स
मदिआवरणस्स जहण्णगो पदेसउदओ । सुद-भणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-
केवलदंसणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ
पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स अपच्छिम^२ संजमभवग्गहणे वट्टुमाणगो सो
चेव अपरिवट्टिदेण सम्मत्तेण वेमाणिएसु उववण्णो मिच्छत्तं गदो अंतोकोडाकोडीदो
तीसंसागरोवमकोडाकोडीओ पक्खाओ जाधे उक्क० ट्टिदी आवलियपवट्टा ताधे ओहि-
णाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ । णिहा-पयलाणं जहण्णओ पदेस-

किसके होता है ? जो सूक्ष्म निगोद जीवोंमें कर्मस्थिति मात्र सूक्ष्म निगोदकी आयुके साथ रहकर
सब आवासों द्वारा अभव्यासिद्धिक प्रायोग्य जघन्य करके, तत्पश्चात् संयमामंयम और संयमको
बहुत बार प्राप्त करके, चार बार कपायोंको उपशमा कर सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें गया है और वहां
असंख्यात हजार वर्ष रहकर मनुष्योंमें आया है, यहां पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर
अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर दस हजार वर्ष मात्र आयुवाले देवोंमें उत्पन्न
हुआ है, पुनः वहां सम्यक्त्वको ग्रहणकर आयुको पालकर उसके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्व-
को प्राप्त होकर स्थितियोंका विकर्षण करना हुआ उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त हो एकेन्द्रियोंमें पहुंचा है
उसके प्रथम समयमें मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्यय-
ज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके
जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अर्वाधिज्ञानावरण और अर्वाधि-
दर्शनावरणका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके अन्तिम संयमभव-
ग्रहणमें वर्तमान है वही अपरिवर्तित सम्यक्त्वके साथ वैमानिक देवोंमें उत्पन्न होकर मिथ्यात्व-
को प्राप्त हो अन्तःकोड़ाकोड़िस तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंको बांधता है जब उत्कृष्ट स्थिति
आवली समयप्रवृद्ध मात्र होती है तब उसके अर्वाधिज्ञानावरण और अर्वाधिदर्शनावरणका जघन्य
प्रदेश उदय होता है । निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो जीव

१ अ-काप्रत्योः 'पुव्वकोडी' इति पाठः । २ पगयं तु खवियक्कम्मे जहन्नसामी जहन्नदेवट्टिइ । मिन्नमुहुत्ते
सेसे मिच्छत्तगत) अतिकिलिट्टो ॥ कालगएगिदियगो पढमे समये व मह-मुयावरणे । केवलदुग्ग-मणपज्जव-
चक्खु-अचक्खुण आवरणा ॥ क. प्र. ५, २०-२१. ३ का-ताप्रत्योः 'अपच्छिम' इति पाठः ।
४ ओहीणसजमाओ देवत्तगए गयस्स मिच्छत्तं । उक्कोसट्टिइयधे विकट्टुणा आलिंगं गंतुं ॥ क. प्र.
५, २२. आर्हाण त्ति- क्षपितकर्मांशः संयमं प्रतिपन्नः समुत्पन्नावधि-ज्ञानदर्शनेऽप्रतिपाततावधिज्ञानदर्शन एव
देवो जातः, तत्र चान्तर्मुहूर्तं गते मिथ्यात्वं प्रतिपन्नः । ततो मिथ्यात्वप्रत्ययेनोत्कृष्टा स्थिति वृद्धुमारभंत,

उदओ कम्म ? जो ओहिणाणावरणस्स जहण्णपदेसवेदओ तस्स चेव जाधे उक्कस्सट्ठिदिबंध-
गद्धा पुण्णा ताधे जो उक्कस्सट्ठिदिबंधादो पडिभग्गो संतो णिहं पयलं वा पवेदयदि
तस्स णिहा-पयलाणं जहण्णओ पदेसउदओ^१ । णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं
जहण्णओ पदेसुदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ दिट्ठो सो चेव जाधे
पज्जत्ति गदो [ताधे] तस्स एइंदियपज्जत्तीए पढमसमयपज्जत्तयस्स थीणगिद्धितियं
वेदयमाणस्स जहण्णओ पदेसउदओ^२ । सादासादाणं ओहिणाणावरणभंगो ।

मिच्छत्तस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? उदीरणउदयादो^३ उवरि आवलियं
गदस्स । सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तस्स य मिच्छत्तभंगो^४ । अणंताणुबंधीणं जहण्हओ
पदेसउदओ कस्स ? अभवमिद्धियपाओग्गजहण्णमंतकम्मं कादूण मम्मत्तं संजमासंजमं
संजमं च बहुओ लद्धूण चत्तारिवारे कसाए उवमामेदूण पुणो विसंजोइदं संजुत्तं कादूण
बेलावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं गदो, तस्स आवलियमिच्छाइट्ठिस्स अणंताणु-

अवधिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक है उसीका जब स्थितिवन्धकाल पूर्ण होता है तब
जो उत्कृष्ट स्थितिवन्धसे प्रतिभन्न होकर निद्रा अथवा प्रचलाका वेदन करता है उसके निद्रा और
प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिका जघन्य
प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसके मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय कहा गया है
वही जब पर्याप्तिको प्राप्त होता है [तब] एकेन्द्रिय पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें
उसके स्त्यानगृद्धिकका वेदन करते हुए उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है । साता और
असाता वेदनीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है ।

मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? उदीरणाउदयसे ऊपर आवलीको प्राप्त
हुए जीवके मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय होता है । सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वके जघन्य
प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य प्रदेश उदय
किसके होता है ? अभव्यसिद्धिकके योग्य जघन्य सत्कर्मको करके ; सम्यक्तव, संयमासंयम
और संयमको बहुत बार प्राप्त करके ; चार बार कषायोंको उपशमाकर, फिरसे भी विसंयोजित
संयुक्त करके (अनन्तानुबन्धी कषायोंको बांधकर) दो छयासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वको
पालकर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस आवली कालवर्ती मिथ्यादृष्टिके अनन्तानुबन्धी कषायों-

प्रभूतं च दलिकं विकर्षयति उद्धर्तयतीत्यर्थः । तत आवलिकां गत्वाऽतिक्रम्य बन्धावलिकायामतीतायामित्यर्थः,
अवधोरवधिज्ञानावरणावधिदर्शनावरणयोर्जघन्यः प्रदेशोदयः । मलय. १ताप्रती 'णिहा-पयले' इति पाठः ।
२ निद्रा-प्रचलयोरपि तथैव । केवलमुत्कृष्टस्थितिवन्धात् प्रतिभन्नस्य प्रतिपतितस्य निद्रा-प्रचलयोरनुभवितुं
लग्नस्य चेति द्रष्टव्यम् । उत्कृष्टस्थितिवन्धो हि अतिशयेन संक्लिष्टस्य भवति, न चातिसंक्लेशे वर्तमानस्य
निद्रोदयसम्भवः । तत उक्तं उत्कृष्टस्थितिवन्धात्प्रतिभन्नस्येति । क. प्र. ५, २३. (मलय.). ३ निद्रानिद्रा-
दयोऽपि तिस्रः प्रकृतयो जघन्यप्रदेशोदयविषये मतिज्ञानावरणवद्भावनीयाः । नवगमिन्द्रियपर्याप्त्या
पर्याप्तस्य प्रथमसमये इति द्रष्टव्यम्, ततोऽनन्तरसमये उदीरणाया सम्भवेन जघन्यप्रदेशोदयसम्भवात्,
क. प्र. ५, २४. (मलय.). ४ताप्रती 'उदीरणाउदयादो' इति पाठः । ५ दंमणमोहे तिविहे उदीरणुदये र
आलिगं गंतुं । क. प्र. ५, २५.

बंधीणं जहण्णओ पदेसउदओ^१ । अट्टण्णं कसायाणं चट्टण्णं संजलणाणं पुरिसवेद-हस्स-
रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो उवसंतकसाओ मदो देवो जादो
तस्स आवलियतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ । अरदि-सोगाणं जहण्णओ पदेस-
उदओ कस्स ? एदामिं पयडीणं जहा ओहिणाणावरणस्स परूवणा कदा तथा कायच्चा ।
इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जाव अपच्छिमसंजमभवग्गहणे त्ति ताव जहा
मदिआवरणस्स परूविदं तथा परूवेयच्चं । तदो अपच्छिमे संजमभवग्गहणे देसूणपुव्व-
कोडिं संजममणुपालेदूण सव्वजहण्णए जीविदसेसे मिच्छत्तं गदो, तदो देवीमु उववण्णो,
उप्पण्णपढममयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण अंतोकोडाकोडिवंधादो पण्णारसमागरोवम-
कोडाकोडीओ पवद्धाओ, तदो ताए देवीए जाधे पण्णारसमागरोवमकोडाकोडिड्ढिदी
पवद्धा तदो^२ बंधावलियचरिमसमए इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ^३ । णवुंसयवेदस्स
मदिआवरणभंगो ।

का जघन्य प्रदेश उदय होता है । आठ कषाय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय और
जुगुप्साका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उपशान्तकषाय मर करके देव हुआ है
उस आवली कालवर्ती तद्भवस्थके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है । अरति और शोक-
का जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? इन प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा जैसे
अवधिज्ञानावरणके सम्बन्धमें की गयी है वैसे करना चाहिये । स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेश उदय
किसके होता है ? अन्तिम संयमभवग्रहण तक जैसे मतिज्ञानावरणके सम्बन्धमें प्ररूपणा की गयी
है वैसे यहां प्ररूपणा करना चाहिये । तत्पश्चात् अपश्चिम संयमभवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल
तक संयमको पालकर जीवितके सबसे जघन्य शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् देवियों-
में उत्पन्न हुआ, वहां उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तःकोडाकोडि मात्र
बन्धकी अपेक्षा पन्द्रह कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण बन्ध किया, पश्चात् उक्त देवीके द्वारा जब
पन्द्रह कोडाकोडि सागरोपम मात्र स्थिति बांधी जाती है तब बन्धावलीके अन्तिम समयमें स्त्रीवेद-
का जघन्य प्रदेश उदय होता है । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है ।

१ चउरुवसमित्तु पच्छा सजोइय दीहकालममत्ता । मिच्छन्नाए आश्रित्ताए सजोवणां तु ॥ क. प्र.
५. २६. २ सत्तरसण्ह वि एवं उवसमइत्ता गए देवं ॥ क. प्र. ५, २५. तथाऽनन्नानुबन्धिषवर्जं द्वादशकषाय-
पुरुषवेद-हास्य-रति-भय-जुगुप्सारूपाः सप्तदश प्रकृतीरुपशमथ्य देवलोकं गतस्य एवमेवति उदीरणोदयचरममये
तामां सप्तदशप्रकृतीना जघन्यः प्रदेशोदयः । मलय. ३ ताप्रती 'कोडाकोडीओ पवद्धाओ ड्ढिदीआ तदो' इति
पाठः । ४ इत्थीए संजममये सव्वनिरुद्धमि गंतु मिच्छत्तं । देवीए लहुमिच्छी जेट्टिट्ठइ आल्लिगं गंतु ॥ क.
प्र. ५, २७. × × × × इयमत्र भावना— क्षपितकरमाशा काचित् स्त्री देशोना पूर्वकोटि यावत्संयम-
मनुपाल्यान्तर्मुहूर्ते आयुषोऽवशेषे मिथ्यात्वं गत्वा अनन्तरमवे देवी समुत्पन्ना, क्षीप्रमेव च पर्याप्ता । तत उत्कृष्टे
संकलेशे वर्तमाना स्त्रीवेदस्योत्कृष्टां स्थितिं वध्नाति, पूर्ववद्धा चोद्वर्तयति । तत उत्कृष्टबन्धारम्भात् परत
आवलिकायाश्चरमसमये तस्याः स्त्रीवेदस्य जघन्यः प्रदेशोदयो भवति । मलय.

णिरयाउअस्म जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णेहि जोग-
ट्टाणेहि तप्पाओग्गजहण्णियाए बंधगद्धाए आउअं पवद्धं, हेट्टिल्लीणं ट्टिदीणं णिसेयस्स
उकस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो^१ तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णो सव्वमहंत^२असादोदए
वट्टमाणस्स तस्स चरिमसमयणेरइयस्स^३ जहण्णपदेसउदओ । मणुस्साउअस्स जहण्णओ
पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णजोगट्टाणेहि तप्पाओग्गजहण्णबंध-
गद्धाए मणुस्साउअं पवद्धं हेट्टिल्लीणं ट्टिदीणं णिसेयस्स उकस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण
मदो तिपलिदोवमाउट्टिदिओ मणुस्सो जादो, असादोदया सव्वबहुआ सव्वचिरं^४ सादो-
दया वि मंदाणुभागा, तस्स तिपलिदोवमियस्स चरिमसमयतव्वभवत्थस्स जहण्णओ
पदेसउदओ । तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो । देवाउअस्स वि मणुसाउअभंगो । णवरि
देवेषु तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णस्स चरिमसमयतव्वभवत्थस्स वत्तव्वं ।

णिरयगइणामाए जाव दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो ।
तदो दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णेण पुणो सम्मत्तं लद्धं, अणंताणुबंधिचउकं विसंजोइदं,
अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो विकट्टिदाओ^५ ट्टिदीओ मदने एइंदिएसु उववण्णो, तत्तो

नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके
द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें नारक आयुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके
निपेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर मरणको प्राप्त हो जो तेतीस सागरोपम आयु-
वाले नारकियोंमें उत्पन्न होता हुआ सबसे महान् असाता वेदनीयके उदयमें वर्तमान है ऐसे नारकी-
के अन्तिम समयमें नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है । मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय
किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें
मनुष्यायुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निपेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार
बांधकर जो मरणको प्राप्त हो तीन पत्न्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है, जिसके
असातोदय सबमें बहुत व सर्वाचिर काल रहनेवाले तथा सातोदय भी मन्द अनुभागवाले हैं; उस
तीन पत्न्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें मनुष्यायुका
जघन्य प्रदेश उदय होता है । तिर्यगायुके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान
है । देवायुकी भी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । विशेष इतना है कि तेतीस सागरोपम आयु-
वाले देवोंमें उत्पन्न हुए उसके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें कहना चाहिये ।

नारकगति नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें
उत्पन्न होने' तक मतिज्ञानावरणके समान है । तत्पश्चात् दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें
उत्पन्न होकर फिरसे सम्यक्त्वको प्राप्त हो जिसने अनन्तानुबन्धिचतुष्कका विसंयोजन किया है,
अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हो स्थितियोंको विकर्षित करके मरकर

१ ताप्रतौ 'तदो' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'महत्त' इति पाठः । ३ अ-ताप्रत्योः चारिसमए णेरइयस्स'
इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'सव्वचिरं०' इति पाठः । ५ अपपद्धा-जोगप्पियाणाऊणुक्कस्समगट्टिईणंते । उवरि
योवनिसेगे चिरतिव्वासायवेईणं ॥ क. प्र. ५, २८. ६ ताप्रतौ 'विओकट्टिदाओ' इति पाठः ।

मदो असण्णीसु उववण्णो, तत्तो अंतोमुहुत्तेण णेरइओ जादो, तस्स सव्वाहि पञ्जत्तीहि पञ्जत्तयदस्स णिरयगइणामाए जहण्णओ पदेमउदओ^१ । तिरिक्खगइणामाए मदिआवरणभंगो । णवरि इगितीसवेदएसु उववज्जावेदव्वो । मणुसगइणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो । तदो एइंदियभवग्गहणादो मणुस्सो जादो, सव्वाहि पञ्जत्तीहि पञ्जत्तयदो, तस्स मणुसगइणामाए जहण्णओ पदेमउदओ । देवगदिणामाए ओहिणाणावरणभंगो । णवरि जाथे द्विदीओ विकट्टिदाओ ताथे उत्तरसरीरं विउव्विदो, उज्जोवणामाए वेदओ, तस्स देवगदिणामाए जहण्णओ पदेसुदओ^२ ।

वेउव्वियसरीरस्स^३ मदिआवरणभंगो । णवरि सो एइंदिओ सण्णितिरिक्खो होदण उज्जोवुदएण उत्तरं विउव्विदो, जाथे द्विदीओ विकट्टिदाओ ताथे जहण्णपदेसुदओ । ओरालियसरीरणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो । पुणो एइंदिएहितो तसेसु उववज्जावेयव्वो जेसु उववण्णो तीसण्णं पयडीणं वेदओ होदि । तदो जाथे तीसं वेदयदि ताथे ओरालियसरीरस्स जहण्णओ पदेसुदओ । चट्टुजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-तेजा-

एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है, उनमेंसे मरकर असंज्ञियोंमें उत्पन्न हुआ है, पश्चात् अन्तमुहूर्तमें नारकी हुआ है, उसके सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेपर नरकगति नामककर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है । तिर्यग्गति नामककर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुका वेदन करनेवाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये । मनुष्यगति नामककर्मकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' तक मतिज्ञानावरणके समान है । पश्चात् एकेन्द्रिय भवग्रहणसे मनुष्य उत्पन्न हुआ, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ, उसके मनुष्यगति नामककर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है । देवगति नामककर्मकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि जब स्थितियां विकर्षित की जाती हैं तब उत्तर शरीरकी विाक्रयाका प्राप्त होता हुआ उद्योत नामककर्मका वेदक होता है, तब उसके देवगति नामककर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

वैक्रायकशरीर नामककर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि वह एकेन्द्रिय जीव संज्ञी तिर्यच होकर उद्योतके उदयके साथ उत्तर शरीरकी विाक्रया करता है, वह जब स्थितियोंको विकर्षित करता है तब उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है । औदारिक शरीर नामककर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' पर्यन्त मतिज्ञानावरणके समान है । पश्चात् एकेन्द्रियोंमेंसे त्रसामें उत्पन्न कराना चाहिये, जिनमें उत्पन्न होकर तीस प्रकृतियोंका वेदक होता है । पश्चात् जब वह तीसका वेदन करता है तब उसके औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेश उदय होता है । चार जातियां, तैजस व कर्मण शरीर, तैजस

१ संजोयणा विजोत्रिय देवभवज्जहज्जगे अइनिरुद्धे । त्रिधिय उक्कस्समट्ठीं गंतूणेगिदिया सन्नी ॥ सव्वलहुं नरयगए निरयगई तम्मि सव्वपज्जत्ते । क. प्र. ५, २९-३०. २ देवगई ओहिसमा नवरिं उज्जोववेयगो ताथे । क. प्र. ५, ३१. ३ अ-काप्रत्यो: 'वेउव्वियसत्तयस्स' इति पाठः ।

कम्मइयसरीरबंधण-संघाद- छमंठाण-छमंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उज्जोव - उस्साम- पमत्थापमत्थविहायगइ -तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-मुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जमक्कित्ति-अजमक्कित्ति-णिमिणणामाणं ओगालियसरीरभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं जहण्णउदओ कम्म ? अभवमिद्वियपाओग्गजहण्णयं कादृण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण अपच्छिमे भवग्गहणे देसणपुच्चकोडिं संजममणुपालेउण आहारएण उत्तरसरीरं विउच्चिदो सव्वाहि पज्जत्तोहि पज्जत्तयदो, तस्स जहण्णओ पदेमउदओ ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्णओ पदेमउदओ कम्म ? पढमसमयतभवत्थस्स । आदावणामाए जहण्णओ उदओ कम्म ? मदिआवरणस्स खविदकम्मंसियविहाणेण आगंतूण जो आदावणामाए वेदएसु उववणो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पढम-समयपज्जत्तयदस्स जहण्णगो पदेमउदओ । एइंदिय-थावर-णीचागोदाणं मदिआवरण-भंगो । णवरि एइंदिय-थावराणं सव्वपज्जत्तयदो ।

सुहुमणामाए जहण्णगो पदेमउदओ कम्म ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ सो तस्मिह भवे खुदाभवग्गहणं जीविदृण सुहुमेइंदिएसु पज्जत्तएसु उववणो आणापाण-पज्जत्तीए पज्जत्तयदो, तस्स पढममए सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ । साहारणणामाए

व कामेण शरीरों सम्बन्धी बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पयोत्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और निर्माण; इन नामकर्मोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । आहारकशरीर, आहारकशरीरंगोपांग, आहारकशरीरबन्धन व संघातका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य [सत्कर्म] को करके, चार बार कपायोंको उपशमा कर अन्तिम भवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन कर आहारकशरीररूपमें उत्तर शरीरकी विक्रिया करके जो सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थके होता है । आतप नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? मतिज्ञानावरण सम्बन्धी क्षुपितकर्माशिकके विधानसे आकर जो आतप नामकर्मके वेदकोंमें उत्पन्न होकर आन-प्राणपर्याप्तसे पर्याप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तके उसका जघन्य प्रदेश उदय होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय और स्थावरका जघन्य प्रदेश उदय सर्व पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुए जीवके होता है ।

सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक उस भवमें क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो आनप्राणपर्याप्तसे पर्याप्त हुआ है उसके प्रथम समयमें सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

जहण्णगो पदेमउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेमवेदओ खुद्दाभवग्गहणं जीविऊण मदो साहारणकाइएसु उज्जीवणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पज्जत्तयदस्स पढमसमए साहारणसरीरणामाए जहण्णओ पदेसउदओ । तित्थयरणामाए जहण्णगो पदेमउदओ कस्स ? तप्पाओग्गेण जहण्णएण जोगेण वंधिय सव्वुक्कस्सियाहि गुणसेडिणिज्जराहि गालिय केवलणाणमुप्पाइय सजोगिपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णगो पदेमउदओ । उच्चागोद-पंचंतराइयाणं ओहिणाणावरणभंगो । एवं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो एयजीवेण कालो अंतरं णाणजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो चेदि अणियोगद्वाराणि सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वाणि ।

एत्तो अप्पावहुअं । ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ— मिच्छत्तस्स पदेसुदओ थोवो । सम्मामिच्छत्तस्स विसेसाहिओ । पयलापयलाए संखेज्जगुणो । णिहाणिहाए विसेसाहिओ । थीणगिद्धीए विसेमा० । अणंताणुबंधीसु अण्णदरस्स विसे० । अपच्चक्खाण० असंखे० गुणो । पच्चक्खाणावरणिज्ज० विसे० । पयलाए अमंखे० गुणो । णिहाए विसे० । सम्मत्ते अमंखे० गुणो । केवलणाणावरणे संखे० गुणो । केवलदंसणावरणे विसे० । देवाउअस्स अणंतगुणो । णिरयाउअस्स विसे० । मणुस्साउअस्स मंखे० गुणो । तिरिक्खाउअस्स

साधारण नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मके वेदक साधारण-कार्यिकोंमें उत्पन्न होकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्तक हुआ है उसके पर्याप्तक होनेके प्रथम समयमें साधारणशरीर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है । तीर्थकर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे उसे बांधकर व सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिनिर्जराओंके द्वारा गलाकर केवलज्ञानको उत्पन्न कर सयोगकेवलीके प्रथम समयमें वर्तमान जीवके तीर्थकर प्रकृतिका जघन्य प्रदेश उदय होता है । उच्चगोत्र और पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ।

यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । उसमें ओष उत्कृष्ट प्रदेश उदयका दण्डक— मिध्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । सम्यग्मिध्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी कपायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अपत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । देवायुका अनन्तगुणा है । नाराकायुका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका संख्यातगुणा है । तिर्यगायुका विशेष अधिक

विसे० । आहारसरीरणामाए अमंखे० गुणो । गिरयगइणामाए अमंखे० गुणो । तिरिक्ख-
गइणामाए विसे० । अजमगित्तीए विसे० । णीचागोदस्स संखे० गुणो । वेउच्चियमरीर-
णामाए अमंखे० गुणो । देवगइणामाए संखे० गुणो । दुगुंझाए अमंखे० गुणो । भय०
तत्तियो चेव । हम्म-सोग० विसेमा० । रदि-अरदि० विसे० । इत्थिवेदे^१ अमंखे० गुणो ।
णवुंमयवेदे^१ विसेमा० । पुरिसवेद० अमंखे० गुणो । कोधमंलणाए अमंखे० गुणो ।
माणसंजलणाए अमंखे० गुणो । माया० अमंखे० गुणो । ओगालियसरीर० अमंखे०
गुणो । तेजासरीर० विसेमाहिओ । कम्मइयसरीर० विसे० । मणुसगई० अमंखे०
गुणो । दाणंतराइयस्म अमंखे० गुणो । लाहंतराइयस्म विसेमा० । भोगंतरा० विसे० ।
परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइयस्म विसेमा० । ओहिणाणावरण० विसे० । मणपज्ज-
णाणावरण० विसे० । ओहिदंमणावरण० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण०
विसे० । अचक्खुदंमणावरण० विसे० । चक्खुदंम० विसे० । जमगित्तिणामाए विसेमा० ।
उच्चागोदस्स विसे० । लोभमंजलण० विसे० । सादामादानं विसे० । ओघुक्कस्मपदेमु-
दयदंडओ समत्तो ।

गिरयगईए उक्कस्सओ पदेमउदओ सम्मामिच्छत्तस्म थोवो । पयलाए मंखेज्ज-

है । आहारकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । नरकगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गति नामकर्मका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । वैक्रियकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । देवगति नामकर्मका संख्यातगुणा है । जगुप्साका असंख्यातगुणा है । भयका उतना मात्र ही है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तेजसशरीरका विशेष अधिक है । कामेणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका असंख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मन-पर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्ति नामकर्मका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । ओघ-उत्कृष्ट-प्रदेश-उदयदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

१. अ-काप्रत्योः 'वेदो' इति पाठः ।

गुणो । गिहाए विसे० । मिच्छत्तस्म असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । केवलणाणावरण० असंखे० गुणो । केवलदंसणावरण० विसेसा० । अपच्चक्खाणाव० विसे० । पच्चक्खाणावरण० विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । गिरयाउ० अणंतगुणो समय-पवद्धस्म संखे० भागो० । ओहिणाणावरण० संखे० गुणो । ओहिदंसणावर० विसे० । वेउव्वियमरीर० असंखे० गुणो । तेजामरीर० विसे० । कम्मइयमरीर० विसे० । गिरयगई० संखे० गुणो । अजमकित्ति० विसेमा० । णवुंगयवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्म० विसे० । मोग० विसे० । रदि० विसे० । अरदि० विसेमा० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खु० विसे० । [चक्खु० विसे० ।] संजलणकसाय० अण्णदर० विसे० । णीचागोद० विसे० । साद० विसे० । असाद० विसे० । एवं गिरयगईए उक्कस्मओ पदेमउदओ ममत्तो ।

तिरिक्खगईए उक्कस्मओ सम्मामिच्छत्तस्म पदेमउदओ थोवो । पयलाए संखे० गुणो । गिहाए विसेमा० । पयलापयला० विसे० । गिहाणिहा० विसे० । थीणगिद्धीए विसे० ।

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धीका संख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्याना-वरणका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । नारकायुका अनन्तगुणा है जो समयप्रवद्धके संख्यातवें भाग प्रमाण है । अवधिज्ञाना-वरणका संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका असं-ख्यातगुणा है । तैजस शरीरका विशेष अधिक है । कामेण शरीरका विशेष अधिक है । नरक-गतिका संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । धीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शना-वरणका विशेष अधिक है । [चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है ।] मंडवलनकपायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशउदय समाप्त हुआ ।

तिर्यग्गतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्वीक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है ।

मिच्छते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । केवलणाणावरण० असंखे० गुणो । केवलदंमणाव० विसे० । अपच्चक्खाणावर० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । सम्मत्त० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउच्चियमरीर० असंखे० गुणो । अजमगित्ति० असंखे० गुणो । इत्थिणवुंसयवेद० संखे० गुणो । उच्चागोद० संखे० गुणो । ओरालियमरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगदि० संखे० गुणो० । जमगित्ति० विसे० । पुरिमवेद० संखे० गुणो । दाणंतरइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसेमा० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाणावरण० विसे० । मणपञ्जव० विसेमाहिओ । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । मंजलणाए अणदरिस्से विसे० । णोचागोद० विसे० । मादासाद० दो वि तुल्ला विसे० । एवं तिरिक्खगईए उक्कस्संदडओ समत्तो ।

तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सपदेसउदओ सम्मामिच्छते^१ थोवो । पयलाए संखे० गुणो । णिहाए विसेमाहिओ । पयलापयलाए विसे० । णिहाणिहाए विसे० । थीण-

स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कपायोंमेंसे अन्यतरका संख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । स्त्री व नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तेजसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय व जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कपायोंमेंसे अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीय दोनोंका ही तुल्य व विशेष अधिक है । इस प्रकार तिर्यग्गतिमें उत्कृष्ट दण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यच योनिमतियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका

१ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'सम्मामिच्छतादो', ताप्रतौ 'सम्मामिच्छतादो' (तस्स) इति पाठः ।

गिद्धीए विसे० । मिच्छत्ते अमंखे० गुणो० । अणंताणुबंधी० संखे० गुणो । सम्मत्ते अमंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंमण० विसे० । अपचक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउन्वियसरीर० अमंखे० गुणो । ओरालियसरीर० अमंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसक्कित्ति-अजसक्कित्तीणं उदओ तुल्लो विसेमाहिओ । इत्थिवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतरा० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्म-मोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंमण० विसे० । मुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० । उच्च-णीच० उदओ तुल्लो विसे० । सादामादाणं विसे० । तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सओ पदेसुदयदंडओ ममत्तो ।

मणुमगईए उक्कस्सओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते विसे० । पयला-पयला० संखे० गुणो । णिद्वाणिद्वाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । अणंताणुबंधीणं

विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका संख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामेणशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यगगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । त्यागान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरण विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । उच्च व नीच गोत्रका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । तिर्यच योनिमतियोंमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिकमें मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें

१ ताप्रती 'अणंताणुबंधी० संखे० गुणो । केवलदंसण०' इति पाठः ।

विसे० । अपचक्रखाणकमाएसु अमंखे० गुणो । पचक्रखाणकमाएसु विसे० । पयलाए अमंखे० गुणो । णिदाए विसे० । मम्मत्ते अमंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंमण० विसे० । मणुस्माउ० अणंतगुणो । वेउच्चियमरीरणामाए अमंखे० गुणो । आहारमरीरस्म विसे० । अजमकित्तीए अमंखे० गुणो । णीचागांदे संखे० गुणो । भय-दुगुंला० अमंखे० गुणो । हस्म-मोग० विसेमा० । रदि-अरदीसु विसे० । इत्थिवेद० अमंखे० गुणो । णवुंमयवेद० विसे० । पुरिमवेद० अमंखे० गुणो । क्रोधसंजलणाए अमंखे० गुणो । माण० अमंखे० गुणो । माया० अमंखे० गुणो । ओरालियसरीरणामाए अमंखे० गुणो । तेजामरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुमगइ० अमंखे० गुणो । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतरा० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंमण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । जसकित्ति० विसे० । उच्चागोदे विसे० । लोहमंजलणाए विसे० । सादामादाणं विसे० । एवं मणुमगदीए उक्कम्मपदेमउदओ ममत्तो ।

देवगदीए उक्कम्मओ पदेमउदओ मम्मामिच्छत्ते थोवो । पयलाए संखे० गुणो ।

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कपायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । आहारशरीरका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । भय और जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनसायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तैजस-शरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । कार्मणशरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । ज्ञानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अर्वाधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अर्वाधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकांर्तिका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय समाप्त हुआ ।

देवगतिमें सम्यग्भिषयात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

णिद्वाए विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । अपच्चक्खाणकसाए अमंखे० गुणो । पच्चक्खाणकमाए विसे० । केवलणाण० अमंखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । मम्मत्ते असंखे० गुणो । देवाउ० अणंतगुणो । ओहिणाणावरण० संखे० गुणो । ओहिदंसणाव० विसे० । अजमगित्ति० अमंखे० गुणो । इत्थिवेद० संखे० गुणो । भयदुगुंठा० असंखे० गुणो । सोग० विसे० । हस्म विसे० । अरदि० विसे० । रदि० विसे० । पुरिमवेद० असंखे० गुणो । कोहमंजलणाए असंखे० गुणो । माणस्म अमंखे० गुणो । मायस्म असंखे० गुणो । लोभस्म असंखे० गुणो । वेउव्वियमरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । देवगई० संखे० गुणो । जमगित्ति० विसे० । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खुदं० विसे० । उच्चागोद० विसेमाहिओ । अमाद० विसे० । साद० विसे० । एवं देवगदीए उक्कस्सओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

अमणीसु उक्कस्सओ पदेसुदओ पयलाए थोवो । णिद्वाए विसे० । पयलापयलाए

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कपायोंमें अन्यतरका संख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका अमंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कपायमें अन्यतरका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । देवायुका अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । भय व जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । शोकका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । संज्वलनलोभका असंख्यातगुणा है । वैक्रियकशरीरका असंख्यातगुणा है । नेत्रसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष अधिक है । देवर्गातिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । असातावेदनीयका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार देवर्गातमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञियोंमें प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचला-

विसे० । णिहाणिहाए विसे० । थीणगिद्धीए विसेमा० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । अणंताणुबंधि० विसे० । णिरयगई० अणंतगुणो । देवगई० विसे० । मणुमगई० विसे० । देवाउ० असंखे० गुणो । णिरयाउं० विसे० । मणुमाउ० संखे० गुणो । उच्चागोद० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० संखे० गुणो । णिरय-देव-मणुमगईणं देव-णिरय-मणुस्माउ-आणमुच्चागोदस्स य कधमसण्णीसुदओ ? ण, असण्णिपच्छायदाणं णेरइयादीणंमुवयारेण असण्णित्तब्भुवगमादो । मणुमगइपदेसोदयादो देवाउआदीणं पदेसोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं ? ण, विगलिदिए मोत्तण पयदअमण्णिपंचिदिएसु चेव संचिददव्वग्गहणे तदविरोहादो । मणुस्माउअउक्कसोदयादो उच्चागोद-तिरिक्खाउआणमुक्कसोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं ? ण, बंधगद्धाए असंखेज्जगुणत्तेण च आवलियाए असंखेज्जदि-भागस्स अंतोमुहुत्तत्तममिद्धं, एदम्हादो चेव मुत्तादो तस्स तब्भावागिद्धीदो ।

प्रचलाका विशेष अधिक है । निदानिद्राका विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । केवलदशनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण-चतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नरकगतिका अनन्तगुणा है । देवगतिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवायुका असंख्यातगुणा है । नारकायुका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका संख्यातगुणा है ।

शंका— नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, देवायु, नारकायु, मनुष्यायु और उच्चगोत्रका उदय असंज्ञी जीवोंमें कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये हुए नारकी आदिकोंको उपचारसे असंज्ञी स्वीकार किया गया है ।

शंका— मनुष्यगतिके प्रदेशोदयकी अपेक्षा देवायु आदिकोंका प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि विकलेन्द्रियोंको छोड़कर प्रकृत असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें ही संचित द्रव्यका ग्रहण करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— मनुष्यायुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयसे उच्चगोत्र और तिर्यचआयुका उत्कृष्ट प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे है ?

समाधान— नहीं, बन्धककालके असंख्यातगुणे होनेसे भी आवलीके असंख्यातवें भागके अन्तर्मुहूर्तता असिद्ध है, इसी सूत्रसे ही उसके असंख्यातगुणत्व सिद्ध है ।

१ अप्रती 'णिरयगई०' इति पाठः । २ अप्रती 'णेरयादीणं', काप्रती 'णिरयादीणं', ताप्रती 'णेरयादीणं' इति पाठः । ३ ताप्रती असंखेगुणत्तं 'इति पाठः ।

सव्वमेदं होदु णाम, ण उच्चागोदादो तिरिक्खाउअस्स संखेज्जगुणत्तं; संखेजावलियमेत्तुच्चागोदममयपवद्धेसु दिवइद्दगुणहाणीए छिण्णोसु एगसमयवद्धस्स असंखे० भागुवलंभादो संखेजावलियडिण्णतिरिक्खाउअम्हि समयपवद्धस्स संखेज्जदिभागत्तुवलंभादो । ण च उव्वेलणाचरिमफालिदव्वे वि गहिदे संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे, तिस्से पलिदोवमस्स असंखे० भागपमाणत्तादो । जदि असणीसु उच्चागोदस्स उक्कस्समंचयं करिय वाउक्काइणमुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तुव्वेह्णणाए संखेजावलियमेत्तद्धिदिं ठविय अमणीसु-प्पज्जिय उच्चागोदोदइह्लेमुप्पज्जदि तो एदं घडदे । ण च उव्वेह्णकालो जहण्णओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो अत्थि, एइदिएहि आदत्तांद्धिदिखंडयाणमायामस्स पलिदोवमस्स असंखे० भागणियमुवलंभादो त्ति ? ण, सयलमुदविमयावगमे पयडि-जीवभेदेण णाणाभेद-भिण्णे असंते एदं ण होदि त्ति वोत्तुममक्कियत्तादो । तम्हा सुत्ताणुसारिणा सुत्ताविरुद्धं वक्खाणमवलंवेयव्वं ।

ओरालिय० संखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसक्कित्ति-अजमक्कित्ति० विसेमा० । अण्णदग्घेदे विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरि-

शंका—यह सब वैसा हो, किन्तु उच्चगोत्रकी अपेक्षा तिर्यच आयुके संख्यातगुणत्व सम्भव नहीं है; क्योंकि, संख्यात आवलियों मात्र उच्चगोत्रके समयप्रवद्धोंमें वेद गुणहानिका भाग देनेपर एक समयप्रवद्धका असंख्यातवां भाग पाया जाता है, तथा संख्यात आवलियोंसे भाजित तिर्यच आयुमें समयप्रवद्धका संख्यातवां भाग पाया जाता है। यदि कहा जाय कि उद्वेलनाकी अन्तिम फालिके द्रव्यको ग्रहण करनेपर तिर्यच आयुके संख्यातगुणत्व बन सकता है, तो यह भी ठीक नहीं है; क्योंकि वह (फालि) पर्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। यदि असंज्ञी जीवोंमें उच्चगोत्रके उत्कृष्ट मंचयको करके फिर वायुकायिक जीवोंमें उत्पन्न होकर अन्त-मुहूर्त उद्वेलना द्वारा संख्यात आवली मात्र स्थितिको स्थापित कर असंज्ञियोंमें उत्पन्न होकर उच्चगोत्रके उदय युक्त जीवोंमें उत्पन्न होता है तो यह घटित हो सकता है, परन्तु उद्वेलनाका काल जघन्य भी अन्तमुहूर्त मात्र नहीं है; क्योंकि, एकैन्द्रियोंके द्वारा प्रारम्भ किये गये स्थितिकाण्डकोंके आयामके पर्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होनेका नियम पाया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रकृतियों और जीवोंके भेदसे नाना भेदोंको प्राप्त हुए समस्त श्रुतविषयक ज्ञानके न होनेपर 'यह नहीं हो सकता' ऐसा कहना शक्य नहीं है। इस कारण सूत्रका अनुसरण करनेवाले प्राणीको सूत्रसे अविरोध व्याख्यानका अवलम्बन करना चाहिये।

तिर्यच आयुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशोदय संख्यातगुणा है। उससे तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कामणशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। अन्यतर वेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है।

१ अ-काप्रत्योः 'उच्चागोदइह्लेसु-' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'आदत्त' इति पाठः । ३ का-ताप्रत्योर्नोप-लभ्यते वाक्यमिदम् ।

यंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्म-मोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । मणपञ्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । ओहिदंमण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाणं अण्णयरस्स विसे० । णीचागोद० विसे० । सादामाद० विसेमाहिओ । एवममणीमुक्करमपदेसुदय-दंडओ ममत्तो ।

एत्तो जहण्णगो— जहण्णपदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । मम्मामिच्छत्ते अमंखे० गुणो । मम्मत्ते अमंखे० गुणो । अपच्चक्खाण० अमंखे० गुणो । पच्चक्खाण० विसे० । अणंताणु-वंधि० अमंखे० गुणो । पयलापयला० अमंखे० गुणो । णिहाणिहाण विसे० । थीण-गिद्धी० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयलाण विसे० । णिहाण विसे० । केवलदंमण० विसे० । दुगुंछा० अणंतगुणां । भय० विसे० । हस्म० विसे० । रदि० विसे० । पुरिसवेद० विसे० । संजलणस्स अण्णदग्गस्स विसे० । आहिणाण० अमंखे० गुणो । आहिदंमण० विसे० । णिरयाउ० अमंखे० गुणां । णेदं जुज्जेदं, एइंदियममयपवद्धमेत्तआहिदंमणावरण-जहण्णुदयादो अगुलस्स अमंखेज्जदिभागेणावड्ढिएगममयपवद्धमेत्तणिरयाउअजहण्णुदयस्स

भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कपायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंखी जावोंमें उक्तप्र प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य प्रदेशोदय दण्डक अधिकार प्राप्त है— वह जघन्य प्रदेशोदय मिथ्यात्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्या-नावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलाका असंख्यात-गुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानर्गाद्धका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । जुगुप्साका अनन्तगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्य-तरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । नारकायुका असंख्यातगुणा है ।

शंका— यह याग्य नहीं है, क्योंकि एकेन्द्रियके समयप्रबद्ध मात्र जो अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेशोदय है उसकी अपेक्षा अंगुलके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित एक समयप्रबद्ध

अमंखेजगुणत्तविरोहादो ? ण, ओकडुक्कडुणाए विणा अवट्टिदट्टिदिपदेममंतकम्मे विव-
क्खिदे दिवडडगुणहाणिभागहारुववत्तीए । ण च एमो अत्थो पारमत्थिओ, ओकडु-
क्कडुणाहि हेट्टुवरि पक्खित्ते पदेमग्गणिसेगस्स अमंखेजलोगभागहारे संते विरोहा-
भावादो । तम्हा उभयत्थ जदि वि भागहारो अंगुलस्स अमंखेजदिभागो तो वि थोववहुत्तं
सुत्तबलेण अवगंतव्वं ।

देवाउ० विसे० । तिग्गिक्खाउ० अमंखे० गुणो । मणुस्माउ० विसे० । ओरालिय०
अमंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । वेउअव्वय० विसे० । तिग्गिक्खगइ०
मंखे० गुणो । जमक्कित्ति-अजमक्कित्ति० दो वि तुल्ला विसे० । देवगइ० विसे० ।
मणुमगइ० विसे० । णिरयगइ० विसे० । मोग० मंखे० गुणो । अरदि० विसे० ।
इत्थिवेद० विसे० । णचुंमयवेद० विसे० । दागंतराइय० विसे० । लाहंतराइय०
विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतरा० विसे० । मणपजव०
विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिआवरण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु०
विसे० । उच्चागोदे विसे० । णीचागोदे विसे० । सादामादेसु विसे० । एवमोघजहण्ण-
पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मात्र नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयके असंख्यातगुणे होनेमें विरोध है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि अपकर्षण-उत्कर्षणके बिना अवस्थित स्थितिवाले प्रदेशसत्कर्मकी
विवक्षा होनेपर देह गुणहानि भागहार बन जाता है । परन्तु यह अर्थ पारमाथिक नहीं है,
क्योंकि, अपकर्षण-उत्कर्षण द्वारा नीचे ऊपर प्रक्षेप करनेपर प्रदेशाग्र सम्बन्धी निपेक्षका असंख्यात
लोक भागहार होनेमें कोई विरोध नहीं है । इस कारण दोनों स्थानोंमें यद्यपि भागहार अंगुलका
असंख्यातवां भाग है तो भी उनमें सूत्रबलसे स्तोक्ता व अधिकता नमझनी चाहिये ।

नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयसं देवायुका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है । तिर्यंच
आयुका असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुका विशेष अधिक है । आंतरिकशरीरका असंख्यात-
गुणा है । तेजस शरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिक-
शरीरका विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है । यशस्कर्ति व अयशस्कर्ति दोनोंका
भी तुल्य विशेष अधिक है । देवगतिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है ।
नरकगतिका विशेष अधिक है । शोकका संख्यातगुणा है । अरतिका विशेष अधिक है । त्रावेदका
विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभा-
न्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक
है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञाना-
वरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदशनावरणका विशेष
अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका
विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघ जघन्य
प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असं० गुणो । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाणा० असंखे० गुणो । केवलदंसणा० विसे० । पयलाए विसे० । णिदाए विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाणावरण० अणंतगुणो । ओहिदंसणावरण० विसे० । णिरयाउ० असंखे० गुणो । वेउच्चिय० अणंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसेमा० । णिरयगइ० संखे० गुणो । अजमक्कित्ति० विसे० । दुगुंछा० संखे० गुणो । भय० विसे० । मोग० विसे० । हस्म० विसे० । अरदि० विसे० । रदि० विसे० । णवुंमयवेद० विसे० । दाणंतगइय० विसे० । लाहंतग० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरगइय० विसे० । वीरिग्यंतराइय० विसे० । मणपज्व० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसेमा० । चक्खुदं० विसे० । मंजलण० विसे० । णाचागोद० विसे० । अमाद० विसे० । माद० विसेमाहिओ । एवं णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ ममत्तो ।

तिरिक्खगईए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे०

नरकगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । नारकायुका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामणशरीरका विशेष अधिक है । नरकगतिका संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । असातावेदनीयका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा

गुणो । पयलाए विसे० । णिहा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिहाणिहाए विसे० ।
 थीणगिद्धी० विसे० । केवलदं० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० ।
 ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंम० विसे० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । ओरा-
 लिय० अमंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । वेउ० विसे० । तिग्गिक्खगइ०
 संखे० गुणो । जमक्कित्ति-अजमक्कित्ति० विसे० । दुगुंछाए संखेज्जगुणो । भये विसे० ।
 हस्स० विसे० । मोगे' विसे० । रदि-अरदीसु विसे० । णवुंमयवेदे विसे० । इत्थि-पुरिम-
 वेदे विसे० । दाणंतराइय० विसेमा० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० ।
 परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतराइय० विसेसा० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण०
 विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० ।
 गीचागोद० विसे० । उच्चागोद० विसेमा०, ख्विदकम्मंमिग्रलक्खणेणागंतूण मण्णासु-
 प्पज्जिय संजमामंजमं घेत्तण पुणो मिच्छत्तं पडिवज्जिय गुणसेडीओ गालिय पुणो वि
 संजमामंजमं पडिवज्जिय आवलियमंजदामंजदस्स उदयट्ठिदिग्गहणादो । मादामादाणं

है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष
 अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगुद्धिका
 विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें
 अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवावि-
 ज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । निर्यचआयुका असं-
 ख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तेजसशरीरका विशेष अधिक है ।
 कामणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । निर्यचगतिका संख्यात-
 गुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका
 विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । रति और अरतिका
 विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । स्त्री और पुरुष वेदका विशेष अधिक है ।
 दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष
 अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्यय-
 ज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष
 अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है ।
 संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका
 विशेष अधिक है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिकस्वरूपसे आकर, संज्ञियोंमें उत्पन्न होकर, संयमा-
 संयमको ग्रहणकर, फिर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर, गुणश्रेणियोंको गलाकर, फिरसे भी संयमा-
 संयमको प्राप्त होकर आवली मात्र संयतासंयतकी उदयस्थिति यहां ग्रहण की गयी है । उच्चगोत्रके
 जघन्य प्रदेशोयसे साता व असाता वेदनीयका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है । इस प्रकार

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रती 'दुगुंछाए० विसे० मोगे०', काप्रती 'दुगुंछाए विसेमं गए मोगे०', ताप्रती
 'दुगुंछाए संखेज्जगुणो । मोगे' इति पाठः ।

विसेमाहियो । एवं तिरिक्खगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुमगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । मम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । मम्मत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुवंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे० गुणो । पयलाए विसे० । णिहाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिहाणिहाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंमणावरण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंम० विसे० । मणुस्माउअ० असंखे० गुणो । ओरालियमरीर० असंखे० गुणो । वेउ० विसे० । तेया० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुमगईए मंखे० गुणो । जमकित्ति-अजमकित्ति० विसेमाहियो । दुगुंछाए मंखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसे० । अण्णदरवेदे तुल्ला विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपजवणाणावरणे विसे० । सुदणाणावरणे विसे० । मदिआवरणे विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चणीच० विसे० । सादामाद० विसे० । आहारमरीर० असंखे० गुणो । तिन्ययर० असंखे० गुणो । एवं मणुमगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

निर्यचगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निन्द्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका तुल्य विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । ऊंच व नीच गोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । आहारशरीरका असंख्यातगुणा है । तीर्थकरप्रकृतिका असंख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगदीए जहण्णओ पदेशुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अपच्चक्खाणे असंखे० गुणो । पच्चक्खाणे विसेमा० । अणंताणु-
वंधि० असंखे० गुणो । केवलणाणावरणे असंखे० गुणो । पयलाए विसे० । णिहाए
विसे० । केवलदंस० विसे० । दुगुंछाए अणंतगुणो । भय० विसे० । हम्मस० विसे० ।
रदि० विसे० । पुरिसवेदे० विसे० । संजलणाए अण्णदर० विसे० । ओहिणाण० असंखे०
गुणो । ओहिदंमण० विसे० । देवाउ० असंखे० गुणो । वेउच्चियमरीर० असंखे० गुणो ।
तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । देवगइ० असंखे० गुणो । जसक्कितीए विसे० ।
अजसक्कितीए विसे० । सोगे संखे० गुणो । अरदि० विसे० । इत्थिवेद० विसे० । दाणं-
तरा० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० ।
वीरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदि० विसे० ।
अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चागोदे विसे० । सादासाद० तुल्लो विसे-
साहिओ । एवं देवगईए जहण्णपदेशुदयदंडओ समत्तो ।

असण्णीसु जहण्णओ पदेशुदओ मिच्छत्ते थोवो सासणपच्छायदं पडुच्च उदीरणो-
दओ त्ति । अणंताणुवंधि० असंखे० गुणो । केवलणाणा० असंखे० गुणो । पयला०

देवगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा
है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा
है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें अन्य-
तरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है ।
निद्राका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । जुगुप्साका अनन्तगुणा
है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुष-
वेदका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका
असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । देवायुका असंख्यातगुणा है ।
वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तेजसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष
अधिक है । देवगतिका असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका
विशेष अधिक है । शोकका संख्यातगुणा है । अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका विशेष
अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्त-
रायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक
है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मति-
ज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका
विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका तुल्य विशेष अधिक
है । इस प्रकार देवगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञी जीवोंमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है, यह सासादन गुणस्थानसे
दीछे मिथ्यात्वमें आये हुए जीवकी अपेक्षा उदीरणोदय स्वरूप है । अनन्तानुबन्धचतुष्कमें

विसे० । णिहाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिहाणिहा० विसे० । थीणगिद्धीए
 विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । णिरयाउ०
 अणंतगुणो । देवाउ० विसेमा० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । मणुमाउ० विसेसा० ।
 ओरालियमरी० असंखे० गुणो । तेजा० विसेसाहिओ । कम्मइय० विसे० । वेउब्बिय०
 विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जमक्कित्ति-अजमक्कित्ति० विसे० । मणुसगई०
 विसे० । देवगई० विसे० । णिरयगई० विसे० । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० ।
 हस्स-मांगे विसे० । रदि-अरदि० विसेमा० । अण्णदरवेदे विसे० । दाणंतराइय०
 विसे० । लाहंतरा० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा०
 विसे० । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाणा० विसे० । मुदणाण० विसे० । मदि० विसेमा० ।
 ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । मंजलणाए विसे० ।
 णीचागोदे० विसे० । उच्चागादे विसे० । सादामादाणं विसेमा० । एवममण्णिपंचिदिएमु
 जहण्णां पदेमुदयदंडओ समत्ता ।

एत्तो भुजगारपदेमउदओ । तत्थ अट्टपदं— जमेण्हि पदेसग्गमुदिणं तत्तो

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नारकायुका अनन्तगुणा है । देवायुका विशेष अधिक है । तिर्यचआयुका असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुका विशेष अधिक है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है ; मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवगतिका विशेष अधिक है । नरगतिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

यहां भुजाकार प्रदेशोदयका अधिकार है । उसमें अर्थपद कहा जाता है— इस समय

अणंतरउवरिमसमए बहुपदेसग्गे उदिदे एमो भुजगारो णाम । जमेण्हपदेसग्गमुदिदं
अणंतरउवरिमसमए तत्तो थोवदरे पदेसग्गे उदयमागदे एमो अप्पदरउदओ णाम ।
तत्तिए तत्तिए चेव पदेसग्गे उदयमागदे अवट्टिदउदओ णाम । अणंतरादीदसमए
उदएण विणा एण्हिमुदयमागदे एसो अवत्तव्वउदओ णाम । एदेण अट्टपदेण सामित्तं ।
तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदउदओ कस्स ? अण्णदरस्स ।
एवं सव्वकम्मणं । णवरि जासिं पयडीणमवत्तव्वमत्थि तं जाणिय वत्तव्वं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगारउदओ केवचिरं कालादो
होदि ? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अप्पदरउदओ केवचिरं० ?
जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवट्टिदवेदगो केवचिरं० ?
जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा ममया । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं
मदिआवरणभंगो ।

अचवखु ओहि-केवलदंसणावरणाणं पि मदिआवरणभंगो । णिहाए अवट्टिदवेदगो
केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा ममया । भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं० ?

जो प्रदेशाप्र उदयको प्राप्त है उससे अनन्तर आगेके समयमें बहुत प्रदेशाप्रके उदित होनेपर यह भुजाकार प्रदेशोदय कहा जाता है । जो इस समय प्रदेशाप्र उदित है उससे अनन्तर आगेके समयमें स्तोकतर प्रदेशाप्रके उदयको प्राप्त होनेपर यह अल्पतर प्रदेशोदय कहलाता है । उतने उतने मात्र प्रदेशाप्रके उदयको प्राप्त होनेपर अवस्थित प्रदेशोदय कहलाता है । अनन्तर वीते हुए समयमें उदयके विना इस समय उदयको प्राप्त होनेपर यह अवक्तव्य उदय कहा जाता है । इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वका कथन किया जाता है । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदय किसके होता है ? वह अन्यतर जीवके होता है । इसी प्रकारसे सब सब कर्मोंके सम्बन्धमें स्वामित्वका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि जिन प्रकृतियोंका अवक्तव्य प्रदेशोदय है उसका कथन जानकर करना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है । उसका अल्पतर उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है । उसका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है ।

अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी भी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्राका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है । उसका भुजाकार और अल्पतर वेदक कितने काल

जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तो । एवं सेमचदुण्णं दंमणावरणीयपयडीणं । सोलस-
कसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिदाभंगो । सादस्म भुजगार-अप्पदरउदओ
केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा^१ । अवट्टिदउदओ केवचिरं० ? जह०
एगसमओ, उक्क० संखे० समया । असादस्म भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं० ?
जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवट्टिद० जह० एगसमओ, उक्क०
संखेज्जा समया ।

सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।
अवट्टिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । सम्मत्त० भुजगारवेदग० जह०
एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्टिमागरोवमाणि
देसणाणि । मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । तिण्णं
पि वेदाणं मदिआवरणभंगो । णिरयाउअस्स अप्पदर-अवत्तव्वपदाणि अत्थि, सेसपदाणि
णत्थि । तेण तत्थ कालो सुगमो । मणुस्साउअस्स भुजगारवेदओ^२ जह० एगसमओ,
उक्क० अंतोमु० विसेसाहिओ, गोवुच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीहत्तादो ।
अवट्टिदवेदगो जह० एगसमओ, उक्क० अट्टममया । मणुस्साउअस्स अप्पदरउदओ जह०

रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है । इसी प्रकार शेष
चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । सोलह कपाय, हास्य, रति, अरति,
शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है । साता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर
उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास रहता
है । उसका अवस्थित उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे
संख्यात समय मात्र रहता है । असाता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता
है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है । उसका
अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र होता है ।

सम्यग्मिध्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्त-
मुहूर्त मात्र होता है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय
मात्र होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त
मात्र रहता है । उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम लघासठ
सागरोपम मात्र होता है । मिध्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और
उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । तीनों भी वेदोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है ।
नारकायुके अल्पतर और अवक्तव्य ये दो पद हैं, शेष पद नहीं हैं । इस कारण उसके विषयमें
कालप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्त-
मुहूर्त विशेष अधिक काल तक रहता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भी गोपुच्छरचना अन्तर्मुहूर्त दीर्घ होती
है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय मात्र रहता है । मनुष्यायु-

१ अप्रती 'उक्क० अंतोमुहुत्तं छम्मासा' इति पाठः । २ अप्रती 'भुजगारउदओ' इति पाठः ।

एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि समऊणाणि । तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो । देवाउअस्स णिरयाउअभंगो ।

णिरयगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० मंखेज्जा समया । मणुमगइ-तिरिक्खगइ-देवगइणामाणं णिरयगइभंगो ।

ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयमरीरणं मदिआवरणभंगो । आहारसरीरस्स णिदाए भंगो । समचउरससंठाण-वज्जरिसहणारायणमंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-अलहुअ-उवघाद-परघाद-पमत्थापमत्थविहायगइ-तम-वादर-पज्जत्त - पत्तेयमरीर-थिराथिर-सुहासुह - सुभग-दुभग-सुस्वर-दुस्वर-आदेज्ज - अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति- णिमिणुच्चा-गोद-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो । चदुसंठाण-पंचमंघडणाणं भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसणा । अवट्ठिदं सुगमं । हुंडसंठाण-णीचागोदाणं मदि-आवरणभंगो । उज्जावणामाए भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-माहारणाणं भुजगारो अप्पदरो वा उक्क० अंतोसुहुत्तं । सेसं सुगमं । एसुवदेसो णागहत्थिखमणाणं ।

का अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तीन पल्योपम मात्र रहता है । तिर्यंच आयुकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है ।

नरकगति नामकर्मका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है । उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय रहता है । मनुष्यगति, तिर्यंचगति और देवगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है ।

औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कामेण शरीरनामकर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । आहारशरीरकी प्ररूपणा निद्राके समान है । समचतुरन्ध्रसंस्थान, वज्रपेभनाराच-संहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । चार संस्थान और पांच संहननोंका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र रहता है । उनके अवस्थित उदयकी प्ररूपणा सुगम है । हुण्डकसंस्थान और नीचगात्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । उद्योत नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यात-वें भाग मात्र रहता है । आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंका भुजाकार और अल्पतर उदय उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है । शेष प्ररूपणा सुगम है । यह उपदेश नागहस्ती श्रमणका है ।

अण्णेणं उपपसेण मदिआवरणस्म भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि सव्वट्ठे^१। अप्पदरवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि णेरइयस्सं संकिलेसेण । सुद मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चदुण्णं दंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो । अमादस्म भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । अप्पदर० पलिदो० असं-खेज्जदिभागो । णिरयगइणामाए भुजगारवेदओ अप्पदरवेदओ वा तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । णिरयगइणामाए अप्पदरवेदयकालस्स साहणं^२ वुच्चदे । तं जहा— णिसेय-गुणहाणिट्ठाणाणंतरं थोवं । जोगट्ठाणेषु जीवगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । मणुमगइणामाए तिरिक्खगइणामाए च भुजगारो अप्पदरो^३ च तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि । देवगइणामाए भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । ओरालिय-सरीर-तदंगोवंग-बंधण-मंघादाणं पढममंघणस्स मणुमगइभंगो । वेउव्वियमरीर-वेउव्विय-मरीरअंगोवंग-बंधण-मंघादाणं देवगइभंगो । सव्वासिं धुवबंधपयडीणं परघादुस्साम-पसत्थमिहायगइ-तम-वादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्वर-आदेज्ज-जमक्कित्तीणं च देवगइभंगो । अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं णिरयगइभंगो । उज्जोवणामाए ओरालियमरीरभंगो । उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरण-

अन्य उपदेशके अनुसार मतिज्ञानावरणके भुजाकार वेदकका काल सर्वार्थसिद्धिमें कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसके अल्पतर वेदकका काल नारकीके संक्लेशके कारण संख्यात वर्ष अधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवल-ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । आसाता-वेदनीयके भुजाकार वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है । उसके अल्पतर वेदकका काल पल्योपमके असंख्यातधे भाग मात्र है । नरकगति नामकर्मके भुजाकारवेदक व अल्पतर वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है । नरकगति नामकर्मके अल्पतर वेदकके कालका साधन कहा जाता है । वह इस प्रकार है — निपेकगुणहानिस्थानोंका अन्तर स्तोत्र है । योगस्थानोंमें जीव-गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्म और तिर्यंचगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तीन पल्योपम काल मात्र रहता है । देवगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है । औदारिकशरीर व उसके आंगोपांग, बन्धन और संघातका तथा प्रथम संहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरआंगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा देव-गतिके समान है । सत्र ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी तथा परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा भी देव-गतिके समान है । अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयश-कीर्तिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान

१ अप्रती 'अणेण' इति पाठः । २ ताप्रती 'देसूणाणि । सव्वट्ठे' इति पाठः । ३ ताप्रती 'वस्सब्भहियाणि । णेरइयस्स' इति पाठः । ४ मप्रती 'साहणं' इति पाठः । ५ अ-काप्रत्योः 'भुजगारवपदरो' इति पाठः ।

भंगो । णीचागोदस्स भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीमं सागरो० देवणाणि । एदम्हि उवदेसे जाणि कम्माणि ण भणिदाणि तेसिं कम्माणं णत्थि दो उवदेसा, पढमेण चैव उवदेसेण ताणि णेयव्वाणि ।

एयजीवेण अंतरं^२ पवाइज्जंतेण उवएसेण वत्तइस्सामो । तं जहा— णाणावरणस्स भुजगारवेदयंतरं अप्पदरवेदयंतरं वा जह० एगममओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवट्ठिदवेदयंतरं जह० एयममओ, उक्क० अणंतकालं । चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णाणावरणभंगो । सव्वकम्माणमवट्ठियवेदयंतरस्स वि णाणावरणभंगो । सेमाणं कम्माणं भुजगार-अप्पदरवेदयंतरं पगदिउदयादो भुजगारकालादो^३ च साधेऽण भाणियव्वं । णाणाजीवेहि कालो अंतरं सण्णियामो च एत्थ कायव्वो ।

एत्तो अप्पावहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्ठिदवेदया थोवा । अप्पदरवेदया अणंगुणा । भुजगारवेदया संखेज्जगुणा । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो । णिदाए अवट्ठिदवेदया थोवा । अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा । अप्पदरवेदया असंखे० गुणा । भुजगारवेदया संखे०

है । उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । नीचगोत्रका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है । इस उपदेशमें जिन कर्मोंका कथन नहीं किया गया है उन कर्मोंके विषयमें दो उपदेश नहीं हैं, उनको प्रथम ही उपदेशके अनुसार ले जाना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा प्रवाहस्वरूपसे आये हुए उपदेशके अनुसार की जाती है । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणके भुजाकारवेदक और अल्पतरवेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । उसके अवस्थित-वेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है । चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अन्तरकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सब कर्मोंके अवस्थितवेदकके अन्तरकालकी भी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । शेषकर्मोंके भुजाकार व अल्पतर वेदकोंके अन्तरकालका कथन प्रकृतिउदय और भुजाकारकालसे सिद्ध करके करना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर और संनिकर्षका भी कथन यहाँपर करना चाहिये ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अर्वाधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्राके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं ।

१ ताप्रती 'चैव [दो] उवदेसेण' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'अंतरे' इति पाठः । ३ प्रतिपु '-कालो' इति पाठः ।

गुणा । पयला-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादामाद-सोलसकसाय-हस्म-रदि-अरदि-भोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो । मिच्छत्तस्म अवत्तव्ववेदया थोवा । अवट्टिदवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । सम्मत्तस्स अवट्टिदवेदया थोवा । भुजगारवेदया संखे० गुणा । अवत्तव्ववेदया अमंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स अवट्टिद० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० अमंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । णवुंसयवेदस्स^१ मिच्छत्तभंगो । इत्थि-पुरिसवेदानं अवट्टिदवेदया थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसेमा० ।

देव-णेरइयाउआणं अवत्तव्ववेदया थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । मणुमाउअस्स^२ अवट्टिद^३ थोवा । अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा । भुजगार० अमंखे० गुणा । अप्पदर-वेदया संखे^४ गुणा । तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्ववेदया थोवा । अवट्टिदवेदया अणंतगुणा । भुजगारवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

णिरयगइणामाणं अवट्टिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० अमंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाणं अवत्तव्व० थोवा । अवट्टिद० अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । मणुमगइणामाणं अवट्टिद० भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्यानगृद्धि, सातावेदनीय, असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है । मिथ्यात्वके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक, संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं ।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । मनुष्यायुके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं । तिर्यचआयुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।

नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यचगति नामकर्मके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार-

१ सत्कर्मपञ्जिकायां 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'णवुंसयवेदयस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'असंखे० गुणा । । मणुमाउअस्स' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'उच्चागोद०', ताप्रतौ 'उच्चागोद० (अवट्टिद०)' इति पाठः । ५ सत्कर्मपञ्जिकाया 'अस०' इति पाठः ।

थोवा । अवत्त्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० विसे० । भुजगार० असंखे० गुणा । देवगदिणामाए अवट्टिद० थोवा । अवत्त्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसे० । ओरालियमरीर-हुंडसंठाण-परघाद-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम-साहारण-जसकित्ति-अजसकित्तीणं अवट्टिद० थोवा । अवत्त्व० अणंतगुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाणाणं देवगइभंगो ।

जाओ पयडीओ ध्रुवबंधीओ ताणमवट्टिदवेदया थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । अमंपत्तसेवट्टु० अवट्टिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवत्त्व० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । चदुण्णं संठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च अवट्टिय० थोवा । अवत्त्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । णिरयाणुपुव्वीणामाए अवट्टिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसे० । अवत्त्व० विसे० । एवं देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए । मणुस्साणुपुव्वीणामाए अवट्टिय० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवत्त्व० विसे० । अप्पदर० विसेसा० । एवं तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए । णवरि भुजगार० अणंतगुणा ।

आदाव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सरणामाणं अवट्टिदवेदया थोवा । अवत्त्व० असंखे०

वेदक संख्यातगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं । औदारिकशरीर, हुण्डकसंस्थान, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, बादर, सूक्ष्म, साधारण, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिकशरीर और समचतुरस्रसंस्थानकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ।

जो प्रकृतियां ध्रुवबंधी हैं उनके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । असंप्राप्तासृपाटिकासंहननके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । चार संस्थानों आर पांच संहननोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । नारकानुपूर्विके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं । अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा करना चाहिये । मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं । अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार तिर्यगानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि उसके भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं ।

आतप, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वर नामकर्मोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं ।

गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्खगइभंगो । अपज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० अणंतगुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । सुस्सरणामाए अवट्ठिय० थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । पज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० अणंतगुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

द्विदीणं^१ बंधेण ओकइडुकडुणाए [च] पदेसुदयस्स वड्ढी हाणी वा होदि, एदेण हेदुणा पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसं^२ अप्पावहुअं भवदि । तं जहा— गिरयगइणामाए थोवा अवट्ठिय० । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा^३ । भुजगार० असंखे० गुणा । एदेण अणुमाणेण मग्गिदूणं^४ सव्वकम्माणं णेयव्वं । एदं पुणो हेदुणा अप्पावहुअं ण पवाइज्जदि^५ । एवं पदेसभुजगारो समत्तो ।

एत्तो पदणिक्खेवो— मदिणाणावरणस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंमिओ अप्पाए सम्मत्तद्वाए संजमद्वाए च सव्वलहुं चरिमसमयल्लदुमत्थो जादो तस्स चरिम-

अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । स्थावर, दूभग, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा तिर्यचगतिके समान है । अपयोम नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं । गुस्वर नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । पर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।

स्थितियोंके बन्ध, अपकर्षण और उत्कर्षणसे प्रदेशोदयकी वृद्धि और हानि होती है; इस हेतुसे प्रदेशोदय सम्बन्धी भुजाकारके विषयमें अन्य प्रकार अल्पबहुत्व होता है । यथा— नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । इस अनुमानसे खोजकर सब कर्मोंके उक्त अल्पबहुत्वकी ले जाना चाहिये । परन्तु यह हेतुप्ररूपित अल्पबहुत्व परम्परागत नहीं है । इस प्रकार प्रदेशभुजाकार समाप्त हुआ ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणाकी जाती है— मतिज्ञानावरण की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक जीव अल्प सम्यक्त्वकालमें और अल्प संयमकालमें शीघ्र ही अन्तिम

१ ताप्रतौ 'संखे० गुणा । गुणद्विदीणं' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'भुजगारणारिसं', ताप्रतौ 'भुजगार० अण्णारिसि' इति पाठः । ३ अप्रतौ नास्तीदं वाक्यम् । ४ सत्कर्मपंजिकाया तु 'संखे०' इति पाठः । ५ प्रतिषु 'मग्गिदूणं' इति पाठः । सत्कर्मपंजिकायामेतस्य स्थाने 'अणुमाणेऋण' इत्येतत्पदमुपलभ्यते । ६ प्रतिषु 'पवाइज्जदि', सत्कर्मपंजिकायां तु 'पवाइज्जदि' इति पाठः ।

समयछदुमत्थस्स पढमसमयओहिलद्धस्स उक्क० मदिआवरणस्स पदेसुदयवड्ठी । कुदो ? ओहिणाणवुड्ठीए अणहिमुहस्स^१ गुणसेडिपदेमगुणगारादो तदहिमुहगुणसेडिपदेसगुण-गारस्स असंखे० गुणत्तादो । कधमेदं णव्वदे ? सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पुण झीयमाणोहिवस्सओवसमाणं तत्तो तग्गुणयारवड्ठी असंखे० गुणा ।

एवं सुद-मणपञ्चव-केवलणाणावरण-चक्खु^२-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च वत्तव्वं । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० वड्ठी कस्स ? चरिमममयछदुमत्थस्स, जस्स पढम-समयणट्ठा ओहो, तस्स । णिहा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ठी कस्स ? उवसंतकमायस्स जाधे सगपढमसमयगुणसेडिसीसयं पवेदेदि^३ तस्स उक्कस्सिया वड्ठी । णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुक्कस्सिया वड्ठी कस्स ? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्ग-संक्किलिट्ठो होदूण से काले सव्वविसुद्धो जादो तस्स सव्वविसुद्धस्स जं गुणसेडिसीसयं तम्हि उदयमागदे जो थीणगिद्धितियस्स अण्णदरिस्से पयडीए पढमसमयवेदगो तस्स

समयवर्ती छद्मस्थ हुआ है उस प्रथम समयवर्ती अवधिलब्धियुक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके मतिज्ञानावरण सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशोदयवृद्धि होती है । इसका कारण यह है कि जो जीव अवधिज्ञानकी वृद्धिके अभिमुख नहीं है उसके गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकारकी अपेक्षा तदभिमुख जीवका गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकार असंख्यातगुणा होता है ।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह सूत्रकी अन्यथानुपत्तिसे जाना जाता है ।

परन्तु हीयमान अवधिक्षयोपशम युक्त अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उक्त गुणकारवृद्धि उससे असंख्यातगुणी है ।

इसी प्रकार (मतिज्ञानावरणके समान) श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवल-ज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिके स्वामीका कथन करना चाहिये ।

अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके अवधिलब्धि नष्ट होनेके प्रथम समयमें होती है । निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह उपशान्तकपाय जीवके होती है । जब वह अपने प्रथम समय सम्बन्धी गुणश्रेणिशीर्षका वेदन करता है, तब उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अधःप्रवृत्तसंयत जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त होकर अनन्तर कालमें सर्वविशुद्धिको प्राप्त होता है उस सर्वविशुद्ध जीवका जो गुणश्रेणिशीर्ष है उसके उदयको प्राप्त होनेपर जो स्त्यान-गृद्धि आदि तीनमेंसे अन्यतर प्रकृतिका प्रथम समयवर्ती वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट

१ अप्रतौ 'अणहिमाहस्स', ताप्रतौ 'अणहिप्पायस्स', ताप्रतौ 'अणहमा (मु) हस्स' इति पाठः ।

२ ताप्रतौ 'ओहिणाणोहिदंसणावर [णा०] ण पुण झीयमाणोहिवसमाणं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'केवल-णाणावर [णा] णं चक्खु' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'वेदेदि' इति पाठः ।

उक्क० वड्ढी ।

चटुण्णं णाणावरणीयाणं तिण्णं दंमणावरणीयाणं उक्क० हाणी कस्स ? जो पढम-
ममयउवसंतकमाओ मदो मंतो से काले देवो जादो तस्स अंतोमुहुत्तदेवस्स जाधे गुण-
सेडिसीमयं पढमममयणिज्जिण्णं ताधे उक्क० हाणी । ओहिणाण-ओहिदंमणावरणाणं
उक्क० हाणी कस्स ? परिवदमाणयस्स सुहुममांपराइयस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयं
णिज्जरिज्जमाणं णिज्जिण्णं ताधे तस्स उक्क० हाणी । णवरि पढमसमयउपपण्णओहि-
णाणस्से त्ति वत्तव्वं ।

पंचणाणावरणीय-णवदंमणावरणीयाणमुक्कस्समवट्टाणं कस्स ? जो अधापवत्तसंजदो
तप्पाओग्गजहण्णसंक्किलेमादो तप्पाओग्गमज्झिमपरिणासुक्कस्समविमोहिं गदो से काले वि
तारिमि विमोहिं गदो जहा पलिदो० अमंखे० भागपडिभागव्वहिया गुणसेडी जादो,
जावे प्दाणि गुणसेडिसीसयाणि पवेदेदि ताधे तस्स उक्कस्समवट्टाणं । एवं सेसाणं पि
कम्माणं उक्कस्समवड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणं सामित्तं जाणिरुण वत्तव्वं ।

जहणिया वड्ढी हाणी अवट्टाणं च मव्वकम्माणमेको पदेसो अण्णदरस्स भवे ।
णवरि देवणिरयाउअं-तिथयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वं ।

वृद्धि होती है ।

चार ज्ञानावरणीय और तीन दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो प्रथम
समयवर्ती उपशान्तकपाय जीव मरकर अनन्तर कालमें देव हो जाता है उस अन्तर्मुहूर्तवर्ती
देवका गुणश्रेणिशीर्ष जब प्रथम समय निर्जराप्राप्त होता है तब उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट
हानि होती है । अवधिज्ञानावरण ओर अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ?
श्रेणिसं गिरते हुए सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका जब निर्जर्यमाण अन्तिम गुणश्रेणिशीर्ष निर्जीण
हो चुकता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । विशेष इतना है कि अवधिज्ञान उत्पन्न
होनेके प्रथम समयमें, यह कहना चाहिये ।

पांच ज्ञानावरणीय और तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता
है ? जो अधःप्रवृत्त संयत जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे तत्प्रायोग्य मध्यम परिणाम रूप
उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है व अनन्तर कालमें भी वैसी विशुद्धिको प्राप्त होता है जिससे
गुणश्रेणि पश्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अधिक हो जाती है, जब वह इन
गुणश्रेणिशीर्षकोंका वेदन करता है तब उसके उपर्युक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।
इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि व अवस्थानके स्वामित्वका जानकर कथन
करना चाहिये ।

सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान एक प्रदेश स्वरूप होकर अन्यतर
जीवके होते हैं । विशेष इतना है कि देवायु, नारकायु और तीर्थंकर नामकर्मको छोड़कर यह
कथन करना चाहिये ।

१ अप्रती 'मदो संते से काले देवे' इति पाठः ।

एत्तो अप्पाबहुअं— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं । उक्कस्सिया हाणी असंखेज्जगुणा । उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा । णिद्दा-पयलाणं पि उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । उक्क०हाणी असं०गुणा । वड्ढी असंखेज्जगुणा । णिद्दाणिद्दा-पयला-पयला-थ्योणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुवंधिचउक्काणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं । वड्ढी अमं० गुणा । हाणी विसेमा० । अट्ठणं कमायाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसेमा० । सम्मत्त-णवणोकसाय-चदुसंजलणाणं णाणावरणभंगो । सम्मा-मिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो । देव-णिरयाउआणं उक्क० हाणी कस्स ? दमवस्ससहस्साउ-ट्ठिदीएसु देव-णेरइएसु उववण्णस्स दुममयतवभवत्थस्स । वड्ढी अवट्ठाणं वा णत्थि । मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी विसे-साहिया । तिण्णं गइणामाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसे० । मणुमग-णामाण उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा । ओरालियमरीरणामाण मणुमगइभंगो । तेजा-कम्मइयसरीर-छमंठाण-पट्टमसंधडण-वण्ण-गंध-रस-फाम-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापमत्थविहायगइ-त्स--बादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीर-थिगाथिर-मुहासुह-जमकित्ति—सुभग-आदेज्ज-सुस्सर-दुस्सर—णिमिणुच्चा-गोदाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । हाणी असंखे०गुणा । वड्ढी असंखे०गुणा । वेउच्चिय-आहार

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं—पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । निद्रा व प्रचलाका भी उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । उत्कृष्ट हानि असंख्यात-गुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । आठ कपायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । सम्यक्त्व, नौ नोकपाय और चार संज्वलन कपायोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सम्याग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिसं युक्त देवों व नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । उनकी वृद्धि व अवस्थान नहीं हैं । मनुष्यायु आर तिर्यगायुका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि विशेष अधिक है । तीन गति नामकर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । औदारिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । तैजसशरीर, कर्मणशरीर, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदय, सुस्वर, दुस्वर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि

मरीर-पंचमंघडण-चदुआणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपजत्त-माहारण-अजमक्कि-
दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुक्कस्ममवट्ठाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसे० ।

देव-णिरयाउअ-तित्थयरवज्जाणं सव्वकस्माणं पि जहणवड्ढिहाणि-अवट्ठाणाणि
तुल्लाणि, एगपदेमपमाणत्तादो । तित्थयरणामाए जह० हाणी अधापमत्तकेवलिगुणसेडि-
सीसएसु उदयमागदेसु । जह० वड्ढी दुसमयकेवलिस्स । तदो हाणी थोवा । जह० वड्ढी
असंखे० गुणा । अवट्ठाणं जहणमुक्कस्मं वा णत्थि । तित्थयरणामाए जह० हाणी थोवा ।
उक्क० हाणी विसेसा० । जह० वड्ढी असंखे० गुणा । उक्क० वड्ढी असंखे० गुणा ।
एधं पदणिक्खेवा समत्तो । एत्तो वड्ढिउदए अप्पाबहुए कदे तदो उदए त्ति अणि-
योगद्वारं समत्तं होदि ।

असंख्यातगुणी है । वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, पांच संहनन, चार आनुपूर्वी, आतप,
उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका
उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है ।

देवायु, नारकायु और तीर्थंकर प्रकृतियोंको छोड़कर सभी कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अव-
स्थान तुल्य हैं; क्योंकि, वे एक प्रदेश प्रमाण हैं । तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य हानि अधःप्रवृत्त केवली
गुणश्रेणिशीर्षकोंके उदयप्राप्त होनेपर होती है । उसकी जघन्य वृद्धि द्वितीय समयवर्ती केवलीके
होती है । इस कारण उसकी हानि स्तोक है और जघन्य वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । उसका
जघन्य व उत्कृष्ट अवस्थान नहीं है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य हानि स्तोक है । उत्कृष्ट हानि विशेष
अधिक है । जघन्य वृद्धि असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । इस प्रकार
पदानिक्षेप समाप्त हुआ । यहां वृद्धिउदय विषयक अस्पष्टत्वके करनेपर उदय-अनुयोगद्वार
समाप्त हाता है ।

उदयानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



परिशिष्ट

संतकम्मपंजिया

..... ।
 वोंच्छामि संतकम्मे पंचि (जि) यरूवेण विवरणं सुमहत्थं ॥ १ ॥

महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणाओ (इ) चउवीसमणियांगहारेसु तत्थ कदि-वेदणा त्ति जाणि अणियांगहाराणि वेदणाखंडम्मि, पुणो प [पस्स-कम्म-पयडि-बंधण त्ति] चत्तारिअणि-ओगहारेसु तत्थ बंध-बंधणिज्जाणामाणियांगेहि सह वग्गणाखंडम्मि, पुणो बंधविधानणामाणि-योगहारे महाबंधम्मि, पुणो बंधगाणियांगो सुहाबंधम्मि च सण्णवंचेण परूविदाणि । पुणो तेहितो सेसट्टारसाणियांगहाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि । तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसम-पदाणमत्थे थोरुत्थयेण पंजियसरूवेण भणिस्सामो । तं जहा —

तथ पढमाणिओगहारस्स णिवंधण [स्स] परूवणा सुगमा । णवरि तस्स णिकखेओ छव्विह-सरूवेण परूविदो । तत्थ तदियस्स दव्वणिक्खेवस्स सरूवपरूवगट्टं आइरियो एवमाह—

जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि जस्स वा दव्वस्स सहाओ दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणिवंधणमिदि । पृ० २.

एदस्सत्थो उच्चदे— जं दव्वमिदि उत्ते जीव-पोग्गल-धम्माधम्मागास-कालभेदेण छव्विहेसु दव्वेसु जस्स जस्स दव्वस्स परिणमणिवंधणं विवक्खिदं तं तं घेत्तण तस्स तस्स दव्वस्स जाणि दव्वाणि अस्सिऊण परिणमदि त्ति परिणमविहाणं उत्तं । तं जहा— तत्थ ताव जीवदव्वस्स पोग्गलदव्वमवलंबिय पज्जायेसु परिणमणविहाणं उच्चदे— जीवदव्वं दुर्वहं संसारिजीवो मुक्खो (क्को) चेदि । तत्थ मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहि परिणदसंसारिजीवो जीव-भव-खेत्त-पोग्गलविवाइसरूवकम्मपोग्गले बंधिऊण पच्छा तेहितो पुव्वुत्तचउव्विहफलसरूवपज्जायं अण्येभ्यभिण्णं संसरंतो जीवो परिमदि त्ति एदेसि पज्जायागं परिणमणं पोग्गलणिवंधणं होदि । पुणो मुक्कजीवस्स एवंधिणिवंधणं णत्थि, किंतु सत्थाणेण पज्जायंतरं गच्छदि । पुणो “जस्स वा दव्वस्स सहाओ दव्वंतरपडिबद्धो” इदि एदस्सत्थो— एत्थ जीवदव्वस्स सहाओ णाण-दंसणाणि । पुणो दुविहजीवाणं णाणसहाओ विवक्खिदजीवेहितो वदिरित्तजीव-पोग्गलादिसव्वदव्वाणं परिच्छेदणसरूवेण पज्जायंतरगमणिवंधणं होदि । एवं दंसणं पि वत्तव्वं । तं पि कुदो ? विवक्खिदजीवेहितो वदिरित्तजीव-पोग्गलादिवाहिरदव्वेसु णिवंधस्स सरूवपरिच्छेदणे णिवद्धत्तादो ।

पुणो जीवदव्वस्स धम्मत्थिकायादो परिणमणविहाणं उच्चदे । तं जहा— संसारे भमंत-जीवाणं आणुपुव्विकम्मोदय-विहायगदिकम्मोदयवसेण मुक्कमारणतियवसेण च गदिपज्जायेण परिणदाणं गमणस्स संभवो पुणो कम्मविरहिदजीवाणं उड्ढगमणपरिणामसंभवो च धम्मत्थि-कायस्स सहावसहायसरूवणमित्तभेदेण होदि । तं कथं जाणिज्जदे ? पुह पुह पज्जायपरिणद-संसारिजीवाणं पुह पुह खेत्तसु णिवंधणतिविहसरूवगमणाणं हेदुत्तादो धम्मत्थियविरहिदखेत्तेसु पुव्वुत्तचउव्विहसरूवगमणाभावादो च ।

पुणो अधम्मत्थियकायमस्सिय जीवद्वस्स परिणमणविहाणं उच्चदे— थावरणामकम्मोदय-
वसेण मारणंतियविरहिदतस-थावरकम्मोदयवसेण आणुपुव्विकम्मोदयविरहिदतस-थावरणाम-
कम्मोदयवसेण मंदाणुभागोदयविहायगदिकम्मवसेण परवसा(सी)भूदसंसारिजीवाणं पुणो
णिम्मूलकम्मकलंकाविरहिदसिद्धजीवाणं च द्विदिपज्जायेण परिणमदि ।

मिच्छत्तपुरिसस्स दिव्वसयणासण-छायादीणि अच्छणणिमित्ताणि हांति तहा चेव पुणो
काद्व्वमस्सिय जि

णिवंधणं धम्मत्थियकायो त्ति ।

सहव्व (आगासद्व्व) मस्सिदूण जीवणिवंधणं उच्चदे— संसारि-मुक्कजीवाणं सग-सगो-
गाहणपमाणम्मि द्विदसग-सगसव्वपदेसु विवक्खिदजीवेहिंतो पुह पुह अणंतानंतसुहुमजीवाण
तत्थ पायोग्गोगाहणसहिदाणंतानंतसंखेज्जवादरर्जावाणं कम्ममलविरहिदाणंतसिद्धजीवाणं च
ओगासं दादूण द्विदाणमागासद्व्वमवट्टाणसरूवेण णिवंधणं हांदि ।

पुणो एत्तो पोग्गलद्व्वमस्सिय णिवंधणत्थो उच्चदे । तं जहा— तत्थ ताव जीवद्व्वमस्सिय
उच्चदे— संसारिजीवो णोकम्मसरूवेण णाणापयारेण पुव्वगल (पुग्गल) दव्वे गहिऊण गंध-धूव-
दाव-वत्थाभरण-घड-पड-थंभाउह-पासादादिपज्जायंतरसरूवं कुर्णादि त्ति एदस्स एदेसु पज्जायेसु
गमणस्स जावो चेव णिवंधणं हांदि । पुणो मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगपच्चयेहि कम्मसरूवेण
गहिदपोग्गलाणं तक्खणे चेव अणंतगुणसत्तिसहिदवण्ण-गंध-रस-फासादिपज्जायगमणं जीव-
णिवंधणेण हांदि । पुणो पोग्गलस्स पोग्गलंतरं पि णिवंधणं हांदि । जहा जलवरिसणे सुक्कमट्टियस्स
अद्ध (अह) भावादिदंसणादो । पुणो पोग्गलसहाओ णाम रूव-रस-गंध-फासा तु संसारिजीवम्मि
सुह-दुक्खफलुपायणम्मि पडिबद्धा हांति । केसि पि खेत्तोसु कालेसु वि सहावपडिबद्धा हांति ।

पुणो धम्मद्व्वमस्सिय पुग्गलद्व्वस्स परिणमणं उच्चदे । तं जहा— पुग्गलद्व्ववाणं लहुग-
गुणं वा गुरुगुणं वा अगुरुगलहुगुणं वा वत्तावत्तसरूवाणेयपज्जायपरिणदाणं सग-परपयोगेण
गमणपज्जायं हांदि । तेसि णियमिदाणियमिदखेत्तेसु गमणं गमणणिमित्तधम्मद्व्वेण हांदि त्ति
तेसि पोग्गलाणं गमणपज्जायस्स तण्णिवंधणं हांदि ।

पुणो अधम्मद्व्वमस्सिय उच्चदे । तं जहा— गुरुगुणपज्जायपरिणदाण अगुरुगलहुग-
गुणपरिणदाणं च पुग्गलाणं द्विदिपज्जायपरिणदाणं अहवा पयोगवसेण द्विदिपज्जायपरिणदाणं च
द्विदी अधम्मद्व्वस्स सहावणिवंधणं हांदि । पुणो कालागासद्व्ववाणि अस्सिय पुग्गलद्व्वस्स
परिणमणविहाणं जहा जीवद्व्वमस्सिय उत्तं तहा वत्तव्वं ।

पुणो धम्मद्व्वस्स सेसद्व्ववाणि अस्सिऊण णिवंधणत्थो उच्चदे । तं जहा— “जं दव्वं जाणि
द्व्ववाणि अस्सियूण परिणमदि” त्ति एदस्सत्थे भण्णमाणे ताव जीव-पोग्गलेहिंतो एदस्स धम्मद्व्वस्स
दव्वंतरणिवंधणं परिणामंतरगमणं ण वत्तव्वं, तत्थ तस्सरूवेण गमणासंभवादो । पुणो सहाव-
णिवंधणपरिणामो अत्थि । तं कथं ? जीव-पोग्गलाणमणेयपज्जायपरिणदाणं भेदेण णियदाणियद-
सरूवाणं गमणाणं णिवंधणं धम्मत्थियद्व्वस्स सहावो, तं चेव तस्स सहावस्स पज्जायंतरगमणं, तं
चेव तस्स दव्वस्स पज्जायंतरगमणं हांदि त्ति वत्तव्वं । पुणो अधम्मद्व्वमागासद्व्वं च अस्सिय
णिवंधणं उच्चदे— घणलोगमेत्ताधम्मद्व्वपदेसाणं मुत्तामुत्तद्व्वावगाहे(हि)दाणं ? अवट्टाणावगाहण-
पज्जायपरिणामो अधम्मत्थिय-आगासद्व्ववाणं णिवंधणेण हांदि । पुणो धम्मद्व्वस्स कालद्व्व-

मस्सिय गिबंधणं उच्चदे— धम्मदव्वपदेसाणं अगुरुगलहुगादिगुणाणं अविभागपल्लिच्छेदंतरगमणं कालदव्वणिबंधणं होदि ।

पुणो अधम्मदव्वस्स पज्जायंतरगमणणिबंधणं “जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूणे त्ति” एदं परूवणं णत्थि । पुणो सहावपरूवणमत्थि । तं उच्चदे— जीव-पुग्गलदव्वाणमगमणपज्जायपरिणदाणमवट्टाणस्स अधम्मदव्वस्स सहाओ जेण सहाओ होदि तेण अधम्मदव्वस्स ट्ठिदिकरणपज्जायपरिणामणिबंधणमेदेहि दव्वेहि होदि । पुणो अधम्मदव्वस्स धम्मदव्वेहितो गिबंधणपरूवणं णत्थि । कुदो ? सहावदो । गदिलक्खणेण धम्मदव्वेण एदस्स अगुरुगलहुगादिपज्जायंतरेसु गमणं होदि त्ति एदम्हादो एदस्स गिबंधणमत्थि त्ति किं ण उच्चदे ? ण, तस्स कालणिबंधणत्तादो । पुणो अधम्मदव्वस्स कालदव्वमस्सिय गिबंधणं उच्चदे— अधम्मदव्वस्स अगुरुगलहुगादिगुणाणमविभागपल्लिच्छेदंतरेसु गमणं कालदव्वसहावणिबंधणं । पुणो एदस्स सहावणिबंधणं लोगागासमेत्तकालदव्वपदेसाणमणेगदव्वमवगाहिदाणमवट्टाणं होदि । पुणो आगासदव्वमवलंबियूण अधम्मदव्वस्स दव्वणिबंधणं णत्थि । पुणो एदस्स सहावणिबंधणमवगाहिदाणेयदव्वाणं आगासपदेसाणं अवट्टाणकरणपज्जाए होदि । पुणो एत्थ ट्ठिदअधम्मदव्वं अलोगागासपदेसाणमवट्टाणणिबंधणं होदि ।

पुणो कालदव्वस्स गिबंधणं उच्चदे— लोगमेत्तकालाणूणं दव्वंतरपडिबद्धणिबंधणं णत्थि । कुदो ? सहावदो चेव तहाणुवलंभादो । पुणो कालदव्वस्स सहावणिबंधणं जीव-पोगल-धम्माधम्मागासदव्वाणमत्थ-वंजणपज्जायेसु गच्छंताणं सहायसरूवेण गिबंधणं होदि जहा कुंभगारहेट्ठिमसिलो व्व । णवरि अलोगागासस्स पज्जायंतरगमणं एत्थ ट्ठियकालो चेव करेदि । तं कथं ? दूरट्ठियसूरविबेण पउमविंदाणं विकसणं व कडुयपत्थरेण लोहकड्डुणं व तहेवोवलंभादो ।

पुणो आगासदव्वस्स सरूवणिबंधणं उच्चदे— एदस्स दव्वंतरपडिबद्धस्स गिबंधणं णत्थि । अहवा एवं वा अत्थि त्ति वत्तव्वं । तं जहा— जीव-पुग्गलदव्वाणं गमणागमणच्छणपज्जायपरिणदाणमणंताणंतमुत्तदव्वाणमवगाहंताणमणेयपयारेण अच्छणादिपज्जाएहि आगासदव्वस्स पज्जायंतरगमणणिबंधणं होदि त्ति । पुणो सहावणिबंधणं पि एवं चेव । णवरि आगासदव्वस्स सहावंचेव पहानं कादूण वत्तव्वं । एवं धम्माधम्म-कालदव्वाणि च अस्सियूण दव्वणिबंधणं सहावणिबंधणं च सग-सगपडिबद्धपायोगेण जाणिय वत्तव्वाणि । णवरि आलोगागासस्स अवगाहणलक्खणसत्ती चेव, ण वत्तां; तत्तो गाहिज्जमाणदव्वाणमभावादो ।

संपहि पक्कमाहियारस्स उक्कस्सपक्कमदव्वस्स उत्ताप्पावहुगम्भि विवरणं कस्सामो । तं जहा—

अपच्चक्खाणमाणस्स उक्कस्सपक्कमदव्वं थोवं । पृ० ३६.

कुदो ? उक्कस्सजोगि-सण्ण-मिच्छाइट्ठिणा सत्तविहवंधयेण बद्धमोहणीयउक्कस्सदव्वमेगसमयपबद्धस्स सत्तमभागो किंचूणो होदि त्ति तं देसघादिफहयवग्गणव्वंतरणाणागुणहाणिसलागाओ देसघादिफहयसव्वकम्मणं समाणादो विरलिय विगुणिय अण्णोण्णभस्सेणुप्पण्णणंतरासिणा खंडेदूणेक्कखंडं किंचूणं घेत्ताव्वं ।

एत्थ चोदगो भणदि— एवं घेप्पमाणे सव्वघादिफहयादिवग्गणादो अणंतगुणहाणिफहयवग्गणाओ गंतूण मिच्छत्तादिफहयवग्गणाए ट्ठिदत्तादो मिच्छत्तदव्वेण सेससव्वघादीणं

दब्वादो अणंतगुणहीणेण होदव्वं । ण च एवं, तत्तो एदस्स विसेसाहियस्स दंसणादो । तदो तप्पाओग्गाणंतरूवेहि खंडिदेगखंडं सव्वघादिदव्वं होदि त्ति घेत्तव्वमिदि ? ण, एवं घेप्पमाणे सम्मत्तादेसघादिफहयवग्गणाणमणंतगुणसहिदाणं रचणं कादूण तस्स चरिमवग्गणादो तदणंतरूवरिमवग्गणप्पहुडिरचिदाणं सम्मामिच्छत्ताफहयवग्गणदब्वाणमणंतगुणेहि हीणेण होदव्वं । एवं सम्मामिच्छत्तदब्वादो मिच्छत्तदव्वेण अणंतगुणहीणेण होदव्वं । ण च एवं, सम्मत्तादब्वादो तेसिं दब्वाणमसंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणकमेण अद्ध(व)ट्ठाणादो । बंधपयडीणं एस कम्मो, ण संताणमिति चे- ण, एवं संते मिच्छत्तास्सादिफहयादि-वग्गणादो हेट्ठिमसव्वघादि-देसघादिफहयाणं अणपयडिसंबंधीणं अस्सिऊण उत्तदोसो ण संभवदि तो वि संभर्वामिच्छज्जयमाणे सम्मत्ता-सम्मामिच्छत्ताणि अस्सिदूण उत्तदोसो संभवदि, दोण्हमण्ण-पयडिसंबंधेण तदुवरुवरिं तेसिं रचणाणं संबंधित्तणेण च समाणत्तादो । तदो सादिरेयमिच्छत्तदव्वं घेत्तूण सेससव्वघादिकम्माणं जहण्णवग्गणादो अणंतगुणहाणिमेत्तद्धाणं गंतूण ट्ठिदतेसि वग्गणेहि सह मिच्छत्तास्सादिवग्गणस्सेगपरमाणुगदाणुभागो जेण सरिसं होदि तेण कारणेण तदणुभागवसेण मिच्छत्तं अप्पणो आदिवग्गणप्पहुडिरचिदे दोसो णत्थि त्ति सिद्धं ।

पुणो पुण्विल्लकिंचूणगहिदेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण घादिदूण एयखंडमवणिय सेसवहुखंडं मिच्छत्ता-सोलसकसाया इदि सत्तारसपयडीहिं खंडिय सत्तारसट्ठाणेषु ठविय पुणो पुण्वगहिदेगखंडं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदूणेगखंडरहिदवहुखंडे पढमपुंजे पक्खिविय सेसेयखंडं एदेण विधाणेण सेसपुंजेषु सेसं पक्खिवियव्वं जाव सत्तारसमपुंजे त्ति । णवरि सत्तारसमपुंजे एगभागो पक्खिवियव्वो ।

पुणो केइं एवं भणंति— आवलियाए असंखेज्जदिमभागे [खंडणभागहारो] ण होदि, किंतु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं खंडणभागहारमिदि भणंति । तदो उवदेसं लदूण दोण्हमेक्क-दरणिण्णवो कायव्वो । पुणो एवमुप्पण्णपुंजेषु सव्वत्थोव्वं अपचचक्खाणमाणे उक्कस्सदव्वं जादं । कुदो ? तत्थंतिमपुंज[प]माणत्तादो ।

कोहे० विसेसाहियं । पृ० ३६.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

मायाए० विसेसाहियं । लोहे० विसेसाहियं । पच्चक्खाणमाणे० विसेसाहियं । कोहे० विसेसाहियं । माया० विसेसाहियं । लोहे० विसेसाहियं । पृ० ३६.

पुणो माण(?)संजलण-कोह-माण-माया-लोहाणं कमेणत्थ विसेसाहिया होंति । कथमउत्तसंजलण-चउक्काणं एत्थुद्देसे विहंजणं होदि त्ति जाणिज्जदे ? ण, अणुभागमाहप्पादो । तं कथं ? पच्चक्खा-णाणुभागादो एदस्स अणुभागस्स अणंतगुणत्तादो णज्जदे । पुणो ताणि एत्थ ण गहिदाणि । कुदो ? उवरिमदेसघादिदव्वेषु पवेसिदत्तादो । णवरि बज्झमाणणोकसायसव्वघादिदव्वाणि एत्थुद्देसे पविट्ठाणि । कुदो ? दोण्हं एगभागत्तादो ।

अणंताणुबंधिमाणे० विसेसाहियं । कोहे० विसेसाहियं । माया० विसेसाहियं । लोहे विसेसाहियं । [मिच्छत्ते विसेसाहियं ।] केवलदंसं० विसेसाहियं । पृ० ३६.

एत्थ चोदगो भणदि— चउणाणावरण-तिण्णिणदंसणावरण-चउसंजलण-णवणोकसायाणं अणंतरोवणिदा (धा) अणुभागवग्गणासु तुम्मेहिं विभंजिदकमेण णेहुं ण सक्किज्जदे । कुदो ? एदे (दा) सिं पयडीणं सग-सगादिवग्गणादो अणंतभागहीणकमेण देसघादिफहयवग्गणाणं

चरिमवगणे त्ति गंतूण सव्वघादिफह्यादिवग्गणादिम्मि संखेज्जभागहाणीयो संखेज्जगुणहाणीयो जादाओ त्ति अणंतरोवणिधा तत्थ णट्टा त्ति । तदो एवविहविभंजणं ण घडदि त्ति ? ण एस दोसो । कथं ? मूलपयडिद्विदोसु मोहणीयस्सादिणिसेयादो असंखेज्जभागहीणकमेण अणंतरोवणिधा गंतूणेयवारं संखेज्जगुणं होदूण पुणो वि संखेज्जभागहीणकमेण गंतूण णोकसायद्विदीसु थक्कासु संखेज्जभागहीणं जादं । तदो णोकसायद्विदीसु थक्कासु अणंतगुणहीणत्तदंसणादो, पुणो णाणावरणदंसणावरण-मोहणीयमंतराइयाणं मूलपयडिणं बंधवग्गणासु अणंतभागहीणसरूवेण अणंतरोवणिधा गंतूण पुणो हीणाणुभागयडिणं वग्गणासु द्विदासु तत्थाणंतरोवणिधाए विणासुवलंभादो च । तदो जत्थ जत्थ अविरोधो तत्थ तत्थ तप्पदेसं मोत्तूण पुणो उवरि वि अणंतरोवणिधा भवदि । कुदो ? मूलत्तरपयडिण अणंतरोवणिधासमाणत्तादो ।

पुणो एत्थ चौदगो भणदि— एदमप्पाबहुगं ण घडदे । कुदो ? एदेसिं पयडिणं उत्तुकस्स-सामित्तेण सह विरुद्धत्तादो । कथं सामित्तेण सह विरुद्धमप्पाबहुगमिदि चे उच्चदे । तं जहा— सव्वत्थोवमणंताणुबंधिमाणे० । कुदो ? सासणसम्मादिद्विम्मि बज्जमाणमणंताणुबंधिम्मि अवज्ज (ज्ज) माणमिच्छत्तदव्वं गच्छदि त्ति । कुदो ? मोहणीयुक्कस्ससव्वघादिदव्वं पुव्वं व सत्तारसेसु विभंजिय द्वियस्स पंचमभागत्तादो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । मोहे० विसे० । मिच्छत्ते० विसे० पयडिविसेसेण । अपञ्चकखाणमाणे० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? असंजद० बंधुक्कस्सदव्वं पुव्वं व बडु (बज्ज) माणवारसकसायेसु विभंजिदत्तादो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे विसे० । पचलापचला० विसे० संखेज्जदिभा० । कुदो ? मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्विहि बडुक्कस्स दव्वं पुव्वं व विभंजिदे णवमभागत्तादो । णिहाणिहा० विसे० । थीणगिद्धीए० विसे० । पञ्चकखाणमाणे० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? संजदासंजदबडुक्कस्सदव्वं पुव्वं व भज्जमाणट्टपयडिसु विभंजिदत्तादो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे० विसे० । पयला० विसे० संखेज्जदि० । कुदो ? सम्मामिच्छादिद्वि-सम्मादिद्विहि बडुक्कस्सदव्वस (स्स) छ्छभागत्तादो । णिहा विसे० । केवलणाण० विसे० संखेज्जदिभागेण । कुदो ? छव्विह० णाणावरणदव्वस्स अणंतिमभागस्स पंचमभागत्तादो ।

एत्थ आइरियदेसियो भणदि— पुण्विल्लदेसघादिफहयवग्गणभंतरणाणागुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णभत्तरासीदो तत्तो अणंतगुणहीणेत्यतणदेसघादिफहयवग्गणभंतरणाणागुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णभत्तरासी अणंतगुणहीणो तस्स एत्थ भागहारोवलंभादो केवलणाणावरणदव्वेण अणंतगुणहीणेण होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, पुण्विल्लदेसघादिफहयवग्गणरचणुदेसमुल्लंघिय पुण्विल्लसव्वघादिफद्दुददेसे चैव एत्थतणसव्वघादिफद्दयरचणुवलंभादो । पुण्विल्लण्णोण्णभत्तरासी चैव एत्थ वि भागहारोवलंभादो ।

पुणो केवलदंसणावरणं विसे० । पृ० ३६.

संखेज्जदिभागेण । कुदो ? छव्विहबंधगस्स दंसणावरणदव्वस्स अणंतिमभागस्स चउत्थ-भागत्तादो । कथं देसघादिबंधणकरणेण णट्टकखु-अचकखु-ओहिदंसणावरणसव्वघादिदव्वानं एत्थ विभंजणमिदि चे— ण, बज्जमाणकेवलणाण-केवलदंसणावरणाणं पुण्विल्लभागहारपडिभागेण दव्वानि हांति त्ति । अहवा दोण्हं पि समाणा हांति त्ति वा वसव्वमेदमविरुद्धमप्पाबहुगमिदि । ण एस दोसो । कुदो ? वीसणं सव्वघादिपयडिणं जहासरूवेण उक्कस्ससामित्ताणुरूवं अप्पाबहुगमेत्त (त्थ) ण विवक्खिदं होदि । तं कथमेवं परुविदविधाणागमविरुद्धत्तादो । तुभ्हेहिं परुविधं (दं) कथं सामित्तविरोधं ण भवे ? ण, एत्थ एदेसिं पयडिणं मिच्छाद्विदिणा बडुक्कस्सदव्वं घेत्तूण परुविदत्तादो विरोधो णत्थि ।

अहा(ह)वा एदेसि पयडीणं जहासखवसामित्तमस्सियूण एदं चेवप्पावहुगं एव साहेयव्वं । तं जहा— मिच्छाइट्ठिणा वद्धुक्कस्सदव्वं पुव्विल्लविभंजणमिह चेव मिच्छत्ताणंताणु-
बन्धीणमुक्कस्सं होदि । किमट्टं सासणेण बद्धाणंताणुबंधीणं दव्वमस्सियूणुक्कस्ससामित्तमणंताणु-
बंधीणं ण उच्चदे ? दोसु वि गुणट्ठाणेषु एदस्स समाणपक्कमदव्वत्तादो ।

अहवा एयं वा विहंजणविहाणं वत्तव्वं । तं जहा— मिच्छाइट्ठिमि वद्धुक्कस्समोहणीय-
दव्वं आवलि० असं०भागेण खंडेदूणेगखंडरहिदे बहुखंडाणि सत्तारसभागं कादव्वणि । किमट्टं
बज्झमाणवावीसपयडीयां भागहारो ण दिज्जदे ? ण, संजलणचउक्कभागेसु णोकमायभागणं
संपवेसुवलंभादो । एवं कादूण पुव्वं व सेसेयखंडं पक्खिविय सत्तारसेसु टाणेसु टिदेसु सग-
सगादिवगाणपट्टुडिवग्गणरचणं कादूण पेदव्वं जाव सग-सगंतिमवग्गणे त्ति । णवरि अपच्च-
क्खाणमाण-कोह-माया-लोह-पच्चक्खाणमाण-कोह-माया-लोह-संजलणमाण-कोह-माया-लोहाणं-
ताणुबंधिमाणकोह-माया-लोह-मिच्छत्ताणं कमेणुक्कस्सबंधवग्गणाओ थक्कंति । पुणो देसघादि-
संबंधिसव्वपंतीओ एगट्टे कदे देसघादिमोहणीयदव्वं होदि । पुणो सव्ववादिसंबंधीणं सत्तारस-
पयडीणं दव्वणि वग्गणाणुसारीणि मिच्छत्तादिसत्तारसपयडीणं होंति । तत्थ मिच्छत्ताणंताणु-
बंधिचउक्काणं उक्कसाणि होंति । पुणो अमंजदसम्मादिट्ठीण वद्धुक्कस्सदव्वमस्स विभंजणविहाणे
भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिमि पुव्वविभजिददव्वमि मिच्छत्तदव्वं घेत्तूण देसघादिमि पक्खिविय
अणंताणुबंधिचउक्काणं दव्वं घेत्तूण पुव्विल्लानंतरूवेण खंडिय तत्थ बहुखंडाणि देसघादीसु
पक्खिविय सेसेयखंडं आवलि० असंख० भागेण खंडेदूणेगखंडरहिदव्वहुखंडाणि वारसखंडाणि
कादूण सेसेयखंडे पुव्वविहाणेण पक्खित्तेमुपपणवारसपुंजाणि घेत्तूण मिच्छाइट्ठिमि पुव्वं
विभजिदेसु गहिदमेसवारसपुंजेसु संजलणादीसु कमेण पक्खित्तेसु विभजिदं होदि । एत्थ पुणो
अपच्चक्खाणचउक्काणं उक्कस्सं होदि, एत्थतणपुव्विल्लपयडि विसेसादो । संपहि पक्खित्तदव्वमणंत-
गुणहीणं होदि त्ति पुव्विल्लविसेसाहियकमो चेव अणंताणुबंधिमाणादीणं एदेहितो होदि ।

एदं विभंजणं होदि त्ति कथं णव्वदे ? ण, सम्माइट्ठिपरिणामेसु सव्ववादिदव्वा-
वट्ठाणादो । तं कथं परिच्छिज्जदे ? ण, पमत्तापमत्तसंजदेसु सजलणाणं सव्ववादिदव्वाणं
णिम्मूलोवट्टणदंसणादो ।

पुणो संजदासंजदेसु वि एदं कमेण अट्टकसायाणं विभंजणविहाणं जाणिय वत्तव्वं ।
पुणो दंसणावरणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-सासणमम्माइट्ठीहिं वद्धुक्कस्सदंसणावरणदव्वे पुव्वं व
विभजिदे थीणगिद्धितियाणमुक्कस्सं होदि । पुणो सम्मामिच्छाइट्ठि-सम्माइट्ठीहिं वद्धुक्कस्सदव्वे पुव्वं
विभजिदपयारेणेत्य पायोगं जाणिय विभजिदे पयला-णिददाणमुक्कस्सदव्वं होदि । पुणो सुहुम-
सांपगयिगेसु वद्धदंसणावरणदव्वममाणंतिमभागं वेमदवावणरूवेहि खंडिय चउव्वीसखंडेसु
अणंतभागव्वहियपमाणेसु गहिदेसु ताणि केवलदंसणावरणुक्कस्सदव्वं होदि । सेसट्ठावीस-वेसद-
खंडाणि देसूणाणि देसघादिसरूवेण परिणमंति त्ति ताणि तस्मि पक्खिविदव्वाणि । कथमेदं
परिच्छिज्जदे ? चक्खु-अचक्खु-ओहिदंसणावरणाणमेत्थ भज्झ(ज्ज)माण्णं पुव्वमेव णट्टसव्ववादिबंध-
त्तादो । तेमि एत्थ भागो णत्थि त्ति भज्झ(ज्ज)माणमस्स वि सुट्टदव्वोवट्टणादो (?) । पुणो एत्थ
पुव्वं व विससे(विसे)साहियकमो होदि त्ति वत्तव्वो ।

पुणो एत्थ बद्धणाणावरणदव्वविभंजणे कीरमाणे तत्थतणदव्वमस्स अणंतिमभागं पंचतीस-
खंडाणि कादूण छखंडेसु अणंतभागव्वहिदे(ए)सु गहिदेसु ताणि केवलणाणावरणभागो होदि ।
सेसकिंचु पुगुतीसखंडाणि देसघादिसरूवेण परिणमंति । कुदो ? देसघादिबंधणकरणट्ठाणे चउणाणा-

वरणं (वरणणं) णट्टसव्वघादिवंधत्तादो । केवलणाणावरणमेकं चैव सव्वघाइसरूवेण बज्झइ, तस्स विसुट्ठुसव्वघादिद्वंब्रावट्टणादो । एसो अत्थो उक्कस्सामित्ताणुसारिकरणट्टे इट्ठेण परूविदो । अत्थदो पुण पुट्टिवल्लो चैव पहाणमिदि गेण्हद्वं । कुदो ? एत्थ णाण-दंसणावरणणं छव्विहवंधगुक्कस्सदव्व्वाणि मिच्छाइट्टिवंधुक्कस्सदव्व्वाणुसारीए आवट्टणादो ।

आहारसरीरपक्कमणंतगुणं । पृ० ३६.

कुदो ? सत्तविहवंधगुक्कस्सदव्वस्स छव्वीसदिमभागस्स चउत्तभागत्तादो । तं पि कुदो ? अपमत्तापुव्वकरणसज्जाणं तीसवंधणण बट्टकम्मणामकम्मसमयपव्वद्धं विभंजमाणे तहांवलमादो । कथं विभंजज्जादि ? उच्चदे— सव्वुक्कस्ससमयपव्वद्धमावलियाए असं० भागेण खंडेदूणेगखंडगहिद-बहुखंडाणि बज्झमाणतासपयडीसु चत्तारि सरीराणि एगभागं दौणिण अंगोवंगाणि एगभागं लहंति त्ति छप्पयडीओ अर्थाणय सेसचउवीसपयडीसु दोपयडिसंखे पक्खित्ते छव्वीसाओ हांति । तेहिं खंडिय छव्वीसट्टाणेसु ठविय सेसेयखंडं पुव्वविहाणेण पक्खिवियत्वं जाव चरिम-खंडादो पड(ठ)मखंडे त्ति । तत्थ पढमखंडो गदिभागो हांदि, विदियखंडं जादिभागो विसेसा-हिओ हांदि, एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव णिमिणो त्ति । पुणो एत्थ विसेसाहियं हांदि त्ति कथं णव्वदे ? तिरिकखगर्दादो उवरि अजसकित्ती विसेसाहिया त्ति उत्तप्पा-वट्टगादो । पुणो तत्थ सरीरभागं घेत्तण आवलि० असं० भागेण खंडेदूणेगखंडरहिदबहुखंडाणि चत्तारिखंडाणि कादूण सेसकिरियं पव्वं व कदे तत्थ सव्वत्थोवं वेगुव्विय० । आहारसरी० विसे० । तेज० विसे० । कम्म० विसे० । पुणो एत्थतणआहारसरीरं उक्कस्सं हांदि । एवमुवरि वि विभंजविहाणं जाणिय वत्तव्वं ।

पुणो वेगुव्वियसरीर० विसे० । पृ० ३६.

संखेज्जादिभागेण । कुदो ? उक्कस्ससमयपव्वद्धस्स सत्तमभागस्स छव्वीसदिमभागस्स तिभागत्तादो ।

ओरालिय० विसे० । पृ० ३६.

संखे० भागेण । कुदो ? समयपव्वद्धस्स सत्त० एकव्वीसदिमभागस्स तिभागत्तादो ।

तेज० विसे० । कम्म० विसे० । पृ० ३७.

कुदो ? पयडिविसेसेग । आहारसरीरंगोवंग० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? समयपव्वद्धस्स सत्तम० छव्वीसदिम० दुभागत्तादो । एदीए पयडीए अउत्तमप्पावहुगं कथमेत्थ परूविज्जदे ? ण, उत्तप्पावहुगेण सूचिदत्तादो ।

पुणो मडिम्मचउसठाणाणं आदिल्लपंज(पंच)संघडणाणं तित्थयरस्स च पक्कम० विसे० संखे० । कुदो ? समय० सत्तमभा० सत्तावीसदिमभागत्तादो । णवरि पुट्टिवल्लादो चउमंठाणाणि सरिसाणि हांऊण विसे० । पंच संघडणाणि सरिसाणि होदूण विसे० । तदो तित्थयरं वि ० पयडिविसेसेग ।

पुणो णिरयगदी देवगदी विसे० [मू० संखेज्जगुणं] । पृ० ३७.

संखेज्ज० कुदो ? समयपव्वद्धसत्तमभागस्स छव्वीसदिमभागत्तादो । कथमेत्थ विभंजणं करिदे ? अट्टावीसपयडिवंधम्मि पुव्वं व विभंजणकिरियमत्तुक्कंतेण कीरदे । एत्थ सूचिददसपयडीणं अप्पावहुगं उच्चदे । तं जहा— समचउरं० विसेस० । वेगुव्वियसरीरंगोवंगं विसे० । णिरयगदिदेवगदिपाओगा० सरिसं होऊण विसे० । पसत्थापसत्थविहा० सरिस० विसे० ।

(८)

परिशिष्ट

सुभग० विसे० । सुस्सर-दुस्सर० सरिसं० विसे० । आदेज्ज० विसे० पगदिविसेसेण । कुदो ? सह विभंजिदत्तादो । पुणो वि सूचिदाणं उच्चदे— आदाव-उज्जीवाणं दोण्हं सरिस० विसे० संखे० । कुदो ? समयपबद्धस्स सत्तम० चउवीसदिमभागत्तादो ।

पुणो मणुसगदि० विसे० । पृ० ३७.

कुदो ? समयप० सत्तम० तेवीस० भागत्तादो । एत्थ सूचिदपयडीणं अप्पावहुगं— विगळिदिय-सगळिदियजादीओ सरिसाओ० विसे० । ओरालियंगोवंग० विसे० । असपत्त० विसे० । मणुसाणु० विसे० । पग्घाद० विसे० । उम्सास० विसे० । तस० विसे० । पज्जत्त० विसे० । थिर० विसे० । सुभ० विसे० । एदाओ सव्वाओ पयडीओ पयडिविसेसेण विसेसाहियाओ । कुदो ? सह विभंजिदत्तादो ।

पुणो तिरिक्खगदि० विसे० । पृ० ३७.

संखे० । कुदो ? समयप० सत्तमप० (भा०) एककवीसदिमभागत्तादो । एत्थ सूचिदपयडीणं अप्पावहुगमुच्चदे— एण्दि० विसे० । हुंडसंठाण० विसे० । वण्णसामण्णं० विसे० । गंधसामण्णं० विसे० । रससामण्णं० विसे० । फाससामण्णं० विसे० । तिरिक्खगइपा० विसे० । अगुरु० विसे० । उवघाद० विसे० । थावर० विसे० । बादर-भुहुमाणं पक्कमं सरिसं विसे० । अपज्जत्त० विसे० । पत्तेग-साधारणाणं पक्क० सरिस० विसे० । अथिर० विसे० । असुह० विसे० । दूभग० विसे० । अणादे० विसे० । एदासिं सव्वासिं पयडीणं पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ।

पुणो अजसकित्ति० विसे० । पृ० ३७.

एदेणप्पावहुगपदेण जाणिज्जदि णामकम्मपयडीणं पयडिपरिवाडीए विसेसाहियं होदि त्ति । पुणो एदेण सूचिदययडीणमप्पावहुगमुच्चदे— णिमिण० विसे० ।

पुणो दुगुंछाए संखेज्जगुणं । पृ० ३७.

कुदो ? समय० सत्त० दुभागस्स० पंचमभागत्तादो ।

भय० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । अरदि-रदीणं० विसे० । इत्थि-णउंस० सरिस० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण । णवुंसयवेदादो मिच्छत्तादव्वस्स संखेज्जदिभागपडिभागलद्धसासणसम्मा-इट्ठिमि बज्झमाणइत्थिवेदव्वं विसेसाहियं कथं ण भवे ? ण, वेदभागेसु मिच्छत्तदव्वपडिभागं ण गच्छदि त्ति । कथमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेव अप्पावहुगादो ।

दाणंतरायियं संखे० गुणं । पृ० ३७.

कुदो ? छव्विह्वबंधगेण बद्धंतरायियदव्वस्स पंचमभागत्तादो ।

लांभांत० विसे० । भोगांत० विसे० । परिभो० विसे० । वीरिया० विसे० ।

पयडिविसेसेण एदेसिं पयडीणं पयडिपरिवाडीए विसेसाहियं जादं ।

कोधसंज० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? समय० सत्तम० चउव्वभागत्तादो ।

मणपज्ज० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? छव्वभागस्स चउत्थभागत्तादो ।

ओहिणा० विसे० । सुदणा० विसे० । मदिणाण० विसे० । पृ० ३७.

माणसंज० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? समय० सत्तम० तदियभाग० ।

ओहिदं० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्जदिभागेण । कुदो ? समय० छ्भभाग० तदियभागत्तादो ।

अचक्खुदं० विसे० । चक्खुदं० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण ।

पुरिस० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? सत्तम० दुभाग० ।

माया०संज० विसे० । पृ० ३७.

पर्याडिविसेसेण ।

चत्तारिआउआणि० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? अट्टमभागत्तादो ।

णीचागोद० विसे० । पृ० ३७.

कुदो ? सत्त० ।

लोहसंजल० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण ।

असादवेद० विसे० । जसक्कित्ति-उच्चागोदाणं सरिसं० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? छट्ठभागत्तादो ।

सादवे० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण । पुणो वीससव्ववादीणं पणुवोसदेमघादीणं सादासाद०-चत्तारिआउगाणं णीचुच्चागोदाणं पुणो एक्कारसणामपयडीणं सगसेसल्लपणवद्ध(बंध)पयडिमूचयाणमिदि चउ-सट्ठिपयडीणं अप्पावहुगं गंथयारेहिं परूविदं । अम्हेहि पुणो सूचिदपयडीणमप्पावहुगं गंथउत्तप्पा-वहुगबलेण परूविदं । कुदो ? वीसुत्तरसयबंधपयडीओ इदि विवक्खादो । तं पि कुदो ? पंचबंधण-पंचसंघादाणं पयडि-ट्टिदि-अणुभागेहिं पंचसरीरेहिं सरिसाणं पुणो पदेसबंधेण किंचि विसरिसाणं सरीरेसु दव्वट्टियणयेण पवेसिय सखा अवणिदा । पुणो वण्ण-रस-गंध-फासाणं दव्वट्टियणयेण सामण्णरूवेण एत्थ गहणादो । तेषिं संखम्मि चत्तारि-एगचत्तारि-सत्त चैव संखाणि अवणिदा । पुणो सम्मत्त-सम्माभिच्छत्ताणि च अबद्ध(अबंध)पयडीओ चैव, संतम्हि उप्पणत्तादो । ताओ दो वि अवणिदाओ । एवं सव्वाओ अट्टावीस पयडीओ अबद्ध (अबंध) पयडीओ इदि सव्वपयडीसु अवणिदत्तादो ।

पुणो छादाल-सयपयडीओ बंधपयडीओ इदि विवक्खाए सूचिदप्पावहुगं उच्चदे — सव्वघादिकम्माणमप्पावहुग पुव्वं व परूविय पुणो केवलणाणावरणादो वण्ण-गंध-रस-फासाणं सामण्णभागे घेत्तूण सग-सगुत्तरपयडीणं पुव्वं व विभंजिदम्मि तदथ कक्खड० अणंतगुणं । णवरि पयडिट्ठाणमस्सियूण पुव्वुत्तभागहारेसु बंधणसघादाणमिदि दोण्णिभागहारसंखाओ पवेसि-यव्वाओ । मउगं विसे० । गुरुगं विसे० । लहुगं विसे० । णिहं विसे० । लुक्खं विसे० । सीदं

विसे० । वृमुणं विसे० पयडिविसेसेण । किण्ण० विसे० संखेज्ज० । लीण० (णील०) विसे० ।
 रुहिर० विसे० । हल्लि० विसे० । सेद० विसे० । तित्त० विसे० । कुदो ? सामण्णमूलभागाहिय-
 त्तादो । कडुग० विसे० । कसाय० विसे० । आंवल० (अंबिल०) विसे० । महुर०
 विसे० । आहार० विसे० । आहारसरीरबंधण० विसे० । आहारसरीरसंघाद० विसे० ।
 वेगुव्वियसरीर० विसे० । वेगुव्वियसरीरबंधण० विसे० । वेगुव्वियसरीरसंघाद० विसे० ।
 ओरालिय० विसे० । तेज० विसे० । कम्मइयसरी० विसे० । ओरालियबंध० विसे० । तेजइग-
 सरीरबंधण० विसे० । कम्मइयबंधण० विसे० । ओरालियसंघाद० विसे० । तेजइयसंघाद०
 विसे० । कम्मइयसंघाद० विसे० । तत्तो आहारसरीरगोवंग० विसे० । सुरभिगंध० विसे० ।
 दुरभिगंध विसे० । एत्तो चउसंठाणादिउवरिमपदाणि सव्वाणि पुव्व व वत्तव्वाणि ।

पुणो गथालावाणं चउसट्टिपयडोण गथे सूचिद्वीमुत्तरसयपयडोण उच्चारणाणं छादाल-
 सयपयडोणं उच्चारणाणं च कमेणेदाणि तिण्ण वि संदिट्ठीओ हांति—

स ३२८ ७ ख ९१७	स ३२८ ७ ख ९१७	००००००००००००	स ३२ ७ ख ९	०००००	स ३२ ७ ख ९	स ३२ ७ ख ९		
आहारस० वेगुव्वियसरीर	स ३२ ७ ख ६३	स ३२ ७ ख ६३	ओरालियं । तेजयिग । कम्मइगं	स ३२ ७ ख ६	स ३२ ७ ख ६	स ३२ ७ ख ६		
नरक-देव-	स ३२ ७ ख ६	मणुस-	स ३२ ७ ख ३	तिरिक्खवादि	स ३२ ७ ख १	स ३२ ७ ख १	अजसकित्ति	स ३२ ७ ख ०
दुगुच्छ । ० भय । ० हस्स । ० सोग । ० अरदि-रदि । इत्थि-णउंसय०	स ३२ ६५	दाणंतरायि० ।						
लाभं । ० भोगं । ० उपभोगं । ० वीरियं	स ३२ ७ ख	कोधसंजलणं	स ३२ ६४	मणपजव ।				
ओधिणाणं । ० सुदणाणं । मदिणाणं	स ३२ ७ ख	माणसंजलण	स ३२ ६३	ओधिदंसणं । ० अचक्खु-				
दंसणं । चक्खुदंसणं	स ३२ ७ ख	पुरिसवेदं । ० मायासंजलणं ।	स ३२ ८	चत्तारिआउगं	स ३२ ७	नीचागोदं		
स ३२ ७	लोभसंज लं	स ३२ ७	असातं	स ३२ ७	जसकित्ति-उच्चागोदाणं	स ३२ ६	साता-	
वेदणीय गंथालावां	स ३२८ ७ ख ९१७	००००००००००००००	स ३२ ७ ख ९	०००००	स ३२ ७ ख ९	स ३२ ७ ख ९	स ३२ ७ ख ९	स ३२ ७ ख ९
स ३२ ७ ख ६३	स ३२ ७ ख ६३	००	स ३२ ७ ख ६२	स ३२ ७ ख ७	चउसंठाणाणं । ० पंचसंघडणाणं । तिथ्यराणं			
स ३२ ७ ख ६	णरक-देववादि-समचदुर	स ३२ ७ ख ६	वेगुव्वियगोवंग । णरक-देवाणुपुव्वी । ० पसत्था-					
पसत्थगइ । ० सुभगं । ० सुस्तर-दुस्तरं । ० आदेज्जं	स ३२ ७ ख ४	आदाउज्जोव	स ३२ ७ ख ३					
मणुसगदि । ० विगलिदिय-सगलिदियाणि । ० ओरालियगोवंगं । ० मणुस्साणुपुव्वी । ० परघाद ।								
० उस्सासं । ० तस-पज्जत्तं । ० थिरं । ० सुभं	स ३२ ७ ख १	तिरिक्खदि । ००००००००००००००००००००००						

गइआणु० विसे० । अगुरुगलहुग० विसे० । उवघाद० विसे० । परघाद० विसे० । उस्सास० विसे० । उज्जोव० विसे० । दोविहायगदि० विसे० । तस० विसे० । बादर० विसे० । पज्जत्त० विसे० । पत्तेग० विसे० । थिराथिर० सरिस० विसे० । सुभासुभ० सरिस० विसे० । सुभग-
दूभग० सरिस० विसे० । सुस्सर-दुस्सर० सरिस० विसे० । आदेज्जाणादेज्ज० सरिस० विसे० । एदेसिं पयडीण पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि जाणिदाणि । कुदो ? एदासिं तेदालीसपयडीणं जहासंभवेण सह बज्जमाणत्तुवलंभादो ।

जसाजस० सरिस० विसे० । पृ० ३८.

एदेण सूचिदणिमिण० विसे० ।

पुणो मणुसगदि० विसे० । पृ० ३८.

संखेज्जदिभागेण । कुदो ? पुठिवरुलसमयपबद्धस्स सत्तम० सत्तवीसदिम० । एदेण सूचिदपयडीणं अप्पाबहुगं—मणुसाणु० विसे० । एइंदिय० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? सत्त० चउव्वीस० । आदाव० विसे० । थावर० विसे० । सुहुम० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? सत्त० तेवीसदिमभा० । अपज्ज० विसे० । साधारण० विसे० ।

पुणो दुगुंछा० विसे० संखेज्जगुणं । पृ० ३८.

कुदो ? सत्तम० दसमभागत्तादो ।

भय० विसे० । हस्स-सोगाणं० विसे० । रदि-अरदीणं० विसे० । इत्थि-पुरिस-
णपुंसक० विसे० । माणसंज० विसे० । पृ० ३८.

संखेज्जदिभा० । कुदो ? सत्तम० दुभागस्स चउत्थभागत्तादो ।

कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे० विसे० । दाणंतराय० विसे० । पृ० ३८.

संखेज्ज० । कुदो ? सत्तमभा० पंचमभागत्तादो ।

लाहांत० विसे० । भोगांत विसे० । उपभोग० विसे० । वीरिय० विसे० ।

मणप० विसे० । पृ० ३८.

संखेज्ज० । कुदो ? सत्त० चउव्वभागत्तादो ।

ओहि० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंस० विसे० ।

संखेज्ज० कुदो ? सत्तम० तिभागत्तादो ।

अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्च-णीचागोदानं संखेज्जगु० । पृ० ३८.

कुदो ? समय० सत्तमभागत्तादो ।

सादासाद० पक्क० विसे० । पृ० ३८.

पयडिविसेसेण ।

वेगुव्वियसरीर० असंखेज्जगुणं । पृ० ३८.

कुदो ? एइंदियउववाद्दजोगादो असंखेज्जगुणसण्णपंचिंदियपज्जत्तुववाद्दजहण्णजोगेण असंजदसम्माइट्ठिणा बद्धसमयप० सत्तम० सत्तावीसदिमभागत्तादो । एत्थ सूचिदप्पाबहुगं उच्चदे—तिरथयर० संखेज्जगुणं । कुदो ? देवेसुःपण्णपढमसमये होदि त्ति ।

देवगदि० विसे० [मू० संखेज्जगुणं] । पृ० ३८.

संखेज्जदिभागेण । कुदो ? दो(?)तिथ्यरबंधस्स मणुस्सेसुप्पण्णस्स होदि त्ति । वेगुव्विय-
अंगोवंगं विसे० । देवगदि० पा० विसे० पयडिविसे० । कुदो ? तेण सह बंधत्तादो ।

मणुस्स-तिरिक्खाउगं' असंखेज्जगुणं । पृ० ३८.

कुदो ? सण्णपंचिदियपज्जत्ताणं जहण्णुववादजोगादो सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तजहण्ण-
परिणामजोगेण असंखेज्जगुणेणागदत्तादो ।

पुणो णिरयगदि० दव्वं असंखेज्जगुणं [मू० असंखेज्जगु०] । पृ० ३८.

कुदो ? असण्णपंचिदियपज्जत्तजहण्णपरिणामजोगेणागददव्वस्स सत्ताम० चउवीस० ।
एत्थ सूचिदणिरयगइपा० विसे० ।

पुणो णिरय-देवाउगं संखेज्जगु० [मू० असंखेज्ज०] । पृ० ३८.

कुदो ? अट्टमभागत्तादो ।

आहारसरीरं० असंखेज्जगुणं । पृ० ३८.

कुदो ? सण्णपंचिदियपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामेणागददव्वस्स सत्तावीसदिमभागस्स
चउत्थभागत्तादो । एत्थ सूचिदाहारसरीरंगोवंगं संखेज्ज० । पुणो छादालसयपयडीणं
अप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं ।

तेसिंतिणं पि संदिट्ठी—

स ८	००००००००००००	स ०००००	स
७ ख ९१७		७ ख ९	७ ख ५
स	ओरालियसरीरं । ० तेजइयसरीरं । ० कम्मइगं	स	तिरिक्खगदि
७२८३		७२८	७२८
जस-अजसकित्ति	स	मणुसगदि	स
७२७	७१०	दुगुंछं । ० भयं । ० हस्स-सोगं । ० रदि-अरदि-ईत्थि-	
पुरिस-णपुंसक	स	माणसंजलणं । ० कोधं । ० मायं । ० लोभं ।	स
७८	७५	दानं । ० लाभं । ०	
भोगं । ० परिभोगं । ० वीरियं	स	मण० । ० ओधि । ० सुद । ० मदिणाणाणं	स
	७४		७३
ओधिदंसणं । ० अचक्खु । ० चक्खु	स	उच्चणीचागोदं	स
	७	सादासाद	स २
			७२७३
सरीरं	स २	देवगदि	स २२
७२७	८	तिरिक्ख-मणुस्साउग	स २२२
			७२६
			स २२२२
			८
देव-णिरयाउगं	स २२२२ ख	आहारसरीरं गंधालावं	स ८
	७२७४		७ ख ९१७
स ०००००	स	स	ओरालियसरीरं तेजइग । ० कम्मइग
७ ख ९	७ ख ५	७२८	३ ।
			स
			७२८
तिरिक्खगदि । ० विगल्लिदिय-सगलिदिय-उस्संठाणाणं । ० ओरालियंगोवंगं । ० छस्संधडणं । ०			
वण्णं । ० गंधं । ० रसं । ० फासं । ० तिरिक्खाणु० अगुरु० । ० लहुगं । ० उवघादं । ० परघादं ।			
० उस्सासं । ० उज्जोवं । ० दोविहायगइ । ० तस । ० बादर । ० पज्जत्तं । ० पत्तेगं । ० थिराथिरं ।			
० सुभासुभं । ० सुभग-दूभगं । ० सुस्सर-दुस्सरं । ० आदेज्जाणादेज्ज ।	स	जसाजसगित्ति ।	
	७२८		

(१४)

परिशिष्ट

० णिमिणं । स ७२७ मणुस्सगदि । ० मणुस्साणुपुठ्वी स ७२५ एइंदियं । ० आदावं । ० थावरं

स ७२३ सुहुमं । ० अपज्जत्त । ० साधारणं स ७१० दुगुंछा । ० भयं । ० हस्स-सोगं । ० रदि-

अरदि । ० इत्थि-पुरिस-णउंसग स ७८ माणसंजलण । ० कोधं । ० मायं । ० लोहं । स ७५

दाणं । ० लाभं । ० भोगं । ० परिभोगं । ० वोरियं । स ७४ मण । ० ओधि । ० मुद । ० मदि

स ७३ ओधिदंसणं । ० अचक्खु । ० चक्खु स ७ उच्चा-णीचागोदं स सादापादं स २ ७२७३

वेगुत्त्विय स २ ७२८ तित्थयर स २ ७२७ देवगदि । ० वेगुत्त्वियगोवंग-देवगदिपाओग्ग स २ ८

तिरिक्ख-मणुस्साउ स २२२ ७२६ णरक्कगति-तप्पाओग्ग स २२२ ८ णिरय-देवाउ स २२२ ७२४

आहारं स २२२२ ७२७२ अंगोवंग । वीसुत्तरसयपयडीणमुच्चाराणं स ८००००००००००० ७ ख ९१७

स ००००० ७ ख ९ स ७ ख ५ स ७३० ८००००००० स ०००० ७३०१५ स ०००० ७३०१५ स ३ ७३०१५ ओगलिय-

सरीरं तेजइगं कम्मइगं स ७३०३ ओरालियसरीरबंधणं । ० तेजइगबंधणं । ० कम्मइगं ।

स ७३०१५ ओरालियसंघाद । ० तेजइगं कम्मइगं । स ७३०३ उवरितिरिक्खगदिआदीणं पुठ्वं

व । एसो छाशाल-सयपयडीणं आलावो ।

पुणो ट्टिदि-अणुभागोसु पक्कमिदकम्मदब्बस्स अप्पावहुगंगथसिद्धं सुगममिदि तमपरुविय पुणो ट्टिदिणिसेयप्पडि पक्कमिदाणु भागस्सप्पावहुगं णिअवेवाहरियेण एवं परुविदं— समयाधिकावाह-ट्टिदीए ट्टिदिणिसेयस्स अणुभागो थोवो । पुणो तत्तो तदणंतरउवरिमिठ्ठीदीए णिसेयस्सणुभागो अणंतगुणो । एवं तत्तो उवरिमुवरिमिठ्ठीदीणं ट्टिदिणिसेयाणं अणुभागा अणंतगुणाणंतगुणकमेण गच्छंति जा उप्पादिदुक्कस्सट्टिदिणिसेयस्स अणुभागो न्ति ।

एदस्स कारणं किंचि वत्तइस्सामो । तं जहा— ट्टिदिअणुभागानं बंधस्स कारणं कसायोदय-जणिदपरिणामो चैव । स च परिणामो णाण-इंक्षगलक्खणस्स जीवस्स कम्मक्खणण पत्तप्पसरुवस्स सच्चवत्थुपरिच्छत्तीए सह जादाणंतसुहस्स तिविहकेवलिरुवस्स उवसंत-खीणकसायरुवस्स च साहा-वियो वीदरागपरिणामो होदि । तं च विणासियअणादिकम्मसंबंधं जीवस्स कसायोदयो मिच्छत्तो-दयसहिदो णोइंदियणाणोव जोगजुत्तपंचिदिये वावारसहियो अणागारोवजोगसहिदो वा असंखेज्ज-लोगमेत्तसराग-दोस-मोहपरिणामभेदमुप्पाएदि । तं कथं ? मिच्छत्तं चउण्हं कसायचउक्काणं तिण्णं वेदाणं दोण्हं जुगलाणं भय-दुगुंछाणं पुह-पुहाणं जुगलाणं उदयाणमणुदयाणमिदि कमेण मोहकुलं ठविय अक्खसंचारेण उदयवियप्पेसु उप्पाइदेसु छण्णउदिमेत्तुदये वियप्पा होंति । पुणो तत्तियमेत्त-ट्टाणे कसाय-णोकसायोदयपयडिसमूहस्स अणुभागमेगेगपत्तीए ठविय तस्थतणबंधुक्कस्साणुभागस्स अणंताणुबंधिलोभ-माया-लोह-माणपयडीणं कमेणेक्केक्काणं चउवीसभेदभिण्णपत्तीणमुक्कस्साणुभागो-हिंतो कमेणाणंतगुणहीणाणि संजलणलोभ-माया-कोह-माणण बंधेण जादाणुभागा होंति । तेहिंतो

कमेणाणंतगुणहीणा पञ्चक्खाणलोह-माया-कोह-माणामणुभागा हांति । तेहितो अपञ्चक्खाणलोह-माया-कोह-माणानं च अणंतगुणहीणा हांति । पुणो तेहिता जहण्णाइच्छावगमेत्तं हेट्ठा ओंसरिय ढिदाणुभागोदयो सग-सगपढमकसायोदयो हांदि । कुदो ? उदयाणुसारी उदीरणा हांदि त्ति गुरूवदेसादो ।

उक्कस्साणुभागादो संजलण-णोकसायाणं आदिवग्गणा त्ति एगपंतीए अभिण्ण..... दत्तादो.....णोकसायोदयाणि मिच्छत्तोदयसहिदाणि णोइंदियणाणोवजोगजुत्तपंचिदिण्ह सह वीदरागभावं णासिय अदीव विवरि(री)इतमभावमुप्पादेति त्ति ते संकिलेस्सा इदि भणिज्जति । तं कथं णव्वदे ? सण्णिपंचिदियपज्जत्तामिच्छाइट्ठी सव्वसंकिलिट्ठो उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि त्ति आरिमादो । तहितो कमेण छव्वहहाणीए पुव्वुत्तकमेण संकिलेसा असंखेज्जलोगमेत्ता असादादि-अप्पसत्त (त्थ) पगवत्तणपयडिवंधकारणा हांति । पुणो तेहितो हेट्ठा केसि पि जीवाणं पुव्वुत्त-कारणसामग्गीए वीदरागभावं णासिय अदीव(व)विवरि(री)यभावमुप्पाययंति । तदो तेसि परिमाणं (णामाणं) कमेण संकिलेस-विसोहि त्ति सण्णा । एरिसाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि गच्छंति । पुणो तत्तो पर अणंताणुबंधीणं उदयविरहिदअसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेसट्ठाणाणि आवलियकालपडिवद्धाणि हांति । पुणो तत्तो परं अणंताणुबंधीणमुदयसहिदाणि पाओग्गकारण-समवेदाणि संकिलेस-विसोधिणबंधणाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि हांति । कहिं पि मुभाणि असंखेज्जलोगमेत्तविसोहिट्ठाणाणि च पुणो कहिं पि सुक्क (संकि)लेसट्ठाणाणि असंखेज्जलोग-मेत्ताणि हांति । पुणो मिच्छत्तविरहिदाणि सासणसम्मादिट्ठि- [मिह] मिच्छत्ताणंताणुबंधि-विरहिदाणि सम्मामिच्छाइट्ठी (ढि) असंजदसम्माइट्ठीसु, पुणो तेहिं सहापञ्चक्खाणाविरहिदाणि संजदासंजदम्मि, पुणो पुव्वुत्तेहि सह पञ्चक्खाणाविरहिदाणि वि पमत्तसंजदम्मि पुह पुह संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि हांति । पुणो अप्पसत्त-अपूव-(अपुव्व)करणमुद्धिसंजदेषु विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि हांति । पुणो अणियट्ठम्मि उभयमेढासु सर्वेदचारिमममयो त्ति पुव्वफहयपडिवद्धट्ठाणाणि वारसपंतीसु पुह पुह अंतोमुहुत्ताणि हांति । णवरि उवसमसेडीए चारिमसमयअणियट्ठिपज्जवसाणं जाव पुव्वफहयपडिवद्धट्ठाणाणि हांति । पुणो तत्तो परं खवग-सेडीए अपुव्वफहयवग्गण-वादरकिट्ठि सुट्ठुसकिट्ठिपडिवद्धट्ठाणाणि कमेण चदु-चट्टु-तिग दुग्ग-पंतीसु अंतोमुहुत्तमेत्ताणि हांति । पुणा एवमुप्पण्णाणि एत्तियमेत्ताणि सव्वपरिणामट्ठाणाणि हांति । णवरि मिच्छत्तसहगदचरिमसंकिलेस-विसोहिट्ठाणेषु सण्णिपंचिदियमिच्छाइट्ठि असण्ण-पंचिदिण्णसु च उरिदिण्णसु तीइदिण्णसु बीइदिण्णसु एइदिण्ण (य) जीवेषु च उप्पण्णेषु कमेण णोइंदिय-सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिडिंभदिय [-तुगिंदिय] णाणगदा, एग दो-तिण्ण चत्ताणि-पंच-सहायविरहिदत्तादो । अप्पण्णकसायोदयट्ठाणाणि पुह पुह असंखेज्जलोगमेत्ताणि । ताणि संकिलेस-विसोहिणामधेयेसु पविट्ठाणि हांति । पुणो एवमुप्पण्णचउकसायपडिवद्धट्ठण्णउदिपंतीयो सग-सगपाओग्गट्ठाणे पविसिय एगपंती कायव्वा । एवमुप्पाइदकसायोदयट्ठाणेषु उक्कस्सट्ठिदिबंधमादिं कादूण समयूणादिकमेण अंतोकोडाकोडिमेत्तथुवट्ठिदिबंधो त्ति पुह पुह असंखेज्जलोगमेत्ताणि कसायो-दयट्ठाणाणि संकिलेसणामधेयाणि विसेसहीणाणि कमेण हांति । णवरि विसोहिणामधेयकसायो-दयट्ठाणाणि साट्टुक्कस्सट्ठिदिबंधपायोग्गण्णहुडिविसेसाहियकमेण गच्छंति जाव सगधुवट्ठिदि त्ति ।

पुणो तत्तो हेट्ठिमट्ठिदिवियप्पेषु वि मिच्छा०-सासण०-सम्मामिच्छा०-असंजद०-संजदा-संजद०-पमत्तापमत्त०-अपुव्वेषु लब्धमाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि हांति । णवरि मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजद पंमत्तापमत्तसंजदगुणट्ठाणेषु अधापवत्त-अपुव्वानियट्ठिकरणाणि

कीरमाणेषु जं तत्थाणियट्टिकरणाणि बंदण(?)ठिदिबंधेषु अंतोमुहुत्तमेत्तकसायोदयट्टाणाणि हांति । णवरि जत्थ संखेज्जभागहीण-संखे-गुणहीण-असंखेज्जगुणहीणेषु णियमेण ठिदिबंधोसरणेण ठिदिबंधेषु जादेसु तत्थ तेसिमंतरालणिसेयाणं वत्ति(त्त)ठिदिबंधाणं (बंधा ण) संति । किंतु अण्णठिदिबंधेहि सह अव्वत्तठिदिबंधत्तणेण । तेसिं कारणभूदकसायोदयट्टाणाणि पुव्वुप्पाइदट्टाणेषु उप्पण्णाणि संति, किंतु तेसिं वत्तिसरूवोदया ण संति । अण्णकसायोदयत्तरेसु पवेसिय उदयं देति त्ति । णवरि असंखेज्जगुणहीणठिदिबंधोसरणमणियट्टिमिंमिं चैव संभवदि । पुणो एवमुप्पणकसायोदयट्टाणेषु उक्कस्सठिदिबंधहेदुभूदाणि कसायोदयट्टाणाणि सहायसत्त्वपेक्खाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि हांति ।

जदि एवं[तो]तेहि उक्कस्सट्टिदिमिंमिं बज्जमाणमिंमिं तत्थ बज्जसमयपवद्धपरमाणूणं सत्त्वेसिं-मुक्कस्सट्टिदिबंधसभवे सते कथं तस्स समयपवद्धस्सत्तभंतरपरमाणूणं समययूणादिद्विदिबंधाणं संभवो ? ण एस दोसो । कथं ? उक्कस्सकसायोदयस्स आदिवग्गणआदिप(फ)हयपहुडि असंखेज्जलोगमेत्तकसायोदयट्टाणाणं अभिण्णसरूवेण एगपंतीए रचना कायत्त्वा जा उक्कस्सप(फ)हयउक्कस्सवग्गणे त्ति । एदाणि सत्त्वाणि एकसमये ण उदयं करेति । पुणो तत्थ उक्कस्सवग्गणपहुडि हेट्टिमाणं असंखेज्जलोगमेत्तकसायोदयट्टाणाणं वग्गणेहि उक्कस्सट्टिदि बंधदि । तत्तो हेट्टिमाणं असंखेज्जलोगमेत्तकसायोदयट्टाणाणं वग्गणेहि समउणट्टिदि बंधदि । एवं हेट्टा वि जाणियूग कसायोदयट्टाणाणि वत्तत्त्वाणि जाव सगसमयाहियावाहा त्ति । पुणो एवं समयूण-दुसमयूणादि-ट्टिदीयां अवलंबिय णेदव्वं जाव सवेदिचरिमसमयकसायोदयो त्ति । एवं बंधे समयधिक-आवाहापज्जवसाणसत्त्वट्टिदीयो वि उप्पण्णाओ हांति ।

पुणो तत्थ हेट्टिमट्टिदीयो किण्ण बज्जंति ? ण, अपुव्वप(फ)हयवग्गणकिट्टिसरूवेण णोकसायो-दयविरहिट्टिकसायोदयेण च उप्पण्ण(ज्ज)माणकजाणं मिच्छत्त-णोकसायोदयसहिदित्त्वकसायोदएण संभवाभावादो । तेसिं संभवाभावे कथं आवाहखंडयेणूणउक्कस्सट्टिदिबंधपहुडि हेट्टिमट्टिदि-बंधट्टाणाणं उक्कस्साबाधपहुडि समयूणादिकमेण जावंतोमुहुत्तमेत्ताओ ट्टिदीयां त्ति पढमाणसेयाण-मुवलंभणियमो ? तेसिं ण्ठिणीणमुप्पत्तीए णियमस्स अण्णं कारणमत्थि । तं कथं ? उक्कस्सादि-ट्टिदिट्टाणेषु पत्तेयं पत्तेयं असंखेज्जलोगमेत्तभिण्णमभिण्णसरूवकसायोदयट्टाणाणि संति । तेसिं ट्टिदिं पडिट्टिदिं पडि ट्टिदाणं पुह पुह अणुक्कट्टि(कट्टि)अट्टाणमेत्तखंडगदाणं विसेसा-हियकमेण गदाणं तत्त(त्थु)क्कस्सखंडं मोत्तूण सेसखंडेहि समयूणुक्कस्सट्टिदिपहुडि समउणा-वाहाखंडयेणूणुक्कस्सट्टिदि त्ति एगेगखंडपरिहाणेहि बज्जमाणट्टिदीयो हांति ।

एदेहि चैव उवरिमुवरिमट्टिदीयो किमट्टं ण बज्जंति समाणट्टिदिबंधकारणेषु सत्त्वेसु संतेसु ? ण एस दोसो । एत्थ तस्स कारणं उच्चदे— मिच्छत्तित्त्वोदएण अदीधमण्णाणसरूव-णोइंदिय-पंदियणाणासहाएण उक्कस्सखंडपहुडि सत्त्वखंडेहि उक्कस्सट्टिदि बंधदि । पुणो उक्कस्स-खंडं मोत्तूण सेसखंडेहि मंदसरूवेहि परिणदपुव्वुत्तकारणसहाएहिं समयूणट्टिदि बंधदि त्ति । एवमेगेगखंडेणूणसेसासेसखंडेहि पुव्वुत्तकारणाणं मंद-मंदादिकमेहि जुत्तेहि उणट्टिदीयो बद्धं(ज्जं)ति जाव समयूणावाहखंडमेत्तचरिमहेट्टिमट्टिदि त्ति । तदो हेहिमट्टिदीयो ण बज्जंति । कुदो ? कारणणं तत्तियमेत्तकज्जुप्पायणसत्तीदो, अधियकज्जुप्पायणसत्तीए अभावादो । पुणो हेट्टिम-हेट्टिमअणुक्कट्टि(कहि)वियप्पेसु एवं चैव कारणं वत्तव्वं जाव अणुक्कट्टिसंभवो अत्थि ताव । पुणो तत्तो हेट्टिमाणं उवरिमेगेगेणाबाधखंडएणूणजादपदेसट्टिदीओ अवलंबिय आवाहाए एगेगट्टिदीओ हांति पुव्वुत्तकारणवसेण । कथं मिच्छत्तोदय-णोइंदिय-पंदियणाणासहाएण

कसायोदयेण एवंविहकज्जमुप्पज्जदि त्ति णज्ज(व)दे ? दस-गवपुव्वधारिजीवस्स ज्ञाणमुप्पज्जदि त्ति आरिसादो णिम्मलणाणेण विसंहो हंदि त्ति णव्वदे । तदो समयूणादिहेट्ठिमट्ठिदीओ उप्पज्जंति त्ति सिद्धं । पुणो जाणि जाणि वग्गणप(फ)हयाणि पुह पुह पुव्विल्लट्ठिदिकजाणि करेति ताणि ताणि कारणसामग्गीए करेति त्ति गेण्हदव्वाणि ।

पुणो अणुक्कड्डिपरिणामे समाणे संते वि अणुभागाणं सरिसं णत्थि । कुदो ? उवरिम-ट्ठिदिम्मि वज्जमाणे तस्संबंधिट्ठिदिवंधज्जवसाणाणं संबंधिअणुभागं बंधदि, तक्काले अणुक्कड्डि-परिणामेहि हेट्ठिमट्ठिदीणं पुह पुह बंधाभावादो । पुव्वं व पुव्विल्लकसायोदयस्स वग्गणादि-भेदेण हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठिदीसु वज्जमाणेसु बंधज्जवसाणसंबंधिअणुभागं बंधंति । तदो चेव उवरिमादो हेट्ठिम-हेट्ठिमाणतगुणह्णाणाणंतगुणसरूवेण अणुभागा जादा । पुणो हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठिदीयो वज्जमाणकाले उवरिम-उवरिमट्ठिदीओ ण वज्जंति त्ति वा 'अणुक्कड्डिअणुभागा ण संति । पुणो उक्कस्सट्ठिदिवंधकाले उक्कस्साणुभागं बंधदि । पुणो तक्काले समयूणाट्ठिदिसंबंधिवग्गण-फहय-ठाणेहि उत्तेहि अणंतगुणहोणं बंधदि । एवं ट्ठिदअणुसारेण अणुभागा अणंतगुणहीणसरूवेण वज्जंति त्ति णिव्वेवारियवयणं सिद्धं । कुदो ? ट्ठिदिवंधज्जवसाणेसु अणुभागबंधज्जवसाणाणि अवस्सं संति त्ति अभिप्पायेण । किंतु अणुभागवग्गणाणं एत्थ अणंतरोवणिधा असंखे० ट्ठाणेसु असंखे० भागहीणेण, संखे० ट्ठाणेसु संखेज्जभागहीणेण, एक्कम्मि ट्ठाणे संखेज्जगुणहीणेण, अहवा असंखेज्जेसु ट्ठाणेसु अणंतगुण-अणंतगुणहोणेण खलितं (कखलिदं) होदूण गच्छदि । कुदो एवं ? जत्थ पढमादिणिसेयवग्गणाओ थक्कंति तत्थ असंखेज्जभागहीणे-णंतरदि जाव संखेज्जा णिसेया अवसेसा त्ति । तदो संखेज्जभागहीणेणंतरदि । चारिमाणसेये संखेज्जगुणेणंतरदि । जदि पुण अभावणिसेयाणं दव्वाणि सग-सगचरिमवग्गणाए णिक्खिखवि-ज्जंति तो अणंतगुण-अणंतगुणेणंतरदिदूण गच्छदि । गेदं पि, सुत्तविरूद्धत्तादो ।

सेसाइरियाणमभिप्पायेण पढमादिणिसेणमु पक्कमिदणुभागो समयाधिकावाहप्पहुडि उक्कस्सट्ठिदि त्ति ट्ठिदणिसेयाणं संबंधीयो सव्वत्थ सरिसो । तस्स किंच कारणं वत्तइम्मामो । तं जहा— उक्कस्सट्ठिदिसंबंधियसमयपव्वद्धम्मि समयूणादिट्ठिदीणं संभवे कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । पुणो उक्कस्सट्ठिदिवंधहेदुभू दुक्कस्सकसायोदए असंखेज्जलोयभेदभिण्णाणि अणुभागबंधज्जव-साणाणि होति । पुणो तत्थतणुक्कस्साणुभागबंधज्ज वग्गणादो उक्कस्साट्ठिदि(म्मट्ठिदि)संबंधि-अणुभागबंधज्जवसाणट्ठाणाणि छत्तिवह्हाणीहिं असंखे० लोममेत्तट्ठाणाणि गंतूण समयूण-ट्ठिदिसंबंधिअणुभागबंधज्जवमाणट्ठाणाणि असंखे० लोममेत्ताणि होति । एवं दुसमयूणा-दिट्ठिसंबंधीणि असंखेज्जलोममेत्ताणि पुह पुह अणुभागबंधज्जवसाणट्ठाणाणि गच्छंति जाव जहण्णट्ठिदिसंबंधिजहण्णाणुभागबंधज्जवसाणट्ठाणे त्ति । एदाणि पुणो उक्कस्साणुभागबंधज्जवसाणं सव्वहेट्ठिमट्ठाणाणि अवगाहिय एगपंतीए ट्ठिदत्तादो अभिण्णरूवेण एगं होदि त्ति । नेण वज्जमाणममयपव्वद्धम्म उक्कस्साणुभागुक्कस्सवग्गणप्पहुडि जहण्णवग्गणे त्ति बद्धाओ तदो सव्वट्ठिदीसु ट्ठिदणिसेयाणं अभिण्णपरिणामत्तादो सरिसाणुभागो होदि । समयू-णादिट्ठिदीणं अणुभागबंधज्जवसाणाणं तत्थ संभवो णत्थि, तत्थ तेसिं भिण्णपरिणामाणसेग-समए संभवाभावादो । तदो सव्वणिसेयट्ठिदीसु उक्कस्साणुभागो त्ति सिद्धं । पुणो एत्थ वग्ग-णाणमणंतरोवणिधा संभवदि, सुभपयडीणं उक्कस्साणुभागसंतरस कालपमाणपरूवणा वि संभवदि । एवं पक्कमणियोगो गदो ।

उवक्कमो चउव्विहो— बंधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि । ×××× तत्थ बंधणोवक्कमो चउव्विहो पयडि-ट्टिदि-अणुभागप्पदेसबंधणोवक्कमणभेदेण । ×××× पुणो एदेसिं चउण्हं पि बंधणोवक्कमाणं अत्थो जहा संतकम्मपाहुडम्मि उत्तो तहा वत्तव्वो । पृ० ४२.

सतकम्मपाहुडं णाम तं कध(द)मं ? महाकम्मपयडिपाहुडस्स चउवीसमणियोगहारेसु विदियाहियारो वेदणा णाम । तस्स सोलसअणियोगहारेसु चउत्थ-छट्टम-सत्तमाणियोगहाराणि दव्व-काल-भावविहाणणामधेयाणि । पुणो तहा महाकम्मपयडिपाहुडस्स पंचमो पयडी णामहियारो । तत्थ चत्तारि अणियोगहाराणि अट्टकम्माणं पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-प्पदेससत्ताणि परूविय सूचिदुत्तरपयडि-ट्टिदि-अणुभाग-प्पदेससत्तादो । एदाणि सत्त (संत) कम्मपाहुडं णाम । मोहणीय पडुच्च कसायपाहुडं पि होदि ।

पुणो उदीरणोवक्कमो पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-प्पदेसउदीरणोवक्कमणभेदेणचउव्विहो । तत्थ पयडिउदीरणोवक्कमो दुविहो मूलुत्तरपयडिउदीरणोवक्कमणभेदेण । ×××× तत्थ मूलपयडिउदीरणोवक्कमो दुविहो— एगेगपयडिउदीरणोवक्कमो पयडिट्ठाणोदीरणोवक्कमो चेदि । पृ० ४३.

तत्थ एगेगपयडिउदीरणोवक्कमणम्मि सामित्तपरूवणं सुगमं । एगजीवकालपरूवणं पि सुगमं । णवरि आउगस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ दोसमयो वा त्ति परूविदो । तं कथं ? एगसमयाधिकावलियमेत्तं वा धुव(दु)समयाधिकावलियमेत्तं वा आउगे सेसे अपमत्तो (त्ते) पमत्तगुणट्ठाणं गदे होदि । एदस्स अत्थो तत्थ गंथे आइरियाणमभिप्पायंतरमिदि मुत्तकंठं भणिदो । तदो वियप्पट्टो इदि ण भाणिदव्वो । जदि वियप्पट्टो भणिज्जदि तो एगसमयाधिक-मावलयं वा दुसमयाधिकमावलयं वा एवं तिसमयाधिकमावलयं वा आदि कादृण णेदव्वं जाव आवलियूणपमत्तजहण्णद्वेणव्वमहियआवलिया त्ति भणेज्ज । ण च एवं भाणिदं, तदो अभिप्पायंतरमिदि सिद्धं । पुणो एदाए परूवणाए पमत्तगुणट्ठाणकालो समयाधिकावलयमेत्तो वा दुसमयाधिकावलयमेत्तो वा होदि त्ति सिद्धं ।

एवं संते एदं जीवट्ठाणस्स कालाहियारेण उत्तपमत्तजहण्णकालेण अ..... सह विरुज्जदे । एदं पि अंतोमुहुत्तमिदि चे— ण, तत्थ संखेज्जावलिमेत्तकालो अंतोमुहुत्तमिदि परूवणोवलंभादो । तं पि कथं णव्वदे ? एदेण कसायपाहुडगाहासुत्तेण [क० पा० १५-१७] संजदाणं जहण्णद्धा अंतोमुहुत्तमिदि परूवयेण तं । जहा—

आवलियमणायारे चक्खिदिय-सोद-घाण-जिवभाए ।

मण-वयण-काय-फासे अवाय-ईहा-सुदुस्सासे ॥ १ ॥

केवलदंसण-णाणे कसायसुक्केक्कए पुधत्ते य ।

पडिवादुवसामेतय खवेत्तए संपराए य ॥ २ ॥

माणद्धा कोहद्धा मायद्धा तह य चेव लोहद्धा ।

सुहभवग्गहणं पि य [पुण] किट्टीकरणं च बोद्धव्वा ॥ ३ ॥ इदि

एत्त (रथ) तणतदियगाहाए उत्तसुहाभवग्गहणं संखेज्जावलियांमिदि उत्तादो, सासण-सम्मादिट्ठिअद्धादो सुहाभवग्गहणं संखेज्जगुणमिदि परूवयसुत्तादो, आइरियाणं संखेज्जावलिय-

यंतोमुहुत्तमिदि तदुप्पायिय परूवयवियपदंसणादो च स णव्वदे । “तत्तो किट्टिकरणद्धा दुगुणा । तत्तो अणियट्टिअद्धा संखेज्जगुणा । तत्तो अपुव्वकरणद्धा संखेज्जगुणा । तत्तो अप्पमत्ताद्धा संखेज्जगुणा । तत्तो पमत्ताद्धा दुगुणा ।” इदि आइरियेहि परूविदत्तादो, पुणो मिच्छत्ताद्धा सम्मा-
मिच्छत्ताद्धा सम्मत्ताद्धा असंजमद्धा संजमासंजमद्धा संजमद्धा इदि छण्णं पि अद्धाणं जहण्णकालो समाणो होदूण अंतोमुहुत्तपमाणमिदि परूवणाए विरोहोवलंभादो च । सच्चं विरोहो चैव, किंतु अभिप्पायंतरेण परूविज्जमाणे विरोधो णत्थि । कुदो ? पमत्तापमत्तसज्जाणं वाघादविसए उव्वसमसेठीणं व एगसमयोवलंभादो । पुणो णिव्वाघादविसयम्मि एदेसि संजदाणं अंतोमुहुत्तद्धा परूविदा । तं कथं ? असंजदो संजदासंजदो वा संजमं पडिवज्जिय संजमद्धाए अंतोमुहुत्तकालं पमत्तापमत्तद्धा परावत्तणसरूवेण छण्णं पुणो दीहाउण्ण संजदेण पमत्तापमत्तद्धासरूवेण छण्णं च णिच्चयेण अंतोमुहुत्तं होदि ।

(पृ० ४६)

पुणो एगजीवंतरपरूवणं पि सुगमं । णवरि वेदणीयकम्मस्स उदीरणंतरं एगसमयमिदि परूविदं । तेण जाणिज्जदि अपमत्तकालो वाघादविसयो एगसमयो होदि, णिव्वाघादविसयो अंतोमुहुत्तो त्ति ।

पुणो णाणाजीवभंगविचय-कालंतरप्पावहुगाणि सुगमाणि । पुणो पर्याडिट्ठाणउदीरणा दुविहा—अव्वा(अव्वा)गाडउदीरणा भुजगारपर्याडिउदीरणा चेदि । तत्थ अव्वाघा (गा)ढ-पर्याडिउदीरणम्मि समुक्कित्तण सामित्त-एगजीवकालंतर-णाणाजीवभंगविचयादीणं अप्पावहु-गाणियोगहारपज्जवसाणाणं परूवणा सुगमा । पुणो भुजगारट्ठाणुदीरणाए सामित्त-कालंतर-णाणा-जीवभंगविचयादीणि अप्पावहुगपज्जवसाणाणि भुजगारेण सूचिदपदणिक्खेव-वट्ठीणं कमेण तिण्णि तेरसाणियोगहाराणि च सुगमाणि ।

(पृ० ५४-५५)

पुणो उत्तरपर्याडिणं एगेगपर्याडिदीरणाए सामित्तपरूवणा सुगमा । णवरि थीणगिद्धितियाणं उदीरणासामित्तस्स जो इंदियपज्जत्तयददुसमयप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ताव ते पाओग्गा होति । णवरि विगुव्वणाहिमुहचरिमावलयपमत्तसंजदं मोत्तण । पुणो आहारसरीरं उट्ठाविदपमत्तो विगुव्वणमुट्ठाविदतिरिक्ख-मणुस्सो असंखेज्जवम्माउगतिरिक्ख-मणुस्सो देव-णेरयिगे च अणु-दीरणा इदि । किमट्ठं एसो णियमो करिदे पंचविधिणिहादिदंसणावरणस्स ?

तेहि किं चक्खुदंसणं पच्छाइज्जदि किं अचक्खुदंसणं पच्छाइज्जदि किं ओहिदंसणं पच्छाइज्जदि किं तिण्णि वि दंसणाणि पच्छाइज्जंति आहो किं ताणि ण पच्छाइज्जंति ? किं चादो जइ ताणि पच्छाइज्जं(जं)ति तो तिण्णि वि दंसणा-वरणाणि तक्काले णिप्प(ण्फ)लाणि हांति, एदाणं कज्जाणं अण्णेहि कीरमाणत्तादो । अह ण पच्छाइज्जंति तो दंसणावरणे एदाणि ण पडि(डि)ज्जंतु, ताणं अण्णकज्जस्साणुवलंभादो त्ति ? ण एस दोसो, दंसणावरणअंतरे तेसिं पादे(ड)ण्णहाणुववत्तीदो ताणि तत्थ कज्जं करंति त्ति जाणिज्जदि । तं जहा—तिविहाणि वि दंसणाणि पत्तेयं पत्तेयं दुविहाणि खओवमगददंसण-उवजोग-गददंसणमिदि । तत्थ खओवसमगददंसणाणि तिण्णि वि तिहि दंसणावरणीएहि पच्छाइज्जंति, उवजोगगददंसणाणि पुणो कहिं पि पंचविधिणिहाहि पच्छाइज्जंति । कथमेदं णव्वदे ? अद्धुवोदयत्तादो दंसणावरणत्तण्णहाणुववत्तीदो च । तदो थीणगिद्धितियाणं उदीरणाओ तिण्णं पि दंसणाणं सुद्ध-त्तोवजोगं पच्छाइज्जंति(दंति) । पच्छाइज्जंति वि णिम्मूलं पच्छाइज्जंति । कुदो ? मिच्छत्तोदयं व सव्व-

वादितादौ । सो च मुद्घत्तोवजोगो इंदियपज्जत्तीण पज्जत्तयदस्स होदि त्ति तप्पडि(तं पडि)साम्मित्तं दिण्णं । पुणो एदाओ पच्छालि(दि)ददंसणोवजोगं पुव्वं क(का)उणुप्पज्जमाणणाणोवजोगमुद्धि पि णासेंति । ण च णिम्मूलं विणासेंति, तथा जीवस्सभावप्पसंगादो । पुणो णिहा-पयलाणमुदीरणाओ वत्तावत्तदंसणोवजोगं सव्वत्थ जायमाणं कहिं पि कहिं पि पच्छादेति । पच्छादेता विदंसणोवजोगमुद्धि पच्छादेति, ण णिम्मूलं पच्छादेति । तथा सति कथं सव्वघादिमिदि चे— ण, सव्वघादादिसम्मामिच्छत्तोदयो व्व संपुण्णत्तघादणं पडि सव्वघादिदत्तादो । एवं संते णिहा-पयलाणं परावत्तोदयाण उदीरणाकाला दिवसां(सा)दयो दिस्समाणा उवलंभंति । कुदो ? दोण्हं उवजोगाणं तत्थ उवलंभादो । कथमेदं णव्वदे ? ज्ञाणकाले वि णिहा-पयलाणं उदीरणसंभ उवलंभादो ।

पुणो किमट्ठं त्थीणनियाणं उदीरणा अप्पमत्तसंजदेसु तिविहकारणाणुप्पण्णाहारट्ठिदी(रिद्धि)-एसु पमत्तेसु विगुव्वगमुद्घाविदेसु असंखेज्जवस्साउगतिरिक्ख-मणुस्सेसु देव-णेरइणसु च णत्थि ? ण, णाणेण बहिरंगत्थोवजोगेण कसाय(?)मंदकसाएणुप्पणविमोहीए जादअप्पमत्त-पमत्तविगुव्व-णाहारट्ठिदी(रिद्धि)सु तदत्थित्तविरोहादो, असंखेज्जवस्साउगतिरिक्ख-मणुस्सेसु सव्वहा सुहीसु सुह-वहुलदेवेसु दुक्खवहुलणारणसु च तदत्थित्तविरोहादो । एदंसिमेसा णत्थि त्ति परूवएसु तं पि अत्थि । तं कथं ? निकरणपरिणामाणं विसोहिसरूवाणं पारंभणियमा सुदोवजोगो जागारो त्ति परूवयाणमुवलंभादो । पुणो विगुव्वणाहाररिद्धिउद्घावणाहमुहाणं चरिमावाल्मि वि उदीरणा णत्थि चेव । कुदो ? तेण उप्पज्जमाणकारणपयत्तेण ।

पुणो सादासादवेदणीय-मणुसाउगाणं च भिच्छाडिट्ठिप्पहुडि जावपमत्तसंजदो ताव उदीरणा होदि, उवरि णत्थि त्ति । कुदो णियमो ? उच्चदे— दाण-लाभ भोगोपभाग-वीरियंतरायाणं खओवसमविसेसमाहप्पेण बाहिरव्वभंतरेवत्थुपज्जायाणं पंचिदिय णांइंदियाणं पल्हादकरणसमत्थाणं संपादणेणुप्पणं जीवस्स जं मुद्घं तं सादावेदणीयस्स फल । पुणो तेसिं चेव खओवसमविसेस-हाणीए बाहिरव्वभंतरे(र)वत्थुपज्जायाणं इंदियपल्हादकरणसमत्थाणं संपादणविगमेहि जीवस्स जमुप्पणं दुक्खं तं असादवेदनायकलं । एवंविहदोण्हं कम्माणं फलाणि रागिस्स दासिस्स होति । कुदो ? परिणामायत्तादो । अप्पमत्तादि-उवरिमगुणट्ठाणजीवाणं तिव्वविसोहिपरिणदाणं चित्तमंतोसमसंतासं च काउं तेसिं दोण्ह फलाणं सामत्थियाभावादो । कुदो ? तेसु उवजोगे जादे ज्ञाणाणुववत्तादो तत्थ तेसिमुदयाण फलं णिक्कलं जादं । पुणो उदयस्स फलविरोहजाद-विसोहि(ही) उदयाणुसागिउदीरणस्स विरोही किण्ण भवे ? भवदि चेव । तदो चेव कारणादो ओकाडुदपरमाणूणं उदयावलयव्वभंतरे पवेसिट्ठं ण दिण्णं ।

एवं णव्वणोकसाय-चदुसंजलणोदय-उदीरणाणं पुव्वं फलाभावो वत्तव्वो । तेसिमुदीरणा एवं संते तत्थ कि ण पलि,डि,सेहिज्जदि ? ण, तेसिमुदय-उदीरणाण फलाणि सादासादादएसु उप्पज्जंति । तत्थुप्पणोदीरणकज्जं ण परिणामाणं विरोहित्तं जादं । पुणो असादस्स उदीरणेण वि सवेदणरत्तक्खयादिदुक्खवसरूवेण तिव्व-तिव्वतमादिसंकिलेसाविणाभाविणा आउगस्स कदलो-घादो उप्पज्जदि । पुणो असादस्स उदीरणेण सामण्णदुक्खवसरूवेण मंद-मंदतमादिसंकिलेसा-विणाभाविणा तिव्व(मंद)-मंदतमादिउदीरणा होति । पुणो सादस्स उदीरणाए सुहसरूवाए मंद-मंदतमविसोहीए मंद-मंदतमउदीरणाओ होति । पुणो अप्पमत्तादीणं तिव्वविसोहीए तदो चेव कारणादो णिम्मूलउदीरणा णट्ठा । पुणो

आहारदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओव(म)कोट्टाए ।

सादिदरुदीरणाए हवदि दु आहारसण्णा य ॥ ४ ॥ [गो. जी. १३४]

इदि किमट्टं उदय-उदीरणं एगरूवो(वे)अणुभागे संते उदीरणाए आहारसण्णा होदि त्ति णियमो ? उच्चदे— उदयो दुविहो द्विदिक्खयोदय-त्थिउक्कोदयभेदेण । तत्थ त्थिउक्कोदयफलं सगसरूवेण णत्थि त्ति णिफलं जादं । पुणो द्विदिक्खयोदयफलं सगसरूवफलत्तादो सफलं । तस्स उदयाणुरूवउदीरणा वि होदि । ण विदियमुदयाणुरूवा, तदो दो वि अविणाभावियो इदि एत्थ कट्टु तस्स पहाणत्त दिण्णं ।

(पृ० ५९)

पुणो उवघादणामस्स उदीरणा सरीरगहिदपढमसमयप्पहुडि होदि त्ति । कुदो एस णियमो ? ण, अमुत्तस्स जीवस्स अणादिकम्मसंबंधेण मुत्तत्तमुवगयस्स कम्मइयसरोदय-संबंधेण पुणो अदीव सुहुमत्तमुवगयस्स तदो चैव बाधावज्जिदस्स पुणो णाकम्मसरीरोदय-संबंधेण बाधासहगदं तस्स सरीरं जादं । तदो तथ उवघादकम्मस्स उदीरणा होदि त्ति सामित्तं दिण्णं । तस्स फलं वत्तावत्तसरूवेण वाद-पइत्त-सेम्हादिवाधाओ ? उवचिदावयवपरेहिं घादहेदु-भूदपोगगलोवचओ होदि ।

पुणो परघादणामस्स उदीरणा सरीरपज्जत्तयदस्स होदि त्ति । कुदो एस णियमो ? ण, पज्जत्तावयवेहि परघादहेदुभूदपोगगलोवचयाणं एत्थ दिससमाणत्तादो । पुणो

उस्सासणामस्स मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमयो त्ति उदीरणा । णवरि आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो संतो सजोगो उदीरेदि इदि । पृ० ५९.

एदस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा— एत्थ जाव सजोगिकेवल्लिचरिमसमयो ताउस्सासमु-दीरेदि त्ति उत्ते उस्सासणारोहं करंतकेवल्लिचरिमसमयो जाव तावेदस्समुस्सासुदीणा जीवपदेसाणं परिण्णंदमुस्सासरूवं च करेदि । तत्तो परं ते दांणि वि कज्जाणि करेदुमसत्था होदूण तत्थ फलं सगरूवेण पदेसाणज्जरं ण करेदि त्ति वत्तव्वं । एवं भासाकम्मुदीरणाफलं पि वत्तव्वं । पुणो केवल्लिसमुग्घादं करंतकेवल्लिम्म कवाड-पदर-लोगपूरणासु द्विदस्स उदयं णागच्छत्तपयडीणमव चैव कम्मो होदि त्ति जाणिय वत्तव्वो । तेसिमंतदीवय त्ति वा घेतव्वं ।

पुणो उस्सासणामस्स उदीरणा आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदमिच्छाइट्टिप्पहुडि सजोगि-केवल्लि त्ति । कुदो एसो णियमो ? ण, जीवविवाइसुहपयडिउस्सासस्स उदीरणा जीवपदेसपरिण्णंदस्स कारणं होदूण तत्थ पदेसपरिण्णंदयम्मि तप्पदेसट्टियकम्म-णाकम्माणं विस्सासपरमाणूणं वत्तावत्त-सरूवेण गालणं करेदि त्ति जाणावणट्टं णियमो कदो । मारणंतियादिकिरियाहि जीवपदेस-परिण्णंदणिवंधणाहि विणा संतट्टियजीवाणं पदेसपरिण्णंदो होदि त्ति कथं णव्वदे ? ण, सिया टिया सिया अट्टिया सिया ट्टियाट्टिया त्ति आरिसादो । पुणो पदेसपरिण्णंदो विस्सासपरम-णूणं गालणं करेदि त्ति कुदो णव्वदे ? ण, दंड-कवाड [पदर-]लोगपूरणेसु जादजीवपदेस-परिण्णंदो जहा असंखेज्जगुणसेडीए कम्मणिज्जरणहेदू जादो तथा एत्थ वि होदि त्ति णव्वदे । कथं वीयरएहिं कदकज्जेण सरागेहिं कदकज्जस्स समाणत्तं ? ण, विस्सासपरमाणुगालणादो कम्म-परमाणुगालणाणं समाणत्ताभावादो । कथं वत्तसरूवेण गालणं ? उस्सासादिवादसरूवेण खेदमुप्पाइय गलंतविस्सासपरमाणूणं पाससरूवेणुवलंभादो । एदं खेदो इदि कुदो णव्वदे ? सुही(हि)देव्रेसु चिरकालेणुस्सासोवलंभादो कम्म-णाकम्माणं सम्मिस्सिदविस्सासपरमाणूणं फलत्तादो वा ।

पुणो एवविहपरिण्णंदो तसकम्मोदीरणाए होदि त्ति चे— ण, तसेसु पदेसपरिण्णंदणियमे संते थावरजीवपदेसपरिण्णंदोभावो पसज्जदे । ण च एवं, तत्थ वि पदेसपरिण्णंदुवलंभादो । तदो तसकम्मोदीरणाए टाणचलणादि(दी)होदि त्ति घेतव्वं । जदि एवं[तो]उस्सासोदएहिं पदेस-

परिष्कंदानियमे सते उस्सासोदीरणाविरह्दजीवाणं जीवपदेसाणं परिष्कंदो कथं होदि त्ति चे— ण, पोग्गलविवाइसरीरकम्मोदएण तेणुप्पाइदणोकम्मोदयेण तेहिं समुप्पाइदपज्जत्तणिप्पत्तीए च इदि तिहिं वि कारणेहिं जीवपदेसाणं परिष्कंदेणस्स तत्थ उस्सासोदीरणादिउवरमेसु वि उवलंभादो । त कथं उवलंभादि [त्ति] चे उच्चदे— विग्गहग्गहिं(इ)म्मि द्विदचोदसजीवसमासाणं कम्मइग्गसरीरोदीरणा होदि । तीए उदीरणाए सह जेसि जीवसमासाणं उदीरणापाओग्गणामपयडीओ होति तासिं पयडीणमुदीरणाए सहकारिकारणत्ताणुप्पाइदसग-सगपायोग्गजीवसमासाणं जहण्णपदेसपरिष्कंदो होदि । पुणो तत्थो(त्तो)कमेण जावो(ओ)जावो(ओ)जीवसमासपांडिवद्धपयडिउदीरणाओ जाद(दा)ओ तासिं तासिं पयडीणं जादिविसेसेणुप्पाइदजोगवडिदणिवंधणजीवपदेसाणं परिष्कंदेणुत्तरं होदूण चोहसपंतीओ गच्छंति जाव सग-सगजीवसमासाणं रिजुगदीए उप्पण्णाणं जहण्णपदेसपरिष्कंदो होदि त्ति । पुणो वि वड्ढीहिं उत्तरं होदूण गच्छंति जाव सग-सगपंतीणमुक्कस्सजीवपदेसपरिष्कंदो त्ति । पुणो एदे उववादजोगट्टाणणिवंधणपदेसपरिष्कंदणाणि । पुणो एदाणमेगपंतीए रचना अप्पावहुगाणि च जहा उववादजोगट्टाणे उत्ताणि तहा वत्ताव्वाणि ।

पुणो चोहसजीवसमासाणं विग्गहग्गदीए उप्पण्णाणं विदियसमये सग-सगजाडपडिवद्धपयडिउदीरणासहकारिकारणत्ताणेण सहिदसरीरकम्मुदीरणाए सग-सगजीवपदेसपांडिवद्धजहण्णपदेसपरिष्कंदो उप्पज्जति । णवरि पुट्ठिवल्लेहिती बहुगाओ होति । पुणो तत्तो वड्ढीहिं उत्तरा होदूण गच्छंति जाव रिजुगदीए उप्पण्णाणं विदियसमए सरीरकम्म-णोकम्मुदीरणाहि सहकारिपयडिउदीरणावेक्खवाहि उप्पाइदजहण्णपदेसपरिष्कंदो त्ति । एवं एत्तो उवरी वि वड्ढीहिं वड्ढाविद्य णेदव्वा जाव चोहसपंतीण सग-सगुक्कस्सपदेसपरिष्कंदो त्ति । एदे एयताणुवडिदजोगट्टाणणिवंधणा, एदाणं पुग रचनादी च अप्पावहुगाणि च एयताणुवडिदजोगट्टाणेसु उक्ताकमेण वत्ताव्वाणि । पुणो सत्ता जीवसमासेसु सग-सगाउगवधपरिणामेणुप्पाइदसग-सगजीवसमासपांडिवद्धपयडिअणुभागवडिदउदीरणेहिं पुणो सत्ता-पज्जत्ताजीवसमासाण आहारपज्जत्ताए पज्जत्तायदम्मि पुव्व व सग-सगजादीए पांडिवद्धपयडीण उदीरणाए पज्जत्ताणिवत्ताए उप्पाइद-सग-सगजादीए जहण्णपदेसपरिष्कंदो होदि । पुणो तत्तो पुव्व व चोहसपंतीयो वडिदुत्तरं कादूण णेदव्वं जाव सग-सगपंतीए उक्कस्सपदेसपरिष्कंदो त्ति । णवरि सरीरपज्जत्ताए इदियपज्जत्ताए आणापाणपज्जत्ताए भासापज्जत्ताए मणपज्जत्ताए पज्जत्तायदट्टाणेसु पुह पुह पदेसपरिष्कंदो बहुगो होदि त्ति गेहिण(गेण्ह)दव्वं । पुणो आउगवधपरिणामेणुप्पाइदसत्ता-अपज्जत्ताजीवसमासपदेसपरिष्कंदपट्टुडि उक्कस्सपदेसपरिष्कंदो त्ति एदाणि परिणामजोगट्टाणा(ण)णिवंधणाणि । एदाणं रचनाण अप्पावहुगाणं सरूवपरिणामजोगट्टाणाणं वत्ताव्व । पुणो उत्तासव्वपदेसपरिष्कंदानं रचनाणं अप्पावहुग सव्वजोगट्टाणेसु उक्ताकमेण वत्ताव्वं ।

पुणो एवमुप्पण्णपदेसपरिष्कंदेणुप्पाइदजीवपदेसाणं कम्मादाणसत्ती जोगं णाम । ण च एस सत्ती कम्माणं खओवसमेण खएण वा जादा, किंतु कम्माणमुदएणुप्पण्णा । तदां चेव कारणादो कम्मादाणसत्ती जादा । तेसि सत्तीणं उववादेयंताणुवडिद-परिणामजोगट्टाणाणाम-धेयमिदि गुणाणुसारिणामाणि जादाणि । पुणो उस्सास-भासापज्जत्ताहि पज्जत्तायदम्मि कमेण उस्सास-भासकम्मोदएण पुणो मणपज्जत्ताए मणपज्जत्तायदे च जीवपदेसाणं बहुगो परिष्कंदो होदि त्ति कथं णव्वदे ? जोगणिरोधकेवल्लिम्मि मण-वचिजोगाणं च उस्सास कायजोगाणं च बहुगादो अप्पकमेण गदाण णिरोधण्णहाणुववत्तीदो णव्वदे । तोक्खइ पंचिदियादि तत्थ संभवंतपयडीणं

पदेसपरिष्कंदणिबंधणणं तेसिं णिरोधो विष्णु कीरदे ? ण, परिष्कंदस्स उपादानकारणसरीरोदयादो तेसिमुदीरणणं पुवं विणासाभावादो । सरीरोदए णट्टे तेसिं परिष्कंदसहकारिकारणणं तेसिमुदीरणे-
हिंतो परिष्कंदुपायणसत्तीए अभावादो ।

(पृ० ६०)

पुणो जसकित्ताए वादरेइंदियपज्जत्तप्पहुडि जाव असज्जदसम्मादिट्ठि त्ति सिया उदीरया, उवरि सजोगिकेवलि त्ति णियमा उदीरया । णवरि अजसकित्तिवेदयमाणमिच्छाइट्ठि-असंजद-
सम्मादिट्ठिणो संजमासंजमं संजमं च पडिवण्णे णियमा जासकित्तिं वेदयंति त्ति । किमट्ठमेस
णियमो कदो ? उच्चदे— जसस्स कित्तणं जसकित्तणं । तं च जसं दुविहं व(वा)वहारियं पार-
मत्थियं चेदि । तत्थ वावहारियं जसं धम्मं दाणं सच्चं सौचं(सउच्चं)उदारं अभिमाणं णिठ्ठमयंता-
(यत्ता)दिगुणाणि सम(म्म)त्तरहिहाणि अविसिट्ठलोज्जणपूज्जणिज्जाणि जदा तदा हांदि । पुणो
ते चेव गुणाणि सम्मत्तसद्धिदाणि होदूण जदा विसिट्ठजणपूज्जणीयं संजमासंजम-संजमाणं
आविठ्ठभावं करेति तदा पारमत्थियं जसं होदि । तदो तत्थ णियमं, सेसेसु भयणिज्जत्तं भणिदं ।

(पृ० ६०)

पुणो सुभगादेज्जयडोणं सण्णपंचिंदिय-गट्ठमजमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मा-
दिट्ठि त्ति सिया उदीरया, उवरि सजोगिकेवलि त्ति णियमा उदीरया । देवा देवी[ओं]च
णियमा उदीरया इदि । कुदो णियमो ? ण, सम्मुच्छिमेसु णपुंसकवेदेसु सुभगादेज्जाणं संभवा-
भावादो । जदि संभवाभावो तो सम्मुच्छिमातिरक्खेसु कथं सजमासजमाणं उवलंभो ?
ण, संजमासंजमगुणणिबंधणसुभगादेज्जाणमुवलंभादो । पुणो गट्ठोवक्कंतियत्थी-पुरिसवेदेसु
असंजदेसु सिया उदीरणा । णवरि दूभगणादेज्जवेदयाणं मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठोणं पुवं
व संजमासंजमं संजमं च पडिवण्णेसु तेसि उदीरणणं णियमुवलंभादो ।

(पृ० ६१)

पुणो दुस्सर-सुस्सराणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदाणं वीइंदिय-सण्णपंचिंदियमिच्छाइट्ठि-
प्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताउदीरगो हांदि त्ति । कुदो णव्वेदे ? ण, जीवविवाइसुहासुहसर-
कम्मोदएण भासापज्जत्तिणिप्पत्तिसहाएण जीवपदेसाणं महापरिष्कंदं कुणदि । तेण परिष्कंदेण
भासावगणसरूवस्स त्रिस्सासपरमाणूणं कहिं पि कहिं पि काले मण-वचि कायजोगेसु अण्ण-
दरजोगपरिणदो होदूण भासाउप्पत्तीए वचिजोगपरिणमणवेलाए गहिदूणट्टारसदेसभास-सत्तदस-
(सद)कुभाससरूवेण परिणमाविय तक्खणे गालणं कुर्वंति त्ति णियमो कदो । तदो चेव तप्प-
हुडि वचिजोगणिवंधणजोगपरिष्कंदो वि पाओंगो हांदि त्ति सिद्धं । पुणो मणपज्जत्तीए पज्जत्त-
यदस्स मणपज्जत्तिसरूवेण णिप्पण्णणो कम्मोदएहि जीवपदेसपरिष्कंदं महदमुप्पज्जदि । तदो
चेव एत्थुहेसे सव्वुकम्मपरिणामजोगसंभवो हांदि । तदो एत्तो प्पहुडि तिण्णि वि जोगाणं संभवो
हांदि तहा उवजोगं च ।

पुणो एगजीवकालाणियोगहारपरूवणा सुगमा ।

णवरि णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो ।

कुदो ? अद्दुवोदयत्तादो । पृ० ६१.

इदि काणं भणिदं । अद्दुवोदयं णाम किं ? कारणणिरवेक्खेण उदीरणकालस्स अवट्ठानं
एगसमयादिअंनोमुहुत्तमेत्तुवलंभादो । अहवा, कारणसहाय(या)वेक्खाए एदेसिमुदीरणकालो
जहण्णेण एगसमयो हांदि । तं कथं ? एदाणमुदीरणजीवो पुण एदेसिमुदीरमो हांदूण एगसमयं

छ. प. ४

दिष्टं, विदियसमए मुद्दस्स अपज्जत्तकाले वि णट् टुदीरणत्तादो । एवं विसमय-तिसमयादि-
अंतोमुहुत्तकालावट्टाणं सकारणावेक्खाए वि वत्तव्वं । एवं संते मिच्छत्त-णउंसयवेद-इत्थिवेदादि
केसिं पि पयडीणं अंतोमुहुत्तमेगसमयादिं(समयमादिं)कादूण[जाव]सग-सगुक्कस्सकालो त्ति
उदीरणाणुवलंभादो एदेसिमद्धुवोदयत्तं पावदे ? ण, एगसमयादिअंतोमुहुत्तमेत्तकालावट्टाणस्सेव
अद्धुवोदयविवक्खादो ।

पुणो सादस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो । पृ० ६२.

कथं ? मरणेण गुणपरावत्ताणेण कारणणिरवेक्खवद्धुवोदएण च इदि तिविहपयारेणेगसमयं
लब्भादि । तं कथं ? सादस्स अणुदीरगो संतो पुणो उदीरयविदियसमए णिरयगदिं गदो,
असादुदीरगो जादो । एदं कारणावेक्खाए एगसमयो जादो । अहवा, पमत्तादिहेट्टिमगुणट्टाण-
ट्टियो असादुदीरगो सादमुदीरयि विदियसमए अप्पमत्तो जादो, जादे णट्ट(ट्टा)उदीरणा त्ति
एगसमयो जादो गुणपरावत्तीयो । अहवा, गदिं पडुच्च सादस्सुदीरणमद्धुवोदयात्तादो एगसमयं
वत्तव्वं । तं कथं ? उच्चदे— सादस्सुदीरणंतरं गदिं पडुच्च भण्णमाणे दुविहमुवदेसं होदि ।
तत्थेक्कुवदेसेण मणुसगदीए सादस्सुदीरणंतरं एगसमयमिदि गंथे परूविदत्तादो अंतरभूदेग-
समयं सादुदीरणकालो होदि त्ति णव्वदे । अण्णेक्कुवदेसेण णिरय-तिरिय-मणुसगदीए एग-
समयं वत्तव्वं । तत्थ असादस्सेगसमययंतरपरूवणादो सादस्सुदीरणं एगसमयं होदि, तत्थे-
दस्स अद्धुवोदयत्तादो । एदेसिं दोण्हमुवदेसेसु कथमविसिट्ठमिदि चे— णेवं जाणिज्जदे, तं
सुदकेवली जाणिज्जदि । किंतु पढमंतरपरूवणाए विदियंतरपरूवणं अत्थविवरणमिदि मम
मइणा पडिभासदि ।

उक्कस्सेण छम्मासं । पृ० ६२.

कुदो सादस्सुदीरणकालम्मुककस्सेण छम्मासणियमो ? उच्चदे — इंदियसुहावेक्खाए
संसारिजीवेसु सुही देवा चेव, तत्थ वि सदर-सहस्सारदेवा चेव अदीव सुही होति । कुदो ?
तत्तो उवरिमकण्णट्टियदेवाणं मुक्कलेस्सियाणं वीयगयसुहाणुरत्ताणं सादोदएण जाददिव्वसुहा-
भावादो, पुणो हेट्टिमकण्णट्टियदेवाणं तारिसपुण्णाभावादो । तदो तत्थ सदर-सहस्सारइंदा
चेव सुही होति । तदो इंदाणं पुण्णम(मा)हप्पेण जाददाण-लाभ-भोगोवभोग-वीरियंतरायकम्माणं
खओवसमिय(समा)सत्थिविदियाणं पल्हादकरणसमत्थाणं दव्वपज्जायाणं संपादणं करंति । कथं
जीवविवाइकम्माणि बाहिरवत्थुसंपादणं करंति ? ण कम्मोदएण एदाओ जादाओ, किंतु तेसिं
खओवसमेण जादाओ होति ।

पुणो तत्थ दव्वं दुविहं सच्चित्तमच्चित्तमिदि । तत्थ सच्चित्तसंपादिददव्वमवट्टाणं होदि
कथं ? पदिं(डि)द-समाणिग-तेत्तोससग्वातायतीस-लोगपाल-पारिसदेव-अंगरक्ख-सत्ताणीग-
किन्धिस-पदाति-अट्टमहादेवी-सेससव्वदेवी-सेससव्वदेवसमूहं तित्थयरसंतकम्मियत्तादो सगकण्णपादो
तत्तो हेट्टिम-उवरिमदेवाणं पूजाणिमित्तमागदाणमिदि । पुणो अचेदणाणमेगं, विगुव्वणादिपज्जायाणं
एगं, एवं सव्वणि सट्टिसंखाणि होति । एदाणि एगसमयोवसमयपडिवद्धाणि उप्पादिदाणि
होति । तं कथं ? एदेसिं संतोस-दाणादीणं उवलंभादो एदेसिं आगमणलाभादो पुणो एदेसिं
पासे केइ केइं पयारएण एगवारेण संतोसमुप्पाइज्जमाणत्तादो एदेसिं पासे जेसिं जेसिं पयारेहि
उप्पणसंतोसं पुण्णो पुणो तेसिं तेसिं पयारेहि उप्पज्जमाणत्तादो दाणादिसत्तीणं उवलंभादो च । पुणो
एदाणि पंचविहव्वओवसमेण गुणिदाणि तिणिसयाणि होति । एदाणि एक्केकिंदियाणं पल्हादयंति

त्ति छहि इदिएहि गुणिदे अट्टारससयं होदि । ताणि मण-वचि-कायाणं पुह पुह संतोसं करेति त्ति त्रिगुणिदे चउवणसयं दोदि । पुणो एदाणि णाण-दंसणोवजांगेण वि लब्भंति त्ति ताणं परावत्तणसंखेज्जवारं अनुसंधाणं हांदि त्ति संखेजरूवेहि गुणिदव्वाणि । पुणो एदाणमेक्केक्काणं कालो मुहुत्तस्स असंखेज्जदिभागो होदि त्ति तेहि गुणिदे तेसि सव्वकालसमूहां हांदि । पुणो ताणि मुहुत्ते कदे चउवणसयमुहुत्ताणि हांदि । ताणि णवसएहि मागे हिदे छम्मासाणि लब्भंति त्ति णियमो कदो । एत्तो उवरिमंदेसि संधाणं ण लब्भदि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चं व आरिसवयणादो । एदं परूवणमुदाहरणमेत्तं छम्माससाधणट्ठं परूविदं । तदो एवं चेव हांदि त्ति णाग्गहो कायव्वो ।

अहवा, सट्टिसखं एवं वत्तव्वं । तं जहा—सदर-सहस्सारइंदो होदूण उप्पणसस सादोदय-णियमो अपज्जत्तद्धमंतोमुहुत्तेण समारणिय १ अवधिणाणेण अंतोमुहुत्तकालं परिणा(ण)मिय २ तत्थ पुव्वट्टियदेवेहिं पुण्णपहकहणेण अंतोमुहुत्तं गमिय ३ एवं अभिसेयकरणेण ४ जिणाहिसेयकरणेण ५ पसाहणगहणेण ६ तस्स पट्टबंधकरणेण ७ तम्मि ओलगंतट्टिदपदिं(डि)दस्स संतोसकरणेण ८ एवं सामारणियस्स ९ तायत्तीसदेवाणं पुह पुह पीदिमुणायंतेण ४२ एवं लोगपाल ४३ पारिसदेव ४४ अंगरकख ४५ आभियोग ४६ किच्चिस ४७ पदाति ४८ अट्टमहादेवीपमुहदेवी ५६ तिस्थयर-संतकम्मसाहणेणाक्खिदमगकप्पादो हेट्टिम-उवरिमकप्पदेवाणं पूजाकरणमागदाणं ५७ आभरण-सहिदसगदेहाणं ५८ अच्चित्तदव्वाणं ५९ विउव्वगादिपज्जायाणं च ६० इदि सट्टिसंखाणि उप्पज्जंति । एत्तो उवरिमकिरियं पुव्वं व वत्तव्वं । एवमण्णेहि वि पयारेहि जाणिय वत्तव्वं । एवं हम्सरदीणं पि वत्तव्वं ।

पुणो असादस्सुदीरणाए जहण्णकालो एगसमयो । पृ० ६२.

कथं ? मरणेण गुणपरावत्तणेण कारणणिरवेक्खाणमद्दुवोदण इदि तिविहपयारेण लब्भदि । तं कथं ? असादस्स वेदगो तिरिक्ख-मणुस्सो होदूण विदियसमए देवलोणं गदस्स होदि, तत्थ सादावेदणायोदयणियमादो । अहवा, असादस्स वेदगो मणुस्सो वेदगो होदूण विदियसमए अप्पमत्तगुणं गदो । तत्थ उदीरणाणट्टत्तादो हांदि । अहवा, देवगदीए असादमद्दुवोदयत्तादो एग-समयं वत्तव्वं । तं कथं ? गदिं पडुच्च अंतरपरूवणाए परूविदत्तादो ।

पुणो असादस्सुक्कस्सुदीरणाए कालो तेत्तीसं सागरोवमं साधि(दि)रेयं होदि । कुदो ? पाविट्टजोवाणं अंतरायियकम्मोदण इदियदुक्खुप्पादयदव्वपज्जायाणं संपादणाणुवसंधाणकालस्स तेत्तियमेत्तपमाणमुचलंभादो ।

(पृ० ६२)

पुणो अणंताबंधिकोह-माण-माया-लोहाण उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो । कुदो ? एदेसिमवेदगो वेदगो होदूण विदियसमये सम्मामिच्छत्तं सम्मत्तं संजमासंजमं संजमं च पडिवण्णे णट्टीरणत्तादो । एवमपच्चक्खाणाणं च वत्तव्वं । णवरि संजमासंजमं संजमं च पडिवज्जावेयव्वं । एवं पच्चक्खाणाणं च । णवरि संजमं पडिवज्जावेयव्वं । अहवा मरणेण वि वाधादेण वि संभवं जाणिय वत्तव्वं । पुणो संजलणाणं एगसमयं मरणेण वि वाधादेण वि संभवं जाणिय वत्तव्वं ।

पुणो णीचागोदस्सुदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो । पृ० ६७.

कुदो ? णीचागोदवेदगो अपच्चक्खाणं पच्चक्खाणं च पडिवण्णे उत्तरसरीरं विउव्विदे च

उच्चागोदस्स उदीरणं होदि । पुणो ते कमेण सासणगुणं पडिवण्णे व(वा) मूलसरीरं पविट्ठे व(वा) एगसमयं दिट्ठं । विदियसमए कालं कादूण पडिवक्खोदये उप्पण्णस्स होदि ।

पुणो उच्चागोदस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो । पृ० ६७.

कथं ? पुव्वमवेदगो उत्तरसरीरं विगुव्विदे उच्चागोदवेदगो जादो । जादविदियसमए मूलसरीरं पविट्ठस्स वा मुदस्स वा होदि ।

(पृ० ६८)

पुणो अंतराणुगमो सुगमो । णवरि सादस्सुदीरणंतरं गदि पडुच्च जहण्णुक्कस्सं अंतोमुहुत्त-
मिदि भणिदं । एदमं गाभिप्पायं अण्णेकाभिप्पायेण णिरय-तिरिक्ख-मणुसगदीए जहण्णुक्कस्स-
मंतोमुहुत्तं देवगदीए जहण्णमेगसमयं उक्कस्समंतोमुहुत्तं । पुणो असादस्संतरं गदि पडुच्च
भण्णमाणे मणुसगदीए जहण्णमेगसमयं, अद्दुवोदयत्तादो । उक्कस्समंतोमुहुत्तं ।

(पृ० ६८)

एण णिरय-तिरिक्ख-मणुसगदीएसु च जहण्णेणेगसमयो, उक्कस्सेणंतोमुहुत्तो । देवगदीए जहण्णुक्कस्स-
मंतोमुहुत्तं । कुदो ? सदर-सहस्सारेस्सु(सु)प्पण्णस्स इंदस्स पढमसमयप्पहुडि सादस्सुदीरण-
कालस्स छम्मासणियमादो । अण्णहा उक्कस्संतरं छम्मासं होदि । एदाणं दोण्हमभिप्पायाणं पुव्व
व कारणं वत्तव्वं ।

पुणो भय-दुगुंछाणं अंतरं जहण्णेणेगसमयमुक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । कथमेग [समओ ?
चरिम] समयणियट्ठिभयवेदगो से काले उवसामयअणियट्ठिगुणं पविट्ठो अवेदगो
जादो । तदो से काले वेदगो देवो जादो होदि त्ति गथे भणिदं । एदेण जाणिज्जदि एदमद्दुवोदयं
ण होदि त्ति । पृ० ६९.

(पृ० ७०)

पुणो छस्संठाणाणं एगसमयमंतरं विग्गहे वा विउव्वगाए वा जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ७१)

पुणो पत्तेग-साधारणाणं एगसमयियं विग्गहे चेव वत्तव्वं । दूभगाणादेज्ज-अजसगित्ति-
णीचागोदाणमेगसमयं विगुव्वणाए वत्तव्वं । पुणो सुभगादेज्ज-जसगित्ति-उच्चागोदाणं विगुव्वणाए
वा एदेसिं पडिवक्खोदयसंजुदो जीवो संजमासंजमं पडिवज्जिय पुणो सासणगुणे पडिवण्णे वा
विदियसमए कालं कादूण एदेसिं उदएसु उप्पण्णे एगसमयो होदि ।

(पृ० ७२-७३)

पुणो णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमो सुगमो । णवरि चउण्हमाउगाणं उदीरयाणमणुदीरयाण
णियमा अत्थि । तं कुदो इदि उत्ते उच्चदे—आउगं दुप्पयारं परभवियवद्धाउगं भुंजमाणाउगं
चेदि । तत्थ भुंजमाणआउगं दुविहं उदीरिज्जमाणमणुदीरिज्जमाणमिदि । तत्थ उदीरिज्जमाणबद्ध-
परभवियाउगाणं चउण्हं पि पुणो मणुस्स-तिरिक्खाउगाणं अणुदीरिज्जमाणं च संतकम्मेण
णियमेण अत्थि त्ति णियमो कदो । देव-णेग्इयाउगाणं अणुदीरिज्जमाणं(माणाणं)भयणिज्जत्तमत्थि ।
तमप्पहाणं । तो वि ताणि विवक्खिज्जमाणे तिण्णि भंगा वत्तव्वा, तहा कहिं वि पुत्थए दिट्ठत्तादो ।

पुणो णाणाजीवकालाणुगमो सुगमो । णवरि सम्मामिच्छत्तुदीरणेसु णाणाजीवाणं जहण्ण-
कालो थोवो त्ति उत्ते तमंतोमुहुत्तमिदि धेत्तव्वं । २७ । तस्सेउ(वु)क्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणो त्ति

उत्ते पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तस्स उवसमसग्गमादिट्ठिउक्कस्सरासिपमाणस्स असंखेज्जदिभाग-
पमाणमिदि वेत्तव्वं । तं चेदं प । एदाणि दो वि वयणाइं सुगमाणि । पुणो णाणाजीवउक्कस्स-
कालो असंखेज्जगुणो । इदि २७२२ कथमेदं परिच्छिज्जदे ? ण, वेदगसम्मत्तपाओग्गमिच्छा-
इट्ठीदो वा वेदगसम्माइट्ठीदो वा कदाचि उवसमसग्गमादिट्ठीणं संभवे संते तेसिं उवसम-
सग्गमादिट्ठीदो वा सम्मामिच्छत्तगहणद्धमंतोमुहुत्तमंतरिय एग्गादिएगुत्तरकमेण जीवा
णिस्सरंति जाव सम्मामिच्छत्तुक्कस्सदव्वं सगुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडमेत्तपमाणं तिसु वि पंतीसु
पत्तो त्ति । णवरि एगसमयादिअंतोमुहुत्तमेत्तंतरं पि संभवदि । किंतु एत्थतणुक्कस्समंतरं गहिदं ।
पुणो एगसमयादुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालस्स संभवे संते एत्थतणु-
क्कस्सुवक्कमणकालवियणं पडिगहिदं । पुणो ताणि परावत्तणसरूवेण णिस्सरिदूण सम्मामिच्छत्तं
पडिवज्जंति । पुणो एग्गादिएगुत्तरवट्ठिकमेण सम्मामिच्छत्तं पडिवणवारणि वि तेत्तियाणि चैव
होति । तदो एदाणि वाराणि तेरासिएण अंतोमुहुत्तेण गुणिदे णाणाजीवक्कस्सकालं सगजीव-
दव्वपमाणादो असंखेज्जगुणमेत्तपमाणं होदि त्ति संदेहाभावादो । तं चेदं प २७
२७२२

पुणो णाणाजीवक्कस्संतरं असंखेज्जगुणमिदि । कुदो ? वेदगसम्मत्तपाओग्गमिच्छाइट्ठि-
रासीदो एग्गादिएगुत्तरकमेण ण वेदगसम्मत्तरासिं सगुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडमेत्तजीवा
णिस्सरिदूण वेदगसम्मत्तं पडिवज्जंति । पुणो आयाणुसारी वयो होदि त्ति णायादो सम्मत्तादो
तेत्तियमेत्ताणि णिस्सरिदूण मिच्छत्तं पडिवज्जंति । णवरि दो वि पंतीओ एग्गादेगुत्तरकमेण जाव
सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासिपमाणं ताव पत्ता त्ति । एदाणि कमेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त (?)
पुणो मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं साधरणाणि होति । पुणो एत्थतणसम्मत्त-मिच्छत्तपाओग्ग-
जीवाणि सम्मामिच्छत्तागहणपाओग्गजीवसंखादो उवरिमसंखेहि णिस्सरिदूण ट्ठिदजीवेहि सह
परावत्तणसरूवेहि ण बहुवारं पल्लट्ठिय सम्मत्त-मिच्छत्तपडिवज्जणवारकालाणि ताणि होति त्ति ।
तदो पडिवज्जणवारं तेरासिएण अंतोमुहुत्तेण गुणिदे सम्मामिच्छत्ताविरहिदवेदगसम्मत्त-मिच्छत्ताणं
कालाणि होति । तदो ताणि तस्संतरपमाणं होति । पुणो पुच्चुत्तकालादो एदमसंखेज्जगुण-
पमाणत्तादो प २७
२३३ ।

(पृ० ७४)

पुणो अंतराणुगमो सुगमो । सण्णिकासाणुगमो वि सुगमो ।

णवरि सत्थाणसण्णिकासेसु वण्ण-गंध-रसफासाणं सगभेदेसु अण्णदरमुदीरंतो सेसाणं
सिया उदीरयो विरोहाभावाहो, इदि गंथे भणिदं ।

(पृ० ७९)

एदेण अण्णदरउदीरणे संते सेसाणं उदीरणं पडिसेहापडिसेहाभावेण किमट्टं जाणाविदं ?
उच्चदे— वण्ण-गंध-रस-फासणामक्कम्माणि स(सा) मण्णावेक्खाए धुवोदयाणि । पुणो तेसिं
विसेसावेक्खाए वण्ण-गंध रसक्कमेसु पुह पुह सग-सगभेदेसु एगेगं पि उदीरिज्जदि, पुणो सग-
सगसेसपयडीणं एग्गादिसंजोगेण वि उदीरिज्जंति । एवमुदीरणसव्ववियप्पाणिकमेण एकत्तीसाणि
तिण्णि एकत्तीसाणि होति त्ति जाणविदं । पुणो वि फासस्स चत्तारि जुगलाणि होति त्ति
तत्थ एगेगजुगलस्स पुह पुह जोइज्जमाणे एगेगपयडीणं वा दोपयडीणं वा संजोगेहि

उदीरैति त्ति तिणिग उदीरणभंगाणि ह्येति त्ति । अहवा चत्तारिजुगलाणं संजोगेण सोलसाणि उदीरणभंगाणि ह्येति त्ति वा जानाविदं । ण केवलमेदं वयणमेत्तं चेव, किंतु सुहुमदिट्ठीए जोइज्जमाणे एग-दु-तिसंजोगादिपयडीणमुदीरणणं एग-दु-ति-चउ-पंचिंदियजादीसु दिस्सदि, जहा देवाणं तित्थयरकुमारणं च सुरभिगंधो णेरइप्पुसु दुरभिगंधो आगमभेदेण दिस्सदि ।

णेदं सण्णिकासं घड्दे । कुदो ? अणुभागुदीरणए एगजीवकालाणुगमेण सह विरुद्धत्तादो । तं कथं ? पसत्थवण्ण-गंध-रसाणं णिद्धुण्णाणमुक्कस्साणुभागणं उदीरणकालो जहण्णुकस्सेण एगसमयो । कुदो ? सजोगिचरिमसमए उक्कस्साणुभागउदीरणं जादं । तदो अणुकस्साणुभागस्स उदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो इदि उत्तं । पुणो मउग-लहुगाण-मुक्कस्साणुभागुदीरणकालो केवचिरं ? जहण्णेगेससमयमुक्कस्सेण वेसमयमिदि उत्तं । तं कुदो ? आहाररिद्धीए जादत्तादो । अणुकस्साणुभागमुदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादि-सपज्जवसिदो इदि परूविदं । पुणो काल-णील-तित्त-कडुग-दुग्गंध-सीदुल्लु- (दरुहु)क्खाणं जहण्णाणुभागमुदीरणकालो जहण्णुकस्सेणेगसमयो । कुदो ? सजोगिचरिमसमये जहण्णाणुभागुदीरणं जादत्तादो । अजहण्णाणुभागुदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो च । पुणो कक्खड-गरुवाण जहण्णाणुभागुदीरणकालो जहण्णुकस्सेणेगस[म]-यो । कुदो ? मत्थे(मंथे)जहण्णुदीरणं जादत्तादो । अजहण्णाणुभागुदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो इदि परूविद । पुणो पदेहि वय-णेहि वण्ण-गंध-रस-फासाणं सग-सगभेदेसु अण्णदरस्स एगमुदीरिज्जमाणे सेसाणि णियमेणु-प्पज्जंति त्ति सिद्धं । तदो एदेसिं धुवोदएण होदव्वमिदि सिद्धं । विरुद्धं चेव तोक्खहि । कथं विरुद्धाणं दण्ह परूवणा करिदे ?

ण, भिण्णाभिप्पायत्तादो । तं कथं ? पंचसरीरणामकम्माणि पोगलविवाइं चेव । तदो सग-सगोदयण्ण णोकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचयाणं च आगमणं करेति । पुणो विस्सासोव-चयसहगदणोकम्मपरमाणूणं बंधण-संघादगुणे पोगलविवाइं(इ)बंधण संघादणामकम्माणि करेति । विस्सासोवचयाणि वि करेति त्ति कुदो णव्वदे ? तेसिं बंधण-संघादगुणाणमण्णहाणुव-वत्तादो । पुणो ओरालियसरीरविस्सासोवचयणोकम्मपरमाणूणं चेव संठाणंगोवंग संघडणणं जादिवसेणाणयभेदभिण्णगिबंघणणं पोगलविवाइसंठाणंगोवंग-संघडणणामकम्माणि णिप्पज्जण-वावारं करेति । पुणो वेउत्तियआहारसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचयाणं संठाणंगो-वगणामकम्माणि पुव्व व जागसंठाणंगोवंगणं वावारं करेति । पुणो तेजा-कम्मइयाणं णोकम्म-परमाणूणं सविस्सासोवचयाणं संठाणादिसरूवुप्पायणवावारमेदाणि ण करेति । पुणो पोगल-विवाइवण्ण-गंध-रस-फासकम्माणि ओरालिय-वेउत्तिय-आहारसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्स-सोवचयाणं जादिपडिबद्धाणं वण्ण गंध-रस-फासाणं पुव्वुत्तकमेणुप्पायणं करेति । पुणो तेजा-कम्मइयसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं जहासंभवेण पंचवण्णदोगंध-पंचरस-अट्ट-फासाणं णिप्पत्तीए सव्वकालं करेति । कुदो एदं णव्वदे ? विग्गहे वि तदुदयाणं अत्थित्त-दसणादो । तम्हा ओरालिय-वेउत्तिय-आहारसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं वण्ण-गंध-रस-फाससरूवफलाणि वम्मेणुप्पाइदाणि । जोयियसण्ण कासपरूवणा कदा, पुणो तेजा-कम्मइयसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं वण्ण गंध-रस फासफलदायिकम्मावेक्खाए कालाणियोगहारो परूविदो । तदो ण दोसो त्ति सिद्धं । तदो अभिप्पायंतरमिदि वत्तव्वं ।

कथं विग्गहावत्थाए कम्मयियसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं पंचवण्ण-

संजुत्ताणं धवलत्तं ? ण, कम्माणं विस्ससोवचणवगाहिदाणं धवलत्तवलंभादो । कथं सरीर-
गहिदपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमेत्तमपज्जत्तकाले सरीरस्स कवोदवण्णणियमो ? ण, तेजा-
कम्मइयसरीरणोक्कम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं संजुत्तकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचण
सहिदसेससरीरणोक्कम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचयेण संपुण्णत्ताभावादो । संपुण्णत्ते जादे सग-
सगोदयसरूवं उप्पायं(ए)ति त्ति ।

(पृ० ८०)

पुणो अप्पावहुगाणुगमो सुगमो । णवरि त्थीणगिद्धीए उदीरया थोवा । णिहाणिहाए
उदीरया संखेज्जगुणा । पयलापयलाए उदीरया संखेज्जगुणा । णिहाए उदीरया संखेज्ज-
गुणा । पयलाए उदीरया संखेज्जगुणा । सेसचउण्हं पि दंसणावरणीयाणं उदीरया सरिसा
संखेज्जगुणा त्ति भणिदे एत्थ संखेज्जगुणस्स कारणं उदीरणद्धाविसेसेणाणुगंतव्वं । (पृ० ८०)

तं पि कथं ? उच्चदे — थ्रीणगिद्धीए उदीरणं दंसणोवजोगं पच्छादिय किं व(?) कसाओ
व्व विवरीदणाणुप्पायणा करेदि, तदो सिथिलफलत्तादो तस्स उदीरणत्थो(द्धो)थोवा जादो ।
पुणो णिहाणिहाए तिच्चाणुभागादएण दंसणोवजोगं पच्छादिय अट्ट(व्व)त्तनमं णाणोवजोगं करेदि
त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा । पुणो पयलापयलाए णिहाणिहाणुभागादो मंदाणुभागाए दंसणं
पच्छादिय अव्वत्तनं णाणोवजोगं करेदि त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा । पुणो णिहाए पुवि-
ल्लादो मंदाणुभागाए दंसणस्स अंसं ण णासंतो दंसणं पच्छादियदि त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा ।
पुणो त्तो पयलाए मंदाणुभागाए दंसणस्स अंसं ण णासंतो त्तो थोवयरं पच्छादियदि त्ति
तदद्धा संखेज्जगुणा जादा । पुणो सेसं चदुण्हं पि दंसणाणं(दंसणावरणीयाणं)उदीरणद्धा दोण्ह-
मुवजोगाणं परावत्तणसरूवेण.....दमिदि संखेज्जगुणं जादं ।

(पृ० ८१)

पुणो एत्तो ट्ठाणपरूवणदाए सव्वो पवंचो सुगमो ।

(पृ० ८८)

णवरि णामकम्मस्स ट्ठाणपरूवणदाए एइंदियस्स आदाउज्जोवोदयविरहिदुदयट्ठाणाणि एक-
वीस चउव्वीस-पंचवीस-छव्वीसट्ठाणाणि हांति । आदाउज्जोवोदयसहिदाणमेक्कवीस-चउव्वीस-
छव्वीस-सत्तावीसट्ठाणाणि हांति । एदेसिं पयड्ढाणं परूवणा.....
सिं कमेणुदीरणभंगाणि एत्तियाणि— | ५ | ९ | ५ | ५ | २ | २ | ४ | ४ | । पुणो विउव्वण-
मुट्ठाविय एइंदिएसु विगुव्वणप्पयमोरालियसरीरं चवे त्ति एदेहितो पुधभूदट्ठाणाणि णत्थि त्ति एत्ति-
याणं चैव परूवणा कदा ।

पुणो एयजोवकालाणुगमेण वेउव्वियसरीरस्स एइंदिएसु वि उदीरणासामित्तं दिण्णं ।
तदो एइंदिएसु अण्णाणि ट्ठाणाणि संभवन्ति त्ति णव्वदे । तं कथं ? वेउव्वियमुट्ठाविदएइंदिएसु
पुविज्जचउव्वीस-पंचवीस-छव्वीसुदीरणट्ठाणेसु पुणो चउव्वीस-छव्वीस-सत्तावीसुदीरणट्ठाणेसु
च ओरालियमवणिय वेउव्वियसरीरं पक्खीविय ट्ठाणपरूवणा पयडियेदेण वत्तव्वा । णवरि
आदाव-सुहुम पज्जत्त-साधारण-जसकित्तिणामाणि एत्थ णत्थि त्ति वत्तव्वं । तदो चैव कारणादो
कमेण भंगाणि एत्तियाणि | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ।

(पृ० ९२)

पुणो पंचदियतिरिक्खाणं एकवीस-छव्वीस अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्क तीसपयडि-

(३०)

परिशिष्ट

उदीरणट्टाणाणं उज्जोवस्सणुदय-उदयसरूवेण पयडिपरूवणा गंधसिद्धा चेव । एदेसिं ट्टाणाणमु-
ज्जोवरहिद-सहिदाणमुदीरणभंगाणि कमेण एत्तियाणि हांति । ९ | २८९ | ५७६ | ५७६ | ११५२ |
८ | २८८ | ५७६ | ५७६ | २७६ | ११५२ | ।

पुणो उदीरणकालाणुगमबलेण विगुव्वणमुट्टाविदस्स पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदछव्वीसादि-
ट्टाणेसु उज्जोवोदयरहिद-सहिदाणमोराणलियदुगं संघडणं च अवणिय वेउत्तियदुगं पक्खिविय
पर्याडिट्टाणाण परूवणा कायव्वा । तेसिं कमेणुदीरणभंगाणि एत्तियाणि हांति । ४८ | ९६ | -
९६ | १९२ | ४८ | ९६ | ९६ | १९२ | ।

(पृ० ९३)

एत्थ मणुस्सगदिसुदीरणट्टाणाणि एककवीस-पंचवीसादिपक्कत्तीसट्टाणे त्ति अट्ट ट्टाणाणि
हांति । पुणो सामण्णमणुस्सेसु विसेसमणुस्स-विसेसविसेसमणुस्साणं च उदीरणट्टाणाणि ।
पुणो सामण्णमणुस्साणं विगुव्वणुट्टाविदणुप्पणट्टाणेहिं पयडिभेदेण सह गदेहिमुवरिस-
ट्टिदिसामित्तवलेण वत्तव्वं । पुणो सामण्णमणुस्साणं अविउव्वणा-विगुव्वणाणमुदीरणट्टाण-
भगाणि कमेणेदाणि । ९ | २८९ | ५७६ | ५७६ | ११५२ | ४८ | ९६ | ९६ | १९२ | ।

(पृ० ९६)

पुणो देवगदीए पंच उदीरणट्टाणाणि । पुणो विउव्वणमुज्जोवेण सह उट्टाविदस्स अट्टा-
वीस-एगूणतीसमेत्तट्टाणेहिं सह वत्तव्वं ।

(पृ० १००)

पुणो ट्टिदिउदीरणए मूलुत्तरट्टिदिअद्धच्छेदो सुगमो ।

(पृ० १०४)

उक्कस्मउदीरणासामित्त पि सुगमं । णवरि सुहुमापज्जत्त-साहारणाणं उक्कस्सट्टिदि-
उदीरणो को होदि ? जो वीससागरोवमकोडाकोडीओ बंधिऊण पडिभग्गो संतो अप्पिद-
पयडीओ बंधिय उक्कस्सट्टिदिं पडिच्छिय तत्तं(त्थं)तोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं सुहुमापज्जत्त-
साधारणसरीरेसुप्पणपठमसमयतव्वत्थो उक्कस्सट्टिदिउदीरओ त्ति भणिदं । पृ० १०९.

एत्तु(त्थु)क्कस्सट्टिदिं पडिच्छिय अंतोमुहुत्तच्छणणियमो । कुदो ? उक्कस्सट्टिदिसंकिलेसेण
सह मुदातिरिक्ख-मणुस्साणं णिरएसुप्पत्तिणियमादो । तदो संकिलेसादो पडिभग्गो होदूणंतो-
मुहुत्तमच्छिय मदो(दे)चेव एदेसिमुप्पत्तिसंभवो होदि त्ति जाणावणट्टं णियमो कदो ।

(पृ० ११०)

पुणो जहण्णट्टिदिउदीरणा सुगमा ।

णवरि तिरिक्खगदिणामाए जहण्णट्टिदिउदीरणा कस्स ? जो तेउकायिओ वाउ-
कायिओ वा हदसमुप्पत्तियक्रमेण सव्वचिरं जहण्णट्टिदिसंतकम्मस्स हेट्टा बंधिदूण सण्णि-
पंचिदिएसुववणो, उववणपठमसमए चेव मणुसगदिवंधगो जादो, तं सव्वचिरं बंधिदूण
तदो तिरिक्खगइ बंधतस्सावलियकालं बंधमाणस्स इदि । पृ० ११४.

एत्थ तेउ-वाउकायिएसु चेव कुदो हदसमुप्पत्तिणियमो ? ण, अण्णकायिएसु हदसमुप्पत्तियं

त्तियं कादूण संतस्स हेट्ठा विसोहीए बंधमाणे मणुसगइं सुहपयडि अदीव णोवट्ठतो बंधदि, मणुसगइं बज्झ(बंध)माणो सण्णिपंचिदियत्तिगिक्खेमु ण उप्पज्जंति त्ति वा जाणावणट्ठं, जदि उप्पज्जंति त्ति विवक्क्या अस्थि तो सट्ठसण्णपंचिदिणमु मणुसगदिवंधगद्धादो पइंदियसण्णिपंचिदिणमु मणुसगदिवंधगद्धा शोवा, तं गांलज्जमाणे जहण्णट्ठिदी ण होदि त्ति जाणावणट्ठं वा । कथं तेउ-वाउकाइण्हितो सेमत्तिगिक्खेमुप्पण्णानं पढमसमयादिअंतोमुहुत्तकालब्भंतरे मणुसगदिवंध-संभवो ? ण, गंथे तस्स परिहारं दिण्णत्तादा ।

पुणो वगेव्वियंगोवंगस्स णिरयगदिभंगो इदि । पृ० ११६.

कुदो णियमो ? ण, असण्णिपंचिदिण्हितो देवेमुप्पण्णमाउआदो णिरएसुप्पण्णमाउगं विसेसाहियं, देवगदिणामकम्मस्स हदभमुप्पत्तियट्ठिदीदो णिरयगदिणामकम्माणं वेगुव्वियंगोवंगोणं हदसमुप्पत्तियट्ठिदीयो बहुगाओ इदि जाणावणट्ठं ।

(पृ० ११९.)

पुणो उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालपरूवणा सुगमा । णवरि दंसणावरणपञ्च(पंच)यस्स अणुक्कस्सुदीरणकालो जहण्णेणोगममआं इदि । कुदो ? ण, अणुक्कस्समुदीरिय विदियसमए मुदस्स वा विदियसमए उक्कस्सट्ठिदिमुदीरिदे वा होदि त्ति जाणाविदं ।

पुणो उवघाद-परघादुस्सास-उज्जोव-अप्पमत्थविहायगदि-तस-पत्तेयसरीर-दूभग-अणा-देज्ज-दुस्सर[णामाणं] णीचागोदस्स य उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । पृ० १२३.

सुगममेदं ।

अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ । पृ० १२३.

कुदो ? उच्चदे — उवघाद-पत्तेयसरीरण पुव्वमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदूण अणुक्कस्समेगसमयमुदीर- (रि)य कालं काऊण विग्गहगदस्स । एवं परघादुस्सास-अप्पमत्थविहायगदीणं । णवरि कालगदस्से त्ति भाणिदत्तं । पुणो दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुत्तरं विगुव्विदस्स वत्तत्तं । णवरि तसणामाए अंतोमुहुत्तमिदि भाणिदत्तं । त कुदो ? तिगिक्ख-मणुस्समिच्छाइट्ठिणां तसणामं णिरयगदिसंजुत्तं उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय पुणो उक्कस्सट्ठिदिमुदीरिय पडिभग्गो होदूण संखेज्जावलयमेत्तकाले गदे चैव उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि थावरेमु च उप्पज्जदि त्ति वा णियमादो ।

(पृ० १२५.)

पुणो जहण्णट्ठिदीए उदीरणकालपरूवणा सुगमा ।

(पृ० १२५.)

णवरि परघादणामाए अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमयमिदि उत्ते उत्तरसरीरं विगुव्विय पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स एगसमयं दिट्ठं विदियसमए कालं कादूण अणुदीरणो जादो त्ति वत्तत्तं ।

(पृ० १३०.)

पुणो उक्कस्सट्ठिदिउदीरणतरं सुगमं ।

(पृ० १३७.)

जहण्णट्ठिदिउदीरण [तरं] पि सुगमं ।

(पृ० १३८.)

णवरि वेगुव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरस्स जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-
छ. प. ५

भागो इति उक्तं । तं किमहं ? उच्यते— ते उवाउकाइणसु हृदसमुपपत्तियं काऊण वेगुवियसरीरस्स जहण्णट्टिदिं करिय विगुव्वणमुट्टविय चिरकालेण मूलसरीरं पविस्संतचरिमसमए जहण्णट्टिदि-उदीरणं होदि । पुणो ते असण्णिपंचिदिणसुप्राज्जय वेगुव्वियसरीरं बंधिय पुणो वि ते उवाउकायि-एसुपपञ्जिय हृदसमुपपत्तियं करंतस्स तेत्तियमेत्तरकालुवलंभादां । पुणो एदेण जाणिज्जदि ओरालिय-सरीर(रं) विगुव्वणप्पयं ण हांदि त्ति ।

(पृ० १३९.)

पुणो णाणाजीवभंगविचयाणुगमो दुविहो उक्कस्सए जहण्णए चेदि । ते (तं)दुविहं पि सुगमं ।

(पृ० १४१.)

णाणाजीवकालंतराणुगमं पि सुगमं । संणकासं पि सुगमं ।

(पृ० १४७.)

उक्कस्सट्टिदिउदीरणप्पावहुगं पि सुगमं ।

(पृ० १४८.)

पुणो जहण्णट्टिदिउदीरणप्पावहुगं उच्यते । तं जहा— तत्थ ताव जहण्णट्टिदिउदीरणप्पावहु-गावगमणट्टं परावत्त.....माणपयडीणं वधगद्धाप्पावहुगं उच्यते— जहण्णबंधगद्धा देवगदि-आदिसत्तरसण्णं पयडीणं थोवं [२] । आउचउक्काणं संखेज्जगुणं [४] । आउआणं चैव उक्कस्स संखेज्जगुणं [८] । देवगदि संखेज्जगुणं [१६] । उच्चागोद संखेज्जगुणं [३२] । मणुसगदीए संखेज्ज-गुणं [६४] । पुरिसवेदं संखेज्जगुणं [१२८] । इत्थिवेदं संखेज्जगुणं [२५६] । साद-हस्स-रदि-जसकित्तं संखेज्जगुणं [५१२] । तिरिक्खगदि संखेज्जगुणं [१०२४] । णिरयगदि संखेज्जगुणं [२९९२] । असादावेदणीय-सोग-अरदि-अजसकित्तं विसेसाहिया । [३५८४] । णउंसकवेदं विसेसाहिया [३७१२] । णीचागोदं विसेसाहिया [४०६४] । परावत्तमाणपयडिबंधसमासो एसो [४०९६] । पुंवेदबंधगद्धा ५) । इत्थिवेदबंधगद्धा १/२) । णउंसकवेदबंधगद्धा १० । भोगभूमीसु पुंवेदबंधगद्धा ३/४) । इत्थिवेदबंधगद्धा १/४) । अथवा पुरिसवेदबंधगद्धा ४ । इत्थिवेदबंधगद्धा १० । हस्स-रदिबंध-गद्धा ३ । अरदि-सोगबंध० ११ । तसबंधगद्धा १४ । थावरबंधगद्धा ५६ । एवं बंधगद्धाप्पावहुगं जहाजोगं जोजिय पयदजहण्णट्टिदिअप्पावहुगं उच्यते । तं जहा—

पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेद-चत्तारिआउगं पंचंतराइयाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा त्थोवा । पृ० १४८.

कुदो ? एगट्टिदित्तादो ।

जहण्णट्टिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? समयाधियावलयपमाणत्तादो ।

मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? संखेज्जावालयपमाणत्तादो । पुणा एदेहिं सूचिदपयडीणं समाणासमाणट्टिदीणं मज्जे ताव समाणट्टिदिपयडीओ उच्यते । तं जहा— पंचिदिय-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघादाणं छस्संठाणाणं ओरालियंगोवंग-वज्जरिसहसहड(संहडण-वणण-गध-रस-फास-अगुरुअलहुग-उवघाद-परघाद-दोविहायगदि-तस-वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-थराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज - णिमिण-तित्थ-यरमादि एदेसिं पणतीससखा एककावणं वा पयडीओ हांति । एदेसिमप्पावहुगं पुत्तिल्लेहि सह वत्तवं ।

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४८.

आवलयमेत्तेण । पुणो सूचिदपयडीणं असामण्णट्टिदाणं सहिदाणमप्पावहुगं उच्चदे—
उस्सासस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । कुदो ? सज्जोगिचरिमसमयादो हेट्ठा संखेज्जट्टिदि-
खंडयमेत्तद्धाणं उदीरणं णट्टत्तादो । जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पुणो वि सूचिदसुस्सर-दुस्सराणं
जहण्णट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । कुदो ? ततो हेट्ठा पुठ्वं व ओदरिदस्स उदीरणं णट्टत्तादो ।
जट्टिदिउदी० विसेसाहिया ।

वेगुन्वियमरीरस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? पल्लासंखेज्जदिभागूणमागरोवम-वे-सत्तभागमेत्तमेइंदियाणं सेसपयडिबंधट्टिदि-
समाणाणमुठ्वेल्लणट्टिदिगहिदत्तादो ।

जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । अजसगितीणं जहण्णट्टिदि० विसेसाहिया ।

कुदो ? उणुठ्वेल्लिज्जमाणपयडित्तादो । पुणो एदेण सूचिददूभगाणादेज्जपयडीणं अजस-
गितीणं समाणप्पावहुगं होदि त्ति वत्तठ्वं ।

जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । निरिक्खगदीए जहण्णट्टिदि० विसेसाहिया ।

कुदो ? हदसमुप्पत्तिए कदे तेउ-वाउकाइयपच्छायदग्गणिपंचिदिण मणुसगदिवंधेण
मणुसगदिवंधं गालिऊण ट्टिदिनिरिक्खगदिमस जहण्णट्टिदीदो तत्थतणजसगित्तिबंधगद्धं पुठ्विल्लबंध-
गद्धादो बहुगं गालिऊण ट्टिदिवंधगद्धादो अजसगितीणं जहण्णट्टिदीए पमाणं थावत्तादो ।

जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । पुणो णीचागोदजहण्णट्टिदिउदी० विसेसाहिया ।

कुदो ? मणुसगदिवंधगद्धादो उच्चागोदबंधगद्धाए थावाए गालिऊण ट्टिदिउदी० विसेसाहिया ।

जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । पृ० १४८.

पुणो एत्थ सूचिदपयडीओ उच्चदे । तं जहा— थावर-सुहुम-साधारणसरीरणं जहण्णिया
ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो ? थावरकाइयेसु चेव गालिदपडिक्खबंधगद्धादो ।
जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । अपज्जत्तट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो ? सुट्ठु अप्पसत्थत्तादो ।
जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । पुणो निरिक्खगदिपाओग्गाणुपुठ्वीए जहण्णिया ट्टिदिउदी०
विसेसाहिया । कुदो ? अगालिदबंधगद्धादो । जट्टिदिउदी० विसेसाहिया । मणुसगदिपाओग्गाणु-
पुठ्वीए जहण्णिया ट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो ? पसत्थपयडित्तादो । जट्टिदिउदीरणा
विसेसाहिया ।

मादस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४८.

कुदो ? हदसमुप्पत्तीण्णुप्पणसागरोवम-त-सत्तमभागपमाणस्स किंचूणस्स गालियसणीण-
मसादबंधगद्धादो ।

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । अमादस्स जहण्णट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया ।

कुदो ? हदसमुप्पत्तियट्टिदिम्मि गालिदसणिगसादबंधगद्धत्तादो ।

**जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पुणो पंचण्णं दंसणावरणाणं जहण्णट्टिदिउदीरणा
विसेसाहिया । पृ० १४८.**

कुदो ? अगालिदट्टिदिवंधगद्धत्तादो । कथं णिहा-पयलाणं पयडिसामित्तेण णाणावरणेण
समाणाणं थीणगिद्धीए सह जहण्णट्टिदिउदीरणप्पावहुगं उत्तं ? ण, णिहा-पयलाणं उदीरणम्मि

दुविहो उवदेसो । तत्थेक्कोवणसो— ग्वीणकमायावलयवज्जसेससव्वे च(छे)दुमत्थाण संभवो । अण्णेक्केणोवणसेण सरीरपज्जत्ताण पज्जत्तयद्विदियसमयपहुडिथीणगिद्धितियाणं व हांदि । णवरि देव-णेग्इय-भांगभूमिजमणुव-तिरिक्खाणं विगुडवणमुट्ठावदमणुसाणं निरिक्खाणं आहार-रिद्धीणमु च वारणा णदिय । तत्थ विदियोवणसेणेदं परुविदं । उवणिसचउगइअण्णावहुगमिदि अवलंबिदं ।

पुणो हस्म-ग्दीणं जहणिया द्विदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । अरदि-सोगाणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदिउदीरणा । विसेसाहिया । भय-दुगुंछाणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । वारसकमायाणं जहण्णद्विदिउदीरणा तत्तिया चैव । जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तजहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पुणो देवगदीणं जहण्णद्विदिउदीरणा (णा) संखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? हदसमुपत्तियमंतकम्मियअमण्णपंचिदियपच्छायदत्तपाओग्गुक्कस्सदेवाउगचरिस-समयद्विदितादो ।

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४९.

कुदो ? उप्पण्णविदियसमयम्मि द्विदेवस्म द्विदितादो ।

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । णिरयगदीणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया ।

कुदो ? हदसमुपत्तियअमण्णपच्छायददेवगदस्म जहण्णद्विदिसंतादो पुणो हदसमुपत्तिय-णिरयगदिस्स जहण्णद्विदिसंतं विसेसाहियं, अप्पसत्थत्तादो । कत्तियमेत्तेण विसेसाहियं ? एत्थतण-देवाउगेहितो णिरयाउगं विसेसाहियं । तन्नो एदं अट्ठहियं त्ति पेत्तव्वं । कथमेदं परिच्छिज्जदे ? एदम्हादो चैवण्णावहुगादो परिच्छिज्जदे । एत्थ सूचिदवेगुद्वियं गोवंगं पि एद्रेण सरिसं ति वत्तव्वं । कथमेदं णव्वदे ? ण, जहण्णद्विदिसामित्तेण देण्हं समाणसासत्तादो ।

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं जहण्णद्विदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४९.

सुगमं

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४९.

सुगमं

आहारसरीरजहण्णद्विदिउदीरणा संखेज्जगुणा । पृ० १४९.

सुगमेदं (सुगममेदं) । एद्रेण सूचिदत्तवंगोवंगस्स वि एत्थेव वत्तव्वं ।

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४९.

पुणो णिरयगदीणं जहण्णप्पावहुगं सुगमं । णवरि गंधुत्तपयडीओ अवणिय सेसोदइल्ल-सूचिदचउव्वोसपयडाणमप्पावहुगं जम्मि जम्मि उदहेसे संभवदि तम्मि तम्मि उदहेस जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० १५०.)

किमट्टमेत्त (त्थ) णिहा-पयलाण जहण्णाट्टिदिउदीरणा सव्वाप्पावहुगपदेहिंते बहुगं जादं ? ण, तप्पाओग्गजहण्णाट्टिदिसंजुत्ता खइयसम्माइट्ठाणं णिरणसुपंजिय तप्पाओग्गुक्कम्मणिरयाउग-चरिमसमए ट्टिदस्संतोकोडाकोडिमेत्तट्टिदाए गहणादां । तं पि कुदां ? सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्त-काले एदेसिमुदीरणा णास्थि त्ति अभिप्पाएण तत्थतणजहण्णाट्टिदी ण गहिदा । पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स वि वेधट्टिदादो संतट्टिदी बहुगां होदि । सा पुण गालिदउक्कस्साउगपमाणादो णेरइयचरिमसमए बहुमाणखइयसम्मादिट्टिदादो सगुक्कस्साउगपमाणेणट्ठभहियत्तादो ण गहिदा । पुणो पज्जत्ताणं जहण्णाट्टिदादो खइयसम्मादिट्ठाण जहण्णाट्टिदी संखेज्जगुणा होदि त्ति गहिदा ।

(पृ० १५०-५२)

पुणो तिरिक्खगदीए तिरिक्खजाणिणए च अप्पावहुगं सुगमं । णवरि सूचिदणाम-कम्मपयडाणमप्पावहुगं जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० १५४)

पुणो मणुसगदीए अप्पावहुग जाणियूग वत्तव्वं जाव सम्मामिच्छत्तस्म जहण्णाट्टिदिउदी-रणं पत्ता त्ति । णवरि सूचिदपयडाणमप्पावहुगं पि जाणिय वत्तव्वं । पुणो तत्तो दंमणावरण-पच्च(पंच) यस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा त्ति । पृ० १५४.

कुदां ? चत्तारिवारमुवसमसेट्ठि चडिय तेत्तीमाउगदेवेमुपंजिय अर्धाट्टिदीयो गालिय पच्छा मणुस्सेसुपंजिय खइयसम्माइट्ठां होऊणंतोमुहुत्तण खवगसेट्ठि(टि)-चडणपाओग्गो होहदि त्ति ट्टिदस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणं जादं । तदो

जट्टिदिउदीरणा विसेसाहिया । आहाग्गरीरस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा संखेज्जगुणा ।

कुदां ? दोण्हं समाणसामित्ते संते वि विमोहिणा अप्पसत्थाणं कम्मणं ट्टिदिसंत बहुगं घादिज्जदि, पसत्थाणं थोवं चादिज्जदि त्ति णायादो संखेज्जगुणं जादं । पुणो

जट्टिदिउदी-णा विसेसाहिया । पुणा वेगुव्वियग्गीस्स जहण्णाट्टिदिउदीरणा विसे-साहिया । पृ० १५४.

कुदां ? समाणसामित्ते संते वि खवगसेट्ठिचडणपाओग्गकालादो देट्ठा पुव्वमेव अंतोमुहुत्त-काले विगुव्वणपाओग्गे विगुव्वणमुट्ठाविय पच्छा तत्तो उवरि अंतोमुहुत्तकालेण आहारसरीर-मुट्ठाविदत्तादो अंतोमुहुत्तण विसेसाहियं जादं । पुणो देवगदीए अप्पावहुगं सूचिदपयडाए सह जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० १५७)

पुणो भुजगारुदीरणाए सामित्तपरूवणा सुगमा । तस्म कालाणुगमं पि सुगमं ।

(पृ० १५८)

णवरि पंचदंसणावरणाणं उदीरणकालो जहण्णेणोगसमओ ।

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण णव समया । पृ० १५८.

तं कथं ? उच्चदे— टिदीए भुजगारसप कारणं दुविहं अट्ठाखयं संकिलेसखयं चेदि । तत्थ अट्ठाखयं णाम एगट्टिदिवंधकालो एगसमयमादिं काट्ठूण जाउक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तं होदि ।

तेसिं खओ अद्वाखओ णाम । एदमेगसमयादिं कादूण जाव आवाधाखंडयमेत्तसमयाणं द्विदिवंध-
सरूवेण वड्डीए हाणीए वा कारणं हांदि । एवं संते कथं तिकरणपरिणामपरिणदकाले अंतोमुहुत्त-
परिणदमेत्तद्विदिवंधकालणियमो ? ण, भिण्णजादित्तादो । अहवा, एगद्विदिवंधकालो जह-
ण्णुक्कस्सेणंतोमुहुत्तं चेव । तथा सदि कथमेगसमयादिद्विदिवंधकाल(ला)णं संभवो ? ण,
मिच्छत्तुदीरणसहिदअण्णोणपज्जयभेदेण बंधगद्वाखयसंभवादो एकसमयादिकालो संभवदि ।

पुणो वि विवक्खिदद्विदीए असंवेज्जलोगमेत्तकसायपरिणामेसु तत्थ जं परिणदाणं परिणामिज्ज-
माणं खओ संकिलेसखवो णाम । एदस्मि द्विदिवंधउड्डीए हाणीए एगसमयादिं कादूण जाव
संखेज्जगुणपमाणद्विदीए कारणं हांदि त्ति तत्थ अद्वाखए जादे संकिलेसखवो ण हांदि । कुदो ? तत्थ
अणुकाडुपरिणामाणमुवलंभादो । पुणो संकिलेसखए जादे अवस्समद्वाखवो हांदि । कुदो ? विवक्खिद-
द्विदीए सव्वपरिणाममय्ये संते तस्स बंधद्विदीए बंधइयं हांदि त्ति णायादो । एवं संते विवक्खिद-
पयडीदो सेसट्टपयडीओ एगेगवारं कमेण अद्वाखएण वड्डीयूण बंधिय आवलियमेत्तकाले गदे
कमेण विवक्खिदपयडिस्मि संकामिय पुणो सव्वपयडीणमद्वाखवयाविणाभाविंसंकिलेसखए
जादे णव भुजगारुदीरणसमया होति त्ति एत्थ विवक्खिदं । कथं एदाए पुणो अद्वाखवयेण वड्डी
ण गहिदा ? दोसमय्येसु अणुसंधाणेण एगपयडीए अद्वाखवओ ण हांदि त्ति ण गहिदा । कथमेदं
णव्वदे । एदम्हादो चेव आरिसादो । अण्णहा पुण विवक्खिदपयडीए सेसट्टपयडीओ पुवं व
अद्वाखवएण वड्डीयूण बंधिय संकामिय पुणो विवक्खिदपयडीए अद्वाखवएण वड्डीयूण सव्वपयडीणं
अद्वाखवएण सह संकिलेसखये वड्डीदे भुजगारुदीरणसमया दस होति । एवं पुच्छिवल्लणियमेण
कथं ण विगदो ? ए, एत्थ एवंविहअद्वाखयाणं दोण्हं समए अणुसंधाणउड्डी ण दासो त्ति
विवक्खिदत्तादो ।

अत्थदो दस समया त्ति उत्त । तं सुगमं ।

पुणो णवणोकसायाणं भुजगारुदीरणकालो जहण्णेगसमयो । पृ० १५८.

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण अट्ठावीस समया । पृ० १५८.

तं कथं ? उच्चदे— सोल्लमकसायाणि एमेण अद्वाखयेण वड्डीयूण वज्जमाणे सोल्लस
समया हवंति । पुणो द्विदिवंधगद्वाखयेण वड्डीयूण बंधपुच्छिवल्लसोल्लसपयडीणं मज्जे चरिम-
पयडि मोत्तए सेसपण्णारसपयडीसु अण्णदरदसपयडीओ वड्डीयूण बंधिदे सेसकसाएसु तण्णा-
ओगद्विदिवंधगद्वाए परिणामिय बंधेसु (बद्धेसु)दस समया लट्ठंति । पुणो बंधावलियकाले गदे
विवक्खिदणोकसायस्सु एरि जहाकमेण पुव्वुत्तासोल्लस-दसकसायद्विदीयो संकामिय सण्णीसु
एगविग्गहं कादूण्णवज्जय उप्पण्णपढमसमए असण्णपडिभागिगं द्विदिं बंधिय सण्णरगहिदपढम-
समए सण्णपडिभागिगद्विदि बंधउण पुणो उप्पण्णपढमसमयण्णहुडि छट्ठीससमयूणावलिय-
कालं बोलाविय पुव्वुत्तद्विदीसु कमेणुद्वारिज्जमाणिगसु विवक्खिदणोकसायस्स भुजगारुद्विदिउदी-
रणसमया अट्ठावीसा लट्ठंति ।

पुणो द्विदिवंधगद्वासु अण्येयपयारेहिं लट्ठमाणसु भुजगारसमया अट्ठावीसेहितो बहुगा
किण्ण हांदि त्ति उत्त— ण, सहावदो चेव । जहा किंचूणपुव्वकंडिमेत्तसंचयणमित्तकाले संतो
(ते)वि सजोगिभडारयस्स तक्कालसंचओ ण लहदि तहा एत्थ वि अट्ठावीससमयपमाणोदो अहिय-
समया ण तक्कालसंचयेण लट्ठंति त्ति उत्तं होइ । अहवा णोकसायाणं सगसगुक्कस्सद्विदिवंधादो
उक्कस्सद्विदिवंधादो च हेट्ठिमद्विदिवंधमाणकसाय-णोकसायबंध-संतेहितो जादिवसेण एइंदिसु

कारणवसेण सामग्गीए कसाय-णोकसाया पुव्वुत्तणोकसायट्ठिदिवंधसंतादो वड्ढिट्ठूण वंधं लहति । जहा पुरदो भण्णमाणउच्चागोदट्ठिदिवंधो व्व इदि अहिप्पाएण उत्तं ।

पुणो एदेणहिप्पाएण अट्ठावीसभुजगारसमयाणं पउत्ती उच्चदे । तं जहा— विवक्खिद-णोकम्मट्ठिदिवंधसंतादो हेट्ठा सेसट्ठणोकसाय-सोलसकसायाणं ट्ठिदि वंधमाणो जो जीवो सो विवक्खिदणोकसायट्ठिदिवंधसंतादो उवरि सेसट्ठणोकसाए सोलसकसाए च कमेण अट्ठाक्खयेण वड्ढिट्ठूण वंधिय वंधावलयं बोलाविय विवक्खिदणोकसायस्सुवरि जहाकमेण संकामिय विवक्खिद-णोकसायं पि अट्ठाक्खएण वड्ढिट्ठूण वंधिय पुणो संकिलेसक्खयेण सव्वेसिं पि कसाय-णोकसायाणं ट्ठिदीए वड्ढिट्ठूण वंधिय काल कारुण एगविग्गहेण सण्णीसुप्पज्जिय असण्णिपडिभागट्ठिदि वंधिय सरीरगहिदपढमसमए सण्णिपडिभागट्ठिदि वंधिय छव्वीससमयूणावलयमेत्तकालमट्ठिच्छट्ठूण विवक्खिदणोकसायट्ठिदि कमेणोकाड्ढिट्ठूण उदीरेमाणस्स अट्ठावीस भुजगारुदीरणकाला लब्भंति ।

अत्थदो पुण एगूणवीस समया । पृ० १५८.

कुदो ? कसायट्ठिदिवंधादो समाणकाले वच्चमाणणोकसायट्ठिदिसव्वकालं दुगुणहीणं वंधदि त्त णायादो । तेसि भुजगारसमयाणं उप्पत्तिविहाणमेवं वत्तव्वं । तं जहा— सोलसकसाए अट्ठाक्खएण वड्ढिट्ठूण वंधिय पुणो तदणंतरसमए संकिलेसक्खएण सव्वे वि कसाए एककमगहेण वड्ढिट्ठूण वंधिय वंधावलयं बोलाविय विवक्खिदणोकसायस्सुवरि ताणं कसायाणं ट्ठिदीयां कमेण संकामिय तदणंतरसमए एगविग्गहं कारुण सण्णीसुप्पज्जिय विग्गहगदीए असण्णिपडिभाग-ट्ठिदि वंधिय सरीरगहिदपढमसमए सण्णिपडिभागट्ठिदि वंधिय सत्तारससमएहि सोलससमएहि अट्ठाक्खयेण णिरंतरं वड्ढिट्ठूण वंधतो तदणंतरसमए संकिलेसक्खएण वड्ढिट्ठूण वंधेदि त्त अहिप्पाएण लब्भदि ।

पुणो णीचुच्चागोदाणं भुजगारुदीरण कालो जहण्णेणोसमयो । पृ० १५९.

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पंचसमओ । पृ० १५९.

तं कथं ? उच्चागोदस्सुक्कस्साट्ठिदिवंधादो हेट्ठिमत्तपाओग्गट्ठिदिवंधसंतसंजुत्तणीचागोदस्सु-वरि वड्ढिट्ठूण ठिदउच्चागोदस्स ठिदसंतं संकामिय तदणंतरसमए णीचागोदं अट्ठाक्खएण तप्पाओग्गठिदि उच्चागोदसत्तस्सुवरि वड्ढिट्ठूण वंधिय पुणो संकिलेसक्खएण तत्तो उवरि वड्ढिट्ठूणु-प्पज्जिय सण्णीसु एगविग्गहेण विग्गहगदीए असण्णिपडिभागट्ठिदि वंधिय सरीरगहिदपढमसमए सण्णिपडिभागट्ठिदि वंधिय दुसमयूणावलयमेत्तकालं बोलाविय पुणो पुव्वुत्तट्ठिदीसु उदीरिज्जमाणामु णीचागोदस्स पंच भुजगारसमया लब्भंति । एवं उच्चागोस्स वि पंच भुजगार-समया चित्तिया वत्तव्वा ।

अत्थदो दोणहं पि चत्ताणि समया । पृ० १५९.

तं च सुगमं ।

पुणो मिच्छत्तस्स अप्पदरुदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ । पृ० १५९.

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पदिदोवमस्स असंखेज्जिदिभागो । पृ० १५९.

कुदो ? एइंदिएसु हदसमुप्पत्तियकरणकालग्गहणादो । तं पि कुदो ? भुजगारप्पदरावट्ठिद-

पदाणि तिण्णि वि जम्मि मग्गणाए संभवन्ति तम्मि उत्तमेदं । अण्णहा एकत्तोसवागरोवमाणि साद्विरेयाणि मक्किल्लमियहालं उव्वरिमगेवेज्जेदेवेषु सिच्छस्सुक्कम्मपदरुदीरणकालं लव्वमइ । सो च एत्थ ण विवक्खियो ।

(पृ० १६०)

पुणो अप्पावहुगणुगमो सुगमो । णवरि सव्वत्थोवा णिहाए भुजगारुदीरया ति उत्ते एवं वत्तव्वं । तं जहा— थीणगिद्धि नियम्म ताव अणुदीरणसंभवे सुहुमेइदिया देया णेरइया भांगभूमि-जतिरिक्खा मणुम्मा वादरेइदियल्लिअपज्जत्ता तसकाइयल्लिअपज्जत्ता च पुणा एदे सव्वे वि एककदो मिलिदे सुहुमेइदियगसिपमाणो दो साद्विरेयमेत्ता होन्ति (होन्ति) । ते वि णिहा-पयलाणं चैव उदीरणपाओग्गा होन्ति । तदो त रासिं । १३८ । सव्वत्थोवा णिहा-पयलाणमुदीर-

णद्धा २७ । २ । अणुदीरणद्धा संखेज्जगुणा २७ । १ । पुणो एदामि दोण्हमद्धाणं समासेण २७ । ५ । भागं घेत्तूण लद्ध णिहा-पयलाण उदीरणद्धाए गुणिदे सुहुमेइदियरासिस्स संखेज्जदिभागो होदि । तस्स पमाणमेदं १३८ । पुणो सव्वत्थोवा णिहाए उदीरणद्धा । पयलाए उदीर[ण]द्धा

संखेज्जगुणा ति । एदामि दोण्हमद्धासमासेणदस्स रासिस्स भागं घेत्तूण णिहा-पयलाणए गुणिए पुव्वुत्तसंखेज्जदिभागरासिस्स संखेज्जदिभागो होदि । सो च एमो १३८ । एदस्सुवरि वादरेइदिय-पज्जत्तगामि(सि)कम्मभूमि जतिरिक्खा-मणुम्मपज्जत्तगामि च एककदो २७ । ५ । दो कादृण एदस्स रासिस्स सव्वत्थोवा णिहापंचयस्स उदीरणद्धा, अणुदीरणद्धा संखेज्जगुणा ति । एदेभि दोण्हमद्धाणं समासेण भागं घेत्तूण लद्धं णिहापंच(पच)यस्स उदीरणद्धाहि गुणिदे वज्जमाणरासिस्स संखेज्जदिभागो होदि । तस्स पमाणमेदं १३९ ।

सव्वत्थोवा थीणगिद्धाए उदीरणद्धा । णिहाणिहाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा । पयला-पयलाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा । णिहाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा । पयलाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा ति २७ । ५ । एदामि पंचण्हमद्धाण समासेण २७ । ५ । एत्तियमेत्तेण पुव्वुत्त-एककदो कदरासिं २७ । ५ । भागं घेत्तूण णिहा-पयलाणए गुणिय पुव्ववाणिदाणिदुदीरणरासिस्सुवरि पक्खित्तो सव्वो २७ । ५ । णिहा-पयलाणए एत्तियो होदि १३८ । णिहा-पयलाणए २७ । ५ ।

पुणो सव्वत्थोवा णिहाए भुजगारुदीरणद्धा । अवट्ठिउदीरणद्धा असंखेज्जगुणा २७ । अप्पदरद्धा संखेज्जगुणा ति २७ । ५ । एदामि तिण्हमद्धाणं समासेण एत्तिण्ण २ । पुव्वुत्तणिह-दीरणरासि भागं घेत्तूण लद्धं पुव्वुत्तभुजगारावट्ठिउदीरणद्धाहि गुणिदे भुजगारावट्ठिउदीरणरासयो आगच्छन्ति ।

पुणो एत्थ सव्वत्थोवा णिहाए भुजगारुदीरया ति । (पृ० १६२)

अप्पावहुगपदेण एत्ता(त्था)णिदभुजगारासी[सु] गाहदेसु १३८ । ३ । पुणो अवत्तव्वु-दीरया संखेज्जगुणा ति (पृ० १६०) भणिदे णिहा-पयलाण- २७ । ५ । सव्वजीवाणं णिहा-पयलाणसव्वद्धाए भागे हिदे भागलद्धमेत्ता ति वत्तव्वं । तं चेदं १३८ । एत्थ दुसमय-संचिदभुजगारासीदो एगसमयसंचिदवत्तव्वगसी कथं संखेज्ज- २७ । ५ । गुणा ? ण एस दोसो, भुजगारासि आगमणद्धं णिहा-पयलाणरासिस्स भागहारत्तेण ठविदउक्कस्सभागहारावट्ठिद-

अप्पदरद्धानं समासदो अवत्तव्वरासिआगमण्हं णिदुदीरगरासिस्स भुजगारत्तणेण द्विदजहण्ण-
णिदुदीरणद्धानं संखेज्जगुणहीणत्तादो । कुदो एवं घेप्पदे ? अवत्तव्वरासिस्स उक्कस्सभाव-
पदुप्पायण्हं अवट्टिदपदरासीणं उक्कस्सभावपदुप्पायण्हं च । एवं च संते अवत्तव्वपुव्वभुज-
गाररासी किण्ण घेप्पदे ? ण, सव्वे अवत्तव्वं करेत्तजीवा भुजगारं चैव कुणंति त्ति णियमाभावादो ।
एवं चैव घेप्पदि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चैवप्पावहुगादो ।

(पृ० १६२)

पुणो उवरिम-दो-पदाणि सुगमाणि ।

एवमसादमरदि-सोगाणं वत्तव्वं । णवरि एत्थ सादासादाणं उदीरणद्धानाणं भुजगारादि-
पदाणं उदीरणद्धानाणं च कमेणेसा संदिट्ठो

पुणो इत्थि-पुरिस-वेदाणं सव्व-

२७४	२७	४
२०	२७	२

त्थोवा अवत्तव्वउदीरगा (पृ० १६२)

त्ति उत्ते संखेज्जयस्साउगदेवित्थि-पुरिसवेदरासीओ संखेज्जवस्साउगढंत्तरउवक्कमणकालेणोवट्टिदे
इत्थि पुरिसवेदेसुप्पज्जमाणरासीयो आगच्छंति । पुणो प्दासु इत्थिवेदेहितो इत्थिवेदेसुप्पज्जमाण-
पुरिसवेदेहितो पुरिसवेदेसुप्पज्जमाणा अवत्तव्वं ण करेत्ति त्ति तेसिमवणयण्हं किंचूणीकदासु
इत्थि-पुरिसवेदवत्तव्वुदीरगरासीयो होंति । तेसि प्माणमेदं

तदो भुजगारुदीरगा संखेज्जगुणा । पृ० १६३.

तं कुदो ? इत्थि-पुरिसवेदरासि भुजगारावट्टिद-

३२	४६
४६	४६
५७	५७
३३	३३
२७	२७

प्पदग्गहेहि कमेण
वेसमयावलियाए असंखेज्जदिभागं, तत्तो संखेज्जगुणमेत्ताण-
संखेवेहि भज्जिय सग-सगसंभवेहि गुणिदमेत्ता त्ति गेण्हद्वं । कथं भुजगारादीण-
द्धानाणि होंति त्ति णव्वदे ? मज्झिमद्धानाणं विवक्खादो उच्चागोदादि उवरि उच्चमाण-
पयडीणमप्पावहुगण्णहाणुववत्तोदो च णव्वदे । अहवा, एइंदिय-विगलिदिण्णसु अद्धाक्खण्ण
संकिलेसक्खवणविग्गहे वा सरीरगहिदे च वड्ढिदि त्ति भुजगारसंचयकालो चत्तारिसमया होंति
चउग्गुणं वत्तव्वं ।

पुणो णिरयगदिणामाए सव्वत्थोवा भुजगारुदीरया । पृ० १६३.

कुदो ? भुजगारट्टिदिवंधया पंचिदियपज्जत्ततिरिक्खेहितो णिरएसुप्पण्णपढमावलिमेत्त-
काले ट्टिदजावस्स दोसमयसंचयगहणादो ।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६३.

त्ति भणिदे भुजगारावट्टिदप्पदरट्टिदिवंधयाणं पंचिदियतिरिक्खजीवाणमेत्तु(त्थु)प्पण्णाणं
गहणादो ।

अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा त्ति (पृ० १६३) उत्ते आवलियकालढंत्तरसंचय-
गहणादो ।

अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६३.

कुदो ? सव्वणेणइयरासिगहणादो । तं पि कुदो णव्वदे ? णिरएसुप्पज्जमाणतिरिक्खवाणं
वेसमए गालिय संखेज्जावलियमेत्तभुजगारावट्टिदप्पदरद्धानं गहणादो । णेणइएसु सत्थाणे चैव
णिरयगदिणामाए भुजगारावट्टिदप्पदररासीओ किं ण गहिदाओ ? ण, णेणइएसु णिरयगदि-
णामाए बंधाभावेण भुजगारावट्टिदप्पदरपदाणं संभवाभावादो ।

पुणो तिरिक्खगदिपाओग्माणुपुव्वीए सव्वत्थोवा भुजगारुदीरगे त्ति उत्तं ।
पृ० १६३.

कुदो ? तिरिक्खभुजगाररासीए सगाउण्ण खंडिदेयखंडस्स तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेव-
णेरइय-मणुस्सेहि सादिरेयस्स गहणादो ।

अवट्ठिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६३.

कुदो ? अवट्ठिदट्ठिदिवंधगतिरिक्खरासिं सगाउण्ण खंडिदेयखंडस्स सादिरेयस्स
गहणादो ।

अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६३.

कुदो ? भुजगारावट्ठिदप्पदररासिसमूहं सगाउण्ण खंडिय विसेसाहियकयमेत्तत्तादो ।

अप्पदरउदीरया विसेमाहिया । पृ० १६३.

कुदो ? अप्पदरदट्ठिदिवंधयतिरिक्खरासिं सगाउण्ण खंडिय दोसंचयगहणट्ठं दुगुणि(य)-
सादिरेयकयपमाणत्तादो । कुदो सादिरेयत्तं ? दुगुणिदगसिस्स गुणगारभूदअप्पदरद्वं गुणिय
हेट्ठिमभागहारभूदभुजगारावट्ठिदप्पदरद्वानं समूहेणोवट्ठिदे किंचूणदोरूवमेत्तगुणगारुवलंभादो ।

पुणो उववाद्-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-तस-बादर-सुहुम - पज्जत्ता-
पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-सुहदुहपंचय उच्चागोदानं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया ।
पृ० १६३.

पत्था सुहदुहपंचय त्ति उत्ते सुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्तीणं गहणं कायव्वं । एदेसिं
पयडीणमवत्तव्वउदीरयाणं कुदो त्थोवत्तं ? सग-सगउदीरणाण सुलहकालेण भज्जिदसग-सगुदीरण-
पाओग्गजीवगहणादो । णवरि आदावुज्जोव-दोविहायगदि-सुहदुहपंचय-उच्चागोदानं सग-सगुव-
कमणकालेण खंडिदसग-सगरासिमेत्तं हादि ।

(पृ० १६४)

पुणो उवरिमभुजगारादिपदाणि सुगमाणि । णवरि आदावुज्जोवादीणं भुजगारादिपदाणं
अद्धानो कमेण वेसमयाओ, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ, तत्तो संखेज्जगुणमेत्ताओ च
गहेयव्वाओ; अण्णहा एदेसिं पयडीणं णिरयगदिभंगप्पसंगादो ।

पुणो जत्थ जत्थ णामपयडीणमवत्तव्वउदीरगादो भुजगारुदीरगा संखेज्जगुणा त्ति उत्तं
तत्थ तत्थ असंखेज्जमेत्ताणुपुव्वीपयडीसु संखेज्जसहस्समेत्तपयडीयो कमेण भुजगारदट्ठिदिं वंधाविय
विवक्खिदपयडीए उवरि वंधावलियाधि(दि)कंतं जहाकमेण संकामिय संकमणावलियाधि(दि)-
कंतं कमेणुदीरेमाणस्स संखेज्जसहस्समेत्ता गुणगारभूदभुजगारसमया लव्वंति ।

(पृ० १६४)

पुणो पदणिकखेवाणुगमो सुगमो । वड्ढुअणियोगहारस्स तेरसअणियोगहारसहगदस्स
परूवणा सुगमा । णवरि तत्थप्पाबहुगम्मि अत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा—

पंचणाणावरणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया (पृ० १६४.) त्ति उत्तं ।

तं कथं ? खवगसेठीए असंखेज्जगुणहाणिउदीरणं करेत्तजीवाणमट्ठसमयाणं गहणादो ।

पुणो संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६४.

कुदो ? सण्णिपंचिदिएहिंतो आगंतूण एइंदिय-विगलंदिय-असण्णिपंचिदिएसु चउ-
पंचिदिय (?) तत्थ संखेज्जवारं संखेज्जगुणं करेत्ति त्ति । एदं पि कुदो णव्वदे ? उच्चदे — सण्णि-

संखेज्जवस्सा उगउवक्कमणकालेण संखेज्जवस्सा उगसण्णिजीवे खंडिदेगखंडं सादिरेयं तत्तो निस्सरंत-
जीवा होंति, तस्स असंखेज्जा भागा इगि-विगलिंदिय-असण्णीसुप्पज्जमाणजीवा होंति । पुणो
उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि तिविहसरूवट्टिदिखंडयपडिवद्ध अंतोमुहुत्तसंचयगहणट्टं तत्थतणउवक्कमण-
कालेण उप्पज्जमाणजीवा गुणिज्जंति ।

किमट्टमंतोमुहुत्तकालवभंतरे चेव संचयं घेप्पदि ? ण, तप्पाओगसण्णिपंचिंदियपज्जत्त-
सत्थाणट्टिदमिच्छा इट्टिउक्कस्सट्टिदिवंधेणुप्पणुक्कस्सट्टिदिसंतं तिविहसरूवट्टिदिखंडयघादेणंतो-
मुहुत्तकालेण तप्पाओगंतोकोडाकोडिमेत्तं जहण्णट्टिदिसंतं ट्टवेदि । पुणो तं जहण्णमंतोकोडाकोडि-
ट्टिदिसंतं तेत्तिण्ण कालेण ट्टिदिवंधउड्डीए उक्कस्सट्टिदिसंतं करेदि त्ति आइरियाणमुवदेसो
अत्थि । तदो सत्थाणसण्णिजीवेसु जहा तिविहसरूवेण ट्टिदिखंडयघादणियमो अत्थि तथा
एइंदियादिसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तमेत्तकालवभंतरे सभवंति त्ति आइरियाणमभिप्पायो जाणाविय तदो
तप्पाओगुक्कस्सट्टिदिसंतं संखेज्जगुणहाणिखंडयघादेण पहाणीभूदेण अंतोमुहुत्तकालेण अंतोकोडा-
कोडिट्टिदिसंतकरणं संभवदि त्ति अंतोमुहुत्तकालवभंतरसंचयगहणं कदं ।

पुणो सव्वत्थोवा संखेज्जगुणहाणिखंडयसलागाओ, संखेज्जभागहाणिखंडयसलागाओ
संखेज्जगुणाओ, असंखेज्जभागहाणिखंडयसलागाओ संखेज्जगुणाओ त्ति एदासि तिण्हं सलागाणं
पक्खेवे संखेवेण पुव्वुत्तंतोमुहुत्तसूचिदगमिभागं घेत्तण लद्धं संखेज्जगुणहाणिखंडयमलागाहि
गुणिदे संखेज्जगुणहाणिउदीरगासो होदि । तस्सेसा संदिट्ठी २७ १ । णवरि एगु-
वक्कमणखंडयकालपमाणं आवलियं सगच्छेदणहि खडिय- ४२७७७५२१२७, मेत्तो त्ति
घेत्तव्व । अहवा इगि-विगलिंदिय-असण्णीसु सत्थाणेग संखेज्जगुहाणी णत्थि त्ति भणंतानमभि-
प्पाएण सण्णिपंचिंदियपज्जत्तरासिभुजगारावट्टिदअप्पदग्घाणं समूहेहिं भजिय सग-सगद्धाहि
गुणिय तत्थ भुजगारासि संखेज्जगुणवाड्ढुं संखेज्जभागवाड्ढुं-असंखेज्जभागवाड्ढुं वा द्ढाणं समूहेण
भजिय तत्थ सग-सगवारेहि गुणिय तत्थ संखेज्जगुणवाड्ढुंहिं संखेज्जगुणहाणीयां सरिसा त्ति एदं
वड्ढिहाणि त्ति ट्टविय पुणो उक्कीरणद्धा विसेसवभंतरउवक्कमणकालेहि गुणिदे संखेज्जगुणहाणि-
उदीरगा होंति । तस्स ट्टवणा $\left| \begin{array}{l} = २२७२ \\ ४२५२७५२१ \end{array} \right|$ ।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरगा संखेज्जगुणा । पृ० १६४.

कुदो ? विर्त-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं सग-सगपाओगुक्कस्सट्टिदिवंधसमाण-
ट्टिदिसंतकम्मं संखेज्जभागहाणिखंडे घादेण(खंडयघादेण)पुव्वं व अंतोमुहुत्तकालेण सग-सगपाओग-
जहण्णट्टिदिसंताणि करेति । पुणो तं जहण्णट्टिदिसंतं पुव्वं व अंतोमुहुत्तकालेण तप्पाओगट्टिदिवंध-
उड्डीए उक्कस्सट्टिदिसंतमुप्पायंति । एत्थ वि तण्णियमो अत्थि, पुव्वं व तसपज्जत्तरासि सगुवक्कमण-
कालेण खंडिदेगखंडमेत्तं एइंदिसुप्पज्जिय तत्थ वि पुव्विल्लखंडयघादणणियमो संभवदि त्ति ।
तदो संखेज्जभागहाणिखंडयघादेण तत्थ विर्त-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णीणं पाओगजहण्णट्टिदि-
संतकम्मं होदि । तत्तो हेट्ठा उव्वेलणपारंभो होदि । पुणो तत्कालवभंतरुवक्कमणकालेण तत्काल-
संचयागमणट्टं गुणिय पुणो जहण्णुक्कस्सुक्कीरणद्धाविसेसवभंतरुवक्कमणकालेण भजिदे संखेज्जभाग-
हाणिउदीरया होंति । तेसि संदिट्ठी— $\left| \begin{array}{l} = २२७ \\ ४२७७७५२७ \\ ५ \end{array} \right|$ । अथवा संखेज्जगुणहाणिउदीरयाणं व
संखेज्जभागहाणिउदीरयाणं च सत्थाणे $\left| \begin{array}{l} = २२७ \\ ४२७७७ \\ ५ \end{array} \right|$ ।

पुणो संखेज्जगुणवड्डिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६४.

कुदो ? उच्चदे — तसरासिमंतोमुहुत्तच्चंतुरुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडमेत्ता भरतजावाहंति । तेसिं पि असंखेज्जा भागा एइंदिएसुप्पज्जिय तत्तं(त्थं)तोमुहुत्ते काले गदे हदसमुप्पत्तियं पारंभिय द्विदिं घादिज्जमाणे जम्मि जम्मि घादिदसेससंतेण सह तसेसुप्पण्णे संते असंखेज्जभागवड्डि-विसओ होदि । तम्मि तण्णिवंधणद्विदीणं घादेणुप्पण्णहदसमुप्पत्तियकालं स्थंओ । पुणो जम्मि जम्मि घादिदसेसद्विदीहि सह णिस्सरिय तसेसुप्पण्णेसु संखेज्जभागवड्डिद्विदी होदि, तम्मि तण्णिवंधण-द्विदिघादेणुप्पण्णहदसमुप्पत्तियकालं तत्तो संखेज्जगुणो होदि । पुणो जम्मि जम्मि घादिदसेस-द्विदीहि सह पुत्वं व णिस्सरिय तसेसुप्पण्णे संते संखेज्जगुणवड्डिउदारणं होदि, तम्मि तण्णिवंधण-द्विदिघादेणुप्पण्णहदसमुप्पत्तियकालं पच्छिल्लाणंतरकालादो विसेसहीणं होदि ।

पुणो अंतोमुहुत्तकालच्चंतरे जदि आवाल्याए असंखेज्जभागमेत्तुवक्कमणकालं लच्चदि तो पुत्तुत्ततिविहहदसमुप्पत्तियकाले किं लभामो त्ति तेरासए कदे तिप्पयारागमुवक्कमणकालो कमेण लच्चदि । पुणो ताणि तिणिवि कालाणि एगपंतीए रचिय पुणो वि तत्थ सग-सगपंतीए पमाणं पुहपुह द्विविय जिणद्विद्विमंखेज्जरूवेहि खंडिदे सग-सगेगगुणहाणीणं अद्वानमुप्पज्जदि । पुणो पुत्तिल्ल-समयपंतीणं पढमसमयप्पहडि जाव चरिमसमयो त्ति ताव जीवाणमवद्विदकमो उच्चदे । तं जहा— तमजीवेहितो एइंदिएसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तकाले गदे हदसमुप्पत्तियं पारभदि । पारद्वे संते तं दोगुणहाणीए खंडिदेसु विसेसो आगच्छदि । तं दोगुणहाणीए गुणदे पढमसमयद्विदजीवा हंति । तं पडिगसिं द्विविय विसेसे अवणिदे विदियसमयणसेयं होदि । पुणो तं पडिगसिं द्विविय एगविसेसमवणिदे तदियसमयणसेयं होदि । एवं विसेसहीणं विसेसहीणं होदूण कमेण रचिद-समयं पडि णिसेयो(या) आगच्छंति जाव एगगुणहाणिमेत्तद्वानेसु रचिदसमण्णु गदो त्ति । पुणो पढमणिसेयादो एगमद्वं होदि एवमुवरुवरि जाणिय वत्तवं जाव संखेज्जभागवड्डिउदीरणसमयहद-समुप्पत्तियकालपढमसमयो त्ति । तमादिमणिसेयादो संखेज्जगुणहीणं होदि । पुणो तं तत्थतण-दोगुणहाणीए खंडिय विसेसमुप्पाइय पुणो दोगुणहाणीए गुणिय तत्थतणपढमणिसेयमुप्पाइय पुणो तत्तो उवरिमणिसेयाणं रचिदसमयं पडि पुत्वं व विसेसहीण-विसेसहीणकमेण णेद्वं जाव संखेज्जगुणवड्डिविसयहदसमुप्पत्तियकालपढमणिसेयो त्ति । एदं णिसेयं संखेज्जभागवड्डिणिवंधण-हदसमुप्पत्तियकालपढमणिसेयादो संखेज्जगुणहीणं होदि ।

पुणो एत्थ वि दोगुणहाणीयो द्विविय पुत्वं वरचिदसमण्णु णिसेयाणि उप्पाइय णेद्ववाणि जाव हदसमुप्पत्तिण्ण णिप्पण्णकालचरिमसमयादो अणंतरस्स अणुवेल्लिज्जमाणकालपढमसमयो त्ति । पुणो एदं णिसेयं पुत्वं व पुत्तिल्लपढमसमयणिसेयादो संखेज्जगुणहीणो त्ति वत्तवं । पुणो एवं द्विदिनिप्पयाराणं हदसमुप्पत्तियकालपडिबद्धणिसेएसु सव्वेसु वि पुह पुह एगेगविसेसा एइंदिएहितो णिस्सरिय तसेसुप्पज्जंति त्ति । तदो ताणि तिणिवि हदसमुप्पत्तियकालपडिवंधा- (बद्धा)णि पुह पुह मेलाविदे संखेज्जगुणहीणकमेणेइंदियादो णिस्सरंति । ताणि संदिट्ठीए एत्तियाणि

हंति

=	=	=
४३	४३७	४३७७
३	३	३

पुणो तिविहेसु हदसमुप्पत्तियकालपडिबद्धणिसेएसु समयं पडि समयं पडि पुह पुह आदिणिसेयं पविसरंति । चरिमणिसेया पुण पुत्तिल्ला णिस्सरियूण गच्छंति, अण्णा अणुवा पविसंति । तदो ते सव्वे मेलाविदे दिवडदगुणहाणिमेत्तसग-सगपढमणिसेया धुवरूवेण सव्वकालं हंति त्ति

गेण्हियत्वं । कथमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेवप्पावहुगवयणादो णव्वदे । पुणो एवं द्दिदहद-
समुपत्तियजीवेसु तसेसुप्पण्णेषु संखेज्जगुणवाङ्ग करंतत्थ जीवा एत्थ होंति त्ति गेण्हियत्वं ।

तस्ससंदिट्ठी $\left| \begin{array}{l} = ४२७७ \\ ३ \end{array} \right|$ ।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा [सू० असंखेज्जगुणा] । पृ० १६४.

कुदो ? संखेज्जभागवड्ढिविसयहदसमुपत्तियकालम्मि द्दिदिपुव्विल्लकमेण बहुधा एइंदियादो
अविणट्ठतसंसकारादो पुव्वं व णिस्सरिय तसेसुप्पज्जमाणरासी संखेज्जभावड्ढि करंति त्ति
गेण्हद्ववमिदि उत्तं होदि । तं चेतियं ३ = ॥

पुणो उवरिमतिण्णपदाणि $\left| \begin{array}{l} ४३७ \\ ३ \end{array} \right|$ सुगमाणि । अहवा द्दिदिखंडयं दुविहपयारं
लच्छियूणं द्दिदतसजीवे एइंदिएसुप्पणो मात्तृण सेसे एइंदिएसु संखेज्जभागहाणी णत्थि त्ति
अभिप्पायेण सत्थाणेण सण्णीसु संखेज्जगणहाणिउदीरयाणं संखेज्जभागहाणिउदीरयाण
पमाणं एवं वत्तव्वं । तं जहा— तत्थ सण्णपंचिदियपज्जत्तजीवा पहणा त्ति कट्ठु
तं रासिं द्दविय अवाट्ठिसंतादो हेट्ठिमट्ठिदिबंधतसादासादबंधगजीवा(वि)संखमवणिय
पुणो भुजगारावड्ढिदप्पदरद्धाणाणं पक्खेवाणं संखेवेहिं भजिय भुजगारपक्खेवेण गुणिय पुणो
वट्ठमाणसमए जीवेहिं संकिलेसकवणं संखेज्जगुणवड्ढिपरिणामपरिणदा ते थोवा, तत्तो संखेज्ज-
भावड्ढिउदीरणनिबंधणपरिणामपरिणदा संखेज्जगुणा, तत्तो असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणनिबंधण-
परिणामपरिणदा ते संखेज्जगुणा होंति । तेहिं पक्खेवसंखेवेहिं भजिय तेहिं चेव पक्खेवेहिं
गुणिदे सग-सगारासयो आगच्छंति । पुणो तत्थ संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढिउदीरयाणं
दुपपाडिगमिं पुह पुह द्दविय जहण्णुक्कम्मसुक्कीरणद्धाविसेसत्तंभंतक्कम्ममणकालेण भजिदे दोण्हं
हाणिउदीरया होंति । तेसिं द्दवणा $\left| \begin{array}{l} = २२ \\ ४६५२२५२१३७ \end{array} \right|$ २ २ ४ पुणो संखेज्जगुणवाङ्ग
संखेज्जभागवड्ढिउदीरया । एत्तो उवरि- $\left| \begin{array}{l} ४६५२२५२१३७ \\ ४६५२२५२१ \end{array} \right|$ पुव्वं व वत्तव्वं ।

अहवा एत्थतणसंखेज्जगुणवड्ढी संखेज्जभागवड्ढी च घेत्तवाओ । उवरिमपदाणि पुव्वं व
वत्तवाणि । अहवा वाराणि धरिय आणेद्ववाओ । तं जहा— पुव्वाणिदभुजगारासिं ठविय पुणो
सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणवाराओ, संखेज्जभागवड्ढिउदीरणवारओ संखेज्जगुणाओ,
असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणवाराओ संखेज्जगुणाओ इदि । एदेहिं पक्खेव-संखेवेहिं भजिय सग-सग-
पक्खेवेहिं गुणिय पुणो संखेज्जगुणहाणि-संखेज्जभागहाणिउदीरया सग-सगवड्ढिउदीरणहिं अणु-
सरिसाओ होंति त्ति कारण । एदेसिं द्दवणा एत्तिया $\left| \begin{array}{l} = २ २ \\ ४६५२२५२१ \end{array} \right| = २ २ ४$ । एत्तो उवरिम-
पदाणं किरिया पुव्वं व जाणिय वत्तव्वं ।

पुणो णिहाए वेदगो द्दिदिघादं ण करेदि । (पृ० १६५)

त्ति उत्ते एत्थ द्दिदिघादं णाम संखेज्जभागहाणीए णिवंधणट्ठिदीणं संखेज्जगुणहाणीए
णिवंधणट्ठिदीणं च घादो द्दिदिघादो णाम । ताणि णिहोदए णत्थि त्ति उत्तं होदि । किमट्ठं ते तत्थ
णत्थि ? पुव्वुत्तदुविहपयारखंडयघादणिवंधणतिव्वविसोहीणं णिहोदयेण संभवति त्ति । पुणो
एदं खवगुवसमसेडीए णिहाए उदए णत्थि त्ति भणंताभिप्पाएण उत्तं, अण्णहा जहण्णाणुभाग-
उदीरणासाभित्तेण विरोहप्पसंगादो ।

पुणो असंखेज्जभागहाणिणिवंधणट्ठिदिखंडयघादो अत्थि त्ति(तं ?) कुदो णव्वदे ? हदसमु-
पत्तियं करंतद्दिदएइंदिएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेसु णिहदीरणाए पडिसेहा-

भावादो, णिद्दीरणाए संभवे संने तत्थ हदसमुपत्तियक्किरियपडिसेहाणुवलंभादो च ।

पुणो ढ्ढिदिवंधं बंधदि । पृ० १६५.

त्ति उत्ते तिच्चसकिलेसणिवंधणभुजगारणपदरावट्टिद्विदिवंधं मोत्तण सेसपरिणामणिवंधण-
भुजगारणपदरावट्टिदसखुवट्टिदि संतस्स तिविहसखुववट्टिणिवंधणं णिद्दीरणाए संभवदि त्ति उत्तं
होदि । तं कुदो णव्वदे ? ण, तेसि णिवंधणमंदसकिलेसाणं णिद्दीरणाए संभवोवलंभादो । पुणो
वज्झमाणट्टिदिपमाणपरुवणट्टं वड्ढीणं संभवविहाणपरुवणट्टं च उत्तरगंधमाह—

पुणो असादस्स चउट्टाणियजवमज्झादो संखेज्जगुणहीणो त्ति । पृ० १६५.

एदस्सत्थो उच्चदे— असादस्स चउट्टाणजवमज्झमज्झिमजीवणिसेयट्टिद्विदीदो संखेज्जगुण-
हीणं होदूण ट्टिदअसादविट्टाणियजवमज्झणिवंधणट्टिदिवंधाणि बंधदि त्ति उत्तं होदि । णवरि एदेण
वयणेण असादविट्टाणियजवमज्झमज्झिमणिसेयादो हेट्टा गुणहाणीए असंखेज्जभागमेत्तमोसरियूण
ट्टिदअसादट्टिदिसंतादो समाणट्टिदिवंधट्टिदजीवणिसेयणपहुडि जाव जवमज्झादो उवरि वि
गुणहाणीए असंखेज्जभागमेत्ताणं असादविट्टाणजवमज्झट्टिदीणं वज्झंतरिदो असंखेज्जभागवड्ढि-
संखेज्जभागवड्ढिणिवंधणाणं उवरिमट्टिदीयो बंधंति । तत्तो उवरिमट्टिदीयो बंधंतो असंखेज्ज-
भागवड्ढिवंधणट्टिदीयो बंधंति, ण संखेज्जभागवड्ढिणिवंधणट्टिदीयो बंधदि । कुदो ? तत्तो
उवरिमट्टिदिवंधणिवंधणपरिणामविवेगसहायसुहसखुवणहोदयस्मि ण संभवति । तत्तो
उवरिमट्टिदिवंधाणि असादस्स णत्थि त्ति णव्वदे ।

एत्थ चोदगो भणदि— असादचउट्टाणजवमज्झादो हेट्टिमट्टाणाणि सागरोवमसदपुधत्त-
मेत्ताणि । पुणो तस्स निट्टाणजवमज्झस्स हेट्टवरिमट्टाणाणि कमेण सागरोवमपुधत्तं २ चेव । एवं
विट्टाणियाणं पि । एवं सत्ते एदेसिं समूहं पि सागरोवमसदपुधत्तं चेव होदि । हींते वि धुवट्टिदीए
संखेज्जभागमेत्ताणि हींति । पुणो ताणि धुवट्टिदिस्मि संजोइदे सादिरेयं होदि ताणि चेवावणिदे
कथं संखेज्जगुणहीणं होदि त्ति ? ण, असादचउट्टाणजवमज्झादो हेट्टिमट्टाणाणि वि इच्छाणिहेसेण
संखेज्जसागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि त्ति गंधकत्ताराभिप्पायेण गहिदत्तादो ।

पुणो अंतोकोडाकोडीए हेट्टादो त्ति । पृ० १६५.

एदमेव संबधेयव्वं— सादं बंधंतो तप्पाओग्गुक्कस्संतोकोडाकोडीए हेट्टादो चेव ढ्ढिदिवंधं
बंधदि, ण उवरिममिदि ।

पुणो बंधंतो सादस्स विट्टाणिय-चउट्टाणियं ण बंधदि त्ति । पृ० १६५.

एदस्सत्थो— णिद्दसुदीरणाए विवेगविरहिदाए तिच्चविसोही ण संभवदि त्ति एदेण असा-
दस्स धुवट्टिदिसंतादो हेट्टिमाणि जाणि सादस्स विट्टाणियाण ट्टिदीयो ताणि ण बंधदि त्ति एदं पि
सूचिद । कथमेदं णव्वदे ? णिद्दीरण संतस्स हेट्टिमट्टिदिवंधकारणविसोहीए(ओ)मिच्छाइट्टिस्स ण
हींति त्ति ।

पुणो सादस्स दुट्टाणिया ण(-णि) वज्झदि । पृ० १६५.

एदस्सत्थो उच्चदे— सादस्स विट्टाणियजवमज्झाणि मज्झिमविसोहिणिवंधणतिविहवड्ढि-
सरुवेण वज्झदि त्ति उत्तं होदि ।

पुणो एदं णिद्दीट्टिदिउदीरणवड्ढिअप्पावहुगस्स सहाणं (साहणं) भणिदं । पृ० १६५.

एदं सुगमं । कथमसादस्स ट्टिदिवंधे असंखेज्जभागवड्ढि संखेज्जभागवड्ढीए विट्टाणिय-
जवमज्झंभंतरे चेव सादस्स ढ्ढिदिवंधे तिविहसखुववड्ढीए सगविट्टाणियजवमज्झंभंतरे
चेव होदि त्ति परुवणादो ।

अप्पाबहुगं । तं जहा— सव्वत्थोवा णिदाए संखेज्जभागवड्ढिउदीरया । पृ० १६५.

कुदो ? असादस्स विट्ठाणियजवमज्झमज्झिमणिसेयादो हेट्ठा उवरि च गुणहाणीए असंखेज्ज-
भागमेत्तणिसेयट्ठिदीसु ट्ठिदिणिहुदीरयजीवो तस्स सव्वत्थाणियजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता
होदि । तत्थ जदि विट्ठाणियजवमज्झजीवपमाणं जाणिज्जदि । णवरि एत्थ ताव जवमज्झजीव-
पमाणं चेव ण जाणिज्जदि । पुणो तस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवपमाणं सुतरामेव जाणिज्जदि ।
तं पुणो एत्थहेसे सादासादानं तिणं जवमज्झाणं जीवणिसेयरचणं अप्पाबहुगसाहणट्ठं वत्त-
इस्सामो । तं जहा—

सव्वत्थोवा सादबंधगा [२७] । असादबंधगद्धा संखेज्जगुणा [२७४] । पुणो एदासिं दोण्हं
अद्धाणं पक्खेवसंखेवेणेत्तियमेत्तेण [३७५] सण्णिपंचिदियपज्जत्तारासिमोवट्ठिय अप्पण्णो अद्धाहि
गुणिय सरिसगुणगार-भागहाराणं अत्रणयणे कदे सादासादाण बंधरासीयो हांति । तेसिमेसा
ट्ठवणा = $\left[\begin{array}{c} = \\ \hline = \end{array} \right]$ । पुणो एत्थ सव्वत्थोवा असादविट्ठाणजवमज्झजीवा [१] । तिट्ठाण चउट्ठाण-
जीवा $\frac{४६५५}{४६५५}$ संखेज्जगुणा ४ । पुणो एदेसिं दोण्हं पक्खेवसंखेवेणेत्तियमेत्तेण ५ पुट्ठाणिद-
असाधबंधगरासिमोवट्ठिय अप्पण्णो पक्खेवेहि गुणिदे विट्ठाणजवमज्झ-तिट्ठाणजवमज्झजीवा हांति ।
तेसिमेसा ट्ठवणा $\left[\begin{array}{c} = ४ \\ \hline = ४४ \end{array} \right]$ । पुणो एद तिट्ठाण-चउट्ठाणजवमज्झजीवाणं पमाणं पलिदोवमस्स
असंखेज्जदि- $\frac{४६५५५}{४६५५५}$ भागेण खंडेदूणेगखंडं पुह ट्ठविय बहुखंडाणि सरिमवेपुंजे
करिय अत्रणियदेयखंडं पढमपुंजे पक्खित्ते तिट्ठाणजवमज्झजीवपमाणं हांदि । विदियपुंजा(जो)वि
चउट्ठाणजवमज्झजीवपमाणं हांदि । तेसिं ट्ठवणा $\left[\begin{array}{c} = ४४ १० \\ \hline = ४४ ८ \end{array} \right]$ ।
 $\frac{४६५५५९२}{४६५५५९२}$

पुणो एत्थ ताव विट्ठाणियजवमज्झजीवाणं जवमज्झागारेण णिसेगरचणं भणिस्सामो ।
तं जहा— एदे सव्वे वि विट्ठाणियजवमज्झजीवा जवमज्झमज्झिमणिसेयपमाणेण कदे तिण्णगुण-
हाणमेत्ता जवमज्झमज्झिमणिसेया हांति त्ति ताहि गुणहाणीहि एदेसिं जीवाणं भागे हिदे जव-
मज्झमज्झिमजीवणिसेयपमाणं हांदि । पुणो जवमज्झहेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागणमण्णोण्णम्भत्त-
रासिणा भागे हिदे जवमज्झजहण्णट्ठिदिपडिबद्धजीवपमाणं हांदि । पुणो गुणहाणिं विरलिय
जवमज्झजहण्णट्ठिदिपडिबद्धजीवपमाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगविसेसपमाणं
पावदि । तत्थ पढमरूवद(ध)रिदं घेत्तण पडिरासिदजवमज्झजहण्णट्ठाणजीवपमाणम्ह पक्खित्ते
विदियट्ठिदिपडिबद्धट्ठाणजीवपमाणं हांदि । तं पि पडिरासिय विदियरूवधरिदे पक्खित्ते तदिय-
ट्ठाणजीवपमाणं हांदि । एवमुप्पण्णुप्पणरासि पडिरासिं करिय तदियादिरूवधरिदाणि पक्खिविय
णेद्वं जाव सयलरूवधरिदाणि णिट्ठिदाणि त्ति । एवं कदे पढमगुणहाणिं बोलाविय
विदियगुणहाणिआदिणिसेगो त्ति रचना जादा । पुणो तिस्से चेव अट्ठिदविरलणाए विदिय-
गुणहाणिपढमणिसेयपमाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि विदियगुणहाणिपडिबद्धपक्खेव-
पमाणं पढमगुण[हाणि]पक्खेवपमाणादो दुगुणमेत्तं हादूण पावदि । तदो विदियगुणहाणिपढम-
णिसेयं पडिरासिय विरलणाए पढमरूवधरिदं पक्खित्ते विदियगुणहाणिविदियणिसेयपमाणं
पावदि । तं पि पडिरासिय विदियरूवधरिदे पक्खित्ते तदियणिसेयं हांदि । एवमुप्पण्णुप्पणणिसेगे
पडिरासिय तदियादिसव्वविरलणरूवधरिदपक्खेवरूवाणि जहाकमेण पक्खित्ते विदियगुणहाणिं
बोलियूण तदियगुणहाणिपढमणिसेया त्ति सव्वणिसेगाणं रचना समुप्पणा भवदि । पुणो एदेणु-
वायेण उवरिमसव्वगुणहाणीणं णिसेयरचना अवावामोहेण कायव्वा जाव जवमज्झमज्झिमणिसेयं
पत्ता त्ति ।

पुणो जवमज्झादो उवरि णिसेगरचणे कीरमाणे दोगुणहाणीओ विरलिय जवमज्झमज्झिम-

णिसेगस्स समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि जवमज्झउवरिमपढमगुणहाणिपक्खेवं पावदि । पुणो जवमज्झमज्झमणिसेगं पडिरासिय विरलणपढमरूवधरिदे अवणिदे तदणतर-उवरिमणिसेगो होइ । तं पि पडिरासिय विरलणविदियरूवधरिदे अवणिदे तदियणिसेगो होइ । एवमुप्पणुप्पणरासिं पडिरासिय विरलणतदियादिरूवधरिदाणि अवणेदव्वाणि जाव विरलणाए अद्धं गदं ति । ताहे जवमज्झउवरिमपढमगुणहाणिपढमणिसेगो उप्पणो । पुणो गुणहाणिमेत्तउव्वरिदविलणाए उवरि द्विदरूवाणि अचिच्छय अणादेयविरलणरूवेसु दिण्णेसु सव्वविरलणाए जवमज्झपक्खेवस्स अद्धपमाणं पावदि ।

पुणो विदियगुणहाणिपढमणिसेयं पडिरासिय विरलणाए पढमरूवधरिदे अवणिदे विदियगुणहाणिविदियणिसेगो उप्पज्जेज्ज । तं पि पडिरासिय विरलणविदियरूवधरिदे (अवणिदे) तदियणिसेगो होइ । एवमुप्पणुप्पणरासिं पडिरासिय तदियादिविरलणारूवधरिदाणि अवणेदव्वाणि जाव विरलणाए अद्धमेत्तं गदा ति । ताहे विदियगुणहाणि बोलियूण तदियगुणहाणोए पढमणिसेगो उप्पज्जदि । एवं तदियगुणहाणिपहुडि जाव चरिमगुणहाणि ति उवरिमसव्वगुणहाणीणं णिसेगरचना जाणिदूण कायव्वा । तदो तिट्ठाणिय-चउट्ठाणियजवमज्झाणं पि एदेण कमेण अप्पणो पडिवद्धजीवरासि णिसंभिय णिसेगरचना कायव्वा ।

सादस्स वि एवं चेव जवमज्झणिसेगपरूवणा कायव्वा । णवरि चउट्ठाणिय-तिट्ठाणिय-विट्ठाणियजवमज्झसरूवेण उवरिवरि परूवणा कायव्वा । जीवरासिविभंजणमेवं कायव्वं । तं जहा-सव्वत्थोवा सादस्स चउट्ठाणबंधया जीवा [१] । तिट्ठाणबंधया जीवा सखेज्जसंखेज्जगुणा [४] । विट्ठाणबंधया जीवा संखेज्जगुणा [१६] । एदेसिं तिण्हं पक्खेवाणं संखेवेण सादबंधगरासिमोव-द्विय लद्धमप्पणो पक्खेवेहि गुणिदे जहाकमेण चउट्ठाण-तिट्ठाण विट्ठाणबंध[य]जीवा होति । एदेसिं तिण्हं पि जवमज्झजीवाणं जवमज्झागारेण णिसेगरचणं जहा असादस्स परूवदं तथा वत्तव्वं । पुणो पच्छा सादासादपडिवद्धछणं जवमज्झाणं संदिट्ठियादिरचणं सव्वं कालविहाणमि उक्तकमेण वत्तव्व ।

पुणो एवमाणिदसादविट्ठाणियजवमज्झजीवरासिं पुध ट्विय असादविट्ठाणियजीवरासिं तिण्णिगुणहाणीहिमोवद्विदे जवमज्झमज्झमजीवाणसेयपमाणं होदि । एदमहादा हेट्टा उवरि च गुणहाणीए असखेज्जभागमेत्तजीवणिसेगाणमागमणट्ठं गुणहाणीए असखेज्जदिभागोण किंचू-णेण जवमज्झमज्झमजीवणिसेगं गुणिदे एथतणणिद्वीरयभुजगारपपदरावद्विदरासिपमाणं होदि । तस्सेसा संदिट्ठी [४] । पुणो सव्वत्थोवा भुजगारदीरणद्धा [२] । अवाट्टिदउदीरणद्धा

असंखेज्जगुणा [२७] । अप्पदरुदीरणद्धा संखेज्जगुणात्ति [२७४] । एदासिं तिण्हमद्धाणं पक्खेव-संखेवेणेत्तियमेत्तेण [२७५] । पुव्वाणिदरासिं भागं धेत्तूण अप्पणो पक्खेहिगुणिदे भुजगारा-वद्विदपपदरासयो हवति । तेसिमेसा दवणा [= ४ | २२ | = २७४ | २ |] । [४६५५५३२ | २२५ | ४६५५५३० | २७५ | ४६५५५३३ | २७५]

पुणो भुजगाररासिं ठविय तस्स सव्वत्थोवाओ संखेज्जभागवद्विउदीरणवाराओ । संखेज्जभागवद्विउदीरणवारा [भो] संखेज्जगुण(णा)ओ [४] । एदेसिं पक्खेवसंखेवेण भागं धेत्तूण लद्धं दुप्पडिरासिं करिय अप्पणो पक्खेवेहि गुणिदे तत्थेगभागो संखेज्जभागवद्विउदीरया होति । तेणेदे उवरि उच्चमाणअप्पाबहुगपदेहितो थोवो ति सुभणिदं । तेसिं पमाणमेदं [= ४]

[२२ | २७५] ।

[४६५५५३२]

पुणो सव्वत्थोवा भुजगारबंधगद्धा [२] । अवट्टिद० [२७] । अप्पदर० [४] । एदेसि तिण्णं [२७]

पक्खेव-संखेवेणेत्तियमेत्तेण [= तस्स पुह द्दविदरासिस्स भागं घेत्तण लद्धमप्पणो पक्खेवद्धाहि गुणिदे भुजगारादिरासयो होंति । [२७] तेसिमेसा द्दवणा [= १६ २२ [२७ १६ २०] = २२४२६२२] पुणो एत्थतणभुजगाररासिं तप्पाओग्गं(ग-) असंखेज्ज- [४६५५२१२७५, ४६५५२१२७५, ४६५५२१२७५] रूवेहिं खंडिदे बहुखंडाणि संखेज्जगुणवट्टिउदीरया होंति । कुदो ? मंदविस्सोहिणा जादत्तादो । तेसि संदिट्ठी [= ५ १६२२०] पुणो सेसेगखंडं पि संखेज्जरूवेहिं खंडिय तस्स बहुखंडाणि संखेज्ज-भागवट्टि- [४६४५२१२७५६] उदीरया होंति । सेसेगखंडं पि असंखेज्जभागवट्टिउदीरया होंति । कथमेदेसिं थोवत्तं ? ण, णिहोदण सुहसरूवपरिणयजीवेहिं साद्विट्ठाणियजवमज्झाट्टिदीयो बंधमाणेहिं परिणदपरिणामा जेण मंदविस्सोहीयो भणति तेण कारणेण सादस्स तिट्ठाण-चउट्ठाणाणि णिहोदण वज्झंति, तेसिं तिच्चविस्सोहीए वज्झमाणत्तादो । अदो चैव कारणादो संखेज्जगुण-वट्टिपाओग्गउवरिममंदविस्सोहीहिंतो हेट्ठिमसुद्ध-सुद्धतरपरिणामाणबंधणाणं दो वट्टीयो करंत-जीवाणं अदीव त्थोवत्तं जादं । कथमेदं णव्वदे ? अप्पावहुगसाहणपरूवणादो अप्पावहुगादो च । तेसिं दोण्हं पि संदिट्ठी [= १६ २ २ ४] = १६ २२] । [४६५५२१२७५५५, ४४५५२१२७५५५]

एदमणेणावहारिय अप्पावहुगं(ग)सुत्ता[व]यारो भणदि । तं जहा—

सव्वत्थोवा संखेज्जभागवट्टिउदीरया । संखेज्जगुणवा(व)ट्टिउदीरया असंखेज्जगुणा ।

पृ० १६५.

सुगमं । अण्णत्थ सव्वत्थ वि संखेज्जभागवट्टिउदीरएहिंतो संखेज्जगुणवट्टिउदीरया संखेज्जगुणहीणा त्ति उत्तं । कथमेत्थ तेहिंतो असंखेज्जगुणा जादा ? ण, सुहसरूवणिहोदय-सहगदबंधजोगविसाहपरिणामेसु परिणमिय साद(दं) बंधमाणणं गहणादो ।

(पृ० १६५)

पुणो उवरिमअसंखेज्जभागवट्टि-अवत्तव्व-अवट्टिदप्पदरादीणं उदीरणप्पावहुगपदाणि सुगमाणि ।

पुणो मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया । पृ० १६६.

कुदो ? पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो । तं कथं णव्वदे ? आवलि० असंखेज्ज-भागमेत्तअप्पणो उवक्कमणकालेहिं उववट्टिद(ओवट्टिद)सासणसम्मदिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मदिट्ठि-संजदासंजदरासीणं समूहस्स पमत्तसंजदरासीए संखेज्जदिभागाहियस्स सह गहणादो ।

पुणो संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? सण्णिपंचिदियपज्जत्तापज्जत्ताणं सत्थाणेण ट्ठिदाणं संखेज्जगुणहाणि करंताणं इह गहणादो । तं कथं ? सण्णिपंचिदियरासिं द्दविय [४६५] एदं भुजगारावट्टिदप्पदरद्धाहि एत्तिय-मेत्ताहिं [२] भागं घेत्तण लद्धमप्पणो अद्धाहि गुणिदे भुजगारादिगसयो होंति । तेसिमेसा द्दवणा [२७] [= २ २] = २७ २] = २७४२] । [४६५२७५, ४६५२७५, ४६५२७५]

पुणो सत्थाणे सण्णिपंचिदियपज्जत्तजीवाणं संखेज्जगुणहाणिखंडयवाराओ थोवाओ [१] । संखेज्जभागहाणिखंडयवाराओ संखेज्जगुणाओ [४] । असंखेज्जभागहाणिखंडयवाराओ संखेज्ज-

गुणाओ त्ति [१६] । एदासि तिण्हं वारसलागाणं पक्खेव-संखेवेण पुब्बाणिदभुजगाररासिं भागं
 घेत्तूण लद्धमप्पणो सलागाहिं गुणिदे तिण्ण वि रासओ होंति । तेसिमेसा डवणा
 = २ २ = २ २ ४ = २ २ २६ । पुणो एत्थ संखेज्जगुणहाणिखंडयवाद्दं करंतजीव(वा)
 ४६५२७५२१ ४६५२७५२१ ४६५२७५२१ संखेज्जगुणहाणिउदीरयो(या) त्ति घेत्तव्वं । तेसिं पमाणमेदं
 = २ २ १ । पुणो पदरस्स संखेज्जदिभागमेत्त(त्ता)एस रासी पुब्बुत्तपलिदोवमस्स असंखेज्जदि-
 ४६५२७५२१ भागमेत्तावत्तव्वुदीरगगसीदो असंखेज्जगुणा त्ति णत्थि संदेहो ।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरया[अ]संखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? सत्थाणद्विदसकसाइयपज्जत्तापज्जत्तरामिम्म संखेज्जभागहाणि कुणंतजीवाणं
 पहाणभावेणवभुवगमादो । तं कथं ? भुजगारावद्विदपदरद्धाहिं स(सा)मणगतसरासिं भागं घेत्तूण
 लद्धमप्पणो अद्धाहिं गुणिदे भुजगारादिरामयो होंति । पुणो सव्वत्थोवाओ संखेज्जभागहाणि-
 खंडयसलागाओ [१] । असंखेज्जभागहाणिखंडयवाद्दसलागाओ संखेज्जगुणाओ त्ति [४] ।
 एदासिं सलागाणं पक्खेव-संखेवेण पुब्बाणिदभुजगाररासिं भागं घेत्तूण लद्धमप्पणो सलागाहिं
 गुणिदे संखेज्जभागहाणि-असंखेज्जभागहाणिरासीओ होंति । तेसिमेसा डवणा = २ २ = २२४ ।
 पुणो एत्थ पढमरासि(सी) संखेज्जभागहाणिउदीरगगारसिपमाणं होंति त्ति ४२७५५ ४२७५५
 घेत्तव्वं । पुणो एसो रासी पुब्बुत्तसाणपज्जत्तरासिस्स असंखेज्जभागमेत्त- ३ ४३
 संखेज्जगुणहाणि(णि-)उदीरगगारसीदो असंखेज्जगुणो त्ति णत्थि एत्थ संदेहो । जदि एवं घेत्तपदि
 तो णाणावरणादोणं पि एसत्थो किं ण परूविदो ? ण, तत्थ वि एसत्थो परूवेदव्वो ।

(पृ० १६६)

तदो उवारिमप्पावहुगपदाणि जाणिय पुव्वं व वत्तव्वाणि ।

पुणो सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया । पृ० १६६.

कुदो ? दंसणभोहक्खवयसंखेज्जजीवगहणादो ।

पुणो अवद्विदउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? वेदगसम्मत्तस्स द्विदीदो समउत्तरं बद्धमिच्छत्तद्विदीए घादेणुप्पणसंतद्विदीए वा
 धरिय द्विदजीवाणं सम्मत्तं पडिवण्णे अवद्विदउदीरया होंति । तदो तेण सरूवेण सम्मत्तं पडि-
 वज्जमाणं असंखेज्जवियप्पाणं असंखेज्जपमाणं मज्जे ताव मिच्छत्तमवद्विदीए समाणसम्मत्त-
 सम्मामिच्छत्तद्विदीहिं सह सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवपमाणं ताव उच्चदे । तं जहा— अंतो-
 मुहुत्तचभंतरे जदि आवलियाए असंखेज्जदिभागं उवक्कमणकालं लद्धमदि तो असंखे० आवलिय-
 मेत्तस्समाइद्विसंचयकालवभंतरे किं लभामो त्ति तेरासिपणाणिदावलियाए असंखेज्जदिभागेण
 वेदगसम्मत्ताद्विरासिं खांडे तत्थेगखंडं मिच्छत्तं गच्छमाणजीवपमाणं होंदि । ते च मिच्छत्तं
 गंतूणंतोमुहुत्तकालमुव्वेल्लणाए अप्पाओग्गा होदूण अच्छमाणे कहिं संखेज्जगुणहाणीए कहिं
 संखेज्जभागहाणीए कहिं असंखेज्जभागहाणीए च द्विदिखंडयाणि अच्छरुण सम्मत्ते पडिवण्णे
 तिविहहाणीए सम्मत्तस्स उदीरया होंति । पुणो सत्थाणेण मिच्छाईद्विणा तिविहक्कमाणं तिविह-
 हाणीए द्विदिखंडए घादिय सम्मत्ते पडिवण्णे अवद्विदउदीरया होंति ।

पुणो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं द्विदीहितो मिच्छत्तद्विदिं तिविहसरूवेण वडिद्यूण बंधिय
 द्विदो संतो सम्मत्ते पडिवण्णे तिविहवाड्डसरूवेण सम्मत्तस्सुदीरया होंति । एवं अंतोमुहुत्ते काले
 गदे उव्वेल्लणकिरियं पारभदि । पुणो पारभिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण कालेण पुव्विल्ल-
 घादिदसेसाणमंतोकोडाकोडिआदिद्विदीए उव्वेल्लिज्जंति । तं जहा— पलिदोवमद्धच्छेदणयस्स

असंखेज्जदिभागमेत्तुव्वेल्लणट्टिदिखंडण अंतोमुहुत्तद्ध(म्भ)हिण ताव सम्मत्तमवट्टिदिमेव अवट्टिय अंतोमुहुत्तेण गुणिदे उव्वेल्लणकालो एत्तियो होज [अ २७] । पुणो एदं उव्वेल्लणखंडयपमाणं [छे २] पल्लासंखेज्जदिभागमत्तं उव्वेल्लणखंडयं [प २] इदि परूवयगंथेण सह विरुज्जदि । [२] किंतु गंथंतराभिप्पायमिदि परूवेदव्वं । [२]

पुणो एदम्मि काले सम्मत्तादो मिच्छत्तमुवक्कमिय उव्वेल्लिज्जमाणजीवपमाणमाणिज्जंते । तं जहा— अंतोमुहुत्तकाले जदि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालो लब्भदि तो पुव्वुत्तुव्वेल्लणकालम्मि किं लभामो त्ति तेरासिएणाणिदे एत्तियमुवक्कमणकालं होदि [अ २] । पुणो एदं तेरासिएणगसमयउवक्कमंतपल्लासंखेज्जदिभागेण गुणिदे एत्तियं होदि [छे २] । [प २] एदमंतोकोडाकोडिमेत्तट्टिदिवियव्वे(पे)हिं भागे हिंदे तत्थ लद्धमेत्तमेगेग- [२२२] छे २ ट्टिदीए ट्टिदजीवा हांति । ते चेत्तिया [प २] छे । पुणो एत्तिया चेव मिच्छत्तधुवट्टिदीए समाणसम्मत्तट्टिदीए ट्टिदजीवा [२२२२२] हांति । पुणो उव्वेल्लणकरियमप.....ध अंतोमुहुत्तकालेण संचिदमिच्छाडट्टिजीवा एत्तिया हांति [प २७] । पुणो एदेहिं जीवेहि असुणं होदूण ट्टिदट्टिदिपमाणं उक्कसेण एत्थ संचिदजीव- [२२२] पमाणमत्तं होदि । एदमसा[म]णसरूवं चेव । पुणो सरिसट्टिदीए ट्टिदजीवा सामण्णा णाम । ते एत्थ णत्थि । पुणो दोसामण्णट्टिदीए संते सेसा दुरूऊणमसामण्णा ट्टिदी होदि । पुणो सामण्णट्टिदीए एगेगुत्तरं कादूण वड्ढावियमसामण्णट्टिदीयो एगेगहीणं करिय णेदव्वं जाव सामण्णट्टिदि(दी)तप्पाओग्गुक्कसपमाणं पत्ता त्ति । ते च केत्तिया ? धुवट्टिदीए ट्टिदजीवसंखादो थोवमेत्ता हांति । तं कुदो णव्वदे ? ण, तत्त(त्थु)व्वेल्लणट्टिदजीवसंखादां एत्थतणजीवसंखाए थोवत्तादो पुणो तत्थतणट्टिदिसंताणं बहुत्तुवलंभादो । तदो तत्थतणजीवसंखं अप्पाबहुणेण असंखेज्जवेण खंडिदमेत्तं हांति । पुणो ण ट्टिदीए ट्टिदजीवेण सादिरेयं करिय पुणो एदं पुव्वणिदुवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदगखंडमेत्तं अवट्टिदउदीरया हांति । तं चेदं [प २] छे २ [२२२] २२

पुणो असंखेज्जभागवट्टिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? उव्वदे— धुवट्टिदीदो हेट्टिमट्टिदीसु ट्टिदासेसजीवा मज्जे ट्टिविय तेरासियमेवं कायव्वं- पुव्वुत्तुव्वेल्लणकालेण जदि हेट्टिमट्टिदीसु ट्टिदजीवपमाणं लब्भदि तो धुवट्टिदीए असंखेज्जभागवट्टि-संखेज्जभागवट्टि-संखेज्जगुणवड्ढाणं विसयभूदधुवट्टिदीए जहणपरित्तासंखेज्जेण खंडिदगखंडस्स उव्वेल्लणकालेण धुवट्टिदीए अद्धस्स उव्वेल्लणकालेण पुणो धुवट्टिदीए उव्वेल्लणकालेण च पुह पुह किं लभामो त्ति तेरासियं काऊण आणिदे सग-सगविसयरासयो आगच्छंति । तेसि पमाणमेदाण [प २] [अ २] [प २] [अ २] [प २] [अ २] । पुणो एदाणि तप्पाओग्गुवक्कमणकालेण पल्लिदोवमस्स असंखे- [२] ख छे १६२२२ छे २ [२२२] २२ [२] ज्जदिभागेण भागे हिंदे सम्मत्तं पडिवज्जमाणतिविहवड्ढि- [२] २२ सरूवेण रासयो हांति । णवरि संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढाणं एत्थ संखेज्जगुणं कायव्वं । तं किमट्टं ? ण, धुवट्टिदीए अन्तरट्टिदीयो ताओ धरिय धुवट्टिदीए उवरिमट्टिदिवियप्पाओ अवलंभि(त्रि)य एदेसिं दोणहं जोइज्जमाणे बहुविसयोवलंभादो, पुणो एत्थ असंखेज्जवड्ढिविसयजीवाणं गहणादो [प २] [अ १६२] । [२२२] छे [२]

पुणो संखेज्जगुणवट्टिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? पत्थ पुव्वुत्तासंखेज्जगुणवडिद्विसयजीवगहणादो ।

पुणो संखेज्जभागवडिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? पुव्वुत्तरासिगहणादो । प अ ७७ ।

पुणो संखेज्जगुणहाणुदीरया $\left| \begin{array}{c} ३२३ छे २२ \\ २२ \end{array} \right|$ असंखेज्जगुणा । कुदो ? आवलियाए

असंखेज्जभागच्छेदणेहि उवज्जिद(ओवट्टिद) सम्मत्तपवेसणरामिपमाणत्तादो । पृ० १६६.

तं पि कुदो ? उच्चदे । तं जहा— अंतोमुहुत्तकालव्भंतरे आवलिय सगच्छेदणहिं भजिय-
मेत्तविक्खिस्वदमावलियाए असंखेज्जदिभागमुक्कमणकालं लव्भदि तो असंखेज्जावलिय-
मेत्तअसंजदसम्मादिट्टिरासिस्स संचयकालम्मि किं लभामो त्ति तेरासिणण गुणिय आणिदे एत्तियं
होदि $\left| \begin{array}{c} २२ \\ छे \end{array} \right|$ । पुणो एदेण सम्मत्तरासि खंडिदे मिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासी आगच्छदि । ते चेतिया
 $\left| \begin{array}{c} २२ \\ छे \end{array} \right|$ होदि त्ति $\left| \begin{array}{c} २२ \\ छे \end{array} \right|$ । इदं मिच्छादिट्टिरासिं भुजगागवट्टिदण्णदरबंधगद्धासमूहेण भजिय
सग-सगपक्खे [वे]- $\left| \begin{array}{c} २२ \\ छे \end{array} \right|$ हि गुणिदे मिच्छत्तस्स तिविहपथागट्टिदिद्विद्विद्विपरिणदजीवा होति ।

पुणो एदेहितो सम्मत्तं पडिवाज्जिय सम्मत्तस्स तिविहट्टिदिद्विद्वि काऊण कि ण गहिदो ?
ण, तथा परिणयजीवाणमर्दाव दुल्लहत्तादो । तं पि कुदो णव्वदे ? ण, सकिलेसेण परिणमियूण
ट्टिदिवडिद्वि बंधिय तप्परिणयसंकिलेस्सखयेण पुणो अणंतरमविस्समिय विसोहीए परिणमंताणं
अर्दाव दुल्लहत्तादो । पुणो विसोहिं परिणमिय मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताण ट्टिदिखंडय-
घादेण घादिज्जमाणजीवा बहुधा होति । तदो तत्थ भुजगारासिं संखेज्जगुणवडियादीणं वार-
सलागाणं पक्खेव-संखेवेहिं भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिदे सग-सगरासयो आगच्छंति । पुणो
तत्थ लद्धसंखेज्जगुणवडुणं अणुमारी संखेज्जगुणहाणुदीरया होति । तं रासिं द्विय अणु-
व्वेल्लिज्जमाणंतोमुहुत्तकालव्भंतरवक्कमणकालेणत्तिण $\left| \begin{array}{c} २७ \\ छे \end{array} \right|$ संचयगहणदं गुणिदे एत्तियं होदि
 $\left| \begin{array}{c} ५ २२ २७ \\ छे ३२ ७५ २१ छे \end{array} \right|$ ।

पुणो पत्थ सरिसगुणगार-भागहारे अवणिदे एत्तियं होदि त्ति गंथे उत्तं $\left| \begin{array}{c} ५ \\ २२ ३ छे \end{array} \right|$ ।

पुणो अवत्तव्वुदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? सम्मत्तपवेसय- $\left| \begin{array}{c} २२ ३ छे \\ छे ७ \end{array} \right|$ सव्व-
रासीणं गहणादो । पुणो संखेज्जभागहाणुदीरया संखेज्जगुणा (मू० असंखेज्जगुणा) ।

(पृ० १६६)

कुदो ? वेदगसम्मत्तपविद्वंतोमुहुत्तमुहुत्त(?)कालव्भंतरे विसोहिपरिणामेण संखेज्जवारं
संखेज्जभागहाणि करंति त्ति । तदो अवत्तव्वुदीरयरासि द्विय अंतोमुहुत्तव्भंतरवक्कमणकालेणत्तिय-
मेत्तेण $\left| \begin{array}{c} २७ \\ छे \end{array} \right|$ गुणिदे एत्तियं होदि $\left| \begin{array}{c} ५ २७ \\ २ २२ छे \\ छे \end{array} \right|$ ।

पुणो असंखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? वेदगसम्मत्तुदीरयसव्वजीवगहणादो $\left| \begin{array}{c} ५ \\ a \end{array} \right|$ ।

पुणो इत्थिवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणुदीरया । पृ० १६७.

कुदो ? खवगुवसामगसंखेज्जजीवगहणादो ।

पुणो अवत्तव्वुदीरया असंखे०गुणा । पृ० १६७.

(५२)

परिशिष्ट

ततो संखेज्जभागहाणिउदीरणवारा संखेज्जगुणा, असंखेज्जभागहाणिउदीरणवारा संखेज्जगुणा त्ति । एदमत्थपदं धरिय पुवं व संखेज्जवस्साउगं च धरिय आणेदव्वं ।

पुणो असंखेज्जभागवट्ठिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? असंखेज्जभागवट्ठि बहुवारं करिय सहि(सइं) संखेज्जभागवट्ठि संखेज्जवस्साउगेसु-
प्पण्णंतोमुहुत्तकालम्मि करेत्ति त्ति घत्तव्वं । तस्स पमाणमेत्तियं $\left| \begin{array}{l} = ० ३२४४८ \\ ४६५८११०३३२७९ \end{array} \right|$ ।

पुणो अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सव्वित्थिवेदरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो $\left| \begin{array}{l} = ३ २२२२ ७ \\ ४६५३३२७५ \end{array} \right|$ ।

पुणो असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सव्वित्थिवेदरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो $\left| \begin{array}{l} = ३२२२७४ \\ ४६५३३२७५ \end{array} \right|$ ।

पुणो णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणाहाणिउदीरया । पृ० १६७.
मुगममेदं ।

संखेज्जगुणाहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सण्णिपंचिदिण्ण संखेज्जगुणाहाणीए खंडयं अच्छियूणेइंदिण्णसुप्पज्जिय उक्कीरणद्वा-
विसेसंतोमुहुत्तकालम्मि संचिदत्तादो $\left| \begin{array}{l} = ० २२ २७ \\ ४६५८११०२७५२१७७७ \end{array} \right|$ । अहवा सत्थाणट्ठिदसण्णिपंचि-
दियपज्जत्तणउंसयवेदतिरिक्खेण सव्वविमुद्वेणसंखेज्जगुणाहाणि-
खंडयं घालियूण ट्ठिदजीवाणं गहणं कायव्वं $\left| \begin{array}{l} = ० २२ \\ ४६५३२४१०७७७७७७२२७५२१ \end{array} \right|$ ।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? संखेज्जवस्साउगपुरुसित्थिवेदगरासि ट्ठिविय संखेज्जवस्साउगव्वंतरुक्कमणकालेण
खंडिदेगखंडस्स सादिरेयअसंखेज्जभागपमाणत्तादो $\left| \begin{array}{l} = १० २१ \\ ४६५८१०२७७२ \end{array} \right|$ ।

पुणो संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? असाण्णपंचिदिय-वि त्ति चउरिंदियसण्णिपंचिदिण्णसु च संखेज्जभागहाणीणं
संभुवुवलंभादो । तं पि कुदो णव्वदे ? एदे पंचविहउत्तसरासीमु पज्जत्तरासि भुजगारावट्ठिदप्प-
दरद्दाहिं आवलियाए असंखेज्जभागपडिवद्धं वा(हि)पक्खेवसंखेवेहिं भजिय सग-सगद्दाहि गुणिय
पुवं व आणिदत्तादो $\left| \begin{array}{l} = २२ \\ ४२५५ \end{array} \right|$ । अहवा तेसि पज्जत्तापज्जत्तजीवेसु संखेज्जभागहाणिमंतोमुहु-
त्तद्दाहि पुवं व आणिदे एत्तियं होदि $\left| \begin{array}{l} = २२ \\ ४२७५५ \\ २ \end{array} \right|$ । णवरि एत्थ भागहारगद-
विसेसो जाणियव्वो ।

पुणो तिरिक्ख-मणुस्साउगाणं चत्तारि पदाणि, तेसिं जाणिय वत्तव्वाणि ।
तत्थ ताव तिरिक्खाउवस्स उच्चदे । तं जहा—तिरिक्खाउवस्स सव्वत्थोवा संखेज्जगुणा-
हाणिउदीरया । कुदो ? संखेज्जगुणाहाणिउदीरणए णिमित्तभूदपरिणामाणमईव दुल्लहत्तादो, पुणो

तेसि पमाणं सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागत्तादो १३। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? तग्घादकरणपरिणामाणं सुलहत्तवलंभादो २२ । १३ अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? निरिक्खरासिमंतोमुहुत्तण खंडिदेगखंडपमाण- २ । १२ । असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? किचूणतिरिक्खरासिगहणादो २७ । १३२१ । एवं मणुस्साउगस्स जाणिय वत्तव्वं । २७

पुणो णिरयगदीए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्डिउदीरया । पृ० १६७.

कुदो ? सण्णिपंचिदियपज्जत्ततिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं णिरएसुप्पज्जमाणं चरिमावलयकालव्वंतरे संखेज्जगुणवड्डियो वंधिय णिरएसुप्पणं समयूपपढमावलयकालव्वंतरे संवयगहणादो । कथं थोवत्तं ? ण, सण्णिपंचिदियपज्जत्ततिरिक्खा संखेज्जगुणवड्डि करेति । तदो सण्णिपंचिदिपहिंतो उप्पज्जमाणकारणाणुसारी त्थोवा हांति त्ति । ते चेतिया हांति

२	२
प २२७५	२१२७७७
२९	

पुणो संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? णेरइणसुप्पणपढममयपपहुडि संखेज्जावालयमेत्तकालव्वंतरे सइं संखेज्जगुणहाणि करिय बहुवारं संखेज्जभागहाणि करेति । एवं करेतेण बहुवा संखेज्जगुणहाणिवारा जादे त्ति ।

तेसि डवणा	२४२७
पुणो	प २२७५२१२७७
	२

संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? पुव्वुत्तकमेणेदस्स सुलहत्तुवलंभादो, तत्त(त्थु)पण्णासण्णीणं संखेज्जभागहाणी णस्थि त्ति कारणादो । ते चेतिया

संखेज्जभागवड्डिउदीरया	२२७४१
	प २२७२५२१२७७
	२

असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? असण्णिपंचिदियतिरिक्खाणं संखेज्जभागवड्डिं ट्ठिदिं वंधिय णिरएसुप्पणं गहणादो । ते चेतिया - २२ २७ । २७५५२७७

असंखेज्जभागवड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सुलहत्तादो	-२२२४२७७
	२७५५२७७

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ. १६८.

कुदो ? उप्पणपढमसमयसव्वजीवाणं गहणादो, ते च अप्पदर-अवडिदपहाणत्तादो एत्तिया - २ । २७७

अवडिदउदीरया संखेज्जगुणा । पृ. १६८.

कुदो ? असण्णिपंचिदियाणं अवडिदबंधगाणं णिरिपसुप्पणमावलयकालव्वंतरे संचिदाणं गहणादो - २२२७७७ । २७५५२७७

असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६८.

कुदो ? किचूणसव्वणेरइयरासिगहणादो - २ ।

(पृ० १६८)

आंरालियसरीरस्सप्पावहुगपरूवणा सुगमा । णवरि संखेज्जगुणहाणिउदीरगेहिंतो संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा त्ति उच्च सण्णपंचिदियकम्मभूमितिरिक्खरासीहिंतो असण्णपंचिदियरासीणं असखेज्जगुणकारणत्तादो हंतो त्ति जाणिज्जदि । पुणो देवेसु दुविह-सरूवखंडयं अच्चिद्य एइदिएसुप्पणाणं घेत्तूण संखेज्जगुणहाणिउदीरगेहिंतो संखेज्जभागहाणि-उदीरया संखेज्जगुणा त्ति किं ण परूविदं ? (ण,)सत्थाणखंडयविवक्खादो, अण्णहा तथा चैव हंतो । अहवा तेसिं अही(दी)व थोव[त्त]विवक्खादो वा । सेसाणि सुगमाणि ।

पुणो ममचउरससंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जभागहाणिउदीरया । पृ० १६९.

कुदो ? खवगे पडुच्च ।

[संखेज्ज०]गुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? विगुत्तवणमुट्ठावेतपंचिदियतिरिक्खाणं असंखेज्जभागमेत्ताणं संखेज्जगुणहाणिखंडय-घादेकारणविमुट्ठपरिणामेण परिणदाणमत्थ एत्तियमेत्ताणं चैव उवलंभादो त्ति विण्णणंतरे^१ उच्चत्तादो गुरुवदेसादो च^२ २६ प। अथवा, वीससागरोवभट्ठिदिं बंधिय सगसेसणामपयडाहिंतो ममचउरससंठा-णम्मि संकामिदे^३ २। तम्मुककम्मसट्ठिदिसंतं हंतो । तारिसमण्णपंचिदियपज्जत्ताणं पमाणं ट्ठिदि-भुजगारं तक्खरेत(?)सण्णपंचिदियपज्जत्त जीवरासिं उवक्कमणकालेण खंडिदेगखडमेत्तट्ठिदिसंकमेत-जीवसखं हंतो । पुणो एदेहि जीवेहिं सगुक्कम्मसट्ठिदिवंधादो अहियसंतं लहुं बहुअं च घादेदि त्ति तेसिं ट्ठवणा $\left| \begin{array}{c} = २ २ \\ ४६५७५२१२७७ \end{array} \right|$ । किमट्ठं सत्थाणवडिडमसियूण संखेज्जगुणहाणिपरूवणा ण कदा ? ण, तेसिं अही(दी)व दुल्लहत्तादो ।

पुणो संखेज्जभागवडिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? सत्थाणट्ठिसण्णपज्जत्तजीवरासिं समचउरसंठाणट्ठिदिसंतादो भुजगारट्ठिदिवंधं वडिहवारिहिं भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिय छसंठाणाण समचउरसंठाणादिक्रमेण संखेज्ज-गुणाणं बंधगद्धासमूहेण भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिदे तत्थ लहुं ममचउरसंठाणाणं एत्तियं संखं हंतो $\left| \begin{array}{c} = २ २ ४ \\ ४६५७५२१२३६५ \end{array} \right|$ । किमट्ठं परपयडाणं पलिच्छेदणेण संखेज्जभागवट्ठो ण कोरदे ? ण, तेसिं $\left| \begin{array}{c} = ० ४४ \\ ४६५७५२१०२७७ \end{array} \right|$ ।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? देवेसुप्पणसव्वजीवाण सादिरेयमेत्ताणं गहणादो $\left| \begin{array}{c} = ० \\ ४६५७५२१०२७७ \end{array} \right|$ ।

संखेज्जगुणवडिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? असण्णिवच्छायदसण्णजीवेसुप्पणपढमसमयपहुडि संखेज्जवारं संखेज्जगुण-वडिहउदीरणं करेतजीवा हंतो । तेसिं ट्ठवणा $\left| \begin{array}{c} = ४ \\ ४६५७५२१०२७७ \end{array} \right|$ ।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा ।

पुवुत्तजीवा चैव सइं संखेज्जगुणवडिह करिय असइं संखेज्जभागहाणिं करेति त्ति तेसिं ट्ठवणा $\left| \begin{array}{c} = ० ४४ \\ ४६५७५२१०२७७ \end{array} \right|$ ।

१ मप्रतितः संशोधितोऽयं पाठः, प्रतौ तु 'उप्पणंतरे' इति पाठोऽस्ति ।

असंखेज्जभागवड्डिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं $\left| \begin{array}{r} ०४४ \\ ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ । पुणो उवरिमपदाणि सुगमाणि ।
पुणो णग्गोद(ह)परिमंडल- $\left| \begin{array}{r} ०४४ \\ ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ सरीरसंहाणस्स सव्वत्थोवा

[अ]संखेज्जगुणाणुदीरया । पृ० १६९.

सुगममेदं ।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? सण्णपंचिदियपज्जत्तकम्मभूमियजीवाणं असण्णपंचिदियजीवाणं अण्णसंहाण-
द्वियाणं णडंदिअ-विगळिदियाणं णग्गोदपरिमंडलसंहाणेसु सण्ण-असण्णीसुप्पणाणं पढमसमए गह-
णादो । तं चेसा = $\left| \begin{array}{r} ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ एत्थ सण्णजीवा चेव पह(हा)णा, असण्णपंचिदिएसु
हुंडसंहाणा चेव $\left| \begin{array}{r} ० \\ ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ बहुवा हांति त्ति गुरूवदेसादो ।

संखेज्जभागवड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

णग्गोदपरिमंडलसंहाणउदयसंजुदअसण्णीहितो तदुदयमंजुदसण्णी संखेज्जगुणा । कुदो ?
एत्थ सण्णीसुप्पणाणोमुहुत्तकालवभंतरे असण्णी बहुवारं संखेज्जगुणावड्डि करिय सइं सखेज्ज-
भागवड्डि करेति । एदेण कमेण संखेज्जभागवड्डि वि संखेज्जवार लवभंति त्ति । असण्णीसु वि संखेज्ज-
भागवड्डि लवभंति । ते वि एत्थ पक्खित्तमेत्ता हांति । ते चेसा $\left| \begin{array}{r} ४ \\ ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ ।

संखेज्जगुणावड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो $\left| \begin{array}{r} = ४४ \\ ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ ।

संखेज्जगुणाणुदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? संखेज्जगुणावड्डिवारेहितो संखेज्जगुणाणुदीरया संखेज्जगुणा त्ति । अहवा सत्था-
णेण संखेज्जगुणावड्डि करंनजीवा द्विय पुणो जहण्णकस्सुकारणद्धाविसेसवभंतकवक्कमणकालेण-
गुणदमेत्तत्तादो वा $\left| \begin{array}{r} ४४४ \\ ४६५३२४१०७७७ \\ ० \end{array} \right|$ ।

संखेज्जभागवड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

सुगममेदं । कुदो ? पुव्वं परूविदकमत्तादो ।

पुणो असंखेज्जभागवड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? सण्णीसुप्पणाणोमुहुत्तकालवभंतरे असण्णीसु संखेज्जवारं असंखेज्जभागवड्डि
करिय सइं संखेज्जभागवड्डि करेति त्ति । उवरिम-दो-पा(प)दाणि सुगमाणि ।

पुणो णिरयगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीणं सव्वत्थोवा संखेज्जगुणावड्डिउदीरया ।

पृ० १७०.

कुदो ? सण्णपंचिदियण संखेज्जगुणावड्डि वंधिय तेसु दोसु वि गदीसु दोविग्गहे-
णुप्पणाणं विदियसमए हांति त्ति । तेसि संदिट्ठी $\left| \begin{array}{r} -२२२ \\ २७५२१२७७ \\ २ \end{array} \right| = \left| \begin{array}{r} ०२२ \\ ४६५३२४१०७७७ \\ २ \end{array} \right|$ ।

पुणो संखेज्जभागवड्डिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १७०.

कुदो ? असण्णिपंचिदियपज्जत्तेण संखेज्जभागवड्डिं करिय णिरयदेवेसुप्पण्णाणं विदिय-
समए होंति त्ति । ते चेदाओ

$$\text{पुणो असंखेज्जभाग-} \left| \begin{array}{c} -२२ \\ २७०५५२७२ \end{array} \right| = \frac{२२}{०} \left| \begin{array}{c} २२ \\ ४६५२११०२७५५२७७ \end{array} \right| \text{ वड्डिउदीरया[अ]संखेज्जगुणा }^१$$

हेदुणा । पृ० १७०.

तं कथं ? जे मंदपरिणामा जीवा ते बहुवा, तिच्चपरिणामा जीवा त त्थोवा होंति त्ति ।
पुणो जवमज्झपरूवणावलंभि(वि)य जोइज्जमाणे असंखेज्जगुणत्तं, णायो[व]गदत्तादो ।

उवदेसेण पुणा(पुण)संखेज्जगुणा । पृ० १७०.

तं कथं ? सच्चत्थोवा संखेज्जगुणवड्डिवारा, संखेज्जभागवड्डिवारा संखेज्जगुणा, असंखेज्ज-
भागवड्डिवारा संखेज्जगुणे त्ति उवदेसादो ।

अवड्डिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १७०.

सुगममेदं ।

असंखेज्जभागहाणिउदीरया^२ संखेज्जगुणा । पृ० १७०.

कुदो ? अद्दासमासेण भजियसगपक्खेवेण गुणिय पुणो उवक्कमणकालंभजियपमाणत्तादो ।

अवत्तच्चउदीरया विसेसाहिया । पृ० १७०.

कुदो ? वड्डिअवड्डिउदीरएहि अहियत्तदंमणादो ।

पुणो तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए सच्चत्थोवा संखेज्जगुणवड्डिउदीरया ।

पृ० १७०.

कुदो ? सण्णिपंचिदिण्ण संखेज्जगुणवड्डिबंधं काऊण एइंदिएसुप्पज्जिदस्स होंदि त्ति । तं

$$\text{चेदं} \left| \begin{array}{c} = ०२२ \\ ४६५२११०२७५२१२७७ \end{array} \right| \text{ ।}$$

पुणो संखेज्जभागवड्डिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १७०.

कुदो ? विगल्लिदिय-असण्ण-सण्णिपंचिदियपज्जत्तापज्जत्तजीवाणि (?) संखेज्जभागवड्डिं
काऊण एइंदिएसुप्पण्णे होंदि । ते(तं)चेदं $\left| \begin{array}{c} -२२ \\ ४२७५५२७७ \end{array} \right|$ । एत्तो उवग्गिमपदाणि सुगमाणि । णवरि
अवत्तच्चउदीरगेहितो असंखेज्जभाग- $\left| \begin{array}{c} ४२७५५२७७ \\ २ \end{array} \right|$ हाणिउदीरया दुसमयसांचदत्तादो विसेसा-
हियं जादो(दा) त्ति वत्तच्चं ।

(पृ० १७०)

अणुभागउदीरणपरूवणाए मूलपर्यडिपरूवणा सुगमा । पुणो उत्तरपर्यडिपरूवणाए
चउवीस अणियोगद्दाराणि होंति त्ति । तेसिं परूवणा सुगमा । णवरि तत्थ घादिसण-
परूवणाए आभिणिबोहियणाणावरणीय-सुदणाणावरणीयाणं उक्कस्साणुभागउदीरणा सच्च-
घादा (पृ० १७१) त्ति परूविदं ।

णेदं घडदे । तं जहा— सच्चं घादेदि त्ति सच्चघादी णाम, आभिणिबोहिय-

१ मूलग्रन्थे 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।

२ मूलग्रन्थे 'संखेज्जभागहाणिउदीरया' इति पाठः ।

सुदणाणावरणाणं णत्थि । कुदो ? एदेसिं दोण्हं उक्कस्सुदीरणं सण्णिपंचिदियपज्जत्ताणं सव्व-
संकलिट्ठाणं होदि त्ति सामित्ते भणित्तादो । एवं भणित्ते किमट्ठं जादमिदि चे ण, सण्ण-
पंचिदियपज्जत्तेसु पंचिदिय-गोडंदिद्याणं खओवसममत्थि, तेसिमेगदराणं उवजोगे वि दिस्सदि ।
एवं संते एदेसि उक्कस्साणुभागउदारणं देसघादी होदि । एवं संते पुव्वावरविरोहो होदि ? ण,
एदस्सत्थो एवं भणिज्जदि— दोण्हमावरणाणं उक्कस्साणुभागाणं सव्वघादणसत्ती पंचिदियजादि-
कम्मोदएण पडिहयं होदूण णट्ठा, णट्ठे वि सव्वघादित्तं ण णस्सदि । जहा अग्गिस्स दहणगुणमंतोसह-
पहावेण पच्छादिदे संते वि अग्गिस्स दहणगुणं ण णस्सदि, तथा चेव एत्थ वि ।

सम्मामिच्छत्तस्सेव सव्वघादित्तं किं ण उत्तं ? ण, एवं संते अणुक्कस्ससव्वस्स
वि सव्वघादित्तं पावदि । पुणो अणुक्कस्सुदीरणा एदेण कमेण सव्वघादी होदूण गच्छदि जाव
ओधि-मणपज्जवणाणावरणाणं सव्वघादिजहण्णाणुभागेण अणुमरिसं जादं त्ति । तत्तो परं
देसघादी होदि । णवरि एत्थ अणुक्कस्सुदीरणा देसघादि-सव्वघादि त्ति उत्तकम्म(म)स्स अत्थं
एवं होदि । तं जहा— कम्मोहि अवहरिज्जमाणगुणाणं दिस्समाणत्तादो अणुक्कस्सुदीरणं देसघादी
होदूण गच्छदि जाव लद्धिअक्खरं ण पावदि ताव । पुणो पत्ते य सव्वघादित्तं होदि, खओवसम-
पहाणत्तेण विवक्खिवदत्तादो त्ति । एदमत्थं जानाविदं । अणुभागाणं कम्मो पुव्विक्खो चेव ।

पुणो अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुक्कस्सुदीरणं देगघादि त्ति । पृ० १७१.

कथमेदं घडदे ? कथं ण घडदे ? उच्चदे— मिच्छत्तासंजम-कसायसरूवपरिणामपञ्चइयस्स
णाणाणुसारिदंसणं पच्छा[द]यंतस्स अचक्खुदंसणावरणस्स मदिणाणावरणपरूवणाए समाणेण
होदव्वमिदि ? ण, जमणुभागुदीरणं जम्मि पडिवक्खं सव्वं घादयदि तमणुभागं तं पडुच्च
उक्कस्सं सव्वघादित्तं च होदि । एत्थ पुण तं णत्थि । कुदो ? सण्णिपंचिदिएण ब्रह्मक्कस्साणु-
भागं तं चेवुदीरिज्जमाणे खओवसमविसेसेण पंचिदियोदएण पडिहयं होदूण अणंतगुणहीण-
सरूवेण उदयावलियं पविसदि, मदिणाणावरणं व थिरं ण होदि । पुणो जादिवसेण खओव-
समहाणोए च एदस्सणुभागउदीरणा वड्ढि जाव सुहुमेडंदिद्य जीवस्स लद्धियक्खरखओवसमे त्ति ।
णवरि जम्मि जम्मि जादिम्मि तम्मि पडिवद्धपरिणामपञ्चएणुक्कस्सं होदि, वहिरंतरंगुवओगाणं
छटुमत्थेसु समाणत्ताभावादो कज्जस्स त्थोवबहुत्तादो कारणस्स बहुत्त(त्तं)त्थोवत्त च ण
जाणिज्जदि त्ति दोण्हं सरिसपरूवणा ण होदि त्ति सिद्धं ।

पुणो चक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागस्सुदीरणा सव्वघादि (पृ० १७१)
त्ति उत्ते एदस्सत्थं सव्वं घादेदि त्ति सव्वघादि त्ति रोण्हदव्वं । कथं ? तीडंदिद्यस्स तत्थतण-
सव्वसंकलिट्ठिणिव्रधणपञ्चएण परिणदस्स उदीरिज्जमाणचक्खुदंसणावरणेण णासिदचक्खुदसणा-
वरणखओवसमत्तादो सव्वघादि होदि त्ति । पुणो सण्णोसु किमट्ठमुक्कस्ससामित्तं ण दिण्णं ? ण,
एदस्स पंचिदिय-चउरिदिएसु खओवसमजादिवसेण च अणंतगुणहाणि सरूवेण अणुभागाणमुदया-
वलियाए पवेसुवलंभादो ।

पुणो सादासाद-आउचउक्क-सव्वणाम-[उच्च-]णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागउदीरणा
घादियाघादीणं पडिभागिया^१ इदि उत्तं । पृ० १७१.

१ मूलग्रन्थे त्वेवंविधोऽस्ति पाठः— सादासादाउचउक्कस्स सव्वणामपयडीणं उच्चाणीचागोदाणं
उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा अघादी सव्वघादिपडिभागो ।

(५८)

परिशिष्ट

तं कथं ? घादिकम्माणि दुविधाणि ह्येति देसघादि सव्वघादि त्ति । तत्थ लता-दारु-अट्टि-सेलसमाणफ्हयाणि सव्वणि वा लता-दारुसमाणस्सण्णतिमभागानि वा जेसिमत्थि तेसिं देस-घादि त्ति सण्णा । जेसिं दारुसमाणस्सण्णतिमभागप्पहुडि उवरिमफ्हयाणि अत्थि तेसिं सव्व-घादि त्ति सण्णा । एदाणं लतादिसव्वफ्हयाणि आदिवग्गणप्पहुडिसव्वफ्हयाणं आदि(अवि)-भागपलिच्छेदसंखाए पव्वुत्ते उत्तर(?)सदमेत्ताण अघादिपयडीणमादि(मवि)भागपलिच्छेदसंखा समाणा ह्येति, ण गुणणे त्ति उत्तं होदि । जहा तुलाए तोलिज्जमाणदव्वावसेसं व ।

(पृ० १७२)

पुणो पच्चयपरूवणाए तिविहपच्चया ह्येति परिणामपच्चया भवपच्चया तदुभयपच्चया चेदि । तत्थ चउत्ताणपयडीणं अणुभागुदीरणट्टाणाणं वडिठ-हाणीए केसिं केसिं चापुव्वपयडीण-मुदयस्सुपादणे उप्पणपयडीणं अणुभागुदीरणवडिठ-हाणीए केसिं पयडीणं अवट्टिदाणुभागु-दीरणए च कारणभूदाणि जादिकम्मोदयसव्वपेक्खाणि मिच्छत्तासंजम-कसायज्जाणदपरिणाम- (मा) सरागसंजमपरिणामा वीदरागपरिणामा च परिणामपच्चया णाम । एदेहि परिणामेहि जादि (जाओ) उदीरिज्जति ताओ परिणामपच्चइयाओ । ४४ ।। पुणो वावणपयडीणं अणुभागानं वडिठ-हाणीए कारणभूदसामणभवा णारय-तिरिय-मणुस-देवमवेमु णियमिदेग-दां वा भवा परिणामसव्वपेक्खा वा असव्वपेक्खा वा जाणि ताणि भवपच्चइयाणि ह्येति । पुणो वावण-पयडीणं कहिं कहिं अणुभागानं वडिठ-हाणिउदीरणए भवाणि चैव कारणाणि ह्येति, कहिं कहिं परिणामाणि कारणाणि जाणि ताणि तदुभयपच्चया । एदाणं सव्वभावं गंथस्सुवरि वत्तव्वं ।

(पृ० १७४)

पुणो द्वाणपरूवणदाए चउत्ताण-तिट्टाण-विट्टाण-एगट्टाणुदीरणपयडीणं संखा णव ह्येति । पुणो चउत्ताण-तिट्टाण-विट्टाणुदीरणपयडीणं संखा चउणउदी ह्येति । विट्टाणेगट्टाणुदीरणपयडीओ दस संखा ह्येति । विट्टाणुदीरणपयडीणं संखा चउतीसाणि ह्येति । एगा चउत्ताणिया । एदेसिमत्थो सुगमो । णवरि

चक्खुदंसण-अचक्खुदंसणाणमुदयो जस्स वि एक्कमक्खरमत्थि तस्स णियमा एगट्टाणिया उदीरणा । पृ० १७५.

त्ति उत्ते एदमत्थो— चक्खु-वचक्खुदंसणाणमुदएण खओवसमेण वा उवजोगो जस्स पमत्तापमत्तादीणं एगक्खरसंबंधियो जइ संपुणमत्थि तस्स जीवस्स एदेसिमुदीरणा एगट्टाणिया ह्येति, ण इदरेसु । कथमेदं णव्वदे ? ण, भवणवासियदेवाणं जहणणाप्पवहुगम्मि विट्टाणियसम्मत्ताणु-भागादो चक्खु-वचक्खुदंसणावरणाणुभागमणंतगुणा त्ति उत्तत्तादो ।

(पृ० १७६)

पुणो सामित्तं सुगमं ।

(पृ० १९१)

एगत्तीवकालपरूवणं पि सुगमं । णवरि जहणणाणुभागोदीरणकालपरूवणाए (पृ० १९४.) णिदा-पयलाणं जह० एगसमयो त्ति उत्तं । कथं ? एत्थुवसमसेडीए एदेसिमुदयो अत्थित्ता-भिप्पाएण उवसंतकसाए एगसमयमुदीरिय विदियसमए देवलायं गयस्स होदि त्ति । पुणो उक्करसंतोमुहुत्तं । कुदो ? परिणामपच्चइयाणमेदेसिं अवट्टिदपरिणामेणुवसंतकसाएणुद्विदत्तादो ।

पुणो थीणगिद्धितियाणं जहण्णेणेगं वा दो वा समया (पृ० १९४.) त्ति उत्तं ।
तं कथं ? एदाणि जहण्णाणुभागुदीरणपाओग्गविसोहीणं काले णिहावत्थाए एग-दोणिसमयं
होति त्ति ।

(पृ० १९९)

पुणो अंतरं पि सुगमं । णवरि मणुस्साणुपुव्वीए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं वासपुधत्तमिदि
उत्तं^१ (पृ० २००) । [तं] कथं ? तिपलिदोवमिणसु मणुस्सेसु दोवग्गहं कादूण उप्पज्जिय
दोसु समएसु उक्कस्समुदीर(रि)य तिसमयप्पहुडि अंतरिय पज्जत्तीओ समाणिय अवमिच्छु-
(च्छु)णा चुदो, पुणो वासपुधत्ताउग्गमणुस्सेसुपज्जिय कमेण तत्थाउक्खवण मदो तिपलिदो-
वमिणोसु विग्गहेणुववणो । लद्धमंतरं । जादत्तादो (?) । कथं भोगभूमीणं कदलाघादस्स
संभवो ? सच्चं संभवो णत्थि त्ति आइरिया परूवयंति । किंतु एदं केइमाइरियाणमभि-
प्पायंतरेण आउवघादपरिणामा संभवंति त्ति त ज्ञाणाविदं ।

पुणो अक्खवुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं [जह०] खुदाभवग्गहणं
समऊणे त्ति उत्तं (पृ० २००) ।

कुदो ? णिगोदेसुप्पणपढमसमए उक्कस्सुदीरणं जादे त्ति ।

पुणो उक्कस्संतरं असंखेज्जा लोगा । पृ० २००.

कुदो ? पुढविकायादिसु भव(म)नाणं ताणवधणपरिणामाभावादो, सुहुमणिगोदेसु तस्स
णिबंधणपरिणामाणं चेव बहुत्तुवलंभादो वा ।

(पृ० २०३, २०५, २०८, २१०.)

पुणो णाणाजीव[भंगविचय-] कालंतर-सणियासाणं परूवणा सुगमा ।
णवरि जहणसणियासे ओहिणाणावरणजहण्णाणुभागुदीरंतो मदि सुदणाणावरणणं
सिया जहण्णं वा अजहण्णं वा उदीरेदि । जदि अजहण्णं तो णियमा अणंतगुणं
उदीरयादि त्ति उत्तं । पृ० २१४.

एदस्सत्थो एवं वत्तव्वो— लद्धिअक्खरप्पहुडि जावेगक्खरसुदणा खओवसमं पावदि ताव
सुदणाणक्खओवसमो छवड्ढिकमेण द्विदो । तत्तो परमक्खरवड्ढाए खओवसमं गतूण सयलमुदणाण-
खओवसमपमाणं पावदि । पुणो तेसि मवंधिसुदणाणावरणसं अणुभागट्टाणउदीरणा वि कमेण
छव्विहहणाणाए एइंदियसमं(सं)ंधीसु गंतूण वेइंदियसमं(सं)ंधीसु एइंदिएहिता अणंतगुणेसु
खओवसमिणसु पडिबद्धअणुभागउदीरणस्मि एइंदियादो अणंतगुणहाणं हादूण छव्विहहणाणाए
वेइंदिएसु गच्छदि । एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्ण-सणियापंचिंदिएसु वि वत्तव्वं जावेगक्खर-
सुदणाणे त्ति । तत्तो परमणुभागुदीरणमणंतगुणहाणाए गंतूण जहण्णाणुभागुदीरणं जादे त्ति ।

(पृ० २१६)

पुणो अप्पाबहुगपरूवणस्मि किंचि अत्थं भणिस्सामो । तं जहा— तत्थ उक्कस्सप्पावहुगं
भणमाणे सव्वतिव्वाणुभागं सादावेदणीयस्स उदीरणा । पृ० २१६.

कुदो ? उवसामयसुहुमसांपराइएण जं बंधा(बद्धा)णुभागं तेत्तीससागरोवमाउगदेवेसु
भवपञ्चयेण उदीरिदत्तादो । कथं बहुत्तं णव्वदे ? जीवविवागित्तादो सजोगिपज्जवसाणबंध-

१ मूलग्रन्थपाठस्सव्वेवंधिधोऽस्ति— मणुसाणुपुव्वीए तिण्णि पलिदोवमणि सादिरियाणि । उक्कस्सं
तिण्णं पि एइंदियद्विदो । पृ० २००-२०१.

संभवेण विसिद्धत्तादो सुहृमुपाययसुहृपयडित्तादो च ।

पुणो जसगित्ति-उच्चगोदानं उक्क० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? उवसामगसुहुमसांपराइगेण वद्धसादानुभागादो खवगसुहुमसांपराइगेण वद्धजस-
गित्तिउच्चगोदानमणंतगुणहीणत्तादो तदो चैव जीवविवाइ सुहृपयडो होदूण गुणं पडुच्च
परिणामपञ्चयादिविसेसेण सजोगिम्मि उदीरिदे थोवं जादं ।

पुणो कम्मइयमणंतगुणहीणं । पृ० २१६.

कुदो ? अपुव्वखवगम्मि वद्धक्कसाणुभागपोगलविवाइकम्मइयस्स परिणामपञ्चएण
सजोगिम्मि उदीरिदत्तादो । पुणो एत्थ सूचिदपयडोणमणुमाणेणप्पावहुगं उक्कदे- कम्मइयबंधण-
संघादानं दाण्हं [२] पयडोणमुदीरणा कम्मइयेण समाणा भवति । पुणो सुभग-
सुमसरादेज्ज-तित्थयरामिदि चत्तारिपयडोणं [४] उदीरणा कम्मइयेण समाणं वा अधियं वा
होदि त्ति वत्तव्वं । पुणो अपुव्वखवगेण वद्धमाणात्तणेण जीवविवाइत्तणेण सुहृपयडित्तणेण
परिणामपञ्चयेण सजोगिम्मि उदीरिदत्तादो । विसेसं जाणिय वत्तव्वं । पुणो रत्त-पाद-सेद-सुगंध-
कसायांबल-महुग-णिहु(द्ध)ण्णअगुरुगलहुग-धिर-सुभ-णिमिणमिदि तेरसपयडोणं [१३] उदीरणा
पोगलविवाइत्तणेण सुहृपयडित्तणेण वद्धमाणागुणट्टाणाणमेयत्तणेण परिणामपञ्चयत्तणेण
कम्मइयेण समाणं वा हीणं वा होदि त्ति वत्तव्वं । सूचिदं गदं ।

पुणो तेजइग० अणंतगुणहीणं । पृ० २१६.

कुदो ? दो वि पोगलविवाइत्तादिकारणेहि समाणत्तो वि किंतु तेजइगादो कम्मइयमणंत-
गुणानुबंधेण सव्वकम्ममाणमावारत्तणेण च अधियं जादे त्ति वत्तव्वं । पुणो सूचिदपयडोयो
तव्वबंधण-संघा(घा,दा दो वि [२] तेजइगेण समाणाओ होति ।

पुणो आहारसरीर० अणंतगुणहीणं । पृ० २१६.

कुदो ? तेजइगाणुभागबंधादो उवसमसेठीए बंधा(बद्धा)णुभागमणंतगुणहीणं होदूण
पोगलविवाइ परिणामपञ्चएण समाणं होदूण पमत्तोणुदीरिदत्तादो थोवं जादं । पुणो सूचिद-
पयडोयो तव्वबंधण-संघादंगोवंगओ तिण्णपयडोणं [३] उदीरणा आहारसरीरपमाणओ समाणाओ
होति । पुणो वि समचउरसरीरसंघाग-महुग-लहुग-परघाद-पसत्थविहायगदि-पत्तेगसरीरमिदि
छपयडोणं [६] उवसमसेठाए बंधा(बद्धा)णुभागपोगलविवाइत्तणेण परिणामपञ्चएण पमत्तेण
आहारसरीरेण सह उदीरिदत्तादो आहारसरीरेण सरिसं वा हीण वा होदि त्ति जाणिय वत्तव्व ।
खवगसेठीए बंधा(बद्धा)णुभागं सजोगिम्मि उदीरज्जमाणं किं ण घेप्पदे ? ण, भवपञ्चइयाणमेदेसिं
तत्थुदीरणं थोवं होदि त्ति ण घेप्पदे । णवरि आहारसरीरेण सह पसत्थविहायगदी सरिसं
वा अहियं वा होदि त्ति वत्तव्वं । कुदो ? जीवविवाइत्तादो । सूचिदं गदं ।

पुणो वेगुव्वियसरीरमणंतगुणहीणं । पृ० २१६.

कुदो ? एदेण सूचिदवेगुव्वियबंधण-संघादंगोवंगमिदि तिण्णपयडोहिं [३] सह अप्पुव्वुव-
सामगेण बद्धाणुभागादो पसत्थगुणपयडिभेदेण अणंतगुणहीणेण तम्मि बंध(बद्ध)वेगुव्विय-
सरीरपोगलविवाइपरिणामपञ्चएण उदीरिदत्तादो भवपञ्चएण तेतीससागरोवमाउअदेवेण वे(?)
उदीरिदत्तादो वा । पुणो सूचिदुस्सास-तस-त्रादर-पज्जत्ताणमिदि चत्तारिपयडोणं [४] उदीरणा
वेउव्विएण बंधादिकारणेहिं सरिसत्ते संते वि एणंतभवपञ्चइयत्तादो समाणं वा हीणं वा

होदि त्ति वत्तव्वं । पुणो वि सूचिदउज्जोवणामाए० अणंतगुणहीणा । कुदो ? मिच्छाइट्ठिणा बद्धाणुभागं पमत्तसंजदेणुदीरिदत्तादो ।

मिच्छत्तस्स० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? वेगुठिवयसरीरबंधुक्कसाणुभागादो उक्कस्ससंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिणा बद्धुक्कस्स-मिच्छत्ताणुभागस्स अणंतगुणहीणत्तादो सव्वदव्वपडिबद्धस्स असुहपयडिस्स परिणामपञ्चणुदीरिदे वि थोवं चैव जादं ।

पुणो केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-असादवेदणीयाणं उदीरणा अणंतगुण-हीणा । पृ० २१६.

कुदो ? उक्कस्ससंकिलिट्ठादिकारणेहि मिच्छत्तेण समाणाणि होदूण मिच्छत्ताणुभागबंधादो एदेसिं तिण्हं पि बंधा(बद्धा)णुभागाणंतगुणहीणं होदूण ट्ठिदउदीरिदत्तादो । मिच्छत्तेण जहाणंत-संसारं होदि तथा एदेहितो अणंतसंसारं ण होदि त्ति अप्पसत्तिजुत्तो त्ति जाणिज्जे च ।

पुणो अणंताणुबंधीणमण्णदरुदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? जीवलक्खणगाणपडिवंधयादो अप्पाणम्मि णिवंध(णिवद्ध)चरित्तपरिणामपडि-बद्धयस्स थोवत्तं णाइत्तादो ।

पुणो संजलणेसु अण्णदरुदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? सम्मत्त-देस-सयलवओवसमचारित्तपडिवंधयादो तम्मिमणुप्पाइय उवसम-खइयचारित्तपडिवद्ध(बंध)यस्स थोवत्तं णायसिद्धत्तादो ।

पुणो पञ्चक्खाणावरणेसु अण्णदरुदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? अप्पसत्थपयडिविसेसेण अप्पाणुभागबंधत्तादो स्वओवसमचारित्तपडिवद्ध बंध)-यत्तादो च अप्पसत्थविहायं जादमिति ।

पुणो अपञ्चक्खाणावरणेसु वि अण्णदरुदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? स्वओवसमचारित्तावरणादो देसचारित्तावरणस्स थोवत्तं णयादो ।

पुणो मदिणाणावरणस्स अणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? पवि्वल्लपयाडिस्स उत्तसामग्गोहि सह पत्थ वि बधंतो वि तेहितो अणंत-गुणहीणा अणुभागा बंधा(बद्धा) । तदो सव्वदव्वपज्जयाण देसघादिपडिवद्धमणुभागमुदीरयंतो वि थोव जाद ।

पुणो सुदणाणावरणीयस्स अणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१६.

कुदो ? मदिपुव्वं सुदणाणुप्पत्तीदो, दोण्हं समाणसंखे जादे वि कारणजादमाहप्पेण मदिणाणमर्धयं इदरमणं जादं । तदो तेसिमावरणाणं पि तदणुसारीयो हंति त्ति ।

पुणो ओहिणाणावरण-ओहिदंमणावरण० अणु० उदी० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? सुदणाणावरणाणुभागबंधादो अणंतगुणहीणाणुभागबंधत्तादो सेसासेससव्व-पयारेण दो वि समाणे संते वि रूविदव्वपडिवद्धत्तणेण च अणंतगुणहीणं जादे त्ति वा वत्तव्वं ।

पुणो मणपज्जवणा० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? एदं पि रूविदव्वविसयं चैव, किंतु एदं तत्तो अप्पविसयत्तं आगमेण सिद्धो त्ति अणुभागुदीरणं पि तदणुसारी होदि त्ति ।

पुणो णउंसयवेदस्म अणु० उदी० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? णाणसत्तिपञ्चा(च्छा)दयअणुभागादो चारित्तस्स पच्छादयमाणुभागस्स थोवत्तं णायगदत्तादो । एत्थ सूचिदपयडीण काल-णील-दुगंध-तित्त-कडुग-सीद-लुक्ख-उवघाद-अथिरासुभाणमिदि दसपयडीणं । १० । परिणामपञ्चणुदीरिज्जमाणामेदेसिं णउंसयुदीरणाए समाणुदीरण ठारणे संते वि पोग्गलविवाइत्तणेण अप्पं जादमिदि वत्तव्वं । पुणो हुंडसंठाण० अणु० उदी० अणंतगुणहीणं होदि । एदमेगं १ । पोग्गलविवाइ-भवपञ्चयित्तादो । सूचिदं गदं ।

पुणो थीणगिद्धिउदीरणमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? इट्ठावागगिसमाणसंतावमुप्पाययणउंसयवेदाणुभागादो दंसणखओवसमं मोत्तूण दंसणोवजोगं थोवकालं पच्छादयंतस्स उदयावाल्यमणंतगुणहीणेण पविस्समाणस्स अणुभागु-दीरणस्स बंध-संतेहि वि थोवं जादं ।

पुणो अरदि० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? थीणगिद्धिअणुभागादो दंसणोवजोगं विणासिय अवत्तव्वजीवगुणमविणासयादो अणंतगुणहीणुभागस्स चारित्तपरिणामम्मि अरदिं उप्पादयअरदिअणुभागस्स थोवत्तं णायसिद्धत्तादो ।

पुणो सोगस्स अणु० उदी० अणंतगुणही० । पृ० २१७.

कुदो ? चारित्तविसणसु इंदियविसणसु अरदिउप्पाययअरदिअणुभागादो इट्टजणविगमेण इट्टविसयविगमेण च अरदिपुव्वं सोगमुप्पाययसोगाणुभागं थोवत्तादो ।

पुणो भयं० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? दो वि पगावत्तणोदण समणित्ते संते सोगाणुभागुदीरणकालादो भयाणुभागुदीरण-कालमसंखज्जगणहणं जादे तम्मंबंधी संते वि अणंतगुणहीणं होदि त्ति णव्वदे ।

पुणो दुगुंछाए उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? भयादो उप्पज्जमाणदुक्खादो दुगुंछाए उप्पज्जमाण(णं) किलच्छापुव्वं व दुक्खमप्पमिदि पयडिविसेसेण थोवं जादं ।

पुणो णिहाणिहाए० उदीरणाणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? दुक्खुप्पाययादो दुगुंछाणुभागादो दुक्खभावेण दंसणोवजोगमपं पच्छादयंतस्स अणुभागम्म थोवत्तणायमिद्धत्तादो ।

पुणो पयलापयलाए० अणंतगुणहीणं । पुणो णिहाए० अणंतगुणहीणा । पुणो पयलाए० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

एदाणि तिण्ण वि अप्पावहुगपदाणि सुगमाणि पयडिविसेसावेक्खाए थोवथोवाणि जादाणि त्ति ।

पुणो अजमगित्ति-णीचागोदाणं० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? दंसणोवजोगपच्छादण(य)पचलादो उवजोगपुव्वमाणोदण परिणदजीवस्स अजसार्गित्ति-णीचागोदाणु भागं दुक्खमुप्पादयत्तादो थोवं जादं । एत्थ सूचिदप्पसत्थविहायगदि-दभग-दुस्सर-अणादेज्जमिदि चत्तारिपयडीणं । ४ । उदीरणाए पुव्वुत्तदीण्हं पयडीणमुदीरणाए पयंतरभवपञ्चयादिकारणसामग्गीए समाणं वा हीणं वा होदि त्ति वत्तव्वं, एगदरस्स णिण्णय-कणोवायाभावादो ।

पुणो णिरयगदीए० उदीरया अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? अजसगित्तिणीचागोदाणुभागबंधादो अणंतगुणहीणस्सेदस्स बंधस्स णिरयमेत्त-
कजस्स अप्पत्तसिद्धीए ।

देवगदीए० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कथं कम्मइयाणुभागबंधादो अणंतगुणाणुभागबंधदेवगदिउदीरणं णिरयगदीदो अणंत-
गुणहीणं जादं ? ण, भवपच्चइयेण दो वि सामणो संते संकिलेस-मज्झिमपरिणामेणुदीरणकय-
विसेसत्तादो ।

पुणो रदीए० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? पंचाणुत्तर सदरसहम्सारदेवेसु कमेण सागित्तसंभवादो सुभपयडीणमणुभागादो
असुहपयडीणमणुभागस्स थोवत्तं णायगदत्तादो ।

हस्सस्स उक्क० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? देसघादि-अघादिपयडीणं परिणामपच्चइय-भवपच्चइयाणं कयपयडिविसेसत्तादो ।

१ णिरयाउगस्सुदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? सुहासुहपयडिविसेसादो मिच्छादिट्ठिणा बद्धाणुभागत्तादो वा अप्पं जादं ।

पुणो मणुसगदीए उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कथं बंधेण णिरयगदिअणुभागादो अणंतगुणभूदकेवलणाणावरणभागादो अणंतगुणस्स
मणुसगदिउदीरणा अणंतगुणहीणं जादं ? ण, भवपच्चइएण जादिवसेण विट्ठाणाणुभागुदीरणं
जादत्तादो ।

पुणो एत्थ सूच्चिदपंचिदिय-वज्जरिस्सहमंघडणाणं दोण्हं पयडीणं । २ । उदीरणा मणुसगदि-
उदीरणाए समाणं वा हीण वा होदि त्ति वत्तव्वं, भवपच्चयादिसमाणकारणोवलंभादो ।

ओराणियमरीर० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कथं मणुसगदिअणुभागबंधादो अणंतगुणहीणबंधाणुभागस्सेदम्म अदीव थोवत्तं ?
जादिवसेण सुभतरपयडिविसेसेण विट्ठाणियउदीरणाजादत्तादो । एत्थ सूच्चिदत्तव्वंधण-संघादगो-
वंगमिदि तिण्हं पयडीणं । ३ । उदीरणा सगिसादा सरिसा त्ति वत्तव्वं ।

मणुस्साउगं अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? सम्मादिट्ठिओराणियमरीरणुभागादो मिच्छादिट्ठिणा बद्धमणुस्साउगमणंतगुण-
हीणं होदि त्ति ।

तिरिक्खाउग० उदीरणमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? सुभतर-सुभपयडिविसेसादो ।

पुणो इत्थिवेदस्स० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? अप्पसत्थत्तादो कम्मभूमियातिरिक्खेसु भवपच्चइएण उदीरिदत्तादो ।

पुरिसवेदस्स० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? तत्तो एदस्स अदीव अप्पसत्तिजुत्ताणुभागत्तादो ।

१ मूलग्रन्थेऽतः प्राक् 'देवाउ० अणं० गु० हीणा' इत्येतदधिकं वाक्यं समुपलभ्यते ।

पुणो तिरिक्खगदीए० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? समाणसामित्ते संते वि देसघादि-अघादिपयडिविसेसणादो । पुणो एत्थ सूचिद-
कक्क(क्ख ड-गरुवाण दण्हं |२| पयडीणमुदीरणा अणंतगुणहीणा । कुदो ? एयंतभवपञ्चइयत्तादो ।
पुणो वि सूचिदमज्झिमचउसंठाण-पंचंतिमसंहडणाणमिदि |९| णवपयडीणं उदीरणा तत्तो समाणं
वा हीणं वा हांदि त्ति वत्तव्वं, भवपच्चइयादिकारणेहि समात्तादो । पुणो कमेण णिरय-देव-
मणुस-तिरिक्खाणुपुव्वी इदि चत्तारि |४| वि अणंतगुणहीणाणि हांति त्ति वत्तव्वाण । तत्तो चउ-
रिंदियजादी |१| अणंतगुणहीणं जादिवसेण हांदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो चक्खुदंसण० उदीरणमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो सुदणाणावरणबंधाणुभागादो अणंतगुणभूदचक्खुदंसणस्स बंधाणुभागं तिरिक्ख-
गदीदो अणंतगुणहीणं जादं ? ण, चक्खुदंसणावरणखओवसमजुत्तजीवस्स तक्खयवोवसममाह-
प्पेण उदयावल्लियं पविस्समाणाणुभागं अग्गीए दाविदपिंछोक्ख(पिंडो व्व)अदीव ओहट्टिदि त्ति
तं थोवं जादं जइ वि तक्खयवोवसमविरह्दितीइंदिण उदीरिदअणुभागमुक्कस्स जादं तो वि
तं थोवं जादिवसेण जादं । पुणो सूचिदपयडि तीइंदियकम्म चक्खुदंसणेण सरिसं । तत्तो
वेइंदियमणंतगुणहीणं । तत्तो आदावमणंतगुणहीणं । तत्तो एइंदिया(य-)थावराणि सरिसाणि अणंत-
गुणाणि । तत्तो कमेण सुहुम-साहारण-अपज्जत्ता च हीणाओ हांति त्ति वत्तव्वं । एवं एत्थ अट्ट
पयडीयो हांति |८| ।

पुणो सम्मामिच्छत्तुक्क० उदी० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? मिच्छत्तजहण्णाणुभागादो चक्खुदंसणावरणमणंतगुणमुदीरेदि, सम्मामिच्छत्तं
पुण तत्तो अणंतगुणहीणं सब्बघाट्टु(सब्बदा उ-)दीरेदि त्ति ।

पुणो दाणंतराइय० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? खओवसमपयडीणं जम्मि जादिम्मि खओवसमो वड्ढुदि तम्मि जादिम्मि अणुभागो
वड्ढदि । णवरि मदि-सुदावरणं मोत्तूण तदो एइंदिएसु उक्कसाणुभागमुदीरंतो वि देसघादिबिट्टा-
णियाणुभागं चैव जादत्तादो ।

पुणो लाभांतराइयमणंतगुणहीणं । भोगांतराइयमणंतगुणहीणं । परिभोगांतराइय-
मणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? दाण-लाभ-भोग-परिभोगाणं माहप्पाणि विचारिज्जमाणे संसारिजीवेषु कमेण
थोव-थोवमाहप्पदंसणादो । तदो तदणुसारिपयडी वि हांति त्ति वत्तव्वं ।

पुणो अचक्खुदंसणस्स० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? परिभोगांतराइय-अचक्खुदंसणावरणाणि दो वि सुहुमेइंदिएसुप्पणपढमसमए
लद्धियक्खवरं जादं तो वि पयडिविसेसेणप्पं जाद ।

पुणो वीरियांतराइयमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? पयडिविसेसेण थोवं जादं । अहवा दंसणं जीवस्स लक्खणभूदं, वीरियस्स तद-
भावादो अप्पं जादं । तदो तदणुसारि तेसिं... धि कम्मं पि होदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो वेदगसम्मत्तमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? देसघादिप्फहयाणं सम्मादिट्ठीहिं उदीरिदत्तादो ।

पुणो णिरयगदीए एक्कवंचासपयडीणं उत्तप्पावहुगेण सूचिदेक्कत्तोसपयडीणं, पुणो तिरिक्ख-
गदीए एगुणसट्ठिपयडीणं उत्तप्पावहुगेण सूचिदपचहत्तरिपयडीणं, पुणो मणुसगदीसु सट्ठिपयडीणं
उत्तप्पावहुगेण सूचिदसत्तसट्ठिपयडीणं, देवगदीसुत्तचउवण्णपयडीणमप्पावहुगेण सूचिदवत्तीस-
प्पावहुगेण च परिणाम-भवपच्चइयादिकारणेहि जासिं जम्मि जम्मि पयडीए संबंधमत्थि तम्मि
तम्मि तेसिं तेसिं पवेसिय वत्तव्वाओं । णवरि भगदीसु सुभपयडीणं अणुभागाणं वड्डीए
कारणं असुभपयडीणं(णं) ओवट्ट(ट्ट)णाए च कारणं, पुणो असुभगदीसु एदेसिं विवजासाणं च
कारणं, आधिणाण-ओधिदंसणावरणाणं खओवसमसहगदगदीसु ओवट्टणमिदरगदीसु वड्डीए च
कारणं जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० २२६)

पुणो जहण्णाणुभागउदीरणप्पावहुगम्मि लोभसंजलणप्पहुडि जाव णउंसगवेदत्तावेग(वेदं
तावेग) ट्ठाणियाणं, मणपज्जवणाणावरणप्पहुडिद्विट्ठाणियाणं जाव मिच्छत्ता त्ति ताव कारणं
सुगमं ।

तत्तो ओरालिय० अणंतगुणं । पृ० २२७.

कुदो ? सुहत्तादो ।

वेगुव्विय० अणंतगुणा । पृ० २२७.

कुदो ? तत्तो वेगुव्वियं होदूण ट्ठिदो वि सुहयरत्तादो अणंतगुणं जादं । एवं उवरि वि
णेदव्वं जाव तिरिक्खगदीदो णिरयगदि अणंतगुणं जादं त्ति ।

एत्थ तिरिक्खगदीदो णिरयगदिसंतमणंतगुणं चेव कारणं तो वि भवपच्चइयसंबंधिअंत-
रंगकारणसण्णिहाणधलेण तहाभावविरोहादो । तदो उवरि देवगदि त्ति वत्तव्वं, सुगमकारण-
त्तादो । णवरि पुव्वुत्तप्पावहुगेसु गुणट्ठाणाणमघादि-घादिकम्माणं परिणामपच्चयाणं सुहासुहपयडीणं
च गयविसेसेण जाणिय वत्तव्वं ।

तदो णीचागोदानं अजसगित्तीए च अणंतगुणा । पृ० २२७.

कुदो ? संतबहुत्तादो ।

पुणो असादमणंतगुणं । पृ० २२७.

कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो ।

पुणो उच्चागोदमणंतगुणं । पृ० २२७.

कुदो ? जदि वि संतं थोवं तो वि असादमेइंदियादिसु मव्वत्थमुदीरेदि, उच्चागोदानं पुण
पंचिदिणसु चेव उदीरेदि त्ति अणंतगुणं जादं ।

पुणो जसगित्ति० अणंतगुणं । पृ० २२७.

कुदो ? सत्ता(संता)णुसारित्तणेण जादं ।

पुणो सादमणंतगुणं । पृ० २२७.

कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो ।

पुणो णिरयाउगमणंतगुणं । देवाउगमणंतगुणं । पृ० २२७.

कुदो ? संतबहुत्तावेक्खत्तादो । एवमोघपरूवणा गद्दा ।

तदो अणंतरमादेसपरूवणं गदीसु ओंधं चेव अणुमाणिय वत्तव्वं ।

पुणो भुजगारपरुवणा सुगमा । पृ० २३१.

पुणो वि अप्पावहुगम्मि (पृ० २३६) किंचि अत्थं भाणस्सामो । तं जहा—

आर्भाणवोहिय० अवट्टिदउदीरया थोवा । पृ० २३६.

कुदो ? एवं वेदगसव्वजीवरासिस्सासंखेज्जलोगमेत्तपडिभागियत्तादो । तं कुदो ? अणु-
दीरणकालभजिदवेदगगसिस्स अवट्टिदउदीरणकालगुणिदमेत्तत्तादो ।

अप्पदरउदी० असंखेजगुणा । पृ० २३६.

कुदो ? विसोहिअट्टाप ट्टिदक्किचूणदुभागमेत्तसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ।

पुणो भुजगारुदीरणा विसेसाहिया । पृ० २३६.

कुदो ? संकिलेसाए संचिदूणट्टिदजीवरासिस्स सादिरेयदुभागपमाणत्तादो । केत्तियमेत्तेण
सादिरेयं ? संखेज्जभागमेत्तेण । तेसि ट्टवणा १३५ ।

एवं सुदण्णाणावरणादिसत्तपयडीणं ९ वत्तव्वं । पृ० २३६.

तदो दंमणावरणीयं-सादासाद-

मवट्टिदउदीरया । पृ० २३६.

सुगममेदं ।

१३५
९
१३४
९
१३७
३
२

सोलसकसाय-अट्टणोक्सायाणं सव्वत्थोव-

अवत्तव्वउदी० असंखेजगुणा । पृ० २३६.

कुदो ? अंतोमुहुत्तपडिभागियत्तादो । तदो उवरिमदोपा(प)दाणि (पृ० २३६) सुगमाणि ।

पुणो उवरि उच्चमाणपयडीणं अप्पावहुगाणि सुगमाणि ।

पुणो पदणिक्खेवाणं परुवणा सुगमा (पृ० २३७) । णवरि जहणवट्टिमामित्ते (पृ० २४४)

वेगुव्वियजहण्णःपुभागुदीरणवट्टी कस्स ? वादरवाउजीवस्स बहुसमयं उत्तरं विगु-
व्विदस्से त्ति (पृ० २४८) उत्तं ।

किमट्टं दुसमउत्तरविगुव्विदस्स ण दिज्जेदे, जहणवट्टि तम्मि चेव दिस्समाणत्तादो ?
सच्चमेवं होदि, किंतु बहुसमयं विगुव्वियस्स मंदपरिणामत्तादो पत्थतणदुसमयवट्टिं घेत्तव्वं ति
उत्तत्तादो । एवं अणुभागुदीरणा गदा ।

पुणो एदस्सु(पदेसु)दीरणाए (पृ० २५३) मूलपयडिउदीरणपरुवणा सुगमा ।

(पृ० २५३)

उत्तरपयडिउदीरणाए उक्कस्ससामित्तं परुविदसुत्ते पंचणाणावरण-छदंसणावरण-सम्मत्त-
चउसंजलण-तिण्णवेद - मणुसगदि पंचिदियजादि - ओगालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-तव्वधण-संघाद-
छस्संठाणाणं ओरालियंगोवंग-वज्जिरसहादिदिण्णसंघडण-गंचवण्ण-दोगंध-पंचरस-अट्टफास-अगुरुग-
लहुगचउक्क-दोविहायगदि-तस-वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग- सुस्सर-दुस्सर-
आदेज्ज-जसगित्ति-र्णामिण-तित्थयर-अच्चागोद-पंचंतराइयाणं उक्कस्सुदीरणदव्वं असंखेज्जसमय-
पवद्धपमाणमिदि घेत्तव्वं । सेसाणं पयडीणमसंखेज्जलोगतपडिभागियं उदीरणदव्वमिदि वत्तव्वं ।
एवं उदीरिदव्वं चेव पहाणभावेण भणिदमण्णहा ओहिणाणं ओहिदंसणावरणं व उदयगोउच्छ-
सहिदुदीरणदव्वग्गहणं पावदि । तं कथं ? एदस्सि दण्हसुक्कस्सुदीरणमाहिलाभे ण होदि त्ति
उत्तं । तस्स कारणं भणिदं ।

१ मूलग्रन्थे 'णवरि विणा ओहिलंभेण' इति पाठोऽस्ति ।

पमत्तापमत्तद्वासु ओहिणाणसहेदु(जु)कस्सविसोहीहि ओकडिय सुहुमीकय[उदय]-
गोउच्छत्तादो इदि । पृ० २५३.

एदस्सथो— ओकडिददव्वं परिणामयत्तं (यं, तं) पहाणं ण कदं, संतगोउच्छं चेव पहाणं
कदं । एवं संते सव्वेसिं कम्माणं आउचउक्कमादउज्जोववज्जाणं सेसाणमसंखेजसमयपवद्धुदीरणं
पावेदि । कुदो ? अप्पसत्थमरणेण सव्वेसिं कम्माणं गुणसेट्ठिउदयदंसणादो ।

(पृ० २६०)

पुणो भुजगारपरूवणा सुगमा । णवरि अप्पाबहुगम्मि किंचियत्थं भणिस्सामो । तं जहा—
मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा इदि उत्तं । पृ० २६१.

तं कथं ? असंखेजलोगपरिणामपडिभागियत्तादो । कथं तिण्णमद्धानं समासपडिभागिय-
मिदि ण घेप्पदे ? ण, तथा घेप्पमाणे सादादिपरावत्तोदये पयडोणं पुरदो भण्णमाणप्पाबहुगाणं
विघडणादो ।

भुजगारुदीरया असंखेजगुणा । पृ० २६१.

कुदो ? मदिआवरणवेदगसव्वरासिस्स किंचूणदुभामेत्तादो । तं पि कुदो ? विसोधिअद्धा
वि संचिदत्तादो ।

पुणो अप्पदरउदीरया विसेसाहिया । पृ० २६१.

कुदो ? एदस्स पाओग्गसव्वजीवरासिस्स सादिरेयदुभागत्तादो । एदं पि संकिलेसद्धा-
संचिदमिदि घेत्तव्वं । तेसि द्ढवणा । १३ ≡ २५ ।।

पुणो पचण्हं दंसणा-	≡ 2 ९	वरणाणं एवं चेव वत्तव्वं । णवरि अवट्ठिद-
उदीरया थोवा । अवत्तव्व-	१३ ४	उदीरया असं०गुणा । पृ० २६१.
उवरि दो पदाणि पुव्वं व	≡ २५	व १२७ १३ १३४ १३५
	≡ १३७	५ ≡ २ २७ ५९ ५९
	≡ २	

एदं गथे उत्तं ।

अथवा अवत्तव्वउदीरया थोवा । अवट्ठिदउदीरया असंखेजगुणा । कुदो ? अवट्ठिद-भुज-
गारप्पदरअद्धाभो कमेण सत्तसमय(या) आवलियाए असंखेजदिभागो । तत्तो संखेजभागुत्तरा ओध-
(द-)रिय पुव्वं व पुह पुह पंचणिहोदयजावरासिपमाणम्मि आणिय तिर्विहरासिं द्ढविय पुणो सग-
सगसव्वद्धाहि पुह पुह पचणिदुदीरणरासिओवट्ठिदे अवत्तव्वउदीरया होति, ते पुव्विल्लगामीणं
पुह पुह हेट्ठा द्ढविय जाड्ढे तहोवलंभादो । ते चेदे १२२५ । कथमेत्थ अवट्ठिदउदीरयाणं मग्गण्हं
असंखेजलोगपडिभागो ण लद्धो ? ण, णिहोदण ७२९ परवसीभदणं मंदपरिमाणं तारिस-
णियमस्सेदेसिं कम्माणमभावादो ।

पुणो सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा अवट्ठिद-
कुदो ? असंखेजलोगपडिभागियत्तप्पा-
दिट्ठिरासिम्मि उवलभादो ।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखेजगुणा
कुदो ? सगुवक्कमणकालेणोवट्ठि(ट्ठि)द-
उवरिमदोपदाणि पुव्वं व । णवरि भुजगारपदमुवरि कादव्वं । कुदो ? सम्मादिट्ठोसु

१२२५
७२९
१३२४
७२९
१३७
७
७२९
१३
७२७

संकिलेसद्वादो विसोहिअद्वाए विसेसाहियत्तुवलंभादो । तेसिं संदिद्धीप, 24 ।

पुणो सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा ।
असंखेज्जगुणा । पृ० २६२.

सुगममेदं ।

पुणो भुजगारउदी० अप्पदरउदी० तुल्ला असंखेज्ज-
कुदो सरिसत्तं ? मिच्छत्त-सम्मत्तपरिणामाणं मज्झे द्विद-
स्सेदम्सुवलंभादो, तदो तस्य द्विददोण्हं किरियापरिणदजीवाणं

(पृ० २६०)

पुणो सादासाद-मोलसकसायादिपरूविदंगत्तरियपयडीणमवट्ठिदउदीरया थोवा ।

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तंतरकालस्स भागहारत्तुवलंभादो ।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखे०गुणा । पृ० २६३.

कुदो ? सग-सगपाओगंनोमुहुत्तावळियाए असंखेज्जदिभागमेत्तं वा उवक्कमणकालपडि-
भागियत्तादो ।

उवरिमदोपदाणि (पृ० २६३) सुगमाणि । कथं परावत्तोदयपयडीणं अवट्ठिदपमाण-
संखेज्जलोगमेत्तंतरं संभवो ? ण, परावत्तोदयाणं उदयाणुदयसरूवट्ठिदाणमवट्ठिदपदाणं
चेवंतरविक्कवादो ।

पुणो मिच्छत्तादिपरूविदट्टपयडीणं णामस्स धुवांदयवारसपयडीणं (पृ० २६३)
अप्पाबहुगाणि सुगमाणि ।

पुणो चउण्णमाउगाणमवट्ठिदा० थोवा । अवत्तव्वउदी० असंखेज्जगुणा । अप्प-
दरउदी० असंखे०गुणा । भुजगारउदी० विसेसाहिया । पृ० २६३.

एदेसिमत्थो सुगमो ।

केण कारणेण आउगाणं भुजगार० बहुवा ? पृ० २६३.

एदिस्से पुच्छाए अत्थो उच्चदे— मिच्छाईट्ठिमि उदीरिज्जमाणसव्वकम्माणमाउगवज्जाणं
भुजगारुदीरगादो अप्पदरुदीरगा विसेसाहिया जादा । आउगाणं पुण अप्पदरादो भुजगारा बहुवा
केण कारणेण जादा इदि पुच्छदं होदि । पुणो तस्स उत्तरमाह—

जे असादा अपज्जत्ता ते अमादोदएण बहुवयरवदे त्ति (बहुवयरा वड्ढंति) । जे
साद(सादा) अप[ज्ज]त्ता ते बहुवयरा सादोदएण परिहायंति, थोवयरा वड्ढंति त्ति ।

एदस्सत्थो उच्चदे— जे जीवा असादा असादसंकिलेसपरिणदा अपज्जत्ता(त्ता) पज्जत्तीहिं
असंपुण्णा होदूण द्विदा मज्झिमसंकिलेसपरिणदा ते जीवा असादोदएण दुक्खाणुभवणरूवेण द्विदा
बहुवयरा बहुजीवा वड्ढंति आउगास्स भुजगारं कुव्वंति । पुणो एदेण उवरिमसादोदयपरूवणम्मि
थावा वड्ढंति त्ति उच्चयगेण सूचिदत्थो उच्चदे— थोवा जीवा विसोहिपरिणदा असादोदय-
मज्झिमविसोहिपरिणद(दा) अपज्जत्ता च अप्पदरं कुव्वंति त्ति । पुणो जे जीवा साद(दा)
विसोहिपरिणाममज्झिमविसोहिपरिणद(दा) अपज्जत्ता च ते जीवा बहुयरा बहुधा(वा) जीवा
सादोदएण सुहाणुभवणरूवेण द्विदा परिहायंति— अप्पदरं कुव्वंति, थोवयरा वड्ढंति— थोवा
जीवा संकिलेसपरिणद(दा) अपज्जत्ता च भुजगारं कुव्वंति त्ति भणिदं होदि ।

प. 24	अवत्तव्वउदीरया गुणा । पृ० २६२. परिणामाणं परिणाम- सरिसत्तुवलंभादो ।
228	
प 28	
३३ १९	
प.	गुणा । पृ० २६२.
३३९	
प. ३	परिणामाणं परिणाम- सरिसत्तुवलंभादो ।
३२३	

एदस्स भावत्थो— असादोदयम्मि विसोहिअद्धादो संकिलेसद्धा सादिरेया, सादोदयम्मि विसोधिअद्धादो संकिलेसद्धा विसेसहीणा । चरिमावलिग्याए आउवउदीरणा णत्थि त्ति संकिलेस-भागाउवउदीरया होंति, तेसि पि संखेज्जा भागा असादोदइल्ला होंति, संखेज्जदिभागो सादोदइल्ला होंति । अपज्जत्तद्धादो संखेज्जगुणाओ पज्जत्तद्धाओ होंति । अपज्जत्तगहणं मज्झिमविसोहि-संकिलेसाणं च गहणट्ठं उवलक्खणं भणिद । पुणो तत्थ तिरिक्खाउगस्स उत्तचउन्विहरासिपंतीणं संदिट्ठी एसो(सा)—

१३८७५ ९७७९ म	१३८७५ म ७७५	१३८७५ अ ९७७९	१३८५ अ ९७७९	१३८७५ ९७९
१३८७४ ९७७९ अ	१३८७४ अ ९७७९	१३८७४ म ९७७९	१३८४ म ९७७९	१३८७४ ९७९
१३८७७ ९७७२७	१३८७ ९७७२७	१३८७ ९७७२७	१३८ ९७७२७	१३८ ९२७
१३८७७ ९७७३२	१३८७ ९७७३२	१३८७ ९७७३२	१३८ ९७७३२	१३८ ९३२

एदेण कारणेण आउवाणं अप्पदरउदीरगादो भुजगारा बहुवा जादा । एवं सेसतिण्णमाउगाणं संदिट्ठी वत्तव्वं(व्वा) ।

पुणो चउण्णमाणुपुव्वीणं अबट्ठिदउदी० थोवा । पृ० २६३.

कुदो ? दोसमयसंचिदरासिस्स तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवो वा असंखेज्जलोगो वा भाग-हारोवलभादो ।

भुजगार० असंखेज्जगुणा । पृ० २६३.

कुदो ? दोसमयसंचिदरासिस्स किंचूणदुभागत्तादो ।

अवत्तव्व० विसेसाहिया । पृ० २६३.

कुदो ? एगसम-[य] संचिदरासिपमाणत्तादो ।

अप्पदर० विसेसाहिया । पृ० २६३.

कुदो ? दुसमयसंचिदरासिस्स सादिरेयदुभागत्तादो ।

एत्थ चोदगो भणिद— एदमप्पावहुगं तिरिक्खाणुपुव्वीए चेव घडदे, ण सेसाणं । कुदो ? पुव्वुत्तप्पावहुगं तिविग्गहेण विणा ण घडदि त्ति ? ण, तिण्णं विग्गहाणं सव्वेसिमाणुपुव्वीणं अत्थित्ताभिप्पाण उत्तत्तादो । अण्णहा सेसं(सेस-) तिण्णमाणुपुव्वीणं अवत्तव्वउदीरया अप्पदर-उदीरयाणं उवरि विसेसाहियं होज्ज । पुणो आदेज्ज-जसगित्ति-तत्थयराणं च परूवणा सुगमा ।
(पृ० २६४)

पुणो पदणिक्खेवस्स परूवणा सुगमा । णवरि अप्पावहुगम्मि (पृ० २७१) किंचि अत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

मदिआवरणस्स उक्कस्सहाणि(णी)अवट्ठाणं दो वि सरिसाणि थोवाणि । पृ० २७१.

कुदो ? उवसंतकसाण्ण उदीरिददव्वम्मि पुणो देवेसुप्पण्णदेवेसुदीरिदत्थतणदव्वे अबणिदे सेसमुदीरणविरहियदव्वं हाणी अवट्ठाणं च होदि । तं चेदं

स ३२१२३
७४ ओ २२

 ।
उक्कस्सिया वड्डी असंखेज्जगुणा । पृ० २७१.

१ मप्रतित्तः संशोधितोऽयं पाठोऽस्ति । तत्संशोधनात् प्राक् स एवंविध आसीत्— दोसमयसंचिद-रासिस्स किंचूणदुभागत्तादो । तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवो ओ वा..... ।

कुदो ? समयाहियावलयखीणकसाएणुदीरिदकिंचूणदव्वगहणादो । एवं सुदणाणावरणादिपरुविदे उणासीदिपयडीणं [७९] सग-सगपाओग्गदव्व- पडिबद्धपावहुगं वत्तव्वं ।

पुणो असादस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्टाणं च दो वि सरिसाणि थोवाणि ।

कुदो ? सत्थाणपमत्तसजदेणुक्कस्सविसोहीण(हिणा) उदीरिददव्वं किंचूणीकदउदीरण- विरहिददव्वपमाणत्तादो । तं चेदं [स ३२१२४२
७५ ओ २३२२] ।

उक्कस्सिया वड्डी असंखेज्जगुणा । पृ० २७१.

कुदो ? अप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तेणुदीरिदकिंचूणमेत्तवड्डीदव्वगहणादो । [स ३२१२४२] ।
[७५ ओ २३२२] ।

पुणो दंसणावरणपंचयस्स उक्कस्सिया वड्डी थोवा । पृ० २७१.

कुदो ? सट्टाणट्टिदपमत्तसजदेण विसोहीहि उदीरिदेत्तिय [स ३२१२
७ ख ९२ २३२२] मेत्तदव्व- गहणादो ।

पुणो हाणी अवट्टाणं च दो व तुल्लाणि विसेसाहियाणि । पृ० २७१.

कुदो ? तप्पाओग्गुक्कस्ससंकिलेसेणुदीरिददव्वेणेत्तिण [स ३२१२
७ ख ९ ओ २३२२] तप्पाओग्गजहणविसोहीहि उदीरिददव्ववादो एत्तियमेत्तादो । [स ३२१२
७ ख ९ ओ २३२२] असंखेज्जगुणाहीणेण परिहीणपुव्विल्लतप्पाओग्गुक्कस्सविसोहीहि उदी- रिदेत्तियमेत्तपमाणत्तादो—

[स ३२१२
७ ख ९ ओ २३२२] ।

पुणो सादस्स हाणी अवट्टाणं च थोवाणि । पृ० २७१.

कुदो ? अप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तेणुदीरिदकिंचूणदव्वपमाणत्तादो । केत्तिण्णुणं ? तेण चैव पमत्तेण देवेसुप्पणपढमसमएणुदीरिददव्वमेत्तेण । तं चक्खुस्स दव्वमेत्तियं [स ३२१२
७५ ओ २३२२] पुणो वड्डी असंखेज्जगुणा । पृ० २७१.

कुदो ? खवगसेट्टिपाओग्गअप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तेणुदीरिदकिंचूणदव्वमेत्तत्तादो । तं चेदं [स ३२१२
७५ ओ २३२२] ।

पुणो इत्थिणउंसयवेद-अरदि-सोगाणं सव्वत्थोवं अवट्टाणं । पृ० २७१.

कुदो ? सत्थाणसजदेणुक्कस्सविसो[ही]हिमुदीरिददव्वगहणादो ।

पुणो हाणी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? उवसमसेठीए ओदरमाणेण पढमसमयवेदगेणुदीरिदकिंचूणदव्वपमाणत्तादो ।

वड्डी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? खवगसेट्टाए चरिमसमयवेदगेणुदीरिदकिंचूणदव्वत्तादो ।

पुणो आउगाणं वड्डी थोवा । पृ० २७२.

कुदो ? सग-सगदीणं उक्कस्साणुभागवड्ढिं करेमाणेणुदीरिदसग-सगाउगदव्वाणं किंचूण-
मेत्ताणं गहणादो ।

पुणो हाणी अवट्टाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । पृ० २७२.

कुदो ? सग सगदीणं उक्कस्साणुभागुदीरणं हाणी(-दीरणहाणि) कदेणुदीरिदकिंचूणदव्व-
पमाणत्तादो । स ३२२७ ।
८ ज २४ ।

पुणो तिण्णं गदीणं चउण्णं जादीणं च परूवणा सुगमा । पृ० २७२.

पुणो मणुसगदि-ओरालियसरीरादीणं सत्तरसपयडीणं वेगुच्चियसरीरादिचोहसपयडीणं
च परूवणा सुगमा । ३१ । पृ० २७२.

पुणो चउण्णमाणुपुव्वीणं उक्कस्सिया हाणी अवट्टाणं च थोवा । पृ० २७२.

कुदो ? पढमविग्गहे तप्पाओग्गविसोहीए उदीरिददव्वस्मि विदियाविग्गहे तप्पाओग्ग-
संक्किलेसेणुदीरिदजहण्णदव्वेणुणीकयमेत्तादो । एत्थ तिण्णमाणुपुव्वीणं अवट्टाणं तिण्णि-
विग्गहेण विणा ण सभवदि त्ति अभिप्पाण वत्तव्वं ।

वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? कदकरणिज्जाण विदियविग्गहस्मि उदीरिदकिंचूणदव्वगहणादो । तं पि कुदो ?
जाव समयाहियावलिक्कदकरणिज्जा ताव असंखेज्जगुणदव्वमोक्कड्ढिं त्ति । तेसिं चउण्णं पि
कमेण दव्वणा एसा—

स ३२१२३ ७२६ ओं ≡ २४	स ३२१२३ ७२३ ओं ≡ २४	स ३२१२३ ७२३ ओं ≡ २४	स ३२१२३ ७२६ ओं ≡ २४
स ३२१२ ७२६ ओं ≡ २४	स ३२१२ ७२३ ओं ≡ २४	स ३२१२ ७२७३ ≡ २४	स ३२१२ ७२६७ ≡ २४

पुणो उवसमसेट्ठिस्मि उदयसंभवंतसंहद(ड)णाणं अवट्टाणं थोवं । पृ० २७२.

कुदो सत्थाणसंजदस्मि उक्कस्सवड्ढिं कुदो (?) ? ण, विदियसमयावट्ठिद(द) करंतस्स उक्कस्स-
दव्वगहणादो । किमट्टमुवमंतकसायस्मि ण घेप्पदि ? ण, जस्मि वड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणि
तिण्णि वि संभवन्ति तस्मि चेव अवट्टाणगहणमिदि अभिप्पायादो ।

पुणो हाणी असंखेज्जगुणा ।

कुदो ? ओदग्गमाणुवसतकसाण्ण सुहुमसांपगाइए जादेणुदीरिददव्वस्मि हाणिदव्वं
मोत्तूण चदीरिज्जमाणदव्व चेव गहणादो ।

वड्ढी असंखेज्जगुणा ।

कुदो ? उवसंतेणुदीरिज्जमाणदव्वस्मि वड्ढिदव्वस्सेव गहणादो ।

पुणो सेसाणं हाणी थोवा । पृ० २७२.

कुदो ? सेसं (सेस-) तिण्णं संघा(घ)डणाणं सत्थाणसंजदस्मि उक्कस्सहाणिगहणादो ।

पुणो वड्ढी अवट्टाणं च दो वि विसेसाहियाणि । पृ० २७२.

१ मूलग्रन्थपाठस्वरत्रैवंविधोऽस्ति— उवसमसेट्ठिस्मि उदयसंभवसंघडणाणं वड्ढी अवट्टाणं थोवं ।
हाणी विसे० । सेसाणं संघडणाणं वड्ढी थोवा । हाणी अवट्टाणं च विसे० ।

कुदो ? उक्त्सहाणीए णिबंधणं होदूण द्विदहेद्विमपरिणामादो अणंतगुणहीणपरिणामे
हाइदूण उक्त्सवड्डीए वड्डीदूण उदीरिदत्तादो विसेसाहियं जादं ।

पुणो अजसगित्ति-दूमग-अणादेजाणं (अणादेज-णीचागोदाणं) उक्त्सिया हाणी
अवड्डीणं च थोवाणि । पृ० २७२.

कुदो ? सत्थाए विसोहीए द्विदअसंजदसम्मादिद्वीहिं उदीरिदुक्त्सदवत्तादो ।

पुणो वड्डी असंखेजगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? दंसणमोहक्त्सवणम्मि उदीरिदुक्त्सदवगहण्णादो, अहवा अप्पमत्ताहिमुहाणं
चरिमसमए उदीरिदवगहण्णादो ।

पुणो वड्डीउदीरणप्पावहुगम्मि (पृ० २७४) किंचियत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा इदि । पृ० २७४.

कुदो ? असंखेजलोगमेत्ताणं असमाणपदेमुदीरणणबंधणणं सादामादवधकारणपरि-
णामाणं छवड्डीकमेण द्विदाणं रचणं कादूण पुणो तेहिं सव्वजीवरासिपमाणं एत्थ पाओग्गाणं
भागो हिदे एगेगपरिणामम्मि द्विदजीवा थोरुवणण आगच्छंति । पुणो तत्थ एगपरिणामद्विद-
जीवे ताव धरिय आणिज्जमाणे अवट्ठिदुदीरणविसयो एगपरिणामो ? होदि । पुणो तत्परिणाम-
प्पहुडि एगवड्डीयं टुरुवाहियवड्डीएण गुणिदमेत्तपरिणामट्टाणाणि असंखेज्जभागवड्डीउदीरणविस-
याणि होन्ति ४६ । पुणो तत्तो उवरि तमद्धानं रूवाहियं करिय जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स तिण्ण-
चउत्तभागेण गुणिदमेत्ताणं संखेज्जदिभागवड्डीउदीरणविसयं होदि । पुणो तत्तो उवरि
एदमद्धानं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूऊणछेदणेहि गुणिदमेत्तपमाणं ४६१६३ । पुणो तत्तो उवरि
उदीरणविसयं होदि ४६१६३ च्छे । पुणो तत्तो उवरि हेद्विमसयल- ४१ । पुणो तत्तो उवरि
देगपरिणामादा अ- ४१ संखेज्जगुणवड्डीकारणत्तण वड्डीदुक्त्सट्टाणाणमसंखेज्जलोग-
मेत्ताणं असंखेज्जगुणवड्डीविसयद्धानं पमाणं होदि = ३ ।

पुणो एदेसिमद्धानाणं पक्खेवसंखेवेण एगपरिणामद्विदजीवस्स अद्वं किंचूणविसोहिपरि-
णदमंदसादिरेयं संकिलेसपरिणदमादि । तदो (ते दो) वि रामयो पुह पुह द्विविय भागे हिदे तत्थ
लद्धं पुह पुह पंचट्टाणेसु पडिगसिं ठविय सग-सगपक्खेवेहि गुणिदे सग-सगविसयरासयो
आगच्छंति । तेसि मदिद्वी १३ = २५ १३ = २४ एदाणि तेरासिएण असंखेज्जलोगेहि
गुणिदे सव्वपरिणामेसु = २ = २९ ९ = २ = २ द्विदअवट्ठिदादिउदीरया होति ।
तत्थ दोसु पंतीसु द्विद- १३५४६१६३ छे १३४४६१६३ छे अवट्ठिदं मेलाविय हेटा द्विविय
पुणो तदुवरिमरासिमाह- = २ = २९४ ९ = २ = २४ प्पेण कमेण द्विविय अप्पावहुगं
भण्णमाणे अवट्ठिदउदीरया १३४६१६३५ १३४६१६३४ थोवा जादा ति ।
= २ = २९४ ९ = २ = २४

पुणो असंखेज्ज-

पृ० २७४.

कुदो ? विसय-

असंखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया । पृ० २७४.

गुणगारमाहप्पे दोण्हं सरिसत्ते संते गुणिज्जमाणरासिमाहप्पादो ।

एवं संखेज्जभागवड्डीउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया ।

संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणुउदीरया विसेसाहिया । असंखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जगुणहाणुउदीरया विसेसाहिया इदि । पृ० २७४.

एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

पुणो केषु वि पुत्थएसु मदिआवरणस्स अवड्ढिउदीरया थोवा, असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागहाणुउदीरया विसेसाहिया, संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागहाणुउदीरया विसेसाहिया । संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जगुणहाणुउदीरया विसेसाहिया । असंखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणहाणुउदीरया विसेसाहिया त्ति भणिदं ।

कथं एदस्सत्थो उच्चदे ? एवमुच्चदे—असंखेज्जभागवड्ढिसहस्संतोड्ढिउदीरयो विहंतादिस्स ट्ठिदा (?) तदो तस्मि आदिं ट्ठिविय तेसु सूचिदवखराणि एव भ(भा)णिदव्वाणि 'उदीरया असंखेज्जगुणा' इदि । एवं संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढिसहाणं अंतो-आदिल्लच्छणं ट्ठिविय तेण सूचिदाणि उदीरणसहपुव्वाणि कमेण संखेज्जगुणं असंखेज्जगुणामिदि घेत्तव्वं । उवरिमपदाणि सुगमाणि । एवं भण्णमाणे अत्थो घडदे ।

एदस्स एसो चेव अत्थो होदि त्ति कुदो णव्वदे ? ण, जहासरूवेण अत्थे भण्णमाणे पुव्वावरविरोहो होदि त्ति । तं कथं ? उच्चदे—

जेमि कम्माणं अवत्तव्वया अणंता तेसिमप्पावहुगं—

अवड्ढिदादो विसेसाहियं पुव्वं व भाणिय णेयव्वं जाव संखेज्जगुणहाणु(हाणु)उदीरया विसेसाहिया त्ति ताव ।

तत्तो अवत्तव्वं असंखेज्जगुणं । तत्तो असंखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणहाणु-उदीरया विसेसाहिया त्ति भणिदं । पृ० २७४.

एत्थ संखेज्जगुणहाणुउदीरणहंतो विसेसाहियाणं अवत्तव्वादो विसेसाहियाणं असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणुउदीरयाणं कथमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे ? ण, जदि असंखेज्जगुणत्तमेत्थ जुज्जदि तो पुव्विल्लस्मि किमट्ठं विसेसाहियत्तं भणिदं, दोणहमप्पावहुगपंतीणं समाणत्तं सदिस्स(-त्तस्स दिस्स) मागत्तादो । एवं पुव्वावरविरोधो अण्णेहि वि पयारेहि आणिज्जमाणे दोसा चेव पुव्वावरेण-दिस्सदि ।

पुणो एवं सव्वकम्माणं कायव्वमिदि (पृ० २७४) उत्ते चउणाणावरण-चउदंसणा-वरण-तेजा-कम्मइय - तव्वंधण- संघाद-पंचवण्ण - दीगंध-पंचरस-अट्टफास-अगुरूगलहुग-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिण पंचंतराइयाणं वत्तव्वं । एत्तो उवरिमपयडीणमप्पावहुगाणि सुगमाणि । एवं पदेसुदीरणा गदा ।

(पृ० २७५)

पुणो उवसामणोवक्कमो सगभेदगदो सुगमो । णवरि पयडिउवसामयअप्पावहुगम्मि (२७९) किंचियत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए उवसामया । पृ० २७९.

कुदो ? वासपुधत्तमंतरिय संखेज्जाणमुवसामयजीवाणं पमाणं लव्वमिदि तो पलिदोवमच्छेद-णयस्स असंखेज्जदिभागोवड्ढि(ट्ठि)दपलिदोवममेत्तव्वेत्तलणकालम्मि किं लभामो त्ति तेरासिएण

(७४)

परिशिष्ट

आणिदे एत्तियमेत्तं जादत्तादो । $\left| \begin{array}{l} ५७ \\ ६२७७ \\ २२७७ \end{array} \right|$ असंखेज्जगुणा । पृ० २७९.

कुदो ? अंतोमुहुत्तमंतरिय पल्लद्वच्छेदणयस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा वा सामण-
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा वा लब्भदि तो पुव्वुत्तुव्वेल्लणकालादो असंखेज्ज[दिभाग]
मेत्तुव्वेल्लणकालस्मि किं लभामो त्ति तेरासिएण लद्धुव्वेल्लणजा(जी)वा सम्माइट्ठि-सम्मा-
मिच्छाइट्ठिजीवा च हांति त्ति । ते चेदा $\left| \begin{array}{l} ५ \\ ६२७७ \\ २३२७७२२ \end{array} \right|$ । अहवा $\left| \begin{array}{l} ५ \\ ६२७७ \\ २२२७७ \end{array} \right|$ ।

सम्मामिच्छस्स उवसामगा $\left| \begin{array}{l} ५ \\ ६२७७ \\ २३२७७२२ \end{array} \right|$ विसेसा- $\left| \begin{array}{l} ५ \\ ६२७७ \\ २२२७७ \end{array} \right|$ हिया । पृ० २७९.

कुदो ? उव्वेल्लणकालविसेसाहियत्तादो ।

मणुसाउगस्स उवसामगा असंखेज्जगुणा । पृ० २७९.

कुदो ? सामणमणुसरासीए सगसखेज्जदिभागेण अण्णगदीए ट्ठिदजीवाणं मणुसाउगबंधेण
अहियत्तादो $\left| \begin{array}{l} १३७ \\ ३७ \end{array} \right|$ । पणो णिरयाउवस्स उवसामया असंखेज्जगुणा । देवाउवस्स

उवसामया असंखेज्जगुणा । पृ० २७९.

सुगमाणि एदाणि । कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो ।

पणो देवगदिउवसामया संखेज्जगुणा । पृ० २७९.

कुदो ? पंचिदियपज्जत्तजीवाणं देवगदिवंधेण सत्तप्पाययपाओग्गाणं गहणादो $\left| \begin{array}{l} ४ \\ ० \end{array} \right|$ ।
किमट्ठमुव्वेल्लंतरीदजीवा एत्तो असंखेज्जगुणा ण गहिदो ? ण, विवक्खावसत्तादो;
अण्णहा असंखेज्जगुणा चेव हांति $\left| \begin{array}{l} ४ \\ ० \end{array} \right|$ ।

पणो णिरयगदीए उव- $\left| \begin{array}{l} ४ \\ ० \end{array} \right|$ सामगा विसेसाहिया । पृ० २७९.

कुदो ? अपुव्वबंधट्ठिदजीवमेत्तेणहियउव्वेल्लणकालेणुव्वेल्लंतजीवमेत्तेण वा ।

पणो वेगुव्वियसरीरणामाए उवसामगा विसेसाहिया । पृ० २७९.

कुदो ? अपुव्वदंभवगदिवंधगजीवमेत्तेण । उवरिमपदाणि सुगमाणि ।

(पृ० २८२)

पणो विपरिणामाणुवक्कमो सुगमो । एवमुवक्कमो गदो ।

उदयाणियोगहारं (पृ० २८५)

पणो उदयाणियोगहारे पयडिउदीरयो(उदयो)सुगमो । णवरि उत्तरपयडीसु पवाइजंतोव-
एसेणहस्स-रदिउदीरगेहितो सादवेदगा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जजीवमेत्तेणे
त्ति । पृ० २८८.

एदं सुगमं ।

अण्णेण उवदेसेण सादवेदगेहितो हस्स-रदिवेदगा विसेसाहिया असंखेज्जभाग-
मेत्तेण । पृ० २८८.

एदं पि सुगमं, आइरियाणमुवदेसत्तादो । जुत्तीए वा— ण केवलं उवदेसेण विसेसा-

हियत्तं, किंतु जुत्तीए विसेसाहियत्तं असंखेज्जभागाहियत्तं णव्वदे जाणाविज्जदे ।

तं जहा—सव्वो आउगवेदगो^१ इदि उत्ते जीवा दुविहा घादाउवा अघादाउवा चेदि । तत्थ घादाउगाणं पमाणं उव्वाउगपरिणामट्टाणेण भज्जिदसव्वजीवगसी सव्वपरिणाम-ट्टाणाणमसखेज्जभागमेत्तघादपरिणामट्टाणेहि गुणिदमेत्तं होदि । तं चेत्तिया $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २ \end{array} \right]$ । सेसा अघादाउवा । ते चेत्तिया $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २ \end{array} \right]$ ।

पुणो घादकारण- $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २ \end{array} \right]$ माउट्टिदि (दि)भणदि—

णियमा असादवेदगो इदि । पृ० २८८.

एदस्सत्थो उच्चदे— अघादाउवां णिच्चएण अमादवेदगो चेव होदि त्ति । कुदो ? अमादेण विणा घादाउगस्स घादाभावादो । किमसाद णाम ? दुक्खं । तं च दुविहं सरीरगदं परिणामगदं चेव । तत्थ सरीरगदं वादरजीवाणं पाओग्गाणं सत्थाग्गि-जलासणिआदीहि सरीरपिडेणुप्पणदुक्खं । परिणामगदं वादर-सुहुमजीवाणं उवघादादिकम्माणं तिक्वाणुभागोदय-सहाएणुप्पणसंकिलेसपरिणामाणं परिणामगद(दं) दुक्खं । तदो दुविहअसादेण घादो संभवदि त्ति उत्तं होदि ।

पुणो हस्स-रदीसु भज्जं । पृ० २८८.

एदस्सत्थो— आउवघादकाले हस्स-रदीणं उदयो भयणिज्जो होदि त्ति । कुदो ? काउ-लेस्मियजीवाणं केड मरणस्मि मरणकंवा, एव हस्स-रदीणमुदयमुवलंभादो । तदो घादाउग-जीवसखं ट्टविय हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं वेदगद्धाममूहेण भज्जिय सग-सगपक्खेवेण गुणिदे दुविहरासो समुवलम्भदे । ते चेदाणि $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ $\left[\begin{array}{l} १८४ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ । पुणो अद्धासंखेज्जगुणविवक्खादो अघा-दाउगगामि सादासादेसु विभज्जिदेसु $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ $\left[\begin{array}{l} १८४ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ तत्थ जेत्तिया सादवेदगा तेत्तिया हस्स-रदिवेदगा होति । पुणो तत्थ जेत्तिया असादवेदगा तत्तिया अरदि-सोगवेदगा होति ।

तेण सादवेदगेहितो हस्स-रदिवेदगा असंखेज्जदिभागेण विसेसाहिया^२ जादा । पृ० २८८.

तत्थ सादवेदया संदिट्टियाए णत्तिया $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ । हस्स-रदिवेदया णत्तिया $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ $\left[\begin{array}{l} १३ \\ \equiv २५ \end{array} \right]$ ।

(पृ० २८९)

पुणो ट्टिदिउदीरयो (उदयो)वि सुगमो । णवरि जहण्णट्टिदिवेदयकालास्म णाम-गोद-वेदणिजाणं जहण्णट्टिदिवेदया केवचिरं कालादो [होति] ? जहण्णुक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । णवरि वेदणीयस्स जहण्णेणोगसमयो, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसुणा (पृ० २९१) इदि उत्ते पत्थ एगसमयो णाम पमत्तो चेव असंखेज्जट्टिदिवेदगो अप्पमत्तो होदूण एगट्टिदिवेदगो जादो, जादविदियसमए देवो जादो । एवं एगसमयो लद्धो । ण सेसेसु हेट्टिमगुणट्टाणेहितो पडिवण्णो एगसमयो होदि ।

पुणो अणुभागोदयपरूवणा (पृ० २९५) सुगमा ।

पुणो पदेसुदयसामित्तपरूवणा(पृ० २९६)सुगमा । णवरि उक्कस्ससामित्तम्हि पंच्हं संहडणाणं

१ मूलग्रन्थे 'आउअघादओ' इति पाठोऽस्ति ।

२ मूलग्रन्थे 'हस्स-रदिवेदया असंखेजा भागा विसेसा०' इति पाठोऽस्ति ।

उक्त्सपदेमोदयो कस्म ? संजमासंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेढीयो तिण्णि वि एगट्टं कादण ट्टिदिसंजदस्स जाहे पुव्वुत्तगुणसेढिसीसयाणि तिण्णि वि उदयभागदाणि ताहे पंचण्हं मंहडणाणं उक्त्सो पदेसोदयो इदि भणिदं । पृ० ३०१.

एदेण पंचण्हं मंहडणाणमुदइल्लाणं जीवाणं दंसणमोहकखवणसत्ती णत्थि त्ति भणिदं होदि ।

पुणो वज्जणारायणकायणाणमुदइल्लाणं(?)पि उवसमसेढिचडणसंभवं णत्थि त्ति जाणाविदं । जदि एवं [तो] पुव्वावरारोही(हो) किं ण भवे ? ण वा भवे, गंथांतरमाइरियाणमभिप्पायाणं सूचयत्तादो । तं कथं ? अभिप्पायं उच्चदे- एदेसिमुदयो पोग्गलत्रिवागं करेदि । तं पोग्गला जीवाणं राग-दोसाणमुप्पायणाणमित्तसत्तिमुप्पादयंति । जहा बाहिरपोग्गलाणं सत्ते विपप्पो तहा उवसमसेढीए राग-दोसमुप्पाणदुं ण सक्किज्जदि त्ति । तदो तण्फलाभ(भा)वावेक्खाए उदयो उवसमसेढीए णत्थि त्ति सूचिदं । इदग्गंथेसु पदेसणिज्जगमेत्त विवक्खिवय भणिदं । अहवा, उवसमसेढिचडणसत्ती एदेसि णत्थि त्ति एदमभिप्पायमिदि भ(भा)णिदव्वं ।

(पृ० ३०२, ३०९)

पुणो जहणमामित्त कालंतर-भगविचय-णाणाजीवकालंतर-सण्णियासाणि सुगमाणि ।

पुणो अप्पाबहुगमिदि उक्त्सपदेमुदयदंडयो उच्चदे । तं जहा—

मिच्छत्तस्स उक्त्सपदेमुदयो थोवा(यो) । पृ० ३०९.

कुदो ? उदारिज्जमाणुक्त्सदव्वेणव्वमहियगुणिदकम्मंसिय उक्त्सजहाणिसेगगोउच्छेण संजुद- (त्त) संजदमासंजम-संजमगुणसेढिसीसयाणं दोण्ह एगीभूदं होदूण उदयभागदाणं गहणादो । तस्स ट्टवणा

स ३२१६६४

 । किमट्टं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं गुणसेढिसीसयाणं आगमणदं तिगुणं ण

७ ख १७ओ प ८५

 सक्किज्जे ? ण, तंसिं गुणसेढीणं एदस्स असंखेज्जदिभागमेत्तस्स एत्थ सादिरेयकयत्तादो ।

पुणो सम्मामिच्छत्तुक्त्सं विसेमाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? दुविहसंजमगुणसेढिसीसएहि उक्त्सगुणिदकम्मंसियजहाणिसेगगोउच्छाहियदोण्हं कम्मणं समाणे संते पुणो मिच्छत्तुदीरणदव्वादो सम्मामिच्छत्तुदीरणदव्वं परिणामवसेण असंखेज्ज-गुणं जादमिदि विसेमाहियं जादं । कुदो सेसदव्वाणं सरिसत्तं ? सम्मामिच्छत्तगुणसेढिसीसयदव्वाणं जहा— गोउच्छाणं एत्थ थिउक्त्ससंकमेणागदत्तादो । तस्स संदिट्ठी

स ३२१६६४

 ।

पुणो पयलापयलाए संखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

७ ख १७ओ प २५

 ।

कुदो ? पुव्विल्लदुविहगुणसेढिसीसयाणि उक्त्सगुणिदकम्मंसिया जहाणिसेयसहिद-पमत्तेणुदीरिज्जमाणदव्वसंजुदाणि होदूण सेसचउणं णिदाणं गुणसेढिसीसयदव्वाणं समूहस्स पंचमभागं तिथ उक्त्ससंकमेण संकतं पलि(डि)च्छियूण उदयभागददव्वं चेत्त णुक्त्सुदयं जादत्तादो । तस्स ट्टवणा—

स ३२१२६४

 । को गुणगारो ? वेपंचभागेण सादिरेयतिण्णिरूवाणि ।

णिदा-

७ ख ५ओ प २५

 णिदाए विसेसाहिया(यो) । पृ० ३०९.

कुदो ? पुव्विल्लेण सव्वहा(?)पयारेण समाणे संते वि पुव्विल्लस्सुदीरिज्जमाणदव्वादो एदस्सुदीरिज्जमाणदव्वं बहुवं, तदो विसेसाहियं जादं । तं कुदो ? पयडिविसेसादो विसोहि-विसेसदव्वस्स हीणत्तादो । तस्थ पयडिविसेसो णाम दव्वाहियत्तं । पुणो पयलापयलाए मंदाणु-

भागोणुपणणिहा अप्पा, तदो तत्थतणविसोहीदो णिहाणिहाए तिठ्वाणु भागेणुपणणिहम्मि विसोही अप्पं होदि । तदो पुठ्वल्लादो उदीरिददव्वादो एदम्हादो उदीरिउज्जमाणदव्वं विसेसहीणं होदि । तो वि पयडि विसेसेणव्भहियत्तादो उदीरिददव्वादो हीणपमाणं थोवमिदि तमेत्थ पहाणं जादं ।

पुणो थोणगिद्धीए विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? पुठ्वुत्तकारणेण विसेसाहियत्तं एत्थ वि संभवादो ।

पुणो अणंताणुबंधिचउक्काणं अण्णदरं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? एत्थ पुठ्विल्लदुविहगुणसेटिसीसयाहि गुणिदकम्मंसिपमुक्कस्स जहाणिसेगगोउच्छेण उदीरिज्जमाणदव्वेण च अहियं हादूण अण्णदरसेमाणंताणुबंधिकमायतिगाणं दव्वा णत्थ उक्कस्सं कमेण(दव्वाण थिउक्कसंकमेण) मं(कं)ताणं मेलावणट्टं च गुणिदमेत्तत्तादो । तं चेदं स ३२१२६४४। केत्तियमेत्तेण विसेसाहियं ? वेत्तिभागव्भहियपंचरूवेण खंडिदेयखंड मेत्तेण । ७ ख १७ओ प ५।

पुणो एत्थ चउण्णं कसायाणं वेदिज्जमाणदव्वाणं सर्गिसत्तण जाणिज्जदि चउण्णं कसायाण ओंकारिददव्वम्मि असंखेज्जलोगपडिभागं घेत्तूणेगट्टं करिय वेदिज्जमाणकसाण्मु उदीरिज्जदि त्ति ।

पुणो पच्च(अपच्च)अखाणावरणचउक्काणं अण्णदरउदो० असंखेज्जगुणा । पृ० ३०९.

कुदो ? गुणिदकम्मंसियस्स विसंजाइदअणंताणुबंधिचउक्कदव्वस्स बारसमभागं पडिच्छिद-अण्णदरकसायस्स उवममसेटि चट्ठिय से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो होदूण तस्संतोमुहुत्तु-पण्णस्सुवसामगुणसेटिसीसण्हिं सहगददुविहमंजमगुणमेटिसीसयदव्वं गुणिदकम्मंसिय-णिसेयदव्वं उदीरिददव्वं च एगट्टं कदं अण्णदरवेदिज्जमाणकसायदव्वं सेसण्णदरतिण्हं कसायाणं थिउक्कसंकमेण दव्वमेलावणट्टं चउग्गुकदमेत्तमुक्कस्सुदयदव्वं होदि त्ति । तस्स संदिट्ठी

स ३२१२६४४
७ ख १२ओ २८५

पच्चअखाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? मूलदव्वविसेसाहियत्तादो । गुणसेटिमांसयदव्वाणि समाणं होदूण जहाणिसेय-गोउच्छादो उदीरिददव्वाणि एदम्स अहियाणि होदि त्ति विसेसाहियं जादं ।

पुणो पयल्लाए असंखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? उवरि उवमंतकसायस्स पढमगुणसेटिमीसण्हिं सहगदपुठ्वुत्तदुविहगुणसेटिसीस-यदव्वं सेसचउणं णिहाणं थिउक्कसंकमदव्वममूहस्स पंचमकालं(?)पडि(डि)च्छिय सगदव्वेणु-दीरिददव्वेण सहिदमेत्तमुदयमागदत्तादो । तं चेदं स ३२१२६४ ।

पुणो णिहाए० विसेसाहिया । ७५५ओ २८५
२२ पृ० ३०९.

कुदो ? पुठ्वं च पयडिविसेसेण ।

सम्मत्ते असंखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कथमेदं घडदे ? उवसंतकसायगुणसेटिदव्वादो दंसणमोहक्खवणगुणसेटिदव्वस्स असंखेज्जगुणं । तं कुदो ? एक्कारसगुणसेटीणं परूवयगाहाए सह विरोहपसंगादो । ण सव्व-दव्वाणमसंखेज्जभागमोकट्टिय णिम्मिदेक्कारसगुणसेटीणं चेव एसा गाहा उत्ता, ण पुण सव्व-दव्वेण णिम्मिद केसिं पि गुणसेटीणं चरिमणिसेयम्मि उत्ता; तथा सदि संतप्पाबहुअसमाण-मेदेसिमप्पाबहुगं पावेदि । एत्थ पुण सव्वदव्वाणमसंखेज्जदिभागमोकट्टिऊण णिम्मियगुणसेटि-

दन्वादी सन्वद्वं घेत्तूण णिम्मिद्गुणसेढीए चरिमणिसेयस्स असंखेज्जगुणत्तं विचारिज्जमाणे
णायसिद्धं सुघडमिदि उत्तं । तं चेदं

स ३२१३६४
उ ख १७८५

 । को गुणगारो ? असंखेज्जगुणमेत्तोक्कड्डु-
क्कड्डुणभागहारो

ओ २५
१७

 ।

केवलणणावरणं संखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? खीणकसाएण केवलणणावरणसन्वद्वं घेत्तूण कयगुणसेढिसीसयचरिमणिसेग-
गहणादो । को गुणगारो ? बेपंचभागम्भहियतिण्ण रूवाणि । ते चेत्तियास ३२१२६४ । केवल-
णाणावरणणिसेयस्स चउत्तभागमेत्तं ओधिणाणीणं ओधिणाणावरणणिसेगे-

७५५८५

 हित्तो
आगच्छमाणं पल्लिच्छयाहियगुणगारं किं ण उत्तं ? ण, तद्दा सदि(ए)णिरयगदीसु अपञ्चखाणा-
वरणस्सुवरि केवलदंसणावरणं विसेसाहियं पावदि । ण चेदं । तदो एदस्स एत्थ वयाणुसारी
आयो त्ति गेणिणद्वं ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? अणियट्टिगुणट्टागम्मि थोणगिद्धातिगम्म चउत्तभागं सन्वसकमेणागच्छमाणं पल्लि-
च्छय खीणकसायचरिमिसमए णिद्दापयलाण चरिमणिसेयचउत्तभागं पडिच्छिदसगचरिभगुण-
सेढिसीसयपमाणत्तादो । केत्तियमेत्तण विसेसाहियं ? चउत्तभागमेत्तेण

स ३२१२६४
उ ख ४८५

 ।

देवाउगमणंतगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? सण्णिपंचिदियपज्जत्तण उक्कम्मबंधगद्धाए उक्कम्मावाहं कादूण दसवस्ससहस्स-
ट्टिदिदेवाउग वंधिय णिसेययणं कदपढमणिसेयगहणादो अघादित्तादो अणंतगुणं जादं । तस्स
ठवणा

स ३२२७७१६
८२७७७१६०

 ।

पुणो णिग्याउगं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? देवाउगेण समाणसामित्ते संते वि एदस्साहियत्तभतरे देवाउगस्स आवाहत्तभंत-
संकिलेसवारेण जायमाणोवलंभणादो अहियसंकिलेसवारेण बहुवसोवलंभणं जादमिदि ।

पुणो मणुस्साउगं संखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? सण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स तप्पाओगुक्कस्सजोगिस्स उक्कस्सबंधगद्धाए जहण्णावाह
करिय तिपल्लिदोवमाउगं वंधिय कमेण तत्थुपज्जिय सन्वलहुमाउगं सन्वजहण्णवाओग्गजीव(वि)
द्वं मोत्तूण घादिय तत्थ कदलीघादस्स पढमणिसेयोदयद्वगहणादो । त कुदो ? भोगभूमाए
कदलीघादमत्थि त्ति अभिप्पाएण । तं चेदं

स ३२२७७१६
८२७७७१६

 । पुणो भोगभूमाए आउगस्स घादं
णत्थि त्ति भणंताइरियाणं अभिप्पाएण पुव्वं

८२७७७१६

 बद्धजलचराउओ जलचरेसुप्पज्जिय
जलचराउवं पुव्वं व घादिय तत्थ कदलीघादस्स पढमगोउच्छद्वं गहंद्वं ।

तिरिक्खाउगं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? एत्थ पुव्वं व दुविहपयारेणुक्कस्सद्वं होदि त्ति वत्तव्वं । किंतु परिणामविसेसे
अप्पणो[व]लंभवहुत्ते विसेसाहियं जादं ।

पुणो एत्थ सूचिदस्स आदावस्सुक्कस्सोदयद्वं संखेज्जगुणं । कुदो ? णामस्स गुणिद-
कम्मंसियां बीइंदिणसुप्पज्जिय सगट्टिदिसतसमाणेण ट्टिदिं लहुं घादिदूण ट्टिविय एइंदियसुप्पज्जिय
तत्थ वि ट्टिदीयो घादिय पुढविकाइसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तं गदे संते आदाउदयमागच्छदि, तस्स
पढमसमयमुदयमागदद्ववपमाणत्तादो । एदस्स पमाणं एगसमयपबद्धस्स सत्तमभागस्स चउव्वीस-

भागमेत्त(त्तं) बंधण-संघादेण सह छव्वीसभागमेत्तं वा होदि । तेसिं डवणा | स ३२ | स ३२ | ।
आहारसरीरमसंखेज्जगुणं । पृ० ३१०. | ७२४ | ७२४ |

गुणिदकम्मंसियजहाणिसेयसहिदसंजमगुणसेडिसीसयस्स णामकम्मणिबंधस्स तेवीस-
भागस्स वा पंचवीसभागस्स वा निभागत्तादो | स ३२१२६४ | स ३२१२६४ | । पुणो एद्वेण
सूचिदत्तबंधण-संघादाणं दोण्हमेवं चेव वत्तव्वं । | ७२३३ ओ २५ | ७२५३ ओ २८५ | णवरि पयडि-
विसेसेण विसेसाहिया हांति । पुणो वि सूचिदआहारसरीरंगोवंगं संखे० गुणं । कुदो ? एत्थ
वि विभंजणं पुव्वं व होदि । णवरि तिभागं णत्थि । तदो चेव कारणादो संखेज्जगुणं जादं ।
पुणो सूचिदउज्जोवणामाए उक्क० विसेसाहिया । कुदो ? उत्तरविगुत्विदपमत्तसंजदम्मि
उज्जोवोदए जादे संते पच्छा अप्पमत्तभावं गदम्मि संजमगुणसेडिसीसे दव्वस्स णामसंबंधियस्स
छव्वीसभागस्स वा अट्टावीसभागस्स वा पमाणत्तादो । पुणो पच्छय(?)विसेसेण विसेसाहियं ।
पुणो सूचिदसाधारणसरीरं विसेसाहियं संखेज्जदिभागेण । कुदो ? दोण्हं संजमगुणसेडिसीसयाणं
णामसंबंधीणं बावीसभागस्स वा चउवीसभागस्स वा हांति त्ति | स ३२१२९४ | स ३२१२६४ | ।
पुणो केत्तियमेत्तेणधिया ? साद्धपंचरूवेण वा छरूवेहि वा खंडिदेग | ७२२ ओ २८५ | ७२१ ओ २८५ |
खंडमेत्तेण ।

पुणो एइंदियादिचत्तारिजादि-थावर-सुहुम-पज्जत्तमिदि सत्त पयडीओ विसेसाहियाओ
संखेज्जदिभागेण । कुदो ? पुव्वुत्तणामस्स दुविहगुणसेडिसीसयस्स एत्थ वि वीसं बावीस-
भागं वा होदि त्ति । णवरि एत्थ चत्तारि जादीयो एककेक्केण सरिसाओ हांति । तदो सेसाणि
विसेसाहियाणि त्ति जाणिय वत्तव्वं । तेसिं डवणा | स ३२१२६४ | स ३२१२६४ | ।

पुणो वि अंतिमपंचसंहडणाणि असंखेज्ज- | ७२० ओ २८५ | ७२२२८५ | गुणाणि ।
कुदो ? दुविहसंजमगुणसेडिसीसएणब्भहियमणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेडिसीसयाणि त्ति
विण्णि वि एगट्ठं काऊण णामकम्मसंबंधीणं अट्टावीसेण वा तीसेण वा भज्जिदमेत्तं हांदि त्ति ।
डवणा | स ३२२१२६४ | स ३२२१६४ | । किमट्ठं दंसणमोहक्खवणगुणसेटी ण देवदे ? ण, तं
खवण- | ७२८ ओ २८५ | ७३० ओ २८५ | (तक्खवण-)सत्ती एदेसिं संहडणाणं उदयसाह्दजीवाणं
णत्थि त्ति अभिप्पायादो । बिदिय-तदियमिदि दोण्हं संघडणाणं उवसंतकसायगुणसेटी किं ण
गहिदा ? ण, दंसणमोहक्खवणासत्तिविरहिदाणं उवसमसेडिचडणसत्तीणं संभवविरोहो होदि
त्ति अभिप्पाएण । जदि एवं[तो]अणंतरादिककंतउदीरणट्टाणपरूवणाए ण मियूणेण(?)च विरोहो किं
ण भवे ? होदि विरोहो, गंथंतराभिप्पाएण दोण्ह पि गहणं कायव्वं इदि पुव्वं चेव परिहारं
दिण्णत्तादो । एत्थ सूचिदाओ सत्तारस पयडीओ हांति | १७ | ।

पुणो णिरयगदिणामाए० असंखेज्जगुणा । पृ० ३१०.

कुदो ? संजमासंजम-संजमगुणसेटीयो कमेण करिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउगं बंधिय
पुणो वि सम्मत्तं लहुं घेत्तूण दंसणमोहं खविय तिण्णि वि गुणसेडिसीसयमेगट्ठं करिय णिरएसु
विग्गहं काट्टुणुप्पणपढमसमए उदिण्णणामकम्मं सव्वदव्वस्स वीसदिभागस्स बावीसदिभागस्स
पमाणं होदि त्ति । तेसिमंकाणि | स ३२१२६४ | स ३२१२६४ | । कथं मिच्छत्तेणच्छणं णिरयाउग-
बंधणं सम्मत्तेणच्छणं अणंताणु- | ७२० ख २८५ | १२२ ओ २८५ | बंधिविसंजोयणं दंसणमोह-
क्खवणमिदि पंचणं अट्टाणं समूहादो दोण्हं गुणसेडिअट्टाणप्पाबहुगमिदि णव्वदे ? सामित्तपरूव-
णादो । पुणो सूचिदणिरयगदिपाओग्गाणुपुव्वी विसेसाहिया । कुदो ? सव्वपयारेण पुव्विल्लेण
समाणं होदूण पयडिविसेसेण बहुगं जादत्तादो ।

छ. प. ११

पुणो तिरिक्खगदिणामाए विसेसाहिया । पृ० ३१०.

कुदो ? पुव्वपयडीए समाणसामित्ते संते वि णिरयगदिसंतादो एदस्स संतमसंखेज्जगुणं । जेण तदो तत्तो ओक्कड्डिय उदीरिज्जमाणमसंखेज्जगुणं जादमिदि विसेसाहियं जादं । सूचिद-तिरिक्ख[गदि]पाओग्गाणुपुव्वी विसेसाहिया पयडिविसेसेण । पुणो वि सूचिददूभग-अणादेज्जाणि कमेण विसेसाहियाणि ह्यंति । कुदो ? एदेसि तिविहगुणसेटिसीसयादिदव्वेहिं समाणे संते वि पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं । एत्थ सूचिदतिण्णपयडीयो ह्यंति ।

अजसगिती विसेसाहिया । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण सेससव्वपयारेण समाणत्तादो ।

णीचागोदस्स संखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

कुदो ? गोदकम्मस्स तिविहगुणसेटिसीसयदव्ववाणं सादिरेयजहाणिसेयगोउच्छेणहियाणं गहणादो । डवणा

स ३२१२६४
७ ओ २८५

 । को गुणगारो ? वीसरूवाणि बावीसरूवाणि वा ह्यंति ।

पुणो वेगुव्वियसरीरणामाए असंखेज्जगुणा । पृ० ३१०.

कुदो ? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेटिसीसयं सादिरेयमेत्तं, देवेण वेगुव्वियसरीररूवेण वेदिज्जमाणपमाणत्तादो । तं च केत्तिया ? उवसंतकसाएण णामकम्मस्स कयगुणसेटिसीसयव्वस्स तेवीसभागस्स वा पंचवीसभागस्स वा तिभागत्तादो । तं चेदं

स ३२१२६४	स ३२१२६४
७२३३ ओ २८५	७२५३ ओ २८५

 ।

पुणो सूचिदतव्वबंधण-संघादाणं दो वि कमेण विसेसा-

स ३२१२६४	स ३२१२६४
७२३३ ओ २८५	७२५३ ओ २८५

 हियाणि पयडिविसेसेण । वेगुव्वियंगोवंग० संखेज्जगुणं । कुदो ? एदस्स दव्वपमाणे पुव्विल्लेण समाणे संते वि एत्थ तिभागाभावादो संखेज्जगुणं जादं । पुणो वि सूचिददेवगदिणामाए विसेसा-हियं^१ । कुदो ? वीसदिमभागत्तादो । देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी विसेसाहिया पयडिविसेसेण ।

दुगुंछाए असंखेज्जगुणं । भयं तेत्तियं चेव । पृ० ३१०.

कथमेदं घडदे, उवसंतकसायगुणसेटिदव्ववादो अणियट्टिउवसामयस्स से काले अंतरं काहिदि त्ति कालं कादूण देवेसुप्पणस्स जहणगहस्स-ग्दिवेदगकालं बोलेदूण उदिणगुणसेटि-सीसयदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तविरोहादो ? सच्चं विरोहो चेव, किंतु तं घेप्पमाणे देवगदीए एदेहिंतो असंखेज्जगुणं होदि । तदो तं सामित्तं मोत्तूण विदियपयारसामित्तमस्सिय एदमप्पा-बहुगं उत्तमिदि तं घडदे । तं जहा—अपुव्वखवगस्स चरिमसमए उदयमागददव्वगहणादो तं सामित्तमस्सियूण एदमप्पाबहुगं परूविदमिदि णव्वदे ।

किमट्टं दुप्पयारसामित्तमण्णोणविरोधं परूविदं ? अभिप्पायंतरपयासणट्टं परूविदत्तादो । तं जहा—उदिणपरमाणुणा उप्पणभय-दुगुंछपरिणामफलं अवेक्खिय पड(ढ)मिल्लं उत्तं । विदिया-हिप्पायं पुण परमाणुणिज्जरमेत्तमवेक्खिय उत्तं । एदेण पुण राग-दोस-मोहुप्पाययकम्माणमुदयो खवगुव्वसमसेदीसु णिज्जरमेत्ताणिदट्टाणं तेसि फलमवेक्खिय उत्तमिदि घेतव्वं । तत्थ दुगुंछा-दव्वपमाणं भयगुणसेटिसीसयदव्वं दुगुणं सादिरेयमेत्तं होदि । भयं तेत्तियं चेवे त्ति उत्ते दो वि अण्णोणम्मि स्थिउक्कसंकमेण संकमिदत्तादो । किमट्टं पयडिविसेसेण विसेसाहियं ण जादं ? ण, दोणमोक्कड्डिदव्ववाणं असंखेज्जलोगपडिवद्वमेगट्टं करिय उदयावलयव्वमंतरे संलुहिदत्तादो समाणं जादमिदि उत्तं । एवं अण्णोसु वि पयडीसु संभवं जाणिय वत्तव्वं । तस्स डवणा

१ मूलग्रन्थे 'देवगहणामाए संखे० गुणो' इत्येतद्वाक्यं तदङ्गभूतमेव समुपलभ्यते ।

स ३२१२६४२ ।
७१० ओ २८५
२२२२

हस्स-सोग० विसेसाहिया । पृ० ३१०

केत्तियमेत्तेण ? दुभागमेत्तेण । कुदो ? हस्सस्सुवरि सोगं सोगस्सुवरि हस्सं थिउक्कस्संकमेण संकमदि, पुणो तम्मि भय-दुगुंछा दो वि थिउक्केण संकमिदे जादत्तादो । सेसं पुवं व । तं चेदं

स ३२१२६४२ ।
७१०ओ२८५
२२२२

अरदि-रदी विसेसाहिया । पृ० ३१०.

कुदो ? रदीए उवरि अरदी, अरदीए उवरि रदीयो थिउक्कसंकमेण संकमिय तम्मि भय-दुगुंछा वि अक्कमेण संकमिय उदीरियदव्वेण सहिदे कदे जं दव्वं तं पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं ।

इत्थिवेदे असंखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

कुदो ? इत्थिवेदचरिमसमयअणियट्टिगुणसेट्ठिगोउच्छादीणं गहणादो ।

णउंसयवेदो विसेसाहियो । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण । को पयडिविसेसो णाम ? उच्चदे —इच्छिदिच्छिदपयडीयो ओकड्डिय गुणसेट्ठिसरूवेण वा इदरसरूवेण इदि दुविहपयारेण संलुहमाणो जहाणिसेगगोउच्छेण तत्थ जं जं थोवं तं तं बहुगम्मि सोहिदे सेसं तदुदयदव्ववादो बहुवं वा थोवं वा होदि, तं पयडिविसेसं णाम । एत्थ पुण इत्थिवेदगदव्ववादो णउंसकवेददव्वं संखेज्जगुणं संतदव्वेण जादे वि ओकड्डिदूण गुणसेट्ठिकददव्वं दोण्हं सरिसं संते वि गोउच्छविसेसेणहियं जादं, इदर[धा]दुविहपयारउदीरणाभावादो । एदमत्थमुवरि वि सव्वत्थ संभवं जाणिय वत्तव्वं ।

पुरिसवेद० असंखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

एत्तो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण उप्पण्णअणियट्टिगुणसेट्ठिगोउच्छादो ।

कोधसंजलणाए० असंखेज्जगुणं । माणसंजलणाए असंखेज्जगुणं । मायासंजलण० असंखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

सुगमं । णवरि संतदव्वस्स थोवबहुत्तं अणवेक्खिय ओकड्डियूण करंतगुणसेट्ठिपरिणाम-विसेसमवेक्खिय पयट्टिदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ पुण सूचिदपयडीसु दुस्सरमादी० असंखेज्जगुणा । कुदो ? वचिजोगणिरोहकारयचरिमसमयसजोगीह वेदिज्जमाणदव्वगहणादो । तस्स पमाणं णाम-कम्मस्स गुणसेट्ठिदव्वस्स अट्टावीसभागं वा तीसभागं वा होदि त्ति । सुस्सर० विसेसाहिया पयडिविसेसेण । उस्सास० असंखेज्जगुणा । कुदो ? अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूणस्सासणरोहादो । एत्थ वेदिज्जमाणपयडिसंखाविसेसो जाणिदव्वो । एत्थ सूचिदाओ तिण्णि ।

पुणो ओरालियसरीर० असंखेज्जगुणा । पृ० ३१०.

कुदो ? सजोगिकेवल्लिस्स चरिमसमयम्मि उदयणामकम्मगुणसेट्ठिस्स विगू(गु)णवालीस-भागस्स वा इगिदालीसभागस्स वा तिभागत्तादो । तं कथं ? अणियट्टिगुणट्टाणम्मि तिरिक्ख-गदिसंबधितेरसपयडीओ खविदाणि, ताणि सव्वसंकमेण जसगित्तीए उवरि संकमिदं । तेणेत्थ वि संभवंतट्टावीसपयडीसु तिण्णिसरीरं जसगित्तिं च अवणिय पुणो सेसपयडिम्मिह सरीरगिमित्तमेगं जसगित्तिणिमित्तचोहसं च पक्खेवं कायव्वं । कदे उत्तपढमभागहारं

होदि । तन्नि बंधण-संघादं पक्खित्ते इदरभागहारपमाणं होदि ? कथं तमेत्थ पलिच्छिदपयडि-
मेत्तभागं लहदि त्ति णव्वदे ? ण, तेत्तियमेत्त तेसिं संजोगेण तस्स माहप्प उप्पणत्तादो ।

तेजइगसरीरं विसेसाहियं । कम्मइगं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

एदाणि सुगमाणि पयडिविसेसावेक्खाणि । पुणो सूचिद तेसिं बंधण-संघादाणं छपयडीणं
सग-सगट्टाणेसु कमेण विसेसाहियाणि हांति । तेसिं कारणं सुगमं क्षी । पुणो वि सूचिदछसंठा-
णाणि ओरालियंगोवंग-वज्जरिसहसंहडण-पंचवण्ण-दोगंध-पंचरस-अट्टफास-अगुरुगलहुग-उवघाद-
परघाद-दोविहायगदि-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिणणामाणि संखेज्जगुणाणि हीदूण एदाणि
कमेण विसेसाहियाणि हांति । णवरि वण्ण-गंध-रस-फासभेदे अस्सियूण भण्णमाणे वण्ण गंध-रस-
फासभागाणि अस्सियूण एगूणचालीसभागस्स वा इगिदालीसभागस्स वा भागपडिबद्धगुणसेट्ठि-
दव्वाणि ट्ठविय सग सगभेदेहिं भागे हिदे सग-सगपयडीणमुदयदव्वाणि पयडिविसेसेण विसेसा-
हियाणि हांति, जहा तथा विभज्जिदत्तादो ।

पुणो एदाणि अप्पाबहुगपंतीए आणिज्जमाणाए उस्सासणामादो पढमफासमसंखेज्जगुणं । तत्तो
उवरि सग-सगट्टाणे कमेण विसेसाहियाणि । तत्तो पढमवण्णं संखेज्जभागुत्तरं, [उवरिम-] पयडीयो
पयडिविसेसेण विसेसाहियाओ । एवं रसं पि कमेण विसेसाहियं । तत्तो ओरालियसरीरं संखेज्ज-
भागुत्तरं । पुणो तेजइगं विसेसाहियं । [कम्मइगं विसेसाहियं ।] तेसिं बंधण-संघादुक्काणि
विसेसाहियकमेण बोळिय तत्तो पढमगंधं संखेज्जभागुत्तरं, इदरगंधं पयडिविसेसेण अहियं होदि
त्ति वत्तव्वं । एत्थ सूचिदसव्वपयडीयो एगूणचालीसाओ । ३९ ।

पुणो मणुसगदी असंखेज्जगुणा । पृ० ३१०.

कुदो ? अजोगिचरिमसमयसीसयस्स वावीसभागत्तादो । तं पि कुदो ? मणुसगदिआदि-
अट्ट पयडीओ एगेगभागं लहंति, जसगित्ती चोहसभागं लहंति त्ति । ते सव्वे पक्खेवे मेल्लिदे
बावीसं होदि, तेहिं भज्जिदगुणसेट्ठिदव्वत्तादो । पुणो एदेण सूचिदपंचिदियजादि-तस-वादर-
पज्जत्त-सुभगादेज्ज-तित्थयराणमिदि सत्त पयडीओ कमेण विसेसाहियाओ हांति । णवरि तित्थयरं
मणुसगदीदो संखेज्जभागहीणं होदि । कुदो ? तेवीसभागत्तादो ।

दाणंतराइयं संखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

कुदो ? सव्वुक्कस्ससंचयस्स किंचूणकयपमाणत्तादो । तं चेदं स ३२१२ २ ।
को गुणगारो ? वेपंचभागेणव्वभहियचत्तारि रूवाणि । ७५२

लाभांतराइगं विसेसाहियं । भोगांतराइगं विसेसाहियं । परिभोगांतराइगं विसेसा-
हियं । वीरियंतराइगं विसेसाहियं^१ । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण विसेसाहियत्तादो ।

ओधिणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? खयोवसमविरहिदखीणकसायम्मि सव्वुक्कस्ससंचयं किंचूणमेत्तमुदिणत्तादो ।
तस्स ट्ठवणा स ३२१२ २ । केत्तियमेत्तेणहियं ? चउव्वभागमेत्तेण ।
७४२

मणपज्जवणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? ओधिणाणावरणगुणसेट्ठिदव्वं उदयावळियं पविस्समाणं जहाणिसेगगोउच्छपमाणं

१ मूलग्रन्थे तु 'असंखे० गुणो' इति पाठोऽस्ति ।

मोत्तण सेसा संखेज्जा भागा तिविहदेसघादिणाणावरणेसु संकमंति त्ति, एत्थ पुण तिभागाहियं जादं । तं चेदं

ओहि-

७
स ३२१२५
७३२

 दंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.
कुदो ? पयडिविसेसेण ।

सुदणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? ओधिणाणावरणखओवसमे संते तस्सुदयावलियं पविस्समाणगुणसेडिदव्वस्स असंखेज्जाभागं पडिसेडि, सेसा संखेज्जा भागा मदि-सुद-मणपज्जवणाणावरणेसु थिउक्कसंकमेण संकमदि त्ति दोण्हं पि अंकविण्णासेण समाणं होदूण एदं पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं ।

किमट्टं केवलणाणावरणे ण संकमदि ? ण, तत्थ वि संकमदि । किंतु तं तत्थ अणंतिम-भागत्तादो अप्पहाणमिदि उत्तं । तं कुदो णव्वदे ? हेट्टिल्लाणमप्पावहुगाणं उक्तकमाणं अण्णहा विघडणादो । ठवणा

स ३२१२५	२
७३२	२

 ।

मदिणाणा-

स ३२१२५	२
७३२	२

 वरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

अचक्खुदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? ओहिदंसणावरणखओवसमे संते तस्स गुणसेडिदव्वं उदयावलियं पविस्समाणं पुव्वं व संखेज्जा भागा अचक्खुदंसणेसु संकमदि, सेसेगभागं पविसदि त्ति । पुणो एत्थ संखेज्जा-भागुत्तरं जादं

स ३२१२ ख
७२३

 ।

पुणो

स ३२१२ ख
७२३

 चक्खुदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

जसगित्तिणामाए विसेसा० । पृ० ३१०.

कुदो ? णामकम्मुकस्सगुणसेडिदव्वस्स वावीसभागस्स चोइसगुणकिंचूणमेत्तपमाणत्तादो । ते केत्तियमेत्तेणहिया ? बेत्तिभागेणव्वभहियतिरूवेण खंडिदेगखंडमेत्तेण । तस्स ट्ठवणा

स ३२१२१४५
७२२ २

 उच्चागोद० विसेसाहिया । पृ० ३१०.

केत्तियमेत्तेण ? तिण्णचउव्वभागेणव्वभहियएगरूवेण

१
३
४

 खंडिदेगखंडमेत्तेण

स ३२१२ २
७२

 ।

लोभसंजल० विसेसाहियं पयडिविसेसेण ।

१
३
४

 पृ० ३१०.

सादासादाणि सरिसाणि विसेसाहियाणि^१ । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण । एवमोघुक्कस्सप्पावहुगं गदं ।

पुणो णिरयगदीए उक्कस्सप्पावहुगं उच्चदे—

उक्कस्सपदेसोदयो सम्मामिच्छत्तेण (सम्मामिच्छत्ते) थोवो । पृ० ३१०.

कुदो ? गुणिदकम्मंसियणेरइयो अंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं पडिविज्जिय पच्छा सम्मामिच्छत्तं गंतूणावलयमेत्तकालं गदस्स उदिण्णगुणिदकम्मंसियस्स उक्कस्सणिसेयगोउच्छ-पमाणत्तादो । तं चेदं

स ३२
७ ख ७७

 ।

पयला०

स ३२
७ ख ७७

 संखेज्जगुणा । पृ० ३१०.

१ मूळग्रन्थे तु 'सादासादाणं विसे०' इत्येवविधः पादोऽस्ति ।

कुदो ? सो चेव गुणिदकम्मंसियो णिहोदयगोउच्छ्राए उवरि सेसणिहाचउक्काणं उदय-
गोउच्छ्राणं पंचमभागं पलिच्छणपयडिअणुसारेण विसेसाहियेण थियउक्कसंकतेण(संकमेण)
संकमदि त्ति पक्खत्ते एत्तियं जादत्तादो । स ३२ । सेसणिहाचउक्काणं अणंतिमभागं सव्वघादीसु
संकमदि । सेसबहुभागं देसघादीसु ७ ख ५ । संकमदि त्ति वयणेण विरोहो कथं ण भवे ? ण
भवे । कुदो ? देसघादीणमेस संकमणियमुवलंभादो, ण सव्वघादीणमेस णियमो । जदि एवं
तो पक्ख(क)मम्मि किमट्टं ण उत्तं ? ण, बंधोदयाणमेगसहवत्ताभावादो ।

णिहाए० विसेसाहिया । पृ० ३११.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

मिच्छत्तस्स असंखे० गुणं । पृ० ३११.

कुदो ? उदीरणदव्वेण सादिरेयत्तप्पाओंगुक्कस्सणिसेगेण अब्भहियदुविहसंजमगुणसेडि-
दव्वस्स अपज्जत्तकाले उदीरणदव्वस्स गहणादो । तं चेदं । स ३२१२६४ ।

अणंताणुबंधीणं संखेज्जगुणं । पृ० ३११. ७ ख १७ ओ २८५ ।

कुदो ? सादिरेयदुविहसंजमणसेडिसीसयदव्वं सगेगकसायपडिबद्धं ट्विय सगसेसतिविह-
कसाय-दुविहगुणसेडिदव्वं मेल्लावणट्टं चउहिं गुणिदमरज्जत्तकाले उदिण्णदव्वगहणादो । तस्स
संदिट्ठी । स ३२१२६४४ ।
७ ख १७ ओ २८५ ।

केवलणाणावरणं असंखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? सादिरेयदुविहसंजमगुणसेडिसीसयदव्वेण अब्भहियदंसणमोहक्खवणगुणसेडिदव्वानं
अपज्जत्तकाले उदिण्णाणं गहणादो । तं चेदं । स ३२१२६४ ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । ७ ख ओ २८५ । पृ० ३११.

केत्तियमेत्तेण ? चउवभागमेत्तेण ? कुदो ? पुव्वुत्तसादिरेयमेत्ततिविहगुणसेडिसीसय-
पमाणकेवलदंसणावरणस्सुवरि पंचणहं णिहाणं तिविहगुणसेडिसीसयदव्वानं समूहस्स चउवभागं
थियउक्कसंकमणसंकमिदत्तादो । तं चेदं । स ३२१२६४ ।

अपच्चक्खाणावरणं विसेसा- ७ ख ओ प ८५४ । हियं । पृ० ३११.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जभाग- २२ । मेत्तेण । कुदो ? असंजदसम्मा-

दिट्ठिमि अणंताणुबंधिविसंजोयणाए अणंताणुबंधिचउक्कदव्वस्स बारसमभागं पलिच्छिदकसाय-
दव्वस्स दंसणमोहं खविदस्स पुव्वुत्तविहगुणसेडिसीसयदव्वं सगसेसकसायतिविहगुणसेडि-
सीसयदव्ववागमणट्टं चउरूवगुणदमेत्तपमाणत्तादो । कथं(?)अणंताणुबंधीणमणंतिमभागं सव्व-
घादीसु, बहुभाग देसघादीसु संकमदि त्ति वयणेण विरोहो किं ण भवे ? ण, तव्वंधदव्वपडिबद्धा
णियमं संतदव्वं हीणं संभवदि त्ति उत्तुत्तरत्तादो । एदेण अप्पाबहुगेण ओहिदंसणावरणखओव-
समजीवो तस्स दव्वं केवलदंसणावरणे थियउक्कसंकमेण थोवं संकमदि त्ति जाणाविदं, अण्णहा
अप्पाबहुगं(ग-)विवज्जासं होज्ज । तस्स ट्ववणा । स ३२१२४६४ ।

पच्चक्खाणावरणं विसेसाहियं । ७ ख १७ ओ २८५ । पृ० ३११.

कुदो ? एत्थ पुव्वुत्तकमो सव्वो चेव संभवदि, किंतु पयडिविसेसेण विसेसाहियं
जादं ।

सम्मत्त० असंखेज्जगुणा । पृ० ३११.

कुदो ? दंसणमोहणीयसव्वदव्वेण कदकरणिज्जचरिमगुणसेढिसीसयगोउच्छगहणादो

स ३२१२६४ |
७ ख १७३ ओ २८५ | गिरयाउगमणंतगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? ओघम्मि उत्तकमेणुप्पणउदयगोउच्छस्स समयपवद्धं संखेज्जदिभागमेत्तस्स अघादिकम्मदव्वगहणादो । तं चेदं स ३२ |

ओहिणाणवरणं संखेज्ज- ८७ गुणं । पृ० ३११.

कुदो ? संपुणसगसमयपवद्धपमाणत्तादो । किमट्टं गुणसेढिगोउच्छा ण घेप्पदे ? ण, ओहिणाणावरणखओवसमजुत्तजीवेसु खओवसमगदीसुप्पज्जणाहिमुहेसु च उदयायं(उदयं)पविस्स-माणसादिरेयगुणसेढिगोउच्छाए जहाणिसेगगोउच्छा चेव पविस्सदि, सेमगुणसेढिगोउच्छा पुण सजादीए उवरि थिउक्कसंकमेण विभंजिय संकमंति त्ति ण गहिदा । कथ एस णियमो ? ण, एदस्स कम्मस्स खओवसमो परमाणोदयवहुत्तमणुभागोदयवहुत्तं च ण सहदि त्ति, सेसाणं कम्माणं खओवसम(मा) अणुभागवहुत्तं चेव ण सहंति त्ति सहावगुणो चेवे त्ति आइरियोवएसादो । एदं समसंकममिदि किण्ण उत्तं ? ण, एगगोउच्छसंकमणियमाए थिउक्कसंकमववएसादो । तं चेदं

स ३२ |
७४ | ओहिदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? एदस्स वि तिण्णिणियमे संते वि पयडिविसेसेण संखेज्जदिभागेणाहियं जादत्तादो स ३२ |
७३ | पुणो सूचिदपरघादं असंखेज्जगुणं । कुदो ? अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेढिगह-णादो । तेसिं दुप्पयारेण विभंजणेसुप्पणंकाणं एसा ट्ठवणा स ३२१२६४ | स ३२१२६४ |
पुणो उस्सास-दुस्सराणि वि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पयडि- ७२७ ओ २८५ | ६२९ ओ २८५ |
विसेसेण विसेसाहियाणि होंति । २ २

वेगुव्वियसरीरमसंखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? पुव्वुत्ततिप्पयारगुणसेढिसीसयदव्वस्स पुव्वं व दुप्पयारेण विभंजिदस्स गिरएसुप्प-ज्जिय सरीरगहिदस्स तेवीस-पंचवीसमभागस्स तिभागत्तादो । तं चेदं स ३२१२६४ | स ३०१२६४ |
७२३ ओ २८५ | ७२५ ओ २८५ |
२२ २२

पुणो सूचिदत्तव्वंधण-संघादाणं पि एवं चेव विभंजणं । णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहिया ।

तेजइगं विसेसाहियं । पृ० ३११.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण । कुदो ? विग्गहं करिय गिरएसुप्पणस्स तिविहगुण-सेढिसीसयदव्वस्स वीस-बावीसभागस्स दुभागपमाणत्तादो । तस्स ट्ठवणा स ३२१२६४ | -
७२० ओ २८५ |
२२

स ३२१२६४ |
७२२ ओ २८५ |
२२ | कम्मइगं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

पुणो सूचिदतेसिं बंधण-संघादाणं चउण्णं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पयडिविसेसेण

विसेसाहिया ह्येति । पुणो सूचिदहुंडसंठाण-वेगुठ्वियसरीरंगोवंग-उवघाद्-पत्तयसरीराणं कम्मइगादो संखेज्जगुणं अहोदूण विसेसाहियाणि ह्येति ।

णिरयगदी संखेज्जगुणा । पृ० ३११.

कुदो ? पुठ्विल्लेण समाण सामित्ते संते वि एत्थ दुभागाभावादो । पुठ्विल्लसूचिदपयडी-
ह्येति विसेसाहियं । पुणो सूचिदपंचिदियजादि वण्णचउक्क-अगुरुलहुग-णिरयगदिपाओग्गाणुपुठ्वी-
तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दूभगणादेज्जाणं उक्कस्सपदेसुदयो कमेण विसेसाहिया
ह्येति । पुणो वण्ण-गंध-रस-फासाणं भेदवियप्पं जाणिय वत्तव्वं । अप्पावहुगाणि य पुणो दृवेयव्वं ।

अजसगिती विसेसाहिया । पृ० ३११.

कुदो ? एदस्स पुठ्विल्लेण समाणसामित्ते संते वि पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं ।
तत्थं कट्टवणा स ३२१२६४ स ३२१२६४ । एत्थ सूचिदणिमिणं विसेसाहियं
पयडिवि- ७२० ओ २८५ ७२२ ओ २८५ सेसेण ।
22 22

णउंसक० संखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? तिण्णं वेदाणं गुणसेट्ठिसीसयदव्वस्स एगट्ठं कादूण गहणादो स ३२१२६४ ।
कथं दोरुवस्स संखेज्जगुणत्तं ? ण, एदं मोहणीयपडिवद्धदव्वत्तादो सादियेय- ७१० ओ २८५ ।
दुगुणं होदि त्ति उत्तां । 22

दाणंतराइयं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? अंतराइयमूलपयडिदव्वादो मोहणीयमूलपयडि[दव्वं]विसेसाहियमिदि एदं विसेसाहियं
जादं । अण्णहा संखेज्जगुणं दिस्समाणं होज्ज । तं चेदं स ३२१२६४ । अहवा एवं वा वत्तव्वं ।
त जहा— मोहणीयस्स देसघादिसंबंधिणगुणसेट्ठि- ७५ ओ २८५ गोउच्छं कसाय-णोकसाप्पु
विभंजिय पुणो वि णोकसायदव्वं पंचणोकसाप्पु 22 विभजिदे तत्थ पढमं
बहुभागं, तं चेदं दव्वं होदि । पुणो अंतराइयसंबंधिणगुणसेट्ठिगोउच्छं पुठ्विल्लादो विसेसहीणं
पंचतराइयोसु विभंजिदे तत्थतिमं सव्वत्थोव्वं दाणांतराइयद राइय)दव्वं होदि । तदो तं पुठ्विल्ल-
वेदभागं एदस्मि सोधिदे एदं जादे त्ति विसेसाहियं जादं । तेसिं दृवणा

स ३२१२६४८८	स ३२१२६४८८	स ३२१२६४८	स ३२१२६४
७७२८५९२९५	७ ओ २८५९२९९	७ ओ २८५९५	७ ओ २८५९९९९
22	22	22	22

लाहांतराइयं विसेसाहियं । भोगांतराइयं विसेसाहियं । परिभोगांतराइयं
विसेसाहियं । वीरियांत० विसेसाहियं । पृ० ३११.

एदाणि पयडिविसेसावेक्खाणि ।

भय-दुगुंछाणि विसेसाहियाणि । पृ० ३११.

कुदो ? भय-दुगुंछाणं अण्णोण्णस्सुवरि अण्णोण्णथिउक्कसंक्रमेण संकंते उक्कस्सदव्वं
जादत्तादो । दुगुंछादो भयं पयडिविसेसेण विसेसाहियं दिस्समाणं कथं सरीरसत्थं(सरिसत्तं)? ण,
भएणुदीरिज्जमाणदव्वम्हि दुगुंछस्स ओकड्डियदव्वम्हि दुगुंछाउदीरिज्जमाणदव्वमेत्तं घेत्तूण
पक्खिविय भयं उदीरिदे एवं दुगुंछाउदीरिदव्वपमाणं परूवेदव्वं । तदो दोण्हं उदीरणदव्वं सरिसं
चेव होदि त्ति सिद्धं । एवं सग-सगजादिपडिवद्धकसायचउक्काणं सरीरसत्तं(सरिसत्तं) वत्तव्वं ।
एवं संते हस्सादो सोगं, सोगादो रदी, रदीदो अरदीणं विसेसाहियं । तं कथं घडदे ? ण, उत्तेदाणं

चेव एरिसणियमो, ण सेसाणं । कथमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेवारिसादो । तेसिं डव्वणा

स ३२१२६४२
७१० ओ २८५
२२

वीरियंतराइएण समाणं दिस्समाणस्सेदाणं कथं विसेसाहियत्तं ? ण, मोहभागत्तादो ।

हस्स० विसेसाहिया । पृ० ३११.

कुदो ? ओघम्मि उत्तकारणत्तादो । सुगममेदं । तस्स डव्वणा

स ३२१२६४२
७१० ओ २८५
२२

सोगं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

रदीए विसेसाहियं । अरदीए विसेसाहियं । पृ० ३११.

एदाणि पुव्विहसंकेतवलेण सुगमाणि हांति ।

मणपञ्जवणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? पुव्वुत्तकमेण ओहिणाणावरणगुणसेढिसीयदव्वस्स तिभागं पलिच्छिदत्तादो । तेसिं डव्वणा

स ३२१२६४४
७३ओ २८५
२२

सुदणाणावरणं विसेसाहियं । मदिणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

एदाणि सुगमाणि । कुदो ? ओहिदंसणावरणसीसयदव्वस्स दुभागं पुव्वुत्तकमेण पलिच्छिदत्तादो । तं चेद

चक्खुदंसण०

स ३२१२६४४
७२ओ ८५
२२

विसेसाहियं । पृ० ३११.

सुगमेदं ।

संजलणकसायं^१ अण्णदरं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? त्रिविक्खिदकसायस्स त्रिविहगुणसेढिसीसयदव्वं चउहिं गुणिएणुप्पणरासि-समाणात्तादो । किंतु मोहणीयदव्वामिदि विसेसाहियं जादं

णीचागोदं विसेसाहियं । पृ० ३११.

स ३२१२६४४
७८ ओ २८५
२२

कुदो ? गोदुक्कस्सगुणसेढिसीसयदव्वपमाण-विसेसाहियं जादं

सादं

स ३२१२६४४
७ ओ २८५
२२

विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

असादं विसेसाहियं । पृ० ३११.

पयडिविसेसेण, णिरयगदीए असादं बहुगं उदीरिदे त्ति वा । एवं णिरयगदीए उक्कस्सप्पा-बहुगं गदं ।

(पृ० ३११)

पुणो त्रिविक्खिगदीए अप्पावहुगपरूवणा सुगमा । णवरि सम्मामिच्छत्त-पयला-णिहा-पयलापयला-णिहाणिहा-थीणगिद्धिपयडीणं त्रिविक्खिसंजदासंजदसंजमासंजमगुणसेढी गेण्हि-दव्वा । मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं दुविहसंजमगुणसेढी गहेयव्वं । केवलणाणावरण-केवलदंसणा-वरण-अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरण-सम्मत्तस्स च दंसणभोहक्खवणगुणसेढीयो

१ मूलग्रन्थपाठस्त्वेवंविधोऽस्ति— मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खु० विसे० । संजलणकसाय० ।

चेत्तच्चाओ । तिरिक्खाउअस्स पुब्बं व तद्दुविहपयारेणुप्पणसमयपवद्धस्स संखेज्जदिभागं वत्तव्वं । वेगुत्तियसरीरम्म विगुत्तवणमुट्ठाविदसंजदामंजदतिरिक्खस्स संजमासंजमगुणसेट्ठिं भाणिदव्वं । अजसगित्ति-इत्थि-णत्तुंमयवेद-उच्चागोदाणं अणताणुबंधीविदसंजोयगुणसेट्ठिं गहिदूण वत्तव्वं ।

कथं तिरिक्खेवमु उच्चागोदस्स संभवो ? ण, पग्गहेण पग्गाहिदस्स होदि त्ति पुव्वमेव परूविदत्तादो ।

ओगालिय-तेजा - कम्मइयसरीर-तिरिक्खगदि-जसगित्ति-पुरिसवेदाणं [दाण-]लाभ - भोग-परिभोग-वीरियंतराइय-भय-दुगुंल-हस्स-मोग-रदि-अरदि-ओहिणाणावरण-मणपज्जवणाणावरण-ओहिदंसणावरण - सुदणाणावरण-मादणाणावरण-चक्रवु-अचक्रवुदंसणावरण-संजलण-णीचा-गोद-मादासादाणं दुविहमंजमगुणसेट्ठि-कदकर्माणज्जगुणसेट्ठीए सह तिण्णगुणसेट्ठीयो होंति त्ति वत्तव्वं । णवरि ओहिणाणावरण-मणपज्जवणाण-ओहिदंसणा-सुदणाणावरणाणं इदि एत्थ ताव एदेसिं चउण्णं पयडीणं विभंजणकमो उच्चदे—

दंसणावरणस्स देसघादिउदयगोउच्छं पुव्वुत्ततिविहगुणसेट्ठिपमाणं तिण्णं देसघादिपय-डीणं यथामंभवं विभंजदे तत्थनिमं ओहिदंसणावरणदव्वं होंदि । पुणो ओहिणाणावरणखओव-समजुत्तजीवम्म णाणावरणदेसघादिउदयं करेतपुव्वुत्ततिविहगुणसेट्ठिगोउच्छं समयपवद्धपरिहीणं मदि सुद-मणपज्जवणाणावरणमु जहाकमं विभंजदे तत्थनिमं मणपज्जवणाणावरणं(ण-) भागं होंदि । तदा ओहिणाणावरणादो चउण्णं पयडीणं विभंजणमुप्पणभेदो मणपज्जवणाणावरणं विसेसाहियं जादं । तत्तो ओहिदंसणावरणं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? समयपवद्धस्स तिभागमेत्तेण । तत्तो सुदणाणावरणं विसेसाहियं पयडीविसेसेण । मुगमाणि ।

णवरि एत्थ तिरिक्खाणं सादासादाणं दोण्हं सर्गित्तणं अप्पज्जत्तकाले मुह-दुक्खाणि तिरिक्खगदीए साधारणा त्ति कारणं वत्तव्वं । अहवा भय-दुगुंलाणं वत्तव्वं । पुणो सूचिद-पयडीणं णामस्स तेसि दुप्पयारभागहारसरूवं वा जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३१२)

पुणो तिरिक्खजोणिणाए एवं चेव वत्तव्वं । णवरि सम्मामिच्छत्तप्पहुडि जाव थीणगिद्धि त्ति तिरिक्खाणं कदमंजमामंजमगुणसेट्ठीयो, मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं दुविहसंजमगुणसेट्ठीयो । पुणो सम्मामिच्छत्तप्पहुडि जाव सादासादे त्ति पयडीणं अणताणुबंधीणं विसंजोयगुणसेट्ठीयो होंदि त्ति वत्तव्वं । णवरि वेगुत्तियसरीर-संजमासंजमगुणसेट्ठी होंदि त्ति भाणिदव्वं ।

(पृ० ३१३)

पुणो मणुसगदीए संभवंतपयडीणं ओघभगो चेव । णवरि मिच्छत्तप्पहुडि जाव अणताणु-बंधिचउक्के त्ति दुविहसंजमगुणसेट्ठिसीसयं, अपक्खवाणावरण-पक्खवाणावरण-दुविहसंजमगुण-सेट्ठि-दंसणमोहक्खवणगुणसेट्ठि त्ति तिण्णं गुणसेट्ठीणं, पयला-णिदाणं उवसंतगुणसेट्ठीणं, केवल-णाणावरणाणं केवलदंसणावरणाणं खीणकसायगुणसेट्ठीणं, पुणो अघादीणं मणुस्साउगस्स पुब्बं व दुविहपयारे उप्पणगोउच्छं, वेगुत्तिय-आहारसरीराणं संजमगुणसेट्ठीणं, अजसगित्ति-णीचा-गोदाणं दंसणमोहक्खवणगुणसेट्ठिसिद्धिदुविहसंजमगुणसेट्ठीणं, उण्णोकसायाणं अपुव्वखवगस्स चरिमसमयम्मि उदयगदगुणसेट्ठीणं, इत्थि-णउंसय-पुरिसवेद-कोध-माण-मायासंजलणाणं अणियट्ठि-गुणसेट्ठीणं उदिण्णाणमुवरुवरि ट्ठिदाणं, ओगालियसरीरप्पहुडि जाव सादासादे त्ति पयडीण-मोघपरूविदगुणसेट्ठीणं च गहणं कायव्वं । एत्थ सूचिदपयडीणं सव्वाणं कारणं पुब्बं व जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३१४)

पुणो देवगदीए अप्पावहुगपरूवणा सुगमा । णवरि सम्माभिच्छत्त-पयला-णिहाणं गुणिद-
कम्मंसियगोउच्छा, मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं दुविहसंजमगुणसेट्ठिगोउच्छं, अपक्खवाण-पक्खवाणा-
वरण(-वरणाणं) अंतरकरणदुचरिमसमयअणियट्ठिमि कदगुणसेट्ठिसीसयगोउच्छं, केवलणाणा-
वरण-केवलदंसणावरण० उवसंतकसायस्स उकम्मसगुणसेट्ठिगोउच्छं, सम्मत-देवाउग-ओहिणाणा-
वरण-ओहिदंसणा[चरणा]णं ओघकारणासिद्धगोउच्छाणं, अजसागात्त-इत्थिवेदाणं अणंताणुबंधि-
विसंजोत्रणगुणसेट्ठिगोउच्छं, छणगोकसायागमंतरकरणदुचरिमसमयअणियट्ठीणं कदगुणसेट्ठीणं,
पुणो पुग्गिसवेद० जाव सादासादे त्ति ताव पयडीणं कमेण अणियट्ठिगुणसंपराइय-उवसंत-
कसायाणं कदगुणसेट्ठिगोउच्छाणं संभवं जाणिय वत्तव्वं । णवरि देवगदीए असादादो सादं
विसेसाहियं त्ति भाण(भाणि)दस्सेदस्स कारणं देवगदीए सुहपयडिवद्वसादादयं विसेसाहिए[ण]
अहियं होदि त्ति वत्तव्वं । पुणो सूचिदणामपयडीणं तेषिं भागहारसरूवेण दुण्यारेण पवेसिज्ज-
माणपयडीणं च जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३१५)

असणीसु अप्पावहुगपरूवणं सुगमं । णवरि पंचविहणिददाणं गुणिदकम्मंसियस्स एग-
गोउच्छमुचरिमपयडीणं दुविहसंजमगुणसेट्ठिगोउच्छाणं गहणं कायव्वं । णवरि उवचारादय-
णिवंधणं णिरय-मणुस-देवगदीणं णिरय-मणुस-देवाउणं उच्चागोदाणं च उदयगोउच्छपसाणं
उच्चदे । तं जहा— तिण्णं गदीणं पुह पुह संखेज्जावलियमेत्तसमयपवद्धाणं बंधगद्धावसेण
देव-मणुस-णिरयगदीणं कमेण संखेज्जगुणाणं दिवडुगुणहाणीए खंडिदेयखंडमेत्ताणि हांति ।
पुणो तिण्णमाउगाणं असणिसंबंधीणं आवलियाए असंखेज्जादिभागमेत्तबंधगद्धेण गुणिदसमय-
पवद्धाणं सग-सगजहणगाउगेण खंडिदेयखंडमेत्ताणं सादियेयाणं, उच्चागोदस्स संखेज्जावलय-
मेत्तसमयपवद्धाणं अंतोमुहुत्तव्वेल्लणकालेणुपण्णंतोमुहुत्तचरिमफालीए खंडिदेयखंडमेत्तपमाणं
होदि त्ति वत्तव्वं । कथमेदं णव्वे ? एदमेव अत्थं गंथपरूवणाए सिद्धत्तादो णव्वे । एत्थ
सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं । एवमुक्कम्मप्पावहुगपरूवणा गदा ।

(पृ० ३१८)

एत्तो जहणपदेसुदयप्पावहुगं उच्चदे । तं जहा —

जहणुदयो मिच्छत्ते थोवो । पृ० ३१८.

कुदो ? उवसमसम्मादिट्ठितप्पाओग्गुकम्मसंकिलेसेण मिच्छत्तं गदपटममए ओकड्डि-
यूण असंखेज्जलोगपडिभागियदव्वं चेत्तणुदयममयएपट्टि आवलयमेत्तकालं त्रिसेसंमहाणं(ण)
कमेण रचिय तदुचरिमणिसेगे असंखेज्जगुणं पक्खवाविय तदुचरि त्रिसेसहीणं(ण)कमेण संच्छुहिय
आवलियं गदस्स उदिण्णदव्वगहणादो । तं पि कुदो ? तत्थतणगोउच्छविसेसादो ममयं पडि
अणंतगुणसंकिलेसेणुदीरिज्जमाणदव्वमसंखेज्जगुणहीणं होदि त्ति उवदंसमुवलंभिय उत्तादो । तस्स
संदिट्ठी

स ३२३
७ ख ओ २४

सम्माभिच्छत्ते असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? एत्थ पुत्तं व सव्वकगियसंभवादो । कथं ? मिच्छत्तदव्वादो असंखेज्जगुणहाण-
मेत्तसम्माभिच्छत्तदव्वेहिंतो उदीरिज्जमाणदव्वमसंखेज्जगुणं होदि । उवसमसम्मादिट्ठा सम्मा-
भिच्छत्तं गेणहमाणसमये मिच्छत्तपडिवज्जमाणसंकिलेसादो अणंतगुणहाणेण तप्पाओग्गसंकिलेसेण
दंसगमाहगीयमाकड्डुमाणा मिच्छत्ताकड्डुभागहारादो असंखेज्जगुणहाणेगोकड्डुणुदयावलिय-

बाहिरे दृविय पुणो असंखेज्जलोगपडिभागियमुदयावलयम्भंतरे रचिदे त्ति । केत्तियो भागहारस्स गुणहीणपमाणो ? गुणसंकमणभागहारादो असंखेज्जगुणो ।

अहवा, ति विहदंमणमोहणीयमोकाड्डिय उदयावलयवाहिरे सग-सगसरूवेण रचिय पुणो वि ति विहदंमणमोहणीयदव्वाणमसंखेज्जलोगलोग(मसंखेज्जलोग)पडिभागीणं गहियमेगट्टं करिय सम्मामिच्छत्तसरूवेण उदयावलयम्भंतरे रचिदो त्ति वत्तव्वं । कथमेवं रचिदो त्ति णव्वदे ? अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकोह-माण-माया-लोहाणं पुह पुह सग-सगचउक्काणं सरिसत्तणहाणुववत्तीदो णव्वदे । तस्स संदिट्ठी ।

सम्मत्ते असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

स २१२
७ ख गु० ओ ३ २४
२

कुदो ? पुव्वुत्तदुविहकारणमेत्थ वि सभवादो । किंतु पुव्विल्लं सक्किलेसं एसा विसोहि त्ति दव्वमसंखेज्जगुणं ओकाड्डिदि त्ति वत्तव्वं । तं चेदं ।

[अ]पच्चक्खाणाणं अण्णदरमसंखेज्जगुणं ।

२१२
७ ओ ख गु = २४
२२

पृ० ३१८.

कुदो ? खविदकम्मंसियो उवमंतकसायो देवलोगं गदो सतो तत्तो ओकाड्डिय उदयावलय-वाहिरे रचिय पुणो तत्थ असंखेज्जलोगपडिभागियगहिददव्वं उदयावलयम्भंतरे रचियूणावलयं गदम्म जहण्णोदयं जादत्तादो । एदं चउण्णकमायाणं सरिसत्तणं भण्णमाणेण णव्वदि^१ चउण्णं कसायाणं असंखेज्जलोगपडिभागिणं एगट्टं कादूण रचेदि त्ति ।

पच्चक्खाणावर० विसेसाहियं । पृ० ३१८.

कुदो ? एत्थ वि पुव्वुत्तासेसकारणे संते वि पर्याडिविसेसेण विसेसाहियं जादं । एदं खवगुवसमसेदिपरिणामाणं व सेसपरिणामाणि दव्वविसेमणवेक्खियूणाकड्डिदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो अणंताणुबंधीणं अण्णदरं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? खविदकम्मंसिया(यो) सम्मत्तं पडिवज्जिय अणताणुबंधिचउक्कं विसंजाइय पुणो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुहुत्तेण सम्मत्तं घेत्तूण वेन्हावट्टिसागरोवमं सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं पडिवाज्जिय आवालयं गदस्स जहण्णोदयाणसेयं जादत्तादो । तं चेदं ।

पयलापयला० असंखेज्जगुणा । पृ० ३१८.

स २
७ ख १७ उ अ ६६२
२७।२७

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? खविदकम्मंसियस्स पच्चिमदेवे-हिंतो एइदिमुप्पज्जिय सरीरपज्जत्ति समाणिदस्स पचलापचलस्स उदयमागच्छमाणममाणगोउच्छाए उवरि सेसअसंखेज्जदिभागं विभंजणभागहारमिदि विवक्खाभिप्पाएण विभंजिदमिदि जादसमाण-पुंजेसु पक्खित्तसु सेसस्स असंखेज्जभागाणि अत्थि, ताणि कमेण थीणगिद्धि-णिहाणिहा-पयला-पयला-णिहा-पयला-चक्खु-वचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणे त्ति असंखेज्जगुणहीणाणि हांति । तत्थ सेसणिहाचउक्केसु पक्खित्तदव्वाणं असंखेज्जभागाणि पक्खिविय तम्मि पंचण्णं गुणसंकमेण गददव्वमवर्णदे सेसमुदयगदणिसेगपमाणं होदि त्ति । तस्स दव्वणा ।

स २
७ ख ५

णिहाणिहा० विसेसाहिया । पृ० ३१८.

णिहाणिहाये विभंजणाम्ह उप्पणसमाणधणम्मि सेसणिहाचउक्काणं तस्सबंधिसमाण-

१ हस्तलिखितप्रती 'भण्णमाणे ण णव्वदि ?' इत्येवंविधोऽत्र पाठः प्राप्यते ।

धणाणं पंचमभागं पक्खिविय ताणं पक्खित्तचउणं पक्खेवाणं असंखेज्जभागा च पक्खित्ते पुव्विल्लेहि पक्खित्तद्ववादं विसेसाहियं हांदि । तस्मिं पंचणिहाणं गुणसंकमेण गदद्वं परिहीणे कदे उदयगदगोउच्छपमाणं जादत्तादो । ते केत्तियेणहियं ? पयडिाविसेसमेत्तेण । तस्स दृवणा

ख
७ म् ५ । थीणगिद्धी विसेसाहिया । पृ० ३१८.

एत्थ वि पुव्वं व विसेसाहियत्तं वत्तव्वं ।

केवलणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१८.

कुदो ? पक्कमस्मिं पुव्विल्लाहिप्पाएण विभंजदस्मिं केवलणाणावरणसमाणधणादो थीण-गिद्धीए समाणधणमेगरूवचउव्भागद्वभाहियदुरूवेण खंडिदेयखंडपरिहाणं हांदि । सेसणिहा-चउक्काणं समाणधणाणं पंचमभागं पक्खित्तं केवलणाणावरणस्स समाणधणेण सरिसं जादं । पुणो केवलणाणावरणस्स समाणधणस्मिं पक्खित्तपगडिाविसेसादो थीणगिद्धीस्मिं पक्खित्तपयडि-विसेसं सेसणिद्दाचउक्कस्मिं पक्खित्त[त्त]पगडिाविसेसाणं असंखेज्जभागसहिदं असंखेज्जं हांदि । कुदो ? विभंजणकमेण तहांवलभादो । पुणो तस्मिं पंचणं गुणसंकमेण गदद्वमवणिदे जं सेसं तं केवलणाणावरणसमाणधणस्मिं पक्खित्तविसेसादो अप्पामिदि केवलणाणावरणं विसेसाहियं जाद ।

पयला विसेसाहिया । पृ० ३१८.

कुदो ? खविदकम्मंभियो वेमाणियदेवेमुप्पज्जिय पज्जतीयो समाणिय उक्कस्सट्ठिदीसु उक्कड्डिय आवलियं गदस्स सेसणिद्दाचउक्काणं सादिरेयपंचमभागं पत्ति(डि)च्छिदस्सगेग-णिसेगत्तादो । कथं पक्कमस्मिं(पयलस्मिं) थीणगिद्धीदो विसेसाहियाणं (?) विसेसाहियकेवलणाणा-वरणादो विसेसाहियं जादं ? ण, पयलस्म समाणधणस्मिं पुव्वं व सेसणिद्दाचउक्काणं समाण-धणाणं पंचमभागं पक्खित्तं केवलणाणावरणसमाणधणेणसरिसं जादं । पुणो केवलणाणावरणस्मिं पक्खित्तविसेसादो पयलस्मिं पक्खित्तविसेसं सेसणिहाचउक्काणं पक्खेवाणं असंखेज्जभाग-सहिदं थीणगिद्धिपक्खेवसमाणं जादत्तादो असंखेज्जगुण(णं) जादं नि तस्मिं पंचण गुणसंकमेण गदं दव्वं सोहिय पुण थीणगिद्धितियादो आगदगुणसंकमदव्वस्स संखेज्जभागं पक्खित्तं केवल-णाणावरणादो विसेसाहियं जादं ।

णिहा विसेसाहिया । पृ० ३१८.

कुदो ? पुव्विल्लज्जकिरियादो जोइज्जमाणे पयडिाविसेसेण अहियं जादत्तादो ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१८.

कुदो ? पुव्विल्लस्मिं पाओग्गकिरियं णिहाए केवलदंसणावरणाए कदे तत्थ केवलदंसणा-वरणं थोवं जाद । जादे पंचविहणिहाहितो आगदगुणसंकमदव्वं पक्खित्ते विसेसाहियं पच्छा जादं । तं चेइदिगसुप्पज्जिय सरीरगहिदस्स णिहा-पयलाण एककदरेण सह वेदिज्जमाणे हांदि त्ति वत्तव्वं ।

दुगुंला अणंतगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? उवसंतकसायो देवेसुप्पज्जियूणावलियकालं गदस्स असंखेज्जलोगपडिभागियणियेय-गोउच्छगहणादो । एदं पुण देसघादित्तादो अणंतगुणं जादं । तं चेदं

स २१२१६
७१० आ ३ २४१६

भयं विसेसाहियं । हस्सं विसेसाहियं । रदि० विसेसाहियं । पुरिसवेदं
विसेसाहियं । पृ० ३१८.

पदाणि सुगमाणि, पर्याडिविसेसाहियत्तादो ।

संजलणाए विसेसाहिया । पृ० ३१८.

केत्तियमेत्तेण ? चउवभागमेत्तेण । तं चेदं

स २१२१६
७८ आ २४१६

 ।
ओहिणाणावरणं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोमा । कुदो ? खविदकम्मंसियो वेमाणियदेवेसुप्पज्जिय उक्कम्मसिट्ठिदि वंधिय तम्मि उक्कट्टिय आवलियं गदस्स जहण्णगोउच्छं होदि त्ति । तस्स पमाणं ओकट्टिउक्कट्टणवसेण परपयट्ठिसंक्रमदसेण उक्कम्मसिट्ठिदिवधम्मि उक्कम्मसिणसेयादो असंखेज्जगुणहीणं होदूण ओहिणाणावरणवओवसमजुत्तजीवस्स उदयावर्वालियं पवेसिय उदयसरूवेण ट्ठिदणिसेय-पमाणं होदि । तस्स संदिट्ठी

स २
७४६३०० २
९

ओहिदंसणावरणं

स २
७४६३०० २
९

 विसेसाहियं । पृ० ३१८.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण । तं चेदं

स २
७३६३०० २
९

 ।
णिरयाउगमसंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? सत्तमपुट्टविणेग्गइयाणं असादोदयसहगदाणं चरिमसमयगोउच्छगहणादो ।

स २२७
८६३००

 ।
देवाउगं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? सुहपर्याडित्तादो । सादवहुलाणं ओलंबणवहुत्तादो ।

तिरिक्खाउगं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१९.

कुदो ? तिपल्लिदोवमस्स चरिमगोउच्छगहणादो । को गुणगारो ? तिपल्लिदोवमादो उवर्गिमत्तेत्तीमभागोवमणाणागुणहारिणसलागणं अण्णोणगव्वत्थरासी । तं चेदं

स २२२६
८६३००९

 ।
मणुसाउगं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? ओलंबणदव्वमस्स अप्पत्तादो ।

ओरालियमरीरं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो एइंदियो सण्णपंचिदि सुप्पज्जिय छप्पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूणेक्कत्तीसं वेदयमाणो उक्कम्मसिट्ठिदि वंधिय तत्तुक्कट्टिय आवलियं गदस्स जहण्णदव्वं जादत्तादो । तं चेदं

स २
१२९२

 ।

तेजइगं

स २
१२९२

 विसेसाहियं । कम्मइगं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? पर्याडिविसेसेण । पुणो सूचिदतव्वंधण-संघादाणं अप्पावहुगकमं जाणियूण वत्तव्वं ।

वेउव्वियमरीरं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो एइंदियो सण्णपंचिदि सुप्पज्जिय पज्जत्तीयो समाणिय उज्जोवो-दण्णुत्तरसरीरं विगुट्टिय उक्कम्मसिट्ठिदि वंधिय तम्मि उक्कट्टिदस्स जहण्णं होदि त्ति

स । ३ ।
७२८३

 ।
केत्तिएण विसेसाहियं ? संखेज्जभागेण । पुणो एत्थ सूचिदतव्वंधण-संघादाणं पि

स । ३ ।
७२८३

 ।
जाणिय वत्तव्वं ।

आहारसरीरं विसेसाहियं' संखेज्जिभा० । एत्थ विभंजणकमं दुप्पयारं वत्तव्वं ।
एदस्सत्थविभंजणकमं जाणिय वत्तव्वं । पुणो सूचिदत्तव्वंधण-संधादाणं पि जाणिय विसेसाहिय-
कमेण वत्तव्वं । तं चेदं स २
७२७३ ।

तिरिक्खगदी संखेज्जगुणं । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियसण्णस्स इगितीसोदयस्स उक्कस्सट्ठिदीए उक्कड्डिय आवालयिकालं
गदस्स जहणं जादत्तादो स २
७२८३ । को गुणगारो ? सादिरेयदारूवाण ।

पुणो सूचिदविगल्लिदिय-पंचिदियजादीणं छस्संटाणाणं आंगलियगोवंग-छस्संघडण-वण-
चउक्क-अगुरुगलहुगचउक्क-दोविहाय[गड-]-तम-वादर-पज्जत्त-पत्तयसरीर - थिगाथिर-सुभासुभ-
सुभग-दूभग-सुभस-दुभस आदेज्ज-अणादेज्जाणं एव चेव वत्तव्वं । णवारि कमेण विसेसाहियपयडीण
सरिसपयडीण च जाणिय वत्तव्व । तत्थेक्कस्म ट्ठवणा स २ । कुदो सरिसत्तं ? ण, भय-
दुगुंछाणं व सारसंतो (सत्तो)वलंभादो । पर्याडविसेसेण ७२६ पुणो विसेसाहियं जादं स २
७२६ ।

जमगित्ति-अजसगिती दो वि समाणा विसेसाहिया पयडि विसेसेण । पृ० ३१९.

पुणो एदेण सूचिदणिमिणं विसेसाहियं ।

देवगदी विसेसाहिया । पृ० ३१९.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जिदिभागमेत्तेण । कुदो ? खविदकम्मंसियो देवलाए उप्पज्जिय
उक्कस्सट्ठिदिवंधस्सुवरि परपयडांसु उक्कड्डिय आवालयिकाल गदं तस्स ममए उज्जावेण सह
विगुत्तिवदुत्तरमरोरस्स जहणं जादत्तादो । तं चेदं स २ । सूचिदवेगुत्तव्वयंगोवंग विसेसाहिया ।
पुणो मणुमगदी विसेसाहिया । पृ० ७२८ ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो मणुमसेमुप्पज्जिय पज्जत्ति समारणिय उक्कस्सट्ठिदीए उक्कड्डिदस्स जहणं
होदि त्ति । तं चेदं स २ । कथं विसेसाहियत्तं ? ण, देवगदिस्मि तिक्खगदि-थावरसंजुत्त-
ट्ठिदिवंधसंकिलेसादो ७२८ । मणुसगदिसंजुत्तपणारमसागरोवमकोडाकोडिदिवंधसंकिलेस-
मणंतगुणहीणत्तादो उक्कड्डिदपर्याडविसेसेमंतादो देवगदीए संघडागदो आगच्छमाणदव्वं
पक्खिविय उज्जावादो मणुमगदीए आगच्छमाणदव्वं विसेसाहियं ति च विसेसाहिय जादं ।

णिरयगदी विसेसाहिया । पृ० ३१९.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जिदिभागमेत्तेण स २ । पुणो सूचिदेउदियादाव थावर-साधारणाणं
विसेसाहियं स २ । सुहुमं तत्तो विसे- ७२७ साहियं स २ । अपज्जत्त विसेसाहिया ।
आणुपुत्थी- ७२९ चउक्काणि सरिमाणि विसेसाहियाणि । ७२९ स २ । एत्थ किञ्चि
संभवतं विसेसाहिय जाणिय वत्तव्वं । सूचिदं गदं । ७२०

पुणो सोगो संखेज्जगुणो । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो देवलागे उप्पज्जिय उक्कस्सट्ठिदिवंधस्मि उक्कड्डियावालयं
गंतूण पलि(डि)च्छिदहस्सस्स थि उक्कगोउच्छसहगदसगेगोउच्छपमाणत्तादो । तस्स संदिट्ठी
स २ ।
७२०

१ वाक्यमिदं नोपलभ्यते मूलग्रन्थे ।

अरदी विसेमाहिया । पृ० ३१९.

कुदो ? सरिमसामित्ते संते वि पर्याडिविसेसेण विसेसाहिया जादा ।

इत्थिवेदं विसे० । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो पंचिदियो देवेसुप्पज्जिय पच्छा पण्णारससागरोवमकोडाकोडि-
ट्टिदि(दिं) वंघिय उक्काड्ढिदम्म मंदसंकिलेसादो पर्याडिविसेसादो च विसेसाहियं । तं चेदं

स २
७१०

 ।
एदं तिचेदोदयगोच्छपमाणं होदि ।

णउंसयवेदं विसेसा० । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो देवो एइंदिणसुप्पज्जिय पढमसमए जादे जहण्णोदयगहणादो ।
पर्याडिविसेसेण विसेसाहियं जादं

स २
७१०

 ।

दाणंतराइयं विसे० ।

७१०

 पृ० ३१९.

कथं संदिट्ठीए संखेज्जगुण दिम्ममाणं विसेसाहियं जाद ? ण मोहणीयभागादो अंतराइय-
भागम्म तहाविहणियमे विरोहाभावादो

स २
७१

 ।

लाभांतराइगं विसेसा० ।

७१

 भोगांतराइगं विसेसाहियं । परिभोगांत-
राइगं विसेसा० । वीरियंतराइगं विसेसा० । पृ० ३१९.

सुगममेदाण पर्याडिविसेसकारणावेक्ख्वाण ।

मणपज्जवणाणावरणं विसे० । पृ० ३१९.

कुदो ? ममाणसामित्ते संते विभज्जमाणभागहारविसेसत्तादो

स २
७४

 ।

सुदणाणावरणं विसे० । मदिणाणावरणं विसे० । पृ०

७४

 ३१९.

कुदो ? पर्याडिविसेसेण ।

अचक्खुदंसणावरणं विसे० । पृ० ३१९.

केत्तियमेत्तेण ? सखेज्जिदिभागमेत्तेण

स २
७३

 ।

चक्खुदंसणाणावरणं विसे० ।

७३

 पृ० ३१९.

कुदो ? पर्याडिविसेसेण ।

उच्चागोदं विसेसा० । पृ० ३१९.

कथं संखेज्जगुण दिम्ममाणं विसेसाहियं होज्ज ? सच्चमेवं चेव, किंतु खविदकम्मंसियो
चारिमेइंदियवारपरिभमणकालम्म तेउ-वाउकाइणमुप्पज्जिय उच्चागोदं एदेण गथेण उत्तसरूवे-
णंतोमुहुत्तेणुत्तेवल्लय सण्णीसुप्पज्जिय मणुसम्मि संजममणुपालिय मिच्छत्तं गंतूण देवेसुप्पज्जिय
उक्कम्मसट्ठिदीए उक्काड्ढिदम्म उच्चागोदस्स एगसमयपवद्धस्स असंखेज्जिदिभागमेत्तेसु णिसेगेसु

२८	वधगद्धाणुसारी णीचागोदस्स णिसेगस्स समयपवद्धस्स अद्धं सादिरेगमेत्तं संकम(मि)द-	स २९	कथमेदं णव्वदे ? मिच्छादिद्विस्स विसोधिअट्ठादो सादिरेयमिदि एत्थ परूविदत्तादो । तेसिमद्धाणं
७ अ १७	त्तादो । त चेदं	७१७	
२७	सकिलेसद्धस्स	स २८	
सदिट्ठी	२२९	७अ१७	
	२७८	२७	

णीचागोदस्स विसेसा० पयडिविसेसेण | स । २९ | पृ० ३१९.
 सादासादं विसेसाहियं । पृ० ३१९.
 एदाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ।
 खेज्जगुणं, खविदकम्मंसियसज्जोगिपढमसमयउदय-
 म २१२ | एव [ओघ] जहणणप्पा-
 ७ ओ प २९ | ७१७
 म २८
 २ अ १७
 २७
 पुणो वि एत्थ सूचिदत्तिथयरमसं-
 णिसेगगहणादो । तं चेदं
 बहुगं गदं ।

(पृ० ३२०)

णिरयगदीए जहणणपदेमुदयस्सप्पावहुअं भणगमाणे मिच्छत्तप्पहुडि जाव अणंताणुबंधि-
 कसायो त्ति ताव परूवणो सुगमो । कुदो ? ओघम्मि उत्तकारणाणं एत्थ वि संभवादो । णवरि
 अणंताणुबंधाणं च वयाणुसारी आयो त्ति भणंताणमभिप्पाएण वेडावट्टिमागरोवमं सम्मत्त-
 सम्म(म्मा)मिच्छत्तं च अणुपालिय मिच्छत्तं गंतूण णिरएमुप्पण्णाणं सगचउक्कगोउच्छममूहम्म
 वत्तव्वं । तस्म ट्टवणा | स २४ | अण्णहा खविदकम्मंसियो णिरएमुप्पाज्जिय तेत्तीस-
 सागरोवमं किंचूणं ७ ख ओ अ ६६२ | सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं गदम्म जहणणउदयो होदि
 त्ति वत्तव्वं । २७२७

तेत्ती केवलणाणावरणं अमंखेज्जगुणं । पृ० ३२०.

सुगममेदं | स २१ |
 ७ ख ५

केवलदंसणावरणं विसे० । पृ० ३२०.

कुदो ? रिज्जुगदाए णिरएमुप्पणपढमसमए णिहा-पयलाणं उदये अत्थि त्ति भणंताणम-
 भिप्पाएण पढमसमए वत्तव्वं । अथवा मरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदम्म होदि त्ति वत्तव्वं । तस्म
 ट्टवणा | स २१ | कुदो विसेसाहि [य]त्तं ? ण, दंणं च परूवणाए विचारिज्जमाणासु तद्दोव-
 लंभादो । ७ ख ५

पयला विसेसा० । पृ० ३२०.

कथं ओघम्मि णिहोदण्हितो विसेसाहियत्तादो (विसेसाहियं) केवलदंसणावरणं णिदेहितो
 विसेसहीणपचलादो एत्थुहेसे विसेसहीणं जादं ? उच्चदे--खविदकम्मंसियो चरिमवारमुवमससेट्ठि-
 (ट्ठि) चडिय हेट्ठा ओदरिय मिच्छत्तं गंतूण देवमुप्पाज्जिय पुणो एहादियं गंतूण तत्थ पाओग्गकालं
 भमिय तमेसुप्पाज्जिय णिरयाउगबंधपाओग्गकालादो हेट्ठिमसंकिंसेम-विसेसाहियादोक्कट्टु(डट्टु)क्कट्टुण-
 परपयडिंमकमवसेण विवक्खिवदणिसेयमए करिय णिरएमुप्पण्णाणं पढमसमए णिहा पयलाणं
 एकदरउदीरयं होदि त्ति वा । अहवा पज्जत्ति ममाणिय उक्कम्मट्टिदि वंधिय तस्म उक्कट्टिय
 आवलियं गदस्मि पचलाए उदयमागच्छमाणगोउच्छम्मि पुव्वं व सेमाणहाचउक्काणं समाण-
 धणाणं पंचमभागं तेसि पक्खेवाणं पुह पुह संखेज्जभागा च पक्खिवत्तमेत्तं जहणणुदयणिसेय-
 तादो । केवलदंसणावरणस्स पुणो एवं चेव । णवरि पक्खेवाणं असखेजे भागे पक्खिवविय
 सेसेगं पक्खिवत्तमिदि । किमट्टमेवं उवसमसेट्ठिमचडिदस्स सामित्तं ण उत्तं ? ण विवक्खिदो-
 दयणिहागोउच्छाए थिउक्कमंकमवसेण उवसमसेट्ठिचडिदाणं समाणगोउच्छं दिस्सदि, किंतु
 चडिदाणं ओक्कट्टुणवसेण हीणमागच्छदि त्ति एवं चेव गहदव्वं ।

पुणो अपच्चक्वणावरणप्पहुडि भयोदय त्ति ताव परूवणा सुगमा, ओघकारणात्तादो ।
तत्तो सोगं विसे० । हस्सं विसेसा० । पृ० ३२०.

कथं हस्सादो पयडिविसेसेणव्भहियं सोगो एत्थ तत्तो हीणं जादं ? ण, सोगमुप्पणपढम-
समए हस्सस्स थिउक्कसंक्रमदव्वं पलि(डि)च्छिय जहणं जादं, हस्सं पुणो तत्तो अंतोमुहुत्तं
गंतूण णवकबंधगोउच्छं स्वविदकम्मंसियणिसेयविसेसादो असंखेज्जगुणत्तेण सहगदसोग(गं)
थिउक्कसंक्रमेण परिणामविसेसेणुदीरिददव्वेण सह जहणं जादत्तादो विसेसाहियं जादं ।
कुदो ? विसेसेण जादहियदव्वादो एदंण सरूवेणहियदव्वमसंखे० गुणमिदि ।

अरदी विसेसा० । रदी विसेसा० । पृ० ३२०.

एत्थ वि कारण पुव्वं व वत्तव्वं ।

पुणो एत्थो उवरि (एत्थोवरि) णतुंमयवेदगप्पहुडि जाव असादवेदणिय त्ति ताव
सुगमं ।

तत्तो सादावेदणीयं विसेसा० । पृ० ३२०.

कथं असादत्तादो संखेज्जगुणहीणमतस्स सादावेदणीयम्म विसेसाहियत्तं ? ण, एत्थ
वि तत्त(स्थु)प्पणतोमुहुत्तकालेण सादावेदणीयमुदयं हादि त्ति हस्स-सोगाणं व पर्याडिविसेसा-
हियदव्वादो बंधगोउच्छदव्वं असंखेज्जगुणमिदि कारणसंभवादो । पुणो सूचिदपयडीगमप्पा-
बहुगं जाणिय वत्तव्वं ।

पुणो निरिक्खगदीए जहणपदेसुदयस्सप्पावहुगं भणगमाणे मिच्छत्तप्पहुडि जाव केवल-
णाणावरणे त्ति ताव सुगमं । कुदो ? ओघकारणाणमेत्त(स्थ) वि संभवादो । णवरि अणंताणु-
बंधीणं दुप्पयारं(र)परूवणाए तत्थ आयाणुसारी वयो ण हादि त्ति अभिप्पाण निपलिदोवम-
आउगतिरिक्खम्म सम्मत्तं पडिवणस्स अते अंतोमुहुत्तकालसेस(से)मिच्छत्तं गदस्स जहणं
हादि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो पचला विसेसा० । णिहा विसेसा० । पचलापचला विसेसा० । णिहाणिहा
विसेसा० । थीणगिद्धी विसेसाहिया । पृ० ३२१.

सुगममेदाणं । कुदो ? वुच्चदे— ओघम्मि णिहा-पयलाणं अपुव्वकरणम्मि थीणगिद्धि-
तियादो आगदगुणसंक्रमदव्वस्स भागहारं पगदिविसेसागमणमित्तभूद(दं) पलिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागादो हीणमेत्ताहिप्पाएण उत्तं । एत्थ पुण पयडिविसेसभागहारादो असंखेज्जगुणाभि-
प्पाएण विवाक्खदमिदि पयडिविसेसेण अहियं हादि त्ति ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३२१.

कुदो ? सुहुमसांपराइयम्म पदस्सुवरि आगदगुणसंक्रमदव्वस्स भागहारादो पगदि-
विसेसागमणमित्तभूदपलिदोवमस्स असंखेज्जभागमसंखेज्जमिदि भागहारगदविसेसावेक्खाए
विसेसाहियं हादि त्ति । पुणो सेससव्वकिरियं पुव्वं व वत्तव्वं ।

पुणो एत्तो उवरि जाव सादासादे त्ति ताव सुगमं । कुदो ? किंचिविसेसाणुविद्ध-
कारणाणि पुव्वुत्तकारणेहि समाणत्तादो । पुणो सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३२२)

पुणो मणुसगदीए जहणपदेसुदए भण्णमाणे मिच्छत्तप्पट्टि जाव तित्थयरे त्ति ताव सुगम । कुदो ? केसिं केसिमोघाम्म उत्तकारणं संभदि, केसि पि तिरिक्खगदीए उत्तकारणं संभदि, केसिं केसिं पि किंचिविसेसाणुविद्धमत्थवसेण जाणिज्जदि त्ति वा । सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३२३)

पुणो देवगदीए जहणपदेसुदयो मिच्छत्तप्पट्टि जाव पचले त्ति ताव सुगमं ।

तत्तो णिहा विसेसाहिया । केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३२३.

एत्थ कारणं पुट्टिवल्लं चैव णिरवसेमं चिंतिय वत्तव्वं । एत्थ उवरि जाणिय वत्तव्वं सादामादे त्ति । णवरि सादासादाणं सरिमत्तम्म कारणं उच्चदे— दाण्हं पि वेदणीयाणं अण्णोण्णस्सुवरि अण्णोण्णस्स थिउक्कमंक्रमेण दोण्हं पि सरिस हादूण पुणो सादोदए असादोदए संते वि दोसुंवि उक्कससत्त(त्त)प्पाओग्गसकिलेसाणं समाणत्तादो उदीरणदव्वं, पुणो दोण्हं पयडीण-मोर्काड्ढदव्वाम्ह असंखेज्जलोगपडिभागियदव्वं, घेत्तूणगट्टं करिय उदीरणेण पक्खित्तपमाण-त्तादो । कथं मादामादोदयकालमंकिसेसाणं समाणत्तं ? ण, पमत्तमंजदाणं सादासादोदयसंकिसे-साणं समाणत्तं; अणमत्तसंजदाणं सादासादो[द]याणं विमोर्हाणं सरिस तदंसणादो छम्मासकाल-सादोदयमहिददेवाणं मंकिसेमदंसणादो तेत्तोममागरोवमअसादोदयणंगड्याम्म विमोहिदंसणादो । तदो सादासादोदयपडिवट्टाणि विमोहि-मंकिसेसाणं होंति त्ति दोण्हमुदयकालव्वंतरे पाओग्ग-सकिलेसा सरिसा त्तमं(व्वं)त्ति त्ति । सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३२३)

पुणो अमणीसु जहणपदेसुदयस्सप्पावहुगं भण्णमाणे—

मिच्छत्तस्स जहणपदेसुदयो सव्वत्थोवो । पृ० ३२३.

कुदो ? खविदकम्मसियो सम्मत्तं घेत्तूण वेत्तव्वविट्ठिमागरोवमाणि भमिय पच्छा मिच्छत्तं गंतूण असण्णस्स आउग वंधिय तम्म उप्पणपट्टमसमए जहणोदयं जादे त्ति । तस्स ट्टवणा

स २
७ ख १७ उ ६६२

 ।

अणंताणुबंधीसु

स २
७ ख १७ उ ६६२

 अण्णदरस्स जह० असंखे० गुणा । पृ० ३२३.

कुदो ? खविदकम्मसिओ सम्मत्तं पाडिवाज्जिय अणंताणुबंधि विसंजोजिय पुणो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुट्टमच्छिय आउगं वंधिय असण्णीमुप्पणस्स जहणं होदि त्ति । एदमाथाणुसारी वयो ण होदि त्ति अभिप्पाएण उत्तं, अण्णहा अप्पावहुग(ग-) विवज्जासदासं(विवज्जासं) होज्ज । तस्स ट्टवणा

स २
७ ख १७ अ
२७

 ।

केवलणाणावरणमसंखेज्जगुणं । पृ० ३२३.

कुदो ? अधापवत्तभागहाराभावादो

स २
७ ख १५

 । पुणो एत्तो उवरि जाव पक्खवाणे त्ति ताव सुगमं ।

पुणो तत्तो उवरि उवचारणिवंधणणिरयाउगं अणंतगुणं । पृ० ३२४.

कुदो ? जहणवधगट्टाए पलिदोवमस्स असंखेज्जादिभागमेत्तणिरयाउवट्टिदि बंधिय णिरप-सुप्पज्जिय तिण्णि वि संकिलेसवहुलेणाउगं गभियस्स तस्स चरिमगोउच्छस्स गहणादो । तस्स

दृवणा | स २२७ |
८६३०० |

देवाउगं विसे० । पृ० ३२४.

कुदो ? एत्थ वि पुव्वुत्तकारणे संते वि परिणामवसेण ओलंबणद्वं एत्थप्पत्तादो, णिरयाउगाट्टिदिवंधादो देवाउगाट्टिदिवंधं विसेमहाणं होदि त्ति वा ।

पुणो निग्गिक्खाउगं संवेज्जगुणं^१ । पृ० ३२४.

कुदो ? पुव्व व जहणजोग-जहणबंधगद्धाहिं पुव्वकोडिमेत्तनिग्गिक्खाउगाट्टिदं वंधिय तिग्गिक्खेसुप्पणम्म चरिमगोउच्छगहणादो । तं चेदं | स २२७ | १६ | ।

एवमुवारि वि जाणिय वत्तवं जाव | ८५१७ | जसाजसगित्ति त्ति ।

ततो उवरि उवचारियमणुमगदी विसेसा० । पृ० ३२४.

कुदो ? मणुसगदिम्म उदयगोउच्छम्मि सेमणामकम्माणं तत्थ संभवताणं थिउक्कसंक्रमेणा- गदजहणदव्वेण सह गहणादो । तं चेदं | स २ | ।

पुणो उवचारियदेवगदीए | ७२८ | उदयो विसेसाहियो । पृ० ३२४.

कुदो ? खाविदकम्मसियो असण्णा देवगदिं वंधतो संखेज्जावलयमेत्तममयपवद्धम्म संचय करिय देवेसुप्पज्जिय पज्जित्ति समाणिय पुणो उज्जावेण सह विगुविय उक्कसट्टिदि वंधिय तम्मि उक्काट्टिदव्वम्म तम्म जहणं होदि त्ति । तस्स दृवणा | स २ | । कथ पुव्वल्लेण संदिट्ठीए समाणम्मा(ए) विसेसाहियत्तं ? ण, परिणामविसेसेण | ७२८ | उदाग्गिज्जमाणदव्वविसेसादो बंधगोउच्छविसेसादो थिउक्कसंक्रमेणागच्छमाणपर्याडविसेसादो होदि त्ति पुव्वमेव परूविदत्तादो । पुणो सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तवं । पदेसुदयप्पावहुगपरूवणा गदा ।

(पृ० ३२४)

पुणो भुजगारपदेसुदयपरूवणामव्वाहियाग सुगमा । णवरि एगजीवपरूवणाहियारम्मि मदिणाणावरणस्स भुजगारोदयो केवचिरं कालादो [होदि] ? जहणोणेगसमयमिदि उत्तं । पृ० ३२५.

तं सुगमं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जिदिभागो ईदि उत्तं । पृ० ३२५.

तस्सत्थविवरणं कस्सामो । तं जहा— एडंदिस्स गुणदकम्मसियस्स हदसमुप्पत्तियं करेत्तस्स अस्सिय उत्तकालं सभवदि । एवमप्पदस्स वि वत्तवं । णवरि सुहुमेडंदिस्सहदसमुप्पत्तियखाविदकम्मसियं पडुच्च वत्तवं । कुदो ? संतस्स थोवविवक्खावसेण अहवा पंचिदिए सत्थाणेण भुजगारप्पदकालो पलिदोवमस्स असंखेज्जिदिभागो होदि(त्ति) वत्तवं । त जहा—

तत्थ ताव भुजगारं उच्चदे— जहाणिसेयं ओक्कडुक्कडुडणिसेयं बंधणसेयाणं समूह सरूव वेदिज्जमाणअगुणसेडिगोउच्छादो तदणंतरवेदिज्जमाणअगुणसेडिगोउच्छाए ओक्कडुणगोउच्छं बंधगोउच्छमिदि दुविहमाया(य)दवं होदि पुणो उक्कडुणगोउच्छस्स संतगोउच्छविसेसामिदि दुविहं वयदवं होदि । पुणो तत्थ विसोहिकाले उक्कडुणगोउच्छादो ओक्कडुणगोउच्छा चउव्विह- षड्डीए वड्ढिदा होति । संकल्लेसकाले पुणो तत्थ वि[व]ज्जासो होदि । पुणो वेदिज्जमाणबंधगोउ- च्छादो तदणंतरवेदिज्जमाणबंधगोउच्छा चउव्विहवड्ढीए वड्ढिदा होति । कुदो ? पुव्विल्लुदय-

१ मूलग्रन्थे तु 'असखे०गुणो' इति पाठोऽस्ति ।

गोउच्छगुणगारभूदजोगादो संपहियगोउच्छजोगगुणगारो चउत्विहवड्डीए हाणीए द्विदो, तेहितो बंधदव्वस्स एत्थ वड्ढिदंसणादो । किंतु संतगोउच्छविसेसादो एत्तियमेत्तादो । स २। एवं बंध-गोउच्छं चउत्विहवड्डीए हाणीए वा द्विदं होदि । पुणो तत्थ विसोहिकाले १६ । भुजगारो-दयो चेव होदि । कुदो ? तत्थतणोकड्डुणेण जादणिसेयम्मि उक्कड्डुणणिसेयं सोहिदे तत्थ जादविसेसादो चउत्विहवड्ढि-हाणीए जादजांगणिवंधणसमयपवड्डणिसेयस्स सहिदादो । पुणो सत्त(संत)गोउच्छविसेसं थोवमिदि संकिलेमकाले वि भुजगारं संभवदि । कथं ? मंदसंकिलेसस्स एदस्स जादोक्कड्डुणम्मि णिसेयं (-ड्डुणणिसेयं) उक्कड्डुणणिसेयम्मि सोहिदे तत्थ विसेसादो संतगोउच्छविसेससहिदादो पुठ्वं व जोगविसेसेण जादबंधणिसेयमहियगोउच्छसेसं जादमिदि । एवंविहाणेण संसारे केइ-केइजीवाणं भुजगारकालाणुसंधाणं पालिदोवमस्सासंखेज्जदिभागमेत्तं होदि त्ति उत्तं होदि । जहा सासणसम्ममादिद्विस्स उक्कस्सकालाणुसंधाणं पुणो तत्थवगीदकमेण-णुसंधाणेण अप्पदरवेदयकालं पालिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं होदि त्ति वत्तव्वं ।

अहवा खविदकम्मसिओ वा तप्पाओग्गखविद-गुणिदघोलमाणो वा पंडीदये आगंतूण णिग्-एसुप्पज्जिय तम्मदयणिसेयजोगगुणगारो तमाणं उववाद्दजोगं मात्तूण सेमजोगा एत्थ परिणा मिज्जम(मा)णा असंखे० गुणा होति । एदेहितो बंधदव्वेणाग्दणिसेगेहितो उदयगोउच्छविसेसा असं-खेज्जगुणहीणं होति त्ति । तदो प्पहृदि भुजगारणि चेव होदूग्ग गच्छति त्ति ताव (जाव)पत्तम्म असं-खे० भागकालो त्ति । ततो अट्ठमहियकालं कि ण लब्भदे ? ण, खविद-गुणिदघोलमाणो णोण्ह पि सेसेणुवरिददव्वादा बंधगोउच्छदव्वं एत्तियमेत्तकालव्वमहियं होदि त्ति गुरूवदेमत्तादो । बंधदव्वविक्कवाए एत्तियं चेव कालं होदि मणुसअपज्जत्ताणं व ।

एवमप्पदरस्स वि वत्तव्वं । णवरि गुणिदकम्मसियो वा तप्पाओग्गखविद-गुणिदघोलमाणो वा णेरइएसुप्पणम्म उदयणिसेयजोगगुणगारो जीवजवमज्झादा हेट्ठिमाणंतरम्मि द्विदग्गजीवगुण-हाणिव्वमंतरम्मि दिदजोगेसु अण्णदरेगजोगसमाणं होदि त्ति विवक्खिय पुणो ततो हेट्ठिम-जोगट्ठाणेषु पगावत्तिय बंधमाणम्म गुणिद-खविदघोलमाणोक्कड्डु उक्कड्डुणाण विसेसिददव्वाणं पुठ्वं व अप्पहाणादो अप्पदरकालं पालिदोवमस्स असंखे० भागं लब्भदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो अवट्ठिदवेदया० जहणणेणसमयं, उक्कस्सेण संखेज्जसमया । पृ० ३२५.

कुदो ? ओक्कड्डुणगोउच्छं संतगोउच्छविसेसमहिदं पुणो ओक्कड्डुणगोउच्छेण बंधगोउच्छ-सहिदेण मरिसं होदूण वेदज्जमाणकालं संखेज्जसमयं होदि त्ति गुरूवदेसादो ।

एवं मुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं वत्तव्वं । पुणो णिहाए भुजगारवेदयकालो अप्पदरवेदयकालो जहणणेणसमयं, उक्कस्से-णंतोमुहुत्तकालं । कुदो ? वेदिज्जमाणगोउच्छादो अणंतरवेदिज्जमाणोणं गोउच्छाणं विचारणं पुठ्वं व । तदो भुजगारप्पदरकालपमाणं णिहावेदयकालपमाणं चेव होदि त्ति पुठ्वं व वत्तव्वं ।

पुणो अवट्ठिदवेदयं जहणणेणसमयं, उक्कस्सेण संखेज्जसमयं । पृ० ३२५.

एदस्सत्थं पुठ्वं व वत्तव्वं ।

एवं सेसणिहाचउक्काणं सोलमकसायाणं हस्स-रदि-अग्गि-सोगाणं भय-दुगुंठाणं वत्तव्वं (पृ० ३२६) । किमट्ठं हस्स-रदि-अग्गि-सोगाणं कमेण छम्मासं, पालिदोवमस्स असंखे० भागमेत्तकालं ण लब्भदे ? ण लब्भदे, एदेसि वेदयकालव्वमंतरे भय-दुगुंठाणं अवेदगो होदूण द्विदो

संतो जदि नाणि पुणो वेदयदि[तो] तेसि वेदयपढमसमए अप्पदरं अधस्सं(अवस्सं) वेदयदि । पुणो एदेसिं वेदयकाले भय-दुगुंछाणं वेदगो संतो जदि पच्छा अवेदगो होदि तो अवेदगपढमसमए अधस्स (अवस्सं) भुजगारं होदि । तदो भय-दुगुंछाणं वेदगावेदगकालचमंतरे भुजगारप्पदरकालणुसंधाण-किरियं पठवं व वत्तवं ।

सादासादाणं भुजगारप्पदरवेदयकालसाहणपरूवणं पुठवं परूवेदवं । पुणो सम्मामिच्छत्तस्स चि तिप्पयागणं कालपरूवण जाणिय परूवेदवं, सुगमत्तादो ।

सम्मत्तस्स भुजगारवेदयकालं जहणणेणेगममयं । पृ० ३२६.

कुदो ? मिच्छत्तस्स णवगबंधगोउच्छमस्सियूण लब्भदि त्ति ।

उक्कस्ससंतोमुहुत्तं । पृ० ३२६.

कुदो ? अणंताणुवधि विमंजदो ण किरियादिविमोर्हाए तदुवलंभादो (?) ।

अप्पदरवेदयकालो जहणणेणेगममयो । पृ० ३२६.

कुदो ? मिच्छत्तस्स णवगबंधमस्सियूण । पुणो उक्कस्सपरूवणा सुगमा ।

मिच्छत्तस्स भुजगारप्पदरवेदयकालं जहणणेण एगममयं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिदि (पृ० ३२६) उत्तमं दम्मत्थो उच्चदे—

णवगबंधाणमेयमस्सियूण जहणकालो वत्तवो । आउक्कस्सं पुणो विसोहिकालस्स ओक्कड्डुक्कड्डणणं विसेसिददवदो संकिलेसकालस्स ओक्कड्डुक्कड्डुदाणं विसेसिददवदादो च बंधगोउच्छ-संतगोउच्छविसेसाणि च अवस्सं जाइज्जमाणे थोवं होदि त्ति णियममवगंमिय (गम्मिय) उत्तं । तं कथं ? ओक्कड्डुक्कड्डणभागहारस्स असंखे० भागवड्ढिभागहारो उक्कस्सेण ओक्कड्डुक्कड्डणभागहारादो थावो होदूण असंखे० गुणहीणो होदि त्ति अभिप्पाण उत्तं । तस्स दृवणा ओ ओ । तदो विसोहिकालमेत्तं भुजगारं संकिलेसकालमेत्तं अप्पदरं होदि त्ति उक्कस्सकाल- २ २ । संतोमुहुत्तमिदि परूविदं । पुणो बंधगोउच्छ-संत-गोउच्छविसेसं च भुजगारप्पदराणं उवयारकारणाणि होति त्ति परूविदं । एदं मिच्छत्तपरूवणमुव-लक्खणं कादूण एदंणभिप्पाण सेसकस्समाणं परूविदमिदि जाणाविदं ।

पुणो मिच्छत्तस्स पलिदां वमस्स असंखे० भागकालं पुठ्विल्लाभिप्पाण लब्भदि कुदो ? तत्तो(त्थो)क्कड्डुक्कड्डणभागहारस्स असंखे० भागवड्ढिणिमित्तभागहारो मज्झिमपडि वत्तीए ओक्कड्डुक्कड्डुणभागहारेण गुणहाणि खंडिदेगखंड रूऊणेण गुणिदमेत्तं लब्भदि त्ति । तस्स दृवणा ओ ओ । एदं ओक्कड्डुक्कड्डणभागहारमि पकिवत्ते एत्तियं होदि २ १ । एदमादिं कादूण- गु ओ वरि वि असंखे० भागवड्ढिविसयो वत्तवो । गु ओ ओ ओ

(पृ० ३२६)

पुणो तिण्हं वेदाणं परूवणा सुगमा । णिरय-वेष्ठाउआणं परूवणं पि (पृ० ३२६) सुगमं ।

मणुस्साउगस्स भुजगारवेदयो जहणणेणेगसमयो । पृ० ३२६.

कुदो ? कदलाघादपढमगोउच्छाए उदिण्णे होदि त्ति ।

उक्कस्संतोमुहुत्तं, विसेसाहियगोउच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीह-

१ मूलग्रन्थे तु 'विसेसाहिओ गोबुच्छरयणाए'(अ), 'विसे० गोबुच्छरयणाए'(का), 'विसेसाहिया, गोबुच्छरयणाए' (ता०) च पाठोऽस्ति ।

त्तादो । एदस्सत्थो उच्चदे । तं जहा— मणुस्साउगं घादयमाणो जहण्णेण एगसमएण घादयदि, पुणो अजहण्णेण विसमएण, तिसमएण एवं समयुत्तरकमेणेक्कस्संतोमुहुत्तकालमाउवघादसंकिलेस-परिणामेण परिणामय पदेसमोक्कड्डयूण आउअजहाणिसेयगोउच्छावसेसादो अन्वहियगोउच्छु-दयमावलियवाहिरगोउच्छाए संछुहिय तत्तो उवगि विसेसहाणकमेण सछुहदि जावमावलियं ण पत्तो त्ति । एवं समयं पडि समयं पडि संछुहंतो गच्छदि जावुक्कस्सेणुक्क[स्स]घादपरिणदंतोमुहुत्त-काले त्ति । पुणो तत्तियमेत्तकालं भुजगारसरूवेण वेदिय पच्छा एगसमएण कदलीघादं करेदि त्ति उत्तं होदि ।

एवं तिरिक्खाउगस्स वि वत्तव्वं । पुणो एस कमां गिरय-देवाउआणं णत्थि । कुदो ? तत्थ आउगघादपरिणामाणमसंभवादो । ओक्कड्डयूण विसेसाहियगोउच्छरयणा णत्थि त्ति उत्तं होदि ।

पुणो अवट्ठिदवेदयकालो जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्समट्टसमयं । पृ० ३२६.

कुदो ? आउगघादपरिणामकालवन्तरे अवट्ठिदोदर्याणवधण परिणामाणं एगसमयं कादणुक्कस्सेणट्टसमयपाडद्धाणं उवलंभादो ।

पुणो अप्पदरवेदयकालो जहण्णेण एगसमयो । पृ० ३२६.

कुदो ? घादपरिणामकालवन्तरे एगसमयमुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवम(मं)ममयूणं । पृ० ३२७.

सुगममेदं । पुणो एत्तो उवगि गिरयगादिपहुडि जाव साधारणपर्याडि त्ति परूवणा सुगमा ।

कुदो ? विवेगवुद्धीणं पुट्ठिवल्लसवेदवलेण अवगमुवलंभादो ।

एसो णागहन्थिखवणाणं उवदेसो । अण्णेण उवदेसेण मदिआवरणस्स भुजगारवदय-कालो तेत्तीससागरोवमाणि देसूणाणि । पृ० ३२७.

कुदो ? सव्वट्ठसिद्धिस्मि तेत्तीससागरोवमाउस्मि उपाज्जिय पज्जत्ति समाणस्स पुव्वं व बंधेहि ओक्कड्डुक्कड्डुणिसेगेहि गोउच्छविसेमेहि च अहवा जोगपरावत्तीहि णिसेगविसेसेहि पुव्वं व किरिएसु अणुसंधारणकालस्स कदे देसूणतेत्तीससागरोवममेत्तकालं हांदि त्ति अभिप्पायादो ।

पुणो अप्पदरवेदयकालो तेत्तीससागरोवमाणि संखेज्जवस्सव्वभियाणि । पृ० ३२८.

कुदो ? गुणिकम्मभियो सण्णा मिच्छाडिट्ठी सत्तमपुढवीसु आउगं बंधिय पुणो तत्तो प्पहुडि पुव्वं व भुजगारकिरियं कालाणुसंधाणं कन्तमत्तमपुढविणेरङ्गमुपाज्जिय पज्जत्तापज्जत्तसु तत्थ वि कालाणुसंधाणं तेत्तीसं सागरोवमं कादण णिम्मरियस्स तदुवलंभादो ।

एवं सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चउण्हं दंमणावरणाणं च वत्तव्वं ।

असादस्स भुजगारवेदयकालो तेत्तीससागरोवमाणि देसूणाणि । पृ० ३२८.

कुदो ? सत्तमपुढविणेरइयस्स मिच्छाडिट्ठिस्स पुट्ठिवल्लकिरणेण पुव्वं व अणुसंधाणं कदे तेत्तियमेत्तकालुवलंभादो ।

अप्पदरं पलिदोवमम्म असंखेज्जदिभागो । पृ० ३२८.

कुदो ? सत्तमपुढविणेरइसम्माडिट्ठिस्स माउज्जमविमोहि-सकिलेमस्स खविदकम्ममित्थस्स पुव्वं व अणुसंधाणे कदे तेत्तियमेत्तकालुवलंभादो ।

गिरयगादिणामए भुजगारवेदगो अप्पदरवेदगो [वा] तेत्तीससागरोवमाणि

देसूणाणि । पृ० ३२८.

कुदो ? दुस्मरणामकस्मोदयसागदकालादो हेट्टिमकालपरिहीणतेत्तासमागरोवमाणि धरिय पृव्वं व अणुसंधाणं कदे तेत्तियमेत्तकालुवलंभादो ।

पुणो अप्पदरकालसाहणं उत्तरगथमाह—

गिरयगदिणामाए अप्पदरकालसाहणं उच्चदे । तं पि जहा(तं जहा) णिसेयगुण-
हाणिट्ठाणंतरं थोवमिदि । पृ० ३२८.

तं कथं ? कम्मणिसेयस्स गुणहाणिट्ठाणंतर पल्लिदोवमस्स असंखे० भागपमाणत्तादो थोव जादं । किमट्ठमेदं उच्चदे ? कम्मणिसेयस्स विसेसागमणं पदम्हादो दुगुणं णिसेगभागहारं होदि । तदो तेण वेदिज्जमाणगोउच्छ भागे हिदे तदणंतरवेदिज्जमाणगोउच्छस्स हाणिया-
(हाणी आ)गच्छदि त्ति जाणावणं । एदस्स वि जाणावणे कि पयोजणं ? भुजगारप्पदरकाल-
साहणणिमित्तं पृव्वं व परूविदं एदमवलंविद्य परूविदमिदि जाणाविय एवं (दं)विहाणं सत्थस्स उवरि जत्थ जत्थ संभवो तत्थ तत्थ मव्वत्थ परूवेदव्वमिदि जाणावणे पभोजणत्तादो ।

जोगट्ठणेषु जीवगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । पृ० ३२८.

कुदो ? सेट्ठाए असंखेज्जभागमेत्तपदमजोगगुणहाणिट्ठाणस्स असंखे० भागपमाणत्तादो । एदस्स परूवणा एत्थ कमट्ठ उच्चदे ? ण, अणेषु यारोदयगोउच्छेसु विवक्खिवदुदयणसेयगोउच्छस्स गुणगारभूदजोगेहिंते तत्तो हेट्ठा एगजीवगुणहाणिअट्ठाणादो असंखे० गुणजोगट्ठाणाणि विव-
क्खिवदजोगट्ठाणपव्वेवभागहारस्स चउत्तभागमेत्ताणि ओदग्गिण्ट्ठिदजोगेहिं परिणमिय जोगस्स चउत्तवहवड्ढि-हाणीहिं वधमाणस्स अप्पदरं होदि, तत्तो उवरिमजोगट्ठाणेहिं चउत्तवहवड्ढि-हाणि-
जोगेहिं परिणमिय वंधमाणस्स भुजगारं च होदि त्ति जाणावणं । एवं वद्वद्वं णं कादूण भणिय पुणो एदंण ओउच्छ डुकड्डणदव्वविसेमं पि अस्मिऊण परूवेदव्वमिदि ए वदमिदि पुत्तिल्लरूवण पि गंथमिदं इदि वत्तव्व ।

पुणो गणुमार्दि० पहुट्टिवेगुत्तियसरीरे त्ति एककारमपयडोणमव्वंधो (मव्वंधो)दयणगूणतीस पयडोणं, पयघादुम्मासपहट्टितेरममुहपयडोणं, उज्जावणपहट्टिणीचारोदे त्ति चत्तारिपयडोणं च परूवणा सुगमत्तादो(सुगमा, तदो) तत्परूवणं चित्तिय वत्तव्व । पुणो एगजीवमंतर-णाणाजीव-
कालंतर-साणयासाणं च परूवणा सुगमत्तादो (सुगमा, तदो) ण किंचि वत्तव्वं ।

एत्तो अप्पावहुगं भणिम्मामो । तं जहा—

मदिणाणावरणस्स अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३२९.

कुदो ? जहण्णएइंदियपरेसुदयट्ठाणं तत्तप्पाओगगुक्खसेइंदियपदेसुदयट्ठाणम्मि सोहिय सेमम्मि रूवपक्खित्तमेत्तपदेसोदयट्ठाणवियपेण तप्पाओगएगसमयपव्वद्वमेत्तेण तप्पाओग-
मिच्छादिट्टिरासि भागे हिदे लद्धमेत्तपमाणत्तादो । अहवा भुजगारप्पदरकालणुसंधाणं अणंतकालं गंतूण अवट्टिदं होदि त्ति तेमिं समूहेण मिच्छादिट्टिरासि भागे हिदे आगच्छदि त्ति वत्तव्वं । तस्स ट्टवणा [१३] ओकड्डुक्कड्डणपरिणामेहिं जोगवसेहिं च अवट्टिदोदयं लद्धमिदि त्ति असंखेज्जलोग- [स ७] भागहारं किण्णे परूविदं ? ण, उवरि अण्णेण उवदेसेण अप्पावहुगं भण्णमाणम्मि एदमत्थं भणिज्जमाणत्तादो ।

अप्परदरवेदया अणंतगुणा । पृ० ३२९.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणेइंदियलद्धि-णिठवत्तिअपज्जत्ताणं उदयगोउच्छादो अणंतर-वेदिज्जमाणगोउच्छाणं हीणपमाणादो णवगबंधेणुदयं पविस्समाणगोउच्छं असंखेज्जगुणहीणं होदि त्ति अप्परदरोदयं अपज्जत्तर्जावे होदि त्ति । लद्धि-णिठवत्तिअपज्जत्ताणं पुण पज्जत्ताणं उदय-णिसेगजोगादो हेट्टिमजोगेसु पुवं व वट्ट(ट्ट)माणजीवाणं च गहणादो । तस्स ट्टवणा १३४४ ।
 ओकड्डुककड्डुणविसेसमस्सिदूण भुजगारप्परं किण्ण परूविदं ? ण, खविद-गुणिदघोलमाण-^{५५५}जीवाणं ओकड्डुककड्डुणविसेसगोउच्छादो थोवा होदि त्ति पुणो बंधगोउच्छादो अधिय-^{१३ ४}ओकड्डुककड्डुणविसेसा ते अईव थोवादो ण परूविदं । अहवा एदमत्थमुवरिमभिखा-^{५५}
 (कखा)एण उच्चिज्जमाणे ण परूविदं । ^{१३}
^५

भुजगारवेदया संखेज्जगुणा । पृ० ३२९.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणणिठवत्तिअपज्जत्तजीवाणं उदयगदगोउच्छादो उवरिमजोग-ट्टाणेसु चउत्तिवहवट्टि-हाणीए अच्छणकालादो भुजगारकारणादो तत्तो हेट्टिमजोगट्टाणेसु चउत्तिवहवट्टि-हाणीए अच्छणकाला संखेज्जगुणहीणो त्ति तदो णिठवत्तिपज्जत्तगसीए संखेज्जा भागा भुजगाररासी होदि त्ति गहिदत्तादो । तस्स ट्टवणा १३४४४ ।
^{५५५}

एवं चउणाणावरण-चउदंसणावरणाणं वत्तवं । एवं चेव पंचणं णिहाणं सादासाद-सोलसकसायाणं छण्णोकसायाणं । णवरि अवट्टिदपदादो उवरि अवत्तव्वपदमणंतगुणे त्ति भणिय तत्तो अप्परदरं असंखे० गुणं, भुजगारं संखेज्जगुणं । ताणि पुवं व जाणिय वत्तव्वाणि । एवं मिच्छत्तस्स वि वत्तवं । णवरि अवत्तवं हेट्टिल्लपदं कायवं ।

सम्मत्तस्स अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३०.

कुदो ? अणंतिमभाग-पलि(डि)भागाणुसारिपमाणत्तादो ।

भुजगारवेदया असंखेज्जगुणा^२ । पृ० ३३०.

कुदो ? अणंताणुवंधि विसंजो जयंतम्म दंसणमोहणीयं खवंतम्म एयंताणुवट्टिपरिणद-संजदासंजद-पमत्तापमत्तसंजदस्स सत्थाणविसुद्धविसोहपरिणदअसंजदसम्मादिट्टि-देस-सयल-संजदाणं च गहणादो ।

अवत्तव्ववेदया असंखेज्जगुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? मिच्छत्तस्स सम्मामिच्छत्त-उवसमसम्मत्तपच्छायदवेदगसम्मत्तपडिवणपढम-समयजीवाणं गहणादो ।

अप्परदरवेदया असं०गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? सयलवेदयसम्माइट्टीणं पुव्वुत्तेहिं वदिगित्ताणं गहणादो । तेसिं ट्टवणा

प २	प	प	प
३३	३३	३३३	३३३३

 ।

एवं सम्मामिच्छत्तस्स वि वत्तवं । णवरि सम्मत्त-सजदासंजद-संजदपर्यंताणुवट्टिगुणसेट्ठि-सहिदाणं सत्थाणविसुद्धपरिणासेहि कदगुणसेट्ठिसहगदाणं मिच्छाइट्टीणं च सम्मामिच्छत्तं पडि-वणज्जीवे मत्थाणविसुद्धसम्मामिच्छत्तर्जावे च अस्मिय वत्तवं ।

१ दृष्टव्योऽस्यत्र मूलग्रन्थभागः । २ मूलग्रन्थे 'संखे० गुणा' इति पाठोऽस्ति ।

गुणसंयवेदस्त मिच्छस्त(त्त)भंगो । पृ० ३३०.

तस्म दृवणा	१३४४४	।
इत्थि-	५५५	पुरिसवेदाणं अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३०.
कुदो ? अणं-	१३४४	तिमभागाणुसारिपाडिभागियत्तादो थोवं जादं ।
अवत्तव-	५५५	वेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.
कुदो ? उव-	१३	
अप्पदर-	स २	कमणकाल-पडिभागियत्तादो ।
कुदो ? देवे-	= ०	वेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.
	४६५८११०६ २७	हितो एइंदिणुसुप्पज्जिय तत्थ प्पा(तप्पा)ओग्गकालसंचिद-
	०	

जीवेहितो लहुं णिस्सगिय असण्णिगत्थि-पुरिसवेदेसुप्पण्णाणं पुच्वकोडिकालसंचिदाणं अप्पदरं चैव होदि । कुदो ? तत्थ उदयणिसेगस्स गुणगारभूदविचक्खिदजीवजवमज्जादो जोगट्टाणादोणं हेट्टदो असण्णिगस्स उक्कम्मजोगसंभवादो । पुणो असण्णिगपंचिदियइत्थि-पुरिसवेदयजीवा इत्थि-पुरिसवेदेवेसुप्पज्जिय ४६५२२४० २ तत्थ गुणहाणिमेत्तअसंखेज्जवम्माउगदेवेहितो तत्थ सेसाउगम्मि देवि-देवाणं १० विवक्खिदजीवजवमज्जादीणं हेट्टिमअप्पदरणिबंधणजोगट्टिदजीवेहितो उवरिमभुजगारणिबंधणजोगट्टाणट्टिदजीवा विसेसाहिया हंति, तत्थप्पदरणिबंधणजीवाणं पुव्विल्लर्जावेहि सहगदाणं गहणादो । ४६५३५३२४१०° प ८ । अहवा तेसिं जीवरासिं दृविय अप्पदरणिबंधणजोगपरावत्तण- २ १७ कालादो भुजगारणिबंधणजोगपरावत्तणकालो विसेसाहिओ त्ति तेसिं कालाणं पक्खेवसंखेवेण भजिय सगसगपक्खेवेण गुणिदरासिं पुव्विल्लरासिंहि पक्खिविय पुणो सण्णिगपच्छादण (पच्छायदेण) संचिदइत्थि-पुरिसवेदरासीणं अप्पदरम्मि पक्खित्तमेत्तत्तादो ।

पुणो ? भुजगारवेदया विसे० । पृ० ३३०.

कुदो ? एइंदिणहितो असण्णिग-सण्णिग-इत्थि-पुरिसवेदेसुप्पज्जिय संचिदाणं पुणो पदेहितो देवेसुप्पज्जिय पुव्वुत्तगुणहाणिमेत्तअसंखेज्जवस्साउगसंचिदाणं पुणो तदुवरिमपवेसपुव्वुत्तभुजगारजीवाणं सण्णिगपच्छ(च्छा)यदसण्णिगदाणं भुजगाराणं एगट्टकदमेत्तत्तादो । तेसिं दृवणा

एक्कस्स	= ३२ ९	। देव-णेरइयाउआणं परूवणा सुगमा ।
	४६५ ३३ १७	मणुस्साउगस्स अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३०.
	= ३२ ८	
	४६ ५ ३३ १७	कुदो ? घादिपरिणामपरिणमणकालब्भंतरे अणंतपडि-
	= ३२ ०	भागाणुसारियवट्टिदजीवाणं उवलंभादो ।
अव-	४६ ५८११० ३३ २८	त्तववेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.
	= ३२	
कुदो ?	४६५ ३३ २२	उवक्कमणकालभजियसगरासिपमाणं सत्थाणेणुप्पण-

रासिमवणयणट्टं किंचूणकयमेत्तत्तादो ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? घादिपरिणामपारंभप्पट्टि अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे संचिदत्तादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

१ मूलग्रन्थे 'संखे० गुणा' इति पाठोऽस्ति ।

कुदो ? घादपरिणामद्विदजीवादो घादाघादाउअपरिणामद्विदजीवाणं असं० गुणत्तं णाय-
सिद्धत्तादो । पुणो भुजागारकालादो अप्पदरकालो संखेज्जगुणो त्ति विवक्खाए संखेज्जगुणं
होदि त्ति वत्तं । किंतु तमेत्यविवक्खिदं । तेसिं द्ववणा

(१३२२)	(१३२७)	(२७)	२१
१३२२	१३२७	१३२	१३२

 ।
तिरिक्खाउअस्स परूवणापवंचो सुगमो ।

णिरयगदीए अवद्विदवेदया थोवा । पृ० ३३०.

सुगममेदं । कुदो ? पुवुत्तकारणसंभवादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

[कुदो ?] सण्णिपंचिदिएहिंतो णिरएमुप्पज्जिय तत्थ अपज्जत्तकाले संचिदजीवाणं
च गहणादो ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? असण्णि-सण्णिगपच्छायदपढमसमयद्विदजीवगसिगहणादो ।

भुजगारवेदया असंखे० गुणा । पृ० ३३०

कुदो ? असण्णिगपच्छायद्विदियादिसमए णेरइयाणं संखेज्जवस्साउगसंचिदाणं गहणादो ।

तेसिं द्ववणा

१	२	१
—	२	
२	७	
—	—	
प	२	
—	२	
३३३		

 ।
कव्वगदिपरूवणा सुगमा ।
मणुसगदीए अवद्विदवेदया थोवा । पृ० ३३०.
मेदं ।
त्तव्ववेदया असंखे० गुणा । पृ० ३३१.
कुदो ? उवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडपमाणत्तादो ।

अप्पदरवेदया विसे० । पृ० ३३१.

कुदो ? मणुस्सेमुप्पणजीवाणं पत्तिदोवमस्स असं० भागेण खंडिदंसु तत्थ बहुभागा एइं-
दिय-विगलिदिय-असण्णिपंचिदिएहिंतो आगदाणि हांति, एगभागो सण्णिपंचिदिएहिंतो आगदो ।
तत्थ सण्णीहिंतो आगदा ते अप्पदरं करंति त्ति तेसिमंतोमुहुत्तकालसंचयमाणिय द्वविय—

२७	पुणो सेसजावेहितो आगदजीवाणं असंखे० भागं गिजुगदीए उप्पज्जंति	१३२७ प प ।
१३ २७ प	पुणो ते भुजगारं करंति त्ति तत्थ जे बहुगा ते एग-वेविग्गहं काऊण	२२
२	उप्पज्जंति । ते च सरीरगहिदसमए अप्पदरं करंति । तदो तेसिं वेसमयसंचिदम्मि	

एत्तियमेत्तम्मि १३७७पपप१प१२ । पुव्विल्लद्विदरासिं आणिय पक्खत्तमेत्तपमाणत्तादो ।
ते चेतिया

२२	१३ ।
----	------

देवगदीए अवद्विदवेदया थोवा । पृ० ३३१.

सुगममेदं, बहुसो उत्तत्तादो ।

अवत्तव्ववेदया असंखेज्जगुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? वाणवेंतरदेवाणं सगुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडं सादिरेयपमाणत्तादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणणं उदयणसेयगोउच्छाणं जोगगुणगारजीवजवमज्जाजोग

कुदो ? सग-सगपयडिवेदय—
भागाणुसारिपडिभागियत्तादो ।

= ४२७	सण्णिपंचिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयाणं अणांतिम-
2	

अवत्तव्वेदया असं० गुणा ।

= ४६५८११२७	पृ० ३३१.
= ४ 22	

कुदो ? पंचिदियतिरिक्खअप-
पढमसमयजीवाणं गहणादो । तेसिं

= ४ 22	जत्तएसु सग-सगपयडिवेदएसुपण- पडिभागो उवक्कमणकालो ।
2	

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? एदाओ असण्णिपंचिदियपज्जत्तएसु बहुवा संभवति । पुणो तत्थ जीवजवमज्झं
णत्थि, तदो सव्वजोगट्टाणेसु जीवा सरिसअच्छणं लभंति त्ति । तदो एत्थ विवक्खिदमज्झिमोदय-
णिसेगगोउच्छजोगगुणगारादो हेट्ठिमट्टाणाणं एत्थतणसव्वजोगट्टाणाणं संखेज्जिदिभागमेत्ताणं
पुणो तेसिं ट्टाणेसु ट्टिदजीवाणं संखे० भागमेत्ताणि हांति, तम्मि सरिसं होदूण ट्टिदजीवाणं
गहणादो ।

णिरयाणुपुव्वीए अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३१.

सुगममेदं ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? असण्णिपंचिदियपज्जत्तयगुणिदघोलमाणजोगट्टाणेसु मज्झि[म]जोगमेत्तुदय-
णिसेगस गुणगारमिदि विवक्खिदत्तादो, तदो हेट्ठिमजोगट्टाणेसु सव्वेसु सरिसं होदूण ट्टिद-
असण्णिजीवेहिंतो सण्णीणं पुण जीवजवमज्झहेट्ठिमजीवेहिंतो च आगदजीवाणं गहणादो ।

भुजगारवेदया विसे० । पृ० ३३१.

कुदो ? असण्णिपंचिदियघोलमाणजोगट्टाणेसु पुव्वविवक्खिदजोगादो उवरिमजोगेहिंतो
जवमज्झसुवरिमजोगेहिंतो आगदजीवाणं च विदियविग्गहे ट्टिद गहणादो ।

अवत्तव्वेदया विसेसाहिया । पृ० ३३१.

कुदो ? एगसमयेणुपणसव्वजीवरासिगहणादो ।

मणुसगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीणं अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३१.

सुगममेदं ।

भुजगारवेदया अयं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणजीवाणं उदयगोउच्छाणेषपयाग लभंति, तत्थ
विवक्खिदुदयगोउच्छम्म जोगगुणगारादो हेट्ठिमजोगट्टाणेहिंतो असण्णिपंचिदियजोगट्टाणस्स
संबंधीदो उवरिमजोगट्टाणाणि किंचूणमिदि विवक्खिदं, तदो तत्थट्टिदजीवेहिंतो आगदजीवाणं
पुणो सण्णिपंचिदियाणं जीवजवमज्झविवक्खिदत्तादो तत्तो उवरिमजोगजीवेहिंतो च आगद-
जीवसहिदाणं दोसमयसंचिदाणं गहणादो ।

अवत्तव्वेदया विसे० । पृ० ३३१.

कुदो ? विग्गहं करिय एगसमएणुपणजीवाणं गहणादो ।

अप्पदरवेदया विसे० । पृ० ३३१.

१ मूलग्रन्थेऽस्मान्पदादग्रे 'भुजगार० संखे० गुणा' इत्येतदपि पदमुवलभ्यते ।

२ मूलग्रन्थे देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीप्ररूपणा नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्व्या समाना दर्शिता ।

कुदो ? पुञ्जुत्तदुपयारजीवाणं उदयणिसेयस्स जोगगुणगारादो हेट्टिमजोगट्टाणट्टिदजीवे-
हितो आगदाणं दोसमयसंचयगहणादो । एवंविहविवक्खा होदि त्ति कुदो णव्वदे ? तिण्णिविग्गहे
अस्सिऊण भण्णमाणेण इमेण आरिसादो । पुणो दोण्णिविग्गहे अस्सियूण गिरयगदिभंगो होदि ।
पुणो गिरयगदीए तिण्णिविग्गहे विवक्खिदे एदं चेव तत्थ वि वत्तव्वं । एत्थ मणुस्साणुपुञ्जीए

द्ववणा	(२)	। पुणो तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुञ्जीए एवं चेव वत्तव्वं, तत्थ वि तिण्णि- संभवादो । णवरि भुजगारवेदया अणंतं होति त्ति वत्तव्व । पृ० ३३१. आदावमप्पसत्थविहायगदि-दुस्सराणमवट्टिदवेदया थोवा । पृ०
विग्गह-	१३१७१७	
	१३२७	
	- २२१८	
३३१	१३२७१७	
	१३२७२	

कुदो ? अणंतिमभागपडिभागियत्तादो दुल्लहं होदि त्ति ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? उवक्कमणकालभजिदसगरासिपमाणत्तादो ।

अप्पद० वेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? वादरपुट्टविपज्जत्तविगल्लिदिय-असण्णपंचिदियपज्जत्ताणं संभवजोगट्टाणाणं मज्जे
विवक्खिदोदयणिसेगस्स जोगगुणगारादो हेट्टिमसंखेज्जदिमभागट्टाणेसु सरिसं होदूण ट्टिदजीवाणं
गहणादो ।

भुजगारवेदया संखे० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? उवरिमसंखेज्जभागजोगट्टाणेसु ट्टिदजीवाणं गहणादो ।

थावर-दुभग-अणादेज्जणीचागोदाणं परूवणा तिरिक्खगदिभंगो । पृ० ३३२.

सुगममेदं ।

अपज्जत्तणामकम्माए अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

कुदो ? तत्थुप्पण्णाणं पज्जत्तजीवाणं तत्थतणजहण्णाउवकालव्वभंतरे संचिदाणं अणंतिम-
भागगहणादो ।

अवत्तव्ववेदया अणंतं । पृ० ३३२.

कुदो ? अंतोमुहुत्तभजिदसगरासिपमाणमेत्तपज्जत्तरासीदो आगदत्तादो ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? पज्जत्तजीवे भुजगारोदयणिबंधणसमयपवद्धाणि बधिय अपज्जत्तेसुप्पज्जिय आबाध-
मेत्तकालव्वभंतरे भुजगारं करंतजीवाणं सगपरिणामजोगट्टाणेसु भुजगारं करंतजीवाणं च
गहिदत्तादो ।

अप्पदरवेदया संखे० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? पुञ्जुत्तजीवे सेससव्वअपज्जत्तजीवगहणादो ।

सुस्मरणामाए अवट्टिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

सुगममेदं ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? उक्कमणकालभजिदसगरासिपमाणत्तादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? सण्णीणं जीवजवमज्झादो हेट्ठा संखेज्जजीवगुणहाणीए ओदरिय द्विदजोगमुदय-
गोउच्छस्स गुणगारं गुणिदघोलमाणं विवक्खिदत्तादो तत्तो हेट्ठिमजीवाणं गहणं । तं पि असण्णीसु
सुस्सरं णत्थि त्ति ।

भुजगारवेदया सं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? तत्तो उवरिमजीवाणं गहणादो ।

पज्जत्तणामकम्माए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

कुदो ? णिव्वित्तिपज्जत्तणं अणंतिमभागत्तादो । १३४४ ।

अवत्तन्ववेदया अणंतगुणा । पृ० ३३२. ५५स२ ।

कुदो ? सगगसिमंतोमुहुत्तेण खंडिदेगखंडपमाणं अपज्जत्तेहिंतो आगदत्तादो । १३४ ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२. ५२७ ।

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणजीवाणं विवक्खिदोदयणिसेयस्स गुणगारभूदजोगादो
हेट्ठिमट्ठाणादो उवरिमट्ठाणाणि संखे० गुणहीणाणि हांदि त्ति पुणो तत्थ सव्वत्थ सरिस होदूण
ट्ठिदसव्वजीवाणं गहणादो । १३४ ।

अप्पदरवेदया ५५ संखे० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? तत्थ विवक्खिदजोगादो हेट्ठिमपरिणामजोगट्ठाणेषु एयंताणुवट्ठिजोगट्ठाणं अवट्ठिद-
जीवाणं च गहणादो ।

पुणो एत्थ जोगट्ठाणेषु अण्णदरमज्झमजोगट्ठाणाणं विवक्खाए अवलंबणं कादूणेदमप्पा-
बहुगं भणिदं । कथमेदं(वं)विहविवक्खा जोगट्ठाणेषु होदि त्ति ? ण, उक्कस्सदव्वपरूवण(णे)
उक्कस्सजोग-तस्संबंधिजीवाणं, जहण्णदव्वपरूवणे जहण्णजोगं(ग-) तस्संबंधिजीवाणं च जहा
विवक्खा, ण तहा अजहण्णाणुककस्सदव्वारं परूवणे दुप्पयारं(र)घोलमाणजीवपडिबद्धाणेषु-
पयारा लब्भदि त्ति अभिप्पाएण अणेषुपयारजोगट्ठाणाणि तत्थ पडिबद्धजीवादि(दी) परूविदा,
तदो णव्वदे ।

पुणो द्विदिवंधेण ओक्कड्डुक्कड्डुणेण च पदेसवट्ठि-हाणी होदि त्ति एदेण हेदुणा
पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसमप्पाबहुगं भवदि इदि । पृ० ३३२.

एदस्सत्थो सुगमो । कुदो ? द्विदिवंधउट्ठीए णिसेयस्स सुहुमट्ठिदिवंधहाणीए णिसेयस्स
थूलत्तं । पुणो विसोहीए ओक्कड्डुणवहुत्त (त्तं) उक्कड्डुणाए थोवत्तं, संकिलेसेण पुणो उक्कड्डुणाए
बहुत्तं ओक्कड्डुणाए थोवत्तं च हांदि त्ति जाणाविदं ।

तं जहा— णिरयगइणामाए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणं ओक्कड्डुक्कड्डुणपरिणामवसेण बंधवसेण च असं०
लोगपडिभागियत्तप्पाओग्गभागहारो हांदि त्ति ।

अवत्तन्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? उप्पण्णपट्टमसमयसयलजीवाणं गहणादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? गुणिदकम्मंसियमिच्छादिद्वीणं विसोहिकालादो संकिलेसकालो संखे० गुणो, पुणो खविदकम्मंसियाणं तं विवज्जासो (तविवज्जासो) होदि; ताणि दुल्लहाणि । पुणो सुल्लहाणं खावद-गुणिदघोलमाणणं दुक्खाभिभूदानं विसोहिकालादो संकिलेसकालं संखे० गुणहीणं होदि त्ति, तत्थ संजदजीवाणं गहणादो ।

भुजगारवेदया संखे० गुणो (णा^१) । पृ० ३३२.

कुदो ? पुव्वजम्मम्मि कयअण्ण(णु)ट्टाणेण दयेण ? णिंदण-गरहणादिसुप्पणमज्झिमविसोहि-कालम्मि संचिदवहृणं जीवाणं गहणादो ।

पुणो पुव्विल्लप्पावहुगम्मि अवट्ठिदं थोवं, अप्पदरमसं० गुणं, अवत्तव्वं संखे० गुणं, भुज-गारं संखे० गुणमिदि भणिदं । तदो तत्तो एदस्स भेदो जाणियव्वो ।

एद्रेण अणुमाणेण अणुमाणेऊण^२ सव्वकम्माणं णेदव्वं । पृ० ३३२.

एदस्सत्थो उच्चदे मूचिदसरूवेण । तं जहा— मदिणाणावरणस्स अवट्ठिदा थोवा । कुदो ? असंखे० लोगपडिभागियत्तादो । अप्पदरवेदया असं० गुणा । कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणणं संकिलेसेण संचिदत्तादो । भुजगारवेदया संखे० गुणा । कुदो ? तेसिं विसोहिकालेण संचिदत्तादो । एवं सव्वकम्माणमप्पावहुगं अ(त)प्पाआंगमसरूवेण जाणिय वत्तव्वं ।

एदं पुणो हेदुणा अप्पावहुगं ण पवाइज्जदि ।^३ पृ० ३३२.

एदस्सत्थो सुगमो ।

एवं पदेसभुजगारो गदो^४ । पृ० ३३२.

(पृ० ३३२)

पदणिक्खेवपरूवणपबंधो सुगमो । णवरि जहण्णपदणिक्खेवम्मि जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठणं च सव्वकम्माणमेगपदेसो^५ । णवरि देव-णिरयाउग-तित्थयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वमिदि । पृ० ३३४.

एत्थेदस्सत्थविवरणं कस्सामो । तं जहा— विवक्खिदवट्ठमाणोदयगुणसेट्ठिगोउच्छादो तद-णंतरसमए वेदिउजमाणगोउच्छरचण(णा-) कमेण एगविसेसं ण (-विसेसेण) हीणं होदि । तम्मि ण पमाणं बंधदव्वस्स पढमगोउच्छाए पडिपूरिदं होदि, पडिपूरिदे समाणं होदि । एवं सरिसत्ते सभवे संते पुणो तम्मि ओक्कड्डुक्कड्डुणवसेण एगपरमाणुवड्ढि-हाणिअवट्ठणं(ण)संभवे विरोहो णत्थि त्ति आइरियाणं सम्मदत्तादो एगपरमाणूणं वड्ढि-हाणिअवट्ठणं सव्वकम्माणं वत्तव्वमिदि उत्तं । णवरि देव-णिरयाउआणं समयपव्वद्धं संखे० भागहाणी चरिच-(म-)दुचरिमगोउच्छविसे-सम्मि गहेदव्वं । तित्थयरस्स पुण हाणीए (हाणी) एगगोउच्छविसेसो वड्ढी पुण विदियसमय-केवलिस्स गुणसेट्ठिगोउच्छं होदि त्ति एदाणि मोत्तूण तदो सेसाणं वत्तव्वमिदि उत्तं ।

पुणो के वि एगपदेसे इदि उत्ते जोगवसेण जहण्णेण वड्ढिदव्वमेगपक्खेवमेत्तं एगपदेस-मिदि भणिय एदं वड्ढि-हाणिअवट्ठणं जहण्णं होदि त्ति भवे यस्सियूण भणंति । तं पि जाणिय वत्तव्वं ।

१ मूलग्रन्थे 'असंखे० गुणा' इति पाठोऽस्ति । २ मूलग्रन्थेऽस्य स्थाने 'मग्गिदूण' इति पाठोऽस्ति ।

३ मूलग्रन्थे 'पविज्जदि' इति पाठः । ४ मूलग्रन्थे 'गदो' इत्येतस्य स्थाने 'समत्तो' इति पाठः

५ मूलग्रन्थेऽतोऽग्रे 'अण्णदरस्स भवे' इत्येतावानधिकः पाठः प्राप्यते ।

पुणो अप्पावहुगमिदि किचियत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

पंचाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं उक्कस्सं अवट्ठाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? अप्पमत्तसंजदस्स सत्थाणट्ठिदस्स तप्पाओग्गमंदविसोहिणा ओक्कट्टियूण गुण-
सेट्ठिं करेत्तेण पुत्तिल्लगुणसेट्ठिसीसयादो असं० गुणं करिय पुणो वि तदणंतरसमए पुत्तिल्ल-
ओक्कट्टणदव्वादी असं० भागव्भहियदव्वोक्कट्टणणिवंधणपरिणामेणोक्कट्टियूण पुत्तिल्लगुणसेट्ठि-
सीसएण समाणगुणसेट्ठिसीसयं करिय अथवा बंधदव्ववसेण गोउच्छविसेसेणहिण कदेण
समाणं होदि । पुणो वि अंतोमुहुत्तकाल(लं) तप्पाओग्गसंचयं करिय पुणो ताणि कमेण वेदिज्जमाणे
वड्ढिपुव्वमवट्ठाणं असं० समयपव्वद्वमेत्ताणि हांदि त्ति ताणि गहिदत्तादो । तत्थेक्कस्स मदिणाणा-
वरणस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४५ ।
७४ओ प ८५२
२ २

उक्कस्सिया हाणी असं० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? उवसंतकसाएण अण्णदरसमयट्ठिण गुणसेट्ठिं करिय देवेसुणज्जिय तत्थंतोमुहुत्त-
कालं गंतूण गुणसेट्ठिसीसयं वेदिदि, तत्तो तम्मि तदणंतरजहाणिसेयगोउच्छमवणिदे तत्थ सेसमेत्तं
गहिदत्तादो । तदेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४ ।
७४ ओ प ८५
२ २

उक्कस्सवट्ठी असं० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? खीणकसायचरिमगुणसेट्ठिसीसयदव्वं किंचूगमेत्तं गहिदत्तादो । तस्सेक्कस्स
ट्ठवणा

स ३२१२६४ ।
७४८५

णिदा-पयलाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वं व अप्पमत्तसंजदेण कदगुणसेट्ठिगोउच्छ वड्ढिपुव्वमवट्ठाणं जादमिदि
तग्गहणादो । तत्थेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४ ।
७ ख ५ ओ प ८५
२ २

उक्कस्सिया हाणी असं० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? उवसंतकसाएण कदचरिमगुणसेट्ठिसीसयं सुहुमसांपराइयम्मि वेदिज्जमाणीसु
वेदिदम्मि तम्मि तदणंतरउवरिमगोउच्छमवणिदे तत्थ बेसम[य]पमाणत्तादो । तत्थेक्कस्स
ट्ठवणा

स ३२१२६४२ ।
७ ख ५ ओ प ८५२
२ २

उक्कस्सिया वट्ठी असं० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? खीणकसायतिचरिमगुणसेट्ठिगोउच्छं दुचरिमगुणसेट्ठिगोउच्छम्मि सोहिदे सुद्ध-
सेसपमाणत्तादो । तत्थेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४ ।
७ ख ९८५

पुणो तत्थ पुव्वुत्तक्कस्ससामित्तविवक्खाए अप्पावहुगं भणमाणे अवाट्ठिदं थोवं । सु [ग]म-
मेदं । वट्ठी असं० गुणा । कुदो ? पढमसमए उवसंतकसाएण कदगुणसेट्ठिसीसयं उवसंत-
छ. प. १५

(११२)

परिशिष्ट

कसायस्मि उद्दिणस्मि तस्मि तस्म हेट्टिमगोउच्छमवणिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । हाणी विसे० । कुदो ? उवसंतकसायस्त चरिमगुणसेट्टिसीसयं सुहुमसांपराइयस्मि उद्दिणस्मि तस्मि तदणंतरगोउच्छमवणिदे सेसपमाणत्तादो । तेसिं ट्ववणा

स ३२१२६४२ ७ ख ५ ओं ५ ८५ २ २२२	स ३२१२६४ ७ ख ५ ओं ५ ८५	स ३२१२६४२ ७ ख ५ ओं ५ ८५ २२२
-------------------------------------	---------------------------	-----------------------------------

णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणं उक्कस्सं अवट्टाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? अप्पमत्तसंजदेण पुव्वं च कदगुणसेट्टिणा सह पमत्तगुणं पडिवण्णे थीणगिद्धि-नियाणं, पुणो तेण पमत्तसंजमं पडिवण्णेण मिच्छत्तं पडिवण्णे मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणं च अवट्टिदं होदि त्ति । पुणो तेसिं तिप्पयाराण एसा ट्ववणा—

स ३२१२६४४ ७ ख ५ ओं २ ८५ २	स ३२१२६४४ ७ ख १ ओं २ ८५ २	स ३२१२६४४ ७ ख १७ ओं २ ८५ २
---------------------------------	---------------------------------	----------------------------------

उक्कस्सवट्टी असंखे० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? अप्पमत्तसंजदेण तप्पाओग्गमदाविमोहिट्टिदेण पुव्विल्लवट्टाणकारणविसोहीदो अणंतगुणसत्थाणुक्कस्मविमोहिपणिदेण कदगुणसेट्टिसीसयं पुव्वं च पुव्वुत्तगुणट्टाणमिह उदय-मागदास्मि तस्मि तस्म हेट्टिमणिसेयं सोहिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । तेसिं ट्ववणा—

स ३२१२६४ ७ ख ५ ओं २ ८५ २२	स ३२१२६४ ७ ख १७ ओं २ ८५ २२	स ३२१२६४४ ७ ख १७ ओं २ ८५ २२
---------------------------------	----------------------------------	-----------------------------------

उक्कस्सिया हाणी विसे० । पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वुत्तचरिमगुणसेट्टिगोउच्छमि तदुव्वरिमजहाणिसेयगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेस-पमाणत्तादो । तेसिं ट्ववणा पुव्वं व ।

अट्टणं कसायाणं उक्कस्समवट्टाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वं च अप्पमत्तसंजदेण कदगुणसेट्टिसीसण सह संजदासजद-असंजदमम्मा-दिट्टिगुणाणि कमेण पडिवण्णे पच्चक्खाणापच्चक्खाणकसायाणमवट्टिदं होदि त्ति । तेसिं ट्ववणा

स ३२१२६४६ ७ ख १७ ओं २ ८५ २	स ३२१२६४१६ ७५१७ ओं २ ८५ २
----------------------------------	---------------------------------

वट्टी असंखेज्जगुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? अणियट्टिवसामगो अंतरकरणमकरेतचरिमसमए मदो देवो जादो, पुणा तत्तो अंतोमुहुत्तकालं गंतूण गुणसेट्टिसीसए उद्दिणो तस्मि दुचरिमगुणसेट्टिगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । तस्स ट्ववणा

स ३२१२१४८१४ ७ ख १७ ओं २ ८५ २२	स ३२१२४८१४ ७ ख १७ ओं ८५३ २२
-------------------------------------	-----------------------------------

पुणो हाणी विसेसाहिया । पृ० ३३५.

कुदो ? अणंतरउत्तचरिमगुणसेढिसीसयदव्वेसु वेदिदम्मि तदणंतरवेदिज्जमाणजहा-
णिसेयगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो ।

सम्मत्त-णवणोकसाय-चदुसंजलणणं णाणावरणभंगो । पृ० ३३५.

सुगममेदं । कुदो ? अप्पावहुगुच्छा(च्चा)रणाए समाणत्तादो, णवरि दव्वविसेसो अत्थि तं
वत्तइम्मामो । तं जहा— सम्मत्तस्स अवट्टिददव्वं पुव्वं व । उक्कस्सहाणि(णी) अणताणुबंधि-
विसंजो जणचरिमगुणसेढिसीसयदव्वम्मि तदणंतरजहाणिसेगगोउच्छं सोहिदे तत्थुवरिददव्वमेत्तं
होदि । उक्कस्सवट्टी पुण दंसणमोहक्खवगगुणसेढिसीसयचरिमणिसेयम्मि दुचरिमगुणसेढि-
गोउच्छं सोहिदे तत्थ सेसपमाणं होदि ।

पुणो णवणोकसाय चदुसंजलणणं अवट्टिददव्वं पुव्वं व । हाणिदव्वं पुणो अणियट्टिकरण-
उवसामगस्स अंतरकरणं अकरेताणं चरिमसमए मदो देवेसुपण्णणं अंतोमुहुत्तकालचरिमसमए
पुव्वं व वत्तव्वं । णवरि तिणिवेद-चउसंजलणणं सग-सगवेदाउगउवरिमसमयउवसामगो
देवेसुपण्णणं आवालयकालं गदम्मि वत्तव्वं । उक्कस्सवट्टिदव्वं पुण खवगसेढीए जाणिय वत्तव्वं ।

एदमप्पावहुगं दव्वणिज्जरमेत्तमवेक्खिय उत्तं । पुणो पढ(द)मवेक्खिववट्टिदपरूवणं पुव्वं
व थावं होदि । वट्टी असं० गुणा । हाणां विसे० । पदाणि दो वि पदाणि उव(सम)सेढीदो
एसु(देवेसु) णणणस्स होदि त्ति जाणिय वत्तव्वं ।

सम्मामिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो । पृ० ३३५.

देव-णिरयाउगाणं परूवणा सुगमा, जोइज्जमाणे सुवोहत्तादो ।

मणुस-तिरिक्खाउगाणं उक्कस्समवट्टाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वकोडाउगं कदलीघादं करेत्त एणिणद ओकड्डिगूण उदयावलियवाहिरे गोउच्छाए
आउगगोउच्छविसेसादो असं० भागं संट्टुहिय उवरि विसेसहीणकमेण संच्छुह्दि जाव चरिम-
गोउच्छं आवालयमत्तकालं ण पावदि त्ति । एवमंतोमुहुत्तमुक्कस्सघादपरिणाममत्तकालं करेत्तेण
वट्टिपुव्वमवट्टिदं करेदि त्ति । तस्स ट्टवणा

स ३२२७
ओ ८ व

 ।

उक्कस्सहाणी असंखे० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? तिपलिदोवमाउगस्स कदलीघादकदचरिमगोउच्छम्मि तदुवरिमतिपलिदोवमस्स
पढमगोउच्छमण्णभवसंबंधि सोहिदे सेसपमाणत्तादो ।

उक्कस्सवट्टी विसेसा० । पृ० ३३५.

कुदो ? तिपलिदोवमस्स कदलीघाद्रेणुपण्णपढमगोउच्छम्मि तदणंतरहेट्टिमगोउच्छं
एगसमयं कदलीघादसंपरिणामसंबंधियमवणिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । एवं (एदं) भोगभूमीसु
घादाउगमत्थि त्ति अभिप्पाएण उत्तं । पुणो तत्थ तण्णत्थि त्ति अभिप्पाएण पुव्वकोडाउवघादं
चेवस्सिय एवं चेव हाणि-वट्टीयो वत्तव्वाओ ।

एत्तो गदियादिउवरिमपयडीणं अवट्टिदादिपदाणं अप्पावहुगं सुगमत्तादो अत्थो ण उच्चदे ।
कुदो ? अप्पमत्तसंजदगुणसेढीयो उवसामग-उवमंतगुणसेढीयो अजोगिगुणसेढीयो सजोगिगुण
सत्थाणसमुग्घादगुणसेढीयो दंसणमोहक्खवगगुणसेढि-अणताणुबंधिविसंजो जणगुणसेढीयो च
जं जं जस्स पयडीणं संभवदि तं तं जोइय भण्णमाणे सुवोहत्तादो । णवरि आदावस्स भण्णमाणे

(११४)

परिशिष्ट

बादरपुढविकाइयणिञ्चित्तिअपज्जत्तद्धाणादो अप्पमत्तसंजद-संजदासंजदाणं क्कदगुणसेढिअद्धाणाणि
मिच्छत्तं गंतूण आउगं बंधिय विस्ममिदसेसकालं बहुगमिदि अहिप्पाएण वत्तव्वं, अण्णहा एदस्स
वड्ढो थोवा । कुदो ? स्वविदकम्मंसियो आदाओदएण सहिदो सगपाओग्गुक्कस्सजोगेण बंधिद-
दव्वस्स पढमणिसेयं किंचूणयपमाणत्तादो स 2 । हाणि अवट्ठाणं असंखेज्जगुणं । कुदो ?
गुणिदकम्मंसियस्स छत्तिवस्सोदयसहिद- ७२४१२ पुढविकायस्स सत्तावीसोदए जादे हाणि-
दंसणादो । तदणतरमवट्ठाणं पि बधवसेण संभवदि त्ति स 2२ ।
७२४२५ ।

॥ एवमुदयाणिओगहार गदं ॥

॥ समाप्पोऽयमुद्ग्रन्थः ॥

श्रीमन्माघनंदिसिद्धान्तदेवर्गं सत्कर्मदंपांजियं श्रीमदुदयादित्यं वरेदं । मंगलमहः ।

॥ श्री ॥

अस्यांत्यप्रशस्ति

॥ कन्नडकंदपद्यं ॥ जिनपदकमलमधुव्रत- ।

मनुपमसत्पात्रदाननिरतं सम्यक्- ॥

त्वनिदानं कित्ते वधू

मनसिजनेने शांतिनाथनेसेदं धरेयोळ

पुरजिदनुपमं चारुचारित्रनादु- । न्तुतर्धेर्यं सादिपर्यंतगदियनेनिसि पेपिं गुणानीकदिं.....
.....सद्भक्तियादेसदिं सत्कर्मदांपांजियं विस्तर्गदि श्री माघनंदि-व्रतिगे वरे-
सिदं रागदिं शान्तिनाथं ॥ कदं पद्य ॥ उदविदमुददिं सत्कर्मदंपांजियं ननुपमानं निर्वाणसुख ॥
प्रदमं वरेइसि शांतं मदरहितं माघनंदियतिपतिगित्तं ॥

॥ इति शं ॥

॥ चिरं जयतु जिन शासनम् ॥

जैन साहित्य उद्धारक फंड

तथा कारंजा जैन ग्रन्थमालाओं में

डा० हीगलाल जैन द्वारा आधुनिक ढंगसे सुसम्पादित होकर प्रकाशित

जैन साहित्यके अनुपम ग्रन्थ

प्रत्येक ग्रन्थ सुविस्तृत भूमिका, पाठभेद, टिप्पणी व अनुक्रमणिकाओं आदिसे खूब सुगम और उपयोगी बनाया गया है।

१ पट्खण्डागम—[धवलसिद्धान्त] हिन्दी अनुवाद सहित—

पुस्तक १. जीवस्थान—सत्प्ररूपणा, पुस्तकाकार व शास्त्राकार (अप्राप्य)		
पुस्तक २-१, " " पुस्तकाकार १०) शास्त्राकार (अप्राप्य)		
पुस्तक ५-१ (प्रत्येक भाग)	" १७	" १२)
पुस्तक १-१ : (प्रत्येक भाग)	" १२)	" १४)
पुस्तक १४-११	" १२)	

यह भगवान् महावीर स्वामीकी द्वादशांग वाणीसे सीधा सम्बन्ध रखनेवाला, अत्यन्त प्राचीन, जैन सिद्धान्तका खूब गहन और विस्तृत विवेचन करनेवाला सर्वोपरि प्रमाण ग्रन्थ है। श्रुतमश्रमीकी पृजा इसी ग्रन्थ ही रचनाके उपलक्ष्यसे प्रचलित हुई।

२ यशोधरचरित—उपदन्तकृत अपभ्रंश काव्य ६)

इसमें यशोधर महाराजका अत्यन्त रोचक वर्णन सुन्दर काव्यके रूपमें किया गया है। इसका सम्पादन डा. पी. एल. वैद्य द्वारा हुआ है।

३ नागकुमारचरित—उपदन्तकृत अपभ्रंश काव्य ६)

इसमें नागकुमारके सुन्दर और शिक्षापूर्ण जीवनचरित्र द्वारा श्रुतपञ्चमी विधानकी महिमा बतलाई गई है। यह काव्य अत्यन्त उत्कृष्ट और रोचक है।

४ करकण्डुचरित—मुनि कनकामरकृत अपभ्रंश काव्य ६)

इसमें करकण्डु महाराजका चरित्र वर्णन किया गया है, जिससे जिनपजाका माहात्म्य प्रगट होता है। इसमें धारगशिवकी जैन गुफाओं तथा दक्षिणके शिलाहार राजवंशके इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है।

५ श्रावकधर्मदोहा—हिन्दी अनुवाद सहित २॥)

इसमें श्रावकोंके प्रती व शीलोंनेका बड़ा ही सुन्दर उपदेश पाया जाता है। इसकी रचना दोहा छन्दमें हुई है। प्रत्येक दोहा काव्यकलापूर्ण और मनन करने योग्य है।

६ पाहुडदोहा—हिन्दी अनुवाद सहित २॥)

इसमें दोहा छंदों द्वारा आध्यात्मरसकी अनुपम गङ्गा बहाई गई है जो अवगाहन करने योग्य है।

७ सिद्धान्त समीक्षा—'संजद' सम्बन्धी लेखों और प्रतिलेखोंका संग्रह

८ तत्त्व-समुच्चय—हिन्दी अनुवाद सहित ३)

इसमें जैन सिद्धान्तका सर्वाङ्गपूर्ण परिचय कराया गया है।

